मध्यप्रदेश की जनपदीय

व्रत कथाएँ

मध्यप्रदेश की जनपदीय

व्रत कथाएँ

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल–462002
मध्यप्रदेश, भारत
फोन – 0755–2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com

प्रकाशन वर्ष – वर्ष 2012 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण –

मुद्रण – शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल

मूल्य – 300/– रुपये (तीन सौ केवल)

■ पुस्तक से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

ISSN 978-81-922558-1-1

कथाएँ लोक जीवन में सुदीर्घ जीवनानुभव की कथा निर्मितियाँ हैं, जो सदियों की यात्रा करते अपने वर्तमान वाचिक रूप में प्रचलन में हैं। कुछ सांस्कृतिक नृतत्त्वशास्त्री यह मानते हैं कि पूरी दुनिया में मूल रूप से कुल अठारह–बीस लोककथाएँ ही हैं, जो थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ संसार भर की लोक स्मृति और वाचिकता में जीवन्त हैं। 'कथा' जीवन और उसके अनुभव की भूमि से आती है। सारी 'कथा' जीवन की है।

मनुष्य की आशा–निराशा, विश्वास और संदेह, पाप और पुण्य, धर्म और नियति, सुख और दुख, मनुष्य और ईश्वर, जन्म और मृत्यु, शाप और वरदान, पुरुषार्थ और कृपा तथा करणीय और अकरणीय के प्रश्न, जीवन के अनुभव की इस कथा को लपेटे हैं।

यह 'जीवन कथा' एक सामुदायिक कथा सृजन है, इसीलिए 'परम्परा' का है– वह व्यक्ति सर्जक का नहीं है। एक आदमी कथा कहता है, वह सदियों की है और आज की भी, वह 'अनगिनत पीढ़ियों' की भी है और अभी कहने–सुनने वाले की भी, उसमें बहुत सारा समय और अनन्त जीवन की यात्रा का सार, कथा कहने वाले के 'समय' और 'कहे जाने के क्षण' तक आता है। हम कथा में जिसे 'जीवन का यथार्थ' कहते और समझते हैं, उस रूप में परम्परा की कथा में जीवन यथार्थ नहीं होता– काल और जीवन की भट्टी में तपकर–गलकर वह जीवन की अनुभव सम्पदा में बदल गया है– हम न तो उसे यथार्थ कह सकते हैं और न मात्र कल्पना, वह वास्तविकता और स्वप्न, आज और कल्पनातीत विगत का एक चमत्कारिक संश्लेष है– कथा को सुनते ही हमारे संज्ञान में जीवन का एक रूप, एक अनुभव, एक

प्रतीति या कहें कोई 'सत्य' ग्रहण किया जाता है- आश्चर्य, वह हमारे जाने और देखे, जीये और समझे जीवन से अधिक 'यथार्थ', अधिक वास्तविक और अधिक प्रामाणिक होता है। कथा विश्व का यथार्थ भी कुछ और है और उसकी प्रामाणिकता भी कुछ और। एक कथा को सुनते या पढ़ते हमारे ही रचे 'कथा प्रतिमान' हमारे लिए कोई अर्थ नहीं रखते- हम सदा उसमें जीवन की सच्चाई और उसकी सहजता से ही प्रतिकृत होते हैं, हमें सदा ऐसा लगता है, जैसे कथा को सुनने से हम जीवन को कुछ अधिक विस्तार और 'गहनता' में जानने लगे हैं- काल और क्षेत्र के 'प्रश्न' और 'संशय' पता नहीं कहाँ, पीछे छूट जाते हैं।

हम एक ऐसे देश में 'कथा', 'परम्परा की कथा' पर विचार कर रहे हैं, जिसके बारे में हम कह सकते हैं कि यह देश एक अर्थ में एक विराट्-विपुल 'कथा संस्कृति का देश' है। इसने उपनिषदों की 'तत्वचर्चा' में भी कथाएँ कही हैं, इसने अकूत पौराणिक कथा साहित्य रचा है, संस्कृत साहित्य की समृद्ध परम्परा में इसने अद्भुत कथा सृष्टि की है- लोक जीवन में इसने लम्बे आख्यान कहे हैं और इसे साधारण लोकजनों ने अपने 'जीवनानुभव के सच्चे ज्ञान' से एक समृद्ध कथा विश्व रचा है। वेद और उपनिषदों की ज्ञान कथाओं से लेकर पौराणिक आख्यानों तक और संस्कृत से लेकर प्राकृत, पाली अपभ्रंश साहित्य की कथाओं तक ज्ञान और संस्कृति के विशाल क्षेत्रों तक कथा ने भारत में एक लम्बी यात्रा पूरी की है।

मध्यप्रदेश के जनपदों की सांस्कृतिक परम्परा में व्रत एवं तत्सम्बंधी पर्वों का बड़ा महात्म्य है। लोक समाजों की आध्यात्मिक मान्यताएँ भी व्रतों से पूरकता प्राप्त करती हैं। भारतीय नारी के तप और करूणा के केन्द्र में व्रत और उससे जुड़ी कथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। जीवन में रची-बसी इन व्रतकथाओं का संकलन और अनुवाद अकादमी के लिए डॉ. (श्रीमती) आरती दुबे, श्री दुर्गेश दीक्षित, श्रीमती आशा द्विवेदी, श्रीमती निर्मला राजपुरोहित और श्री रमेशचन्द्र तोमर ने किया है। आशा है लोक की समृद्ध वाचिकता के ये कथा अंश अध्येताओं, शोधार्थियों के काम आयेंगे।

- सम्पादक

बुन्देली व्रत कथाएँ

डॉ. दुर्गेश दीक्षित / डॉ. आरती दुबे - 9

बघेली व्रत कथाएँ

श्रीमती आशा द्विवेदी - 106

निमाड़ी व्रत कथाएँ

रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी' -175

मालवी व्रत कथाएँ

श्रीमती निर्मला राजपुरोहित - 195

बुन्देली व्रत कथाएँ

डॉ. दुर्गेश दीक्षित
डॉ. आरती दुबे

शरद पूनें व्रत कथा

एक गाँव में एक वामुन डुकरिया रत्ती। आंगै पाछैं ऊके कौऊ नई हतो। ऊके परिवार के सबई जने राम खौं प्यारे हो गये ते। वा अकेली एक टपरिया में डरी-डरी जीवन के दिन रो गाके कारड़ रत्ती। अकेलैं हतो उयें भगवान पै पूरौ भरोसौ। दिन भर गावन-गावन घूम फिरकैं माँग ल्याबैं, उर जो कछू मिलें ओई सै गुजर बसर करत रत्ती। पैंला सत्यनारायन भगवान की पूजा करकै बड़ी भाव भक्ति सैं भोग लगा कैं प्रसाद पाऊत रत्ती। ऊखौ तो भगवानई पै पूरौ भरोसौ हतो। दुनियादारी सैं कछू मतलब नई हतो। ऐसी कानात कई जात 'ना ऊधो कौ लैने उरना ना माधो कौ देने'। कन लगत 'कै भोले के भगवान होत'। सत्यनारायन भगवान की ऊपै भौत कृपा रत्ती। दो चार खोवा चून मिल गओ उत्तई भौत हतो ऊके लाने। अकेले पेट के लाने और का चाने तो उयै। कन लगत कै-'आगैं नाथ ना पीछै पगहा'। वा तौ भौतई संतोषी डुकरिया हती। लगत कै ऊने तो जौ मंत्र पूरी तरासैं पढ़ लओ तो- 'रूखा सूका खायकै ठण्डापानी पी' देख पराई चूपड़ी मत ललचाबैं जी'। डुक्को खौ देख कै सबई खौ दिया आ जात ती। उयै दोरे में देखतनई लोग खोवा भर चून तुरतई दै देत ते उयै। उर ऊके भगवान के लाने उत्तई चून भौत हतो। ऐसई ऐसैं माँगत खात कैऊ वरसै कड़ गई ती।

एक दिना ऊनें सोसी कै भगवान की पूजा तौ वरसन सै कर रयै है। अब एक दिना गाँव भरकौ भण्डारौ और कर दओ जाय। जौन गाँव सैं मँगा-मँगा कै हम भगवान खौ भोग लगा-लगा कै अपनौ पेट भरत रये। हमाये ऊपर गाँव को भौत बड़ो ऐसान चढ़ गओ। उखौं चुकावने तो परेई। वा गई सो गाँव भर खौं न्यौतौ दै आई। न्यातै की बात सुनकै गाँव भर के आदमी सनाकौ खाकै सोसन लगै कै घर में भूजी भाँगतौ है नइया मँगा मँगाकै तो पेट भर रई उर गाँव भर के न्यौतौ करबे को शौक कर रई । ऐसी कन लगत कै 'मर गई किल्ली काजर खौं गिरदौला गोपी चन्दन खौ'।

लोग उयै देख-देख कै हँसी करन लगे कै हओ बऊ हम सब जने सपर-सपर कै सौकाऊँ आ जैय डुक्को जानतौ सब रई ती। अकेलै उने अपने सत्यनारायन स्वामी पें पूरौ-पूरौ विश्वास हतोई। वे सोसन लगी कै दुनिया हँसी करे सो करन दो हमाई लाजतौ भगवानई के हात में है। बेई सब पूरौ करें। आदमी की बस की का है। वा घरै आकै भगवान कौ ध्यान करन लगी उर सोसन लगी कै 'तेलना ताई उर लगुन दै लिखाई'। हराँ-हराँ उनके आँगन में आदमी जुरन लगे उन्नें आव देखो ना ताव उर आँगन के बरत चूले पै करइया धर दई। नाचून उर ना चोपर सत्यनारायन स्वामी कौ नाँव लैकै जई सैं झारौ ठोको सोऊ ऊ करिया मे सैं छप्पन बिन्जन तैयार होन लगे। भगवान की ऐसी लीला कै छबला के छबला भर गये सामान सैं। जौ तमाशो देखकैं लोग ता करकै रै गये।

फिर का कने पंगत बैठ गई। उर दिन भर उर आदीरात नौ भण्डारौ चलत रओ, कोनऊ कमी नई आ पाई। सामान की गाँव तो गाँव दस गाँव के लोग खा-खा कै सनात हो गये, उर डुक्को करइया पै जमी रई। जई सैं उन्ने देखो कै सब जनें खा पी चुके, सोऊ उन्ने करइया में सैं झारौ बायरे काड़ लओ। उर उठ कै वे अपने सत्यनारायन भगवान सैं कुन्नस करन लगी कै हे भगवान आपने हमाई लाज बचा लई नई तर हमाई भौतई हँसी होने ती, ऐसई सबकी लाज राखैं रइयौ । उतें ठाढ़े-ठाढ़े एक ढीमर ढीमरन वामुन डुक्को कौ जौ तमाशों देख रये ते। उनन नें सोसी कै डुक्को तौ जा भौतई अच्छी जुगती जानती। तनक हमई जौ नाटक करकै देखें उनन खौ सत्यनारायन सैतौ कोनऊ मतलब हतो नई, उनन खौ तौ ऊ खेल खौ अजमाउने भर हतो। उनन ने अपने आँगन खौ अच्छी तरा सै लीपो पोतो। चूलों घरकै आंगें आगी बारी उर करइया में जई सैं ऊने झारै ठोके सोऊ वौ उचट कैं ढीमरन के मौमे घलो सोऊ वा चिल्लयात भगी। माँसै उर फिर एक छूटा कौ तातौ झारो ढीमर के गलपटे मे घलौ। सोऊ सबई सिट्टी-पिट्टी भूल गई उननकी। कन लगत कै चूले की खाँई मजोटे हुन कड़आई वे दोई जने भगत-भगत डुक्को नौ जाकै ऊके पाँवन पै गिरकै कन लगे कै बाई ताते झारन के मारै तौ हमाई कागत हो गई हमन तौ अदमरे हो गये तुमें जा इत्ती बड़ी सिद्धि कैसे मिली।

सुनतनई डुक्को मुस्कयाकै कन लगी कै बेटा सत्यनारायन भगवान की कृपा के बिना पत्ता नई हिल सकत, तुम उनई कौ मन लगा कै पूजन करो सोऊ तुमाये सबई काम अपने आप होत रैय, देखौ इन बातन कौ ख्याल करियौ डेढ़ पौवा खोवा, डेढ़ पौवा शक्कर जीसे बनाये छै लडुवा। तुलसी खौ, ठाकुर खौ, पति खौ, गर्भस्त्री खौ, बालक खौ उर अपन ने पा लओ। ईसै तुमाई मनसा अपने आप पूरी हो जैय। अकेलै विश्वास करवौ जरूरी है। मानौ तौ परमेसुर नईतर सो पथरा सौ हैई। जा बात ढीमर उर ढीमरन के गरे उतर गई उर उदनई सै पूजा पाठ में लग गये। है सत्यनारान भगवान ऐसई सबकी मनसा पूरी करत रइयौ। कोऊ हैरान नई हो पाबै।

भावार्थ

एक गाँव में एक परिवार निवास करता था। परिवार में माता-पिता, भाई-बहिन, नाती-नातिन सभी थे, किन्तु सारा परिवार अभावग्रस्त और साधनहीन था। बड़ी कठिनाई से परिवार के भरण-पोषण की व्यवस्था हो पाती थी। उनका रहन-सहन और खान-पान बहुत ही सहज और सरल था। एक ऐसी कहावत कही जाती है कि- 'चाँदी की मेख तमाशा देख' जब चाँदी की मेख ही नहीं है तो फिर तमाशा देखने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। एक बार कोई भयंकर बीमारी आयी और ब्राह्मण परिवार के सारे लोग काल के गाल में समा गये। उस परिवार में केवल एक बूढ़ी डुकरिया शेष बची। बहुत दिनों तक तो वह अपने परिवारजनों के लिए रोती रही, अंत में मन मारकर अपने जीवन के शेष दिन व्यतीत करने लगी। उसने भी सोच लिया कि 'अब पछताये होत क्या, चिड़िया चुग गई खेत'। उसका सारा मकान धराशायी हो गया। वह बेचारी वृद्धा एक झोपड़ी में रहकर दिन काटने लगी। अपना पेट भरने के लिए गाँव में घर-घर से एक-एक चुटकी आटा माँग कर लाती थी, किन्तु थी वह भगवान् सत्यनारायण की परम भक्त। आटा इकट्ठा होने के बाद अपने हाथ से भोजन तैयार करती थी। फिर विस्तार पूर्वक भगवान् सत्यनारायण की पूजा करके, उन्हें विधिवत् प्रसाद लगाकर भोजन करती थी। इस प्रक्रिया के द्वारा उसका उदर पोषण होता था। दीन होने के बाद भी उसके मन में अपने भगवान् के प्रति अटूट आस्था और विश्वास था। ऐसा कहा जाता है कि 'विश्वासो फलदायक:' भीख माँगते और पूजा करते अनेक वर्ष व्यतीत हो गये। उसने सोचा कि मैं इतने वर्ष से गाँव वालों के दिये हुए आटे को खा-खा कर गुजर-बसर कर रही हूँ और अपने भगवान् को भोग लगा रही हूँ। मेरे ऊपर और मेरे भगवान् पर गाँव वालों का बहुत बड़ा ऋण चढ़ चुका है। हमें किसी न किसी रूप में उनका ऋण चुकाना ही चाहिए। यदि हम सारे गाँव का निमंत्रण करके भोजन करा दें, तो हमारे सिर का बोझ कुछ हल्का हो सकता है। मेरे पास है तो कुछ भी नहीं, भगवान् ही मदद करेंगे। ऐसा सोचकर वह पूरे गाँव में निमंत्रण कर आई। निमंत्रण की बात सुनकर लोग आश्चर्य चकित होकर सोचने लगे कि ये डोकरी पागल हो गई है। द्वार-द्वार पर भीख माँग-माँग कर खाने वाली गाँव भर को कैसे और कहाँ से खिलायेगी? सभी लोगों ने हँसकर हाँ-हाँ कर टाल दिया। ऐसा कहा जाता है कि भोले के भगवान् होते हैं। डोकरी को तो अपने सत्यनारायण पर पूरा विश्वास था कि वे ही मेरी लाज रखेंगे। संध्या का समय होते ही गाँव के आमंत्रित लोग झोपड़ी के पास एकत्रित होने लगे। लोगों को वहाँ भोजन की कोई तैयारी दिखाई नहीं दी। लोगों ने सोचा कि अरे! यहाँ तो कुछ भी नहीं है डोकरी पागल हो गई है। धीरे-धीरे गाँव के तमाम लोग एकत्रित हो गये। उन्हें देखकर डोकरी मन ही मन चिंतित तो थी ही, किन्तु उसे अपने भगवान् पर पूरा विश्वास था। उसने मन ही मन सत्यनारायण भगवान् का स्मरण करके चूल्हा जलाया और उस पर एक बड़ी खाली कड़ाही चढ़ा दी और एक ऊँचे से आसन पर बैठकर ज्यों ही कड़ाही में झारे को ठोका, त्योंही कड़ाही में से अपने आप

व्यंजन तैयार हो- होकर निकलने लगे। भोजन सामग्री के ढेर लग गये। गाँव वाले इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखकर चकित थे। फिर क्या था? पंगत बैठ गई। लोग परोस-परोस कर खिलाने लगे। आधी रात तक तो भोज चलता रहा। गाँव ही क्या आस-पास के दस गाँव के लोग भोजन कर करके चले गये, किन्तु भोज्य सामग्री की कोई कमी नहीं आ पाई। डोकरी जब तक कड़ाही में झारे को डाले रही, तब तक कड़ाही भोज्य सामग्री उगलती रही। कार्यक्रम पूरा होने के बाद डोकरी ने आसन से उठकर भगवान् को प्रणाम किया और फिर विधिपूर्वक सत्यनारायण की पूजा-अर्चना की।

ये होता है उपासना और भक्ति भावना का प्रभाव। इस दृश्य को वहाँ खड़े-खड़े एक ढीमर और ढीमरन देख रहे थे। उन्होंने सोचा कि अरे! ये तो बहुत अच्छी युक्ति है। इसका तो लाभ हम भी ले सकते हैं। ज्यादा मेहनत भी नहीं है और विधि भी सरल है। इससे तो हम मालामाल हो सकते हैं। वे दोनों अपने घर गये और अपने आँगन को लीप-पोतकर स्वच्छ किया। उन्हें सत्यनारायण भगवान् से तो कोई मतलब था नहीं। वे तो केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाह रहे थे। भक्ति भावना तो उनसे कोसों दूर थी। दोनों ने मिलकर आँगन में चूल्हा जलाया और उस पर एक कड़ाही चढ़ा दी और फिर चूल्हे के पास बैठकर ज्यों ही ढीमर ने कड़ाही में झारे को ठोका, त्यों ही वह गर्म झारा उचटकर ढीमर के गाल पर पड़ा, जिससे वह वहाँ से चिल्लाकर भागा और फिर दो झारे ढीमरन के दोनों गालों पर पड़े। तब वह भी वहाँ से चूल्हे को छोड़कर भागी। दोनों की हालत खराब हो गई और दो तीन दिन खटिया पर पड़े रहे। उन्होंने प्रण किया कि अब हम आज से किसी की परीक्षा नहीं लेंगे। उस डोकरी की भक्ति-भावना का प्रचार-प्रसार होता रहा और बुंदेलखण्ड की महिलाएँ शरद पूर्णिमा का व्रत करके मनोवांछित फल प्राप्त करने लगीं। वे दोनों ढीमर और ढीमरन डोकरी के चरणों पर गिरकर पूछने लगे कि माताजी आपको इतनी बड़ी सिद्धि कैसे प्राप्त हुई? हमारी तो दुर्गति हो गई है। डोकरी ने मुस्कराकर कहा कि बेटा ये सब सत्यनारायण भगवान् की ही कृपा है। उनकी कृपा के बिना तो पत्ता भी नहीं हिल सकता। तुम दोनों उन्हीं का पूजन करो। डेढ़ पाव खोवा और डेढ़ पाव शक्कर मिलाकर छै लड्डू बनाकर शरद पूर्णिमा को भगवान सत्यनारायण की विधिवत् पूजा करके एक लड्डू देव मंदिर में, एक गर्भवती स्त्री को, एक सखी को, एक पति को, एक छोटे बालक और एक स्वयं खाकर उपवास कीजिए, जिससे तुम्हें सारी सिद्धियाँ प्राप्त हो जायेंगी। तभी से ये उत्तम व्रत सारे बुंदेलखण्ड में प्रचलित हो गया।

हरछठ व्रत कथा

एक गाँव में एक ग्वालन बाई रत्ती। भैसें गइयाँ बैल सबई कछू हतो उनके घर में। सास-संसुर, देवरानी-जिठानी उर नन्दनं सै घर भरो रत्तो उनकौ। ग्वालन बाई कौ काम हतो दूद मठा

बेचवौ। रोज भुन्सरा मटकिया मूँढ़पै धरकै दूद मठा बैचवे कड़ जात तीं, उर दुपर लौटे नौ घरै आपाउततीं। ग्वालन बाई कैं पैलऊतौ कोनऊ सन्तान नई हती। उन्ने सन्तान के लाने सबई मनोमांतरा करी उर भगवान की कृपा सै एक डरइया लग गई। भौतई खुशयाली भई नन्नइया खौ देख कै। सबरऊ घर लयें-लयें फिरततौ उयै। उर कभँऊ-कभँऊ ग्वालन बाई गबवारे खौ कइयाँ लैकै दूद मठा खौ बैचबे कड़ जात ती। कायकै हर-हर बेरऊ उयै दूध पियावने आऊततो। उदना हरछठ कौ दिना पर गओ। भैसई कौ दूद मठा उर खोवई खाव जातऊ दिनों ग्वालन बाई कौ तौ जेऊ धन्दो हतो। उन्ने सोसी कै आज तौ भैसई कौ दूद मठा बिकने है। आज तौ पइसा कमाबे कौ जौ भौतई अच्छौ मौका है। ऊके लिगा जादा तौ भेस को दूद हतो नई ऊने भैंस के दूद में गइया कौ दूद खौ मिला कै एक मटकिया भर दूद तैयार कर लओं। ऊने सोसी कै कोउये का पतो। भैस कौ दूद जानकै अपनी खूबई बिक्री हुईयै। ऊनै मटकिया मूँढ पै धरी उर नन्नइयाँ खौं कइयाँ लै कै चल पड़ी। लरका के लये सैं उयै तनक परेशानी होती लरकै लेतन तौ लै आये। अब इयै गैलमें कितै छोड़े। कजन धरै लौटत तौ देर हो जैय। औरन की बिक्री हो जैय उर हमाव दूद जई कौ तई धरौ रैय। अब बताव ई लरका कौ का करो जाय। गैल में उयै एक खेत में धनी छेवलिया दिखा परी। ऊने सोसी कै जौ अच्छौ मौका मिल गओं। आव देखौ ना ताव उर उन छेवलियन के छाँयरे में लरका खौं लिटा कैं उर पत्तन सैं ढाँक कैं दूद बैचबे खौं चल दई। ऊने सोसी कै हम गाँव में दूद बैचकै उलायते लौट आँय इतै कोउये का पतौ कै इतै लरका लेटो है। वातौ दूद बैचने में ऐसी बिबूच गई कैं लरका की कछू खबरई नई रई उर उयै दुपर हो गये। जी खेत की छेवलियन तरैं लरका परो तौ। उतै एक किसान हर हाँक रओ तौ। उयै छेवलियन के छाँयरे में लरका परो नई दिखा पाव उर उतई हुन हर कड़ गओ। हर की नास सैं लरका को पेट फट गओ। उर वौ उतई मर गओं। किसान तौ अपनी धुन में मस्त हतो। जईसैं ग्वालन कौ पूरौ दूद बिक गओ सोऊवा पईसन की पुटरिया लैकें घरैं लौट परी देर तौ भौत हो गई ती। अब उयै लरका की खबर आ गई। सोसन लगी कै भूकौं प्यासौं डरो हुइयै मौड़ा बा करीं डगे घर कै ओई खेत नौ पौची जितै छेवलियन के छायरे में लरकै पार गई ती। लरका तो पैलऊ सें मरई गओ तो। मरे लरका खौ देखकै वा टेर दैकै रोउन लगी। किसान खौ तौ कछू पतोई नई हतो, वौ तौ अपने हर हाकबै में मस्त हतो। ग्वालन कौ रोवौ सुनकै किसान दौरकैं उतै पोचों। अपने हर के फार सैं लरका खौ मरो देख कै पसतान लगो। अपनी गल्ती जान कै ग्वालन सै माफी माँगन लगो। ग्वालन कौ रोवो सुनकै चारई तरप सैं औरतें जुरकै पौच गई। हालत देख कैंपसतान लगी उर ग्वालन सैं पूछन लगी कै बाई आजतौ हरछठ कौ दिन है तुमने कोनऊ गल्ती तौ नई कर डारी। औरतन की बाते सुनकै ग्वालन कन लई कै हओ बैन हम सैं गल्ती तौ भौत बड़ी हो गई। आज कै दिना भैसई कौ दूद मठा खाव जात उर हम पइसा कमाबे के लाने गइया भैस कौ मिलौनी दूद बैच आये। भौतई बड़ो पाप हो गओ बैन हमसैं। लगत कै ओई पाप कौ फलआ भोगने आ रओ हमें। सब जनी बोली कै देखौ बैन अबै कछू नई बिगरो।

तुम जानत तौ सबई हुइयै कै तुमने कितै–कितै दूद बैचो है। जल्दी दौर कैं जाव उर कै आव कैं बाई हरों वौ दूद नई खइयौं वौ गइया भैस कौ मिलौनी दूद है। वा घर–घर जेई कत फिरी जीनें सुनी सो जेई कई कै ओ बाई तोरौ बेटा बाढ़े तेने भौतई अच्छी खबर दै दई। ई तरा सै ऊने पूरे गाँव में ढिढोरा पीट कैंअपने लरका कै लाने ढेरन अर्शीर्बाद लओ। जौलौवा गाँव में केई गई तोनो किसान ने जरिया के काटे से छेंद करकैंउर काँस सैं ऊ लरका कौ पेट जाँकौताँ सी दओ उर उये छेनलन के पत्तन सै ढाँक कैं पार दओं। सबको अशीष तौ मिलई चुको तो तनकई देर में लरका जी परो उर जब वा लौट कै आई सो उयै अपनौ लरका कहर–कहर रोऊत मिलो। ऊने उयै उठाकै छाती सैं चिपका कै कन लगी कै हेमोई हरछठ मइया जेसी अपुन ने हम पै कृपा करी ऐसई सबपै कृपा बनाये रइयौ। सबके गववारन खौ खुशी राखियौं पछाई हमायेई नन्नइया पै पंजा राखै रइयौ। ऐइसै जरिया काँस उर छेवलिया की पूजा करी जात। अबतौ लोग ओइयै हरछठ मानन लगें। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

एक गाँव में एक दूध बेचने वाली ग्वालिन निवास करती थी। उसका परिवार हर तरह से भरा–पूरा और संपन्न था। सास–ससुर, देवरानी–जेठानी और ननदों से घर भरा रहता था। ग्वालिन का मुख्य कार्य दूध, मठा बेचना ही था। वह प्रातःकाल दूध–दही की मटकी सिर पर रखकर निकल जाती थी और गाँव–गाँव में घूमते–घूमते दोपहर के बाद लौट पाती थी। लौटते समय उसके पास रुपयों–पैसों की खासी पोटली होती थी। इतना श्रम करने के बाद भी उसके मुखमंडल पर रंच मात्र भी उदासी नहीं दिखाई देती थी। वह हँसती बोलती सी ही लौटती थी।

अनेक वर्ष तक ग्वालिन की कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई, जिसके कारण वह चिंतित सी रहती थी। संतान के लिए उसने अनेक उपाय किए। देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना और विविध औषधियों का सेवन किया। भगवान् की कृपा से ग्वालिन के यहाँ एक पुत्र उत्पन्न हो गया, जिसके कारण सारे परिवार में आनंद की लहर दौड़ गई। ग्वालिन फूली नहीं समा रही थी। उसे अपनी नवजात संतान के प्रति इतना अधिक लगाव था कि वह उसे गोदी में लेकर ही दूध बेचने जाया करती थी। सारे परिवार का वह एक मात्र खिलौना था। परिवार के सारे लोग उसे गोद में लेकर खिलाया करते थे। ग्वालिन अपने बेटे को एक क्षण भी नहीं छोड़ती थी। क्योंकि उसे बार–बार दूध पिलाना पड़ता था।

इसी तरह एक दिन 'हलषष्ठ' (हरछठ) का व्रत आ गया। यह बुंदेलखण्ड की महिलाओं का प्रिय व्रत है। इस दिन केवल भैंस के ही दूध, मठा का सेवन किया जाता है। हल के जोते हुए अन्न का सेवन करना वर्जित होता है। उस दिन उस ग्वालिन को पर्याप्त आय होने की संभावना

थी। उसके घर में भैंस तो केवल एक ही थी। गायों की संख्या अधिक थी। उसने भैंस और गाय का दूध–मठा मिलाकर दोनों मटकी सिर पर रखकर और अपने पुत्र को गोद में लेकर दूध, मठा बेचने के लिए चल दी। उस दिन वह बहुत जल्दी में थी। उसने सोचा कि मुझे दूध, मठा बेचने के लिए जगह–जगह रुकना पड़ेगा और बार–बार बच्चे को गोद से नीचे उतारना पड़ेगा। अब विलंब के डर से घर लौटना कठिन था। चलते–चलते उसे एक खेत में छोटे–छोटे झाड़ दिखाई दिए और बिलकुल सुनसान वातावरण था। उसने वहाँ रुककर दोनों मटकी सिर से उतारकर नीचे रख ली और फिर एक पलाश के झुरमुट के नीचे पलाश के पत्ते बिछाकर बच्चे को लिटाकर और उसे पत्तों से ढककर दोनों मटकी अपने सिर पर रखकर चल दी। उसने सोचा कि यहाँ मेरा पुत्र सुरक्षित रहेगा। मैं घंटे–दो घंटे में दूध, मठा बेचकर शीघ्र ही लौट आऊँगी। उस दिन ग्रामीण महिलाओं को भैंस के दूध, मठा की ही बहुत प्रतीक्षा थी। उसे बिक्री करने के लिए जगह–जगह रुकना पड़ा। व्यस्तता के कारण उसे बच्चे का स्मरण ही न रहा और उस दिन उसे दुगुना समय लग गया। खूब पैसा मिला और उसकी पोटली दुगुनी हो गई। दोनों मटकी खाली होने के बाद उसका बोझ हल्का हुआ और अचानक बच्चे का स्मरण हो आया। कबीर ने कहा भी है–

माछी गुड़ में गड़ि रहे, पंख रहे लपटाय।
हाथ मलै अरु सिर धुनें, लालच बुरी बलाय।

यह सच है कि लालच में आदमी अंधा हो जाता है। यही स्थिति उस ग्वालिन की हुई। लालच का भूत सिर से उतरते ही वह बच्चे की याद में व्याकुल होती हुई, जल्दी–जल्दी अपने घर की ओर लौट चली। बच्चे को खेत में लिटाते समय उसने कोई ध्यान नहीं दिया था। वह बहुत जल्दी में थी। बच्चे को लिटाकर चली गई थी। उस खेत में एक कृषक हल चला रहा था। उसे क्या पता कि पलाश के पौधों के झुरमुट में कोई लेटा हुआ है। वह तो अपने हल–जोतने में व्यस्त था और ग्वालिन चार घंटे बाद भी लौट नहीं पाई। कृषक के हल के फाल की नोक से बच्चे का पेट फट गया और उसकी वहीं मृत्यु हो गई। कृषक को इस दुर्घटना का कोई पता नहीं लगा। वह बेचारा तो अपने कार्य में व्यस्त था।

ग्वालिन दूध, मठा बेचकर पैसों की पोटली कमर में लटकाकर पाँव बढ़ाती हुई लौट पड़ी। अब उसे अपने बेटे को देखने की जल्दी थी। खेत में पहुँचते ही वह सीधी पलाश के पौधों के झुरमुट के समीप पहुँची। जहाँ वह अपने बेटे को लिटाकर गई थी। झुरमुट में उसका पुत्र मरा पड़ा था। मृत पुत्र को देखकर उसके सिर से लालच का भूत उतर गया और ममता जाग उठी। पुत्र की दुर्दशा देखकर वह दहाड़ मारकर रोने लगी। कृषक तो खेत में हल चला ही रहा था। उसने बीच खेत में बैठी हुई एक स्त्री का रुदन सुना। वह अपना हल रोककर ग्वालिन के पास पहुँचा और वहाँ उसके मृत पुत्र को देखकर बहुत दुखी हुआ। वह अपनी गलती पर पछताने लगा। अनजाने में उससे घोर अपराध हो गया था। किन्तु उस बेचारे का दोष ही क्या था। कहा भी है–

होनहार होतव्यता, तैसी मिले सहाय।
आप न आबै आपसै, ताहि तहाँ लै जाय।।

ग्वालिन का रुदन सुनकर मार्ग चलने वाले नर-नारी वहाँ एकत्रित हो गये। कृषक बेचारा सिर नीचा किए चुपचाप बैठा-बैठा पछता रहा था। ग्वालिन को बिलखता हुआ देखकर कुछ महिलाओं ने उससे पूछा कि क्यों बहिन आज तुमसे कोई अपराध तो नहीं बन पड़ा? सुनते ही वह ग्वालिन बोली कि हाँ मुझसे आज एक बड़ी गलती तो हो गई। आज हलषष्ठी का दिन है। आज व्रत और उपवास में केवल भैंस का ही दूध-मठा उपयोग किया जाता है। मैंने लालचवश गाय और भैंस का दूध-मठा मिलाकर बेच दिया है। ये सुनते ही सब महिलाओं ने कहा कि ये तो तुमसे बहुत बड़ा अपराध बन पड़ा है। इससे तो सारी महिलाओं का धर्म ही नष्ट हो जायेगा। किन्तु अभी गलती सुधर जायेगी। ये बात उस ग्वालिन के गले उतर गई। वह दोनों मटकी वहीं रखकर सीधी उन्हीं घरों पर पहुँची, जहाँ वह दूध- मठा बेच आई थी। उसने उन सभी औरतों के घर जा-जा कर कह दिया कि तुम उस दूध-मठा का आज उपयोग मत करना। वह शुद्ध भैंस का दूध-मठा नहीं हैं। यह सुनते ही औरतों ने उस के पुत्र को ढेर सारा आशीर्वाद देते हुए कहा कि बहिन तुम्हारा बेटा सदा सुखी रहे, तुमने हमारे धर्म को नष्ट होने से बचा लिया ।

जब तक ग्वालिन गाँव की ओर गई, तब तक कृषक ने उसके बच्चे को पलाश के पत्तों पर लिटाकर जरिया के कांटे और कांस से बच्चे के फटे हुए पेट को सिलकर लिटा दिया और उधर उसे ढेर सारा आशीर्वाद मिल ही चुका था। जब वहाँ ग्वालिन लौटकर आई सो उसे अपना बच्चा रोता हुआ मिला। ग्वालिन ने अपने पुत्र को उठाकर छाती से चिपका लिया और उसे स्तनपान कराकर बहुत प्यार किया। ग्वालिन ने वहाँ खड़ी हुई औरतों से कहा कि बहिन! हरछठ मइया की कृपा से हमारे कलेजे के टुकड़े को नव-जीवन प्राप्त हो गया है। हे हरछठ मइया! जैसी आपने हमारे पुत्र पर कृपा की है, वैसी ही सबके बच्चों पर कृपा बनाये रखना। तभी से हलषष्ठी की पूजा में पलाश के पत्ते, जरियाँ के काँटे और काँस का उपयोग किया जाता हैं। आज तो गाँव-गाँव में इस त्योहार के व्रत और उपवास का प्रचलन हो गया है। घर की बड़ी-बूढ़ी माताएँ इस अवसर पर इस कथा को सुना-सुनाकर इस व्रत के प्रति आस्था और विश्वास उत्पन्न करती हैं।

नाँदन भैंस व्रत कथा

सुन्दरपुर मातौली के मलखान भइया कैं दस बारा नग भैंसन के पलेते। एक-एक भैंस एक-एक नाद भर दूद देत तीं। बड़ी भैंस में बढ़ी नाद भर दूद कड़त्तो। ऐसई घर के लोग उकौ नाव नांदन भैंस धरे ते। ओई भैंस कौ परवार इत्तो बढ़ गओ तो कै भैंसन के दस बारा नग हो गए ते। अब दूद घी मठा की का कनें। दूद दही घी उर मठा की कीच सीमची रत्ती घर में। उनके

चराबे के लानें गाड़न चारों भूसा उर खरी की जरूरत परत ती। भैंसन की सार में गोबर की खचर सी रत्ती। मलखान भइया की दोई बउयें गोबर डार–डार कैंअदमरी हो जात तीं। कओं दिन–दिन भर गोबरई डारत रयें। खाबे पीबें तक कौ मौंका नई मिल पाऊतौ उनैं। कन लगत कै वों सोनौ बरें जीसै कान छनें वे सौसत रत्ती कैवा भैंसार कौन काम की कैं हम गोबरई डार–डार कैं मरे जात दूद मठा तो ठीकई है हमाये हाँते तो गोबरई बनो रओ। कजन जे क्याऊ टर जाती तौं तनक जी खौं साता मिल जाती। ऐसी कानात कई जात कैंआँख फूटी उर पीर निजानी उर जासोऊ कई जात कै घरी भरकौ बुरवासन सबदिन कौ आराम। ऐसई गोबर की हेलै ढोऊत–ढोऊत उने बरसौं कड़ गई ती। वे पूरी तराँ से पष्ट पर गई तीं। उर उन संगे फन पटक कैं रै गई तीं। वे दोई जनी हारी थकी दुगई में मन मारै बैठी तीं। उदना हरछठ कौ दिन हतो। खूबई दूद दही उर मठा की बिक्री भईती। ससुर उर सासनै। पईसन के ढेर लग गये तें उदना अकेलै बऊयें तौ इत्ती थक गई तीं कै पूजा करबै की हिम्मतई नई हो रई तीं। कुंजयानी दोई जनी डरी हती पौर में। इतेकई में एक बाबा दौरे में दच्छना लैबै आ धमको वे दोई जनी तनक करों जिऊ कर कैंकन लगी कैं मराज हम औरे भारी संकट में हैं। मरे जात भैंसन कौ गोबर डार–डार कैं मराज ऐसो कोनऊ उपाय बताव जीसै जें भैंसे इतै सै टर जाबैं। बाबा जू बोले कै जा कौन बड़ी बात है। कओं तौ वे कालई सैं इतै से टर जैय उर फिरई बगर में आबे कौ नांव नई लैय। तुम उनकी थानन पै गोबर की छिटी पोतनी के ककरा उर मूँढ़ के टूटे बार डार आइयौ। उर बड़े भुन्सारे उने उल्टे मूसर उर मथानी सै हाँक कै गेवड़ौ नका आईयो। फिर लौटकै ऊ थान पै नई आय। उर तुमाव संकट अपने आप टर जैय उर फिर ई बगर में आवे कौ नांव नई लैय। वे उनकी थानन पै गोबर की छिटीपोतनी के ककरा उर मूँढ के टूटे बार डार आई। उर बडे भुन्सारे उने उल्टे मूसर उर मथानी से हाक कैं गेवड़ौ नका आई। और फिर वे लौट कैं ऊथान पै नई आई। उर उनको संकट अपने आप टर गओ। वे भैंसे लौंट कै घरै नई आई। नांदन भैस अपने परिवार खौं लैके जंगलई में बिलम गई। जब दिन बूढ़ै भैंसे लौंट कै नई आई सोऊ घर में रोवा पोंकी मच गई। जंगल में भैंसन कौ ढुढ़ऊवा पर गओं। तोऊ पंथ नई परों। बऊअन सै गुस्सा में कतन तौं कै आई उर बाबा के कये सै टोटका कर दओं पै अब उनई के मन में उर्दा मूँग से चुरन लगें। भैंसन के बिना घर मे भाय–भाय सो लग रओ तो। न वे बोलै अबकी सै कये का छाती में गतकौ सौ देकै रे गई। चाय जा कैलो वे गुर भरो हँसिया होकै रै गई ना गुटकत बने उर ना उगलत बने। अबका करे सूनी सार देख कै भाँय–भाँय सौ लग रओ तो एकई दिना रो धोकै कट पाव। उतेकई में बेऊ बाबा फिर कउ दोरे में आ गओ। बाब खौ देखतनई दोई बऊयें भीतर सै दौर परी उर ऊ बाबा सै कन लगी कै मराज हमाई गल्ती खौं माफ करियौ उदना गुस्सो में हमन खौं कै आई ती अकेलै अब भैंसन के बिना घर सूनौ–सूनौ हो गओ। पेट पालबे तो अब कछू बचोई नइया घर में। मराज हम तौ गोबर डारत रैय अब तौ आप कोनऊ ऐसौ उपाय बताव जीसै वे हमाई सबई भैंसे घरै वापिस आ जाबैं। बाबाजी बोले जा कोनऊ बड़ी बात नइया। जाव अच्छी तरा सै थानन की सफाई करो। उतै अगरबत्ती लगाकैंपूजा करो। उर फिर ग्योढ़े जाकै टेर लगाव–आव ओ नांदन

आव। उनने उसऊ करौ। उननकी आवाज सुनकै वे जंगल से डिढ़कत आ गई। नांदन भैंस ने नाद भर दूद दओ परिवार के दिन फिर गये एसेई सबई के दिन फिर जावै ।

भावार्थ

सुंदरपुर मातौली नाम के ग्राम में एक मलखान नाम के यादव का परिवार निवास करता था। मलखान के घर में अनेक भैंसें पली थीं। उनकी एक-एक भैंस दस-दस किलो दूध देती थी। मलखान के दोनों लड़के भैंसों की सेवा खुशामद में लगे रहते थे। उन्हें बढ़िया घास-भूसा खिलाना, नहलाना, समय पर पानी पिलाना आदि का पूरा ध्यान रखते थे, जिसके कारण उनकी भैंसें खूब हृष्ट-पुष्ट थीं। उनकी सबसे बड़ी भैंस का नाम 'नाँदन भैंस था, क्योंकि वह एक बड़ी बाल्टी भर दूध देती थी। वे सारी भेंसें उसी की संतान थी, वह सभी भैंसों की माँ थी। सभी भैंसें एक साथ चरने और घूमने-फिरने के लिए जाया करती थी यादव जी के यहाँ दूध-दही और घी का तो भण्डार भरा ही रहता था और परिवार उनकी सेवा खुशामद में रात-दिन लगा रहता था। मलखान जी के दोनों लड़के तो भैंसों को चराने खिलाने और घुमाने में लगे रहते थे और उनकी दोनों बहुएँ रात-दिन गोबर ही डालती रहती थीं। वे बेचारी न तो सुख से खा-पी पाती थीं और न आराम ही कर पाती थीं। वे रात-दिन उन भैंसों को ही कोसती रहती थीं। वे सोचती थीं कि न रहे बाँस और ना बजे बाँसुरी। अच्छा होता कि ये भैंसें कहीं टल जाये तो हमारे सिर का सारा बोझ उतर जाय और हम सुख-शांति से जी सकें। ऐसी ये कहावत ही सत्य है कि 'ऐसा सोना किस काम का कि जिससे कान ही टूट जाय'। वे भगवान से विनय करती रहती थीं कि ये भैंसें हमारे घर से चली जायें, हमें ऐसी धन माया की जरूरत नहीं हैं, जिसके कारण हम लोगों का जीना कठिन हो गया है। इसी तरह रोते-रोते एक दिन 'हलषष्ठी' का त्योहार आ गया। उस दिन महिलाएँ केवल भैंस के ही दूध-दही और मठा का ही उपयोग करती हैं। मलखान के यहाँ तो केवल भैंसों का ही दूध था। उस दिन उनकी खूब बिक्री हुई। रुपयों के ढेर लग गये। सास-ससुर बहुत प्रसन्न थे, किन्तु उनकी दोनों बहुएँ हारी थकीं एक कोने में पड़ी थीं। सास-ससुर की तो जेब गर्म हो रही थी, किन्तु बहुओं का संकट बढ़ता जा रहा था। उन्हें त्योहार की भी कोई सुधि नहीं थी। वे तो सोच रही थीं कि ये सारी भैंसें यहाँ से कहीं चली जायें तो हमारा सारा संकट टल जाय। इसी बीच में एक बाबा दक्षिणा लेने के लिए उनके द्वार पर आ गया। बहुएँ आटा लेकर दरवाजे पर पहुँची और उन्हें दक्षिणा देकर कहने लगीं कि महाराज हम बहुत परेशान हैं। बाबाजी ने पूछा कि बेटियों तुम्हारा घर तो खूब भरा पूरा है। तुम्हें ऐसी कौन सी परेशानी आ गई। बहुएँ बोली कि महाराज हम इन भैंसों का गोबर डालते-डालते थक गये हैं। आप तो ऐसा कोई उपाय बताइये, जिससे ये सारी भैंसें यहाँ से चली जाय और फिर लौटकर न आयें।

बाबाजी बोले कि इसका उपाय तो बहुत साधारण है। तुम उनकी थान पर गोबर छिटी, पोतनी के कंकर और सिर के टूटे बाल डाल दो और बड़े सबेरे उल्टा मूसल और उल्टी मथानी से उन्हें जंगल की ओर रवाना कर दीजिए। फिर वे तुम्हारे घर लौट कर नहीं आयेंगी। इतना कहकर बाबाजी वहाँ से चले गये। बहुओं को तो अपना संकट टालने की पड़ी थी। उन्होंने बाबाजी के निर्देश का परिपालन किया। सबेरे सारे अपशकुन करके भैंसों को घर से बाहर निकाल दिया, फिर वे शाम को लौटकर नहीं आईं। नांदन भैंस अपना परिवार लेकर घने जंगल मे छिप गई। बहुओं का संकट तो टल गया, किन्तु उनके सारे परिवार पर घोर संकट आ गया। शाम को जब भैंसें लौटकर नहीं पहुँची तो सारा परिवार चिंतित हो गया। उनकी सास टेर देकर रोने लगी। उनके ससुर और पति भैंसों को खोजने के लिए जंगल में भटकने लगे। भैंसों के बिना पूरा घर सूना हो गया, बहुएँ अपनी भूल पर पछताने लगीं। वे मन ही मन सोचने लगीं कि हमारी भैंसें वापिस आ जायें, हम तो उनका गोबर कूड़ा साफ करते रहेंगे, अब कभी ऐसी भूल नहीं करेंगे ।

इसी बीच में वही बाबाजी दक्षिणा लेने के लिए फिर द्वार पर आ गये और बहुओं को देखकर बोले कि बेटी अब तो तुम बहुत खुश होगी। तुम्हारा संकट तो टल ही गया होगा। बाबाजी को देखकर बहुएँ रोकर कहने लगीं कि महाराज हमसे बहुत बड़ी भूल हो गई है। भैंसों के बिना तो हमारा सारा घर सुनसान ही हो गया है। बाबाजी हम तो गोबर कूड़ा डालते रहेंगे। अब आप तो कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे हमारी भैंसें फिर से वापिस लौट आयें। बाबाजी बोले कि ये काम भी तुम्हारा पूरा हो जायेगा। तुम अच्छी तरह से भैंसों की थानों की सफाई करो, वहाँ अगरबत्ती जलाकर उनका आवाहन करो और फिर बाहर जाकर टेर लगाओ। तुम्हारी टेर सुनकर भैंसें जंगल से निकलकर दौड़ती हुईं तुम्हारे घर आ जायेंगी। इतना कहकर बाबाजी वहाँ से चले गये।

दोनों बहुओं ने थानों की खूब सफाई की अगरबत्ती लगाकर पूजा की, फिर बाहर जाकर जोर से टेर लगाकर कहा कि ओ नांदन भैंस! जल्दी आ जाओ। बहुओं की आवाज सुनकर सारी भैंसें दौड़ती हुई उनके घर पर आ गईं। खोई हुई भैंसों को देखकर सारे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। बहुएँ अपनी भूल पर पछताने लगीं। प्यार की परिभाषा तो पशु-पक्षी भी जानते हैं। प्यार से तो पत्थर भी पिघल जाते है। ये हलषष्ठी व्रत की ही कथा है जो नाँदन भैंस की कथा के नाम से बुंदेलखण्ड में प्रचलित है ।

करवा चौथ व्रत कथा

एक गाँव में एक भरो-पूरौ परिवार निवास करत्तो। घर में खूब खेती किसानी होत रत्ती। गइयाँ भैंसे खेत सब कछू हतो उनके घर में, कोनऊ तरा की कमी नई हती। घर में माते उर मातैन अच्छे ठाट ठाट सै रत्ते गाँव में। गाँव उर आस पास के लोग उनकौ खूबई आदर सत्कार करत्ते।

माते के सात लरका उर एक बिटिया हती। सबई भइया अपनी घरगिरस्ती के कामन में बिदे रत्ते। सात भइयन के बीच में एक बैन भौतई लाड़ली हती। सब भइयन ने मिल करकै एक अच्छे भरे पूरे घर में बैन कै अच्छे शाके कौ ब्याव कर दओ।

बैन अपने घर में सुख शान्ति सैं रन लगी। मायकौ जादाँ दूर नई हतो। मताई बाप उर भईयन खौं जब बैन की खबर आऊत्ती सोऊ तुरन्तई लुँआ ल्याउत ते मायकौ उर सांसरो दोई भरे पूरे हते। ऊके ऐसई ऐसे सुख भोगत-भोगत कैऊ सालै कड़ गईती। उनकी सातई भइयन के खूब शाके के ब्याव हो गये। मायकें में सात भौजाई उर एक ननद अब का कने आदर सत्कार की। एक दिना मायकई में करवा चौथ आ गई। सबई सातई भौजाई उर बैन ने उपास करों। उनखौं खबर नई रई। वे उदना दिन भर सिलाई करत रई, ऊके पति के शरीर भर में कांटे चुभ गए, उर वौ बीमार हो गओं। करवा चौथ के ब्रत में दिनभर अन्न पानी नई लओं जात। चंदा ऊँगे वे चौथ मइया की पूजा करकै नये उन्ना पैरे जात। उर फिर पानी पियों जात, उर भोजन करें जात। बैन दिन भर पानी के बिना इकदम मुरजा गई। भइयन सैं जौ सब नई देखो गओं। उनन ने सोसी कै चंदा ऊगबै में तौ अबै भोतई देर है। जबनौ तौ बैन अदमरिअई हो जैय। तौ कछू उपाय करो चइयै। जीसै बैन जल्दी खापी लेबैं ।

एक भइया दिन बूड़ई सै पेड़े पै चढ़े गओं। एक भइया नै पेड़ै पै आगी बरत दिखा दई। दो तीन भइया बैन के लिंगा ठाढ़े होकैं कन लगें कै देखो बैन चंदा ऊँग आव। उठौ जल्दी पूजा करकै पानी पीले भोजन करलों भौत देर हो गई तुमें। भौजाई तौ भइयन की चाल समज गई ती सो उन्ने तौ पूजा नई करी। अकेलै बैन ने भईयन की बात पै विश्वास करकै पूजा कर लई। चन्दा खौं अर्ध दै दओं। चौथ मइया की पूजा करकै पानी पी लओं जीसै उनकौ व्रत खण्डित हो गओ। उर चौथ मइया उनसौं नाराज हो गई। भइया हरे उने जल्दी टाठी परस कै ल्आये उर कन लगे कै बैन तुम दिन भर की भूकी हो, भोजन करलो। भइयन के कये सैं जई सै बैन ने पैलो कौर टोरौ सोऊ ऊमे बार आ गओ। दूसरे कौर लेतई में छींक भई। उनकी कछू समज में नई आ रई ती कैं जौ हो का रओ। उन्ने जईसै फिर खाबौ शुरू करो सोऊ उनके सासरे के एक आदमी ने आकै खबर दई के तुमाये पति सख्त बीमार हैं, तुम जल्दी घरैं चलो। खबर मिलतनई भईया बैन खौं लुआ कैं चले, सोऊ गेलई में उनके पती की अर्थी लयें गाँव के लोग मरघट की ओर जा रये तें। पती की अर्थी देखके बैन ने पागलन की तरा अर्थी खौड्डु बीचई गैल में छेंक लई उर अर्थी के सामैं लोट गई। ऊयै लोगन ने भौतई समजाव अकेलै व अर्थी सें लिपट गई। उयैं अपने ब्रत पै पूरौ विश्वास हतो, लोग उयै पागल जान के अर्थी खौं बीच जंगल में छोड़ के चले गये। उन्नें सोसी कैं लास उतै सड़गल कैं समाप्त हो जैय। चील कौवा खालै उयै। ई पगली खौं डरी रनदो। इतै जई सैं लोग लास छोड़कै चल गये सोऊ ऊने उतै एक झुपड़िया बनाकें लास खौं उतई धर लई। लास में काटई कँटे छिदेते कायकै उदना दिनभर सिलाई करत रई ती। ऊने लाश के हरा-हरा कँटे काड़बौ शुरू करो उर चौथ

मइया सैं विनय करत रई, वा उतै रोज चौथ मैया की पूजा करें, उर उनसै क्षमा माँगत रये। ऐसई ऐसै साल भर कड़े गई उर वा कांटे काड़त रई। करवा चौथ आई सो ऊने अच्छी तरा सैं पूजा करी उर पति की आँखन के काँटे काड़े। सोऊ ऊके पति उठकैं बैठ गए उर मड़िया की जगा पै मिहिल बन गओं। मइया की कृपा सैं सबई सुख साधन जुट गये, दोई जने आनंद सै रन लगें। साल भरमें ऊके ससुरार बारन ने सोस लई कै व पागल भग गई हुइयै उतैं सै। उतैं जाकै देखो कैं झुपड़िया की जगा पै मिहिल ठाढ़ो हो गओं। उतई बैठे दोई जने चौपड़ खेल रयेते। बड़ो अचम्भौ भओं सबई खौं। जा हती चौथ मइया के ब्रत की कृपा। चौथ मइया ने बैंन के सुहाग खौं अमर कर दओं। जैसी बैन पै मइया की कृपा भई, ऐसई वे सबपै कृपा करत रये, सबकौ सुहाग ऐसऊ हरौ भरौ बनो रये ।

भावार्थ

एक गाँव में सुसंपन्न परिवार निवास करता था। घर में बहुत अच्छी खेती होती थी। परिवार में अनेक गायें-भैंसें पली थीं। दूध-दही अनाज से भरा-पूरा घर था वह। परिवार के मुखिया माते और मातैन बड़ी शान से रहते थे। आस-पास के गाँवों में उनका खूब आदर सत्कार था। माते के सात लड़के और एक लड़की थी। सातों लड़के घर-गृहस्थी के कार्यों में व्यस्त रहते थे। सात भाइयों के बीच में एक बहिन बहुत लाड़ली थी। सभी भाई उससे प्यार करते थे। धीरे-धीरे अच्छे भरे-पूरे घरों में सातों भाइयों की बढ़िया शादियाँ हो गईं। अच्छी फूल सी सुकुमार और सुंदर वधुओं से घर की शोभा में चार चाँद लग गये। सात-भाभियों के बीच में एक ननद हाथों-हाथों पर रहती थी। सातों भाइयों ने मिल-जुलकर अपनी बहिन की शादी एक अच्छे भरे-पूरे परिवार में कर दी। बहिन की ससुराल उसके मायके से दस-बारह किलोमीटर दूरी पर ही थी। हर पर्व और त्योहार के अवसर पर बहिन आती-जाती रहती थी। ससुराल में वह घर की लक्ष्मी थी, तो वह मायके की लाड़ली बेटी थी।

'करवा चौथ' के त्योहार के अवसर पर उसका बड़ा भाई अपनी बहिन को अपने घर ले आया। आते ही भाभियों ने उसका खूब आदर सत्कार किया। सभी भाभियों ने 'करवा चौथ' का व्रत रखा। भाभियों को देखकर बहिन ने भी उपवास किया। यह महिलाओं का बहुत कठोर व्रत है। इस उपवास में महिलाओं को चंद्रोदय के पूर्व तक निराहार और निर्जल रहना पड़ता है। चंद्रमा को अर्घ्य देकर और चौथ मइया की पूजा करने के बाद ही जल और भोजन ग्रहण किया जाता है। दिन भर भूखी-प्यासी रहने के कारण बहिन पूरी तरह से मुरझा गई थी। अपनी बहिन की दुर्दशा को देखकर सातों भाई बहुत दुखी थे। वे सोचते थे कि हमारी बहिन जल्दी से अन्न-जल ग्रहण कर ले। बहिन दिन भर सिलाई करती रही, जिससे और अधिक थक गई थी। भाइयों को अपनी बहिन पर बहुत दया आ रही थी। जैसे-तैसे पूरा दिन निकल गया और रात हो गई, चारों तरफ अंधेरा छा गया। अभी चंद्रोदय होने में दो-तीन घंटे की देरी थी। सभी भाई मिल-जुलकर उपाय सोचने लगे।

एक भाई बाहर जाकर एक पेड़ पर चढ़कर उस पर आग जलाने लगा। एक भाई खड़ा होकर चलनी दिखाने लगा। दो भाई उसे छत पर ले जाकर बोले कि देखो बहिन चंद्रमा उदित हो गया है। चलो जल्दी चौथ मइया की पूजा करके पानी पी लो, भोजन कर लो, पूरा दिन हो गया है। तुम भूख-प्यास के कारण मुरझा गई हो। भाभियाँ तो उनकी चाल समझ गईं। उन्होंने पूजा प्रारंभ नहीं की। बहिन तो बहुत भोली थी। भाइयों के कहने से चौथ मइया की पूजा विस्तार ली और पंद्रह मिनिट में पूजा पूरी कर ली। उधर उनके भाई जल्दी से थाली लगाकर ले आये। दो भाई खड़े होकर कहने लगे- बहिन जी! अब आप जल्दी से भोजन कर लीजिये, बहुत देर हो गई है। अपने भाइयों के कहने से ज्यों ही उसने रोटी का पहला कौर तोड़ा, तो उसमें बाल आ गया। दूसरा कौर तोड़ते ही बहिन के ससुराल के एक आदमी ने आकर खबर दी कि तुम्हारे पति सख्त बीमार हैं और आप जल्दी से घर चलिए। बहिन उस टूटे हुए कौर को थाली में रखकर उस आदमी के साथ ससुराल की ओर चल दी। उसकी ससुराल वहाँ से समीप ही थी। वे लोग घर पहुँच भी नहीं पाये थे कि बीच में ही उसके पति की अर्थी लिए हुए गाँव के लोग दिखाई दिए। उन्हें देखकर वह पागल सी होकर अर्थी से चिपट गई। लोगों ने उसे बहुत समझाया, किन्तु उसने किसी की बात नहीं मानी। उसने कहा कि मैं लाश को जलाने नहीं दूँगी। अंत में गाँव के लोग हैरान होकर लाश को वहीं छोड़कर चले गये। बहिन उस लाश को सुरक्षित रखकर बीच जंगल में बैठ गई। उसे अपने व्रत और उपवास पर पूरा भरोसा था। वह सोच रही थी कि चौथ मइया की कृपा से मेरा कभी अनर्थ नहीं हो सकता और मैं कभी विधवा नहीं हो सकती। उसने देखा कि लाश के सारे शरीर में काँटे ही काँटे चुभे हुए थे। वह उस पूरे दिन सिलाई करती रही थी। वह अपनी गलती पर पछताने लगी। उसने जंगल से लकड़ी और घास-फूस एकत्रित करके लाश की छाया के लिए एक छोटी सी झोपड़ी बना ली। वह रोज पति के शरीर के काँटे निकालती रही और रोज चौथ मइया की पूजा करके उनसे निवेदन करती रही कि माताजी हमारे पति को शीघ्र ही स्वस्थ कर दीजिये और हमारी गलती को क्षमा कीजियेगा। इस प्रकार लाश के काँटे निकालते-निकालते एक वर्ष व्यतीत हो गया। रोज चौथ मइया की पूजा करने से माताजी उससे प्रसन्न हो गई। उसके शरीर के सारे काँटे निकल चुके थे, केवल आँखों के ही काँटे शेष रह गए।

उसने माताजी से विनय करके ज्यों ही दोनों आँखों के काँटे निकाले, त्यों ही उसके पति ने आँखें खोलकर कहा कि- अरे! यहाँ मुझे कौन ले आया है? इतना कहकर उसका पति उठकर बैठ गया, उसे देखते बहिन ने सुख और शांति की साँस लेते हुए कहा कि 'चौथ मइया' ने मेरे सुहाग को लौटा दिया है। ऐसा कहकर उसने विधि-विधान से चौथ मइया का पूजन किया। चौथ मइया की कृपा से उसकी झोपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े महल खड़े हो गये, अब क्या था? बहिन अपने पति के साथ उस आलीशान भवन में सुखपूर्वक रहने लगी। उधर उसके भाई भी चिंतित थे। भाइयों ने जब बहिन का ठाट-बाट देखा सो आश्चर्य चकित हो गए। ये सब बहिन की पूजा

का ही फल था। उसके गाँव वाले और परिवार वालों ने सोचा कि अब तो वो लाश सड़-गल ही गई होगी या उसे चील, कौए खा गये होंगे। वह पगलू तो कहीं भाग ही गई होगी। फिर भी कुछ लोगों ने वहाँ जाकर देखा तो बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे दोनों तो उस महल में बैठे चौपड़ खेल रहे हैं।

गाँव वालों ने उसके चरणों पर गिरकर पूछा कि ये सब कैसे हुआ है? उसने कहा है कि ये सब चौथ मइया के व्रत-उपवास और उन पर अटूट विश्वास का ही सुफल है। क्योंकि कहा भी है कि 'विश्वासो फलदायक:', तभी से अपने अचल सुहाग की रक्षा करने के लिए महिलाएँ 'करवा चौथ' का व्रत करती आ रही हैं। ये परंपरा बुंदेलखण्ड में सैकड़ों वर्षों से प्रचालित है ।

गुरूवार व्रत कथा

एक सिहिर में एक राजा उर रानी रत्ते। राजा तौ आचार विचार उर चाल चलन कौ भौतई अच्छौ हतो। अपनी प्रजा की भलाई के लाने हमेसई अच्छे-अच्छे काम करत रत्तो। उनके राज में जनता खौं कभऊँ कोनऊ तकलीफ नई हो पाई। राजा संयम नियम उर पूजा पाठ करबे में कभऊँ पाछै नई रये। बड़े भुन्सराँ उठकै सपर खोर कै सत्यनारायन भगवान की पूजा करकै राज काज में जुट जात तें। राजा जित्ते भले आदमी हते उनकी रानी उतनिअई दुष्ट सुभाव की हती। खाय पिये उर मस्ती से परीरये। पूजा पाठ से तौ कछू मतलब हतो नई। ऊके मिहिल में इत्ती धन सम्पत्ति हती कै वा उयै उठाउत धरत-धरत भोत हैरान हो जातती। सो वा ऊमाया खौ खूबई कोसत रत्ती। कभऊँ कभऊँ वा अपने ऐंरेकन लगे कै कजन जा माया बिला जावै तौ हम सुक की नींद सो लेबै। वा सोसन लगे कै ना रहे बाँस ना बजे बाँसुरी। वा अपने ऐंरै हाँत जोरके भगवान बिसनू सैं कन लगतती कै हे भगवान हमई माया सै तौ उकरायदे हो गये। अपुन इयै समेट लिइयौ जीसै हम सुक की नींद सो लेबें। भगवान बिसनू ऊके मन की बात समज गए उर वे भिकारी बनकैं भीक माँगवे के लाने सूदे रानी के घरै पौचे। उयै देखतनई रानी ने ऊसै अपने मन की बात कै दई ऐसी कानात कई जात कै कोऊ कये कऊँ की मदऊ कये मऊ की। उयै तौ अपने मनकी बात उगलबे की परी तीं। ऊने छूटतनई भिकारी सै कई कै भइया तुम हम सै मन मुक्ती भीक लै जाव अकेलै कोनऊ ऐसौ उपाव बताव जीसे जा धन माया हमाये ना सै टर जावै हम इयै समारत-समारत तौ हैरानई हो गये। भिकारी ने रानी सैं कई कै अपुन गुरूवार कौ ब्रत करन लगो सोबेई तुमाई मनसा पूरी कर दैय। जा बात रानी के गरे उतर गई, उर ओई समय सै वे गुरूवार कौ ब्रत करन लगी। वे ब्रत के दिना जेई बिनै करबें कैं हे भगवान ई माया खौं बटोर लिइयौ। राजा खौं तौ रानी की करामात कौ कोनऊ पतो हतो नई। वे मनई मन सोसन सूकन लगे। वे कछू दिना तौ राज मिहिल में रयै उर फिर

सबरौ राज काज छोड़ कै जंगल में जा बसे। वे ऐसे नियम के पक्के हते कै इत्ती बड़ी विपदा आबे पै उन्ने गुरूवार कौ ब्रत नई छोड़ो । वे हर गुरूवार खौं ब्रत करकै काऊये कथा सुनाकै पानी पियत तें।

एक दार राजा ने जंगल में ब्रत करो उर उतै कथा सुनाबे के लाने कोनऊ आदमी ढूढ़ रये ते, इतेकई में उने मुर्दा लये कछू आदमी जात दिखानो। राजा ने उनन खौं गैल में रोक कै कई कै भइया हो पैलाँ तनक रूककै भगवान की कथा सुनलो फिर ईमाटी खौं ठिकाने लगा दिइयौ। जा बात उनन के गरे उतर गई उर वे कथा सुनवे खौ बैठ गये। कथा के सुनतनई वौ मुर्दा उठकै बैठ गओं। उर वे सबजने हँसी खुशी सैं अपने घरे चले गये। राजा तौ हर गुरूवार खौ काऊये ना काऊये कथा सुनातई हते। दूसरे गुरूवार खौं उने एक खेतमें हर हाँकत एक हरवारों दिखानो। राजा ने ऊसै कथा सुनबे की कई ऊने साफ मना करदई हमें फुरसत नइया। भगवान की अनकृपा सैं हर हाकतनऊ हरवारे के पेट में सूर उठो उर वौ उतई मर गओ। उर संगै एक बैलवा मर गओ। जब ऊकी मताई खौं खबर मिली सोवा सब जान गई। ऊने राजा के लिंगाँ जाकै कथा सुनी उर परसाद पाव। जीसै ऊकौ लरका उर बैल जी परो। वा खुशी-खुशी अपने घरै चली गई।

एक गुरूवार खौं राजा खौं जंगल में कथा सुनवे खौं कोऊ नई मिलो। वे बिना कथा सुनये पानी नई पियत ते। उदनावे भौतई हैरान हते वे ढूंढत-ढूंढत गाँव में एक कुमार के ना पौंचे। कुमार के मोड़ा खौं बुखार चढ़ो तौ। वो दवा दारू से ठीक होई नई रओ तो कुमार भौत हैरान हतो। राजा ने कई कें भइया तुम भगवान की कथा सुनलों जीसै हमाव ब्रत पूरो हो जाय। कुमार ने सोसी कैं कथा सुने सै हमाव लरका ठीक हो जैय। वौ कथा सुनवे तेयार हो गओं। राजा ने बड़े प्रेम सै ओई के घर में बैठ कें कथा सुनाई उर फिर पानी पियो। कथा के सुनतनई कुमार कौ लरका ठीक हो गओ। राजा तौ ब्रत खौं अजमाई चुके ते। जंगल में उने का धरा तो। अकेलो उतै तौ नकइया हती। वे जंगल सै नकइया बटोर कें सिहिर में बेचने लै जात ते। भगवान की कृपा सै वे उनकी नकइया चौगुने भाव सै बिकन लगी। ऊसै वे पूजा कौ सामान बजार सैं ल्याकैं जंगल में हुन गुरूवार की पूजा करत रत्ते। भगवान की कृपा से उनके दिन अच्छी तरा सें कटन लगे। उतै उनकी रानी की हालत खराब हो गयी ती, धनमाया तौ पैलऊ बिला गई ती। वे भूकन मरन लगी ती। एक दार उन्ने अपनी बैन सै पाँच सेर नाज खाबे खौं मंगुगाव तौ। सुनतनई बैन सन्न होकै रै गई वा सोचने लगी कै हमाई बैन तौ रानी हती ऊकी इत्ती जांदा हालत काय बिगर गई।

रानी हैरान तौ बनी रई उर फिर गुरूवार कौ ब्रत शुरू कर दओ भगवान की कृपा सै हरा-हरा उनके दिन फिरन लगे। उर उन्नो जां की तां धन माया आ गई, जीसै वा पैलऊ हैरान हती। अबकी दार ऊने ऊमाया कौ अच्छौ उपयोग करो। कुंआ-बावरी खुदवाये, बाग-बगीचा लगवाये, लरकन खौ पढ़बे स्कूल खुलबाये, धर्मशाला बनवाई। राजा की प्रजा हरतरा सै सुखी रन लगी। उतै राजा खौं जंगल में रत-रत बिलात दिना हो गये ते। उने अपनौ भौत अच्छो लगो। राजा खौं राज

हरोभरो देखकै भौतई खुशी भई। वे राजा भये उर वे रानी भई। ऐसौ प्रभाव है गुरूवार के व्रत को। जीसै सबके दुख दालुद्दुर अपने आप दूर होजैय। उर परिवार खौं हर तरा के सुख साधन अपने आप मिलन लगें।

भावार्थ

किसी नगर में एक राजा और रानी रहते थे। राजा प्रजा पालक, धार्मिक, चरित्रवान और व्यवहार कुशल था। वह अपनी प्रजा का हित-चिंतक था। उसके राज्य में प्रजा पूर्ण सुखी और समृद्ध थी। कभी किसी को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं हो पाया। राजा प्रात: काल स्नान ध्यान से निवृत्त होकर अपनी प्रजा-के कल्याण में संलग्न हो जाते थे। उनकी भगवान सत्यनारायण की पूजा करने में विशेष रुचि थी। पूजा के बाद ही वे राजमहल से बाहर निकलते थे। राजा जितने भलेमानुस और सात्विक वृत्ति के थे। उतनी ही दुष्ट स्वभाव की उनकी महारानी थी। उसे जनकल्याण और पूजा पाठ से तो कोई मतलब था ही नहीं। उनके रनिवास में सुख के साधन और धन संपत्ति भरी पड़ी थी कि वह उसे उठाने और रखने में ही परेशान हो जाया करती थी। वह मन ही मन उस धन-संपत्ति को गालियाँ देती रहती थी। वह भगवान से विनय किया करती थी कि भगवान आप इस धन माया को जल्दी उठा लेना। जिससे मैं सुख की नींद सो सकूँ। ऐसी कहावत कही जाती है कि- 'आँख फूटी पीर निजानी'। भगवान तो सबके मन की बात जानते ही हैं। वे रानी की मनोभावना को अच्छी तरह से समझ गये और एक भिखारी का रूप धारण करके रानी के राजमहल के द्वार पर भीख माँगने के लिए पहुँच गये। उनको देखते ही रानी ने अपने मन की बात बाबाजी से कह डाली। रानी बोली कि बाबाजी आप मनचाही भीख ले जाइये, किन्तु कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे ये हमारी सारी धन संपत्ति नष्ट हो जाय। इसको सँभालते-सँभालते तो हम हैरान हो गये हैं। ना रहे बाँस और ना बजे बाँसुरी। यदि संपत्ति नहीं रहेगी तो हमारी सारी परेशानी अपने आप दूर हो जाएगी। बाबाजी बोले कि रानीजी आप गुरुवार का व्रत कीजिये, वही तुम्हारी मनोवांछा पूर्ण कर देंगे। रानीजी को बाबाजी की बात बहुत अच्छी लगी और वे गुरुवार का व्रत करने लगीं। अपना व्रत करने के बाद वे भगवान से यही निवेदन किया करती थीं कि भगवान आप हमारी सारी संपत्ति को समेट लीजियेगा। राजा तो अपने राजकाज में व्यस्त थे। उन्हे रानी के कुटिल षडयंत्र का कोई पता नहीं था। न जाने किस कारण से उनके मन में चिंता उत्पन्न हो गई और चिंता के कारण उनका शरीर क्षीण होने लगा। वे कुछ दिन तक तो दुखी मन से राजमहल में निवास करते रहे और फिर अपना राज भवन छोड़कर जंगल में निवास करने लगे। जंगल में अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करने के बाद भी उन्होंने अपने संयम, नियम और भाव भक्ति का परित्याग नहीं किया। वहाँ भी वे लगातार गुरुवार का व्रत करते रहे। बड़ी से बड़ी विपदा आने के बाद भी उन्होंने गुरुवार के व्रत को नहीं छोड़ा। महारानी के पागलपन और हठधर्मिता के कारण

उनकी धन-संपत्ति और राजपाट सब चौपट हो गया। विवश होकर जंगल में निवास करना पड़ा, किन्तु अपने धर्म-कर्म पर अडिग रहे। वे हर गुरुवार को व्रत रखते थे। विधिवत् भगवान की पूजा करके किसी न किसी को कथा सुनाकर ही जलग्रहण करते थे।

एक बार राजा ने व्रत किया और कथा सुनाने के लिए जंगल में कोई दिखाई नहीं दिया। वे आदमी को खोज-खोज कर परेशान हो गये। दिन भर भूखे-प्यासे बैठे रहे। शाम के समय उस जंगल में अर्थी लिए हुए कुछ लोग दिखाई दिए। उन्हें रोककर राजा ने कहा कि भाइयों पहले आप लोग भगवान की कथा सुन लीजिये, फिर आप अन्त्येष्टि संस्कार कीजिये। उन लोगों को राजा की ये बात बहुत अच्छी लगी और वे सबके सब राजा के पास कथा सुनने के लिए बैठ गये। राजा ने प्रसन्नतापूर्वक उन सबको कथा सुनाई, सारे लोगों ने रुचि पूर्वक भगवान की कथा सुनी। भगवान की उस पुनीत कथा के प्रभाव से अर्थी पर रखा हुआ मुर्दा उठकर बैठ गया। उसको देखते ही परिवार के लोगों को बहुत प्रसन्नता हुई और वे सबके सब प्रसन्नतापूर्वक अपने घर चले गये। राजा तो हर गुरुवार को व्रत करके किसी न किसी को कथा सुनाने के लिए खोजते ही थे। एक गुरुवार को उन्हें खेत में हल चलाता हुआ किसान दिखाई दिया। राजा ने उससे कहा कि भइया थोड़ी देर के लिये हल रोककर कथा सुन लीजिये। किसान ने साफ मनाकर दिया कि मुझे तुम्हारी कथा सुनने का समय नहीं है। कथा के प्रति उपेक्षा भाव देखकर भगवान उससे रुष्ट हो गए। अचानक उसके पेट में असहनीय पीड़ा हुई और वह उसी खेत में गिरकर मर गया और साथ में उसका एक बैल भी मर गया, जिसके कारण हमेशा के लिए उसका हल रुक गया। लड़के की मृत्यु का समाचार सुनकर उसकी माता रोती हुई वहाँ पहुँची। जाते ही वह सारी स्थिति समझ गई। उसने राजा के समीप जाकर पहले तो भगवान की कथा सुनी, प्रसाद ग्रहण किया। अपने पुत्र की भूल के लिए भगवान से क्षमा माँगी। दया सिन्धु भगवान उससे प्रसन्न हो गये और किसान और उसका बैल जीवित होकर खड़ा हो गया। उसकी माता पूर्ण संतुष्ट होकर अपने घर लौट गई।

एक गुरुवार को राजा को कथा सुनाने के लिए जंगल में कोई नहीं मिला। वे कथा सुनाये बिना पानी नहीं पीते थे। उस दिन वे बहुत परेशान थे और खोजते-खोजते गाँव में एक कुम्हार के घर पहुँचे। वहाँ जाकर देखा कि कुम्हार का लड़का बीमार पड़ा है। इलाज कराने के बाद भी ठीक नहीं हो पा रहा है। बेचारा कुम्हार अपने पुत्र को बीमार देखकर बहुत दुखी था। राजा ने उससे कथा सुनने के लिए कहा। कुम्हार ने सोचा कि कथा सुनने से हमारा पुत्र स्वस्थ हो जायेगा। यह सोचकर उसने स्नान करके श्रद्धापूर्वक बैठकर कथा सुनी। भगवान की कृपा से उसका पुत्र स्वस्थ हो गया और उसी समय से वह कुम्हार गुरुवार के व्रत के प्रभाव को अच्छी तरह से समझ गया। जंगल में उनके लिये रखा ही क्या था? वे जंगल की सूखी लकड़ियाँ बटोरकर नगर में बेचने चले जाते थे। भगवान की कृपा से लकड़ियों के दुगुने-चौगुने दाम मिल जाते थे, जिससे वे पूजा की सामग्री

क्रय करके विधिपूर्वक गुरुवार की पूजा करते थे। भगवान की कृपा से जंगल में अकेले रहकर भी उनके दिन सुखपूर्वक व्यतीत होने लगे थे।

रानी की दुर्भावना से उसकी सारी संपत्ति तो नष्ट हो ही चुकी थी। वह वहाँ रहकर भूखों मरने लगी। दर-दर की ठोकरें खाने लगी। दाने-दाने को मोहताज हो गई। एक दिन उसने अपनी बहिन से पाँच किलो अनाज उधार माँगा। यह देखकर उसकी बहिन को बड़ा अचंभा हुआ। उसने सोचा कि मेरी बहिन तो महारानी थी, आज उसकी आर्थिक स्थिति इतनी अधिक खराब क्यों हो गई? जो उसे मुझसे अनाज उधार माँगना पड़ा। रानी ने परेशान होते हुए भी गुरुवार का व्रत प्रारंभ कर दिया। भगवान की कृपा से उसके दिन लौटने लगे। उसके पास पहले जैसी धन संपत्ति आ गई। अब वह धन का मूल्य समझने लगी और वह अपनी संपत्ति का सदुपयोग करने लगी। उसने उस धन के द्वारा जन-कल्याण के कार्य प्रारंभ कर दिए। गाँव-गाँव में कुएँ बावड़ियाँ और तालाब बनवाये। अस्पताल बनवाये। गाँव-गाँव में बच्चों को पढ़ने के लिए पाठशालाएँ खुलवाई, खूब दान व पुण्य किया। व्रत-पूजा और उपवास में मन लगाया। धर्मशालाएँ खुलवाई उनके राज्य में प्रजा सुखी और समृद्ध थी। जंगल में रहते-रहते राजा को अनेक वर्ष व्यतीत हो गए और वे लौटकर अपने राजमहल में आ गये। अपने राज्य को हरा-भरा देखकर राजा को बहुत प्रसन्नता हुई। फिर राजा रानी प्रसन्नता पूर्वक रहने लगे। ऐसा होता है गुरुवार के व्रत का प्रभाव ।

शुक्रवार व्रत कथा

ऐसै-ऐसै एक डुकइया रत्ती। डुकरा तौ भौत पैलऊ सुर्ग सिधार गओ तो। डुक्को के सात लरका हते, उर सातइन कौ साके कौ ब्याव हो गओ तो। सातई लरका उर बऊये एकई घर मे रत्ते। उनमें से छै लरका तौ घर गिरस्ती को काम करकै खूब पइसा कमाऊतते, अकेले हल्कौ लरका आवारा बनो नाय माय घूमत फिरत रत्तो। ऊकी तौ ऐसी किसा हती कै हाँत पाँव के काय ली उर मौंमें मूछें जाँय। वौ इत्तो अलाल हत्तौ कैं काम की बेरा तौ नाय माय फिरत रये। उर खाती बेरा गोड़े पसार कै बैठ जात तो। ऊकी मताई ऊसैं मनई-मनई मन नाराज बनीं रत्ती। मताई अपने छैंई कमऊआ पूतन खौं तौ अच्छे प्रेम सैं खुआवती। फिर छैइयन के खाये जो जूठन बचतती उयै हल्के लरका खौं खुआवे खौं बटोर कै धर लेतती। ऊकी धरवारी मताई की दुआ भाँती देख कैं मनई-मनई जरत रत्ती। एक दिना जब उयै राई नई आई सों ऊने अपने धरवारे खौं सब बीन-बीन कै सुना दई। घरवारे खौं ऊकी बात कौ विश्वास नई भओ। वौ बोलो कै लुगाइयन में तो जरबे-बरबे की तौ आदत होतई है। तै हमाई मताई खौं झूठो अलच्छया लगाऊत। हम तौ सबसै हल्के हैं ईसै हमाई मताई कौ हम पै सबसे ज्यादा लाड़ प्यार है। हम करे चाय नई करें ईसै का होत? हमाये छैई भइया तौ काम करतई है। अरे हमतौ सबसै हल्के आँय सो हमाई तौ ऊसई कच्ची लोई है। ऊनें

मन समझाबे खौं इत्ती कतन तौ कैदई अकेलै मन मे घुना बीदी सी लग गई, ऊनें सोसी के आज जौ सब अपनी आँख सै देख लओ चइये। वौ बुखार कौ बहानौ बनाकै पिछौरा ओढ़ कै मई चौका में पररओ। उर मोगौ चालो परो-परो सब देखत रओ। मताई ने अच्छे मीठे-मीठे लडुवा बनाके धर लये। पैला तौ ऊने अपने छैई लरकन खौं बड़े प्यार सै बैठारकै लडुवा पर्स-पर्स कैं खुआये। उनकी बा जूँठन खौं बटोर-बटोर कै एक बड़ो सौ लड्डुवा बनाकै धर लओ। जौ सब तमासौ परो-परो पिछौरा में हुन देखत रओ। अपनी घरवारी की बात सोरा आना साँसी हो गई। वौ मनई मन जर वर कैं लाल होरओ तौ। मताई ने तनक देर में अवाज दई- उठो भइया ब्याई कर लो। सुनतनई बोलो कै मताई आज हमाई तबियत ठीक नइयाँ। हमें आज कछु नई खानें। मताई की तौ फूँद मे हुन कड़ गई। बा तौं जा चाऊतई हती कैं हम इयै थोप-थोप कें मरे जात, उर जौ पड़ा सौ चरत बैठो रत। वौ बोलो कै मताई अव हमें इते नई रने। हम कछू दिना खौं परदेश जान चाऊत। हओ चले जाव भइया इतै ठलुआ रए में का धरो। जब कछू करो धरो तबई कछू समज मे आये, उर आटे दार कौ भाव पतो चलें। बड़े भुन्सरा ऊनें अपनी मताई के पाँव परें उर भूकों प्यासौ घर सें वायरे निकर गओ। जाती वेरा ऊने सोसी के अपनी घरवारी सै मिलत जाय। अकेले वा घर में क्याँ ऊनई दिखानी। बायरें कड़ो सोऊ उयै पछीतैं वा कण्डा पाथत दिखानी, तब ऊके लिंगा जाके कन लगो कैंतुमने साँसी कई ती कै हमने अपनी मताई की करामात खौं अपनीं आँखन सैं देख लओ। अब ऐसे घर में रैके हम का करें। सो कछू दिना खौं हम परदेशे जा रये है। तुम जादाँ चिंता नई करियों। हम जल्दी लौट आँय। तुम निसानी के लानें हमाई जा अँगूठी उगइया में पैर लेव। जीसैं तुमाई चिनारी बनी रयै। कजन तुमनौ कछू होय तुम हमें कछू चीने खौं दे देव। अब ऊनो का धरो तौ वे गोबर सै भिड़े हातई हते। सो ऊने वे उनके कुर्ता के पछारी उल्छार दये। उर ठाढ़ी होकै अंसुआ पोछत कन लगी के तुम हमें इते कीके सहारे छोड़ कै जा रये हो। इतै हमाई खबर दबर लैवे कौ बैठो। उन्ने कई कै तुम कछू दिना रो धोके काटियो, हम कछू दिना में कछू कमा धमाके जल्दी लौट आँय उर चल दये। वा सोसन लगी कै हमने अपने हाँतन अपने पाँव पै पथरा पटक लओ। ना हम उनसें कते उर नावे घर छोड़ते। अकेले मताई कौ दुराभाव हमसै देखो उर सओ नई गओ। चलो एक दिना कभऊँ निपूती होने ती। जब जैसी जो भाग में बदी हुइये सो भोगें। ऐसी सोसकैं वा छाती में गतकौ दैके उर हाय साँस लैकै रें गई।

हल्कौ लरका भूकौ प्यासौ चलत-चलत दस कोस की मंजिल पार करकै एक बड़े से गाँव में पौंचो। उतै एक सेठ की बड़ी दुकान दिखानी। सूदौ उनई सेठ कै दौरै पौच गओ। सेठ जी सैं दुआ सलाम भई, अपनौ नाव गाँव उर पूरौ परिचय दओ। उर ऊने सेठ सैं कई कै हम कछू दिना तुमाई दुकान पै काम करन चाऊत। सेठ जी तौ अकेलई हते। उनें कौनऊ ना कोनऊ सहारौ तौ चानई हतो। वे उयै अपने इतै राखवै खौं तुरतई तैयार हो गये। हल्के भइयाने उनके लिंगा, खूब मन लगाकै काम करो जीसै दुकान की आमदनी चौगुनी हो गई । सेठ ने ओइयै दुकान कौ मालक

बना दओ। सबई गिरस्ती ओई के सिर सौंप दई कातौ ऊके हाँत में टका नई हतौ उर का आज वौ लाखन में खेलन लगो। जो तौ समय कौ फेर है। आदमी के भाग की बताव को जान सकत। ऐसई ऐसे उतै रत-रत दस बारा बरसै कड़ गई। वौ उतै इत्तौ बडों सेठ बनकै घर गिरस्ती में ऐसौ बिवूच गओ कै घरबारी की खबरई नई रई। बिचारी की हालत तौ पैलाँ खराब हती उर अब सो कनई का है बिना धनी धोरी की हो गई ती। अब उयै पूरे घर कौ गोबर पानी करने आउत तौ उर फिर जंगल से नकइयँन कौ गड्डा ल्याउनें आउत तो। तब कऊँ दिन में रूखी सूकी चार रोटी मिलतती। उने खाकै अकेली इँदयारे में डरी रत्ती। डरी-डरी अपने भाग खौं कोसत रत्ती।

एक दिना वा रोज घांई जंगल कुदाऊ नकइया लैबे जा रई ती। उदनाँ शुक्रवार कौ दिन हतो। उयै गैल में कछू जनी संतोषी माता की पूजा करत दिखानी। वा सूदी उतै जाकै बैठ गई, सबई जनी गुर उर चना चढ़ाकै संतोषी माता की पूजा कर रई। ती उतै बैठ कै ऊनै कथा सुनी, उर हात जोर कै कन लगी कैं माता हमाई मनसा पूरी कर दिइयौ। हम हर शुक्रवार खौं जैसी लटी मोटी बने सो तुमाई पूजा करे। उर वा उदनई सैं थोरे से चना गुर लेके हर शुक्रवार खौं पूजा करन लगी। संतोषी माँ की कृपा सै ऊकै घरबारे खौं हर-हर बेर ऊकी खबर आउन लगी। उर वे सेठ से कछू दिना की कैकै बिलात केरे रूपइया बाँध कैं अपने घर कुदाऊँ चल दये। संतोषी माता ने बुढ़िया कौ रूप बनाकै उयै घरबारी की खबर करा दई ती। वा विचारी नकइयँन खौं बेचकै अपनौ पेट भरत्ती। उदना शुक्रवार के दिना ऊकी नकइयां भौतई माँगी बिकी। सौ ऊनें उदना ब्रत करबे की सोसी। उर मन लगाकै ब्रत करन लगी। इतेकई मे उयै सामै सें धूरा उड़त दिखानी। ऊनें माता सै पूछी कै माता जू जा धूरा कायकी आ उड़ रई। संतोषी माँ कनलई कै बेटा अव तुमाये दिन फिर रये है। तुमाये पती परदेश सै लौट के घुरवा पै बैठे धरै आ रओ है। तुम इन नकईयन कै तीन हल्के-हल्के गट्टा बनालो। एक नदी के किनारे एक मन्दिर नौ उर एक मूँढ़ पै धरकै घरे लै जाकै चुनी भुसी खावे खौं उर नरेल्ली में पानी माँगियौ। पैलातौ नदिया पै सपर खौर के भोजन बनाकै खैय उर फिर मन्दिर पै आकै पूजा करें उर वे घरे जाकै तुमाई दुरदसा देखै सोऊ ऊकी हिलहिली भर आय। ऊकौ घरवारौ पैला नदिया पै गओ। ऊनें अच्छी तरा सै नदिया में सपरो खोरो, उन नकईयन से रोटी बनाई उर खापी कै आराम करो उर फिर वौ देवी जी के मन्दिर नौ पौचो। नकईयन खौं वार कै अच्छी तरा सै हवन पूजन करो। उर फिर घुरवा पै बैठकै सूदौ अपने घरें पौचो। वौ घर के दौरे पौंचऊ हतो। इतेकई में मूँढ़पै गट्टा धरै फटी पुरानी मैलीसी धुतिया पैरे ऊकी घरवारी दोर में पौंच गई। उयै देखतनई ऊने अपनी घरवारी खौं पैचान लओ। ऊने जातनई ओई कै मौपे अपनी सास खौं जोर सै टेर कै कई कै ओ सासो वाई सुनो तौ जे नकइया लै लो उर हमाये खावे चुनी भुसी देदो उर पीवे खौं नरेली में पानी देदो। जा सुनतनई लरका बोलो कै मताई हम जौ का देख सुन रये। मताई बोली कै भइया वा तौ तुमाये सामै फाय आ दिखारई। तुमैं इतै सै गये बा तबई सै ऐसई नाय माय फिरत रत। ना कछू करें उर ना धरै खावे खौं सो इयै चार दार चाने आऊत।

वा तौ तुमाये सामै तमासौ आ दिखा रई वौ समज तौ सब गओ घरवारी की दसा देखकैं ऊकी आँखन में अंसुआ आ गये। पईसन की तौ उयै कोनई कमी हती नई वौ अपनी घरवारी खौ लेआकै अलग मकान में रन लगो। घरवारी ने अच्छे नहा धोकै तेल काजर की करी। खूबई सिंग्गार करो उर अपने पति के गरे लगकै सुखसै सोऊत रई। ऊने रो रोकै पूरौ हाल सुनाव उर फिर ऊनें संतोषी माता की कृपा कौ वर्णन करो। दो चार दिना में जब शुक्रवार आव सो ऊने सोसी कै हम इतने दिन सै संतोषी माता कौ व्रत कर रये उर उन्नें पग-पग पै हमाई रक्षा करी। उनई की कृपा सै हमाई मनसा पूरी भई। भूले भटके पती देव बारा बरस में लौटकै अपने घरै आ गये। आज हमें ब्रत कौ उद्‌यापन कर दओ चइये। घर में अब कोनऊ कमती तौ है नइया। ऊकी जिठानी अब उयै देख-देख कै जरन बरन लगी। ऊनै अपनई परवार के मौड़ी-मौड़न खौं न्योत दओ। उदना खटाई नई खाने आऊत मताई तौ पैलऊ सैं जरी भुनी तौ बैठई हती। उनन ने अपन लरकन खौं खटाई खोआ कै पौचा दओ। जीसै ऊकौ ब्रत खंडित हो गओ। उर माता जी नाराज हो गई। उर राजा के सिपाई ऊके घरवारे खौं पकर के लै गये। जिठानियन ने ऊखौं खूब ताने मारे उर खूब खरी खोटी सुनाई, उर फिर वऊ दुखी होकै माता कै मन्दिर में पौची। माता ने कई कै देखो तुमाये उद्‌यापन मे बिघन आ गओ। ऐई सैं तुमे हैरान गती हो गई। जाव अब तुमाव पति घरै आ जैय। अब तुम भूल कै परवार के लरकन खौं नई न्योतियौ। बामुनन के लरकन खौं बुलाकै उद्यापन करियौ, जीसै तुमाव काम सफल हो जैय। अगले शुक्रवार खौं ऊनें बामनन के लरकन खौं न्योत कैं उद्‌यापन करो। जीसै ऊकौ उद्‌यापन अच्छी तरा सैं पूरौ हो गओ। माता खुश हो गई, उर माता की कृपा सैं नवें मइना में ऊके लरका भओ। अब वा मा की कृपा सैं हर तरा सैं भरी पूरी हो गई। एक दिना संतोषी माता ने ऊकी परीक्षा लैंन चाई। उन्नें एक बूढ़ी डुकरों कौ रूप धारण करकैं मूँढ़ फिकारै मैलीधुतिया पैरे मोमै गुर छवायें माछी भिनकाऊत पैला तौ भियानौं रूप धरै और लरकन कै दौरे पौची। ऊकौ भियानौ रूप देख कै दूरई सैं अपने किवार लगा लयें। हल्की बऊ छत्त पै चड़ी जौ सब देख रई ती। ऊने तौ दूरई सै पैचान लओ कैं अरे जेतौ संतोषी माता आँय। नैचें उतरकै वा उनके गोड़न पै गिरी उर हाँत पकर कैं घर के भीतर लेआ गई। उनके भीतर पौंचतनई ऊकौ घर जगर-मगर हो गओ। हर तरा के सुख साधनन सैं घर भर गओ। ऊने चरनन पै गिरकै कई कै माता हम तौ नादान हैं, आपके चरन सेवक हैं। ऐसऊ पंजा राखैं रइयौ। तनक देर में मुसक्या कैं माता जी बिलीन हो गई उदनई सैं माता की कृपा उनन पै हमेसई बनी रई। उर उनकौ उजड़ो भओ, परिवार पूरी तरा सैं आबाद हो गओ। ऐसी होत संतोषी माँ की कृपा। जीपै उन की कृपा होत वे कभऊँ दुखी नई हो सकत। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

एक गाँव में एक बूढ़ी माता जी निवास करती थी। उनके पति-देव का बहुत पहले

स्वर्गवास हो गया था। माताजी के सात पुत्र थे। उन सातों पुत्रों की समय पर शादियाँ हो चुकीं थीं और सातों लड़के और सातों बहुएँ एक ही मकान में निवास करते थे। उन सबका भोजन एक साथ एक ही मकान में बनता था। उनमें से लड़के तो अपनी घर-गृहस्थी का काम संभालने लगे थे। मेहनत करके खूब रुपये कमाते थे, जिससे उन छहों लड़कों पर माता जी का बहुत लाड़-प्यार था उनका सबसे छोटा लड़का कुछ भी नहीं करता था और आवारा बना इधर-उधर घूमता-फिरता था। माता जी उससे मन ही मन नाराज रहती थीं। माताजी पहले छहों लड़कों को एक साथ बैठाकर प्रेम पूर्वक भोजन कराती थीं और फिर उन छहों की जूठन बटोरकर रख लेती थीं। छोटे लड़के के आने पर वह जूठन परोस देती थीं। वह चुप-चाप जूठन खाकर बाहर निकल जाता था। छोटी बहू को माताजी का पक्षपात-पूर्ण व्यवहार अच्छा नहीं लग रहा था। किन्तु डर के कारण कुछ कह नहीं पा रही थी, क्योंकि उसका पति अकर्मण्य था। वह मन ही मन जलती-भुनती रही।

बहुत दिन तक तो उसने ये बात किसी से नहीं कही, फिर भी भीतर ही भीतर उफान सा आ रहा था। एक दिन उसने अपने पति से माता जी के उस पक्षपातपूर्ण व्यवहार की सारी कहानी कह सुनाई। पहले तो उसको अपनी पत्नी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने अपनी पत्नी की भर्त्सना करते हुए कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। माताजी तो मुझसे सबसे ज्यादा प्यार करती हैं। सबसे छोटी संतान पर माता-पिता का सबसे ज्यादा लाड़-प्यार होता है। औरतों में तो जलने-भुनने की आदत होती ही है। उसने पत्नी को तो डाँट-फटकार कर शांत कर दिया, किन्तु उसे अपनी माँ के प्रति मन में संदेह उत्पन्न हो गया। पत्नी से तो वह कहता ही गया कि अरे! हमारे काम करने और न करने से क्या होता है। हमारे छहों भाई तो पैसे कमाते हैं। छोटा होने के कारण, मुझे तो हर तरह की छूट है। इतना सब कहने के बाद भी वह अपनी माँ की परीक्षा लेना चाहता था। उसने सोचा कि 'रस्सी के बिना, सर्प नहीं बन सकता' बात तो जरूर कुछ न कुछ होगी। एक दिन वह बुखार का बहाना बनाकर चुप-चाप घर में लेट गया। वह माताजी की गतिविधियों को अपनी आँखों से देखना चाहता था। वह घर में पड़ा-पड़ा सब देख रहा था ।

माताजी ने अच्छे मीठे-मीठे लड्डू बनाकर रख लिए। पहले तो उसने छहों लड़को को प्यार से परोस-परोसकर लड्डू खिलाये और फिर उन सबकी जूठन बटोरकर एक बड़ा सा लड्डू बनाकर रख लिया। वह पड़ा-पड़ा सब कुछ देखता रहा। उसने अपनी पत्नी की सत्यता की परीक्षा ले ली। वह मन ही मन माताजी के दुर्व्यवहार से बहुत क्रोधित था। थोड़ी ही देर में उसकी माता ने पुकारकर कहा कि भइया उठिये, व्यालू कर लीजिये। उसने कहा कि माता जी मेरी तबीयत आज ठीक नहीं है। मैं भोजन नहीं करना चाहता। उसकी माँ तो ये चाहती ही थी कि मैं इसे बना-बना कर खिला रही हूँ और यह पड़ा-पड़ा मुफ्त का खाता रहता है। उस छोटे लड़के ने कहा कि माताजी अब मैं यहाँ नहीं रहना चाहता, कुछ दिन के लिए परदेश जाना चाहता हूँ। माताजी ने कहा कि बेटा तुमने ठीक ही सोचा है। यहाँ हाथ पर हाथ रखे बैठे रहने में क्या रखा है। जब तुम चार पैसे

कमा कर खर्च करोगे, तब कुछ तुम्हारी समझ में आयेगा कि घर-गृहस्थी कैसे चलाई जाती है। वह बड़े सबेरे उठा और अपनी माता के चरण स्पर्श किए और भूखा-प्यासा घर से बाहर निकल गया, उसने सोचा कि जाते समय अपनी पत्नी से मिलता जाऊँ, किन्तु वह घर में कहीं भी दिखाई नहीं दी। बाहर निकलते ही उसे अपनी पत्नी पिछवाड़े में गोबर पाथती हुई दिखाई दी। उसने अपनी पत्नी से कहा कि तुम सही कहती थी। मैंने अपनी माँ के प्रतिकूल व्यवहार को अपनी आँखों से देख लिया। अब ऐसे घर में रहकर हम क्या करेंगे? इसी कारण से मैं घर छोड़कर अब परदेश जा रहा हूँ, तुम ज्यादा चिंता मत करना। मैं शीघ्र ही लौट आऊँगा। उसने पत्नी से कहा कि तुम मेरी ये अँगूठी अपनी अँगुली में पहिन लो, जिससे तुम्हें मेरी याद बनी रहेगी। यदि तुम्हारे पास कुछ निशानी और पहिचान हो तो तुम हमें दे दो। पत्नी बोली कि मेरे पास क्या रखा है, ये गोबर के सने हुए हाथ हैं। सो हम इन हाथों के चिन्ह आपके कुर्ते के पीछे बना देते हैं। इतना कहकर उसने वे गोबर के हाथ कुर्ते के पीछे लगाकर आँसू पोंछ कर कहा कि आप मुझे किसके सहारे पर छोड़कर जा रहे हैं। यहाँ हमारा कौन बैठा है? हमारा यहाँ पालन-पोषण कौन करेगा? जब तुम्हारे साथ तुम्हारी माँ ही ऐसा दुर्व्यवहार कर रही है फिर मेरी क्या दुर्दशा होगी? अब आप ही इसका अनुमान लगा लीजिये। छोटे ने कहा कि तुम जैसे-तैसे रो-धो के दिन काट लेना। मैं जल्दी ही कमा-धमा कर परदेश से लौट आऊँगा।

इतना कहकर वह अपनी पत्नी को रोती हुई छोड़कर चला गया। पत्नी मन ही मन सोचने लगी कि यदि मैं उन्हें माँ की दुर्भावना की बात नहीं बताती, तो मुझे यहाँ छोड़कर परदेश नहीं जाते। इसमें मेरी ही गलती हो गई है। वह बेचारी पछताकर रह गई। छोटा-लड़का भूखा-प्यासा आगे बढ़ता गया और लगभग बीस कि.मी. की पदयात्रा करके एक गाँव में पहुँच गया। वहाँ उसे एक सेठ की बहुत बड़ी दुकान दिखाई दी, वह सीधा उसी सेठ के पास चला गया। उसने सेठ जी से प्रणाम करके अपना संपूर्ण परिचय देकर उनके यहाँ नौकरी करने की इच्छा व्यक्त की। सेठ जी तो अकेले ही थे, उन्हें आश्रय की जरूरत थी ही। वे उसे अपने यहाँ नौकर रखने के लिए तैयार हो गए। उस लड़के ने उनके यहाँ मन लगाकर काम किया, जिससे सेठ जी की दुकान की आमदनी चौगुनी हो गई। सेठ जी को अब उस पर पूरा विश्वास हो गया और उन्होंने उसे दुकान का पूरा मालिक बना दिया। ये सब आदमी के भाग्य का चमत्कार है। कुछ दिन पूर्व तो वह भिखारी बनकर दर-दर की ठोकरें खा रहा था और आज वह लाखों का मालिक बन गया। कहा भी गया है-

मनुष्य नहीं बलवान है, समय होत बलवान।
भीलन लूटी गोपिका, बेई अर्जुन बेईबान।

यह सत्य ही कहा गया है कि स्त्री के चरित्र और मनुष्य के भाग्य को कोई नहीं जान

सकता। इसी तरह आनंद करते हुए वहाँ उसके दस-बारह वर्ष व्यतीत हो गये। वह एक बड़ा सेठ बनकर घर- गृहस्थी के कार्यों में इतना अधिक उलझ गया कि उसे अपनी पत्नी का कोई ध्यान नहीं रहा। इधर उसकी पत्नी की परिवार में पहले भी बहुत उपेक्षा थी और पति के जाने के बाद उसकी दुर्गति और अधिक हो गई। उसे पूरा गोबर, पानी और बर्तन साफ करके जंगल से लकड़ियाँ लानी पड़ती थीं। तब कहीं कुछ खाने को मिल जाता था। फटे-पुराने कपड़े पहिनकर दिन व्यतीत कर रही थी। अँधेरे में पड़ी-पड़ी अपने भाग्य को कोसती रहती थी।

एक दिन वह रोज कि तरह लकड़ियाँ लाने के लिए जंगल की ओर जा रही थी और उस दिन शुक्रवार था। कुछ औरतें एक स्थान पर बैठकर संतोषी माता की पूजा कर रही थीं। वह भी वहीं बैठ गई और उसने ध्यानपूर्वक माताजी की पूजा देखी, कथा सुनी और गुड़-चना का प्रसाद ग्रहण करके मन ही मन संतोषी माता के व्रत का संकल्प लिया। उसने माता जी से निवेदन किया कि माता जी आप हमारी इच्छा पूर्ण कर दीजिये और आज से हम हर शुक्रवार को आपका पूजन-अर्चन करेंगे। ऐसा निवेदन करने के बाद अब वह हर शुक्रवार को पूजा करने लगी। संतोषी माता की प्रेरणा से अब उस छोटे लड़के को अपनी पत्नी की बार-बार याद आने लगी और शुक्रवार के ही दिन उसका पति घोड़े पर बैठकर अपने घर की ओर चल दिया। चलते-चलते अपने ग्राम के समीप पहुँच गया। उधर उसकी पत्नी संतोषी माता की पूजा कर रही थी। उसने दूर से धूल को उड़ते हुए देखकर कहा कि माता जी ये धूल कैसी उड़ रही है? माता जी ने कहा कि बेटी अब तुम्हारे अच्छे दिन आ गये हैं। तुम्हारे पतिदेव घोड़े पर चढ़कर परदेश से लौट रहे हैं। ये उसी घोड़े की धूल है। तुम अपनी लकड़ियों के बड़े गट्ठे के तीन चार छोटे-छोटे गट्ठे बना लो। एक गट्ठा नदी के किनारे एक मंदिर के पास और एक सिर पर रखकर घर चली जाना, जिससे तुम्हें रूखा-सूखा भोजन और मिट्टी के पात्र में पीने को पानी मिल जायेगा। माता जी की आज्ञानुसार उसने ऐसा ही किया।

उसका पति नदी के किनारे पहुँचा, उसने नदी में स्नान करके आग जलाकर भोजन बनाया और फिर मंदिर में हवन-पूजन करके भोजन किया और थोड़ा सा विश्राम करके घर की ओर चल दिया। घर जाते ही उसने अपनी पत्नी को सिर पर गट्ठा रखे दरवाजे पर खड़ी हुई देखा। उसकी दुर्दशा को देखकर उसकी आँखों में आँसू भर आये। जब उसने अपनी माता जी से पत्नी की दुर्दशा का कारण पूछा तो माता जी ने कहा कि ये तुम्हें दिखाने के लिए ऐसा रूप बनाकर खड़ी है। वह माता जी की चाल को अच्छी तरह से समझ गया। उसके पास धन तो पर्याप्त था। वह एक अलग मकान किराये पर लेकर अपनी पत्नी के साथ प्रेमपूर्वक रहने लगा। पत्नी रो-रोकर अपने पति को सारी व्यथा कथा सुनाई और संतोषी माता के व्रत का प्रभाव बताया। उसने मन में सोचा कि संतोषी माँ की कृपा से ही हमारे दिन लौटे हैं। बिछुड़े हुए पति से मिलन भी हो गया, अब हमें व्रत का विधि-पूर्वक उद्यापन कर देना चाहिए। अब घर में कोई कमी तो है नहीं। उसकी

सम्पन्नता को देखकर जेठानियाँ मन ही मन जलने भुनने लगीं। वे उसका अकल्याण चाह रही थीं। उद्यापन के समय छोटे-छोटे लड़कों को भोजन कराया जाता है। उस दिन खटाई पूरी तरह से वर्जित होती है। जेठानियाँ तो उसका बुरा चाहती ही थीं। उन्होंने परिवार के लड़कों का ही निमंत्रण कर दिया और उन सबको खटाई खिलाकर भेज दिया। उन्होंने सोचा कि इन्हें खटाई खिलाने से उसका व्रत खंडित हो जायेगा। अंत में हुआ भी यही, उसका व्रत खंडित हो गया। माता जी उससे नाराज हो गईं और राजा के सिपाही उसके पति को पकड़कर ले गये। जिठानियों ने उसे खूब खरी खोटी सुनाई और उसकी खूब निंदा की। छोटी बहू ने मंदिर में जाकर माता जी से विनय की। माता जी ने कहा कि बेटी तुम्हारा उद्यापन खंडित हो गया है। इसी कारण से तुम्हें कष्ट भोगना पड़ रहा है। अब तुम अपने परिवार के लड़कों को कभी भूलकर भी आमंत्रित मत करना। ब्राह्मणों के बच्चों को भोजन कराकर उद्यापन करना, तभी तुम्हारा व्रत फलदायी होगा। अब तुम अपने घर जाओ, तुम्हारा पति मुक्त होकर आ जायेगा।

अगले शुक्रवार को उसने व्रत का उद्यापन करके ब्राह्मणों के बालकों को भोजन कराया, जिससे उनका व्रत परिपूर्ण हो गया। नवें महीने के बाद पुत्र उत्पन्न हुआ और वह हर तरह से फूल-फल गई। एक बार संतोषी माता ने उसकी परीक्षा लेनी चाही। वे एक डोकरी का रूप धारण करके गंदी धोती पहिने मुँह में गुड़ लपेटे मक्खियाँ भिनकाती हुईं उनके बड़े भाइयों के द्वार पर पहुँची। लेकिन उनके भयंकर रूप को देखकर सभी ने दरवाजे बंद कर लिए। अंत में वे छोटी बहू के द्वार पर पहुँची। उसने दूर से ही माता जी को पहिचान लिया और वह उनके चरणों पर गिर पड़ी। माता जी प्रसन्न होकर उसे मनोवांछित फल देकर विलीन हो गईं। उनकी उस परिवार पर सदा कृपा बनी रही। उनकी कृपा से वह उजड़ा परिवार फिर से आबाद हो गया। ऐसा होता है शुक्रवार के व्रत का महत्त्व और मूल्य ।

सुहागलन व्रत कथा

अपने बुन्देलखण्ड में समय पै सुहागलें करी जातीं। सुहागलें सोऊ कैऊ तरा की होती। ईमें सुहागिन औरतन खों न्योत कैं उनकी माउर माउदी टीका उर बूंदा लगाकै सबई की देवी जी की नाई पूजाकरी जात। फिर सबखों बैठार कैंभोजन कराये जात। सब जनियन की ओली भर कैं फिर बिदा करी जात। कभऊँ-कभऊँ बिपदा आबे पै सुहागलन की बोल्लां करी जात। कभऊँ-कभऊँ बिटिया उर लरका के ब्याव होवै पै सुहागलें करी जात हैं। उनें खुशी की सुहागलें कई जात। कोनऊ भौत बड़ों संकट आवे पै जे सुहागलें करी जात हैं। उनें संकटा की सुहागलें कई जात। कभऊँ दसारानी वैभव लक्ष्छमी उर बीजासेन की पूजा के मौका पै सुहागलें करी जात हैं। उन मौकन पै कैवे वारी अलग-अलग तरा की कथायें हैं, इतै की बऊये बिटिया ओई मौका की कथा सुना उन लगती है। अपने इतै ऐसई एक खुशी की सुहागलन की कथा कई जात। एक दार गाँव के

जिमीदार के बड़ें लरका को ब्याव बड़ी धूम-धाम सैं होकै आव। गाँव भर खौं भारई हाल फूल भई। जइसैं बऊधन ने देरी के भीतर पाँव धरो सोऊ सगुन सातन के लाने गाँव की सुहागलें न्योती गई। पुरेतन बाई ने सबकी पूजा करी, उर ऊ मौका पै जा सुहागलन की कथा सुनाई ।

ऐसैं-ऐसैं एक गाँव में बेन भइया रत्ते। उन दोईयन में भौतई प्रेम हतो। बैन कभऊँ अपने भइया के पेट कौ पानी नई डुलन देत ती। ऊसई भइया अपनी बैन कै लाने मरवे जीवे खौं तैयार रत्तो। ऊके भइया खौं चिरइयाँ पालवे कौ भौतई शौक हतो। ऊके बैठका में चार पाँच पिंजरा टँगई रत्ते। उन सबखौं दानों उर पानी कौ पूरौ-पूरौ इंतजाम भइअई करत तो। उयै ऐई काम करवे में अच्छौ लगत तो। वौ दिनरात उनई चिरईयँन खौं चुनावे में बिबूचौ रत्तौ। उयै क्याऊँ जावे की फुरसतई नई रत्ती। एक दिना ऊकी सगाई हो गई, उर बरात जावे कौ समय हो गओ। अकेले भइया खौं ब्याव म्याव कछूनई पुसा रओ तो। उसै तो दूला बने पे सबई खौं हाल फूल होत। अकेले भइया रूआंयदौ सौ एक कुदाँऊ ठाढ़ो तो। उयै बरातें जातन आफत सी पर रई ती बैन ने जईसै अपने भइया खौं मुरजानौ सौ देखो सोऊ ऊकौ जिऊ सकपकान लगो। बैन खौं तो भइया के ब्याव की भौतई खुशी हती। वा अपनी भौजी के साके सोयरे करन चाऊत ती। ऊने भइया के लिंगा जाकै पूछो कै भइया का कछू तुमाव पिरात दुखत है। ब्याव की बेरां तो सबखौं हाल फूल होत ईमौका पै तुम अनमने से काय दिखा रये। साँसी-साँसी बताव कै का कारन है। भइया अपनी बैन खौं छिपा नई पाव साँसी कै दई कै बैन हमें इन चिरईयन की जादाँ चिन्ता है। हम बरातै चले जैय फिर इनकी देख रेख को करे। कजन इने दो दिना दानै पानी नई मिले तौ जे सबतौ पिंजरन में फरफरा कै मर जैय। उर हमाई इत्ते दिना की मैनत पै पानी फिर जैय।

बैन बोली कैंभइया तुम अच्छी तरा सै दूला बनकै बरातैं जाव। ब्याव कराकै भौजी खौं घरै ल्आव। तुमाई चिरइयाँ भूकन प्यासन नई मर पैय दो दिना नौ हम उनके दाना पानी कौ पूरौ-पूरौ इंतजाम करें। भइया बेफिकर होकै बरातै चलो गओ। उर इतै ब्याव की भर-भर में बैन उन चिरईयन की खबर भूल गई। उर दो दिना नौ उनन खौं दानौ पानी नई मिल पाव, उर वे उनई पिंजरन में डरी-डरी मर गई। ओई बेरा बैन खौं खबर आ गई उर वा दौर कै चिरईयन कै पिंजरन नौ पोची। उन चिरईयन खौं मरो देखकै बैन भौत दुखी भई। सौसन लगी कै हमने तौ इनकी जुम्मेदारी लै लई ती। अब हम अपने भइया खौं का जबाब दैय। ऊने देवी जूके आगै हात जोर कै प्रार्थना करी कै माई तुम हमाई लाज बचा लैव। हम तुमाई पूजा करें वा पूजा के लाने गुर चना लैबे खौं।

बायरै कड़ी इतेकई में दौरे में हुन एक बरात जात दिखानी। ऊने बरतयन सै कई कैंभइया हो पूजा के लाने तनक गुर उर चना ल्आन देव। अकेलै कोऊने ऊकी बात नई सुनी। सब मस्ती में ऐड़ांत से चले गये। जीसै उनकौ दूला बेहोश होकैं गिर परो। इतेकई में उयै कछू जने मुर्दा की ठठरी लयें जात दिखाने, ऊने उनन सै कई कै भइया हरो पूजा के लाने तनक गुर चना ल्आन दो

उनमें सै एक जने ने गुर चना ल्आन दये। जीसै उनकौ मुर्दा जी उठो उर वे खुशी सैं अपने घरै चले गये। उर उतै दूला खौं बेहोस देख कैं बराती बिटिया नौ जाकै कन लगे कै बैन हमाये दूला खौं का हो गओं। वा बोली कै हम का जाने बेई देवी जू जाने तुम औरे उनई से प्रार्थना करों। सबई बरतयन ने देवी जू सै प्रार्थना करी जीसै उनकौ दूला चेतन्न हो गओं, उर वे खुशी सैं बरात लैके लौट गये। उर तनकई देर में वे मरी मराई चिरइयाँ जी उठीं। ब्याव होकैं बरात लौट आई। भइया ने जब मरी चिरइयन के जीबे की बात सुनी सो आऊतनई ऊने बैन सैं पूछी कैं बैन वे मरी मराई चिरइयाँ कैसे जी उठी। बा बोली कै भइया कैसे जाने बेई सुहागिन मइया जाने अपनी नई भौजी खों देख कैं बैन खौं भौतई हाल फूल भई। भौजी को पानी उतार कै भीतर लुआ गई। उर गाँव की ग्यारा जोड़ा सुहागनें न्योत कै उनकी पूजा करी। देवी जी खौ मनाव गओं उर ऊके भइया भौजी सुहागन मइया की कृपा सै हरे भरे हो गये। ऐसौ है सुहागलन की पूजा कौ पुण्य प्रताप। उदनई सैं अपने बुन्देलखण्ड में सुहागलन की पूजा होत चली आ रई हते।

भावार्थ

बुंदेलखण्ड में सुहागिनी महिलाओं को भाग्यशाली माना जाता है और उनकी हमेशा पूजा की जाती है। विधवा को अपशकुन सूचक मानकर उनसे परहेज की जाती है। सुहागिनियों को देवी जी के रूप में मानकर उनकी पूजा की जाती है। हर प्रकार की साज-सज्जा और श्रृंगार करके उन्हें परोस-परोसकर सम्मानपूर्वक भोजन कराया जाता हैं। फिर अन्न से महिलाओं की गोदी भरकर उनकी विदाई की जाती है। सुहागिनें अनेक प्रकार की होती है। कभी किसी पर बहुत बड़ा संकट आने पर सुहागिनें करने का प्रण किया जाता हैं, उन्हें संकट की सुहागिनें कहा जाता है। पुत्र अथवा पुत्री की शादी के बाद जो सुहागिनें की जाती है वे हाल-फूल अथवा प्रसन्नता की सुहागिनें कही जाती हैं। कभी दसारानी, कभी वैभवलक्ष्मी, कभी बीजासेन और कभी संतोषी माता की सुहागिनें की जाती हैं। महिलाओं की पूजा-अर्चना की प्रक्रिया प्रायः एक ही प्रकार की रहती है। सुहागिनों के अवसर पर उन महत्त्व को प्रदर्शित करने के लिए कथाएँ सुनाई जाती हैं। पूजा के अनुसार कथाओं में अंतर होता है ।

एक बार एक ग्राम के जमींदार के ज्येष्ठ पुत्र का विवाह हुआ। पुत्रवधू के घर में आते ही परिवार में आनंद की लहर दौड़ गई। खूब बाजे-गाजे और नृत्य गान के साथ पुत्रवधू की अगवानी की गई। दूसरे दिन ग्राम की सुहागिन महिलाओं का आमंत्रण किया गया। सुहागिनों की पूजा-अर्चना के पश्चात् ग्राम की वयोवृद्ध पंडितानी ने एक कथा सुनाई, जो इस प्रकार है -

एक गाँव के भरे-पूरे परिवार में एक भाई और एक बहिन थी। उन दोनों भाई-बहिन में अटूट प्रेम था। बहिन भाई एक दूसरे के सुख-दुख का सदैव ध्यान रखते थे। भाई को चिड़िया

पालने का बहुत शौक था। उसके भाई के कमरे में चिड़ियों के दो-चार पिंजड़े टँगे ही रहते थे। वह गृहस्थी के सारे काम छोड़कर चिड़ियों को खिलाने-पिलाने में ही व्यस्त रहता था। उसे किसी दूसरी जगह जाने का समय ही नहीं था। एक दिन उसके भइया की शादी निश्चित हो गई। शादी की बात सुनते ही भइया के सिर पर संकट का पहाड़ टूट पड़ा। उन्हें शादी की जरा भी चिंता नहीं थी और न रंचमात्र प्रसन्नता। वह सोचता था कि यदि मैं दूल्हा बनकर दो दिन के लिए बारात के साथ चला जाऊँगा तो फिर मेरी इन चिड़ियों की देख-रेख कौन करेगा? जैसे-जैसे शादी का समय समीप आ रहा था, वैसे ही वैसे भइया की उदासी और चिंता देखकर बहिन ने कहा कि भइया आप इतने अधिक उदास क्यों है? भइया ने कहा कि बहिन जी मुझे सबसे ज्यादा चिन्ता इन चिड़ियों की है। शादी में जाने पर मेरी चिड़ियाँ भूखी प्यासी तड़फ-तड़फकर मर जायेंगी।

भाई की बात सुनकर बहिन ने कहा कि भइया आप निश्चिंत होकर शादी कीजिये और हमारी भाभी को लेकर शीघ्र ही लौटकर आइयेगा। मैं आपकी चिड़ियों के खाने-पीने का प्रबंध करती रहूँगी। आपकी चिड़ियाँ भूखी-प्यासी नहीं रहेंगी। बहिन पर विश्वास करके भाई शादी करने के लिए चला गया। इधर उसकी बहिन विवाह की भीड़-भाड़ में चिड़ियों की खबर भूल गई और उधर सभी चिड़ियाँ भूख-प्यास से व्याकुल होकर पिंजड़ों में ही मर गईं। इस बीच उसे अचानक उन चिड़ियों की याद आ गई और वह दौड़कर सीधी पिंजड़ों के पास पहुँची। वहाँ चिड़ियों को मरा हुआ देखकर बहुत दुखी हुई। उसने सोचा कि मैंने चिड़ियों की पूरी जिम्मेदारी ले ली थी। अब मैं अपने भाई को क्या जवाब दूँगी। उसने देवी जी के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि माताजी आप हमारी लाज बचा लीजियेगा, मैं विधि-विधान से आपकी पूजा करूँगी। इतना कहकर वह पूजा के लिए गुड़ और चना लेने के लिए बाहर निकली, तो उसे दरवाजे के समीप से एक बारात जाती हुई दिखाई दी। उसने बारातियों से कहा कि भाइयों! माताजी की पूजा के लिए थोड़े गुड़ चना ला दीजिये, किन्तु किसी ने उसकी बात नहीं सुनी। सब मस्ती में इतराते हुऐ चले गये, जिससे उनकी बारात का दूल्हा बेहोश होकर गिर पड़ा। कुछ देर बाद मुर्दा लिए हुए कुछ लोग श्मशान की ओर जाते हुए दिखाई दिये, उन्हें देखकर बहिन ने उनसे गुड़ और चना लाने की बात कही। उन्होंने देवी जी की पूजा के लिए गुड़ और चना ला दिए। देवी उनसे प्रसन्न हो गई और उनका मुर्दा उठकर बैठ गया और सारे लोग खुश होकर घर लौट गये। दूल्हे को बेहोश देखकर बराती बहिन के समीप जाकर बोले कि बहिन हमारा दूल्हा कैसे स्वस्थ होगा? बहिन ने कहा कि संतोषी माता आपसे नाराज हो गई हैं। आप लोग उनसे प्रार्थना कीजिए, जिनकी कृपा से आपका दूल्हा स्वस्थ हो जायेगा। सब बारातियों ने मिलकर प्रार्थना की और उनकी कृपा से दूल्हा सचेत होकर बैठ गया। सारी बारात हँसी-खुशी से लौट गई और थोड़ी ही देर में सारी की सारी मरी हुई चिड़ियाँ जीवित हो गईं। इधर उसके भाई की बारात लौट आई। भइया को मरी चिड़ियों के जीवित होने का समाचार प्राप्त हुआ। उसने आते ही अपनी बहिन से पूछा कि बहिन ये सब चमत्कार

कैसे हुआ? बहिन बोली कि भइया ये सब सुहागिन माता की ही कृपा है। अपनी भाभी को देखकर बहिन को बहुत प्रसन्नता हुई और आदर-पूर्वक उसे घर के अंदर ले गई और फिर ग्राम की ग्यारह जोड़ सुहागिनें आमंत्रित कर उनकी पूजा करके सुहागिन मइया की पूजा की। उनकी कृपा से बहिन के भइया और भाभी हर तरह से भरे-पूरे रहकर पूर्ण सम्पन्न हो गये। ऐसा है सुहागिन मइया की पूजा का पुण्य प्रताप। उसी समय से सारे बुंदेलखण्ड में सुहागिनों की पूजा का प्रचलन हो गया।

तुलसी महारानी व्रत कथा

अपनें बुन्देलखण्ड में बिरछन खौं देवता मान कै समय-समय पै उनकी पूजा करी जात। ऊसै तौ सबई बिरछन में देवतन कौ वास है। जैसे अकौवा उर धतूरे में शंकर जी कौ वास, तुलसी-पीपर उर बरिया में भगवान विष्णू कौ वास, उर ऊमर में प्रेतन कौ वास मानों जात। ओई हिसाब सैं बिरछन की पूजा करी जात। जैसे चौदस खौं अकौवा, वसंत खौं आम कौ मौर, बरसात खौं बरिया, कातक में सोम्वा अमाउस उर शरद पूने खौं तुलसी की पूजा करी जात। तुलसी खौं तौ पूजा में धरऊ जात। बिना तुलसी दल के भगवान खौं भोग नई लग सकत। कातक के पुनीत मईना में तौ कातक अनाऊत में सबसैं पैला तौ तुलसिअई की पूजा करी जात। औरतें ऊ बेरा एक सुर में गाँउन लगतीं तुलसी महारानी नमों-नमों। सोम्मा अमाउस खौं तौ तुलसी घरूवई खौं परकम्मा दये जात। शरदपूने खौं सत्यनारायन भगवान के लडुवन की पूजा तुलसी घरा के सामनई हुन करी जात। बुन्देलखण्ड के हर भरे पूरे परवार के घरन के आँगन में तुलसी धरूवा बनें रत। बउयें बिटिया सपर खोर कैं सबसैं पैंला तुलसी के बिरछा की पूजा करकैं ऊदबत्ती लगावतीं उर आरती करत हैं। फिर घर कें कौनऊ दूसरे काम काज करत हैं। ऐसई तुलसी माता की पूजा करत में इतें की बऊयें बिटियां एक कथा सुनाउन लगत हैं ।

ऐसई ऐसे एक गाँव में एक ननद भौजाई रत्तीं। ननद भौजाई की कैऊ ठऊआ कानियाँ कई जात हैं। उन दोईयन में खुट पुट तौ होतई रत। ननद रोज भुन्सरा नहा धोके सबसै पैला घर कै तुलसी घरा नौ जाकैं तुलसी महरानी की पूजा मन लगाकै करत ती फिर पछारीं कोनऊ और काम करवे की सोसत तीं। ऊकौ मन तुलसी की पूजा में भौतई लगत तौ। ऊकी पूजा देख-देख कै भौजाई खौं भौतई चिड़ होत ती। ननद भौजाई की नोक झोंक तौ भोतई होत रत। एक दिना हँसी-मजाक में भौजी ने ननद सैं कई कै तुमाये सबई काम ऐई तुलसी घरूआ सै पूरे हुइयै। का ब्याव होवे पै तुमई तुलसी घरा खौं सासरे लै जैव। ननद तौ भौतई भोरी भारी हती। वा कनलई कै भौजी हम का जाने, बेई तुलसी मइया जाने। हमसै तौ जैसी लटी दूबरी बनत सो सेवा पूजा में लगे रत। ऊकी भौजी तौ भौत चालू हती। वा ननद खौं नैचो दिखावै के चक्कर में हती। उर वा मौका की

बाठ हेरे बेंठी ती। पूजा करत-करत ननद बाई स्यानी हो गई। उर ब्याव लाख हो गई, ऊकौ भइया ने एक गाँव में अच्छौ सौ लरका देख कै बैन कौ ब्याव तैकर दओ। ब्याव कौ समय आवे पै बाजे-गाजे सैं बरात आ गई। टीका हो गओ उर फिर भोजनन के लाने आँगन में पंगत बैठ गई। मौका देख कै भौजी खौं खुरापात सूझी। जईसै बरतयन खौं पत्तले परसी गई, सोऊ भौजी ने अपने आदमी बुलाकै पातरन पै तुलसी घरूवा की माटी परसुवा दई। अकेले भगवान की ऐसी कृपा भई कै पातरन पै माटी की जगा पै छप्पन बिंजन बन गये। बरतयन ने खूब छककैं भोजन करे। उर भोजन की भौत तारीप करी। जौ सब देख के भौजी ता करकैंरै गई। ऊकी जा चाल बेकार चली गई, उर वा हात मीड़त रै गई। अकेले भौजी ने हार नई मानी। ऊनें बिदा की बेरा दायजे में तुलसी घरूवा धर दओ। उर उये पैरवै खौं तुलसी की मंजरी उर माला धर दई। भगवान की ऐसी कृपा भई कै तुलसी धरूवा के तौ सोने चाँदी के ढेरन बासन भाड़े बन गए।

उर तुलसी की माला उर मंजरी के कैऊ तरा के हीरा-मोती उर सोने के जेवर बन गये। वा अपनौ करम ठोक कै रै गई। उर सोसन लगी कै मैं तो ईकौ कछूअई नई बिगार पाई। साँसऊ ईकै ऊपर तुलसी माता की पूरिअई कृपा है।

कछू दिना में ओई भौजी की बिटिया ब्याव लाख हो गई। ऊनें सोसी कै धर के तुलसी धरा में तौ भौतई जादू है। बिनई कछु करे धरे पूरे काम बन जात। हम काय खौं ब्याव के लाने कोनऊ इंतजाम करबे। वा तनक कैवे सुनवे खौं अपनी बिटिया सें तुलसी की पूजा करवाउन लगी। ऊने बिटिया कौ ब्याव पक्कौ करवा दओ । दोरे बरात आ गई, उर जईसै बरात की पंगत बैठी सोऊ ऊनें पातरन में ननद की घाई तुलसी धरूवा की माटी परसुवा दई। अकेलै होत का हतो जौतो ऊकौ ढोंग धतूरों हतो। पातरन में भोजन की जगा माटी देखकै बरतया नाराज हो-हो कै पातरै छोड-छोड़ के वायरे भग गये। और भौजी के घर की भौत निंदा भई। ऐसई जब बिटिया की बिदा होन लगी सो भौजी ने दायजे की जगा तुलसी धरा धर दओ। बिटिया की ससुरार में ऊके बाप मताई की भौतई थू-थू भई। उर फिर जीवन भर खौं बुराई की गाँठ बंध गई। उर हमेशा के लाने बिटिया कों मायको छूट गओ। कजन कोऊ काऊयें गड़ा खोदत तौ भगवान की कृपा सें दूसरे को कछू नई बिगरत। अकेले वे गड़ा खोदवे वारे खुदई गड्डा में गिरत। देखो ऊने ननद कौ तो कछू नई बिगार पाओ, उर भौजी की बिटिया को जीवन भर के लाने मायकों छूट गओ। जो साँसे मन सैं तुलसी मइया की सेवा करत। उनकी ऊपै हमेसई कृपा बनी रत। ढोंग ढकोसला से कछू नई होत। जौ तौ हतो ऊ भौजी को हाल। अकेले ऊकों भइया तो अपनी बेन खौं भौत चाऊत तो। जब बिलात दिना से बेन नई मिली तो एक दिन भइया ने अपनी घरवारी से कई के देख री बिलात दिना हो गये। हम अपनी बेन की खबर-दबर लैन जा रये। कछू भेंट के लाने धरें होव तो दै देव। वा तौ पैलऊ सैं ऊसे जरी भुनी बैठी ती सोस रई ती कै मैं ऊरडवाल कौ कछू बिगार नई पाई। हमने ऊकौ बुरओ करो उर ऊकौ भलो होत गओ। उर हमाई बिटिया सों खड़न खपरन मिल गई ऐसी

सोच कैं ऊने एक पुटइया में जुनई के कनूँका बाँध कैं कई कै जाव चले जाव अपनी लाड़ली बैंन के घरै। बिटिया के ना जाबे की तौं तुम कभऊँ चर्चई नई करत। भइया मौगो चालौ जातनई ऊने वा पुटइया बैन की सास खौं गुआ दई। तुलसी मइया की कृपा सैं वे जुनईके कनूँका हीरा उर जवाहरात बन गये। देखतनई सबखौं भारी हाल फूल भई। बैन भइया सैं मिलकै फूली नई समा रईती। भइया की भौत खातर दारी भई। दो चार दिना रैके अपनी बैन खौं लुआ कैं घरै लौट आये। देखो जो होत भक्ति कौ फल। भक्ति कभऊँ निरफल नई होत। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई कानियाँ निपटी ।

भावार्थ

बुंदेलखण्ड में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है। वैसे तो अनेक वृक्ष पूज्य हैं और उनमें देवताओं का निवास रहता है, जैसे 'अकौआ और धतूरे में शंकर जी का वास, तुलसी-पीपल और बरगद में भगवान विष्णु का वास और गूलर के वृक्षों पर प्रेतों का वास माना जाता है। इसी कारण से हिन्दू संस्कृति में वृक्षों की पूजा का विशेष महत्त्व है। चतुर्दशी को अकौवा, बसंत पंचमी को आम्र का बौर बरसात को वट-वृक्ष, सोमवती अमावस्या और शरद पूर्णिमा को तुलसी के पौधे की पूजा की जाती है। भगवान को प्रसाद लगाते समय तुलसी दल रखकर पूजा की जाती है। पूरे कार्तिक माह में महिलाएँ तुलसी पूजा करके परिक्रमा लगाती हैं, और गाती हैं- *'तुलसा महारानी नमो नमो।'*

सोमवती अमावस्या को तुलसी के गमले अथवा तुलसी-घरा की परिक्रमा की जाती है। हिन्दू संस्कृति में तुलसी का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा के दिन तुलसीघरा के सामने भगवान सत्यनारायण के लड्डुओं की पूजा की जाती है। बुंदेलखण्ड के हर घर के आँगन में तुलसीघरा स्थापित करने की परम्परा है। स्नान करके परिवार की महिलाएँ सर्वप्रथम तुलसी की पूजा करती हैं, तत्पश्चात् घर-गृहस्थी के अन्य कार्यों का संचालन। इसी प्रकार तुलसी माता की पूजा करते समय परिवार की वयोवृद्ध महिलाएँ इस प्रकार की एक कथा सुनाया करती हैं -

एक ग्राम के एक परिवार में ननद-भाभी रहा करती थी। ननद-भाभी की नोंक-झोंक पर आधारित अनेक लोक कथाएँ कही जाती हैं। ननद बहुत ही सहज और सरल स्वभाव की थी। भाभी बात-बात में ननद की गल्तियाँ खोज-खोजकर ताने मारती रहती थी। वह उसकी सरलता का दुरुपयोग करती रहती थी। इस कारण से परिवार में उन दोनों की सदा खट-पट बनी रहती थी। आये दिन भाभी का क्रोध अपनी ननद पर भड़कता ही रहता था। उसकी ननद बड़े ही सात्विक धार्मिक स्वभाव की थी। प्रात:काल स्नान करके सर्वप्रथम तुलसी माता की पूजा करती, तत्पश्चात् घर के अन्य कार्य। ये सब देखकर भाभी को अच्छा नहीं लगता था। वह सोचती थी कि ये कब यहाँ से टले और मैं चैन की वंशी बजाऊँ। ननद का सर्वाधिक लगाव तुलसी की पूजा में

ही था, किन्तु भाभी को उसकी पूजा देख-देखकर मन ही मन चिड़-चिड़ाहट सी भरी रहती थी। एक दिन उसकी भाभी ने ननद से कहा कि तुम्हारे तो सारे कार्य इसी तुलसीघरुआ के द्वारा ही पूरे होंगे। तुम अपनी शादी के समय इसी तुलसीघरुवे को साथ में लेकर अपनी ससुराल चली जाना। ननद तो बहुत ही भोली भाली थी। उसने कहा कि मैं तो कुछ जानती ही नहीं हूँ, वही तुलसी माता जाने। मैं तो उन्हीं की कृपा पर जीवित हूँ। मुझसे तो जैसी बनती है सो मैं तो उनकी उल्टी-सीधी पूजा करती रहती हूँ। किन्तु भाभी तो बहुत चालाक थी। वह ननद को नीचा दिखाने की कोशिश करती रहती थी। वह सदा अवसर की तलाश में रहती थी कि कब मौका मिले और मैं इसे नीचा दिखा दूँ।

पूजा करते-करते ननद का सारा बचपन बीत गया और धीरे-धीरे युवाकाल आ गया। ननद विवाह के योग्य हो गई। भले ही भाभी उससे ईर्ष्या रखती थी। किन्तु भाई का अपनी छोटी बहिन पर अत्यधिक प्यार था। भाई अपनी छोटी बहिन का संपन्न घर-परिवार में विवाह करना चाहता था। उसने एक समीपवर्ती ग्राम में एक अच्छा सा घर और वर तलाश कर अपनी बहिन की शादी निश्चित कर दी। समय आने पर बाजे-गाजे के साथ बारात उनके घर पर आ गई। बारात का अच्छी तरह से स्वागत-सत्कार हुआ। विधिवत् द्वार-चार हुआ। इसके बाद आँगन में बारातियों की पंक्ति बैठ गई। उसकी भाभी तो ननद से जली-भुनी बैठी ही थी। वह ननद के शुभकाज मे बाधा उत्पन्न करना चाह रही थी। उसने बारातियों की पत्तलों पर भोजन के स्थान पर तुलसीघरे की मिट्टी परसवा दी। वह सोचती थी कि पत्तलों पर मिट्टी देखकर बाराती नाराज होकर उठ जायेंगे और ननंद का विवाह संपन्न नहीं हो पायेगा, जिससे ननद को कुलक्षणी मान लिया जायेगा।

किन्तु ननद पर तो तुलसी माता की पूर्ण कृपा थी। उनकी कृपा से बारातियों की पत्तलों पर उस मिट्टी से छप्पन व्यंजन बन गये। बारातियों ने जी भरकर भोजन किया और प्रीतिभोज की बहुत प्रशंसा की। ये सब देखकर भाभी मन मारकर रह गई, किन्तु वह तो उसे नीचा दिखाने पर तुली ही थी। उसने ननद की विदाई के अवसर पर दहेज के स्थान पर तुलसीघरुआ रख दिया। गहनों के रूप में उसे उसने तुलसी की माला और मंजरी पहना दी। किन्तु तुलसी माता की कृपा से तुलसीघरूआ के स्थान पर सैकड़ों सोने-चाँदी के बर्तन बन गये और माला-मंजरी के स्थान पर सोने और हीरों के हार बन गये। वह सोचने लगी कि वास्तव में इस पर तो तुलसी माता की पूर्ण कृपा है, जिसके कारण मैं इसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी।

कुछ दिन बाद भाभी की लड़की विवाह के योग्य हो गई। उसने अपनी लड़की का विवाह निश्चित कर दिया। वह ननद के विवाह में तुलसीघरुआ का प्रभाव तो देख ही चुकी थी, किन्तु उसके मन में तुलसी माता के प्रति रंच मात्र भी भक्तिभाव नहीं था। उसने सोचा कि मैं अपनी लड़की की शादी में तुलसीघरुआ का उपयोग करूँगी और उसी से मेरे सारे काम पूर्ण हो जायेंगे। यह सोचकर उसने कोई विशेष तैयारी नहीं की और थोड़ी बहुत वह अपनी पुत्री से तुलसी माता

की पूजा करवाने लगी, किन्तु यह तो केवल प्रदर्शन ही था। ऐसा कहा जाता है कि भगवान तो केवल भाव के ही भूखे होते हैं। बाबा तुलसी भी कुछ इसी तरह की बात कह गये हैं –

निर्मल जन मोरे मन भावा।
मोहि कपट छल छुद्र न भावा।।

उसकी लड़की की बारात आ गई और टीका के बाद बारात भोजन करने के लिए आँगन में बैठ गई। उसके घर में भोजन की तैयारी तो थी नहीं, उसने बारातियों की पत्तलों पर तुलसीघरुआ की मिट्टी परसवा दी। किन्तु उस मिट्टी से व्यंजन तैयार नहीं हुए और बाराती नाराज होकर पत्तलें छोड़कर बाहर निकल गये, जिसके कारण भाभी को नीचा देखना पड़ा। इसी प्रकार लड़की की विदा के समय भाभी ने दहेज के स्थान पर तुलसीघरा रख दिया। जिसे देखकर लड़की की ससुराल में उसकी बहुत किर–किरी हुई और जीवनभर के लिए ससुराल वालों के मन में बुराई की गाँठ बन गई। ससुराल वाले इतना ज्यादा नाराज हो गये कि उन्होंने लड़की को मायके नहीं जाने दिया। प्राय: ऐसा कहा जाता है कि जो किसी के मार्ग में गड्ढा खोदता है तो उस पथिक का कुछ भी नहीं बिगड़ता, बल्कि गड्ढा खोदने वाला ही गड्ढे में गिरता है। देखिये भाभी तो ननद का कुछ बिगाड़ नहीं सकी और दुर्भावना के कारण उसकी लड़की का जीवन संकटमय हो गया। ये बात सोलह आने सत्य है कि जो सच्चे मन से तुलसी माता की पूजा सेवा करता है, तुलसी माता की सदैव उस पर कृपा रहती है। उसका कभी अकल्याण नहीं हो सकता। ये तो था व्यवहार उस ननद की भाभी का, किन्तु उसका भाई अपनी बहिन से बहुत प्यार करता था। एक दिन उसने अपनी पत्नी से कहा कि बहिन को ससुराल गये बहुत दिन व्यतीत हो गये मैं अपनी बहिन को देखने के लिए उसकी ससुराल जा रहा हूँ। यदि कुछ उपहार के लिए हो तो मुझे दे दो।

उसकी पत्नी तो पहले से ही जली–भुनी बैठी थी। वह सोच रही थी कि मैं तो उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकी। जैसे–जैसे मैंने उसका बुरा किया, वैसे–वैसे उसका भला होता गया और हमारी लड़की का सारा जीवन दुख:मय हो गया। अंत में उसने एक पोटली में ज्वार के थोड़े से दाने देकर कहा कि अब आप चले जाइये, अपनी लाड़ली बहिन के घर पर। तुम अपनी लड़की को बुलाने की तो कभी चर्चा ही नहीं करते हो? भइया वहाँ से चुपचाप उस पोटली को लेकर चल दिया और बहिन की ससुराल पहुँचकर उसने वह पोटली बहिन की सास के हाथ में दे दी। किन्तु तुलसी माता की कृपा से वे ज्वार के दाने हीरा और जवाहरात बन गये, जिसे देखकर सारे परिवार ने पुत्रवधू के मायके वालों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। अपने प्यारे भाई से मिलकर बहिन को बहुत आनंद प्राप्त हुआ। भइया का बहुत आदर सत्कार हुआ। तीन चार दिन बहिन की ससुराल में रहकर अपनी बहिन को लिवाकर भइया घर लौट गये।

देखिये, ये होता है, भाव भक्ति का सुफल भगवान की भक्ति कभी निष्फल नहीं होती। अपने भक्त को भगवान सदा सुखी और सानंद रखते हैं।

कनवाँ उर रनवाँ व्रत कथा

पैलऊँ पैल गइयाँ कैं बछवा या कोनऊ घुरिया कै पैली दार लेटा होबै पै दसांरानी के गड़ा लये जात, उर उनकी दस दिना नौ पूजा करी जात।

दस दिना नों गड़न खौं होम लगाव जात। उर रोज एक कानिया कई जात। दस दिना नौ–दस कानियाँ कईं जाती हैं। फिर दसवें रोज गड़न की पूजा करी जात। उर औरतें उदनाँ पनफरा खाती हैं। उर कोऊ–कोऊ दसारानी की सुहागलन में दस सुहागलें करी जात। जा एक तरा की देवी जी की पूजा होत। ईसै दसारानी की कृपा सै औरतन की मनसा पूरी होत। बुन्देलखण्ड़ के हर गाँव में ई पूजा कौ जादा चलन हो गओं। औरते दसारानी के गड़ा लैके पूजा करत रती, उर उनकी मनसा पूरी होत रत। दसयै रोजै दसारानी की पूजा होत उर कोनऊ बड़ी बूढ़ी ऐसी किसा कन लगतीं–ऐसै–ऐसै एक माते के दो लरका हते। बड़े लरका कौ नाँव कनवाँ जो जेठो हतो अकेलै ऊकी आँख खराब भये सै ऊकौ ब्याव नई हो पाव, उर वौ रडुअई बनो रओं। हल्कौ भइया रनवा देखबे सुनबे में साजौ लगत तो। सो ऊकौ ब्याव जल्दी हो गओं, उर भाग सैं अच्छी सुन्दर दुलइया मिली। माते के नाँ मुलकन केरी गइयाँ बछियाँ हती, उर उनके ना दूद मठा बैचबे को काम होत तो। सो बऊधन खौं दूद मठा बेंचबे कौ काम सौपौ गओं। वा गाँव भर में मठा बैचवे खौं जातती। वा मटकिया मूँढ़ पै धरे मठा बेचई रई ती। इतेकई में एक जनी ऊसे कन लई कै बैन गइया कै पैलऊ पैल बच्छा भओ है। सौ हमने दसारानी के गड़ा लैलये। सो तुमई दसारानी कौ गढ़ा लैके पूजा करियों वे तुमाई मनसा पूरी करें। रनवाँ की बऊ बोली कै बैन हम गढ़ा लै तो ऐन लैय अकैलै हम सास कै मारै पूजा कैसे कर पैय। बा बड़ी लड़न्कू है वा चौबीसई घन्टा हमें काम की अरई लगाँय रत। हमें पूजा करबे की फुरसत कैसे मिले, कैसे हम कथा सुनपैय? औरतन मेतौ आपस में भौतई प्रेम होत। एक दूसरी की हीर पीर कों पूरौ ख्याल करत्ती वे। उनन नें कई करकै देखो जब तुम मठा बैचबैं को आव सो हम औरन के लिंगा बैठकैं किसा सुन लेबो करे उर दसये दिना जब पूजा को मौका आए उदना सास कौ कोनऊ बहानौ करकै मठा बैचबै पौंचा दिइयौ। उर फिर अकेले में मन लगाके दसारानी की पूजा कर लिइयौ। जा बात रनवा की घरवारी कै गरे उतर गई, ऊने रोज मठा बैचत में लुगाईयननौ बैठकैं कथा सुनलई उर दसयैं दिना बुखार कौ बहानो करके सास खौं मठा बैचबै पौंचा दओ। ऐई बीच में बऊ खौं मौका मिलगओं, उर उने आँगन खौं अच्छो लीप पौत कै पूजा विस्तार लई। अच्छो चौक पूरकै पोतनी की दसारानी बनाकै मन लगाकै पूजा करी, फिर सबखौं समेट कै एक गोला बना लओ। चौक लौटके वा जईसै सिराबे जान लगी इते कई में ऊकी सास लौट आई। वा जल्दी से भीतर लौट आई उर वा गोला खौ मठा की मटकिया में डारकैं भीतर झारा बटोरी करन लगी। सास भीतर आँगन में मठा की मटकी धरकैं सुस्तान लगी। बहू भीतर जाकें रोटी बनाबन लगी, सास खौं तौ भौतई भूख लगआई ती। टाठी में रोटी धरकै मठा लैबे खौं जई सै मटकिया में हाँत डारो सोऊ ऊके हात में सोने कौ गोला आ गओं। उयै देखतनई सास खौं बड़ो

अचम्भौ भओ उर ऊने बऊ सै पूंछी कै कायरी ई मठा की मटकिया में जौ सोने को गोला किते सै चुरा ल्आई हमें साँसी-साँसी बता। सुनतनई बऊ सनाकौ खाकै रेगई। जानतौ सब गई कै जा सब दसारानी की कृपा है। उनई की कृपा सै वो पोतनी कौ गोला सोने कौ बन गओं। इतेकई में माते कक्का हार खेत सैं लौटकै आ गये। उनने सुनी सोऊ वै अचम्भौ खाकैं रै गये। उन्नें अपनी बऊ सें पूछी कै बेटा तुम सांसी बताव कै जौ सब भओ काँसें। बऊ बोली कै दादा हम का जाने बेई दसारानी मइया जाने जिनकी हम दुक छिपकै दस दिना सै पूजा कर रये। हमने बाई के डरन के मारै पूजा की पोतनी कौ गोला मटकिया में डार दओं तो अबकै नई सकत कै वौ कुजाने कैसे सोने कौ हो गओं। बेई माता जाने हम मूरख के बसकी का है। सास ससुर बऊ की पूजा सै भौतई खुश भये। दसारानी की कृपा सैं उनकौ घर धन सम्पति सै भर गओ। सास ने बऊ खों गरे सैं लगा लओ, उर कन लगी कें बेटा तुम जैसी बऊ धन पाकै हम धन्न हो गये। तुम जुग-जुग जियो उर पुन्न प्रताप घर में बनाये रइयौ। जौ है दसारानी की पूजा कौ प्रभाव। जैसी पुण्य धरम करवे वारी बऊधन माते खौं मिली। हे दसारानी मइया ऐसई बऊयें सबखौं दिइयौ।

भावार्थ

बुंदेलखण्ड में एक लोक परम्परा प्रचलित है कि यदि पहली बार किसी गाय का बछड़ा अथवा किसी घोड़ी का बेटा पैदा होता हैं, तब दसारानी के गड़ा लेकर दस दिन तक उनकी पूजा की जाती है। उन गड़ों की पूजा करने के बाद रोज एक कथा कही जाती है। इस प्रकार दस दिन की दस कथाएँ होती हैं। दसवें दिन औरतें केवल पनफरा खाती हैं और कहीं-कहीं दसारानी की सुहागलें की जाती हैं। ये एक प्रकार की देवी पूजा है। इस व्रत को रखने से महिलाओं को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। दसवें दिन दसारानी की पूजा हो जाती है। उस दिन घर की बड़ी-बूढ़ी महिलाएँ कथा सुनाती हैं, जिसमें उस व्रत और उपवास का महत्त्व प्रदर्शित किया जाता है। उनमें से यहाँ एक कथा प्रस्तुत है -

एक ग्राम में एक धनीमानी जमींदार साहब निवास करते थे। उनके दो लड़के थे। बड़े लड़के का नाम था 'कनवाँ', जिसकी एक आँख खराब होने के कारण उसका विवाह ही नहीं हो पाया था। उसका छोटा भाई 'रनवाँ' देखने-सुनने में सुंदर था, जिसके कारण उसकी शादी जल्दी ही हो गई थी और उसे अत्यंत सुंदर दुल्हिन प्राप्त हो गई थी। जमींदार साहब के घर पर अनेक गायें और भैंसें पली हुई थीं। घर में मनचाहा दूध, दही, घी और मठा होता था, उनके घर में दूध-दही की बिक्री होती थी और दूध-दही बेचने का कार्य रनवाँ की वधू को सौंपा गया। वह अपने सिर पर मटकी रखकर गाँव-गाँव में दूध मठा बेचने के लिए जाया करती थी। उसकी सास भी वही धंधा करती थी। एक दिन वधू दूध बेचने के लिए एक गाँव में गई, तब एक स्त्री ने उससे आकर कहा कि बहिन गाय के पहली बार बछड़ा पैदा हुआ है, जिससे मैंने दसारानी के गड़ा लिए हैं, तुम

भी हमारे साथ गड़ा ले लो और मन लगाकर दसारानी की पूजा करना, जिससे देवी जी तुम्हारी इच्छा पूर्ण करेंगी। रनवाँ की वधू ने कहा कि हम गड़ा (व्रत) लेने को तो तैयार हैं, किन्तु सास के सम्मुख हम दस दिन तक पूजा कैसे कर पायेंगे? मेरी सास तो मुझे हमेशा काम में लगाये रहती है। मुझे पूजा करने और कथा को सुनने का अवसर ही कहाँ है?

प्राय: औरतों में एक दूसरे के प्रति बहुत आत्मीयता होती है। वे सदा एक दूसरे की हीर-पीर का ध्यान रखती हैं। औरतों ने कहा कि तुम चिंता न करो, देवी जी की कृपा से सब पूरा हो जायेगा। दूध, मठा बेचते समय तुम हम सबके साथ बैठकर रोज कथा सुन लिया करो और फिर दसवें दिन कोई बहाना करके अपनी सास को दूध-मठा बेचने के लिए भेज देना। फिर एकांत में मन लगाकर पूजा कर लेना। सहेलियों की ये बात रनवाँ की वधू के गले उतर गई। वह रोज दूध बेचते समय औरतों के साथ बैठकर कथा सुनती रही। दसवें दिन बुखार का बहाना लेकर अपनी सास को दूध-मठा बेचने के लिए पहुँचा दिया। परिवार के अन्य लोग खेतों पर काम करने के लिए चले गये और सास दूध बेचने चली गई। अब क्या था? रनवाँ की वधू को पूर्ण एकान्त मिल गया। उसने बाहर के किवाड़ लगाकर घर के आँगन को लीप-पोतकर पूजा विस्तार ली। अच्छा चौक पूर कर पोतनी की दसारानी बनाकर अच्छी तरह से पूजा कर ली। चौक लौटकर समस्त पूजन सामग्री का गोला बनाकर ज्यों ही वह उसे विसर्जित करने के लिए बाहर जाना चाह रही थी, इतने में उसकी सास लौटकर आ गई, जिससे उसने हड़बड़ाकर उस पोतनी के गोले को मठा की मटकी में डाल दिया। और फिर किवाड़ खोलकर आँगन की सफाई करने लगी। उसकी सास मटकी रखकर विश्राम करने लगी। वधू रसोई घर में जाकर रोटी बनाने लगी। पैदल चलते-चलते सास थक चुकी थी और उसे जोर की भूख लग आई थी। सास अपनी थाली में रोटी रखकर बैठ गई। फिर सास ने मठा लेने के लिए ज्यों ही मटकी में हाथ डाला, त्यों ही उसके हाथ में एक बड़ा सा सोने का गोला आ गया। उसे देखकर वह आश्चर्यचकित हो गई। उसने अपनी पुत्रवधू से पूछा कि क्यों री इस मटकी में ये सोने का गोला कहाँ से आया? सोने के गोले की बात सुनकर वधू को भी आश्चर्य हुआ। उसने तो पूजन सामग्री के पोतनी का गोला मटकी में डाल दिया था। वह सोने का कैसे बन गया? ये सब दसारानी माताजी की ही कृपा का सुफल है। अब वह अपनी सास को क्या उत्तर दे? सुनकर वह चुप रह गई। जान तो वह सब गई थी, किन्तु उसने चुप रहना ही उचित समझा।

इतने में ही उसके ससुर अपने खेत से घर आ गये। जब उन्होंने सुना तो वे भी चकित हो गए। उन्होंने प्रेम पूर्वक अपनी पुत्र-वधू से पूछा कि बेटा सत्य-सत्य बताओ कि ये सब कैसे हुआ? वधू ने कहा कि दादाजी हम क्या जानें? ये सब तो वही दसारानी माता जानती हैं, जिनकी हम आप लोगों से छिपकर दस दिन तक पूजा करते रहे हैं। हमने बाई जी के डर के कारण पूजा

की पोतनी का गोला मटकी में डाल दिया था। लगता है कि माताजी की कृपा से वही गोला सोने का बन गया है। हम तो मूर्ख हैं और हमें कुछ ज्ञान नहीं है। सास-ससुर अपनी पुत्रवधू की पूजा को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। धीरे-धीरे दसारानी की कृपा से उनका घर धन-धान्य से आपूरित हो गया। सास ने पुत्रवधू को गले लगाकर कहा कि बेटा! तुम जैसी पुण्यवती पुत्रवधू प्राप्त करके मैं धन्य हो गई हूँ। तुम अनेक वर्ष तक जीवित रहकर अपने घर को सुख समृद्धि से भरती रहना। ये है दसारानी की पूजा का प्रभाव।

वैभवलक्ष्मी व्रत कथा

बुन्देलखण्ड की औरतें कैऊ तरा के उपास करतीं। कछू जनी वैभव लक्ष्छमी कौ व्रत उर पूजा करती। जौ व्रत औरते हर शुक्रवार खौं करतीं हैं। आज काल के भरे-पूरे परिवार की बऊयें ई व्रत खौं बड़े मन लगाकै उर नियम सैं करत हैं। घर की कोनऊ बड़ी-बूढ़ी औरत या गाँव की पंडितानी ई पूजा में अपनौ सहयोग देत रती हैं। शुक्रवार के दिना सबई जनीं सपर खोरकै वैभव लच्छमी की पूजा विस्तार लेत है। एक पटापै पटरा बिछाकै ऊपै लच्छमी जू की पुतरिया बनाकै धर दई जात। चाँवर उर फूल चढ़ाकैं पूजा करी जात फिर कोंनऊ सियानी समानी औरतें किसा कानिया कन लगत, सब जनी अपने हातन में चाँवर लैके कथा के लाने मन लगाकै बैठ जात, ई मौका पै पंडितानी बऊ ऐसी कानिया कन लगती-

एक गाँव में एक माते कक्का हते। उनके लिंगा धन माया की कोनऊ कमी नई हती। हर तरा सैं उनकौ घर भरो-पूरौ हतो। अच्छी किले कैसी बखरी, लम्में चौरो आँगन, अच्छी खेती पाती, ढोर- भैंसे। राजन कैसी गिरस्ती हती उनकी, गाँव भर में उनकी बंदी बंदत हती और छोरी छूटत हती। उनके हुकम के सामने काऊ की नई चल पाउतती। माते के चार ठौले लरका हते। जैसे-जैसे वे स्याने होत गये सो उनकौ ब्याव होत गऔ। अब का कने चारई बऊये घरै आ गई। लरका बऊवन सैं उनकौ घर हमेसई भरों-भरों सो लगत तो। माते की तीन बऊयें तौ अपनी घर गिरस्ती के कामन में जुटीं रत्तीं। अकेले हल्की बऊ खौं घर गिरस्ती से कौनऊ मतलब नई हतो। वा हमेसा पूजई पाठ करबे में जुटी रत्ती। हर शुक्रवार खौं वैभव लक्ष्मी के व्रत करकै दिन-दिन भर पूजा उर कथा सुनबे में काड़ देतती। ऊके सास- ससुर कमेली तीन बऊँवन खौं तौ भौत चाऊतते। अकेले हल्की बऊ सै मनई मन नाराज रत्ते। अकेले वा हती अपनी धुन की पक्की। उयै काऊसै कछू मतलब नई रत्तो। ऊकीतौ ऐसी कानात हती कै सुनिये सबकी करियै मनकी। ऊके ससुर ने उयै आलसन मानके घर सैं निकार दओ। उर उयै खेत की मैड़ पें टपइया बनाकैं जुनई कै भुन्टा रखावे कौ काम सौंप दओ। वा मौगी चाली खेत की मैड़ पै एक जुनई कौ खेत रखावन लगी, तोऊ ऊने अपनौ पूजा पाठ नई छोड़ो। ऊ साल बैभव लच्छमी की ऊपै ऐसी कृपा भई कै ज्वार में बड़े-बड़े

भुन्टा पैदा हो गये। उर जब उन भुंटन के काटवे कौ समय आव, सोऊ जुनई कै दानन की जगा मोती के दाने झरन लगें। जीने सुनी सो बेऊ अचम्भो खाकै रै गओ। हराँ-हराँ जा खबर सबरे गाँव में फैल गई। उर गाँव भर के आदमी खेत खौं देखबे पौंचे। माते ने उन मोतियन खौं देखकै अपनी हल्की बऊ सै दै पूछी कै बेटा जौ सब कैसे हो गओं। वा बोली कै हम का जाने बेई बैभव लच्छमी जाने जिनकी कृपा सैं जौ सब चमत्कार भओ है। पूजा कोनऊ होय उर कजन सांसे मन सैं करी जाय तौ ऊकौ फल मिले बिगर नई रत्। ईसै पूजा साँसे मनसें करी जाय। ढोंग दिखावे की जरूरत नइयाँ सांसौ। झूठौ तौ भगवानई जानत, उनसै कौऊ का छिपा सकत।

भावार्थ

बुंदेलखण्ड में महिलाएँ अनेक प्रकार के व्रत और उपवास करती हैं, जिनमें वैभवलक्ष्मी का भी एक महत्त्वपूर्ण व्रत है। इस व्रत को महिलाएँ शुक्रवार के दिन रखती हैं। आजकल साधन संपन्न परिवारों की स्त्रियाँ इस व्रत को विधि-विधान पूर्वक रखती हैं। घर की वयोवृद्ध महिलाएँ अथवा ग्राम की पंडितानी इस पूजा में सहयोग देती हैं। शुक्रवार के दिन स्नान करके वैभवलक्ष्मी की पूजा विस्तार ली जाती है। एक चौकी पर लाल रंग का वस्त्र बिछाकर वैभवलक्ष्मी की मूर्ति बनाकर उस पर स्थापित कर दी जाती है। उन पर चावल, चंदन, धूप, दीप और नैवेद्य चढ़ाकर श्रद्धाभाव से पूजा की जाती है और इसके बाद वैभवलक्ष्मी की महत्ता पर आधारित वयोवृद्ध महिलाएँ कथा सुनाया करती हैं और अन्य महिलाएँ अपने हाथों में चावल और फूल लेकर बड़े ही श्रद्धाभाव से कथा सुनती हैं। उस व्रत पर कही जाने वाली एक लोक कथा का सारांश यहाँ प्रस्तुत है -

एक गाँव में एक ग्राम के मुखिया निवास करते थे। उनका घर- परिवार पूर्ण साधन संपन्न था। घर में किसी भी तरह की कोई कमी नहीं थी- अच्छा लम्बा चौड़ा मकान, लम्बा चौड़ा आँगन, लम्बी चौड़ी खेती। गायें, भैंसें, बैल- सब कुछ था। घर में उनकी शान-शौकत तो राजाओं से कम नहीं थी। उनके सामने गाँव के लोग मुँह नहीं खोल पाते थे। मुखिया जी के चार लड़के थे। जैसे-जैसे वे विवाह योग्य हुए उनका विवाह हो गया और चारों पुत्रवधुएँ घर में आ गईं। अब क्या था मुखिया जी का सारा घर पुत्र और पुत्रवधुओं से भर गया। मुखिया जी की तीन वधुएँ तो घर-गृहस्थी के कार्यों में व्यस्त रहा करती थीं, किन्तु उनकी छोटी बहू को घर-गृहस्थी से कोई मतलब नहीं था। वह तो हमेशा पूजा-पाठ करने में व्यस्त रहा करती थी। वह हर शुक्रवार को व्रत रखकर वैभवलक्ष्मी की पूजा में पूरा दिन व्यतीत कर देती थी। उसके सास-ससुर काम करने वाली तीनों वधुओं से बहुत प्रेम करते थे। छोटी बहू से मन ही मन नाराज रहते थे। छोटी बहू सास-ससुर की नाराजी की चिंता न करते हुए अपनी धुन में मस्त रहा करती थी। उसे तो ये कहावत स्मरण थी कि 'सुनिये सब की, करिये मन की'।

उसके सास–ससुर ने उसे अकर्मण्य मानकर अपने घर से निकाल दिया था। वह बेचारी ज्वार के खेत की मेड़ पर झोपड़ी बनाकर ज्वार की रखवाली करने लगी, किन्तु उसने वैभवलक्ष्मी की पूजा का नियम नहीं छोड़ा। झोपड़ी में रहकर भी वह नियमानुसार पूजा–पाठ करती रही। उस पर वैभवलक्ष्मी की उस वर्ष इतनी ज्यादा कृपा हुई कि उसकी ज्वार से भारी पैदावार हुई और उनका घर ज्वार से भर गया। साथ ही एक आश्चर्य और हुआ कि जब ज्वार के भुट्टे में से मोतियों के दाने झरने लगे। जिसने यह समाचार सुना वह आश्चर्यचकित हो गया। धीरे–धीरे यह खबर सारे गाँव में फैल गई। सारे गाँव के लोग इस आश्चर्यजनक दृश्य को देखने के लिए खेत पर एकत्रित हो गए। मुखिया जी ने अपनी छोटी बहू से बड़े प्यार से पूछा कि बेटा ये सब कैसे हुआ है? वह बोली कि पिता जी! हम क्या जानें, ये तो वही वैभवलक्ष्मी जी ही जानती होंगी, जिनकी मैं पूजा करती हूँ। यह बात सत्य है कि यदि पूजा किसी भी देव की– की जाय, उसका फल समय आने पर पुजारी को अवश्य ही प्राप्त होता है। साधना और आराधना कभी निष्फल नहीं होती। अतः पूजा सच्चे मन से करना चाहिए। भगवान आडम्बर से कोसों दूर रहते हैं।

पिसुआ सोमवार व्रत कथा

ई पिसुआ सुम्वार की पूजा चैत के चारई सुम्वारन खौं करी जात। ई पूजा में छेवले के फूल, आमकौ मौर, जवा की बालें, चनन की घेंटीं उर एक मलिया में देवल उर एक में गुड़ धरकै अच्छी तरा सै पटा पै चौक पूरकै ऊपै स्वामी जूकी फोटो या माटी की पुतइया धरकै कजन मिल जाये तो पट बैत धरकै जगदीश स्वामी की पूजा करी जात। पैले सोम्वार खौं देवल उर गुड़ कौ भोग लगा के वेई पाए जात। दूसरे सोमवार खौं खिचड़ी उर गुड़ कौ भोग लगाकै परसाद पाव जात। उर तीसरे सोमवार खौं गुड़ घी उर गकरइयन को स्वामी जी खौं भोग लगा कै परसाद पाव जात। चौथे अंतिम सोमवार खौं छप्पन भोजन बनाकै जगदीश स्वामी की पूजा करी जात। ई मौका पै घर की बड़ी बूड़ी औरतें किसा सुनाउन लगतीं। वैसे तौ हर सोमवार खौं बदल–बदल कै नई किसा सुनाई जात। उनमें से एक भौत अच्छी किसा में स्वामी जी की महिमा को वरनन करो गओ है। जा किस्सा सबई के सुनवे लाख है–

एक गाँव में एक भाट उर भाटिन रत्ते। उनके चार–पाँच मौड़ी मौड़ा हते। घर में गरीबी भौतई हती। पेट भरवे कोनऊ साधन हतो नई वो विचारो पाँच घरन सैं दो तीन किलो चून जोर कें रोज ल्याउत तो अकेलै ऊसै ऊकौ पूरौ नई परत तौ उयै ऐसई हैरान गती भोगतन कैऊ साले हो गयीं। हरां–हरां मौड़ी–मौड़ा श्याने हो गए। उर उनें पेट भरवें के लाले परन लगे। कऔ कभऊँ–कभऊँ दो–दो दिना की लांगन हो जात ती। एक दिना ऊबकै उनकी घरवारी बोली कै–काय हो तुम कनलगत कै हमाई राजा जगदीश स्वामी सें खासी चिनार है। तुम उनईनौ चले जाव वे तुमें

कछू दे दैय जीसै तुमाई गरीबी दूर होजैय। घरवारी की बात भाट के गरे उतर गयी, उर वौ भूको प्यासौं भगवान के दरबार कुदाऊँ चल दओ। चलत-चलत वो एक जंगल में पौचौ ऊनें देखों के कछू जनें छेवले की पत्तलें बना रये। उनन सें पूछी काय भइया जे पातरें काय खौं बना रये उनन नें बताई कें आज राजा के यां जगदीश स्वामी कौ भंडारौ है, सो हम औरे ओईकी तैयारी आ कर रये। सुनतनई भाट खौं मजा आ गओ, ऊनें उनके लिंगा दो ठौवा पातरें उर चार ठौवा दौना बनाकै धर लये दिन बूड़े जब वे औरे राजा कै ना अपने पन्वारे लैकै पंगत जेवे जान लगे। सो वौ भाट उनन कै आगे अपनी पत्तर लैके चल दओ। उते जाके ऊनें सबके संगें बैठकें खूब भरपूर भोजन करो, उर एक पातर अपनी घरबारी उर बाल बच्चन के लाने लगवा कै धरलई उतै एक अपने गाँव की ग्वालन मठा बैचत दिखा परी। ऊने ऊ ग्वालन की रीती मटकिया मैं वा पातर धरकै कई कै बाई जा पातर हमाये घरै धर दिइओ। उतै हमाये मौड़ी-मौड़ा भूखें बैठे हुइयें। हम जगदीश स्वामी के दर्शन करबे जा रये वा मौगी चाली मटकिया खौं मूड़ पै धरकै चल दई। जई सै वा गांव के लिंगा पौंची सो उयै वा गरई सी लगन लगी ऊनें सोची कै ऊ भाट कक्का ने ई मटकिया में ऐसो का धरदओ जईसै ऊनें ऊके मौं में हात डारो सो ओईमें फंस कै रै गओ। सौं घबड़ाके कन लगी- 'भाट की धरोहर भाट कैं जाए उर हमाव जो हात छूटई जाय।' ऐसी ऊने दो तीन दार कई उर जगदीश स्वामी कौ सुमरन करो तब कऊ ऊकौ हात छूट पाव। ग्वालन ऊ मटकिया खौं लै कैं अपनी सास से कन लगी कै देखो बाई जा मटकिया भाट की आय। इयै ओई के घरे पौंचाऊने आय बाई तुमई पराई चीज खौं हाँतनई लगाईयौ। बऊ धन की बात सुनकै सास नें सोसी कै ऐसो ईमें का धरो हुइयै। जियै छीबे खौं हमाई बऊ हमें रोक गई उर ऊने मटकिया खौ उगारई दओं। उर उयै ऊमें हीरा मोती भरे दिखानें। उने देखतनई ऊकी नियत बिगर गई। ऊनें वा मटकिया तौ अपने घरै धरलई ऊ दूसरी मटकिया में गोऊ चना भरकै भाट के घरे पौंचावे खौं तैयार हो गई। तनकदेर में जईसैं ऊने मटकिया कौ मौं खोल, कै देखो सोऊ ऊमें सै साँप बिच्छू निकर परे। ऊने देखतनई बा घबराकै कन लगी कै- 'भाट कौ सामान भाटई कै जाय उर हमाओ गल्लो हमाये घरै बनो रये।' इत्ती कै-कै सास ने वा मटकिया भाट के नाँ पौचा दई। भाटन ने ऊमे हीरा मोती भरे देखे। देखतनई खुश हो गई ऊने ऊमे सैं कछू दान पुन्न कर दओं उर कछू सै अपनै घरकौ खर्चा चलाव। भाट अब बेफिकर होकैंआगे खौं बढ़ गओं। जगदीस स्वामी ने सोसी कै अपने ई भक्त की परीक्षा लओं चइयै। वे एक साधू कौ रूप धरकै आगै गेल में बैठ गयें। जईसें उन्ने उयै उतै हुन कड़तन देखो सो ऊसै पूछकै बोले- काय भइया तुम कितै आजा रये। वौ बोलौ के कजन तुम जगदीस स्वामी के सासें भक्त होव तौ ई अंद कुँआ में कूद परो वौ बेफिकर होकै ऊ कुँआ में कूद कै बायरे कड़ आव अकेलै ऊकौ कछू बिगर नई पाव, फिर वौ अपने भगवान खौं सुमरत आगे खौं चलों। कोसक चल पावतो। इतेकई में वौ साधू फिरकऊँ ऊये मिलो उर फिर ऊने बेई बात पूछी साधू बोलौ कै तुम ई बरत आगी में कूद जाव वौ आगी में कूद गओं तो ऊकौ कछू नई बिगरो। वौ चलतई गओं उर तीसरी दार गैल में वेऊ साधू फिरकऊ मिल गओं, उर ऊसै उने कई कै कजन तैं

जगदीस स्वामी कौ साँसौ भक्त होय तौ इन तलवार की धारन के बीच हुन कड़ जावौ। तुरतई कड़ गओं, उर ऊकौ कछू बिगर नई पाव। ई तमासै खौं देख-देख कै समजतौ सब गओं वे भगवान हमाई परीक्षा आ लै रये है। तनकई देर में भगवान ऊके सामै प्रकट हौकै कन लगे कै बेटा हम तुमाई भक्ति सै प्रसन्न हो गये। माँगले जो तोय माँगने होय। भाट बोलौ कै मराज हम भौतई गरीब है। उर दुख भोगत-भोगत आदी जिन्दगी कड़गई हम पै ऐसी कृपा करो कै हमाओ दालुद्दुर दूर हो जाय। भगवान ने उयै पांच बैत उर एक पीतर की बटलोई दैके कई कै जब ई पीतर की बटलोई में एक बैत डार कै खड़ खड़ाव सौऊ जा छप्पन तरा कै बिंजन उगलन लगे। ऊ बटलोई खौं लैकै भाट खुशी-खुशी अपनें घर कुदाऊ लौट परो। उयै गैल में जंगल में छेवले के लाल-लाल फूल फूलत दिखाने। सोऊ उये पैले सोमबार की पूजा की खबर हो आई, ऊनें उतई पूजा विस्तार दई उर उतै एक किसान हर हाक रओतौ ऊने ऊसै किसा सुनबे की कई अकेलै ऊने सुनी अनसुनी कर दई, सोऊ किसान के खेत में आगी लगगई, उर वौ दौरकै भाट सै बोलो कै ओ भइया हमाये तौ खेत में आगई लग गई। बताव अब हम का करें। भाट बोलौ कै हम का जाने। बेई जगदीस स्वामी जाने किसान ने बैठकै कथा सुनी उर मन लगाकै पूजा करी सोऊ पूरी आगी निजा गई। भाट तनक और चलो उर दूसरो सोम्बार आगओं। उर उयै जंगल में एक गड़रिया छिरिया चराऊत मिलो। भाट ने ऊसै कई कै भइया आज दूसरौ पिसुआ सोमवार है, तनक तुम बैठकै जगदीस स्वामी की कथा सुनलौ। अकेलो वौ गड़रिया ऊकै लिगाई नई गओ सोऊ ऊकी पूरी छिरिया जंगल में हिरा गई। सोऊ ऊने डरन के मारै भाट के लिंगा बैठकै कथा सुनी, उर भगवान की कृपा सै ऊकी छिरिया जां की तां मिल गई। भाट तौ अपने घर कुदाऊँ बढ़तई जा रओ तो। भाट की दो बिटिया हर्ती बड़ी बिटिया धनी के नाँ ब्याई गई। भाट तीसरे सोम्बार खौं बड़ी बिटिया कै घरै पौचों उर ऊसै कथा सुनबे की कई, ऊने धन के मद में कथा कुदाऊँ ध्यानई नई दओं। सोऊ भगवान नाराज हो गये उर वौ अपनी हल्की बिटिया के ना पौंचो, उर ऊके नाँ बैठ कै पूजा विस्तारी बिटिया ने मन लगा कै कथा सुनी उर पूरी हो गई। भाट तो बटलोई संगै ल्याओं हतौ सो ऊनै ऊमें सें बैंतडार कै खड़-खड़ाव सोऊ छप्पन भोजनन कै ढेर लग गये। जीसै ऊने गाँव भर को भंडारौ कर दओ। चारई तरपै ऊकी बिटिया की बड़वाई होन लगी। ऊने राजा के नाँ दस थार भोजनन के पौचा दये। देखतनई राजा अचरज में पर गये, उर सोसन लगे के जो भाट इत्तो बड़ो आदमी हो गओ कै हमाये इते थार पौंचान लगो। उर जई से उयै ऊकी बटलोई कौ पतौ चलो सोऊ राजा ऊकी बटलोई की घात लगावन लगे। उर उन्ने अपने कुँवर खौं बटलोई लैवै खौं भाट नौ पौंचा दओ। भाट राजा की आज्ञा कैसे टार सकत तो। ऊने वा बटलोई कुँवर साब खौं सौपदई। बटलोई खौं देखतनई राजा ने पूरे नगर कौ न्योतौ करवा दओ। राजा के ना के भण्डारे की खबर चारई तरपै फैल गई। दिन बूड़े नगर भर के आदमियन की पंगत बैठ गई। राजा तौ बटलोई में सै कड़वे बारे छप्पन बिंजनन की बाठ हैरै ते। ऐन मौकापै राजा ने बटलोई में बैंत डार कैऊ दार खड़-खड़ाव अकेले ऊमे सै कछू नई कड़ो। अब राजा का करें भाट पै गुर गुरा कै रै गये। अब राजा इत्ते लोगन खौं कैसै ख्आऊत तै। पैलेसै

कछू तैयारी तौ हती नईं। राजा की भारी बदनामी भई, सबसै माफी माँगके अपनौ सौं मौ लैकै, छाती में गतकौ दैकें रै गये। उर खुन्सया कैवा बटलोई जांकी तां भाट खौं सौप दई। भाट के ना पौचतनई ऊमें सै फिरकऊ छप्पन बिंजन कड़न लगे, उर ऊकौ परवार सुख चैन सै रन लगो। ऊने जीवन भर स्वामी जूकी पूजा नई छोड़ी। उर स्वामी जूकी कृपा सै वौ हर तरा सै फूलत फलत रओ। ऐसौ होत पिसुआ सोमवार की पूजा कौ परभाव। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

ये पिसुआ सोमवार की पूजा चैत्र माह के चारों सोमवारों को की जाती है। इस पूजा के अवसर पर पलाश के पुष्प, आम का बौर, जवा की बालें, चना की फलियों का उपयोग किया जाता है। ये एक प्रकार से बसंत ऋतु का प्रमुख व्रत है, साथ ही नवीन फसल के आने का संकेत है। इस अवसर पर पुष्प, बौर वाली फलियाँ रखकर एक मिट्टी के पात्र में भीगी हुई चने की दाल और गुड़ रख लिया जाता है। फिर एक चौकी पर चौक पूरकर जगदीश स्वामी का चित्र अथवा मिट्टी की मूर्ति स्थापित की जाती है यह एक प्रकार की जगन्नाथ स्वामी की ही पूजा है। चारों सोमवार को अलग-अलग सामग्री के द्वारा भगवान को भोग लगाया जाता है। पहले सोमवार को भीगी चना की दाल और गुड़ का प्रसाद लगाया जाता है और प्रसाद के रूप में उसी का वितरण किया जाता है। दूसरे सोमवार को खिचड़ी और गुड़ का प्रसाद। तीसरे सोमवार को घी और गकरियों का प्रसाद और अंतिम चौथे सोमवार को छप्पन प्रकार के व्यंजनों का प्रसाद लगाकर वितरण किया जाता है। इस अवसर पर परिवार की वयोवृद्ध महिलाएँ कथा सुनाया करती हैं, वैसे तो हर सोमवार को बदल-बदलकर कथा सुनाई जाती है जिसे महिलाएँ श्रद्धाभाव से सुनती हैं। हर कथा में भगवान जगदीश स्वामी की महिमा का वर्णन किया गया है। उनमें से एक महत्त्वपूर्ण कथा का संक्षिप्तांश प्रस्तुत है।

एक गाँव में एक भाट और भाटिन रहते थे। उनके चार पाँच बच्चे थे, किन्तु उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी। उदर पोषण की कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी। भिक्षावृत्ति से जो कुछ मिल जाता था, उसी से उनका जीविकोपार्जन होता था। इसी तरह कष्ट भोगते-भोगते अनेक वर्ष व्यतीत हो गये थे। कभी-कभी तो उनके परिवार को दो-दो दिन की लंघन हो जाया करती थी। एक दिन परेशान होते-होते उनकी पत्नी ने कहा कि आप तो कहा करते हैं कि हमारी जगदीश स्वामी से खूब जान पहिचान है। अच्छा होता कि आप उन्हीं के पास चले जाते और वहाँ से आपको थोड़ा बहुत मिल जाता, जिससे कुछ दिन का काम चल जाता। अपनी पत्नी की सलाह भाट के गले उतर गई। घर में खाने के लिए तो कुछ था नहीं। वह भूखा-प्यासा ही जगदीश स्वामी के मंदिर की ओर चल दिया। वह चलते-चलते एक जंगल में पहुँचा। वहाँ उसने कुछ लोगों को

पलाश की पत्तलें बनाते हुए देखा। भाट ने उन लोगों से पूछा कि भाइयों आप लोग यह क्या कर रहे हो? उन लोगों ने बताया कि आज राजा के यहाँ जगदीश स्वामी का भण्डारा है। हम लोग उसी की तैयारी कर रहे हैं। सुनते ही भूखे प्यासे भाट को आनंद आ गया। उसने भी दो पत्तलें और चार दोना बनाकर रख लिए। शाम के समय जब वे लोग पत्तलें ले लेकर राजमहल की ओर जाने लगे, तब भाट भी उनके पीछे-पीछे चल दिया। वहाँ जाकर उसने सबके साथ बैठकर खूब भरपेट भोजन किया और उसने दो पत्तलें अपनी पत्नी और बच्चों को लगवाकर रख लीं।

अचानक वहाँ उसे उसके गाँव की एक ग्वालिन सिर पर खाली मटकी रखे हुए गाँव की ओर लौटती हुई दिखाई दी। उसने ग्वालिन की खाली मटकी में दोनों पत्तलों को रखते हुए कहा कि हमने तो यहाँ भण्डारे में भरपेट भोजन कर लिया और उधर मेरी पत्नी और बच्चे भूखे बैठे होंगे। हम जगदीश स्वामी के दर्शन करने के लिए जा रहे हैं। तुम ये मटकी का सामान मेरी पत्नी को सौंप देना। वह चुपचाप मटकी सिर पर रखकर चल दी। ज्यों ही वह ग्राम के समीप पहुँची तो उसे वह मटकी कुछ वजनी सी मालूम होने लगी। उसने सोचा कि उस भाट चाचा ने इस मटकी में ऐसा क्या सामान रख दिया, जो इतना वजनी मालूम पड़ रहा है। उसने उस मटकी को नीचे उतारकर ज्यों ही उसमें अपना हाथ डाला तो उसका हाथ उसी में फँस गया। उसने घबड़ाकर कहा कि भाट की धरोहर भाट के ही घर में जाय और मेरा हाथ छूट जाय। ये बात उसने दो-तीन बार दुहराई और जगदीश स्वामी से विनय की। तब कहीं उसका हाथ छूट पाया। ग्वालिन ने अपने घर जाकर मटकी को घर में रखते हुए अपनी सास से कहा कि ये मटकी भाट की अमानत है। इसे उसी के घर जाना चाहिए। पराई वस्तु को हाथ लगाना ठीक नहीं है। यह सुनकर सास के मन में उत्सुकता उत्पन्न हुई कि इस मटकी में ऐसा क्या रखा है? जिसे छूने को बहू मना कर रही है। उत्सुकतावश ज्यों ही सास ने उस मटकी को खोला सो उसको उसमें हीरा-मोती भरे हुए दिखाई दिए। उसे देखते ही वह ललचा गई। सास ने उस मटकी को अपने घर में रख लिया और बदले में भाट के घर दूसरी मटकी चना भरकर भेजने को तैयार हो गई। दूसरी बार उसने ज्योंही मटकी का मुँह खोला सो उसमें साँप, बिच्छू भरे हुए दिखाई दिए। उसे देखकर सास ने घबड़ाकर कहा कि भाट का सामान भाट के यहाँ जाय और हमारा गल्ला हमारे ही घर में बना रहे। यह सोचकर उसने वह मटकी भाट के घर भिजवा दी। भाट की पत्नी मटकी में हीरा-मोती भरे देखकर बहुत खुश हुई। उसने उस द्रव्य में से कुछ दान कर दिया और कुछ द्रव्य से उसके परिवार का भरण-पोषण होने लगा। अब क्या था? जगन्नाथ स्वामी की कृपा से उसका परिवार सुखपूर्वक रहने लगा।

भाट दो पत्तलें भेजकर निश्चिन्त होकर भगवान के दर्शन करने के लिए आगे बढ़ गया। भगवान तो अन्तर्यामी हैं, वे घट-घट की जानते हैं। उन्होंने सोचा कि हमारा भक्त दर्शन करने के लिए बढ़ता चला आ रहा है। वे अपने भक्त की परीक्षा लेना चाह रहे थे। वे एक महात्मा का रूप धारण करके उसके मार्ग में बैठ गये। उन्होंने उस भाट से पूछा कि क्यों भाई तुम कहाँ जा रहे हो?

उसने कहा कि मैं भगवान जगदीश स्वामी के दर्शन करने के लिए जा रहा हूँ। महात्मा ने कहा कि यदि आप भगवान के सच्चे भक्त हो तो इस अंधे कुँए में कूद जाइये। भक्तों को अपने भगवान पर पूर्ण विश्वास था। वह उस अंधे कुँए में कूदकर सकुशल बाहर निकल आया। फिर स्वामी जी का स्मरण करते हुए वह आगे बढ़ता चला गया। दो चार मील निकलने के बाद उसे मार्ग में वही साधु फिर से मिल गये। उसने कहा कि तुम्हें हम सच्चा भक्त तभी मानेंगे, जब तुम इस जलती हुई आग में कूद पड़ोगे। वह जलती हुई आग में कूदकर सकुशल बाहर निकल आया। वह थोड़ी दूर चल पाया था कि मार्ग में बैठे हुए वही महात्मा फिर मिल गये। उन्होंने कहा कि यदि तुम स्वामी जी के सच्चे भक्त हो तो इन तलवारों की धार पर चलकर दिखाओ। वह तुरन्त ही तलवारों की धार पर चलकर उनके सामने सकुशल खड़ा हो गया। हालांकि भक्त समझ तो सब रहा था कि भगवान ही हमारी परीक्षा ले रहे हैं। थोड़ी ही देर में स्वामी जी उसके समक्ष प्रकट होकर बोले कि बेटा हम तुम्हारे भक्तिभाव से पूर्ण प्रसन्न हैं। अब तुम मुझसे मनचाहा वरदान माँग सकते हो। भक्त बोला कि महाराज मैं तो बहुत गरीब हूँ। कष्ट भोगते–भोगते आधा जीवन निकल गया। आप कृपा करके मेरी दरिद्रता दूर कर दीजिए। उसे संत कबीर की ये साखी स्मरण हो आई–

साँईं इतना दीजिए, जामें कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय ।

स्वामी जी ने उसे पाँच बैंत और एक पीतल की बटलोई देकर कहा कि देखो इस बटलोई में एक बैंत डालकर खड़खड़ा देना, तब यह अपने आप छप्पन प्रकार के व्यंजन उगलने लगेगी। उस बटलोई और बैंत को लेकर भाट अपने घर की ओर लौट पड़ा। उसे मार्ग में जंगल में लाल पलाश के फूल खिले हुए दिखाई दिए। तब उसे सोमवार की पूजा का स्मरण हो आया। उसने मार्ग में ही स्वामी जी की विधि–विधान से पूजा कर ली। वहाँ एक कृषक खेत में हल चला रहा था। भाट ने उसे पिसुआ सोमवार की कथा सुनने के लिए बुलाया, किन्तु किसान ने उसकी बात को सुनी अनसुनी कर दी, जिससे उसके खेत में आग लग गई। जिसे देखकर उस कृषक ने घबड़ाकर भाट से कहा कि भइया अब बताइये हम क्या करें? अरे! हमारे खेत में तो आग लग गई। उसने कहा कि वही स्वामी जी समझ सकते हैं। उसने वहाँ बैठकर कथा सुनी, जिससे उसके खेत की आग अपने आप बुझ गई। भाट थोड़ा और आगे चला, तब दूसरा सोमवार आ गया। भाट ने पूजा विस्तारी और एक बकरी चराने वाले गड़रिया को कथा सुनने के लिए बुलाया, किन्तु उसने सुना–अनसुना कर दिया, जिससे उसकी बकरियाँ जंगल में खो गईं। उसने भयभीत होकर भाट के पास जाकर कथा सुनी, जिससे उसकी बकरियाँ मिल गईं। भाट तो अपने घर की ओर जा ही रहा था। भाट की दो लड़कियाँ थीं। उसकी बड़ी लड़की की शादी धनवान व्यक्ति के यहाँ हुई थी। भाट तीसरे सोमवार को अपनी बड़ी लड़की के घर पहुँच गया। उसने वहाँ सोमवार की पूजा विस्तारी और अपने दामाद को कथा सुनने के लिए बुलाया, किन्तु दामाद ने धन के मद में ध्यान

नहीं दिया, जिससे वह नाराज होकर अपनी छोटी लड़की के घर पहुँच गया और वहाँ बैठकर स्वामी जी की पूजा करने लगा। उसकी छोटी लड़की ने मन लगाकर कथा सुनी, जिससे उसे मनोवांछित फल प्राप्त हो गया।

भाट तो अपने साथ स्वामी जी की दी हुई बटलोई और बैंत लिए हुए था। उसने बटलोई में डालकर बैंत खड़खड़ाया, जिससे छप्पन प्रकार के व्यंजनों के ढेर लग गये। भाट ने प्रसन्न होकर गाँव भर का भंडारा किया, जिससे गाँव भर के लोगों ने छोटी लड़की की बहुत प्रशंसा की। भाट ने दस थाल सजाकर राजा के यहाँ भिजवा दिए। देखते ही राजा को बड़ा अचम्भा हुआ। वे सोचने लगे कि ये भाट इतना बड़ा आदमी हो गया कि भोजनों का थाल हमारे यहाँ भिजवाने लगा। जब राजा को उसकी उस मायावी बटलोई का पता लगा तो वे उस बटलोई को पाने की घात लगाने लगे और उन्होंने राजकुमार को उस बटलोई को लाने के लिए भाट के पास भेजा। भाट राजा की आज्ञा अब कैसे टाल सकता था? उसने वह बटलोई राजकुमार को सौंप दी। उसे प्राप्त करके राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उस बटलोई के भरोसे सारे नगर में निमंत्रण करवा दिया। शाम के समय नगर भर के लोग भोजन करने के लिए राजमहल में एकत्रित हो गए। राजा को तो बटलोई का पूरा विश्वास था। राजा ने बटलोई में बैंत डालकर अनेक बार खड़खड़ाया, किन्तु उसमें से कुछ भी नहीं निकला। अंत में नगर के सारे लोग भूखे ही उठ गये, जिससे राजा की बहुत बदनामी हुई। राजा को सबसे क्षमा माँगनी पड़ी और अंत में गुस्सा होकर वह बटलोई भाट को ही सौंप दी। भाट के यहाँ पहुँचते ही वह फिर से छप्पन व्यंजन उगलने लगी। देखिये ऐसा होता है स्वामी जी की पूजा का प्रभाव। वह जीवन भर पूजा करता रहा और फूलता-फलता रहा ।

सेवराँतरी चऊदस व्रत कथा

बुन्देलखण्ड में ई व्रत कौ भौतई महत्त्व है। लागत फागुन की चऊदस खौं जौ व्रत करो जात। ई व्रत खौं इतै की सबसै जांदां औरतई करत हैं। दिन भर शंकर जी की पूजा रचा करीं जात, उर रात कैं शंकर जी के ब्याव में जागरन करती। कछू-कछू पुरुष सोऊ सेवराँतरी चऊदस उपासे रत। अकेलें औरतन की संख्या सबसै जादा होत। रात भर मन्दिर के आँगन में बैठ कै बनरा गाऊती। पंडित जोर -जोर सैं मंत्र पढ़-पढ़ कै भाँवरे पराऊत। कायदे सें टीका होत उर पाँव पखरई कराई जात। कितऊँ-कितऊँ तौ शंकर जी की बरात कड़त। हाती, घुरवा, ऊँट सबई होत ऊ बरात में फिर पछारी सै शंकर जू के गनन की टोली कड़त। उदनाँ लोगन कौ खूबई मनोरंजन होत। ऊपर सैं धरम की भावना कौ खूबई प्रसार होत। उदनाँ मौड़ी मौड़न के मूँढ़ने होत उर दूसरे दिना शंकर जू खौं मलीदा चढाव जात। उदनाँ औरतें उपासी रतीं उर ब्रत की एक कानियाँ कन लगती तीं। ऊकानिया में एक शिकारी के कामन में इकदम कैसें अंतर आ गओ। ऊपै शंकर जू की कैंसे

इत्ती जादा कृपा हो गई, जे सब बातें ई कानिया में बताई गई है। जा एक भौत पुरानी किस्सा है– एक जंगल के किनारे एक शिकारी बहेलिया रत्तो। वौ हमेसई धनुष बान टाँगे जंगल में घूमत रत्तो। उतै जौन जानवर आबड़ में बिदो वौ ओइयै मारकै टाँग ल्याउततौ। उर ऊकौ माँस राँदकै खात रत्तो। ऊके बाल बच्चा ओई माँस सैं अपनौ पेट भरत रत्ते। कोनऊ ना कोनऊ शिकार उयैं रोज मिलई जात तो।

एक दिना वौ पूरे जंगल में भटकत रओ, उर कोनऊ सिकार हातें नई लगो। फिरत–फिरत कौ बुरईतरा सैहार गओ। उर हारो थको एक तला के किनारे सुस्तान लगो। पैलाँतौ ऊने तला कौ ठण्डो पानी पियो, उर तनक देर नौ उतई बैठो रओ। उतै किनारे पै एक बेलकौ बिरछा ठाढ़ो तो। बेल के नैचे एक बड़ी संकर की पिण्डी बिराजी ती। बहेलिया खौं ऊसें कछू नई लैने देने तौ। बेल में फल उर हरीरे पत्ता देखकै ऊके मन में आई कै हम ऐई पेड़ पै बैठकै आराम करे। उर वौ उचक के पेड़ पै चढ़ गओ। ऊके चढ़ें सै बेल के पत्ता गिर–गिर कै शिव जी की पिण्डी पै अवढ़ाये चढ़ल लगे। भोला भोलई है बेल पत्ती चढ़ाये सै खुस हो गये, उर वौ अनजाने में भोला कौ भक्त बन गओ। उर वौ ओई बेल के पेड़ पै बड़ी रात नौ बैठो रओ।

रातई में एक ग्यावन हिन्नी ऊ तला में पानी पीवे आई। उयै देखतनई ऊने उपै तीर कौ निसानौ सादौ उयै तीर ताने देखतनई हिन्नी ने कई कै भइया तुम हमें कछू दिना और जियन दो हमाये पेट में बच्चा है। बच्चा के होतनई तुम हमाव शिकार कर लिइयौ। संकर जू की कृपा सै बहेलिया खौं हिन्नी पै दिया आ गई, उर ऊने उयै छोड़ दओ। वौ परेसान सौ तौ हतोई उर फिर वौ ऊ बेल के पत्ता टोर–टोर कै नैचे झारन लगो उर वे पत्ता पिण्डी पै गिरन लगे। जैसे–जैसे पत्ता पिण्डी पै गिरत ते सो शंकर जू वरम्बू होत जातते। इतेकई में एक और हिन्नी तला में पानी पीवे खौं पौची। बहेलिया तौ ताक में बैठऊ हतो। ऊने जईसै ऊपै निसानौ सादन जाव, सो बोली कै भइया अबै हम मइना सै हैं। कजन तुम हमाई हत्या कर दैव तौ तुमें भौत बड़ो पाप लगे। सुनतनई ऊनें तीर खौं टाँक पै धर लओ। उर सांत हौकै रै गओ। हिन्नी हराँ–हराँ चली उर ओई जंगल में बिला गई। ऐसई ऐसे पेड पै चढ़ें–चढ़ें उयै आदी रात हो गई। बहेलिया चिन्ता में बैठो बेल के पत्ता टोर–टोर कें मेंकत जा रओ तो, उर ऊके मनमें दया उर प्रेम उपजत जा रओ तो। भीतर–भीतर कछू धुना बीदी सी लगी ती कै आज कौ दिन बेकारई चलो गओ। कोनऊ सिकार नई मिल पाव। हमाये बाल बच्चा भूके डरे हुइयै। वौ ऐसी सोसत जाय उर बेल पत्री टोर–टोर के नैचे डारत जाय। संकर जी कौ अनजाने में वौ भौत बड़ो भक्त बन गओ तो। इतेकई में तीन छौनन खौं संगै लुआ कै एक हिन्नी पानी पीवे खौं आई। बहेलिया ने फिर कऊ निसानौ साधो। हिन्नी बोली कै भइया ई हमाये बच्चा अबै भौतई हल्के है। पैला हमे इने इनके बाप के लिंगा पौचा आन दो। फिर तुम हमाव सिकार कर लिइयौ। बहेलिया कौ मन तौ बदलई गओ तो, ऊने उयै छौड़ दओ। ऐसई ऐसै भुन्सरों हो गओ उर ऊके हाते कोनऊ सिकार नई लगो। वौ सोस–सोस भौत हैरान हतो कै आज कौ हमाओ

दिन बेकार चलो गओ। अब हम घरै जाकै का जबाब दैंय। इतेकई में उयै एक मोटो ताजौ हिरन पानी पियत दिखानौ। वौ तौ तैयार बैठऊ हतो। ऊने निसानौ सादन चाव सो बोलौ कै देखौ भइया हम सबई हिन्नन के रच्छक है। हमाये मरे सैं सबई की दुर्गत हो जैये। ईसै भइया तुम हमें छोड़ दो। बहेलिया कौ मन पसीज गओ उर ऊने ओइयै छोड़ दओ। देखौ उदनाँ सेवरात कौ पर्व हतो सो उदना बहेलिया कौ दिन उर रात कै उपास हो गओ। रात में जागरन हो गओ। उर जाने अनजाने बेलपत्तरी चढ़ा-चढ़ा के शिव जी कौ पूजन हो गओ। अब सोसो कै शंकर जू ऊपै खुस कायनई हुइयै। ऊ बहेलिया के मन पै ऐसौ परभाव परो कै उदनई सै ऊने सिकार करबो छोड़ दओ। उर मैनत मजूरी करकै अपने परवार कौ भरन पोसन करन लगो। जौ उपास तौ अनजाने में हो गओ तो। अब वौ पापी जीव हर सालै सेवरात कौ उपास करन लगे। उर सुक भोगत भोगत अंत में सिवलोक खौं चलो गओ ।

भावार्थ

बुन्देलखण्ड में इस व्रत का बहुत महत्त्व है। फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को यह व्रत किया जाता है। इस व्रत को बुन्देलखण्ड की महिलाएँ विशेष महत्त्व देती हैं। महिलाएँ दिन भर शिवजी की पूजा-अर्चना में व्यस्त रहती हैं और रात्रि में शिवजी के विवाह के अवसर पर जागरण करती हैं। कहीं-कहीं पुरुष वर्ग भी व्रत और उपवास करता है, किन्तु इस उपवास में महिलाओं की सर्वाधिक भागीदारी होती है। शिवजी के विवाह के अवसर पर वे रातभर मंदिर के प्रांगण में एकत्रित होकर विवाह के गीत गाती हैं। पंडित लोग जोर-जोर से मंत्रोच्चारण करते हैं। विधिवत द्वारचार और पाँव पखरई होती है। कहीं-कहीं तो बड़ी धूमधाम से शिवजी की बारात भी निकाली जाती है, जिसमें हाथी घोड़ा और ऊँटों को शामिल किया जाता है। साथ ही शिवजी के विकराल गण भी उछलते-कूदते हुए दिखाई देते हैं। अनेक मनोरंजन के साधन भी एकत्रित किए जाते हैं। खूब नाच-गान और मनोविनोद होता है। बच्चों का मुण्डन संस्कार किया जाता है। शिवजी को मलीदा का प्रसाद लगाया जाता है। उस दिन महिलाएँ उपवास करती हैं और पूजा के अवसर पर व्रत के महत्त्व पर आधारित कथा भी सुनाई जाती है। उस कथा में बताया गया है कि एक हिंसक शिकारी के स्वभाव में शिवजी की कृपा से कैसे परिवर्तन आ जाता है। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन उस लोक कथा में किया गया है। कथा का सारांश प्रस्तुत है- 'एक जंगल में एक हिंसक बहेलिया शिकार करता था। वह रोज कंधे पर धनुष टाँगे हुए जंगल में विचरण करते हुए पशुओं का शिकार करता रहता था। उसे जंगल में जो भी पशु दिखाई देता था, वह उसे मारकर टाँग लाता और उसका माँस पकाकर खाता रहता था। सच पूछा जाय तो वह भयंकर आसुरी वृत्ति का व्यक्ति था। उसे रोज कोई न कोई शिकार मिल ही जाता था।

एक दिन वह पूरे जंगल में भटकता रहा, किन्तु उसे कोई शिकार नहीं मिला। फिरते–फिरते वह बुरी तरह से थक गया और थका मांदा एक तालाब के किनारे विश्राम करने लगा। उसने तालाब का ठंडा पानी पिया और थोड़ी देर तक वहीं सीढ़ियों पर बैठा रहा। उसी तालाब के किनारे पर एक बेल का वृक्ष खड़ा हुआ था। उसी बेल के नीचे एक बड़ी सी शंकर जी की मूर्ति स्थापित थी। उस बहेलिए को उस मूर्ति से कोई मतलब नहीं था। उस बेल में लगे हुए फल और हरे पत्ते देखकर उसके मन में उस वृक्ष पर बैठकर विश्राम करने की इच्छा जाग्रत हुई और वह उछलकर उस वृक्ष पर चढ़ गया, जिसके कारण बेल के पत्ते अपने आप टूट–टूट कर शिवजी की पिण्डी पर गिरने लगे। आखिर भोले तो भोले ही हैं। बेल के पत्ते अपने आप गिरने से शिवजी बहेलिए से प्रसन्न हो गए। इस प्रकार वह बहेलिया अनायास ही शिवजी का भक्त बन गया। वह बहेलिया आधी रात तक उसी वृक्ष पर बैठा रहा।

रात में ही एक गर्भिणी हरिणी उस तालाब में पानी पीने के लिए पहुँची। उसे देखते ही उस बहेलिए ने उस पर तीर का निशाना साधा। बहेलिए को तीर चढ़ाए देखकर हिरणी ने कहा कि भइया मुझे कुछ दिन और जीने दीजिए, क्योंकि मेरे पेट में बच्चा है। बच्चा उत्पन्न होने के बाद आप हमारा शिकार कर लेना। भगवान शंकर की कृपा से बहेलिए के मन में दया उत्पन्न हो गई और उसने हरिणी को छोड़ दिया। बहेलिया परेशान तो था ही, वह बेल के पत्ते तोड़–तोड़ कर नीचे गिराने लगा और वे पत्ते शिव जी की पिण्डी पर अपने आप चढ़ने लगे। जैसे–जैसे वे पत्ते पिण्डी पर गिरते थे, शिवजी बहेलिए से प्रसन्न होते जाते थे। इसी बीच में एक दूसरी हरिणी उस तालाब में पानी पीने के लिए पहुँची। बहेलिया तो शिकार के लिए तैयार बैठा ही था। बहेलिया ने उस पर निशाना साधना चाहा, तब वह बोली कि भइया इस समय मैं मासिक धर्म से हूँ। यदि आप मेरा वध कर देंगे तो आप पर बहुत बड़ा पाप चढ़ जायेगा। सुनते ही उसने धनुष को रख दिया और शांति से बैठ गया। हरिणी प्राण बचाकर जंगल में विलीन हो गई। इसी तरह बेल के वृक्ष पर बैठे–बैठे उसे वहीं आधी रात हो गई। बहेलिया समय काटने के लिए अब करता ही क्या, बेल के पत्ते तोड़कर नीचे फेंक रहा था और वे पत्ते पिण्डी पर चढ़ते जा रहे थे। बहेलिए के मन में दया और प्रेम के भाव उत्पन्न हो रहे थे। साथ ही उसके मन में चिन्ता भी थी कि आज का दिन बिलकुल बेकार चला गया। आज तो मुझे कोई शिकार भी नहीं मिला। अब मैं अपने बच्चों को क्या खिलाऊँगा? वह इन सब बातों को सोचता जा रहा था और पत्ते तोड़–तोड़कर डालता जा रहा था और अनजाने में वह शंकर जी का परम भक्त बन गया। इसी बीच में तीन बच्चों को लिए हुए एक हरिणी पानी पीने के लिए पहुँची। उसे देखकर बहेलिया ने निशाना साधा। हरिणी ने कहा कि भइया अभी ये हमारा बच्चा बहुत छोटा है। पहले हमें इन बच्चों को इनके पिता के समीप भेज आने दीजिए, फिर आप मेरा वध कर देना। बहेलिए का मन तो शिवजी की कृपा से बदल ही चुका था। उसने उस हरिणी को छोड़ दिया। इसी तरह बैठे–बैठे सवेरा हो गया और उस दिन उसे

कोई शिकार नहीं मिल पाया। वह सोच रहा था कि अब मैं घर जाकर क्या उत्तर दूँगा। इसी बीच में एक मोटा ताजा हरिण वहाँ पानी पीने के लिए पहुँच गया। उसने उस पर निशाना साधना चाहा। तब वह बोला कि भइया हम सभी हरिणों के रक्षक हैं। हमारी मृत्यु होने से सभी हरिण निराश्रित हो जायेंगे। इस कारण से आप हमें छोड़ दीजिये। यह सुनकर बहेलिए को दया आ गई और उसने उसे छोड़ दिया।

संयोगवश उस दिन शिवरात्रि का पर्व था और उस बहेलिए का अनायास ही उपवास हो गया। रातभर का जागरण हो गया। और अनजाने शिवजी पर बेलपत्री चढ़ाकर उनका पूजन हो गया। इन समस्त अनायास क्रियाओं से अब शिवजी उस पर प्रसन्न क्यों नहीं होंगे, अवश्य ही होंगे। उस बहेलिए पर उस वातावरण का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उस दिन से उसने हिंसा करना छोड़ दिया और परिश्रम करके अपने परिवार का भरण-पोषण करने लगा। उपवास तो उससे अनायास ही हो गया था, किन्तु शिवजी की कृपा से वह पापी एक सात्विक प्राणी बनकर शिवजी का परम भक्त बन गया। व्रत और उपवास करके सुख भोगता हुआ अंत में शिवलोक को चला गया। ऐसा होता है शिवजी के व्रत का प्रभाव।

गनगौर व्रत कथा

बुन्देलखण्ड में ई त्योहार खौं भौतई अच्छी तरा सै मनाव जात। जौ त्योहार चैत की नौदूरगन में तीज खौं मनाव जात। ई मौका पै गौर उर गनेस की पूजा करी जात। ऐंईसै तौ जौ नौरातरी कों त्योहार है। सो जादांतर गौरा पार्वती की पूजा करी जात। उर उनसें अपने अमर ऐबात कौ बरदान माँगो जात। ऐबाती औरतें दिन भर उपासी रती, उर पूजा के लाने तरा तरा के पकवान बनाउतीं। पूजा करकैं उन पकवानन कौ खुदई भोजन करतीं। ऐसी कानात कई जात कैं ऊमे सै अपने पती खौं कछूनई दओ जात।

एक ऐसौ त्योहार है कै ईमें औरत खौं मन मुक्तौ खाबे खौं मिल जात। बुन्देलखण्ड में ऐंई सै ऐसी कानात कई जातकै

गन गौर के गनगोरा। मुंस खौ नई दैय कौरा ।।

एक दार ऐंसऊ भओ कैं ई त्योहार के समय घरवारे खौं कछू खाबे नई मिलो। उर मताई बिटिया उयैं निरै-निरै कैं मन मुक्तौ खात् रई। घरवारे खौं खुन्सतौ खूबई उठत रई। अकेलै व्रत के नियम के डरके मारै भोंगों चालौ गुर्रानौ सौ बैठों रओ। अकेलै वौ अपनी गौ में दये रओं। कछू दिना में एक ऐसौ त्योहार आव अषाढ़ में। उर उयै अपने खेत में सगुन कई जात। ऊने अपनी घरवारी खौं बुलाकै कई कै देखों आज हर बैल उर बीज लेंकें खेत में बोनी कौ सगुन साधवे चलने हैं।

पूजा के लाने अच्छें-अच्छें पकवान बनाओ। मताई बिटिया ने खूब रूच-रूच कै पकवान बनायै, बड़े प्रेम सैं पति के संगै हरायतौ लेवै गई। गुटटा सैं बीज बओ। उर दिन बूड़े जब लौट कै घरै आये सो पूरे पकवान अपने लिंगा धर कै बोले कै हर हरैनी सायनों मताई बिटिया को नई मिलने बायनों। बे कैई का सकत तीं। ई तरा सैं ऊ वारे नें अपनी घरवारी सैं बदलौं ले लओं तो। उर कितऊ ई त्योहार के मौका पै घर की बड़ी बूढ़ी एक कानिया कन लगती कै सब जनी हाथन में चावर खौं लैकै कथा सुनवे खौं बैठ जाती हैं। बै कन लगती हैं कै भौत दिना की बात हैं। कै एक गाँव में एक बामुन रत तो। बौ भौतई गरीब हतो। दोरन-दोरन भीख माँग कै अपनै परिवार कौ पालन पोषण करत तो। ऊकी तनक सी खेती किसानी हती। सो खाली समय में खेतई पै डरो रत तो। ऊकी घरवारी नियत की खराब हती, बा अच्छौ-अच्छौ खान पियन चाउत्ती। चाय घरवारें भली भूखों डरो रये। ऊयैं ईसें कछू नई लैने दैनें तो। ऊके लानें मन कौ खाबे मिलत जावै। जो कछू रूखौ सूकौ मिलै सो अपने घरवारे खौं पकरा दओं, उर अपन सो मनकौ बना-बना कै खात पियत रये। पुरा की लुगाई अपने आगैं ऊके घैरा घूँसा करत रये, कै जा कैसी पापन औरत है। जो अपनौ मन कौ बना बनाकैं खा रई उर घरवारे खौं वासी कूसी सूकी रोटी पकरा देत। वामुन तौ भौतई सूदौ सादौ हतो। जो मिलो सो खा लओं उर भौगो चालों काम खौं चलो गओं। दो-चार दार ऊसैं पुरा परोसियन ने कई के तुमाये संगैं तुमाई घरवारी भौतई कपट कर रई। वा तुमें तौ जुनई की रूखीं रोटी पकरा देत उर अपुन सो अकेले में मन कौ माल मसकत। पैला तौ वौ परोसियँन की बातन खौं सुनी अनसुनी करत रओ। जब कैऊ दार वा बात ऊके कानन में टकरात रई सो एक दिना ऊनें सोसई लई ऊकी कलई खोलबे की। वौ गौमें दैकै बैठ गओ कै मौका आवन देव, तब देखी जैय। गनगौर कौ त्योहार आ गओं। ऊने सोसी कै अब मौका है कसर काड़बे कौ वौ घरवारी सै बोलों कै हमें आज जल्दी जाने हैं। जो कछू धरे होव सो हमें खाबे दै देव। वा तौ जा चाऊतई हती कै जौ इतै सै टरे उर हम मनकौ बनाबै। वा जल्दी भीतर गई उर एक छन्ना में दो ठऊ सूकी रोटी उर एक अमिया की कली बांध कै गुआदई। ऊने हात में लओ उर मौगो चालौ कलेवा लै घर के बायरैं की गओं। ऊकी घरवारी खौं पकवान बनाबे की जल्दी परी ती। वा मताई बिटिया रोटी वारे घर में घुसकैं बढ़िया-बढ़िया पकवान बनाउन लगी। बामुन ने तौ आज बिचारई लई ती कै आज ई की चालबाजी कौ पतो लगावने हैं। वौ उयै दिखाबे तनक देर खौं वायरें की गओं उर जईसै वा भीतरै गई सोऊ वौ लौटकैं पौर के दोरे की कुठिया में घुसकुँ मौंगो चालौ चिमा कै बैठ गओं। उन दोई मताई बिटिया ने घन्टाक में अच्छे-अच्छे पकवान बनाकै धर लये, उर फिर अच्छी तरा सैं लीप पोत कै पौर में चौक पूर कै पटा पै गनगौर की मूरत धरकै पूजा विस्तारी। थारन में पकवान सजा कै धर लये सब पूजा रचा करी गई उर फिर हाँत जोर कै गनगौर से विन्लारी करी कै माई हमाओ ऐवात ऐसऊ अमर बनाये रइयौ। जा बात ऊनें कैऊ दार दुहराई सोऊ कुठिया में सै आवाज आई कै हओ। सुनतनई उयै अचम्भौ भओ कै अरे हमाई गनगौर तो बोलती हैं। ऐसौ ऊने दो-तीन बेर करों

उर हर बेरऊ हओ सुना परी। ऊने बायरैं कड़कै पुरा परोसियन सै कई कै हमाई गनगौर तौ जबाब दैन लगी। सुनतनई सबखौं अचम्भों भओ। उर वे सब जनी उतई जुरकै पौंच गई। ऊने सबरन के सामै बेई बात फिर कऊ दुहराई उर फिर हओ सुना परी। सब जनी बोली कै बैन तुमाई पूजा तौ सिद्ध हो गई। जब गनगौर खुदई मौ बोलन लगीं। ईसै बड़ौ भाग और का हो सकत। सब जनीं तौ इत्ती कै-कै चली गई। अकेलै ऊकी जीव तौ अच्छौ खाबे खौं लप लपाई रई ती। पूजा खौं जल्दी सैं समेट कै एक बगल करी, उर वा मताई बिटिया पकवानन खौं पर्स कै जल्दी-जल्दी खाबें खौं टिक परीं। जब वें अदपेंटा हो गई सोऊ वे कुठिया में सै निकर कै बोले कै अबै तुम गनगौर सैं ऐवात माँग रई ती। उर घरवारे खौं सूके कौरा उर अपन मन के पकवान मसकरई। अब बतावकै तुमाओ ऐवात कन्नो फूले फरे। जब तुममें इत्तो कपट है ते गनगौर मइया तुमाई मनसा कैसे पूरी करें। देखतनई ऊकी घरवारी खौं काटें खून नई रओं। दोई मताई बिटिया बैठी-बैठी रै गई सरम के मारै मौ कौ कौर नई धंस रओ तो। अब वे का कयें ऊसैं अपनी करनी पै भौतई पसतानी उर बोली कै पती देवता हमाई गल्ती खौं माफ करो। अब हम कभऊँ ऐसी गल्ती नई करें, उर उदनई सैं उनकी घरवारी उनके खाबे पीबे कौ पूरौ पूरौ ध्यान रखन लगी। औरतन खौं ऐसौ कभऊँ नई करो चइये, काय कै पती तौ पनमेसुर के समान होत। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

बुन्देलखण्ड में इस त्योहार का विशेष महत्त्व है। यह पर्व यहाँ अच्छी तरह से मनाया जाता है। यह पर्व चैत्र की नवरात्रि में तृतीया को मनाया जाता है। पर्व के नाम से ही यह स्पष्ट है कि इस अवसर पर गणेश और गौरा (पार्वती) की पूजा की जाती है। यह नवरात्रि का एक प्रमुख पर्व है। महिलाएँ गणेश और गौरा से अपने अहिवात का वरदान माँगती हैं। सुहागिन महिलाएँ उपवास करके उनकी पूजा के लिए विविध प्रकार के पकवान तैयार करती हैं। पूजा के पश्चात् उन पकवानों का उपयोग स्वयं ही करती हैं। उसमें से अपने पति को कुछ नहीं दिया जाता है। यह एक ऐसा त्योहार है कि इसमें महिलाओं को ही मनचाहा खाने को मिलता है। इसके संबंध में एक कहावत भी प्रचलित है -

गनगौस के गनगौरा। मुंस खौं नई देबूँ कौरा।

एक बार ऐसा ही हुआ कि पति को खाने के लिए कुछ भी नहीं मिला और माँ-बेटी दिखा-दिखाकर खाती रहीं। ये सब देखकर पति को क्रोध तो बहुत आता रहा, किन्तु व्रत का नियम जानकर बैठा रहा। फिर भी माँ-बेटी से बदला लेने का विचार उसके मन में उत्पन्न हो गया।

कुछ दिन बाद आषाढ़ माह में कृषकों का प्रमुख पर्व हरायतों आ गया। इस अवसर पर

कृषक अपने खेत में बोने का शकुन साधता है। उसने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा कि आज अपने खेत पर हल बैल और बीज लेकर शकुन साधने के लिए चलना है। कृषि देवता की पूजा के लिए अच्छे-अच्छे पकवान बनाकर रख लीजिए। उसकी पत्नी और बेटी ने रुचिपूर्वक पकवान तैयार करके रख लिए और शाम के समय वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर पति के साथ खेत पर गई। पति ने खेत में हल चलाया और पत्नी ने बीज बोया, दोनों शाम को घर लौटकर आये। पति ने सारे पकवानों को मँगाकर रख लिया और कहा कि –

हर हरेनी सायनों। मताई बिटिया खौं नई मिलनें बाँयनों।।

यह सुनकर वे दोनों चुप रह गईं। अपने पति से वे अब कह ही क्या सकती थीं। इस प्रकार कृषक ने अपनी पत्नी और पुत्री से बदला ले लिया था। इस अवसर पर वयोवृद्ध महिलाएँ यह एक कथा सुनाने लगती हैं। परिवार की अन्य महिलाएँ हाथ में चावल लेकर ध्यानपूर्वक कथा सुनती हैं-

एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था। वह बहुत ही गरीब था। द्वार-द्वार पर भीख माँगकर उदरपोषण करता था। उसके पास थोड़ी सी जमीन थी। वह समय निकालकर खेत पर रहकर कठिन परिश्रम करता था, किंन्तु उसकी घरवाली की जीभ चटोरी थी। वह बढ़िया-बढ़िया बनाकर खाना चाहती थी। चाहे उसका घरवाला भूखा रहे, इससे उसको कोई प्रयोजन नहीं था। उसे तो बढ़िया-बढ़िया खाने को मिलना चाहिए। घर में जो कुछ रूखा-सूखा बचता था, उसे अपने पति के सामने रख देती थी और स्वयं मन का खाती-पीती रहती थी। पड़ोस की औरतें उसके कार्य-कलापों को देखकर निन्दा करती थीं कि यह कैसी पापिन औरत है, जो अपने पति के साथ कपट कर रही है स्वयं तो बढ़िया माल खा रही है और पति को रूखा खिला रही है। उसका पति बड़े ही सरल स्वभाव का था, जो कुछ मिला सो खा लिया और चुपचाप चला गया ।

दो-चार पड़ौसियों ने उसे बताया कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारे साथ कपट व्यवहार कर रही है, किन्तु उसने लोगों की बात को सुनी -अनसुनी कर दी। जब बार-बार लोगों ने उसे टोकना शुरू कर दिया, तो उसने एक दिन पत्नी के भेद खोलने का निर्णय ले ही लिया। वह बदला लेने की बात सोचकर बैठ गया। इसी तरह एक दिन 'गनगौर' का पर्व आ गया। उसने अपनी पत्नी से कहा कि आज मुझे जरूरी काम से बाहर जाना है। घर में जो कुछ रखा है सो रूखा-सूखा मुझे खाने को दे दो। मुझे जल्दी जाना है। पत्नी तो ये चाहती ही थी कि ये यहाँ से टले और मैं मन का माल खाऊँ। उसने जल्दी से भीतर जाकर एक कपड़े में दो सूखी रोटियाँ और थोड़ा सा आम का अचार बाँधकर दे दिया। पति ने उसको हाथ में लिया और चुपचाप बाहर निकल गया।

उसकी पत्नी जल्दी से एकांत में मनचाहे पकवान बनाना चाह रही थी। वह भीतर जाकर व्यंजन बनाने में व्यस्त हो गई। ब्राह्मण आज उसकी चालबाजी का भेद खोलना चाह रहा था। वह थोड़ी देर के लिए पत्नी को दिखाने के लिए बाहर निकल गया। फिर चुपचाप लौटकर आँगन की एक कुटिया में छिपकर बैठ गया। उधर माँ–बेटी को पकवान बनाने की जल्दी थी। वे दोनों घर में घुसकर बढ़िया–बढ़िया पकवान तैयार करने लगीं। दोनों माँ–बेटी ने एक घंटे में पकवान बनाकर रख लिए और फिर अच्छी तरह से आँगन को लीप–पोतकर, चौक पूरकर, चौकी पर गनगौर मइया की मूर्ति रखकर पूजा विस्तार ली, फिर हाथ जोड़कर 'गनगौर' माता से निवेदन किया कि माता जी हमारा सुहाग इसी तरह बनाये रखना। ये बात उसने अनेक बार दुहराई और हर बार कुटिया में से हटो की आवाज सुनाई दी। हटो की आवाज सुनते ही उसे बड़ा अचंभा हुआ। वह सोचने लगी कि मैं हर वर्ष गनगौर की पूजा करती हूँ किन्तु वे कभी बोली नहीं हैं। लगता है कि हमें पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो गई है। उसने पड़ोस में जाकर औरतों को बताया कि हमारी गनगौर माता तो बोलने लगी हैं। सुनकर सबको अचंभा हुआ। पुरा भर की औरतें आँगन में एकत्रित हो गईं उसने सबके सामने फिर वही बात दुहराई और फिर सबको हटो की आवाज सुनाई देने लगी। सभी औरतें सुनकर चकित हो गईं। सब औरतों ने कहा कि बहिन तुम तो भाग्यशाली हो, लगता है कि तुम्हारी पूजा पूर्ण सिद्ध हो गई। इतना कहकर सभी औरतें अपने–अपने घर चली गईं। उन दोनों माँ–बेटी को पकवान खाने की जल्दी थी। उन्होंने जल्दी से पूजा समेट कर खाना शुरू कर दिया। जब उन दोनों ने आधा भोजन कर लिया, तब उसका पति कुटिया से निकलकर उनके सामने खड़े होकर बोला कि अभी तुम गनगौर माता से अचल अहिवात का वरदान माँग रही थीं और पति को रूखा–सूखा खिलाकर बढ़िया भोजन कर रही हो। तुम्हारे मन में पति के प्रति इतना अधिक कपट भाव है तो फिर तुम्हारा भला कैसे हो सकता है? देखते ही दोनों माँ–बेटी बहुत लज्जित हुईं और अपनी भूल पर पछताने लगीं। उसी दिन से पत्नी कपट और दुर्भाव छोड़कर पति की सेवा में मन लगाने लगी।

सन्तान सातैं व्रत कथा

एक शिहिर में एक बड़े धर्मात्मा राजा राज करत्ते। राजा की भौतई सुन्दर उर गुणन सैं भरी पूरी दो ठौवा रानी हती। बड़ी रानी कौ नाँव सूर्यमुखी उर हल्की रानी कौ नाँव चन्दमुखी हतो। बड़ी रानी तौ अपने बड़प्पन में मस्त रत्ती उयै पूजा पाठ सैं कछू मतलब नई हतो। मन कौ खाव पियो उर घुर्राटे की नींद सोऊत रई। हल्की रानी चन्दमुखी कौ स्वभाव तौ भौतई अच्छौ हतो। अच्छे प्रेम सैं भादौ के मईना में नियम सैं सन्तान साँतै कौ व्रत रत्ती। वे ऐसौ कठिन उपास करत ती कै कोऊनई कर सकत तौ। सन्तान साँतै के दिन तुलसी के सात पत्ता खाकै पानी पीकै दिन काड़ देत तीं। ऐसई ऐसै उन्ने पूरी जिन्दगी काड़ दई ती। हरा–हरा दोई रानियन की उमर पूरी हो गई उर

वे सुर्गसिधार गई। दूसरे जनम मैं वे दोई जनी बंदरिया भई। बड़ी बंदरिया ने तौ कभऊँ कोनऊ ब्रत नई भूलो वे सन्तान सातै के दिना तुलसी के सात पत्ता खाकै उपास करत रई। कछू दिना में वे दोई बंदरियाँ चल बसीं, उर दूसरे जंगल में वे दोई जनी मछरिया बनी बड़ी मछरिया तौ पानी में मस्त रत्ती अकेलै हल्की मछरिया ब्रत करबौ नई भूली। सन्तान सातैं के दिना सात घूँट पानी पीकै वा उपासी बनी रत्ती। जब लौ का जियत रई सो उपास करबौ नई भूली। कछू दिना में वे दोई चल बसी उर अगले जनम में वे दोई मुर्गी भई बड़ी मुर्गी तौ चाय खेलत रत्ती अकेलै हल्की मुर्गी कौ खौतौ सन्तान सातै के ब्रत की पूरी-पूरी खबर हती। जई सैं भादौ को मईना आउत तो सो वा हल्की मुर्गी सात दाने चुनकै उपासी बनी रत्ती। जब नौ वा जियत रई ऊने ब्रत करबौ नई छोड़ौ कछू दिना में वे दोई मुर्गी चल बसी, उर अब की दारै वे दोई बैनन के रूप में पैदा भई। दोई जनन को अच्छे घरन में ब्याव हो गओ। बड़ी बैन खौं तौं ब्रत उपास सैं कछू मतलब हतो नई। ऊने तौ कौनऊ पन में ब्रत नई करो तौ अब वाका ब्रत करती अकेलै वा हल्की बैन तौ हमेसई ब्रत कर आई ती। अब वा मान्स की जौन में कैसे ब्रत भूल सकत ती। ब्याव होतनई वा लगातार ब्रत करत रई। बड़ी बैन सो खापी कै मस्त रत्ती। सन्तान सातैं की कृपा सैं हल्की बैन के सात लरका भये। अकेलै बड़ी बैन कै एकऊ संतान नई भई। उरवा बाँझई बनी रई। बड़ी बैन खौं बाँझ देखकै हल्की बैन खौं भौतई बुरओ लगत तौ। वा अपने साँतई लरकन खौं खेलबे के लाने बड़ी बैन केना पौंचा देतती। अकेलै बड़ी बैन उने देख-देख कै जरत बरत रत्ती। सोसत रत्ती के ई रड़वाल कै जो इत्तो बड़ो जाड़ कासै हो परो। जा मोंय निराबे उर मोव जी जराबे के लाने सातई लरकन खौं हमाये नाँ पौंचा देत। कजन जे सातई लरका मर जाते तौ मौय जीखौं तनक साता पर जाती। ऐसौ नई करें कै जीसै इन सातइयन कौ दिया बुज जाय। उर वा रांड रोऊत बैठी रए। जा सोस कै ऊने सातई लरका बैठारकै सातइयन खौं एक-एक लडुवा दओ उर पुटया कै कई कै खालो भइया। लरकन नें तुरतनई लडुवा खा लए उर उने वौ विष अमरत की नाई हो गओ। लरकन को कछू नई बिगरो उर वै ऊसई हँसत खेलत रये। बड़ी बैन माथो ठोक कै और कोसन लगी कै इनें जे विष के लडुवा खुआ दये तोऊ जे पापी मरे नइयाँ। एक दिना ऊने उन सातईयन खौं एक गैरे तला में पटकुवा दओं तोऊ उनको कछू नई बिगरो वे हँसत खेलत तैरत बायरै कड़ा आये। वा ता करकै रै गई सोसन लगी कै इनपै ऐसै कौन से देवता की छाया है। जो जै अबे नौ जियत बचे रये। देखत हैं अब इने को बचा पाऊत। एक दिना वा सातइयन खौं पुटया कै एक ऊंचे पहाड़ पै लोआ गई उर उतै सै नैचै ढकेल कै पटकुवा दओं अकेलै वे नैचे पौचई नई पाये। जैसें काउने उने बीचई में झेल लओ होय। वा अपनौ सौं मौ लेके रै गई। अब एक उपाय और ऊनो बचो तो। ऊने ताते लोहे की सरियन सैं ठाढ़ी पिटवाऊत रई। अकेलै उने वे फूल से लगत रये। बड़ी बैन तौ पूरे उपाय करकै हार गई, उर उनन कौ कछू बिगार नई पाई हिये हारकै रै गई।

एक दिना वा हल्की बैन के लिंगा जाकै पूछन लगी कैं काय बैन तुम ऐसे कौन देवता की पूजा करत जी की कृपा सैं तुमाये सात लरका भये उर उनकौ कोऊ बाल बाकौ नई कर पा रओ। उर हम एक चुखरिया के लाने रो रये। हल्की बैन बोली कै जिज्जी हमतौ हर जोनी में सन्तान सातैं कौ ब्रत करत रये। उर तुमने कभऊँ ऊकौ नाव नई लओ। उनई की कृपा सैं हमाये कभऊँ बार बाकौ नई हो सकत। उर बड़ी बैन बोली कै हमेतौ कछू पतऊँ नईय तुम हमें ब्रत की पूरी विदी बता दो अब हम सोऊ सन्तान सातैं कौं ब्रत करें। बैन के बताये सैं बड़ी बैन सन्तान सातैं कौ ब्रत करन लगी, उर उनकी कृपा सैं ऊके एक बौरा लरका भओ। भली बौरा भओं अकेलै भओ तौ लरकई कम सै कम बाँझ कौ नावतौ मिट गओ ऐसौ होत सन्तान सातैं के ब्रत कौ प्रभाव। हर ऐवाती औरत खौं जौ ब्रत रखो चइये, तबई उये संतान कौ सासौ सुख ड़मल पैय। ई किसा खौं सुनकै ऐसी कौन औरत हुइयै जो जौ ब्रत नई करे। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

एक नगर में एक धर्मात्मा और प्रजापालक राजा राज्य करते थे। राजा की गुणवान और परम सुंदर रानियाँ थीं। उनकी बड़ी रानी का नाम 'सूर्यमुखी' और छोटी रानी का नाम 'चंद्रमुखी' था। बड़ी रानी को तो अपने बड़प्पन का घमण्ड रहता था। इस कारण से उसे पूजा-अर्चना से कोई प्रयोजन नहीं था। वह मन का खा-पीकर आराम से सोती रहती थी, किन्तु छोटी रानी चंद्रमुखी का स्वभाव बहुत अच्छा था। वह अच्छे प्रेम से मन लगाकर भाद्रपद माह में संतान सप्तमी का व्रत रखती थी। वह ऐसा कठिन व्रत रखती थी कि कोई भी औरत ऐसा व्रत नहीं रख सकती है। वह संतान सप्तमी के दिन केवल तुलसी के सात पत्ते खाकर व्रत रखती थी। इस प्रकार का कठिन व्रत करते हुए अपना सारा जीवन व्यतीत कर दिया था। और अंत में वे दोनों रानियाँ स्वर्ग सिधार गईं। फिर वे दूसरे जन्म में दोनों बंदरियाँ बनीं और इस योनि में भी छोटी रानी तुलसी पत्र खाकर व्रत करती रही, किन्तु बड़ी बंदरिया को व्रत से कोई मतलब नहीं रहा। फिर अगले जन्म में वे दोनों मछली बनीं, किन्तु छोटी मछली इस योनि में भी व्रत करना नहीं भूली, वह संतान सप्तमी के दिन सात घूँट पानी पीकर व्रत रखती थी। जब तक मछली जीवित रही सो, लगातार व्रत करती रही।

अगले जन्म वे दोनों मुर्गी बनीं। बड़ी मुर्गी तो इधर-उधर घूमती रहती थी, किन्तु छोटी मुर्गी व्रत करना नहीं भूली। भाद्रपद माह आते ही सात दानों को चुगकर छोटी मुर्गी व्रत रखती रही। जब तक वह जीवित रही, सो लगातार व्रत करती रही। कुछ दिन बाद वे दोनों चल बसीं और दूसरे जन्म में वे दोनों सगी बहिनों के रूप में एक ही घर में उत्पन्न हुईं। बड़ी होने पर दोनों बहिनों का विवाह हो गया। बड़ी बहिन को तो उपवास से कोई मतलब था नहीं, किन्तु छोटी बहिन विवाह के बाद भी उपवास करती रही। बड़ी बहिन खाने-पीने और मन का आराम करती रहती थी। उस व्रत के प्रभाव से छोटी बहिन के सात लड़के उत्पन्न हुए, किन्तु बड़ी बहिन की कोई संतान नहीं हुई।

वह जीवन भर नि:संतान ही बनी रही। संतान के बिना बड़ी बहिन का घर सूना-सूना सा रहता था, जिसके कारण वह बहुत दुखी रहती थी। अपनी बड़ी बहिन को नि:संतान देखकर छोटी बहिन को बहुत बुरा लगता था। इस कारण से वह अपने सातों लड़कों को अपनी बड़ी बहिन के घर पर खेलने के लिए पहुँचा देती थी, किन्तु बड़ी बहिन उसके बच्चों को देख-देखकर मन ही मन जलती भुनती रहती थी। वह सोचती रहती थी कि इस पापिन के यहाँ इतने बच्चे कैसे पैदा हो गये। लगता है कि वह मेरे मन को जलाने के लिए अपने बच्चों को हमारे घर भेज देती है। यदि इसके सातों लड़के मर जाते तो मुझे कुछ शांति मिल जाती। वह सोचती थी कि ऐसा कोई उपाय करना चाहिए, जिससे ये सातों लड़के मर जायें और यह रांड रोती बैठी रहे। उसने विष मिलाकर एक लड्डू बनाकर रख लिया और सातों लड़कों को समझा बुझाकर खिला दिया, किन्तु संतान सप्तमी माता की कृपा से उनका कुछ भी नहीं बिगड़ पाया और वह विष उनके लिए अमृत बन गया। बड़ी बहिन सिर पीटकर रह गई। सोचने लगी कि विष के लड्डू खिलाने पर भी ये दुष्ट मरे नहीं हैं।

एक दिन उसने उन सातों लड़कों को एक गहरे तालाब में फिंकवा दिया, किन्तु वे सातों हँसते खेलते और तैरते हुए सकुशल तालाब से बाहर निकल आये। वह पछता कर रह गई,। एक दिन वह उन सातों को समझा बुझाकर एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ा ले गई, उसने उन सातों को पहाड़ से नीचे फिंकवा दिया, किन्तु वे नीचे गिर ही नहीं पाये, जैसे किसी ने उन्हें बीच ही में संभाल लिया हो। वह अपना सा मुँह लेकर रह गई। उसने अबकी बार उन्हें गर्म लोहे के सरियों से खूब पिटवाया, लेकिन उनका कुछ भी नहीं बिगड़ सका। वे गर्म सरिये उन्हें फूलों के समान कोमल प्रतीत होते रहे ।

एक दिन वह बड़ी बहिन अपनी छोटी बहिन के समीप जाकर पूछने लगी कि बहिन तुम ऐसे कौन देवता की पूजा करती हो, जिनकी कृपा से तुम्हारे सात पुत्र उत्पन्न हुए हैं और उनका कोई बाल बाँका नहीं कर पा रहा है। छोटी बहिन बोली कि मैं हर योनि में संतान सप्तमी का व्रत करती रही हूँ और उनकी ही कृपा से मेरे यहाँ सात पुत्र उत्पन्न हुए हैं। आज उनका कोई बाल बाँका नहीं कर पा रहा है। बड़ी बहिन बोली कि मुझे तो व्रत का कोई ज्ञान ही नहीं है। तुम हमें व्रत का विधि-विधान बता दो और मैं भी संतान सप्तमी का व्रत रखा करुंगी। छोटी बहिन ने उसे व्रत का विधि-विधान समझा दिया। तब बड़ी बहिन भी व्रत करने लगी। माता जी की कृपा से उसके यहाँ एक गूँगा पुत्र उत्पन्न हुआ और उसका बाँझ का नाम मिट गया। ऐसा होता है, संतान सप्तमी के व्रत का प्रभाव। वैसे हर सौभाग्यवती महिला को यह व्रत रखना चाहिए, जिसके प्रभाव से संतान सुखी और समृद्ध रह सकती है। आज सारे बुंदेलखण्ड की महिलाएँ इस व्रत के प्रभाव से संतान से संपन्न रहकर सुखी और समृद्ध हो रही हैं।

सोरा सोमबार व्रत कथा

एक गाँव में एक बामुन कौ परिवार रत्तो, उनकै चार लरका उर एक बिटिया भई। पंडित जी पंड़िताई कर-कर कै अपनौ उर अपने परिवार कौ भरन-पोषन करत रत्ते। कछू दिना में पंडित उर पंडितानी चल बसे। चाराई भइया थोरी भौत खेती किसानी उर पंडिताई करकै पेट पालन लगें। उननने जैसे-तैसे अच्छौ खातौ-पीतौ घर देखकै ओई गाँव में बैन कौ ब्याव कर दओं। कछू दिना में हराँ-हराँ चाराई भईयन के ब्याव हो गये, लरका उर बिटिया हो गई। घर में पाँच प्रानी हतें अकेलै हती भौतई गिरानी। कभऊँ तौ उनकौ परिवार कुंदा के भर डरो रत्तो। दो-दो दिन की लाँगन हो जातती कायकै थोड़ी भौत खेती किसानी से उनकी गुजर बसर होत ती। भइया उर भौजाई तौ हती चार-चार अकेले ऐसी कानात कई जात कै छूछे तुमें कोऊ ने नई पूछे। कभऊँ-कभऊँ औसर काज पै मायके हो आऊत तीं। एक दार सावन के मईना में ऊकी चाराई भौजाईयन ने सोसी कै कजन घर में कोऊ तनक काम टौका खौं होतो तो हम चाराई जनी सोरा सोमवार कौ ब्रत कर लेती। बड़े भइया बोले कै पाँसई में अपनी बैन रत है। उयै सोमवार के दिना बुला लेबू करे। वा घर की झारा बटोरी लीपापोती गोसली कर देव करें। तुम आराम सैं चाराई जनीं पूजा पाट करत रइयौ। जाबात सबई खौं जँच गई, उर वे सावन के मईना में उपास करन लगी।

खबर मिलतनई बैन खौं भौत हाल फूल भई सोसन लगी कै कम सैं कम ई बहाने सैं मायकै जाबे कौ मौका मिल जैय। भौजाइयन खौं सहारौ मिल गओं। सोवे सावन के मईना सैं सोमवार कौ ब्रत करन लगी। उनकी बैन तरा ऊँगे सैं उठकै पैला लीपा-पोती उर पानी पंगल कर आबै, उर फिर लौट के अपने घर कौ काम करबै मोड़ी-मौड़न खौं खाबे पीबे को इन्तजाम घर कौ गोबर कूरा चौका बासन कर-करकै हार जात ती वा बिचारी। लस्त पर जातती काम करत-करत रात की परी उर पतों नई परत तौ कबै भुन्सारों भओ। सोसत रत्ती कै जब हमाई भौजाइयन कै सोरा सोमवार पुजै तबवे हमाये परिवार खौं उन्नालत्ता बनवा दैय, उर कछू नाजपानी कौ इंतजाम कर दैय। जीसै मइना दोक की गुजर बसर हो जैय। बिचारी आशा बीदी जिऊ अड्डे कैंसेवा खुशामद में लगी रई। चार मईना में उनके सोरा सोमवार पूरे हो गए। जिदना सोमवार पुजबै कौ मौका आव सोवा बिचारी बड़े भुन्साराँ तीनई बच्चन खौं लुआ कै उनई कै घरै डरी रई। पीसौ चालो उर कूटो उरदिन भर पकवान बनाये पूजा कौ सामान बनबाव खूब मलीदा बनो खीर पूड़ी हलुवा माल पुवा उर ना जाने का-का बनो उनके घर में। बैन की तीनई मौड़ी-मौड़ा भूके प्यासे पकवानन के बास लैकें हीड़त रये। दिन भर सैं बैन खौं काम मेतौ लगाये रई। अकेले अपने भानेंज उर भानेंजन के खाबै की काऊने सुरतई नई लई। वे उतई भूके डरे-डरे किलपत रये। अकेलै काऊये उनपै दिया नई आई। वे हर-हर बेरऊ अपनी मताई सै कयें कै खाबै कबै मिले। बे बोली कैंअरे भइया पूजा होने है अबै जूठन नई करी जात। पूजा भई जात सो माई हरै तुमे भरपेट भोजन करायें। हर-हर बेर

वे रोटी मँगाबै उर मताई उनें समजा दैय। अब बताव कन्नो धीरज धरबैं वे। भूकन के मारै राई नई आ रईती। पूजा हो गई गाँव भरकौ खूब मलीदा बटो। चाराई भइया उर भौजाइयन ने खूब छक कै खाव पियों। अकेले बैन उर बैन के लरकन बिटियन खौं काऊ ने पूँछो नई, उर बाल-बच्चा किलपत रये अब बताव बा बिचारी कन्नो बाठ हेरै। दिन बूढ़ गओं सो वा निराश होकै अपने तीनई भूके प्यासे मोड़ी मौड़न खौं लुआ कै अपने घरै लौट गई। मौड़ी-मौड़ा तौ भूकन के मारै ललथरया कै डर रये। पती देव खेत सैं लौटे नई हतें पौर के किवार लगाकै बैठी-बैठी सोसन लगी कै हे शंकर भगवान तुमाई पूजा करवाऊत चार मइना कड़ गये उर जे हमाये मौड़ी-मौड़ा भूके-प्यासे डरे इनें खुआबे धर में भूँजी भाँग क्याँऊँ। कजन क्योऊँ सै विषकी पुरिया मिल जाती तो इने खुआ देते उर हम खा लेते। ऐसौ जीबौ कौन करम कौ ।

ऐई बीच में क्याऊँ सैं घर में साँप कड़ आऔ। मौड़ी-मौड़न नें उयै मार कै धर लओं। बैन ने सोसी कै चलो ऐई साँप खौं चुरै के इनन खौं खोवा दैय कै तौ जे सब मरई जैय उर बच जैयतौ फिर देखन लगें चूलौ परचाव उरऊ साँप खौं काट-काट कैं हड़िया में चुरवे खौं चढ़ा दओ। मौड़ी-मौड़ा तौ सो गये ते। आदी राते घरवारे ने किवार भड़के ते सो ऊनें सोसी कै हारी थकी सो गई हुइये, सौ वे वायरै चौतरा पै सो गये।

बैन ने सोसी कै अब तौ साँप चुरई गओ उयै टटोवे उगइया डारी सोऊ वा सोने की हो गई। देखतनई वा सनाकौ खाकै रै गई, उर उकतात में हड़िया खौं कुपरा में कुड़ेरौ सो कुपरा में सोने की मोरन के ढेर लग गये। वा सन्न होकै रै गई, उर सोसन लगी कै हे शंकरजी जौ का चमत्कार हो रओ है। मौड़ी-मौड़ा तौ सोई रये ते। भुन्सराँ किवार खोलतन घरवारौ भीतर आकै कन लगो कै हम तौ बायरै भूकई डरे रये। हम तौ सोसत ते कैं तुम मायके सैं मुलकन केरो पकवान उर मलीदा ल्आई हुइयौ, उर इतै तौ कछू डौलई नई दिखात। बैन बोली कै जे सब बाते छोड़ौ। बच्चा हींडत-हींडत भूके प्यासे सो गये। जोलौ जा एक सोने की मौ लै जाकै बानिया कै ना सै सामान ल्याव। जीसै हम बच्चन के जगवे के पैला खाबे बना देवै। वे बोले कै तुमनौ जे मौरै कासे आई। सब भगवान की कृपा है। तुम जे बाते पछाई कै पूछियौ पैलऊ तौ सामान ल्याव। बानिया भुन्सरा सै उदार नई दैय। वे बानिया के नासै सौदा ल्आये। बानिया ने सोसी के ई कंगाल नौ जा मौर कासै आ गई। घर में तौ भूजी भाँग नई हती। मताई ने अच्छी खीर पूड़ी बनाकै बच्चन खौं अच्छी तरा सैं ख्वाव पिआव। पुरा परोस में खुसर पुसर होन लगी। हराँ-हराँ उनके बड़े-बड़े अटा अटारी बनकै तैयार हो गये। पुरा परोसी सोसन लगे कै ई कंगीरा के लिंगा इत्ती जादाँ रकम कितै सै पटपरी कै अब तौ जो अच्छन-अच्छन की झक मारन लगो। उर उतै बैन के चाराई भइया उर भौजाइयँन पै भौतई गिरानी आ गई। काय कै उन्ने अपनी बैन भानेजन के संगै भारी कपट करो तो। वे अच्छी तराँ सै खड़न खपरन मिल गए ते। खाबे खौं घर में अन्न कौ दानौ नई हतो। मैन्त मंजूरी करकै पेट पालन लगे ते। भौजाई मंजूरी खौं जान लगी ती। उर उतै उनकी बैन कौ ठाट वाट देखके गाँव के लोग जरन-बरन

लगे ते। कछू जनन ने जाकै भईयन के कान भर दये कै तुमाई बैन चार मईना नौ हर सोमवार खौं झारा बटोरी करवे के बहाने सैं तुमाये घरै आऊत जात रई। ओई बैरा वा मौका पाके तुमाये घर कौ माल बटोर लै गई, सो वा तौ रहीस बन गई। जा बात ऊके चारई भईयन के गरैं उतर गई, उर वे चारई लट्ठ लै-लै के बैन के घरै पौंच गये। बैन ने चारई भईयन कौ खूबई आदर सत्कार करो। बैन कौ प्यार देख कै वे सब बैर भाव भूल गये। बैन ने रो-रो कै पुरानी किसा सुनाई, उर भगवान शंकर की कृपा कौ प्रभाव बताव। भईयन नें अपनी भूल स्वीकार करी, उर बैन के गोड़न पै गिरकै माफी मांगन लगे। उनके मन कौ सबई मैल धुल गओ तो भगवान की कृपा सै उदनई सै वे बैन भई उर वे उनके भइया भये। जौ होत है सोरा सोमवार के व्रत कौ प्रभाव। जैसे वे बैन भइया मिले ऊसई भगवान सबके बैन भईयन खौं मिलावै। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

एक गाँव में एक ब्राह्मण का परिवार निवास करता था। उसके चार लड़के और एक लड़की थी। पंडित जी अपने गाँव के बहुत अच्छे पंडित थे। उनका सारे गाँव में पंडिताई का धंधा चल रहा था, जिसके द्वारा उनके परिवार का अच्छी तरह से भरण-पोषण होता रहता था। पंड़ित जी धीरे-धीरे वृद्ध हो गये और अचानक उनकी मृत्यु हो गई। उनके पास थोड़ी सी खेती थी और वे थोड़ी बहुत पंडिताई भी करने लगे थे, जिससे उनके परिवार का भरण-पोषण होता रहता था। चारों भाइयों ने एक संपन्न घर-परिवार देखकर अपनी बहिन की शादी कर दी। धीरे-धीरे उन चारों भाइयों के भी विवाह हो गये।

उनकी बहिन के बाल बच्चे हो गये। उसके घर में कुल मिलाकर पाँच लोग थे। घर में थोड़ी सी खेती-किसानी थी, किन्तु उससे उनका भरण-पोषण नहीं हो पाता था। किसी-किसी दिन तो उनका परिवार भूखा ही पड़ा रहता था। उसके चार-चार भाई और चार-चार भाभियाँ थीं, किन्तु उसका कोई सहयोग नहीं करता था। ये कहावत सही है कि गरीब का कोई नहीं होता है। भगवान ही उसका सहारा होता है। कभी-कभी विशेष अवसर पर वह अपने मायके चली जाती थी। एक बार सावन के माह में उसकी चारों भाभियों ने सोचा कि यदि कोई घर का काम सँभालने वाला होता तो हम चारों जनी सोलह सोमवार का व्रत कर लेती। बड़े भाई ने कहा कि अपने समीप ही अपनी छोटी बहिन रहती है। उसे सोमवार के दिन बुला लिया करें, वह घर की झारा-बटोरी और लीपा-पोती कर दिया करेगी। तुम चारों जनी आराम से पूजा-पाठ करते रहना। ये बात चारों भाभियों को बहुत अच्छी लगी और वे सावन के महीने में सोमवार का व्रत करने लगीं। समाचार मिलते ही बहिन को बहुत प्रसन्नता हुई। वह सोचने लगी कि चलो इस बहाने से मुझे अपने मायके जाने का अवसर तो मिल ही जायेगा। भाभियों को थोड़ा सा मेरा सहारा मिल जायेगा और वे बहिन के भरोसे पर सोलह सोमवार का व्रत करने लगीं। बहिन प्रात:काल उठकर घर की सफाई और

लीपा-पोती कर लेती थी। पानी भरकर रख जाती थी और फिर अपने घर जाकर अपने घर का काम करके बच्चों को खिला-पिलाकर खेत पर काम करने के लिए चली जाती थी। दोनों जगह का काम करते-करते वह बहुत थक जाती थी। रात को उसका शरीर बिल्कुल शिथिल पड़ जाता था। सोते समय उसे सवेरा होने का पता ही नहीं लगता था। वह सोचती थी कि जब हमारी भाभियों के सोलह सोमवार का पूजन होगा, तब वे हमारे परिवार को बढ़िया कपड़े बनवा देंगी और थोड़े बहुत अनाज की भी व्यवस्था कर देंगी, ऐसा मन में सोचकर वह मन लगाकर काम में लगी रही। इस प्रकार चार महीने में भाभियों के सोलह सोमवार पूरे हो गए। जिस दिन सोलह सोमवार के पूजन का दिन निश्चित हो गया, उस दिन बहिन को बहुत प्रसन्नता हुई। उस दिन वह अत्यंत प्रसन्न होकर अपने तीनों बच्चों को लेकर घर में आकर काम करने में जुट गई। आटा पीसकर पूरे दिन बढ़िया-बढ़िया पकवान तैयार किए। उसके तीनों बच्चे पकवानों की गंध ले-लेकर तड़फते रहे। उसकी भाभियाँ उसे दिन भर भूखी-प्यासी काम में तो लगाये रहीं, किन्तु किसी भी भाभी ने बच्चों के खाने-पीने की बात नहीं पूछी। बच्चे भूखे-प्यासे तड़पते रहे। किसी को भी उन बच्चों पर दया नहीं आई। बच्चे बार-बार अपनी माँ से व्याकुल हो-होकर पूछते रहे कि खाना कब मिलेगा? उसकी माता उन्हें सान्त्वना देती रही कि बेटा पूजा होने के बाद सभी को भरपेट भोजन मिलेगा। भूख के मारे बच्चों के प्राण निकले जा रहे थे। वे बेचारे कहाँ तक धैर्य रखें। भूख के मारे वे बेचारे बहुत व्याकुल हो रहे थे। कुछ समय बाद सोलह सोमवार की पूजा हो गई। खूब मनचाहा प्रसाद वितरण किया। चारों भाई और चारों भाभियों ने खूब जी भरकर भोजन किए, किन्तु किसी ने उसकी बहिन और बच्चों के खाने की बात नहीं पूछी। अब बच्चे और कहाँ तक प्रतीक्षा करें, भूख के कारण तड़प-तड़पकर मूर्छित हो गए। धीरे-धीरे शाम हो गई। अब वह वहाँ रहकर क्या करती। वह अपने भूखे-प्यासे बच्चों को लेकर अपने घर दुखी होकर लौट गई। बच्चे भूखे-प्यासे घर में व्याकुल होकर गिर पड़े।

उसका पति खेत से वापिस नहीं लौट पाया था। वह सोचने लगी कि इन बच्चों को खिलाने के लिए कुछ नहीं है। यदि कहीं विष की पडिया मिल जाती तो मैं इन बच्चों को खिला देती और खुद खा लेती। संसार में ऐसा जीना किस काम का है?

इसी बीच में घर में कहीं से सर्प निकल आया। बच्चों ने उसे मारकर रख दिया। उसने सोचा कि घर में अब खाने के लिए तो कुछ भी नहीं है। चलो इसी सर्प को उबालकर बच्चों को खिला देंगे, जिसे खाकर तो वे मर ही जायेंगे और बचेंगे तब देखा जायेगा। उसने चूल्हा सुलगाया और सर्प को काटकर हण्डी में उबालने को चढ़ा दिया। बच्चे तो भूखे-प्यासे सो ही गये थे।

उसका पति आधी रात को खेत से लौटा। किवाड़ खड खड़ाये। उसने सोचा कि पत्नी थकी मांदी सो गई होगी। यह सोचकर वह बाहर ही चबूतरे पर सो गया, किन्तु उसकी घरवाली तो

जाग ही रही थी। चूल्हे पर हण्डी चढ़ी थी। उसने सोचा कि अब तो सर्प पक ही गया होगा। यह सोचकर उसने टटोलने के लिए हण्डी में अँगुली डाली, किन्तु वह उबला हुआ सर्प सोने का हो गया, जिसे देखकर वह चकित होकर रह गई। उसने घबड़ाकर हण्डी को कोपर में उड़ेल दिया। तो देखा कि कोपर में सोने की मुहरों के ढेर लग गए। वह मन ही मन सोचने लगी कि शंकर जी ने ऐसा कैसा चमत्कार दिखाया है। बच्चे तो सो ही रहे थे और पति बाहर से उठकर अंदर जाकर बोला कि- अरे! हम तो बाहर भूखे ही पड़े रहे । मैं तो सोचता था कि तुम मायके से ढेरों पकवान लाई होगी, किन्तु यहाँ तो कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है ।

उसकी पत्नी बोली कि आप ये सब बातें छोड़िये। बच्चे भूखे व्याकुल होकर सो गये। लीजिये यह एक स्वर्ण मुद्रा और दुकान से कुछ भोजन सामग्री लाइयेगा, जिससे बच्चों के जागरण के पूर्व हम भोजन बनाकर तैयार रख लें। देखते ही उसने अपनी पत्नी से पूछा कि ये मुहरें तुम्हारे पास कैसे आ गई हैं? उसने कहा कि ये सब भगवान शंकर की कृपा हैं। ये सब आप बाद में पूछना, पहले सामान ले आइयेगा। वे सेठ के यहाँ सामान लेने गए और एक मुहर सेठ को दी, जिसे देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया। उसने सोचा कि ये सोने की मुहर इस कंगाल के पास कहाँ से आई होगी। इसके घर में तो कुछ भी नहीं था। उसकी पत्नी ने बढ़िया खीर-पूड़ी बनाकर तैयार कर ली और अपने बच्चों को प्रेम-पूर्वक खिलाया-पिलाया। उसके पड़ौस में उन्हें खाता-पीता और हँसता देखकर संदेह पूर्ण चर्चा होने लगी। लोग सोचने लगे कि इस भिखमंगे के पास ये सब आया कहाँ से?

धीरे-धीरे शंकर जी की कृपा से बहिन के लंबे-चौड़े मकान तैयार हो गए। वे बहुत ही संपन्न हो गए थे और उधर बहिन के चारों भाई और भाभियों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी। उन्हें तो खाने-पीने के लाले पड़ने लगे थे, क्योंकि उन्होंने अपनी बहिन और भान्जों के साथ भारी कपट किया था। वे सब दुखी होकर दर-दर की ठोकरें खाने लगे। उसके चारों भाई और भाभियाँ मजदूरी करने के लिए द्वार-द्वार पर भटकने लगे। भगवान की कृपा से उन सबकी भारी दुर्दशा हो गई। उधर बहिन के ठाट-बाट देखकर गाँव के लोग ईर्ष्या करने लगे। कुछ लोगों ने उसके भाइयों के पास जाकर कह दिया कि सोलह सोमवार के बहाने से तुम्हारी बहिन चार महीने तक तुम लोगों के घर में घुसी रही और तुम लोगों का माल लूटकर अपने घर ले गई। इसी कारण से तुम सब गरीब हो गये और वह धनी हो गई है। ये बात उसके भाइयों के गले उतर गई और वे सब लाठियाँ ले लेकर अपनी बहिन के घर पहुँच गये। बहिन के प्रेम को देखकर भाई सारा बैर भाव भूल गये। बहिन ने सबका खूब आदर सत्कार किया। बहिन ने रो-रोकर भाभियों की कपट की पूरी कहानी सुनाई और शिव जी की कृपा का प्रभाव बताया। भाई अपनी भूल स्वीकार करके क्षमा माँगने लगे। बहिन और भाइयों में पूर्व जैसा प्रेम हो गया। ये होता है सोलह सोमवार के व्रत का प्रभाव।

भइया दोज व्रत कथा

भइया बैन कौ प्रेमतौ दुनिया में भौंतई बड़ो बनाव। साल में दो दार भइया दोज परत। एक कातक में दिवाई के दूसरे दिना उर दूसरी चैत में होरी के दूसरे दिना भइया दोज परत। ई दिना बैनें अपनें भईयन कौ टीका करवें जातीं। कजन कोनऊ कारन सें बैन भइया केनाँ न पौंच पाऊती तौ भइया खुदई बैन के ना टीका करावै पौंच जात। साबन के मईना में तौ हर बैन अपने भइयन खौं राखी बाँधवे के लाने उकतात रतीं। उर ई मौका पै भइयन खौं बैन की भौत खबर आवन लगत। साँसी कई जायतौ भैया दोज की लीलई न्यारी है ।

एक गाँव में एक मताई बाप के पाँच लरका हते। पाँच भईयन की पीठ पै एक बैन हो परी ती। ईसैं बाप मताई ने ऊकौ नाव पाँचों धर दओ तो। पाँच भइया की बैन कौ नाव पाँचों साँसौ धरोतो। कछू दिना में बैन ब्याव लाख हो गई ती। सब भईयन ने मिल जुरकै बैन कौ अच्छौ साके कौ ब्याव कर दओ। वा अपनी ससुरार में रेंकै घर गिरस्ती को काम समारन लगी। ऐसई–ऐसई कैऊ साले कड़ गयीं तीं अकेले पाँचों बैन हती भौतई भोली भाली। कछू जादाँ जानतई समझत नई हती। एक दिनां दिवाई के मौका पै हल्के भइया खौं पाँचों बैन की खबर आ गयी । ऊनें सौसी कै दिवाई के दोज कौ टीका करवे अपनी बैन खौं लुआ ल्याअ। उतें सै चार कोस की मंजिल पै बैन कौ घर हतो। ऊनें बड़े भुन्सारे कलेवा करो उर मूँढ़ सै स्वापी बाँध कैं, हात में लठिया लैकै बैन खौं लुआवे चल दओ। उर दिन बूढ़े पूछत–पूछत बैन के घरे पौंच गओ। भइया खौं देखतनई बैन की हाल फूल कौ ठिकानौ नई रओ। अपने भइया भौजाइयँन खौं देखवे की लालसा हो आई। रात कै तौ जो कछू बनो धरो तो सो वौ खा पीकै सो गओ। और अब भुन्सरा बैन खौं अच्छौ ख्वावे पियावे की इच्छा हो गई। बना कै कछू जानत नई हतीं। वा भइया खौं खीर पूड़ी ख्वावन चाऊतती। ऊनें परोस की लुगाइयँन सैं पूछीं कै काय वाई खींर पूड़ी कैसे बनाउनें आउत। औरतन ने कई देखो घी में चाँवर चुरै लिइयौ उर दूध में पूड़ी सेंक लिइयों। वा विचारी दुपर नौ घी में चाँवर चुरेउत रई उर दूध में लुचई। अकेले वे चुरई नई पांई। भइया भूखन के मारे भीतर वायरै होय रयो तो। वा फिर वायरै गयी और कछू जनईयंन सै पूछी कै काये जिज्जी घी में चाँवर उर दूध में पूड़ी चुरई नई रई। ऊकी वातें सुनकै औरतें हँसकै कन लगी कै तै कैसी सिर्रन है कऊ दूध में पूड़ी और घी में चाँवर चुरत हैं? तैं दूध में चावर और घी में लुचई सेंक लें। औरतन कै बताये सै खीर और लुचई बन गयी। भइया ने डट कै भोजन करें उर ब्याई नौ खौं सुसते हो गये। भइया ने बैन के ससुर उर सास के लिंगा जाकैं कई कैं हम दौज कौ टीका करावे खौं बैन खौं लुआवे आये। भुन्सरा सौकाऊ बिदा कर दिइयौ। ससुर बोले कै लाला साव अवै कतकई कै काम को मौका है अबै बहू खौं पौंचावे में दिक्कत है। अपुन ग्यारस हो गये आइयौ उर अपनी बैन खौं। लुआ लै जइयौ। अब ससुर की बात कैसे टार सकत ती। अपनौ सौं मौं लैकै रै गई। हल्कौं भइया निराश होंकै रै गओ उर अपनी बैन से

कन लगो कै बैन हम बड़े भुका भुकें सें कड़ जैय। तुमाये ससुर ने पौंचावे सै नाई कर दई। अब हम इतै रैकै का करें घरें कछू काम कर लैय।

बैन की आशा टूट गई ऊनें सोसी कै भइया उतै भूके किते फिरें हम बड़े भुन्सारै कलेवा बना देंय। आदी रातें उठी उर देखो कै कंसला में तो चूनई नइया। वा उत्तई रातें चकिया के लिंगा पीसवे खौं बैठ गयी। घर में इँदयारो सो डरो तो आज काल जैसी बिजली उर ना चक्की। पथरा की चकिया के पीसने आऊततो। वा टटकौरा गुटटा में पिसी भरल्याई। इँदयारे में कछू दिखातौ नई रओ हतो। चकिया के मौ में साँप घुस गओ तो वा इँदयारे में पीसन लगी उर पिसी के संगै साँप पिस गओतो। ऊनें चून गुट्टा में धर लओ उर इँदआरे में कुपरा में हुन चून मांडकै धर लओ। उर चार बजे सै लुचई बनावे बैठ गई। उर करइया में हुन सात ठऊवा लुचई काड़ दई। छ:ठौआ लुचई बांध के भइया के लाने धर दई उर एक लुचई कुपरा में धर दई। भुन्सरा होतनई भइया जल्दी चिटपिटा कै उठो, उर जल्दी सें मौ हात धौंकें बैन के पाँव पर के लठिया लैकै जान लगो। बैन नें ऊके हात में कलेवा गुआ दओ। वौ सूदो घर कुदाऊँ चल दओ। बैन वायरै ठाँढ़ी देखत रई उनकौ एक पलेर कुत्ता हतो वौ क्याऊँ सें पूछ हलाऊत आ गओ। कुपरा में एक लुचई बची धरीअई हती। ऊनें उठा कैं बालुचई ऊ कुत्ता खौं डार दई। लुचई के खातनई कुत्ता घुमन लगो उर ओई के सामैं घुम-घुम कै उतै मरन लगो। देखतनई बैन के सटननारे छूट गये। जी लुचई के खाये सैं कुत्ता मर गओं जेऊ हाल भइया कौ हो जैय। उत्तई देर में भइया मीलक दूर कड़ गओ हुइयै। वा प्रान छोड़कै भइया के पाँछै भगी। भइया आगैं जाकै एक बाबरी पै मौ हात धोबे खौं रुक गओं। इतेकई में पाँचों बैन भगत-भगत पौंच गई। भइया तौ तनक दूर एक डार पै कलेवा टाँगकै टट्टी खौं चलो गओ बैन आऊतनई कलेवा खौं देखन लगी। पैड़पे टंगी पुटरिया उतार कै ना आव देखो ना ताव सूदी बाबरी में फैंक कैंमौगी चाली लौट गई। भइया टट्टी होत में कछू कै नई पाव अकेलै मनई मनई सोसन लगो। अब ई पागल खौं कभऊँ लुआबे नई आउनें। उर वौ मोगौ चालों अपने घरै लौट गओं । भइया का जाने बैन की आत्मा खौं। बैन खौं कभऊँ भइया समज नई पाव सो बुरओ मान कै गुर्रा गओ। ऊने सोस लई कै अब कभऊँ बैन खौं लुआबे नई जैय। अकेलै बैन अपने प्यारे भइया खौं कैसे छोड़ सकतती। कछू दिना में भइया के ब्याव कौ मौका आव। सो ऊने ना बैन के लुआबे की चर्चा करी उर ना उयै कछू खबर दई। अकेलै बैन खौं सब पतो चल गओं उर वा उपत कै पौंच गई वौ गुर्रा कै रै गओं। जब भइया के हाँत पै नारियल धरो जान लगो। सो वा बोली कै पैला हमाये हात पै नारियल धरो फिर भइया के हाँत पै नारियल धरो जैय। सबरन ने सोसी कै जातौ पागल हो गई है। चलो माय घरवारे ओई के हाँत पै नारियल धरबा दोऊ। ऐसई ऊनें लगुन की दार करो। लोंगन ने पैलाँ सै ओई के हात पै लगुन धरा दई। जब बरात जान लगी सो पाँचों बैन कन लगी कै हम सोऊ बरातें चले। कछू जने चलें कन लगे कै माय चली जान दो पगलू खौं। वा उतै जाकै टीका की बेरा कनलगी कै भइया कौ टीका दरबाजे पै हुन नई हुइये खिरकी पै हुन टीका हुइयै भइया कौ। अंत

में ऊकी जिद सैं भइया कौ खिरकिअई में हुन टीका भओ। उर तनकई देर में दरवाजौ अर्रा कै नैचे गिर परो। तब लोगन की समज में आई कै पाँचों बैन भौतई जान कार है उर ऊकी जिद सैं भइया मरवे सैं बच गओ। हराँ-हराँ ब्याव हो गओ भौजाई की विदा होकै घरै आ गई। देई देवता पुजत में वा भइयँई के संगई संगै बनी रई। रात में सुहाग रात में बोली कै हम तौ भइअई के संगई ओई कोठा में सोय जीमें भइया भौजी के संगै सोय। सुनतनई सबई औरतें कन लगी कै तुमैं आ भइया के संगै सोउनें कै भौजी खौं। पाँचों बैन कन लगी कै तुमें ईसै का करनें जो हुइयै सो सब देखी जैय। अकेलै हम सोय तौ ओई घर मैं। कछू जनीं बोली कै परी रन दो माय एक बगल में डरी रैय। उर वा ओई घर में परी रई। आदी रातें तौ दूला उर दुलइया तौ सो गये अकेलै बैन तौ जगत रई। जौन साँप चकिया में पिस गओ तो वौ भइया खौं डसवे के काजैं ओई कमरा में घुस आव। भइया उर भौजी तौ सो रये ते। बैन तौ जागई रई ती। जईसै वौ साँप लफरयात भइया पै झपटो सोऊ बैन ने तलवार सै काट कै कूढ़े तरै ढाँक कै धर दओ। फिर वा सुक की नींद सो गई। ई भेद कौ काऊये पतो नई चलो। भुन्सरा उठकै ऊनें घरवारन खौं कूढ़ौ उठा कैं मरो साँप दिखा दओ। सब जनें तां करकै रै गये। उर सोसन लगे कै कजन पाँचों बैन नई होती तौ भइया बचई नई सकत तो। भली भइया बैन सै कटो-कटो सौ बनो रओ। उयै का पतो कै ऊके सिर पै काल मड़रा रओ है। बैन होय तौ पाँचों कैसी। जीनें भइया के प्रान बचावे के लाने ऊकौ संग नई छोड़ो। भली ऊकी बेइज्जती होत रई। अंत में भइया बैन के त्याग उर समरपन भाव खौं अच्छी तरा सै जान कै बैन कै गोड़न पै गिरो। उदनई सै वे बैन भई उर वे साँसे भइया। हे भगवान ऐसे बैन भइया सबई के हौवे। कजन ऐसी बैनै उर भइया हो जाय तौ समाज कौ बेड़ा अपने आप पार हो जाय। बाढई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

भाई और बहिन का प्रेम तो शाश्वत और नित्य है। इसे पूर्ण स्वाभाविक और सहज कहा जाता है। बुंदेलखण्ड के हर परिवार में इस संबंध का निर्वाह विधिवत् किया जाता है। वर्ष में दो बार भाईदोज का पर्व आता हैं। पहली बार यह पर्व कार्तिक माह में दीपावली के दूसरे दिन और दूसरी बार चैत्र माह में होलिका दहन के दूसरे दिन आता है। इस दिन बहिनें अपने भाइयों को तिलक लगाकर नारियल प्रदान करती हैं और भाई चरण स्पर्श करके द्रव्य, वस्त्र, अन्न और आभूषण प्रदान करता हुआ अपनी बहिन की रक्षा का प्रण लेता है ।

यदि किसी कारणवश कोई बहिन अपने भाई के घर नहीं पहुँच पाती, तो भाई स्वयं ही अपनी बहिन के घर टीका करवाने के लिए चला जाता है। सावन के माह में तो हर बहिन अपने भाई को राखी बाँधने के लिए लालायित रहती हैं। इस अवसर पर भाइयों को अपनी बहिन की बहुत ही याद आती है। अत: भ्रातृ द्वितीया का यह पर्व बहुत महत्त्वपूर्ण है।

एक गाँव में एक माते कक्का निवास करते थे। माते की पत्नी बहुत ही भोली और सरल थी। माते के पाँच लड़के और एक लड़की थी। पाँच लड़कों के बाद एक लड़की उत्पन्न हुई थी। इस कारण से उसके माता-पिता ने बड़े लाड़-प्यार से उस पुत्री का नाम रखा था 'पाँचो'। धीरे-धीरे वह लड़की विवाह के योग्य हो गई। पाँचों भाइयों ने मिल-जुल कर अपनी बहन की बहुत ही अच्छी शादी कर दी। वह अपनी ससुराल में रहकर घर-गृहस्थी का कार्य सँभालने लगी। इसी तरह ससुराल में रहते हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया। उसकी छोटी बहिन तो बहुत ही भोली-भाली थी। इधर-उधर की बातों से उसे कोई प्रयोजन नहीं रहता था। केवल अपने काम से ही उसको मतलब था ।

एक दिन दीपावली के पर्व को छोटे भाई को अपनी छोटी बहिन 'पाँचो' की याद आ गई। उसने सोचा कि दीपावली की दोज का टीका करवाने के लिए हम अपनी बहिन को घर लिवा लायें। वहाँ से लगभग पन्द्रह कि.मी. दूरी पर बहिन का घर था। उन दिनों आवागमन के साधन विकसित नहीं हुए थे। लोगों को पैदल यात्रा ही करनी पड़ती थी। उसका छोटा भाई सिर पर साफी बाँधकर हाथ में लाठी लेकर थोड़ा सा नाश्ता करके बहिन 'पाँचो' की ससुराल की ओर चल दिया और शाम तक पूछते-पूछते बहिन के घर तक पहुँच गया। अपने छोटे भाई को देखकर बहिन को अत्यधिक प्रसन्नता हुई, उसके मन में अन्य भाई और भाभियों को देखने की लालसा उत्पन्न हो गई। रात को जो कुछ बना रखा था, भइया खा-पीकर सो गया। फिर दूसरे दिन बहिन ने बढ़िया-बढ़िया पकवान बनाकर भइया को भोजन करवाये। वैसे तो वह कुछ जानती ही नहीं थी। वह अपने प्यारे भाई को खीर-पूड़ी खिलाना चाहती थी। उसने पड़ौस की औरतों से खीर-पूड़ी बनाने की विधि पूछी, औरतों ने उस भोली के साथ मजाक किया। कहा कि देखो तुम दूध में पूड़ी सेंक लेना और घी में चावल तैयार कर कर लेना औरतों ने उसे उल्टी प्रक्रिया समझा दी। वह बेचारी उसी प्रक्रिया का उपयोग करती रही, जिससे न खीर बनी और न पूड़ी, वह परेशान हो गई। कुछ औरतों ने उसके उस तमाशे को देखकर कहा कि पागल तुम दूध में चावल और घी में पूड़ियाँ तैयार करो, तभी तुम्हारा भोजन बन पायेगा। उसने वैसा ही किया और खीर-पूड़ी तैयार करके अपने भाई को अच्छी तरह से भोजन कराया।

फिर छोटे भाई ने बहिन के सास-ससुर से कहा कि हम दोज के टीका के लिए बहिन को लिवाने के लिए आए हैं, आप आज्ञा दीजिए। आप बड़े प्रातःकाल विदा कर दीजिएगा। सास-ससुर ने कहा कि अभी कार्तिक की फसल आ रही है। इन दिनों भारी व्यस्तता है। इस कारण से वधू को भेज नहीं पायेंगे। आप ग्यारस के बाद आकर बहिन को ले जाइयेगा। अब छोटा भाई कहता ही क्या? उसने बड़े सबेरे लौटने का निर्णय ले लिया, उसने अपनी बहिन से कहा कि हम बड़े सबेरे घर लौट जायेंगे । आपके ससुर साहब ने तुम्हें भेजने से मना कर दिया है। अब यहाँ रुकना निरर्थक है। घर जाकर कुछ काम संभालेंगे। बहिन की आशा टूट गई और वह उदास होकर

रह गई। उसने कहा कि मैं तुम्हारे लिए सबेरे नाश्ता बना दूँगी। तुम भूखे कहाँ भटकते फिरोगे? वह आधी रात को उठी और देखा कि टीन में आटा नहीं है। वह एक बर्तन में गेहूँ रखकर चक्की पर आटा पीसने के लिए बैठ गई। घर में अंधेरा पड़ा हुआ था। अंधेरे में एक काला सर्प चक्की के मुँह में बैठ गया। अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया और गेहूँ के साथ सर्प भी पिस गया। उसने चक्की से आटा निकालकर कोपर में रख लिया और आटा गूँथकर अंधेरे में ही तैयार करके रख लिया। उसके साथ ही विषैला सर्प भी गुंथ गया। वह सबेरे चार बजे उठकर पूड़ी बनाने के लिए बैठ गई। पाँच पूड़ियाँ भइया के नाश्ता के लिए एक कपड़े में बाँधकर रख दीं और एक पूड़ी बचाकर कोपर में रख ली। बड़े सबेरे उसका भाई उठकर बहिन के चरण स्पर्श करके हाथ-मुँह धोकर, लाठी लेकर चल दिया। बहिन ने हाथ में नाश्ता दे दिया। वह नाश्ता झोले में रखकर घर की ओर चल दिया और बहिन बाहर खड़ी-खड़ी देखती रही फिर निराश होकर घर-गृहस्थी के कार्यों में व्यस्त हो गई। सवेरा होते ही घर का पालतू कुत्ता पूँछ हिलाता हुआ पहुँच गया। उसने वह बची हुई पूड़ी कुत्ते को फेंक दी। पूड़ी खाते ही वह कुत्ता वहीं चक्कर खाता हुआ गिरकर मर गया। यह देखते ही बहिन घबड़ा गई। उसने सोचा कि पूड़ियों के साथ कोई विषैला पदार्थ मिल गया है, जिसके खाने से कुत्ते की मृत्यु हो गई। पूड़ी खाने से यही हाल भइया का होगा। सोच-सोचकर वह घबड़ा गई। जब तक भइया काफी दूर निकल गया था ।

वह भइया के पीछे-पीछे दौड़ गई । चिल्लाती गई और दौड़ती गई और दौड़ती गई। दौड़ते-दौड़ते वह बुरी तरह से थक गई थी, किन्तु उसने पीछा नहीं छोड़ा। चलते-चलते भइया एक बावड़ी के समीप रुक गया। उसने नाश्ते का झोला एक पेड़ की डाल पर लटका दिया और दूर बैठकर शौच करने लगा। बहिन उसी स्थान पर पहुँच गई। उसने नाश्ते के थैला में से नाश्ता निकालकर बावड़ी के पानी में फेंक दिया और निश्चिन्त होकर घर की ओर लौट गई। भइया उस समय उससे कुछ कह नहीं पाया, किन्तु मन ही मन नाराज होकर रह गया। वह सोच रहा था कि किसी कारणवश मेरी छोटी बहिन पागल हो गई है। अब मैं उसे कभी लिवाने के लिए नहीं जाऊँगा। यह सोचकर वह भूखा-प्यासा अपने घर लौट गया।

इतना सब होने के बाद भी 'पाँचो' बहिन का अपने भाई के प्रति अटूट प्रेम था। कुछ समय बाद भइया के विवाह का अवसर आया, किन्तु उस छोटे भाई ने अपनी बहिन को बुलाने की कोई चर्चा नहीं की। बहिन को उसकी शादी का पता चल गया और वह बिना बुलाये ही भइया के घर पहुँच गई। उसे देखते ही भइया आग बबूला होकर रह गया। वह अपने भाई की सच्ची हितचिंतक थी। वह अपने भाई के भावी जीवन की दुर्घटनाओं से भलीभाँति परिचित थी। शादी के अवसर पर वह भइया के साथ सदैव रहना चाह रही थी। जब भइया के हाथ पर नारियल रखा जाने लगा, तब वह बोली कि मेरे भी हाथ पर नारियल रख दीजियेगा। लोगों ने सोचा कि अरे! ये

तो पागल हो गई, चलो रखवा दीजिये। उसी तरह लगुन रखते समय वह जिद करने लगी। तब लोगों ने उसके भी हाथ पर लगुन रखवा दी, फिर बारात जाने का भी अवसर आ गया और वह बारात के साथ जाने के लिए भी जिद करने लगी। तब कुछ लोगों ने कहा कि चलो इस पागल को भी चले जाने दीजिये। पाँचो, बारात में भी साथ चली गई। वह अपने भाई को भावी दुर्घटनाओं से बचाना चाह रही थी। टीका के समय उसने कहा कि हमारे भाई का टीका मुख्य द्वार पर नहीं होगा, खिड़की के समीप खड़े होकर होगा। लोग उसकी बात मान गये और टीका खिड़की के समीप खड़े होकर होने लगा। इसी बीच मुख्य दरवाजा भड़-भड़ाकर गिर पड़ा और दूल्हे के प्राण बच गये। इस आकस्मिक दुर्घटना को देखकर सारे लोग 'पाँचो' की बातों पर विश्वास करने लगे।

शादी हो गई और विदा होकर भाभी घर आ गई। अब सुहागरात का अवसर आया, तब उसने कहा कि सुहागरात के अवसर पर मैं भइया के साथ उसी कमरे में लेटूँगी। लोगों को लगा तो बहुत ही अटपटा, किन्तु किसी दुर्घटना के भय से उसे उसी कमरे में सो जाने दिया। आधी रात के समय दूल्हा और दुल्हिन तो सो गये, किन्तु 'पाँचो' जागती रही। जो सर्प चक्की में पिस गया था, वह उसके भाई को डँसने के लिए आधी रात को उसी कमरे में पहुँच गया। उस समय पाँचो तो जाग ही रही थी। ज्यों ही वह सर्प भइया की ओर झपटा त्यों ही पाँचो ने तलवार से सर्प के टुकड़े कर दिए और एक मिट्टी के बर्तन के नीचे ढँक कर रख दिया। फिर वह सुख की नींद सो गई। सवेरा होते ही उसने सारे परिवार के लोगों को वह मरा हुआ सर्प दिखा दिया। देखते ही लोग दंग रह गए और सोचने लगे कि यदि आज पाँचो बहिन न होती तो भइया मर ही गया होता। भले ही भाई अपनी बहिन से कुछ नाराज सा बना रहा, किन्तु उसके सिर पर तो काल मंडरा रहा था। इसलिए यदि बहिन हो तो भाई की हितचिन्तिका पांचो जैसी, जिसने अपने भाई के प्राण बचाने के लिए उसका साथ नहीं छोड़ा। भले ही उसका निरादर होता रहा। भाई भी अपने बहिन के त्याग और समर्पण भाव को अच्छी तरह से समझ गया था। वह क्षमा याचना करता हुआ, बहिन के चरणों पर गिर पड़ा। उसी दिन से दोनों बहिन और भाई में अटूट प्रेम हो गया। भगवान ऐसी बहिन सभी भाइयों को दे। इससे बड़ा त्याग और बलिदान कुछ नहीं हो सकता। आज आवश्यकता हैं ऐसी बहिनों और भाइयों की।

दसारानी व्रत कथा

ऐसै-ऐसै एक गाँव में मताई बेटा रत्ते। लरका कौ बाप तौ हल्कई में चलो गऔ तो। जैसे-तैसै हांत घसीट-घसीट कै मताई ने लरका खौं पाल पाओ तो। घर में थोरक सी खेती किसानी हती। उयै अदिया बटिया पै दयै सै थोरौ नाज मिल जात तौ ओईसै उननकी गुजर बसर चलत

रत्ती। हराँ-हराँ लरका लोट पीट कै सियानौ हो गओ। उर अपने घर की खेती किसानी समारन लगो। ऊकी मताई खौं एक आसरौ हो गओ। दो-तीन गइयाँ भैंसै हो गई घर में। दूद मठा होन लगो। अब तौ कोनऊ कमी रई नई हती उनकै घर में। अच्छौ खातौ पीतौ घर देखकै एक गाँव के भले आदमी ने लरका की भौरिया पार दई। अब अच्छी तरा सैं उनकी घर गिरस्ती चलन लगी। मताई ढोर बछेरू करकै खेत पटिया देखन लगी। लरका सो किसानी में रात दिन जुटऊ रत्तो। उयै आराम करबे फुरसतई नई रत्ती। उनके घर कौ सबई दालुद्दुर दूर हो गओं तो। बऊने तौ सब घर गिरस्ती समारलई ती। मताई खौं तौ समय सै ताती रोटी मिल जातती उर उनें चानई का हतो। उनकौ जादाँतर समय खेतई की मैड़ पै कति तौ। उतई रोटी पौंच जात ती। कनलगत कै जितै मिली दो उतई रयै सो। दुनिया की चिकचिक में परबे की उनें गुंजाइशई नई हती।

एक दिना उनके घर की आगी बुज गई। वे दोई जनी सास बहू कण्डा लये दोरन-दोरन फिर आई। अकेले उनें काउनें आगी नई दई। कायकै गाँव के हर घर में दसारानी की पूजा हो रई ती। अब बताव उनकौ कैसे चूलौ परचै रोटी बनाबे के लानें। घर-घर औरते दसा रानी की किसा कै रई तीं। सास खौं तौ ब्रत उपास सैं कछू लैने नई हतो। अकेलै बऊ कौ जिऊ ललचान लगो ब्रत करबे के लाने। सास के डरन के मारै मौसे तौ कछूनई कई नईतर वे तनक-तनक में चिड़-चिड़ान लगत ती। बुढ़ापे में लोग लुगाईयन की मति कछु बिगर सी जात उर वे बात-बात पै नाराज होन लगत। कै चोखरे की दौर मगरेनौ कै घर उर कै हार खेत। बऊतौ मौका की तलाशई में हती। सास क्याऊँ औलट भई उर ऊनें दसारानी की पूजा करी। एक दिना ऊकी सास खेत कुदाऊँ जान लगी। उर अपनी बऊ सै बोली कै देखौ अब हम घरै लौट कै नई आँय तुम हमें रोटी खेतई पै पौंचा दिइयौ। बहू की तौ फूँद में हुन कड़ गई बोली हओ बाई। वा बेफिकर हो गई ती। ऊने जल्दी सै पौर के किवारन की सांकर लगाई उर बेफिकरी सै आँगन में पूजा विस्तारी मन लगाकै दसारानी की पूजा करी। किसा कै लई। पोतनी की दसारानी कौ लोंदा सै भेंटई रई तीं इतेकई में सास खेत सै लौट कै आ गई। पूजा करत में तनक देर हो गई ती। सोऊ सास खौं समय पै रोटी नई पौंच पाई। सोऊ वे लौट कै घरै आ गई पौर के किवार भड़कै कन लगी कै खौलै किवार देर हो गई तुम अबैनौ का कर रई। बऊ दसारानी सैं भेंटई रई ती। इतेकई में सास पौंच गई बऊ ने दसा रानी कौ गोला उलात-उलात में मटकिया में डार दओं। उर उतै कौ चौक मिटा मिटू कै किवार खोले सास भीतर आकै बैठ गई। बहूनें रोटी तौ बना कै धरई लई ती। ऊने उनको आउतनई सास खौं रोटी पर्स दई। इतैकई में ऊकौ घरवारौ रोटी खाबे खौं आ गओ। बहू ने उयै सोऊ थारी लगा दई। दौई जनें मताई बेटा रोटी खान लगें। खातन में लरका बोलौ कै तनक मठा चानें तौ। अब वा मठा काँसै देबै ऊने तौ मठा की मटकिया में दसारानी कौ पोतनी कौ गोला डारई दओ तो। अब वौ मठा खाबे लाख कैसें हो सकत तौ। ऊमें तौ पोतनी घुरई गई हुइयै सोवा मठा के लाने कनबेरी दये रई। उर वो लरका हर-हर बेरऊ मठई माँगत रओ। अकेलै बऊ मठा खौं कैसे जाबै।

अब ऊकी सास कन्नो धीरज धरबै। वा तनक कर्रया कै बोली कै लरका तौ घन्टा भर सै मठा माँग रओं उर तै चिमानी बैठी। तैने घर कौ मठा और काऊयें दै दओं का। सास उठी उर मटकिया में सै मठा भरबे पौंची। मटकिया कौ मठातौ जांकौ तौ धरो तौ। अकेले ऊमें एक सोने कौ गोला डरो दिखानौ। दसारानी की कृपा सैं पोतनी कौ गोला सौने कौ गोला बन गओं। बहू ने सुनी सोऊ उयै सोऊ अचम्भौ भओं कै जौ हो का गओं वा तौ जान गई कै जा दशई रानी की कृपा है। सासनें पूछी कै जौ सोने कौ गोला काँसे आव। तुम साँसी बताव अब बहू का करें उयै साँसी-साँसी कनई आई। सास ने सोसी कै हमई दसारानी की पूजा करे सोऊ हमइयै सोने को गोला मिल जैय। ऊने अपनी बहू सैं पूजा कौ विधान पूछो। उर फिर दसारानी की पूजा कौ ढोंग करन लगी। पैला तौ ऊने बहू सै दसारानी की किस्सा सुनवाई उर फिर पोतनी कौ बड़ो गोला बनाव। ऊनैं सूवई मिला भेंटी करी उर फिर उयै मठा की मटकिया में डार कै बैठी रई। लरका खौं रोटी परसी उर फिर ऊसै मठा मँगवाव। उर जाकैं जईसै मटकिया कौ मठा देखौ सो वौ पोतनी कौ गोला उमें घुर गओ तो। हात डार कै देखौ सो ऊमें उयै कछू नई मिलो। वा तौ करम ठोक कै अपनी बहू सै कन लगी कै काय हमें तौ कछूनई मिलो। बहू ने हंसकै कई कै बाई भगवान की पूजा बड़ी भाव भक्ति सैं करी जात तबई आदमी खौं कछू सिद्धि मिल सकत। ढोंग ढकोसला करे सैं कोनऊ देवी-देवता प्रसन्न नई हो सकत। भगवान तौ भाव के भूखे होत। उनें तुमाये तमाशन सैं कछू लैने दैने नइया। कजन तुमें दसारानी की पूजा करनई है सो मन सै करो उर नियम सै करो तबई तुमें सिद्धि मिल पैय।

भावार्थ

एक गाँव में माता और बेटा निवास करते थे। लड़के के पिताजी का बहुत पहले स्वर्गवास हो गया था। माता ने जैसे-तैसे करके पुत्र का पालन-पोषण किया। उनके घर में थोड़ी सी जमीन थी। उसकी माँ उस जमीन को अधिया-बटिया पर दे देती थी, जिससे उनके उदर-पोषण के लिए अनाज मिल जाता था। धीरे-धीरे वह लड़का बड़ा हो गया और अपने घर का कामकाज सँभालने लगा। अपनी खेती भी अपने ही हाथ से करने लगा। उसकी माँ को अपने बेटे का आश्रय मिलने लगा। लड़के ने दो-तीन गायें-भैंसें और पाल ली थीं, जिससे घर में पर्याप्त दूध मठा होने लगा। अब उनके घर में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। अब उनका घर हर प्रकार से भरा-पूरा हो गया। अनाज, दूध, दही, घी सब कुछ था उनके घर में। अच्छा भरा-पूरा घर देखकर किसी एक भले आदमी ने उसके साथ अपनी लड़की का विवाह कर दिया। अब बहुत ही अच्छी तरह से उनकी घर-गृहस्थी चलने लगी। उसकी माँ पशुओं की सेवा करती, लड़का रात-दिन मन लगाकर कृषि कार्य में जुटा रहता था। उसे विश्राम करने का समय भी नहीं था। धीरे-धीरे उनका घर पूर्ण संपन्न हो गया। उसकी घरवाली तो बहुत ही चतुर थी। उसने घर-गृहस्थी के सारे काम-काज अच्छी तरह से संभाल लिए थे। उसकी माँ को समय पर गर्म और ताजा भोजन मिल जाता

था। माँ पूर्ण संतुष्ट थी, अब उसे और आवश्यकता ही क्या थी? माता जी का अधिकांश समय खेत की मेड़ पर ही व्यतीत होता था। माता जी को वहीं समय पर भोजन मिल जाता। वे भोजन करके और ठण्डा पानी पीकर शांतिपूर्वक वहीं विचरण करती रहती थीं। उन्हें तो ये मूल मंत्र भली-भाँति स्मरण था -

रूखा सूखा खाय के, ठण्डा पानी पीव।
देख पराई चूपड़ी मत ललचाबे जीव।।

उन्हें अब अपनी घर-गृहस्थी से कोई मतलब नहीं था। गृहस्थी के सारे अधिकार तो वे अपनी पुत्रवधू को सौंप ही चुकी थीं। एक दिन अचानक उनके घर की आग बुझ गई। तब दोनों सास-बहू कंडा लेकर पूरे मुहल्ले में भटक आईं, किन्तु किसी ने उन्हें आग नहीं दी, क्योंकि मुहल्ले के हर घर में दसारानी की पूजा हो रही थी। अब उनके सामने चूल्हे में आग जलाने की समस्या उत्पन्न हो गई थी। हर घर में दसारानी की कथाएँ कही जा रही थीं। उसकी सास को तो व्रत और उपवास से कोई प्रयोजन था नहीं, किन्तु औरतों को व्रत करते देखकर वधू के मन में व्रत रखने की इच्छा जाग्रत हो गई, किन्तु अपनी सास के डर से वह कुछ कह नहीं पा रही थी। उसकी सास बात-बात में नाराज होने लगती थी। वृद्धावस्था में प्रायः मति भ्रष्ट सी हो जाती है और मन में चिड़चिड़ाहट सी बनी रहती है। वह अपनी सास की नजर बचाकर दसारानी की पूजा करना चाह रही थी। वह सोच रही थी कि कब सास खेत पर जाय और कब मैं मन लगाकर पूजा कर लूँ। एक दिन उसकी सास खेत की तरफ जाने के लिए तैयार हो गई। उसने अपनी बहू से कहा कि देखो आज मैं खेत पर जा रही हूँ और लौटकर नहीं आऊँगी, तुम मुझे रोटी वहीं भेज देना। वह तो यह चाहती ही थी, उसने कहा कि हाँ माताजी मैं आपको रोटी समय पर भिजवा दूँगी। सास खेत की ओर चली गई ।

अब क्या था? बहू को पूजा करने का अवसर प्राप्त हो गया। उसने अपने आँगन को झाड़-पोंछकर लीप-पोतकर तैयार कर लिया और फिर प्रेमपूर्वक दसारानी की पूजा विस्तार ली। मन लगाकर पूजा की, किस्सा सुनाई। फिर उसने समस्त पूजन सामग्री समेट कर एक गोला बनाकर भेंटना चाहा, इसी बीच में उसकी सास खेत से लौटकर घर आ गई, क्योंकि पूजा के कारण सास को समय पर रोटी नहीं पहुँच पाई थी। सामने पहुँचकर किवाड़ खटखटाये और बाहर से बोली कि तुम अभी तक क्या कर रही हो? जो अभी तक रोटी नहीं भेज पाई। वह तो हाथ में पूजा का गोला लए हुए ही थी। सास को आते हुए देखकर वह घबड़ा गई और उसने घबड़ाकर उस गोले को मठे की मटकी में डाल दिया और फिर घर का काम करने लगी। उसने आते ही सास के सामने भोजन की थाली रख दी। इसी बीच उसका पति भी खेत से वापस आ गया। दोनों माँ-बेटे एक ही थाली में एक साथ बैठकर खाने लगे। खाना खाते समय लड़के ने कहा कि थोड़ा सा मठा खाना था। वह

सुनकर बहू चुप रह गई। वह जानती थी कि मठे की मटकी में तो पोतनी का गोला पड़ा है, जिसके कारण मठा तो खराब हो ही गया होगा। अब मैं वह मठा खाने के लिए कैसे दूँ। यह सोचकर वह सुनी-अनसुनी करती रही, किन्तु उसका पति मठा की जिद कर रहा था और वह उसकी बात पर ध्यान नही दे रही थी। यह देखकर उसकी सास अधीर हो उठी और गुस्सा होकर बोली कि मेरा लड़का एक घंटे से मठा माँग रहा हैं और तू कुछ भी ध्यान नहीं दे रही है। सास से नहीं रहा गया और वह मटकी से मठा भरने के लिए चली गई। मटकी का मठा तो पूर्ण साफ और निर्मल था, किन्तु सास को उस मटकी में एक बड़ा सा सोने का गोला पड़ा हुआ दिखाई दिया। दसारानी की कृपा से वह पूजा का पोतनी का गोला सोने का बन गया था। गोला देखकर सास तो चकित हो गई और बहू से पूछा कि इस मठे की मटकी में ये सोने का गोला कहाँ से आ गया है? वह सुनकर चकित हो गई, किन्तु समझ तो सब गई कि ये सब दसारानी की कृपा से ही हुआ है। सास के बार-बार पूछने पर बहू ने अपनी गुप्त पूजा की सारी कहानी अपनी सास को सुना दी। सास ने सोचा कि ये दसारानी का व्रत तो बहुत अच्छा है। इस पूजा को करने से सोने का गोला मिलता है। अब मैं भी दसारानी की पूजा करुँगी। अपनी बहू से पूजा का विधि-विधान पूछ लिया और वह पूजा करने के लिए तैयार हो गई। उसने पूजा विस्तारी, कहानी सुनी, पोतनी का गोला बनाकर मटकी में डाला। रोटी परसी और फिर मठे के लिए मटकी में हाथ डाला तो देखा कि वह पोतनी का गोला मठे में घुल चुका था। मटकी में सास को कुछ नहीं मिला। वह शीश पकड़कर रह गई। बहू से बोली कि अरे! मुझे तो कुछ भी नहीं मिला। बहू ने हँसकर कहा कि माताजी भगवान की पूजा भक्ति भाव से की जाती है। पूजा में व्यर्थ के आडंबर और दिखावे की जरूरत नहीं होती। भगवान तो केवल भाव के ही भूखे होते हैं। वे प्रदर्शन से तो कोसों दूर रहते हैं। 'भाव-भक्ति से पूजा करने से ही सिद्धि प्राप्त होती है। मनवांछित फल मिलते हैं, अत: हर पूजा-अर्चना भाव-भक्ति से करना ही उचित है ।

गढ़ालेत आठें व्रत कथा

एक शिहिर में एक बड़े प्रतापी राजा राज करत तें। उनके राज में प्रजा हर तरा सैं सुकी हती। काऊये कोनऊ तरा की तकलीफ नई हती। सबई प्रेम सैं हिलमिल कै रत्ते। राजा पूरे राज मे घूम फिरकै जनता के सुखकौ इंतजाम करत रत्ते। राजा की दो ठौआ रानी हतीं। बड़ी रानी को नाम हतो लच्छमी उर हल्की कौ नाव हतो कुलच्छमी। बड़ी रानी देखवे सुनवे में लच्छिमिअई की नाई सुन्दर हती। राजा कौ प्यार ऊपै भौतई जादा हतो। ऊकै दो ठौवा फूल से सुकुमार कुंवर हते। हल्की रानी कुलच्छमी तौ बड़ी रानी की घांई सुन्दर तौनई हती। अकेलै हती पतिव्रता रात दिना राजा की सेवा खुशामद में लगी रत्ती। राजा उयै डारै-ढारै फिरत रत्ते। बड़ी के डरन के मारै ऊसैं जादा बोल बता नई पाऊत ते। तोऊ राजा कौ ऊपै भीतरई भीतर लगाव सौं बनो रत्तो। जा बात बड़ी के मन

में खतासी कसकत रत्ती। औरतन में जरवे बरबे की तौ आदत होतिअई है। बड़ी सोसत रत्ती कै कजन राजा कौ झुकाव ऊ कुदाऊ हो जैय। तौ फिर हमाओ पूछवे वारौ कोऊ नइया। ईसै तौ जेऊ अच्छौ है कै ई विष के बिरवा खौं जरई सैं खुदवा कै फिकवा दओ जाय। कन लगत कै ना रहें बाँस ना बजे बाँसुरी। जा सोसत-सोसत बड़ी रानी एक दिना खाट की पाटी लैकै पररई। दिन भर ऊनें कछू खाव पियो नई। जीसै उनकौ रूप रंग मुरजा गओं। राजकाज के कामन सै फुरसत होकै जब राजा रनिवास में पौंचे तौ उने उतै सूनर सी दिखानीं। उतै हँसत खेलत बड़ी रानी नई दिखानी। वे एक कोने में दवी मुर्दी डरीतीं। राजा ने उनकौ मौ उगार कै पूँछी कै का बात है रानी। का कोनऊ वेद हकीम बुलआबैं। बुखार चढ़ों है का। रानी बोली कै अब हम बच नई सकत देखौ मराज हम अन्न पानी जबई खैंय जब तुम हल्की रानी खौं घर सैं निकार देव। राजा बोले कै वा बिचारी तुमाव का लयें। एक कोठामें पर बायरी डरी रत। उर तुम मिहिलन में राज कररई। वा कभऊँ तुमसै कभऊँ आदी बात नई कत। उर तुम उयै घर सै निकारबै खौं उतारू हो गई ।

रानी बोली के कजन तुम हमाव जियत मौ देखन चाऊत होव तौ उयै आजई कोनऊ जंगल में छोड आव। नईतर हम मिहिल छोड कै चले जैय या कटार मार कै प्रान खों दैय। राजा ने जान लइकै अब जा मानई नई सकत। कन लगत कै औरत की लीला दुनिया भर सैं न्यारी है। कओ वे ऐसौ उपद्रो कर दैबे कै जियै कोऊ सोसई नई सकत। राजा ने बड़ी रानी के लिंगा जाकै कई कै तुम उठो हाँत मौ धोव सपरो खोरौ खाव पियों। हम आजई हल्की रानी खौं लुआकै जंगल में छोड़ै आऊत। बताव हम तुमें दुखी कैसे देख सकत। सुनतनई रानी भली चंगी हो गई। तनक देर में राजा हल्की रानी कुलच्छमी के लिंगा पौंचे वा विचारी झारा बटोरी कर रई ती। राजा खौं देखतनई वा गोड़न पै गिरी । ऊकौ नाँव भली कुलच्छमी हतो। अकेलै हती वा भौतई अच्छे लच्छनन की। उयै देखतनई राजा की आँखन में डबरिया भर आई। अकेलै ऊ दुष्टन के मारै कर का सकत तें वे। राजा ने हल्की रानी सैं कई कै चलों हम तुमें घुमा फिरा ल्याबै। इतै अकेली डरी-डरी तुम हैरान होत रती। रानी हती भौतई भोरी भारी वा राजा कै संगै जाबे खौं तैयार हो गई। राजा उयै रथ पै बिठा कै घनघोर जंगल के बीच में लुआ गये। गर्मी भौत पररइती रानी खौं प्यास लग आई। उनें तनक दूर एक गाँव सौं दिखा रओं तो। रानी ने कई कै मराज कजन आज्ञा होयतौ हम ऊ गांव में जाकै पानी पी आबैं। राजा तौ जा चाऊतई हतें। उनकी तौ फूदई में हुन कड़ गई ती। राजा ने कई कै हओं चली जाव। पानी पीकै वे फिर कै आनई पाई राजा अपनौ रथ लैके अपने मिहिलन में लौट कै बड़ी रानी सै कई कै अब तुम सुक सो मिहिलन में राज करो। हम हल्की रानी खौं जंगल में छोड कै लौट आये। अब वा इतै लौट कै नईआ सकत। जंगल के जानवर उयै उतै मार कै खा लैय। बड़ी रानी मस्ती सैं घूमन फिरन लगी। हल्की रानी गाँव में पानी पीवै खौं गई सों उयै कछू लुगाई गड़न की पूजा करत दिखानीं। उतै बैठ कै पूजा देखी पानी पियों उर जब वा उतै लौट कै पौंची सोऊ उयै उतै कोऊ नई दिखानों। राजातौ उयै छोड़कै भगई गये तौ वा जानतौ सबरई ती। अकेलै अपनी छाती में गतकौ सौं दैकै रै गई। ऊनें सोसी कै हमाये भागमें ऐसऊ लिखो हुइयै। अब जौन

जैसों हुइयै सौं सब देखी जैय। जोई राम सोई राम। ऊनें सोसी कै अब हम इतै का करें। उतै फिर चार जनियन नौ जाकैं पूजा देखैं तनक मनई बहलें। हल्की रानी फिर उतै पौंच कै पूजा देखन लगी। उनन कौ एक गड़ा जादाँ बन गओं तो। औरतन ने सोसी कै जौ एक गड़ा ईकौ आय बेचारी बडी देर सै इतै बैठी है। हल्की रानी बोली कै बैन तुमने हमें गड़ा तौ अच्छौ दओं अकेलें हम तौं अनाथ है ई जंगल में। हम कैसे का पूजा करें। ईसैं उनन ने कई कैंभोले कै तौ भगवान होत। तुमतौ होम लगाऊत रइयौ गड़ा खौं। अब वा बिचारी का करें। गड़ा खौं लैकै ओई जगा पै पौंच गई जितै राजा उयै छोड़ कै चले गये ते। जंगल सैं घास फूस उर नकरिया जंगल के फूल फल खाकैंओई में डरी रये। अकेलै गड़ा की पूजा टैम सै करबै में वा कभऊँ नई चूकी हरा-हरा गड़ा की पूजा कौ समय पूरौ हो गओं। मां लच्छमी की पूजा उर सोरा ढारबे कौ समय आ गओं। ओई रातें एक फटी-पुरानी धुतिया पैरै लठिया टेकत एक डुक्को ने टपइया के दौर में जाकै आवाज लगाई के अरे कोई है। टपरिया में सुनतनई हल्की रानी ने कई कै हम आँ हैं एक दुखयारी। बायरै आकै हल्की रानी ने देखौ कै एक बूढ़ी डुकरो ठाढ़ी हैं। उयै भौचक्को देखतनई डुक्को ने कई कै काय बेटा तुमने हमें चीनौ नइयाँ। हम तुमाई मौसी आंय। हल्के में तुमने देखौ हुइयै सों तुमें खबर भूल गई हुइयै। जा सुनतनई रानी डुक्को के गरे सैं लगकै रोऊत रई । उर कन लगी कै मौसी इतै हम अकेले आफत के मारे डरे हैं। तेनै हमाई अच्छी खबर लई अब तुम हमें छोड़कै कितऊँ जइयौ नई। आज महा लच्छमी की पूजा है हमने गडा लओं तो उनकौ। डुक्को बोली कै तुम चिन्ता नई करो। अब तौ हम तुमाई संगै रैय। रानी बोली कै इतै जंगल में हम अकेले बुरओ लगत तुमाये संगै रैकै हमाये जे दुखन के दिन कटत रैय। डुक्को बोली कै बैटा अब हम तुमाओं संग कभऊँ नई छोड़ै। आज महालच्छमी है सो तुम नदिया पे जाकै अच्छे अस्नान करौ सोरा ढारौ। जोलौ हम पूजा कौ सामान बनायें लेत। रानी बोली कै मौसी हमनौ तौ एकई धुतिया है सो हम का पैरकै सपरै। फिर हम सपर कै का पैरे। डुक्को कन लई कै तुम डरइयौ नई उतै घाट पै तुमें सोने कौ लोटा उर लहर पटोरौ धरो मिलै। तुम सपर खोरकै घरें आ जइयो। ओ मौसी मोये भाग में लहर पटोरौ काँ धरो। इत्तो बड़ो राज छूट गओं उर इतै हम जंगल में ठोकरै खा रये तोऊ हम जी रये। तुमाई बात हम कैसे टार सकत। इत्ती कै-कै रानी सपरबे खौं जईसै नदिया के घाट पै गई सो उयै उतै सबरों सामान धरो मिलो। रानी ने अच्छी तरा सैं सपरो खोरो-सोरा ढारे उर लहर पटोरौ पैर के सोने कौ गऊआ भरकै टपरिया कै लिंगा पौंची। उतै ऊकी टपरिया की जगापै तिखण्डा मिहिल ठाढ़े ते। वाता करकै रै गई वा सोसन लगी कै कऊँ हम गैलतौ नई भूल गये। जा सोसत वा दोरई में ठाँढ़ी होके रै गई इतेकई में ऊकी मौसी बायरै कड़कै बोली कै बैटा जो तुमाओं घर आय। लच्छमी जूकी तुमाये ऊपर पूरी कृपा हो गई। अब हमाये जाबे की बेरा हो गई। जब तुम हमाई खबर करो सो हम तुमाये लिंगा जल्दी आ जैय। रानी ने मौसी केंगरे सैं लगकै भेंट करी उर मौसी चली गई। रानी अंसुआ पोछत वो अपने मिहिल में जा परी। अबतौ उनें जंगल में मंगलई मंगल हतो कोनऊ कमीं नई हती उनके मिहिल में। जीपै लच्छमी जू की कृपा होय उयै कायकी कमी हो सकत।

लच्छमी जू की कृपा सैं एक दिना राजा खौं हल्की रानी की खबर हो आई, उर ऊकी याद उनें भौतई सतावन लगी। राजा ने सोसी कै हम उयै धोकौ दैकै जंगल में अकेली छोड़ आये तें। अब तौ वा मरई गई हुइयै। ई दुष्टन कै कये सै हमने ऊके संगै भौत अन्याय करो तो। ऊकी का गल्ती हती। तोऊ चलो चलकै देखे कै ऊकौ का हाल भओं जंगल में। जा सोस कै राजा घुरवा पै बैठकै जंगल में ओई जगा पै पौचें। उतै बड़े-बड़े अटा अटारी देखकै चौक परे। रानी छज्जे पै ठाँढ़ी देख रई ती। ऊने राजा खौं चीन लओं। वा नैचे उतर कै आकै राजा के गोड़न पै गिरी राजा उयै देखकै भौंचक्कै रै गये। बा बोली कै मराज जा सब लच्छमी जू की कृपा है। अपुन तौ हमें जंगल में अनाथ की नाँईं छोड़ कै चले गये ते। हमने इतै मां लच्छमी कौ गड़ा लैकै पूजा करी उर उनई की कृपा सै ई जंगल में मंगल हो रओ। अब इतै बायरै ठाड़े का करत। भीतरै चलबो होय। राजा ने भीतर जाकै आराम करो। उरवे राजा भये उरवे रानी भई। लच्छमी जू कै गड़न की कृपा सै हल्की रानी कुलच्छमी के दिन फिर गये। जैसे हल्की रानी के दिन फिरे। ऐसई सबके दिन फेरियौ काऊ पै कभऊँ ऐसी गिरानी नई आवै। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी ।

भावार्थ

एक बड़े प्रतापी राजा राज्य करते थे। उनके राज्य में प्रजा हर तरह से सुखी और समृद्ध थी। किसी को किसी भी प्रकार का कोई कष्ट नहीं था। सारी जनता प्रेम से हिल-मिलकर रहा करती थी। राजा स्वयं पूरे नगर में घूम-घूमकर लोगों के कष्टों का निवारण करते थे और प्रजा को सुख साधनों की व्यवस्था करते थे। उस राजा की प्रमुख रूप से दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी का नाम था लक्ष्मी और उनकी छोटी रानी का नाम था कुलक्ष्मी। बड़ी रानी देखने-सुनने में लक्ष्मी की ही भाँति परम सुंदर और आकर्षक थी। राजा का उसके ऊपर सबसे अधिक प्यार था। उसके दो सुंदर सुकुमार फूल सरीखे राजकुमार थे। छोटी रानी कुलक्ष्मी बड़ी की तरह सुंदर तो नहीं थी, किन्तु थी वह पतिव्रता नारी। वह रात-दिन महाराज की सेवा सुश्रूषा में लगी रहती थी, किन्तु राजा का उस पर जरा भी प्रेम नहीं था। बड़ी रानी के डर के कारण राजा उससे ज्यादा बातचीत भी नहीं कर पाते थे। फिर भी राजा के मन में उसके ऊपर भीतर ही भीतर प्रेम सा बना रहता था। ये बात बड़ी रानी को बहुत कष्ट देती रहती थी। प्राय: औरतें तो ईर्ष्यालु होती ही हैं। बड़ी रानी रात-दिन छोटी रानी से जलती भुनती रहती थी। बड़ी प्राय: ये सोचती थी कि यदि राजा का झुकाव छोटी की ओर हो जायेगा तो मुझे पूछने वाला कौन है? इससे अच्छा यही है कि विष के वृक्ष को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया जाय। न रहे बाँस और न बजे बाँसुरी। ये सोचते-सोचते बड़ी रानी एक दिन रूठकर पलंग पर लेट गई। दिन भर वह भूखी-प्यासी बनी रही, जिससे उसका चेहरा बुरी तरह से मुरझा गया।

राजा राज-काज से निवृत्त होकर संध्या के समय रनिवास में पहुँचे तो उन्हें रनिवास सूना-

सूना दिखाई दिया। उन्हें रनिवास में हँसती खेलती हुई बड़ी रानी दिखाई नहीं दी। ध्यान से देखा तो बड़ी रानी पलंग पर मुरझाई हुई पड़ी थी। राजा ने शरीर पर हाथ रखते हुए पूछा कि क्या बात है, रानी साहिबा। क्या आपकी तबियत खराब है? क्या किसी वैद्य, हकीम को बुलवाऊँ? क्या आपको बुखार है? रानी बोली कि महाराज, अब हम बच नहीं सकते। हम अन्न जल तभी ग्रहण करेंगे, जब आप छोटी रानी को घर से निकाल देंगे, राजा बोले कि वह बेचारी तुम्हारा क्या लिए हैं? बेचारी एक अलग कमरे में बाहर पड़ी रहती है और तुम महलों में राज कर रही हो। वह बेचारी तुमसे कभी कुछ भी नहीं कहती और तुम उसे घर से निकालने पर तुली हो।

बड़ी रानी तो अपनी जिद पर तुली थी। यदि आप मुझे जीवित देखना चाहते हो तो आज ही आप उसे किसी जंगल में छुड़वा दीजिए। नहीं तो मैं स्वयं रनिवास छोड़कर जंगल में चली जाऊँगी या कटार भोंककर प्राण त्याग दूँगी। राजा समझ गये कि अब ये किसी भी तरह मान नहीं सकेगी। नारी की लीला बड़ी ही विचित्र होती है। कहा भी है –

त्रियाचरित्रं पुरुषस्य भाग्यम्। दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः?

राजा ने बड़ी रानी के समीप जाकर कहा कि अब तुम उठकर हाथ–पाँव धोकर स्नान करो, भोजन करो। मैं अभी छोटी रानी को जंगल में छोड़ने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें कभी दुखी नहीं देख सकता। सुनते ही बड़ी रानी भली चंगी हो गई। थोड़ी ही देर में राजा छोटी रानी के समीप पहुँचे। उस समय छोटी रानी घर की सफाई कर रही थी। राजा को देखते ही वह उनके चरणों पर गिर पड़ी। भले ही उसका नाम कुलक्ष्मी था, किन्तु उसमें लक्षण थे बहुत ही अच्छे । उसे देखते ही राजा की आँखों में आँसू आ गये, किन्तु उस पापिन के मारे वे कर ही क्या सकते थे? राजा ने छोटी रानी से कहा कि चलो हम तुम्हें घुमाने के लिए ले चलें। यहाँ तुम अकेली पड़ी–पड़ी परेशान हुआ करती हो। रानी तो बहुत ही भोली भाली थी, वह राजा के साथ जाने के लिए तुरन्त ही तैयार हो गई। राजा उसे रथ पर बैठाकर घनघोर जंगल के बीच में ले गये। गर्मी के कारण रानी बहुत प्यासी थी। समीप ही एक गाँव दिखाई दे रहा था। रानी ने कहा कि यदि आज्ञा हो तो मैं उस गाँव में पानी पीकर शीघ्र ही आती हूँ। राजा तो यह चाहते ही थे। उन्हें उसे भगाना नहीं पड़ा। राजा ने कहा कि हाँ ठीक है चली जाइयेगा। रानी गाँव की ओर पानी पीने के लिये चली गई और राजा मौका पाकर अपना रथ लेकर लौट आये। वे सीधे बड़ी रानी के समीप जाकर बोले कि मैं छोटी रानी को जंगल में छोड़ आया हूँ। अब तुम अकेली राजमहल में रहकर मजे से राज करो। अब वह इधर लौटकर नहीं आ सकती। जंगल के जानवर उसे मारकर खा लेंगे। अब क्या था? बड़ी रानी मस्ती में घूमने–फिरने लगी? छोटी रानी पानी पीने के लिए गाँव में पहुँची। वहाँ उसे कुछ औरतें गड़न की पूजा करती हुई दिखाई दीं। वहाँ बैठकर उसने पूजा देखी, पानी पीया, और वह जब वहाँ लौटकर पहुँची तो वहाँ उसे राजा दिखाई नहीं दिए। राजा तो उसे छोड़कर भाग ही गये थे। वह समझ तो सब कुछ

गई थी, अब कर ही क्या सकती थी? हाय, साँस लेकर रह गई। उसने सोचा कि हमारे भाग्य में ऐसा ही लिखा होगा। अब जो होगा सो देखा जायेगा, जो कुछ भगवान को स्वीकार है, वही होकर रहेगा।

उसने सोचा कि अब हम यहाँ क्या करें? गाँव में जाकर औरतों के पास बैठें। पूजा देखें तो थोड़ा बहुत मन ही बहलता रहेगा। छोटी रानी गाँव में जाकर औरतों के पास बैठकर पूजा देखने लगी। औरतों का एक गड़ा अधिक बन गया था। औरतों में तो एक दूसरे के प्रति सहानुभूति तो होती ही है। उन्होंने सोचा कि ये बेचारी यहाँ बड़ी देर से बैठी है। ये एक गड़ा इसी को दे देना चाहिए। छोटी रानी ने गड़ा लेकर कहा कि तुमने हमें गड़ा दे तो दिया, किन्तु हम इसका क्या करें? बहिन हम तो अनाथ हैं। इस जंगल में रहकर हम कैसे इस गड़ा की पूजा कर सकेंगे? औरतों ने कहा कि बहिन तुम तो बहुत भोली हो, भगवान तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम तो इस गड़ा को होम लगाती रहना। वही तुम्हारी लाज रखेंगे। गड़ा को लेकर वह चिंतित हो गई और वह उसी स्थान पर पहुँचकर रुक गई, जहाँ राजा उसे छोड़कर चले गए थे । वह उस जंगल के फल फूल खाकर उसी स्थान पर पड़ी रहती थी, किन्तु उसने उस गड़ा की पूजा करना नहीं छोड़ा। वह रोज समय पर पूजा करती रहती थी। धीरे-धीरे उस गड़ा की पूजा का समय पूरा हो गया और एक दिन महालक्ष्मी का पावन पर्व आ गया। उस दिन प्रात:काल सोलह बार सिर पर जल डाला जाता है।

उसी रात को एक फटी पुरानी धोती पहिने लाठी टेकते हुए एक बूढ़ी डोकरी उस रानी की झोपड़ी के द्वार पर खड़ी होकर आवाज लगाई, अरे! इस झोपड़ी में कौन रहता है? सुनते ही छोटी रानी ने उत्तर दिया कि मैं हूँ एक अभागिन नारी। इतना कहकर रानी ने बाहर आकर देखा कि एक बूढ़ी अम्मा मैले-कुचैले कपड़े पहिने हुए दरवाजे पर खड़ी हैं। उसको आश्चर्यचकित देखकर वृद्धा ने कहा कि- क्यों बेटी! क्या तुमने मुझे पहिचाना नहीं है। हम तुम्हारी मौसी हैं। बचपन में तुमने मुझे देखा होगा, इस कारण से ध्यान नहीं है। ये बात सुनते ही रानी वृद्धा के गले से लिपट कर रोने लगी। वह बोली कि मौसी मेरे ऊपर बहुत बड़ा संकट आ पड़ा है। राजा ने मेरा परित्याग कर दिया है। मौसी तुमने विपदा के समय खबर लेकर मेरा बहुत बड़ा उपकार किया है। अब तुम मुझे छोड़कर कहीं मत जाना। आज महालक्ष्मी की पूजा है, हमने उनका गड़ा लिया है। उस वृद्धा ने कहा कि अब तुम चिंता मत करो। अब मैं सदा तुम्हारे ही साथ रहूँगी। रानी बोली कि इस जंगल में मुझे अकेले में बहुत बुरा लगता है। तुम्हारे साथ मेरे दु:ख के दिन कट जायेंगे। वृद्धा ने कहा कि- बेटा! अब मैं तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ूँगी। देखो, आज महालक्ष्मी का दिन है। तुम जल्दी जाकर अच्छी तरह से स्नान करो और जब तक हम पूजा का सामान तैयार किए देते हैं। रानी बोली कि मौसी मेरे पास तो केवल एक ही धोती है। इसलिए अब मैं क्या पहिनकर स्नान करूँ? वृद्धा ने कहा कि देखो तुम डरना मत। घाट पर तुम्हें सोने का लोटा और रेशमी धोती रखी मिलेगी। तुम अच्छी तरह से स्नान करके सोने के लोटे से सोरा ढारना और रेशमी धोती पहिनकर और हाथ में

सोने का लोटा लेकर सीधी झोपड़ी में चली आना। रानी घाट पर पहुंची तो उसे वहाँ सारा सामान रखा मिला। उसने अच्छी तरह से स्नान किया, सोरा ढारे और रेशमी धोती पहिनकर सोने का गडुआ भरकर सीधी अपनी झोपड़ी में पहुँची। वहाँ उसकी झोपड़ी के स्थान पर ऊँचे-ऊँचे महल खड़े हो गये। देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा कि मैं कहीं रास्ता तो नहीं भूल गई। ये सोचती हुई वह महल के दरवाजे पर खड़ी होकर रह गई। उसे खड़ी देखकर मौसी ने बाहर निकलकर कहा कि बेटी! तुम खड़ी-खड़ी क्या सोच रही हो? ये तो तुम्हारा ही घर है। तुम्हारे ऊपर लक्ष्मी जी की पूर्ण कृपा हो गई है। अब हमारे जाने का समय आ गया है। मैं अब जा रही हूँ। जब तुम मुझे याद करोगी, तब मैं तुरन्त तुम्हारे पास आ जाऊँगी। रानी ने मौसी के गले लगकर भेंट की और मौसी वहाँ से चली गई। रानी अपने आँसू पोछते हुए महल में जा लेटी। अब तो उसे जंगल में ही मंगल हो गया था। उसे अब वहाँ किसी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। वहाँ कोई कष्ट नहीं था। जिस पर लक्ष्मी जी की कृपा हो, फिर उसे क्या कमी रह सकती हैं? लक्ष्मी जी की कृपा से एक दिन राजा को छोटी रानी का स्मरण हो आया। उसे रानी की याद बहुत कष्ट देने लगी। राजा सोचने लगे कि मैंने उस भोली भाली के साथ बड़ा विश्वासघात किया था, मैं उसे जंगल में अकेली ही छोड़ आया। अब तो वह मर ही गई होगी, इस पापिनी के कहने से मैंने उसके साथ बहुत अन्याय किया था। उस बेचारी की तो कोई गलती थी ही नहीं। उन्होंने सोचा कि जंगल में जाकर उसका हालचाल जानना चाहिए। यह सोचकर राजा घोड़े पर चढ़कर उसी स्थान पर जंगल में पहुँचे वहाँ उन्हें बड़े-बड़े महल खड़े हुए दिखाई दिए, जिन्हें देखकर वे चकित हो गये। रानी छत पर खड़ी हुई जंगल का दृश्य देख रही थी। उसने दूर से देखकर ही राजा को पहिचान लिया। वह नीचे उतरकर राजा के चरणों पर गिर पड़ी। उसे देखकर राजा आश्चर्यचकित हो गए। वह बोली कि ये सब लक्ष्मी जी की ही कृपा है। आप तो मुझे जंगल में अनाथ छोड़कर चले गए थे। मैं तो महालक्ष्मी के गड़ा लेकर लगातार पूजा करती रही और उन्हीं की कृपा से इस जंगल में मंगल हो गया है। अब आप बाहर खड़े-खड़े क्या कर रहे हैं? अब आप अंदर बैठकर विश्राम कीजिए। अंत में राजा और रानी प्रेमपूर्वक रहने लगे। लक्ष्मी जी के गड़े की कृपा से छोटी रानी कुलक्ष्मी के दिन फिर गये। ये है महालक्ष्मी की पूजा का प्रभाव। आज भी बुन्देलखण्ड की महिलाएँ पितृ पक्ष में महालक्ष्मी की पूजा करती हैं, जो विशेष फलदायी है ।

ग्यारस माता व्रत कथा

अपने इतैं की औरतें बड़े-बड़े कठिन व्रत उर उपास करतीं है। कछू-कछू तौ व्रत ऐसे हैं कि जिनमें चौबीस घन्टा नौ पानीअई नई पीनें आऊत। ऐसे व्रतन में तीजा करवा चौथ उर निर्जला ग्यारस कौ जादां महत्व है। ऊसै तौ कछू जनीं बारई मईना की ग्यासै उपासीं रत्तीं। पोथी सुनती

फरार करती उर संयम नियम सैं रतीं। अकेलैं सबसैं जादाँ कठिन है, निर्जला ग्यारस कौ ब्रत। भर दुपरिया में चौबीस घंटा बिना अन्न पानी कै रैबौ कछू हँसी खेल नइयां। औरतें निर्जला ग्यारस की एक कानिया कन लगतीं हैं। एक डुक्को नें एकदार बड़ी भाव भक्ति सैं निर्जला कौ ब्रत करो। डुक्को खौं बुढ़ापे में ब्रत करकैं का चानें तो। वे तौ अपने नाती नतन की सुक सुविधा कौ वरदान माँगवे खौं ब्रतकर रई तीं। वे अपनौ करों जिऊ करकैं दिन भर तौ प्यास सादैं रई। दिन कैं ग्यारस मइया कौ पूजन पाठकर बा पोथी सुनीं । पंडित जी खौं डबलन उर फलन कौ दान करो। दोंनन में भर-भर कैं बूरौ बाटों। फिर वे दो घन्टा नौ पानी में डरीं रई। खूबई पानी के करूला करें। बीसन दार नौं मौं धोव। तब तनक मनक साता पर पाई। घाम तौ चिल्लाटे कौ परऊ हतो। धर-धरी पै मौं सूक रओ तो। ऐसी कानात कन लगत कैं छः दूबरी उर दो अषाढ़, चरन गई दूर कौ हार एक तौ बुढ़ापौ उर जा जेठमास की गर्मी धरी-धरी पै अच्छे ज्वानन के मौं सूकन लगत, बुढापे कीतौ हालतई अलग होत। जैसे तैसे रो-धो के दिन तौ कट पाव। अब जे पहाड़ सीं राते कैसे कटतीं। हर-हर बेरऊ करोटा लेबै खाट पै। सौदार बायरै जाय उर भीतरै आँय। कन लगत कैंसत्य तौ सातई घरी कौ होत। कन्नो धीरज धरें वे। ग्यारस मइया खौं सुमरत रई बेकत रई ओ मताई हमाई लाज तौ अब तुमाई हाँतन में है। तुमई अब इत्तौं सत्य दै दिइयौ जीसैं जा रात शान्ति सैं कट जावै। अकेलै जब उनके प्रान सूकन लगे उर जिऊ खौं सातई नई परबै सोऊवे चिल्लया परी। अरे बचाव-बचाव मरे-मरे। डुक्को को चिल्लयावौ सुनकें घर के नाती नता बऊयें बिटिया लरका उर पुरा परोसी जुर के उनकी खटिया के लिंगा पौंच गये, उर पूछन लगे कें काय बाई तुमें का हो गओ। तुमें बुढ़ापे में ब्रत की का औरी? ऐसी कानात कई जात कै- 'बाप राज खाय न पान, दाँत निपोरें कड़ गये प्रान।' तनक देर में वे फिरकऊँ बोली अरे हम तो मरे-मरे। अरे छाती पै ठण्डे पानी को डबला धरो। नातियन नें दोंर कें छाती पें ठण्डे पानी कों डबला धरो। तब तनक साता पर पाई उर वे तनक झप गई ।

ग्यारस मइया ने सोसी कै है तो डुकरिया भौत करी। तोऊ तनक ईकै ब्रत की परीक्षा तो लेनईआय। वे आदी रात कें कुकरा बनकें कुकरूकू करन लगी। कुकरा की टेर सुनकै डुकरो चिटपिटा कें उठी उर बायरैं कड़ कै देखो सो उनें क्याऊँ बादर में भुन्सरिया तरा नई दिखानौ। वे सोसन लगी कै जौ कुकरा कितै सें बोल परो। प्यासन के मारैं तनक मन तौ उनकौ डावा डोलतौ हतोई। वे पैलातौं धीरज खोउन लगी फिर उन्नें सोसी कें हम तो व्रत पूरौ करकै छाड़ै। चाय भलेई प्रान कड़ जाय। जा सोस कै वे फिरकऊँ गुड़मुड़्या कैं डर रई। घन्टाक में फिर एक नाटक भओ। एक हल्की सी मौड़ी शरबत गिलास लये बऊके मुड़ीछैं आन ठाँढ़ी भई। उर जोर सै बोली कै बाई उठौ भुन्सराँ हो गओ। उर मौं हात धोकै शरबत कौ गिलास पीलो। पैला तौ गिलास देखकैं उनकौ जिऊ ललचानौ उर फिर तनकई देर में निर्जला ब्रत की खबर हो आई। उर उन्ने कई कैंअबै हम कैसऊँ जौ शरबत नई पी सकत। उर वे चुपचाप जाँ की ताँ पर रई ।

फिर उनें ऐसौ लगो जैसे काऊने उनें पानी के कुआँ में पटक दओ होय। बड़ी देर नौ तौ वे ऊमे वे अपने हाँत पाँव चलाऊत रईं। अकेलै उन्नें पानी कौ बूँदा मौ में नई जान दओ। उर वे डटके अपनो पूरौ ब्रत सादे रई। तनकई देर में कुजने कितै सै आग की झण्डार बरन लगी। भारी गर्मी बढ़ गई। प्यास के कारन प्रान कड़न लगे। अकेलै डुक्को कौ बार वाँको नई भओ। वे जाँ की ताँ मुसक्यात सी बैठी रई। तनक देर में बायरैं उजयारौ सौं दिखान लगो। जैसै भुन्सरा हो गओ होय। उन्नें बायरै कड़कै देखो सोऊ जान लई कै अबै तौ भुन्सारे में तीन चार घण्टा की देर है। जा जानकै वे शान्त होकै घूमन फिरन लगीं। ग्यारस मइया नें जा बात अब अच्छी तरा सै जान लई कै अब वे अपने ब्रत सै कैसऊ डिंग नई सकत। डुक्को के सत्य खौं वे पूरी तरा सैं जान गई। भुन्सरा होतनई उन्नें अस्नान करें भगवान कौ पूजा पाठ करो। ग्यारस मइया की पोथी सुनी। पंडितन खौं दच्छना दई उर उनके भोजन कराये। तब कऊँ उन्ने पानी पियो। पैल कन्यन के भोजन कराये फिर अपनने पान्ने करें। ब्रत के प्रताप सैं उनकी आबरदा बढ़ गई। उनकौ घर परिवार हरो-भरो हो गओ। घर में कोनऊ तरा की कमती नई रई। नाती नता बऊये उर बिटियन सैं उनकी बखरी भर गई। उर फिर वे ओई दिना सैं बारई मईनन की ग्यारस कौ ब्रत करन लगी। ग्यारस मइया की कृपा सैं वे इतै हरतरा के सुख भोग कै सूदी बैकुण्ठै चली गई। ऐसौ है तुरतई फल देबे वारौ ग्यारस मइया कौ ब्रत। ओई समय सै घर-घर ग्यारस कौ ब्रत होन लगो। उर लोगन के दु:ख दालुद्दर दूर होन लगे। कुलजुग में ई ब्रत कै जादा प्रभाव है। ई कारन सै इतै की ओरतें ई ब्रत खौं कभऊँ भूली नइयाँ। वे पंडितन सै ई ब्रत कौ समय पूछतई रती हैं। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी ।

भावार्थ

बुन्देलखण्ड की महिलाएँ अनेक प्रकार के कठिन व्रत किया करती हैं, कुछ ऐसे भी व्रत हैं जिनमें चौबीस घंटे पानी नहीं पीना पड़ता है। इस प्रकार के व्रतों में तीजा, करवाचौथ और निर्जला एकादशी का प्रमुख स्थान है। कुछ महिलाएँ तो बारह महीने एकादशी का व्रत रखती हैं। उस दिन वे कथा सुनती हैं, फलाहार करतीं और संयम नियम से रहती हैं, किन्तु सबसे अधिक कठिन है निर्जला एकादशी का व्रत। उन दिनों बड़ी तेज धूप पड़ती है। उस भयंकर गर्मी के समय भूखा-प्यासा रहना, कोई साधारण कार्य नहीं है। महिलाएँ इस अवसर पर एक कथा सुनाने लगती हैं, जो इस प्रकार है -

एक बूढ़ी माँ ने एक बार निर्जला एकादशी का व्रत रखा, बड़ी ही भाव-भक्ति से पूजा-अर्चना की, उन्हें वृद्धावस्था में क्या बाधा थी? वे तो अपने पुत्र, पौत्रों की सुख-सुविधा के लिए व्रत रखने लगी थीं। वे दिन भर तो जरा कठोर मन करके अपनी प्यास को रोके रही। दिन में पूजा-पाठ किया, कथा सुनी और पंडित जी को मिट्टी के पात्र में भरकर पानी और ऋतुफल दान में दिए। दोना भर-भरकर बूरा वितरण किया। उन्हें गर्मी के कारण बहुत बेचैनी हो रही थी। इस

कारण से बड़ी देर तक पानी में पड़ी रही और पानी के कुल्ला करती रहीं, मुँह धोती रहीं तब कहीं थोड़ा बहुत धैर्य बँध पाया। धूप तो तेज पड़ ही रही थी, इस कारण बार-बार मुँह सूख रहा था। बूढ़ी माँ बहुत बेचैन हो रहीं थी। एक बुढ़ापा और दूसरे ये भयंकर गर्मी। वृद्धावस्था की स्थिति तो कुछ दूसरी ही प्रकार की होती है। जैसे-तैसे रो-धो के दिन कट पाया। अब पहाड़-सी रात सामने थी। उसका कटना बड़ा ही कठिन दिखाई दे रहा था। खटिया पर पड़े शांति नहीं मिल रही थी। वे बार-बार करवट बदल रही थीं। अनेक बार वे बाहर जातीं और भीतर आतीं। उन्हें घर के अंदर शांति नहीं थी। वे पड़ी-पड़ी एकादशी माता का स्मरण करती रहीं, वे कहती रहीं कि- हे माताजी! आप मेरी लाज रखियेगा। आप ही मुझे शक्ति दे दीजियेगा, जिससे मैं भली-भाँति आपका व्रत कर सकूँ और ये पहाड़ सी रात शांतिपूर्वक व्यतीत हो सके। प्यास के कारण बूढ़ी माँ की बेचैनी तो बढ़ ही रही थी। उन्होंने धैर्य रखने का बहुत प्रयास किया, किन्तु सहनशीलता की सीमा टूट गई और वे घबड़ाकर एकदम चिल्ला पड़ीं। बोली कि बचाओ-बचाओ, बचाओ! अम्मा का चिल्लाना सुनकर परिवार भर के नर-नारी बच्चे और पड़ौसी एकत्रित होकर बूड़ी अम्मा की खटिया के समीप पहुँच गये। सबने पूछा कि अम्मा जी आपको क्या हो गया है? आप क्यों चिल्ला पड़ी थीं। आप इस वृद्धावस्था में ये कठिन व्रत क्यों कर रही हैं। अम्मा जी! शक्ति से ही भक्ति होती है। थोड़ी ही देर में वे फिर से बोलीं कि अरे! हमारे तो प्राण ही निकले जा रहे हैं। मेरी छाती पर ठण्डे पानी का घड़ा रख दीजिये। नातियों ने दादी की छाती पर ठण्डे पानी का पात्र रख दिया। तब कहीं उन्हें थोड़ा बहुत आराम मिला और थोड़ी देर के लिए उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं ।

एकादशी माता ने सोचा कि ये बूढ़ी अम्मा है तो बहुत कठोर, जरा जाकर उसकी परीक्षा लेना चाहिए। वे आधी रात को मुर्गा बनकर टेर लगाने लगीं। मुर्गा की आवाज सुनकर दादी जल्दी से उठीं और बाहर जाकर आसमान की ओर देखा, किन्तु आसमान में कहीं उन्हें प्रात:कालीन तारा दिखाई नहीं दिया। वे सोचने लगीं कि ये मुर्गा क्यों और कैसे बोल गया है? उन्हें प्यास तो बढ़ ही रही थी। थोड़ा बहुत उनका मन भी विचलित होने लगा था, किन्तु अंत में उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि मैं अब व्रत को पूर्ण करके ही छोडूँगी। चाहे भले ही मेरे प्राण निकल जांये। ये सोचकर फिर वे खटिया पर शिथिल होकर लेट गई। थोड़ी ही देर में एकादशी माता ने उनकी फिर से परीक्षा लेनी चाही। एक छोटी सी बालिका एक गिलास में शर्बत लेकर उनके सिरहाने खड़ी हो गई और जोर से बोली कि दादी जी सबेरा हो गया है। आप हाथ-मुँह धोकर शर्बत पी लीजियेगा। पहले तो शर्बत का गिलास देखकर उनका मन ललचाने लगा, किन्तु अचानक व्रत का स्मरण हो आया और उन्होंने सोचा कि मैं किसी भी प्रकार से अभी शर्बत नहीं पी सकती हूँ और वे शांतिपूर्वक अपनी खटिया पर लेट गईं। फिर थोड़ी ही देर में उन्हें ऐसा लगा कि जैसे किसी ने उन्हें पानी के कुँए में पटक दिया हो। वे बड़ी देर तक उस कुँए में हाथ-पाँव चलाती रहीं, किन्तु उन्होंने अपने मुँह में पानी की एक बूँद भी नहीं जाने दी और वे दृढ़तापूर्वक अपना व्रत पालती रहीं। थोड़ी ही देर में न

जाने कहाँ से सामने आग जलने लगी, जिससे भारी गर्मी बढ़ने लगी। प्यास के कारण प्राण निकलने लगे, किन्तु बूढ़ी अम्मा का कुछ भी नहीं बिगड़ पाया। वे जहाँ की तहाँ मुस्कराती हुई सी बैठी रही। थोड़ी ही देर में बाहर प्रकाश दिखाई देने लगा। ऐसा लगा कि जैसे सवेरा हो गया हो। बूढ़ी अम्मा ने जब बाहर निकल कर देखा तो समझ गईं कि अभी सवेरा होने में तीन चार घंटे की देरी है। यह जानकर वे शांतिपूर्वक इधर-उधर घूमने फिरने लगीं। एकादशी माता ये बात अच्छी तरह से समझ गई कि ये बूढ़ी अम्मा किसी भी प्रकार से अपने व्रत से नहीं टल सकती है। वे उनके सत्यव्रत को अच्छी तरह से समझ गईं ।

सवेरा होते ही बूढ़ी माँ ने स्नान किया। भगवान का पूजन-पाठ किया, एकादशी माता की कथा सुनी। ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर भोजन कराया। तब कहीं उन्होंने जल ग्रहण किया। कन्याओं को भोजन कराने के बाद अम्मा ने भोजन किया। उस श्रेष्ठ व्रत के प्रताप से बूढ़ी अम्मा की आयु में वृद्धि हो गई। उनका घर परिवार हरा-भरा हो गया। घर में अब उनके कोई अभाव नहीं रहा। वे हर तरह के सुख-साधनों से संपन्न हो गईं। नाती-नातिनों से उनका घर भर गया। और वे उसी दिन से बारह महीने की एकादशी का व्रत करने लगीं। एकादशी माता के व्रत के प्रताप से इस संसार में हर प्रकार के सुख भोगकर अंत में वैकुण्ठ धाम को चली गईं।

ऐसा है तुरंत फल देने वाला एकादशी माता का व्रत। उसी समय से संपूर्ण उत्तर भारत में यह व्रत प्रारंभ हो गया और लोगों के दुख दारिद्रय दूर होने लगे। कलयुग में यह व्रत अधिक प्रभावपूर्ण है। इस कारण से बुन्देलखण्ड की महिलाएँ आज तक इस व्रत को भूल नहीं पाई हैं। उन्हें इस व्रत को करने की विशेष इच्छा रहती है ।

गणेश चौथ व्रत कथा

ऐसैं-ऐसैं एक गाँव में एक बामुन की बिटिया रत्ती। ऊकैं बाप गाँव के अच्छे पंडित हते। गाँव भरकी पंडताई करकैं मन मुक्तौ पइसा कमाँऊते। घर में नाज पानी उर पईसा टका की कोनऊ कमी नई हती। गाँव भर के ब्याव काज उर तित त्योहारन पै पंडित जीखौ मन मुक्ती आमदानी होत रत्ती। बिटिया की मताई बारा मईना कै गनेश बाबा कौ ब्रत करकैं पूजा पाठ करत रत्ती। बिटिया हलकई सें मताई कै ब्रत खौं देखा देखी गनेश बाबा कौ ब्रत करन लगी। हराँ-हराँ वा बिटिया स्यानी होकैं ब्याव लाख हो गई। अकेलै ऊने ऊ ब्रत के करबे में कभऊँ चूक नई करी। कछू दिना में ऊकौ ब्याव हो गओं। अच्छी भरी पूरी ससुरार मिल गई। ऊ घर में सोऊ पंडिताई होतती। कोऊ ने ऊके ब्रत में टोका नई मारौ उतै सोऊ वा गनेश बाबा कौ ब्रत करबौ नई भूली। उतै औरई जादा मन लगा कै ब्रत करत रई। कछू दिना में ऊकौ एक लरका हो परो। तौऊ ऊकौ उपास बंद नई भओ। नाय ऊकौ ब्रत चलत रओ, उर घर में लरका स्यानो होत रओ। हरां-हरां लरका ब्याव

लाख हो गओं। उर फिर कछू दिना में अच्छे साकै कौ ब्याव भओ भइया कौ। अब का कनें वा बिटिया अब लरका बऊ बारी हो गई। तोऊ ब्रत करबौ नई छोड़ौ। ब्रत करत-करत क्योऊ सालैं कड़ गई। उर बा बिटिया अब झन्क डुकरिया हो गईं। घर में सुख साधनन की कमी हती नई। कन लगत कै होती कीनौ धोती उर ना होती की फटी लगोंटी। डुक्को इत्ती बूढ़ी हो गई ती उनें चलबे फिरबे तक मैं तकलीफ होन लगी ती। आँखन की जोत कमजोर हो गई ती। हाँतन गोड़न में निठुँअई तागतनई रई ती। जीवन भर गनेश जूकौ ब्रत करत रई। गनेश जू की उनपै पूरी कृपा तौ हतिअई। एक दिना वे कोनऊ काम सैं लठिया टेकत मन्दिर कुदाऊँ जा रईती। इतेकई में आकाशबानी भई कै ओ डुक्कौ तुम जीवन भर हमाओ ब्रत करत रई उर अब तुमाओ बुढ़ापौ आ गओ। हम तुमसै पूरी तरा सै खुश हैं। माँगलो अब तुमें जो मागने होय। आज कौमागौं पाव। डुक्को सुनतनई चकवानी सी ठाँढ़ी होकैं रैं गई। सोसन लगी कै कोऊ दिखात तौ है नइया, कुजाने कोआ बोल रओ। उनें मौगौ चालौ देख कैं फिरकऊ आकाशबानी भई कै डुक्को तुम अब सोसती का हों। माँगौ-माँगौ जल्दी माँगलो। अब डुक्को सन्न होकै रै गई उर सोसन लगी कै अब हम का माँगबे। पैला तौ बे अपने डुकरानौ जाकैं पूछन लगी कै आज कोंनऊ देवता हमसै खुश होकै हमें मनचाऔ वरदान दैवो खौं तैयार है। अब बताव हम का मांगे उनसैं। बब्बा बोले कै हमाये तो दाँतई गिर गये हम सै तो कछु मुरतई नइया कजन तुमें कछु मँगवाने होय सो तुम उनसे दूद घी मांग लेव। तनक देर में वे अपने लरका के लिंगा जाकें कन लगी। कै भइया कोनऊ देवता हमें वरदान देन चाऊत। बताव हम उनसे का वरदान माँग लेवे। लरका बोलो कै बाई अपने इतै भौतई गरीबी है। मांगने होय तो तुम उनसे धन माया माग ल्याव फिर उन्ने अपनी बऊधन नौ जाकै जेई बात दै पूछी। बऊधन बोली कै हमाई गोदी खाली है। तुम अपने लाने नाती माँग ल्याव। सवरन की अलग-अलग बातें सुनकें वे ओंरई झन्झट में पर गयीं कै अब बताव का मांगे उनसें ऐसी सोसत वे लठिया टेकत फिरकऊँ मंदिर कुदाऊँ जान लगी। गनेश बब्बा एक बूढ़े बामुन को रूप धरकै उने गैलंई में ठाँढ़े मिल गये, उर उने गैल में रोक कै कन लगे कै बाई मांगती काय नइया। एकई दार में मांग लो जो तुमें मांगने होय सो अब डुक्को कौ दिमाक भौतई टीक ठाक हतो वे सोसत-सोसत कै उठी कै सबसे पैल तौ हमें आँखई चानें ती बुढ़ापै में आंखन खौं भौतई बड़ो सहारो होत। आंखन बिना आदमी की जिंदगी बेकारई है। बब्बा नें उने फिरंकऊँ कैकै तुम ठांढ़ी-ठांढ़ी का कर रई। मांग काय नई रई। डुक्को बोली कै कजन तुम हमें कछू वरदान देन चाऊत होव तो हम सोने की नसेंनी पै चढ़ कै सोने कै कचुल्ला में अपने नाती खौं दूद भात खात देखन चाऊत। डुक्को की होशयारी तो देखो। उन्ने एकई संगे चारई चीजें मांगलई। अपने काजें आँखें, बब्बा खौं घी, दूद-लरका खौं धन-माया, उर बऊधन खौं लरका सब एकई संगे मांग लओ उर उन गनेश बाबा नें चारई चीजे एकई वरदान में दें दइं। ई तरा बामुन बऊ कौ गनेश बाबा कौ व्रत हरतरा सै फलीभूत भओ। जो साँसे मन सें गनेश बाबा कों व्रत करत वे ऊकी मनोकामना खुदई पूरी करत।

भावार्थ

एक गाँव में एक अच्छे ज्ञानी-ध्यानी पंडित जी निवास करते थे। उन्हीं के अनुरूप अत्यंत चतुर और गुणवती पंडित जी की एक पुत्री थी। पंडित जी की पत्नी भी अत्यंत धार्मिक और गुणवती महिला थी। पंडित जी की पूरे गाँव में पंडिताई थी, जिसके द्वारा वे पर्याप्त अर्थोपार्जन करते थे। उनके घर में अन्न-धन और सुख-साधनों की कोई कमी नहीं थी। गाँव भर के विवाहकाज, पुराणकथा और याज्ञिक कार्यों से उन्हें पर्याप्त धन प्राप्त होता रहता था। उनकी पत्नी तो बहुत धार्मिक थी। वह बारह महीने की गणेश चतुर्थी को गणेश जी का व्रत करके खूब पूजा-पाठ करती थी। उनकी पुत्री अपनी माँ को देखकर बचपन से ही गणेश जी का व्रत करने लगी थीं। धीरे-धीरे उनकी पुत्री विवाह के योग्य हो गई। फिर भी वह लगातार व्रत करती रही। उसके संयम नियम में रंचमात्र भी शिथिलता उत्पन्न नहीं हुई। कुछ दिन बाद उसकी शादी हो गई। फिर भी उसने व्रत करना नहीं छोड़ा। उसके सास-ससुर, पति और परिवारजनों ने उसके व्रत में कोई बाधा उत्पन्न नहीं की। संयोगवश उसकी ससुराल में भी पंडिताई होती थी। इस कारण से वह अपनी ससुराल में और भी अधिक मन लगाकर गणेश जी की पूजा करने लगी। कुछ दिन बाद गणेश जी की कृपा से उसको एक पुत्र उत्पन्न हो गया। फिर भी उसने उपवास करना बंद नहीं किया। इधर उसका व्रत लगातार संचालित रहा और घर में उसका पुत्र बड़ा होता गया। धीरे-धीरे उसका पुत्र शादी के योग्य हो गया। फिर कुछ दिन बाद उसके पुत्र का बड़े ही धूम-धाम से विवाह हो गया। अब क्या कहना? वह उपवास करने वाली पंडित जी की पुत्री लड़का और बहू वाली हो गई। फिर भी उसने गणेश जी का व्रत और उपवास नहीं छोड़ा। अब वह लड़की बूढ़ी हो गई। घर हर तरह से भरा-पूरा था। सुख-साधनों की कोई कमी थी नहीं।

वे इतनी ज्यादा वृद्ध हो गईं कि उन्हें चलने-फिरने में भी कष्ट होने लगा। आँखों की ज्योति मंद पड़ गई। आँखों के सामने अंधेरा सा लगा रहता था। उनके हाथों पाँवों में जरा भी शक्ति नहीं रही। वे जीवन भर गणेश जी का व्रत करती रहीं। गणेश जी की तो उन पर पूरी कृपा थी ही। एक दिन किसी कार्य हेतु लाठी टेकती हुई मंदिर की ओर जा रही थीं। इसी बीच में अचानक आकाशवाणी हुई कि- हे बूढ़ी अम्मा! आप जीवन भर हमारा व्रत करती रही हो। व्रत करते-करते अब तुम्हारा बुढ़ापा आ गया है। अब तुम चलने फिरने में असमर्थ हो गई हो। मैं अब तुमसे पूर्ण प्रसन्न हूँ। तुम मुझसे मनचाहा वरदान माँग लो, जो कुछ माँगोगी वह मैं तुम्हें देने को तैयार हूँ। आकाशवाणी सुनकर अम्मा चकित खड़ी होकर रह गईं, सोचने लगी कि दिखाई तो कोई देता नहीं और न जाने कौन बोल रहा है। उन्हें चकित और शांत खड़ा हुआ देखकर फिर से आकाशवाणी हुई कि माताजी आप सोच क्यों रही हो। अरे! जो माँगना हो जल्दी माँग लो। बुढ़ी अम्मा शांत होकर रह गई और सोचने लगी कि अब मैं इनसे क्या माँगूँ?

पहले वे अपने पति के पास जाकर उनसे बोलीं कि न जाने कौन देवता मुझसे प्रसन्न होकर आकाश मण्डल से बोल रहे हैं कि वरदान माँग लो। बताइये अब मैं क्या वरदान माँगूँ? बब्बा बोले कि मेरे तो पूरे दाँत ही टूट चुके हैं। मुझसे तो कुछ चबता ही नहीं है। यदि माँगना हो तो तुम उनसे दूध और घी मांग लो। थोडी देर में अम्मा ने अपने लड़के के समीप जाकर यही प्रश्न किया। पुत्र ने कहा कि मैं तो बहुत ही गरीब हूँ। यदि तुम्हें उस देवता से कुछ माँगना हो तो तुम धन माया मांग लो। उसने अपनी पुत्रवधू के समीप जाकर यही प्रश्न किया। पुत्रवधू ने कहा कि मेरी तो गोदी खाली है। यदि माँगना ही हो तो तुम उनसे नाती माँग लो। परिवार के लोगों की अलग-अलग बातें सुनकर अम्मा ज्यादा झंझट में पड़ गईं। वे सोचने लगीं कि अब मैं उस देवता से क्या माँगू? ऐसा सोचती हुई वे लाठी टेकती हुई मंदिर की ओर जाने लगी। गणेश बाबा बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करके उस वृद्धा के सामने खड़े होकर बोले कि माता जी आप माँग क्यों नहीं रही हो? जो कुछ तुम्हें माँगना हो सो एक ही साथ माँग लीजिये। मैं, जो माँगो देने को तैयार हूँ। उन्होंने मन में सब कुछ सोच लिया था, वह सोचने लगीं कि पहले तो हमें आँखों की जरूरत है, जिनके बिना बुढ़ापे में जीवन बेकार हो जाता है। बूढ़े ब्राह्मण ने फिर से कहा कि तुम खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो? माँगती क्यों नहीं हो? सोच समझकर बूढ़ी अम्मा ने कहा कि यदि तुम मुझे देना ही चाहते हो तो 'हम सोने की नसेनी पर चढ़कर सोने की कटोरी में अपने नाती को दूध-भात खाता हुआ देखना चाहते हैं।' अम्मा ने बड़ी ही चतुराई से काम लिया, उन्होंने एक ही वरदान में चार इच्छाओं को एक ही साथ माँग लिया। उन्होंने अपने लिए आँखें, बब्बा के लिए घी-दूध, लड़के के लिए धन-माया और पुत्रवधू के लिए पुत्र। उन्होंने ये वस्तुएँ एक ही साथ दे दीं।

इस प्रकार ब्राह्मण की पुत्री का व्रत पूरी तरह से फलीभूत हुआ, जो सच्चे मन से भगवान गणेश की पूजा-अर्चना व्रत और उपवास करते हैं, भगवान गणेश उनकी मनोकामना पूर्ण करते हैं ।

नागपंचमी व्रत कथा

साँवन कौ मइना आव। सबई के भइया अपनी-अपनी बैनन खौं लुआवै चले गये। कछू जनीं सावन के लगतनई अपनें मायकै चली गई, उर कछू जनी अपनें-अपनें भइया भतींजन की बाठ हैरै बैठी ती। दिन बूड़े ग्योड़े के कुँआ पै पनयारियँन की भीर जुर गई। सबजनीं अपनें- अपनें मायकन चर्चा कर-कर कै भइया-भतीजे उर भौजियँन की तारीपन के पुल बाँधन लगीं। अकेलीं एक जनीं उदास उर मनमारै अपनी खैप दूर धरै बैठी तीं। उयै दूर बैठके देखकैं सब जनी ऊसें पूछन लगी कै काय बैन तुम दूर उदास सी काय बैठी हों। का तुमाये भइया भौजी नइयां। सुनतनई ऊकी डबरिया भर आई उर गरों भर आव। वा रूँन्दे-रूँन्दे गरे सैं कन लगी कै मोय तौ कछू खबरई

नइया। जबसै ब्याई आई सो एकई देरी की होकै रै गई। कजन हमाये मायके में भइया भौजी होते तौ कभऊँ ना कभऊँ लुआबे तौ आऊतई। लुगाइयँन में हीरपीर तौ भौतई होत है। सब जनीं कनलई अरी बैन ऐसो कओं होत कै तुमाये मायके मे बाप तौ हुइयई। बैन तुम अपने घरै जाकैंअपनी सासो बाई सैं पूछियो। वे सब साँसी–साँसी बता दैय। वा चुपचाप उठी उर सूदी खेप उठा कै घर कुदाऊँ मन धरयात सी चलदई। खैप खौं घिनौची पै धरकै गुड़ मुड़यानी सी खटिया पै डर रई।

तनक देर में सास बायरैं सै भीतर आई। ससुर पूजा पाठ करकै मन्दिर कुदाऊँ कड़ गये उर लरका गइयाँ बछियाँ लैकै हार की तरपै कड़ गये। उर बऊधन क्याँय कड़ गई। पानी भरबे में भौत देर लगा दई ऊनें। अरे खेपतौ घिनौची पै धर बऊधन खटिया पै डरी हैं। देखतनई उयै पसीना आ गओं। अरे आज बरस दिना के दिन बऊ खौं तापतौ नई चढ़ आई। वे जल्दी खटिया नौ ठाँढ़ी होकैं कन लगी कै अरी ओ प्यारी दुलइया तुम पानी भरकै परकाय आ रई। का कछू तुमाव पिरात दुखत है का। सासू खौं देखतनई वा उठकै ठाँढ़ी हो गई। उर कन लगी कै बाई हमाओ कछू नई पिरात। अकेलै जब हमें कुँआ बेर पै चार जनीं ठाँढ़ी मिलतीं सो कतीं कै जौ सावन कौ मइना है। सबके भइया तौ अपनी बैनन खौं लुआबे आ रये अकेलै प्यारी दुलइया कौ कोऊ लिबौआ नई आव। कायेकैं मायकै में भइया भौजी नइया। बाई जे बातें सुन–सुन कै हमाओ तौ करेजौ सौं फटन लगत। तुम साँसी–साँसी तौ बताव कै हमाओ मायकौ कितें हैं। हमाये भइया भौजी कितै है। बऊधन की बातें सुनकै सास की छाती में गतकौ सौं लगो। उर वा गुर भरो हसिया की नाई होकै रै गई। कै जो ना उगलत बनें उर ना गुटकत बनें। चिन्टा कैसी काटी ठाँढ़ी होकै रै गई। का बतायें वा बऊधन खौं। ऊके मायके कौ तो दिअई सौ बुज गओ तौ। वा अपनें मताई बाप कै अकेलिअई संतान हती। ब्याव के कछूअई दिना में बूढ़े बाप मताई सुर्ग सिधार गये ते। ब्याव के बाद ऊने मायकै कौ मोई नई देखो तो। अब बताव जीकै भइअई नइया वौ बैन खौं लुआबे कासै आबै। अपनी सास खौं मौगो चालो देखकै ऊनें फिरकऊँ पूछी कै काय बाई तुम मौगी चालौ काय हों। बोलती कायं नइया। सासू बोली कै बेटा तुमाये मताई–बाप उर भइया–भौजी सब कोऊ हैं। अकेलै तुमाओ मायकौ इतै से हजारन कोस दूर है। उतै तक आये–जाये में हजारन रूपइया खर्च होत। ऐई सैं खर्चा के डर सै बे तुमे इतै नौ लुआबे नई आ पाऊत। कोनऊ दिना पइसा टका कौ इंतजाम करकै हम भइया के संगै तुमें मायकै पौचा दैयं। सो तुम सबखौं देख आइयौ। कछू दिना में तुमाई नंद आवे बारी है सोऊकै संगै कछू दिना हिल मिलकै रै लिइयौ। सास की बातें सुनकै उयैं तनक धीरज सौं बदो। उर उठकै सपर खोर कै घर के काम काज में लग गई। दूसरे दिना नागपंचमी हती। व दिन बूड़े फिर खेप उठाकै पानी भरबे कुँआ पै पौंच गई। औरतें तौ उतै जुरी ठाँढ़ी अई हतीं। उन्नें फिर पूछी कै काय प्यारी हमें तौ भियाने अपने मायके जाने तुम कबैं जा रई मायकै। सुनतनई वा टेर दैकै रोवन लगीं। चारई तरप सैं औरतें जुरकै आ गई। उर पूछन लगी कै ऐसी का है बैन जो तुम बिसूर–बिसूर कै रो रई हो। वा तनक शांत होकै कन लगी कै बैन, हमाओ मायको तो लंका के

छोड़े है। हमें उतै सैं लुआवे अब को आ पाऊत। अब तौ हम एकई देरी कै होकै रै गये। ईसैं भइया की खबर करकैं हिलहिली नई समा रई। सबजनी उयैं धीरज धरावन लगीं। उतै कुँआ की पाटी के लिंगा की वामी के बायरैं एक साँप बैठो-बैठो जो सब सुन-गुन रओ तो। बिटिया खौं बिसूरत देख कैं उयै दिया आ गई, उर ऊनें सोसी कै हम भियानें अपने घरै लोआ जैय। जा सोसकै वौ सूदौ नागनी नौ जाकै कन लगो कै देख री हमने कुँआ पै एक बिना भइया की बैन खौं बिसूरत देखौ सो मोय ऊपै दिया सी आ गई। कजन तुम कओ तौ उयै काल हम अपने घरै लोआ ल्आय। तुमाये लरका तौ हजार ठौवा है। उर बिटिया एकऊ नइया सो तुम उयै कछू दिना बिटिया जानकै राखै रइयौ। जीसै कछू दिना ऊकौ मन बहल जैय। पैला तौ नागनी मौगी चाली बनी रई फिर बोली कै कजन तुमाई इच्छा होय तौ लोआ ल्आव। नाग तौ जा चाऊतई हतो वौ बड़े भुन्सरो मान्स कौ रूप धरकै अच्छो स्वापा बाँध के ऊ बिटिया की पौर के दौरै जा बैठौ। ससुर के आऊतनई रामा श्यामा भई उर परिचय भओ। वो बोलो कै हम तुमाई बऊ धन प्यारी दुलइया के बड़े भइया आँय। बिलात दिना सैं इतै आ नई पाये। अबकी दारै हम उयै लुआबे खौं आये। सो अपुन उयै भुन्सारें पौचा दिइयौ। राखी के दूसरे दिना हम खुदई उयै पौंचा दैय। भइया के आबे की खबर सुनकै अब प्यारी दुलइया हाली फूली हो गई। भइया ने सबके चरन छिये सास ने सब स्वागत सत्कार करो। प्यारी दुलइया पुरा मुहल्ला भरमें कै आई कैंहमाये बड़े भइया हमे लुआवे आये हैं। उर काल हमें मायके जानें है। जैसै-तैसे ऊकी रात कट पाई। बड़े भुन्सरा उठकें अच्छी तरा सैं सपर खोर कैं उर मावर मांऊदी की करकै भइया खौं कलेवा कराकै प्यारी दुलइया बिनई कछू खाँय पियै भइया के संगै मायके खौं चल दई । बामी के लिंगा पौंचकै नागराज साँप बनकैं ऊसै बोलो कै देखौ जाँ हुन हम जाँय सो हमाये पाछैं तुमई घिसटत चली जइयौ। पैंलातौ वा साँप देखकै डरा गई। फिर ऊने सोसी कै अब जैसी हुइयैं सो सब देखी जैय बिना मायकें से मरबऊ साजौ हैं। अब हम काल के मौंमें जा रये। मरने हुइयें सो मरई जैय। अब और ईके आगें का हो सकत। कन लगत कै जब उखरी में मूँढ़ दई सों अब मूसरन कौ का डर। ऐसी सोस कै कर्रो जिऊ करकै ऊकै पाछै-पाछै सरकत चली गई। उर सूदी नागराज के घरै पौंचगई। पौंचत नई नागनी उयै बड़ी आव भगत सें आदर सत्कार करो उर खूब अच्छौ ख्वाव पेआव। अच्छे-अच्छे मेवो बिंजन तैयार कर कर कैं ख्आये। बढ़िया लहर पटोरे पैराये। हीरा मोतियन कै हार गरे में पैराये। प्यारी दुलइया उतै भौतई खुश हती। उयै उतै मायको कौ साँसो सुकमिल रओ तो। नाग और नागिन ने पूरी घर गिरस्ती ओइयें सौप दई ती। एक दिना नाग और नागिन बायरै जाती बैरा बोले के देखो हम तौ चरबे खौं बायरै जा रये लौटवे में दो चार दिना लग सकत। तुम आराम से खइयौ पिययौ, अकेले आँगन में जौ जा चुलिया ढकी धरी सो उयै तुम भूल कै हात नई लगाइयौ। उर फिर जौ जानो सो करती धरती रइयौ। इत्ती कैं-कैं वे तो दोई जनै बायरै चले गये। उर प्यारी दुलइया हँसी-खुशी सें खा पी कै घूमन फिरन लगी। अकेलो उनके मन में जा एक बात टकरान लगी कै ऐसोई चुलिया में का धरो हुइयें जियें छीवै की मांई मामा मनाई कर गये। दो दिना तौ वे ऊके लिंगा नई गयीं, फिर तीसरे दिना उने राई नई आई, उर

ऊनें करों जिऊ करकै वा चुलिया उगारई दई। चुलिया उगरतनई ऊमें सें हजारन सपेलुवा किलबिलात दिखानें। डरन के मारे चुलिया को ढक्कन ऊकै हात से छूट गओ जीसै एक सपेलुआ की पूँच कट गई। उर वौ बाँडा हो गओ। उदना सै वे ऊ चुलिया कुदाऊँ हैरईनई। उर तीसरे चौथे दिना नाग नागिन लौटे तो उनसें सूदी सांसी बात बता दई। पैला तो सुनतनई नागिनी खौं कछू गुस्सा सौ भर आओ, फिर नागराज के समजाय सें शांत हो गई। मँईनाक राखवे के बाद उन्ने खूब पठोंनी हीरा जबारात उर सोनो उर नौलखा हार पैराकैं प्यारी दुलइया की बिदा कर दई। नागराज ओई गैल हुन लौवा कै प्रेम सें घरै पौंचा आये। पठोंनी देख कै सास-ससुर उर घरवारै खौं भौतई खुशी भई। गाँव भर में खबर फैल गई कै प्यारी दुलइया कै भइया-भौजी भौत पैसा वारे है। जिन्ने पठोंनी में बैंन खौं नौलखा हार पैराव है। अब का कने गाँव भर की लुगाइयन में ऊको खूब आदर सत्कार होन लगो। उर सबकोऊ मान गओ कै प्यारी दुलइया भौत बड़े आदमी की बिटिया है। जीकौ भइया अपनी बैन को नौलखा हार पैरा सकत। ऊकी का कनें ।

उतैं जौन सपेलुआ चुलिया गिरै सै बाँड़ा हो गओ तो उयै सबने अपनी बिरादरी सै अलग कर दओ। सबरै साँप कन लगे कै हम बाँड़ा खौं अपने संगें नई खिला सकत। बाँडा अपनी दशा देख-देख कै भौतई खुन्सया गओ तो। वों अपनी मताई नौ जाकै पूँछन लगो कै सांसी सांसी तौ बताव कै हम बांड़ा कैसें भये। नागिनी बोली के बैटा तुम पेटई सें बांड़ा भये ते। अकेले उयें विश्वास नई भओ। उर फिर जिद्द करन लगो तो। फिर नागिनी ने सांसी-सांसी कै दई। सुनतनई बांड़ा साँप आग बबूला होकै कन लगो कै अब हम दीदी खौं काटे बिगर नई रै सकत। मताई ने भौतई समजाव अकेलै वौ मानौ नई। वौ तौ सरकत-सरकत सूदौ प्यारी दुलइया के ना पौंचौ उर सूदौ घिनौची पै जा बैठो। ऊनें सोसी कै बैन जईसैं पानी भरवे आय। सोऊ उये हम डंस लैय। इतेकई में गाँव के जिंमीदार के लरका कौ ब्याव आ गओ। गाँव भर में चर्चा तो हतिअई कै प्यारी दुलइया खौं मायकै सैं नौलखा हार मिलो हे। जिंमीदार ऊ हार खौं अपनी बऊ खौं चड़ान चाऊत ते। उन्ने प्यारी दुलइया कै ससुर नौ खबर पौंचाई उन्ने अपनी बऊधन सैं कै दई। सुनतनई बऊधन कन लगी कै-

जुग जुग जियै मोरौ मामा मांई, जियै मोरे भइया हजार ।
साँसी कये अपने बाँड़ा वीर कीसौ, टूटौ डरौ मोरो नौलखा हार ।

इत्ती सुन कै जिंमीदार साव तो अपने घरै लौट गये, उर जे सब बातें बाँड़ा सांप घिनौची पै बैठौ-बैठौ सुन रओ तो। सुनतनई वौ समज गओ। कै हमाई बैन हमें भौत चाऊत। ऐसी अपनी प्यारी बैन खौं काट कै हम का करें। वौ चुपचाप बैन के पांव छूकें मताई नौ पौंच गओ। उयै देखतनई नागिनी बोली कै काय भइया तुम अपनी बैन खौं डंस कै आ गये का। बाँड़ा पूरी किसा सुना कै कन लगो कै बैन हमें सबसे ज्यादा चाऊत। ऐसी बैन खौं काट कै हम का करें। उदनई सें

वौ अपनी बैन की हीर पीर को पूरौ-पूरौ ख्याल करन लगो। देखो तो सांपन तक खौं अपने पराये कौ ज्ञान होत। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

सावन का सुहाना और सुखदायक महीना आ गया। सभी के भाई अपनी-अपनी बहिनों को लिवाने के लिए चले गये। कुछ बहिनें सावन का माह लगते ही अपने-अपने मायके चली गईं और कुछ अपने भाई-भतीजों की प्रतीक्षा में बैठी हुई थीं। संध्या के समय कुँए पर पनिहारिनों की भीड़ एकत्रित हो गई। औरतों में आपस में चर्चा करने की आदत तो होती ही है। उस समय कुँए पर चर्चा का प्रमुख विषय अपने मायके के भाई-भतीजों और भाभियों की प्रशंसा करना ही था। सब अपने-अपने मायकों की प्रशंसा के पुल बाँध रही थीं। किन्तु एक महिला बड़े ही उदास मन से अलग अपने बर्तन रखकर बैठी थी। महिलाओं की चर्चा में तो उसकी रुचि नहीं थी, वह मन ही मन बैठी हुई कुछ सोच रही थी। उसे अलग बैठा हुआ देखकर औरतों ने उससे पूछा कि बहिन तुम दूर क्यों बैठी हो? क्या तुम्हारे मायके में भइया-भतीजे नहीं हैं? इतना सुनते ही उसकी आँखें भर आईं और उसका गला भर गया। फिर वह अपने रूँधे हुए गले से बोली कि बहिन जी मुझे तो कोई पता ही नहीं है। जब से मेरी शादी हुई है, तब से मैं तो एक ही घर की होकर रह गई हूँ। यदि मेरे मायके में भइया-भाभी होते, तो कभी न कभी तो मुझे लिवाने के लिए आते ही। औरतों में एक दूसरे के प्रति प्रेम और सहानुभूति तो होती ही है। औरतें कहने लगीं कि बहिन कहीं न कहीं तुम्हारे माता-पिता तो होंगे ही। तुम इसके बारे में अपनी सास से जानकारी लेना, वे तुम्हें सारी बातें बता देंगी।

वह सीधी पानी भरकर उदास मन से अपने घर की ओर चल दी। पानी के बर्तन रखकर वह बड़े ही दुखी मन से खटिया पर जा लेटी। थोड़ी ही देर में उसकी सास बाहर से घर के अंदर आयीं। ससुर पूजा-पाठ करके मंदिर की ओर निकल गये। उसका पति गाय बैल लेकर खेत की ओर निकल गया। सास ने सोचा कि बहू पानी भरकर अभी तक क्यों नही आई? कुँए पर गये हुए उसे बहुत समय हो गया है। बाहर आँगन में देखा तो बर्तन तो घिनौंची में भरे रखे थे। फिर प्यारी दुलइया किधर निकल गई है? अंदर जाकर देखा तो बहू मुरझानी सी खटिया पर पड़ी थी। देखते ही सास घबड़ा गई। अरे! आज त्योहार के दिन बहू को बुखार तो नहीं चढ़ आया। सास ने अपनी बहू की खटिया के समीप खड़े होकर कहा कि- अरे प्यारी दुलइया! तुम्हारी तबियत तो खराब नहीं है। तुम लेट क्यों गई हो? सही-सही बताओ क्या कारण है? अपनी सास को देखकर प्यारी दुलइया खड़ी होकर कहने लगी कि मुझे कोई दु:ख तकलीफ नहीं है। कष्ट तो मुझे इस बात का है कि पुरा-पड़ोस की औरतें मुझे ताने से मारने लगती हैं। औरतें कहती हैं कि इस सावन के महीने में सबके भइया आ-आ कर अपनी बहिनों को राखी बँधवाने के लिए घर ले जा रहे हैं। तुम्हारे

भइया–भाभी नहीं है। अम्मा जी ये बात मुझे बहुत चुभ गई है। अब आप सच–सच बताइये कि मेरा मायका कहाँ है? मैं भी अपने भइया–भाभी को देखना चाहती हूँ। औरतों की बातें सुनकर मेरी छाती फटने लगती है। अपनी पुत्रवधू की बातें सुन–सुनकर सास के मन को भारी चोट लगी। अब वह अपनी बहू को क्या बताये? बहू के मायके के परिवार में कोई नहीं बचा था। उसके मायके का तो नाम निशान ही मिट चुका था। वह अपने माता–पिता की केवल एक ही संतान थी। विवाह के कुछ ही दिन के बाद उसके माता–पिता स्वर्ग सिधार गये थे। विवाह के बाद उसे मायके जाने का अवसर ही नहीं मिल पाया था। अब बताइये, जिसका भाई नहीं है, अब वह उसको क्यों लिवाने आयेगा। अब उसकी सास उसे क्या बताये। सास को शांत देखकर उसने पूछा कि बाई जी आप शांत क्यों हैं? बोलती क्यों नहीं हो?

सास ने कहा कि बेटा तुम्हारे माता–पिता, भइया–भाभी सभी कोई हैं, किन्तु तुम्हारा मायका सैकड़ों मील दूर है। वहाँ तक आने जाने में हजारों रुपये व्यय होने के डर से तुम्हें कोई लिवाने के लिए नहीं आ पा रहा है। किसी दिन किराये खर्चे की व्यवस्था करके मैं तुम्हें मायके भेज दूँगी। वहाँ जाकर तुम सबको देख आना, कुछ दिन बाद तुम्हारी ननदबाई आने वाली हैं। तुम उनके साथ कुछ दिन तक हिल–मिलकर रह लेना। सास की बातें सुनकर प्यारी दुलइया को कुछ धैर्य प्राप्त हुआ। वह शांत होकर स्नान करके घर–गृहस्थी के काम–काज में व्यस्त हो गई। दूसरे दिन नागपंचमी का पावन पर्व था। वह फिर शाम के समय खेप उठाकर पानी भरने के लिए कुँए पर पहुँच गई। औरतें तो वहाँ खड़ी ही थीं। उन्होंने फिर पूछा कि क्यों प्यारी बाई! हम तो कल अपने मायके जा रही हैं और तुम कब मायके जा रही हो? सुनते ही वह टेर देकर रोने लगी। उसका रोना सुनकर औरतें उसे घेरकर खड़ी हो गईं और पूछने लगीं कि बहिन तुम्हें ऐसा क्या कष्ट है? जिसके कारण तुम फूट–फूटकर रो रही हो। वह कुछ शांत होकर बोली कि बहिन हमारा मायका तो लंका के छोर पर है। हमें वहाँ से लिवाने के लिए अब कौन आ सकता है? अब तो हम एक ही घर के होकर रह गये है। सब औरतें उसे सांत्वना देने लगीं। उधर कुँए की पाट के पास एक बामी में बैठा हुआ काला साँप ये सब सुन रहा था। लड़की को व्याकुल होता हुआ देखकर उसका हृदय द्रवित हो गया। उसके मन में दया उत्पन्न हो गई। उसने सोचा कि रक्षाबंधन के अवसर पर इसे अपने घर ले जाना चाहिए। यह सोचकर वह सीधा नागिन के पास पहुँचा और उसने कहा कि मैं कुँए की पाट पर एक बिना भाई की बहिन को व्याकुल होता हुआ देख आया हूँ। उसके दुःख दर्द को देखकर मेरे मन में दया उत्पन्न हो गई है। यदि तुम कहो तो कल मैं उसे अपने घर ले आता हूँ। तुम्हारे लड़के तो एक हजार हैं, पर लड़की एक भी नहीं है। उसे कुछ दिन तक अपनी लड़की मानकर रखे रहना, जिससे कुछ दिन के लिए उसका मन– बहलाव हो जायेगा। नागिन ने कहा कि यदि आपकी इच्छा है तो ले आइयेगा। नाग तो यह चाहता ही था। वह बड़े सवेरे पुरुष का रूप धारण करके साफा बाँधकर प्यारी बाई की पौर के द्वार पर जा पहुँचा।

प्यारी बाई के ससुर के आने पर उसने प्रणाम किया। एक दूसरे का परिचय हुआ। उसने कहा कि मैं आपकी पुत्रवधू प्यारी बाई का बड़ा भाई हूँ। बहुत दिन से इधर आ नहीं पाया था। अबकी बार मैं उसे लिवाने के लिए आया हूँ। आप बड़े प्रातःकाल विदा कर दीजियेगा। रक्षाबंधन के दूसरे दिन मैं इसे स्वयं ही भेज जाऊँगा। भइया के आने का समाचार सुनकर प्यारी बाई को बहुत प्रसन्नता हुई। भइया ने सबके चरण स्पर्श किए। सास ने उनका खूब स्वागत-सत्कार किया। प्यारी बाई मुहल्ले की सारी औरतों से कह आई कि हमारे बड़े भइया लिवाने के लिए आए हैं। और कल हमको अपने मायके जाना है। जैसे-तैसे रात कट पाई। प्यारी बाई ने बड़े सवेरे उठकर स्नान किया। माहुर मेहँदी लगाकर तैयार हो गई। भइया को नाश्ता कराया और बिना ही कुछ खाये-पिये अपने भाई के साथ मायके को चल दी। वे तो नागराज थे। प्यारी बाई के मन में भी कुछ संदेह था। बामी के पास पहुँचते ही उसका भाई सर्प बन गया। वह उससे बोला कि तुम हमारे पीछे-पीछे घसीटती हुई चली आना। पहले तो वह सर्प को देखकर डर गई। फिर उसने सोचा कि जैसा होगा, सब देखा जायेगा। यदि मरना होगा तो मर ही जायेंगे। मायके बिना तो मरना ही अच्छा है। अब हम मृत्यु के मुँह में जा रहे हैं। अब उखरी में सिर दे ही दिया तो फिर मूसलों से क्या डरना है? यह सोचकर वह सर्प के घर में पहुँच गई। पहुँचते ही नागिन ने उसका खूब आदर सत्कार किया। बढ़िया मेवा और व्यंजनों के भोजन कराये। अच्छे बढ़िया रेशमी वस्त्र पहिनाये। उसके गले में हीरे-मोतियों के हार पहिनाये। वहाँ जाकर प्यारी बाई को बहुत आनंद प्राप्त हुआ। उधर उसे मायके से भी ज्यादा सुख प्राप्त हो रहा था। नाग और नागिन ने अपनी पूरी घर-गृहस्थी उसी को सौंप दी थी।

एक दिन नाग और नागिन घर से बाहर जाते समय उससे बोले कि हम दो-चार दिन के लिए बाहर विचरण करने जा रहे हैं। तुम आराम से यहाँ रहकर खाना-पीना। लेकिन जो आँगन में ये चुलिया ढँकी रखी है, उसे भूलकर भी हाथ न लगाना। इसके अलावा चाहे जो करती रहना। तुम्हें इस घर में सब तरह की छूट है। इतना कहकर वे दोनों बाहर निकल गये और प्यारी दुलइया हँसी-खुशी से खा-पीकर घूमने फिरने लगी। लेकिन उसके मन में ये बात बार-बार टकराने लगी कि इस चुलिया में ऐसा क्या रखा है। जिसे छूने से मनाकर गये हैं। दो दिन तक तो वह उस चुलिया के पास नहीं गई, किन्तु तीसरे दिन उससे नहीं रहा गया और उसने कठोर मन करके उसको उघाड़ ही दिया। चुलिया के उघारते ही उसे उसमें हजारों सपेलुवा दिखाई दिए। उन्हें देखकर डर के मारे चुलिया का ढक्कन उसके हाथ से छूट गया, जिसके कारण एक सपेलुआ की पूँछ कट गई। और वह बच्चा बिना पूँछ का हो गया। उस दिन से उसने उस चुलिया की ओर देखा भी नहीं। तीसरे दिन नाग और नागिन लौटकर आ गये। उसने उन्हें सच्ची-सच्ची बात बता दी। सुनते ही नागिन पहले तो नाराज हुई, फिर नागराज के समझाने पर शांत हो गई। उसे महीने भर प्रेमपूर्वक रखा और खूब स्वागत-सत्कार किया, फिर हीरे-जवाहरात देकर और नौलखा हार पहिनाकर उन्होंने सम्मान पूर्वक प्यारी बाई को विदा कर दिया। नागराज उसे उसी मार्ग से ले जाकर उसे घर पहुँचा आये।

अनेक प्रकार के उपहार और हीरे-जवाहरात देखकर सास-ससुर और उसके पति को बहुत ही प्रसन्नता हुई। इसके भाई तो धनी आदमी हैं। उन्होंने नौलखा हार पहिनाकर अपनी बहिन की विदा की है। अब क्या था? गाँव भर की औरतें प्यारी दुलइया का खूब आदर सत्कार करने लगीं। सारा गाँव मान गया कि प्यारी दुलइया एक बहुत बड़ आदमी की लड़की है, जिसका भाई अपनी बहिन को नौलखा हार पहिना सकता है। उसके बड़प्पन का कहना ही क्या है ?

उधर जो सपेलुआ चुलिया गिरने से बांडा हो गया था, उसे सर्पों ने अपनी जाति से अलग कर दिया था। सभी सर्प उससे कहने लगे कि हम लोग इस बांडा को अपने साथ नहीं खिलाना चाहते। वह अपनी दुर्दशा को देखकर बहुत दुखी था। उसने अपनी माँ के पास जाकर पूछा कि माता जी आज सच-सच बताइये कि हमारी ये पूँछ कैसे कट गई थी? नागिन ने कहा कि बेटा तुम ऐसे ही पेट से उत्पन्न हुए थे, किन्तु उसे अपनी माँ की बात पर विश्वास नहीं हुआ और वह भेद जानने के लिए जिद करने लगा। अंत में नागिनी ने सच-सच बता दिया। सुनते ही वह प्यारी दुलइया पर आग बबूला हो गया और बोला कि अब हम दीदी से बदला लेकर ही छोड़ेंगे। उसकी माँ ने उसे बहुत समझाया, किन्तु वह माना नहीं। वह घसीटता हुआ सीधा प्यारी दुलइया के घर पहुँच गया और सीधा जाकर घिनौंची पर जा बैठा। उसने सोचा कि जब वह पानी भरने के लिए आयेगी, तभी मैं उसे डँस लूँगा ।

इसी बीच गाँव के जमींदार के लड़के की शादी आ गई। गाँव भर के लोगों को पता था कि प्यारी दुलइया को विदाई में मायके से नौलखा हार मिला है। जमींदार साहब अपनी पुत्र-वधू को नौलखा हार पहिनाना चाहते थे। उन्होंने प्यारी दुलइया के पास संदेश भेजा कि तुम कुछ दिन के लिए मुझे अपना नौलखा हार दे दो। लड़के की शादी के बाद मैं उसे तुम्हें वापिस कर दूँगा। संदेश पाकर उसके ससुर ने अपनी वधू से कहा। सुनते ही प्यारी दुलइया ने कहा -

जुग-जुग जिये मेरे भइया-भाभी, जियें मेरे भतीजवा हजार।
साँची कहो अपने बाँडा वीर कीसों, टूटो डरो मोरौ नौलखा हार।।

ये बात सुनकर जमींदार साहब अपने घर लौट गये और ये सब बातें घिनौंची पर बैठा हुआ सर्प सुनता रहा। सुनते ही वह समझ गया कि हमारी दीदी हमें बहुत अधिक चाहती है। ऐसी प्यारी दीदी को डँसकर हम क्या करेंगे? ऐसा सोचकर उसने जाकर अपनी दीदी के चरण स्पर्श किए और सीधा लौटकर अपनी माँ के पास पहुँच गया। उसने जाकर अपनी माँ को पूरी कहानी सुनाकर कहा कि दीदी मुझे सबसे अधिक चाहती हैं। ऐसी प्यारी दीदी को डँसकर हम क्या करते? और उसी दिन से वह अपनी दीदी की कुशलता का पूरा-पूरा ध्यान रखने लगा।

सर्पों को भी अपने पराये का ज्ञान होता है। उनमें करूणा, प्रेम और सहानुभूति जैसे सद्गुण पाये जाते हैं।

कार्तिकी व्रत कथा

एक गाँव में एक पंडित पंडिताइन रत्तें। पंडित जी तौ संमय नियम उर भजन-पूजन कौ पूरौ ख्याल राखत ते। चार बजे भुन्सराँ उठकै नहा धौ के फुरसत हो जात ते। दो घण्टा नौ मन लगा कै पूजा पाठ करत ते नियम के पक्के हते। पंडित जी की असपेर भर में धाक हती। काऊकौ कौनऊ काम उनके पूछै बिना पूरो नई होत तो। उनके दौरें जजमानन की भीर जुरी रत ती। गिरा बादरा, ब्याव काज, सुदवावे के काजै मुलक जनै बैठई रत्ते। उनके दौरे गाँव में पंडित जी जौन खौर हुन कड़त ते दण्डौतन के ढेर लग जात ते। उनके सामे दान दच्छना की सौं कोनऊ कमी हती नई। उतै-चैत कातक में उनके जजमान खुदई खरैना लैं-लैं कै पौच जात ते। अमावस पूनें उर ग्यारस खौं गांव भर के लोग सीधे लै लै कै अबढ़ाये पौंच जात तै। काम सो उने इत्तौ जादा हतो कै दिन रात फुरसतई नई रत्ती। घर में नाज पानी सोनो-चाँदी उर पैसा टका की तौ कोनऊ कमी हती नई। एक पंडित उर दस गाँव में जजमानी। बखरी की का कनें कितेक लंबी चौरी बखरी हती उनकी। गैंया-भैसें मनमुक्तो दूद देत ती। खा पी कै पंडित उर पंडितानी खूबई मुटया गयें। पंडितानी पै तो निगतनई नई बनत तो डील डौल उर शरीर तो बिटा सो हो गओ तो। पंडितजी जित्ते उजरे उर साप सुथरे हते। पंडितानी उतनई अलाल उर घिंनऊ हती। कओ परी-परी भर दुपरै उठवै मौ हात धौके तुरतई खावे बैठ जावे कओ सपरवे की सुरतई नई रये। खात पियत रई में उर दो-दो दिना नौ सपरवे की सुरतई नई रैय। उनकी उसार उर टैल टाल के लाने तो नौकर उर चाकर लगे ते। अब बताओ उने पूजा की काँ फुरसत रत्ती। खाने उर अजगर सौं डरो रनें। पंडिज्जी शरम के मारैं उनें क्याऊँ अपने संगै लुआइनई जात ते। पैला तौ उनकै कोनऊ बालई बच्चा नई भओ तो। सात आठ सालई ऐसई कड़ गई। फिर भगवान की कृपा सै उनके एक बिटिया हो परी। कन लगत कै पूत के लक्ष्छन पालना में दिखान लगत, सो जा कानातऊ बिटिया पै सोरा आना सांसी हो गई। ऊकै होतनई घर में उजयारौ सौ फैल गओ। पंडितानी चेतन्न सी दिखान लगी । बिटिया खौ उन्ने अच्छे लाड़-प्यार सैं पालन-पोषण करो। पंडित जी को पूजा-पाठ में अब जादा मन लगन लगो। हरा-हरा वा बिटिया वारा वर्ष की हो गई। अपने बाप की पूजा पाठ में उनको खूबई मन लगत तो घन्टन नौ बैठी-बैठी पूजा पाठ देखत रत्ती। उर फिर वा पंडित जी के संगै चार बजे उठकै सपर खोर कै तैयार हो जात ती। उन पंडित जी की पूजा सेवा में पूरौ सहयोग करन लगी। इतेकई में कातक को मइना आ गओ। चारई तरपै कातक कै गीतन की आवाज गूँजन लगी। ऊ कड़ाके की ठंड में गाँव भर की बऊयै बिटिया अपने अपने घट उर पूजा कौ सामान लैकें कातक अनावै कड़ परी पंडितानी तो कभऊँ जाई नई सकत तीं। अकेले वा बिटिया रामकली ओई इंदयारै में लुगाइयँन कै संगै घट उर ढोलची लैकै भगवान किसन के रंग के गीत गाऊत घर से वायरै कड़ गई।

सखी री, मैं तौ भईन बिरज की मोर श्याम के रंग में वा ऐसी रंगी कै मईना भर कातक कौ व्रत करो। खूब बाल किसन की पूजा करी। हल्की सी तौ वा हतिअई। खूबई नाची गाई। पंडिज्जी

खौं देख-देख कै भौतई अच्छौ लग रओ तो अरे मताई की कमी बिटिया ने तौ पूरी कर दई। रामकली खौं ऐसौ लवकौ लगो कै हर-हर सालैं कातक अनाउन लगी। भगवान की भक्ति में पूरी तरा सै रंग गई ती वा। गोपाल जू की पूजा करे बिना वा कभऊँ अन्न पानी नई लेततीं। गोपाल जू की कृपा सैं ऊके हात में सिद्धि हो गई। वा स्कूल जाती बेरा अपनी जेब में जबा के दानें भर ले जात ती। उर आऊती जाती बेरा गैल में जबा के दानें डारत जात ती। गोपाल जू की कृपा से वे दाने सोने के होत जात ते। जब मताई खौं ई बात कौ पतो चलो सो वा वे दाने बीन-बीन कै एक डबला में डारत जात ती। ऐसई-ऐसई केंऊ दिना कड़ गये। उर उन सोने के जबन सें पूरो डबला भर गओ। एक दिना वा सूपा लेंके उन जबन खौं फटकन बैठ गई। सोने के जबा फटकतन में ऊकी मन्सा भई कै कजन सोने के सूपा में हुन हम इन सोने के जबन खौं फटकते तो कित्तो अच्छो लगतो। गोपाल जू की ऐसी कृपा भयी कै ऊके कतनई सूपा सोने कौ हो गओ। उर वा हँस-हँस के जबा फटकन लगी। जो चमत्कार देख के पंडिज्जी की खुशी कौ ठिकानौ नई रओ। इतेकई में घुरवा पै चढ़े क्याऊँ सें ऊ राज के राजकुमार आ धमके। राज कुमार ने पंडिज्जी की रामकली खौं सोने के सूपा से सोने के जबन खौं फटकत देखो। रामकली को रूप रंग तो अच्छौ हतोई। राजकुमार उयै देखतनई मोहित हो गये। वे घुरवा दौराउत सूदे अपनी मताई के लिंगा बैठ कें बोले के हम एक गाँव में सोने के सूपा से सोने के जबन खौं फटकत एक बिटिया खौं देख आये। अब हम ओई बिटिया संगै व्याव कराएँ तबई हम रोटी खैंय रानी वोली कै बैटा जा कोनऊँ बड़ी बात नइया। तुम आराम सैं खाओ पियो हम मराज सैं कैके तुमाव कालई ब्याव करा दैय। तुम कोनऊँ बात की फिकर नई करो। रानी ने तुरतई जा बात राजा खौं सुना दई। राजा ने अपने कर्ता काम दारन खौं हुकुम दओ। उर वै खोजत-खोजत पंडिज्जी कै घरै पौंच गये। उर पंडिज्जी सै कई कै राजा ने तुमें जरूरी काम से बुआव है। पंडिज्जी जान तो सब गये। उर मुस्क्यात सिपाईन के संगै सूदे राजमिहिल में पौंचे। देखो पंडिज्जी हमाये कुंवर साब तुमाई मोड़ी के संगै अपनौ ब्याव कराउन चाउत, बताव तुमाई का इच्छा है। पंडिज्जी बोले मराज हम आपसें का कै सकत। अकेले काँ एक गरीब बामुन उर कितै तुम इत्ते बड़े राजा हमाव तुमाव का जोड़ मिल सकत। राजा बोले के जब हमाये राजकुमार को मन है तो समझौ कै जोड़ई सो तो मिलो है। ई में जादा सोसवे समझवे की जरूरत नइया। तुमतौ खूबई धूम-धाम से ब्याव करो हम तुमाये इतै तैयारी करवे खौं नौकर चाकर उर सामान पौंचाये देत। तुम सें और हमें कछू चानें नइया तुम तौ अपनी बिटिया खौं तैयार रखियौ। पंडिज्जी अब कै का सकत ते। मौगे चाले अपने घरें जाकै पंडितानी सै बोले कै देखो तो कै गोपाल जू की कृपा से तो रामकली को भाग खुलगओ। भियांने राजकुमार के संगै अपनी रामकली की भांवरै पर जानें। सुनतनई पंडितानी सन्न होकै सोसन लगी कै जौ है बिटिया कै भाग को खेल। पंडितजी बोले कै भाग को खेल है। गोपाल जू की कृपा कौ फल है। मौड़ी ने बड़े प्रेम से कातक अनाव उर गोपाल जू की सेवा पूजा करी सो उनकी कृपा सै रानी बनकै जा रई । फिर का हतो

दूसरे दिना बाजे–गाजे सै राजा की बरात आयी। उर रामकली कौ साकै को ब्याव हो गओ। टटन की अटन पैं पौच गई। बिन्नू जौ है सांसे मन सें कातक अनावे कौ उर गोपाल जू की पूजा करवे कौ प्रभाव। जो बैने बिटिया सांसे मन सैं व्रत करती हैं। भगवान उनकी मनसा जरूर पूरी करत। भगवान कौ व्रत कभऊँ निरफल नई होत। बाढ़ई ने बनाई टिकटी उर हमाई किसा निपटी।

भावार्थ

एक गाँव में एक पंडित और पंडितानी निवास करते थे। पंडित जी को भगवान की भक्ति और भजन–भक्ति में विशेष रुचि थी। उनके आचार–विचार, संयम–नियम बड़े ही उत्तम और अनुकरणीय थे। चार बजे प्रात:काल उठकर नहा–धोकर पूजा पाठ करने के लिए बैठ जाते थे। दो घंटे तक पूजा पाठ और हवन–पूजन में व्यस्त रहा करते थे। वे अपने संयम–नियम के पक्के थे। सारे गाँव और आसपास के गाँवों में उनका पूर्ण मान–सम्मान था। गाँव का कोई भी मांगलिक कार्य उनकी सलाह के बिना संपन्न नही होता था। उनके द्वार पर यजमानों की भीड़ एकत्रित रहती थी। ग्रह–नक्षत्र शोधन और अन्य शुभ कार्यों की तिथियाँ निश्चित करने के लिए गाँव के लोग उनके द्वार पर बैठे ही रहते थे। गाँव में निकलते समय लोग उनके चरणों पर गिर पड़ते थे। उन्हें मनचाही दान–दक्षिणा प्राप्त होती रहती थी। घर में धन–धान्य की कोई कमी नहीं थी। गाँव भर के लोग अनाज–आटा, दाल–चावल और द्रव्य ले–लेकर स्वयं ही उनके घर पहुँच जाते थे। त्योहारों और विशेष पर्वों पर उनके घर मनचाहा अन्न और धन एकत्रित होता रहता था। पंडिताई के काम में व्यस्त रहते थे। सोचिये कि उनके घर में अब क्या कमी हो सकती है? एक पंडित और दस गाँव में पंडिताई। उन्हें अवकाश ही कहाँ था? उनकी लंबी–चौड़ी राजाओं के समान बखरी थी। गायें, भैंसें, बैल और जमीन सब कुछ था, उनके पास। मन–चाहा खा–पीकर पंडित और पंडितानी खूब मोटे हो गए थे। पंडित जी का शरीर तो इतना स्थूल हो गया था कि उनसे चलते ही नहीं बनता था।

पंडित जी जितने साफ–स्वच्छ और चुस्त थे, उतनी ही उनकी पत्नी आलसी और गंदी थी। वह पड़ी–पड़ी दोपहर को उठती और बिना नहाये–धोये ही खाने को बैठ जाती थी। कभी–कभी तो वह दो–दो दिन तक स्नान नहीं करती थी। घर के काम–काज के लिए तीन–चार नौकर–चाकर लगे थे। उसे करना कुछ नहीं पड़ता था। केवल खाने में ही जुटी रहती थी। उसे पूजा करने का मौका ही कहाँ था? खा–पीकर अजगर सी पड़ी रहती थी। पंडित जी लाज के मारे उन्हें कहीं अपने साथ नहीं ले जाते थे। पहले तो सात–आठ साल तक उनके कोई संतान ही पैदा नहीं हुई। लोग कहा करते हैं कि पूत के लक्षण पालने में दिखाई देते हैं। ये कहावत पंडित जी की पुत्री पर सोलह आने सत्य सिद्ध हो गई थी। पुत्री के उत्पन्न होते ही पंडित जी के घर में प्रकाश सा फैल गया था। पंडितानी की स्थिति में भी परिवर्तन दिखाई देने लगा। वे भली चंगी और चैतन्य सी दिखाई देने लगीं। उन्होंने बड़े ही लाड़–प्यार से बेटी का पालन–पोषण किया। अब पंडित जी का

मन पूजा–पाठ में अधिक लगने लगा। पुत्री बढ़ते–बढ़ते बारह वर्ष की हो गई और वह अपने पिता की पूजा–पाठ में हाथ बँटाने लगी। वह पिता जी के समीप बैठकर ध्यानपूर्वक घंटों पूजा–पाठ देखती रहती थी। इसी बीच में कार्तिक माह लग गया। महिलाएँ कार्तिक स्नान करने लगीं और चारों ओर कार्तिक के गीतों का स्वर गूँजने लगा। उस कड़ाके की ठंड में ग्रामीण महिलाएँ अपने अपने घट और चीर लेकर स्नान करने के लिए जाने लगीं। पंडितानी तो कार्तिक स्नान करने के लिए जा ही नहीं सकती थी। किन्तु पंडित जी की पुत्री रामकली भगवान कृष्ण के रंग में रंगकर घट और डोलची लेकर औरतों के साथ कार्तिक स्नान करने के लिए जाने लगी।

वह भगवान के रंग में ऐसी रंग गई कि फिर एक माह तक संयम, नियम के साथ कार्तिक स्नान करती रही। खूब बालकृष्ण की लीलाओं का गायन करती रही। वह सखियों के साथ नाचती–गाती रही। अपनी पुत्री की भक्ति–भावना को देखकर पंडित जी को बहुत ही अच्छा लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि जैसे माँ की कमी को बेटी ने पूरा कर दिया हो। रामकली को कार्तिक स्नान में इतना अधिक आनंद आया कि वह प्रतिवर्ष कार्तिक स्नान करने लगी। भगवान की भक्ति में पूरी तरह से डूब चुकी थी। वह गोपाल जी की पूजा किए बिना वह कभी अन्न जल ग्रहण नहीं करती थी गोपाल जी की कृपा से उसके हाथ में पूर्ण सिद्धि हो गई थी। बचपन में जब वह विद्यालय में पढ़ने जाती थी। तब जेब में जवा के दाने भर ले जाती थी। आते–जाते समय वह मार्ग में जवा बोती जाती थी और वे जवा सोने के होते जाते थे। जब उसकी माँ को उसकी सिद्धि का पता चला। तो वह सोने के दानों को बीन बीनकर एक बर्तन में रखती जाती थी। इसी तरह से अनेक दिन व्यतीत हो गये और उन सोने के दानों से पूरा बर्तन भर गया। एक दिन उसकी माता उन सोने की दानों को सूपा में लेकर फटकने लगी। उसे लगा कि मैं जवों को सोने के सूपे में लेकर फटकती तो कितना अच्छा होता। इस बीच सोने का सूपा आ गया, तब पंडितानी हँस–हँस कर जवा फटकने लगी। यह देख–देखकर पंडित जी को बहुत प्रसन्नता हुई ।

इसी बीच में घोड़े पर चढ़कर वहाँ के राजा के राजकुमार आ धमके और उन्होंने पंडितानी को सोने के सूपे में सोने के जवा फटकते हुए देखा। रामकली भी माँ के साथ जवा फटकने लगी थी। उसका रूप रंग बहुत ही आकर्षक और मोहक था। राजकुमार उसे देखते ही मोहित हो गया। वह घोड़ा दौड़ाता हुआ सीधा अपनी माँ के पास जाकर बोला कि माता जी मैंने एक अत्यंत सुंदर लड़की को सोने के सूपे में सोने के जवा फटकते हुए देखा है। माता जी मैं तो उसी के साथ अपना विवाह करना चाहता हूँ। मैं तब तक अन्न जल ग्रहण नहीं करूँगा, जब तक मेरा विवाह उस लड़की के साथ नहीं हो जाता। महारानी ने कहा कि– अरे! ये तो बहुत ही साधारण सी बात है। तुम मजे से खाओ पियो–तुम्हारा विवाह उसके साथ हो जायेगा। महारानी ने ये बात महाराज को सुना दी। राजा ने अपने अनुचरों को आज्ञा दी कि आप लोग उस लड़की का पता लगाइये। वे लोग

खोजते-खोजते पंडित जी के घर पहुँच गये और उन्होंने पंडित जी से कहा कि आपको राजा ने किसी जरूरी काम से बुलाया है। पंडित जी समझते सब थे और वे मुस्कराते हुए सिपाहियों के साथ राजमहल में पहुँच गये। उन्हें देखते ही राजा ने कहा कि पंडित जी आपकी लड़की के साथ हमारा राजकुमार शादी करना चाहता है। बताइये अब आपकी क्या इच्छा हैं? पंड़ित जी बोले कि महाराज मैं आपसे क्या कह सकता हूँ? आप तो इतने बड़े राजा हैं और मैं एक गरीब ब्राह्मण हूँ। हमारा और आपका कैसे जोड़ मिल सकता है? राजा ने कहा कि जब हमारे राजकुमार की इच्छा है, तो समझो कि जोड़ मिल ही गया है। इसमें ज्यादा सोचने विचारने की कोई जरूरत नहीं है। आप तो मन लगाकर खूब धूम-धाम से विवाह कीजियेगा। हम आपकी तैयारी करने के लिए सामग्री और नौकर-चाकर भेज रहे हैं। मुझे आपसे और कुछ नहीं चाहिए। आप तो अपनी लड़की को तैयार रखना। इससे ज्यादा और मैं आपसे क्या कह सकता हूँ? अब पंडित जी कह ही क्या सकते थे? चुपचाप अपने घर जाकर अपनी पंडितानी से बोले कि देखो तो गोपाल जी की कृपा से रामकली का भाग्य खुल गया है। कल राजकुमार के साथ अपनी रामकली का विवाह हो जायेगा। सुनते ही पंडितानी चकित होकर रह गई और सोचने लगी कि ये सब पुत्री के भाग्य का चमत्कार है। पंडित जी ने भी कहा कि ये सब बच्ची के भाग्य का खेल है और उसे गोपाल जी की कृपा का ही सुफल प्राप्त हुआ है। बच्ची ने बड़े प्रेम से कार्तिक स्नान किया और मन लगाकर भगवान कृष्ण की पूजा-अर्चना की। ये उसी का सुपरिणाम है कि हमारी बेटी आज रानी बनकर जा रही है। अंत में रामकली की बड़ी ही धूम-धाम से शादी हुई। एक साधारण से पंडित की पुत्री रानी बनकर राजमहल में पहुँच गई। ये सब कार्तिक स्नान और मन से गोपाल जी की पूजा करने का ही प्रभाव है। जो लड़कियाँ और महिलाएँ सच्चे मन से कार्तिक स्नान करके व्रत और उपवास करती है। भगवान उन्हें मनोवांछित फल प्रदान करता है। व्रत कभी निष्फल नहीं होता। उसका फल व्रतकर्ता को अवश्य ही प्राप्त होता है।

बघेली व्रत कथाएँ

श्रीमती आशा द्विवेदी

नेउरा नमय व्रत कथा

एकठे किसान परिवार कइ स्त्री अपने नादान लरिका क खटोला मं पहुड़ाइ कर घर से बहिरे काम करइ चली गइ। एहं कइति अचनकइ घटना घटि गइ। एकठे विषइल सांप (किरबा) गदेला के नियरे आवा अउ जइसइ ओका काटइ चाहिसि ओहि साइत एक ठे नेउरा आइगा। अउ ओके उपर झपटि परा। दूनउ मं खूब दहकच्च भ खून खरापा भ। नेउरा किरउना केर गुरी-गुरी कइ डारसि। लरिका के खटोला के लगे लोहू कइ धार वहि चली। अउ नेउरा लड़िका कइ रखवारी करत ओही के लगे बइठ रहा। जब लरिका कइ महतारी घरे आई त खटोला के चारिउ कइति रकतधारा देखि कइ घबराइ गइ। ओका सक भा कि इया नेउरा हमरे लरिका का काटि खाइसि एहीं से खटोला के चारिउ कइति लोहू फइला हइ। उआ आव देखिनि न ताउ नेउरवा क पीटि-पीटि मार डरिसि । बाद म जब ओढ़ना उघारि कइ देखिसि त लरिका मजे से सोवत रहा। खटोला के तरे गुरी-गुरी किरबा मरा परा रहा। अब ओ के समझ में आवा कि नेउरा केर कउनउ दोस नहीं आइ। लरिका क काटइ इया सरफ आवा रहा। नेउरा ओका मारि डारिसि एही से लोहू कइ धारि हियन फइली हइ। ओका अपने किहे पर बहुत पछताउ भ उआ जोर-जोर रोवइ लागी।

उआ अउरति ओके पछताउ म ओके कलंक से वचइ खातिर नेउरा के याद मं उपासे रहइ केर संकलप लिहिसि । तवइ से लोकजन म नेउरा नमय केर तेउहार मनवाइ लागें। अउ भीती मं नेउरा कइ नौ से उरेहन वनाइ के पूजा कीन जाइ लागि। एह तेउहार मं मेहेरिये दिन भर उपासे रहती हंइ अउ संझावेरा नहाइ धोइ कइ भीती मं नउ नेउरा उरेहि कइ पूजन करतीं हमा। एह उपास मं एक अनाज से बनी भोजन नहीं करतीं। दुइ अनाज केर भोजन बनाइ कइ खातीं हंइ। जादातर दरभरी पूरी बनइ कइ खाते हं।

भावार्थ

यह त्योहार भाद्रपद शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाया जाता है। सभी स्त्रियाँ व्रत रखती हैं तथा शाम के वक्त दीवाल को ऐपन से पोत कर उसमें गेरू से एक परकोटा बनाकर उसके अंदर नौ नेवलों की आकृति उकेरती हैं। और उनकी विधि विधान से पूजा करती हुई शाम को दो अनाज से बना भोजन करती हैं।

एक किसान परिवार की स्त्री अपने दूधमुँहे बच्चे को पालने में सुलाकर बाहर कुछ काम करने चली गई। इधर अचानक घटना घटी, एक विषैला साँप आया। बच्चे को डँसना चाहा। उसी बीच एक नेवला आ गया और साँप के ऊपर झपट पड़ा। दोनों में मुठभेड़ हुई और नेवले ने साँप को टुकड़े-टुकड़े कर डाला। बच्चे के खटोले के पास खून की धारा बह चली और नेवला बच्चे की रखवाली करता, वहीं खटोले के पास बैठा रहा।

जब बच्चे की माँ वापस आई तो खून की धार देखकर घबरा गई। उसको शक हो गया कि निश्चय ही इस नेवले ने हमारे बच्चे को मार डाला। इसीलिए खटोले के चारों ओर खून की धार बह रही है। उसने आव देखा न ताव। बस पीट-पीट कर नेवले को मार डाला। बाद में जब कपड़ा खोलकर देखा तो बच्चा मजे से सो रहा था। खटोले के नीचे देखा तो साँप के टुकड़े-टुकड़े पड़े थे। अब उसकी समझ में आया कि नेवले का कोई दोष नहीं था। लड़के को काटने के लिये यह सर्प आया था। नेवले ने उसे मार डाला। इसीलिए खून की धार बही हुई है। उस महिला को अपने किये पर बहुत पछतावा हुआ। वह जोर-जोर से रोने लगी। वह औरत उसके प्रायश्चित के उपलक्ष में व्रत करने का सोचने लगी। उसने उस दिन व्रत किया और तभी से लोक जन में इसे व्रत व त्योहार के रूप में मनाया जाने लगा।

उस दिन भादों की नौमी तिथि थी। सभी महिलाओं ने व्रत रखकर दीवाल में विधिवत नौ नेवलों की आकृति बनाकर पूजा की तथा घर में उपलब्ध जौ, चना (दो अनाज) का भोजन बना कर किया, तभी से इस व्रत का चलन हो गया। ज्यादातर इस व्रत में दालपूरी बनाने का प्रचलन है।

यह व्रत अपने पुत्र की कुशलक्षेम हेतु किया जाता है।

हरछठ व्रत कथा

एकठे पेटभरू अहिरिनि घरे से दूध वेंचइ निकरी। ओंह दिना हरछठि केर वरत तेउहार रहा। हरछठि मं पड़वा (नर) वाली भैंस केर दूध-दहिउ केर उपयोग कीन जात हइ। ग्वालिनि केर दूध पड़वा वाली भइसि केर नहीं रहा। उआ झूंठ बोलि-बोलि दूध वेचति रही। गइलिनि मं

ओकर पेट पिराइ लाग अउ एक ठे ररिका (वेटवा) का जनम दिहिसि। उआ अपने वेटवा का कटही झारी मं लुकवाइ दिहिसि अउ आगे दूध वेंचइ निकरि गइ। एक किसान आपन खेत जोतत रहा। दूरभागि से किसान के हरे कइ नोकि ओंह जखा मं लुकवाये लरिका के पेटे मं घुसि ग। लरिका मरिगा किसान बड़ा दुखी भ। उआ जखा के काँटा से लरिका केर पेट सिकइ फेर से ओहीं मं लुकवाइ दिहिसि। अहिरिन दूध वेंचि कइ आई त ओका लरिका मरा परा रहइ। उआ रोवइ लागि अउ सोचइ लागि कि उआ झूँठ वोलिसि एहीं से ओकर लरिका मरा हइ। उआ फेर से लउटि कइ गई अउ ओंह गाँउ मं गइ अउ उपासे रहइ वाली अउरतन क बताइसि कि हमार दीन दूध पड़वावाली भंइसि केर न होइ। तव सब उपासे रहइ वाली अउरतें ओका असीसइ लागी कि तोंहार लरिका, पति केर लम्बी उमिरि होइ। तूं सही वाति वताइ कइ हमरे वरत केरि रक्षा किहे हइ।

जव अहिरिनि लौट कइ आई त दिखिसि कि ओकर लरिका हँसत खेलत लाग हइ। तव अहिरिन एका ईस्सर केर असीस मानिसि अउ तव से उआ सतिवादी दी होइ गइ। एही लोक आस्था क मानि कइ हरछठ व्रत पूजा कर अनुष्ठान कइ चलन होइ गइ।

हरछठि केर पूजन विधि-विधान एक अलगइ मेर केर इसारा करथइ। उपासे रहइ वाली औरतें मुहूरत मं एक जघा ऐकठ्ठा होइति हं। फेर वइजरा, कांसि, छिउला (पलाश) केरि डारि तीनउ क एक साथ एक गुड्ढा खोदि कइ तलाउ बनाइ कइ ओंह मं गड़वाइ कइ ओकर हरदी, सेंदूर, घिउ, गुड़, चाउर आदि पूजन समग्री से पूजा करतीं हं। पका महुआ अर दही महुआ के पत्ता मं घइ कर जेतने लरिका हं ओतने छः दोना एक बालक के निता चढ़उती हइ। पूजन के साइत मं सोहर गीत गउती हइ। एंह उपास मं फंसही धान बिना वोये जोते कइ चाउर बनाइ कइ खाती हइ, भइसि केर दूध, दहिउ, घिउ केर सेवन पूजन अउ खाइ मं कती हं।

हरछठ का व्रत भादौ के महीने में कृष्ण पक्ष में छठ तिथि के दिन किया जाता है। यह व्रत बघेलखण्ड की स्त्रियाँ अपने बच्चे के सुखी जीवन की कामना करके रखती हैं।

भावार्थ

एक गर्भवती ग्वालिन घर से दूध बेचने के लिए निकली। उस दिन हलषष्ठी का व्रत था। हलषष्ठी व्रत में पड़वा (नर) बच्चे वाली भैंस का दूध-दही उपयोग किया जाता है। ग्वालिन का दूध पड़वा बच्चे वाली भैंस का नहीं था। वह असत्य बोलकर दूध बेचती रही। रास्ते में ही उसे प्रसव पीड़ा हुई और उसने एक बच्चे को जन्म दिया। उसने अपने नवजात बच्चे को काँटेदार झाड़ी में छिपाया और दूध बेचने आगे निकल गई। उस खेत का किसान अपना खेत जोत रहा था। दुर्भाग्य से उसके हल की नोक झाड़ी में छिपाये गये बच्चे के पेट में धँस गई। बच्चा मर गया,

इससे किसान बहुत दु:खी हुआ। उसने झाड़ी के काँटे से बच्चे के पेट में टाँका लगा दिया और वहीं पर छिपा दिया। ग्वालिन दूध बेंचकर वापस आई तो उसका बच्चा मरा पड़ा था। वह रोने लगी और महसूस किया कि उसके असत्य बोलने के कारण बच्चे की मृत्यु हुई है। उसने उल्टे पाँव घर-घर जाकर व्रत रखने वाली स्त्रियों को बताया कि मेरा दिया हुआ दूध पड़वा बच्चे वाली भैंस का नहीं है। यह जान व्रतनिष्ठ स्त्रियों ने ग्वालिन को आशीर्वाद दिया- 'तुम्हारे पुत्र-पति दीर्घायु हों। तुमने सत्य बात बताकर हमारे व्रत की रक्षा की।'

ग्वालिन लौटकर आई तो उसका बच्चा हँस खेल रहा था। ग्वालिन ने ईश्वर का उपकार माना और सत्यवादी हो गई। इसी लोकआस्था के सम्मान में छठी पूजन का अनुष्ठान प्रचलित है।

हलषष्ठी का पूजन विधि-विधान विशेष संकेत देता है। व्रतधारी स्त्रियाँ व्रत मुहूर्त में एक स्थान पर एकत्र होती हैं। झरवेरी, कास की घास और छिउला (पलाश) की डाल का एक साथ रूपाकार खड़ा करती है। हल्दी, चावल, सिन्दूर, घी, गुड़ आदि पूजन सामग्री से पूजा-अर्चना करती हैं। पकाया हुआ महुआ, दही के साथ महुआ के पत्ते (दोना) में रखकर चढ़ाया जाता है। सोहर गीत गाने का भी चलन है। यह व्रत पुत्र की समृद्धि और दीर्घायु के लिये मनाया जाता है। फसही (बिनवोये) का चावल, महुआ, भैंस का दूध, दही, घी खाने की प्रथा है।

बहुरा चउथ व्रत कथा

एक ठे गाय अपने बछवा के साथ रहत रही। ओकर नाम बहुला अउ बछवा केर नाम बहादुर रहा। उआ रोज-रोज वन में चरइ जात रही। एक दिना उआ चरत-चरत जंगल मं भटकि गई। ओकर सामना जंगल के राजा से भ। शेर क देखि कइ उआ कांपइ लागि। शेर ओका देखि कइ (अट्टहास) जोर से हँसा अउ बोला कि हमका बड़ी जोर भूंखि लगी हइ, आजु हम तोका खाब। एतना सुनि कइ गऊ माता रोवइ लागीं, ओनका अपने बछवा (वछड़ा) कइ सुधि आइ गइ। ओकर आंसू देखि कइ बाघ बोला कि अब रोये से कुछु न होई। तब गाय बोली- भइया हमार दुधमुंहा बछवा घरे में हमार राह देखत होई। अजु हमका क्षिमा करा हम ओका दूध पियाइ अई। फेरि काल्हि बड़े सबेरे हम आइ जाब, तब तु हमका खाइ लिहे। बाघ बोला ठीक हइ एंही जघा हम तोका निहारे रहब। गाय चली गइ बाघ सोचइ लाग भला अब उआ कब आवइ वाली हइ।

गाइ मन गिराये अपने घरे कइत क चली। अइसन लाग जइसइ ओकर गोड़ आगे क न वढ़ि कई पाछे क जात हो। ओका अपने संतान केर मोह खाये जात रहा। बछवा दिखिसि कि आजु त महतारी मन गिराये चुप्पइ चाप आवति लागि है। आने दिना त हुंकुरत धावत आवति

रही। उआ जाइ कइ बछवा के लगे चुप्पइ खड़ी होइ गइ कि उआ दूध पियइ पइ अहउ काहे कम परइ। उआ बोला कि महतारी जब तक हमका अनमने केर कारन न वतउबे तब तक हम दूध न पियव। तब गाइ वताइसि कि दादू जंगल मं हम भटकि गये रहेन हुंआ हमार सामना शेर से होइगा। आजु उआ हमका खाइ लेत पइ हम तोहरे कारन ओसे आजु कइ समइ लइकइ आएन हइ। आजु तु दूध पी ले फेर हम काल्हि न मिलब। एतना सुनि कइ बछवा बोला कि हम हारा दूध न पियव हम काल्हि तोहरे साथ चलब। एंह मं इया लोक गीतउ बना हइ-

ए जी विन्द्रहि वन एक सुघरिनि गइया चरइ हो नंदनवन जाइ।
एकु वन गयें हंइ दूसर वन गये हंइ तिसरे म सिंह गराज।।

जब उ तोंहका जीवन दान देइंही त ठीक हइ नही त हमहूँ तोहरे साथ परान तियागि देव।

अपने कीन वादा के अनुसार दूसरे दिना आगे-आगे गाय अउ पाछे-पाछे बछवा वन कइती चलि दिहिसि। एक वन फेरि दूसर वन फेरि नंदनवन पहुँचिगे। दिखिनि कि शेर ओनके आसरइ मं अइठ हइ। एक के जघा दुह-दुह जन का देखिकइ खुसी के मारे नाचइ लाग।

बछवा आगे बढ़ि कइ कहिसि मामा जी पाइलागी। एतना सुनि शेर गदगद होइ ग अउ बड़े मन से आशीश दिहिसि 'चिरंजू' (चिरंजीव) रहा। तब बछवा कहिसि मामा पहिले हमका खा फेरि हमरे महतारी क। शेर बोला भइने (भानजे) अब हमका अउर सरमिन्दा न करा, पहिले त आपन मामा कहे अब खाइ कइवाति। घोर पाप अब पुनिकइ अइसन न कहे। जा महतारिउ बेटवा वन मं अराडंड (निर्भय) होइ कइ चरे। तोंहार केउ बाल बांका न करी।

दिन भर मन पसार चरे के बाद गाइ बछवा खुसी-खुसी घरे लौटें। गाँव के स्त्रियाँ इया घटना सुनि दिन भर चिंतित रहें। जब दूनउ सकुशल घरे लउटि आयें तब दिन भर के उपासि के बाद गइधुरिया बेला मं गाइ बछवा केर पूजा करिनि। ओह मिती से एह दिना, हर साल बहिनी-भाई के परेम के खातिर सब बहिनी उपास रहति हं अउ संझा के पहिले गाइ बछवा केर माटी कइ मूरति बनाइ कइ ओका पूजा करति हमां अउ इया किस्सा (कथा) कहिके फेर लहिला (चना) या जवा (जौ) केर बना भोजन करती हंइ। इया तेउहार ओंह दिना भादों अंधियारी पाख केरे चौथि रही त ओह दिना क हर साल उपासे रहती हैं अउ पूजा करति हंइ। अउ इया कहानी कहति हं।

भावार्थ

एक गाय अपने बछड़े के साथ रहती थी। उसका नाम बहुला और बछड़े का नाम बहादुर था। वह प्रतिदिन नंदन वन में चरने जाया करती थी। एक दिन वह चरते-चरते जंगल में भटक

गई। उसका सामना जंगल के राजा से हो गया। शेर को देखकर गाय डर के मारे काँपने लगी। शेर ने कहा– मुझे जोरों की भूख लगी है, आज मैं तुम्हें अपना शिकार बनाऊँगा। गाय एक माँ थी, उसे अपने बेटे (बछड़े) की याद आ गई, उसके नेत्रों से आँसूधार बहने लगी। यह देख शेर बोला– अब रोने से कुछ न होगा, क्यों रो रही हो? गाय बोली– 'भइया मेरा छोटा दूधमुँहा बेटा (बछड़ा) घर में मेरा इंतजार कर रहा होगा, इसलिये आप आज मुझे जाने दीजिए, मैं अपने बच्चे को दूध पिलाकर कल आकर इसी जगह मिलूँगी। शेर सोच में पड़ गया, फिर बोला– अच्छा मैं इंतजार करूँगा। गाय के जाने के बाद शेर सोचने लगा भला, अब वह वापस क्या आयेगी?

गाय धीरे–धीरे मन मारे घर की ओर जाने लगी। ऐसा लग रहा था, जैसे उसके पाँव पीछे की ओर धँस रहे हैं। जब संतान के मोह से दु:खी गाय मनमारे घर पहुँची। बछड़े ने देखा कि आज माँ चुप–चुप है। अन्य दिनों में तो वह हुकुरते (हुंकार भरते) हुए आती थी, आखिर बात क्या है? गाय आकर चुपचाप बछड़े के पास खड़ी हो गई कि वह दूध पीये। बछड़े ने कहा– जब तक आप मुझे उदासी का कारण नहीं बताएंगी, मैं दूध नहीं पीयूँगा। तब गाय बोली– बेटा, जंगल में शेर मुझे खाने के लिये बोला, मैं उससे वादा करके आई हूँ कि मैं तुम्हें दूध पिलाकर वापस आ जाऊँगी।

बछड़ा बोला– माँ मैं हारा हुआ दूध नहीं पीयूँगा। मैं कल आपके साथ वन चलूँगा और शेर से मिलूँगा। जब वह आपको जीवनदान देंगे, तब मैं आपका दूध पीयूँगा अन्यथा मैं भी आपके साथ अपना जीवन त्याग कर दूँगा।

दूसरे दिन प्रात: जब अपने वादे के अनुसार गाय जाने लगी, तब बछड़ा भी आगे–आगे चल दिया। एक वन के बाद दूसरे वन फिर नंदनवन पहुँच गये। वहाँ देखा कि शेर इंतजार में बैठा है। वह एक की जगह दो को देखकर खुशी से फूला न समा रहा था। बछड़े ने आगे बढ़ शेर को मामा जी कहकर प्रणाम किया। यह सुन शेर आत्म विभोर हो गया। उसने आशीर्वाद दिया– चिरंजीवी भव।

तब बछड़े ने कहा– मामा जी पहले मुझे खाइये, बाद में मेरी माँ को खाना। शेर बोला– अब मुझे और शर्मिन्दा मत करो। पहले तो मुझे मामा कहा और अब खाने की बात। जाओ आज से ये मेरी बहन और तुम भांजे हो। मैंने तुम्हें अभय दान दिया। अब तुम्हें नंदनवन में कोई डर नहीं, निर्भय होकर जंगल में विचरण करो।

दिनभर चरने के बाद पुलकित गाय और बछड़ा शाम को खुशी–खुशी घर वापस आये। यह कथा सुन गाँववासियों ने दिनभर कुछ खाया नहीं था, इस खुशी में दिन भर व्रत कर गोधूलि बेला में गाय बछड़े की पूजा कर घर में उपलब्ध चना या जौ से बने पदार्थ ग्रहण किये। इस दिन

भाद्रवदी चौथ से हर वर्ष स्त्रियाँ भाई-बहन की याद में बहुला चौथ का व्रत रख कर पूजन कर यह कथा कहती-सुनती हैं।

वैभवलक्ष्मी व्रत कथा

एक ठे बड़ा का सहर रहइ। ओंह मं विरहिन-विरहिन के लोग रहत रहें। निकहेउ अउ खरापउ। कुछ नीकउ मनई रहें। एनहिन मं शीला अउ ओनकर पति रहें। शीला धर्मिठ्ठ अउर ओनका पति हुशियार अर सुशील रहें।

कहथं कि करम कई गति अकथ हइ। क्षिन मं मनई राजा से रंक अउ रंक से राजा बनि जाथइ। शीलउ के पति केर साथ गलत लोगन से होइ गइ। उआ सराप, जुँआ केर आदी होइगा। मेहेरिया केर गहना अउ जउन बची-खुची सम्पति रही, सब जुँआ मं गमाइ दिहिनि। घरे मं दरिद्र घुसिगा। भुखमरी आइ गइ। दुइ जून कइ रोटी नसीव न होइ। दिन भर सीला क गरियावत रहइ। शीला बड़ी शीलवती नारी रही। अपने पति के बेउहार से थोरउ दुखी नहीं होति रही। बस ओका भगवान पर भरोसा रहा। उ इया सोचति रही कि सुख के बाद दुख अउ दुख के बाद सुख अउतइ हइ। बस भगवान के भक्ति मं लीन रहइ लागि।

अचनकइ ओके दुआरे मं एक दिना एक जनी बुढ़िया माता पधारी। ओनकर चेहरा दमकत रहा। आँखिन से लागइ कि अमरित छलकत होइ। अइसन माता क देखि कइ शीला केर रोमा-रोमा कुलुकि उठे। उ माता जी क अपने घरे के भितरे लइ गइ। घरे मं कुछ न रहा, एक ठे फटही चद्दर बिछाइ कइ ओही पर माता का बइठाइ दिहिस। माता बोली- शीला तु हमका चीनहे नहीं? तब शीला कहिसि हां माता हम तोंहका चीन्हेन नहीं पइ तोहसे मिलिकइ हमका बहुत खुशी अउ शान्ति मिली।

तब माता बोली कि हर शुक्रवार के दिन हम मंदिर मं मिलत रहेन। तुं भूलि गेय। शीला बोली- माता हम पति के गलत आदतन मं पड़ि जायं के कारण मंदिरउ जाव विसरि गयेन। सब से नजर बचाइ के चलइ लागेन। बहुत दिना से मंदिर के भजन कीर्तन मं हम तोहका नहीं दिखेन। एंह से लाग कि कहंउतु बीमार त नहीं परि गइउ। एंह से हम तोहका देखइ चली आएन।

माता जी के परेम भरी वाति सुनि शीला रोवइ लागि। तब माता जी सान्त्वुना दिहिनि कि हिम्मति न हारा। सुख-दुख त धूप छाहि आही। अब तु अपने दुख केर कारन बतावा ओकर नेवारन होइ जई। तब शीला बोली कि माता हम अउ हमार पति बड़े सुख शान्ति से रहत रहेन।

पइ अचानक हमरे पति केर गलत आदति परि गई। हमार भागि पलिट गइ। हम राजा से भिखारी होइ गयेन।

तव माता बोली– मनई के करम कइ गति नियारी होति हइ। सबका अपने करम केर फल भोगे परत हइ। अब तु अपने करम केर फल भोगि चुकिउ हइ। अब तोअरे सुख केर दिन जरूर अई। तुं माता लक्ष्मी जी केर वरत करा ओहसे सब नीक होइ जई। एतना सुनिकइ शीला खुशी होइ गइ उ एंह वरत केर विधि माता से पूंछइ लागि।

माता बोली– बेटी इया वरत बहुत सहज हइ। एका वरद लक्ष्मी या वैभवलक्ष्मी कहत हं। एके करे से सब मनोकामना पूरि होइ जाति हइ। एकर विधि एंह तरह हइ– बिटिया ओहसे त इया उपास (व्रत) बड़ा सीदा–सादा है। पइ कुछ जने एका गलत तरीका से करत हं। एहसे ओनका एकर फल नहीं मिलत। कुछ सोने–चाँदी के गहनन केरि हल्दी–कुमकुम से पूजा कइ लेत हं। ओही क वरत मानि लेयं। कउनउ उपास सास्त्रीयविधि से करइ चाही तव ओकर फल मिलत हइ।

इया उपास सुक्रवार के दिना करइ चाहि। बेड़े विहले से न्हाइ–धोइ कइ। जै लक्ष्मी माता केर जप करइ चाही। केहू केर चुगुली न करइ चाही। दूसरी जूना पूरुब कइत मुँह कइके आसन पर वइठइ। सामने पीढ़ो (पटा) के उपर रूमालि विछाइ कइ ओह पर चाउर केर ढेर वनावइ। ओंह पर पानी भरा कलसा धरइ। ओंह पर आवा कइ देरी धइ कइ एकठे खोरिया धरइ। ओह मं कउनउ सोने केर गहना धरइ। सोने केर न होइ त चाँदी केर, उहउ न होइ त सिक्का धर कइ काम चलाइ। ओके उपर दीपक जलाइ कइ धूपवत्ती सुलगाइ कइ धइ देइ।

माता लक्षिमी क सिरीजंत्र बहुत पियार हइ। एंहसे सिरीजंत्र अउ लक्षिमीजी के अनेकउ रूपन केर दरसन करइ चाही। फेरि विधि से पूजन करइ चाही। संझा बेरा कउनउ मीठि चीजु केर परसाद चढ़ावइ चाही। न होइ त गुरउ चिनी चली। आपन जउन चाहना होइ माता से ओके खातिर विनती करइ चाही। फेर परसाद वांटि दे। थोर क परसाद अपनेउ क वचाइ ले। जउ शकती होइ त परसादइ खाइ कइ नहीं तउ एक जून खाइ कइ वरत रहइ। जउ सकत न होइ त दूनउ जून भोजन कइके वरत कइ सकते हइ। एह तरह उपास करे से मनउती पूरि होति हइ।

जेतने सुक्रवार कइ मनउती किहे होइ ओतने कइके फेरि आखिरी दिन उद्यापन करइ क चाही। नरियर फोरइ चाही। अपने साउकास के अनुसार– सात, नौ, ग्यारह, इक्कीस सोहागिनि नि कथा कन्नियन का वैभवलक्ष्मी व्रत कइ कथा केरि पोथी, नरियर अउ खीर केर परसाद देइ चाही। फेरि माता के आगे माथओनाइ कइ अपने मनउती के पूर होइ केर वरदान मांगइ चाही।

अइसन विधि–विधान से वरत करे से सब कष्ठ दूर होइ जात हइ अउ सुख शान्ति आवथि।

शीला आंखी मूंदि कइ मनइ मन संकल्प करिसि कि अव त हम जरूर इया उपास करब। जब आंखी खोलिसि त कहंउ केउ नही। तव उआ समझि गइ कि छाछात लक्षिमीजी ओका इया वतावइ आई रहीं।

दूसरेन दिन सुकरवार रहा, बड़े विहसेन नहाइ धोई कइ शीला विधि से इया उपास करिसि। गहना के नाम पर नेकुआ कइ फुलिया बची रही, ओही क धोइकइ पूजा म धरिसि। घरे मं थोरि क चिनी रही, ओही केर परसाद चढ़ाइसि। इया परसाद पहिले पति क खवाइसि। खातइ पति के सुभाउ मं फरक परिगा। उआ शीला क मारव–पीटव वंद कइ दिहिसे। शीला वड़ी सरधा से एकइस सुकरवार करिसि। फेर उदियापन करिसि। ओके घरे मं फेरि से सुख–शांति आइ गइ। ओकर ग धन सब आपस आइग। ओकार आदमी (पति) निकहा मनई होइ ग, अउ आपन रोजिगार मेहनति कइके करइ लाग।

एंह वरत केर परनाउ देखि कइ टोला केरि अउरउ मेहरिये एंह वरत क करइ लागीं। अउ मांगन मांगइ लागी किं हे माता जइसइ अपना शीला के उपर परसन्न भयेन हइ, ओहि मेर सब के उपर परसन्न होव, अउ सुख–सान्ति देब।

भावार्थ

एक बड़ा शहर है। उसमें तरह–तरह के लोग रहते हैं। शहर में अच्छे से अच्छे और बुरे से बुरे लोग भी रहते हैं। सारी बुराइयों के बावजूद शहर में कुछ अच्छे लोग भी रहते हैं। ऐसे ही लोगों में शीला और उसके पति थे। शीला धार्मिक और सुशील थी और उसके पति विवेकी और सुशील थे। शहर में लोग उनकी सराहना करते थे।

कहा जाता है कि कर्म की गति अकथ है। व्यक्ति राजा से रंक और रंक से राजा बन जाता है। शीला के पति की दोस्ती बुरे लोगों से हो गई। वह शराब, जूआ आदि का आदी हो गया। इस तरह पत्नी के गहने, धन, सम्पत्ति सब जूए में गँवा बैठा। घर में पत्नी के साथ सुख–सम्पत्ति का उपभोग करते हुए वह रहता था कि अचानक घर में दरिद्रता और भुखमरी फैल गई। घर में दो वक्त की रोटी भी नहीं मिलती थी। पति से शीला को गालियाँ खानी पड़ती थी।

शीला सुशील और संस्कारी स्त्री थी, उसे पति के बर्ताव से बहुत दु:ख होता था, किन्तु भगवान पर भरोसा करके वह सब दु:ख सहने लगी थी। सुख के पीछे दु:ख और दु:ख के बाद सुख आता है, यह मान वह प्रभु भक्ति में लीन रहने लगी।

अचानक एक दिन उनके द्वार पर एक माँ जी पधारी। उनके चेहरे से अलौकिक तेज झलक रहा था। उनकी आँखों से मानो अमृत बह रहा हो। इन माँ जी को देख शीला के रोम-रोम में आनंद छा गया। वह माँ जी को अपने साथ आदर सहित घर ले आई। घर में कुछ न था। एक फटी हुई चादर पर माँ जी को बैठाया। माँ जी बोली- शीला मुझे पहचाना नहीं? शीला बोली- माँ मैंने आपको पहचाना नहीं? किन्तु आपसे मिलकर मैं बहुत शांति का अनुभव कर रही हूँ।

तब माँ जी ने कहा- हर शुक्रवार को हम माँ के मंदिर में मिलते थे, तुम भूल गई? शीला बोली- माँ मैं पति के गलत आदतों में पड़ जाने के कारण मंदिर जाना भी भूल गई थी। सबसे नजरें भी नहीं मिला पाती। तब माँ जी ने कहा कि तुम लक्ष्मी जी के मंदिर जाकर कितने भजन कीर्तन गाती थीं। बहुत दिनों से तुम्हें नहीं देखा तो लगा कि कहीं तू बीमार तो नहीं पड़ गई, इसलिये तुमसे मिलने चली आई।

माँ जी के प्रेम भरे वचन सुन शीला रोने लगी, तब माँ जी ने उसकी पीठ पर हाथ फेर उसे सांत्वना दी और बोली कि सुख और दु:ख तो भाई-भाई हैं, आते-जाते रहते हैं। अब तू अपने दु:ख का कारण बता, जिससे तेरा मन भी हल्का हो जाय और निवारण का उपाय भी मिल जायेगा।

तब शीला बोली- माँ जी मैं और मेरे पति बड़े सुख-शांति से रहते थे, किसी प्रकार कोई परेशानी नहीं थी, किन्तु एकाएक भाग्य हमसे विमुख हो गया और पति की गलत आदतों के कारण हम राजा से भिखारी हो गये।

माँ जी ने कहा- कर्म की गति न्यारी होती है। हर इंसान को अपने कर्म के फल भुगतने पड़ते हैं, इसलिये तुम चिंता मत करो। अब तुम अपने कर्म भुगत चुकी हो, अब तुम्हारे सुख के दिन अवश्य आयेंगे। तू माँ लक्ष्मी जी का व्रत कर इससे सब कुछ ठीक हो जायेगा।

यह सुन शीला के चेहरे पर चमक आ गई। उसने इस व्रत के करने की विधि माँ से पूछी। तब माँ ने कहा- बेटी यह व्रत बहुत सरल है, इसे वरदलक्ष्मी या वैभव लक्ष्मी व्रत कहते हैं। इस व्रत के करने से सब मनोकामना पूरी हो जाती है। इसकी विधि निम्नवत है-

बेटी वैसे तो यह व्रत बड़ा सीधा सादा है, पर कुछ लोग इसे गलत विधि से करते हैं। अत: इसका फल नहीं मिलता। कुछ लोग सोने के गहनों की हल्दी कुमकुम से पूजा करने को ही व्रत मान लेते हैं। बस व्रत हो गया। कोई भी व्रत शास्त्रीय विधि पूर्वक करना चाहिए तभी उसका फल मिलता है।

यह व्रत शुक्रवार के दिन करना चाहिए, सुबह नहा-धोकर लक्ष्मी जी का जाप करना चाहिए। किसी की चुगली नहीं करना चाहिए, शाम को पूर्व दिशा में मुँह करके आसन पर बैठो। सामने पाटा रखकर उस पर रूमाल रख उसके ऊपर चावल का छोटा सा ढेर रखकर उसके ऊपर पानी से भरा ताँबे का कलश रखो, कलश पर एक कटोरी रखो। उसमें एक सोने का गहना रखो। सोना न हो तो चाँदी का और वह भी न हो तो रुपया (सिक्का) रखकर कर, उस पर दीपक जलाकर धूप बत्ती सुलगा कर रखें।

माँ लक्ष्मी को श्रीयंत्र बहुत प्रिय है। अतः श्रीयंत्र व लक्ष्मी के अनेक स्वरूपों का दर्शन करना चाहिए, इसके बाद विधि-विधान से पूजन करो, शाम को कोई मीठी चीज बनाकर उसका प्रसाद रखो। न हो तो गुड़ या शक्कर भी चलेगा। आपकी जो भी मनोकामना हो, उसके लिये माँ से विनती करो। फिर प्रसाद बाँट दो। थोड़ा प्रसाद अपने लिये भी रखो। यदि आप में शक्ति है तो प्रसाद खाकर नहीं तो एक वक्त भोजन कर व्रत करें। यदि ऐसा समाधान हो तो दोनों वक्त भी कर सकते हैं। इस तरह व्रत करने से मनोकामना पूरी होती है।

जितने शुक्रवार की मनौती की है, उतने कर अंतिम शुक्रवार को उद्यापन करना चाहिए। उस दिन सात, नौ, ग्यारह, इक्कीस व्रत कथा की पुस्तक व खीर का प्रसाद, नारियल देना चाहिये और माता को सिर झुकाकर प्रणाम कर अपनी मनोकामना पूर्ण करने का वर मांगना चाहिए। इस प्रकार विधि पूर्वक जो माँ वैभवलक्ष्मी का व्रत करे उसकी सर्वविपत्ति दूर होकर सुख-शांति आती है।

शीला ने आँखें बंद कर मन ही मन यह व्रत विधि-विधान से करने का संकल्प किया। जब आँख खोली तो सामने कोई नहीं था। शीला समझ गई कि ये साक्षात् लक्ष्मी जी थी, जो उसे मार्ग दर्शन देने आई थी। दूसरे दिन शुक्रवार था, शीला ने विधि-विधान से माँ का व्रत पूजन किया, गहने के नाम पर नाक की फूली बची थी, उसी को धोकर पूजा में रखा और मीठे के नाम घर में थोड़ी शक्कर थी, उसे रख वैभव लक्ष्मी का व्रत किया। यह प्रसाद पहिले पति को खिलाया। प्रसाद खाते ही पति के स्वभाव में फर्क पड़ा। उसने उसे मारा नहीं। शीला ने श्रद्धापूर्वक इक्कीस शुक्रवार करने के बाद विधिवत् उद्यापन किया। उसके घर में पुनः सुख-शांति आ गई। उसका जो धन चला गया सब वापस मिल गया था। उसका पति अच्छा आदमी हो गया, और कड़ी मेहनत कर व्यवसाय करने लगा।

इस व्रत का प्रभाव देख मुहल्ले की स्त्रियाँ भी इस व्रत को करने लगीं, और सब कहने लगीं कि- हे माँ! जिस तरह शीला पर प्रसन्न हुई हो, उसी तरह आप अपने व्रत करने वालों पर प्रसन्न होना और सुख-शांति देना।

भइया दुइजि व्रत कथा

सात बहिनिन केर एक ठे दुलरइत भाई रहा। ओकर वियाह होइ वाला रहा। उ अपने सबसे छोटि बहिनी क बोलावइ आवा। बहिनी भाई केर खूब आव-भगत किहिसि, खीर, पूड़ी बनाइ कर खवाइसि। जब जाइ लाग तब ओक राहि खातिर पूड़ी बनाइ कइ दिहिसि। वची-खुची पूड़ी कुकुर के डारि दिहिसि। ओका खाइ के कुकुर मरि ग। धोखे से ओह पूड़ी के पिसाने मं सरफ कइ हड्डी पिसि गइ रही। बहिनी दौड़त-दौड़त भाई के पास गइ। भाई थाकि के मारे राह मं सोइ ग रहइ। बहिनी ओकर पूड़ी लइकइ भुइया मं गाड़ि दिहिसि। जव जागा तब ओकर खाइ क दूसरि पूड़ी दिहिसि।

बहिनी भाई के पियइ खातिर पानी के तलाश मं एक बउली के लागे गइ। उआ दिखिसि कि बउली के पास एक ठे बढ़ई साही केर काँटा बटोरत रहा। बहिनी बढ़ई से एकर कारन पूछिसि। तव उ वताइसि कि सात बहिनी केर एक ठे दुलारा भाई हइ ओकार वियाह होइ वाला हइ। जउने मं वड़ी विपत्ति आवइ वाली हइ। जउ सबसे छोटि बहिनी गारी देत साही केर एक ठे काँटा भाई के मुँहे मं छुआइ देई त सब विपत्ति दूर होइ जई। जव भाई कइ भंमरी परइ लागी तब एक ठे वाघ अई, उआ भाई क खाइ जई। तव जवा के रोटी मं साही केर काँटा लुकवाइ कइ खवाये से वाघ मरि जई।

तव बहिनी बढ़ई क वताइसि कि दुलरइत भाई केर हमहिन सबसे छोटि बहिनी आहेन। बढ़ई भाई साही केर काँटा हमका दइ देई। हम अपने भाई कइ रक्षा कइ लेव।

जव वियाह होइ लाग तब छोटकिया बहिनी गारी देइ लागि-

महतारी केर पूत मरइ।
बहिनी केर भाई मरइ।
भउजी केर भतार मरइ।

गारी देत-देत वहिनी गई अउ भाई के मुँहे मं साही केर काँटा छुआइ दिहिसि। तव जेतना जन रहा सब ओका पागल कहइ लागे। अइसइ जव मड़ये तरे भंमरी परइ लागि त बाघ आइ ग। बहिनी त पहिलेन से सतरक (सतर्क) रही। उ साही केर काँटा मिली जवा कइ रोटी बाघ के आगे डारि दिहिसि। रोटी खाइ के बाघ मरिगा। भाई-भउजाई समतूल वचिगे। अन्त मं बहिनी सूगला भेद लोगन क बताइसि। बहिनी के भाई से प्रेम अउ उपाय केर सब सराहना करिनि।

ओह दिना दुइज तिथि रही। तब से इया परिपाटी चलि गइ कि बहिनी ओह तिथि क भाइन क आदर सहित बोलउती हइ ओनकर पूजा रोली अक्षत लगाइ कर करती ह, आरती

उतरती हे अउ ओनकर खवाये के बादइ आपन उपांस टोरती हंइ, अउ कुछ खाती पीती हमां।

भावार्थ

सात बहनों का एक दुलारा भाई था। भाई शादी के अवसर पर सबसे छोटी बहिन को बुलाने आया। बहिन ने खूब आदर सत्कार किया, खीर-पूड़ी खिलाई। भाई जब अपने घर वापस चलने लगा तो बहिन ने उसे रास्ते में खाने के लिए पूड़ियाँ बाँध दीं। रात में जो पूड़ियाँ भाई के लिय बनाई गई थीं, उसके आटे में धोखे से सर्प की हड्डी पिस गई थी। सुबह बची हुई पूड़ियाँ कुत्ते को दी गईं। उसे खा कुत्ता मर गया। यह जानकर बहिन बहुत दुखी हुई। वह दौड़ी-दौड़ी भाई के पास आई। भाई थककर रास्ते में विश्राम कर रहा था। पूड़ियाँ ज्यों की त्यों बंधी थीं। बहिन ने उन पूड़ियों को जमीन में गाड़ दिया। भाई जब सोकर उठा तो उसे दूसरी पूड़ियाँ खाने को दी गईं।

बहिन भाई के पीने के लिए पानी की तलाश में एक बावड़ी के पास पहुँची। बावड़ी के पास एक बढ़ई साही के काँटे बटोर रहा था। बहन ने बढ़ई से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि सात बहिनों के दुलारे भाई की शादी होने वाली है, जिसमें विपत्ति आयेगी। यदि सबसे छोटी बहिन गालियाँ देती हुई साही के एक काँटे को भाई के मुँह में छुआ देगी तो विघ्न दूर हो जाएगा। भाई की भाँवर पड़ते समय एक बाघ आयेगा, जो भाई को खा जायेगा। जौ की रोटी में साही का काँटा छिपाकर खिलाने पर बाघ मर जायेगा।

तब बहिन ने बताया कि दुलारे भाई की मैं ही सबसे छोटी बहिन हूँ। बढ़ई भाई, साही के काँटे मुझे दे दीजिये। मैं अपने भाई की रक्षा कर लूँगी। विवाहोत्सव पर छोटी बहिन गालियाँ बकने लगीं -

माता का पूत मरे, भावज का पति मरे
बहिन का वीरन मरे।

गालियाँ देती हुई बहिन ने भाई के मुँह में साही का काँटा छुआ दिया। तब लोगों ने उसे पागल की संज्ञा दी। इसी तरह जब मंडप में भाँवर पड़ रही थी, तब बाघ आ गया। बहिन पहले से ही सावधान थी, उसने साही का काँटा मिली जौ की रोटियाँ बाघ के सम्मुख डाल दीं। रोटी खाकर बाघ मर गया। भाई-भावज सुरक्षित बच गये। अंत में बहन ने सारा रहस्य लोगों को बताया। बहिन की प्रीति और उपाय की सब लोगों ने सराहना की। उसी दिन दूज भी थी, उसी समय से बहिनें भाईयों को आमंत्रित करती हैं। टीका लगाती हैं तथा भइया दूज का आरेख (चित्र) खींच कर विधि-विधान से पूजन करती हैं। जब तक भाई की पूजा नहीं कर लेती, अन्न जल ग्रहण नही करती हैं।

भाईदूज व्रत कथा – (दो)

भगवान सूर्य देव के मेहेरिया (पत्नी) केर नाम छाया रहा। ओनके कोखि से जमराज अउ जमुना केर जनम भ। जमुना अपने भाई जमराज क बहुतइ दुलार करत रही। जमुना हमेसा अपने भाई से अपने घर आवइ अउ भोजन करइ केर आग्रह करति रही। पइ जमराज अपने काम मं एतना जादा वेस्त रहां कि हमेसइ जमुना के वाति का टालि दें। कातिक महनी मं अंजोरी पाख के दुइजि क जमुना अपने घरे भाई (जमराज) क भोजन करइ क बोलाइसि। बहिनी के घरे आवइ के पहिले जमराज नरक मं रहइ वाले जीवन क मुक्त कइ दिहिनि। भाई क देखतइ जमुना के खुशी केर ठिकाना न रहा। जमुना बड़े प्रेम से भाई क बइठाइनि अउ भोजन करवाइनि। खुस होइके जमराज जमुना से वरदान मांगइ क कहिनि। तब जमुना बोली कि भइया अपना हमका इहइ वरदान देई कि हर साल एह दिना हमरे घरे भोजन करइ आवा करव। अउर एंहदिन जउन बहिनी अपने भाई केर टीका (तिलक लगाइ के) आरती उतारइ अउ अपने घरे मं भोजन कराबइ ओका अपना केर भय न रहइ।

जमराज 'तथास्तु' कहिके अउ बहिनी क बहुतक गहना-कपड़ा दइके चले गे। तब से इया लोक मानता है कि भइया दुइज के दिन जउ भाई जमुना मं स्नान कइके जाइ अउ बहिनी के आतिथ्य क प्रेम भाउ से स्वीकार करइ ओका जमराज केर भय नही रहत।

भावार्थ

भगवान सूर्यदेव की पत्नी का नाम छाया था। उसकी कोख से यमराज तथा यमुना का जन्म हुआ। यमुना अपने भाई यमराज से बहुत स्नेह करती थी। वह उससे बराबर निवेदन करती थी कि वह उसके घर आकर भोजन करे। लेकिन अपने काम में व्यस्त रहने के कारण यमराज यमुना की बात को टाल जाते थे। कार्तिक शुक्ल द्वितीया (दीपावली के तीसरे दिन) यमुना ने अपने भाई को भोजन करने के लिए बुलाया।

बहन के घर आते समय यमराज ने नरक में निवास करने वाले जीवों को मुक्त कर दिया। भाई को देखते ही यमुना ने खुश होकर भाई का स्वागत किया तथा भोजन कराया। इससे प्रसन्न होकर यमराज ने बहन से वर मांगने को कहा। बहन ने कहा– 'आप प्रतिवर्ष इस दिन मेरे घर भोजन करने आया करेंगे तथा इस दिन जो बहन अपने भाई को टीका करके भोजन कराये, उसे आपका भय न रहे।

यमराज तथास्तु कहकर यमुना को अमूल्य वस्त्राभूषण देकर यमपुरी ले गये।

तब से ऐसी मान्यता है कि जो भाई यमुना में स्नान कर आज के दिन बहिन के आतिथ्य को श्रद्धा पूर्वक स्वीकार करते हैं, उन्हें यम का भय नहीं रहता।

संतान सातै व्रत कथा

एक दिना भगवान कृष्ण से युधिष्ठिर महराज कहिनि कि प्रभू कुछु अइसन उपाइ बताई जउने से एह संसार केर सब मनई बेटा, नाती वाले होइजां अउ ओनकर दुख-दारिद्र दूर होइ जाइ। भगमान बोले महाराज अपना बहुतइ नीक बाति पूछेन। अब हम अपना क एक ठे पुरान केरि किस्सा सुनाइथे। ओका धियान से सुनव- एक वेर लोमश ऋषि ब्रजराज के मथुरापुरी मं वसुदेव देवकी के घरे पधारे। मुनिराज क देखि कइ दुनउ जने बहुतउ खुशी भें। ओनकार खुब आउ भगति करिनि, गोड़ धोइकर चरनामृत लिहिन, अपने घर अउ सरीर दुनउ क पवित्र किहिनि। ऋषि खुसी होइ कइ कथा सुनाउव सुरू करिनि। कहिन दुष्ट कंस तोहरे कइउठे बेटवन का मारि डारिसि हइं। तोहरेन के नाई राजा नहुष कइ पत्नी चन्द्रमुखी दुखी रहा करतिं रही। पर उ संतान सत्तिमी केर उपास (व्रत) विधि-विधान से कहिसि। जउने पुन्नि-परताप से ओका संतान केर सुख मिला। तव रानी देउकी हाथ जोरि कइ ऋषि से कहिसि कि मुनिवर अपना किरपा कइके हमका रानी चन्द्रमुखी केर पूर विरदान्त बताई, अउ एहं वरत केर विधान हमका समझाई। जउने हमहूँ एंह दुख से उबरि सकी।

ऋषि बोले- देवकी अयोध्या के राजा नहुष रहें। ओनकी पतनी चन्द्रमुखी बहुतइ सुन्दर रही। ओंही नगर म एकठे विष्णुगुप्त नाउ केर ब्राहिमण रहा। ओकरि औरति क नाम भद्रमुखी रहा। रानी और ब्राहमणि के औरति मं बड़ी दोस्ती रही। एक दिन दुनउ जनी सरयू नदी मं नहाइ गईं। हुअन देखिन कि बहुत सारी मेहेरिये नदी मं नहाइ कइ साफ वस्त्र पहिरि कइ शंकर-पार्वती क मंडफ में विराजि कइ ओनकरि पूजा कइ रही हइ। रानी अउ ब्राम्हनी ओनसे पूंछिनि कि इया कउने देउता कइ अउ कउने कारन से व्रत अउ पूजन कइ रहे हंइ। तब उ स्त्रियाँ बताईन कि हम संतान सत्तिमी उपासे हन अउ भगवान शिव-पार्वती के पूजन विधि-विधान से फूल, अक्षत्, धूप-दीप से कइ रहेन हंइ। इया सुनि कइ रानी अउ ब्राम्हनी दुनउ इया वरत करइ क संकल्प कर के घरे आईं। ब्राम्हनी त नियम विचार से एंह वरत क करिसि, पइ रानी अपने राजमद मं सब विसराइ दिहिसि। कुछ समय वीते दुनउ मरि गइ।

दुसरे जनम मं रानी बंदरिया अउ ब्राम्हनी मुर्गी भई। ब्राम्हनी त मुरगिउ होइ कई नहीं बिसरी आपन पूजन वरत भजन ओइसइ करत रही। पइ रानी बंदरिया सब विसरि गइ। कुछु समय बाद दुनउ केरि इहउ जोनि छुटि गइ।

तिसरे जनम मं पुनि दुनउ मनुस जोनि मं जनम लिहिनि। ब्राम्हनी ब्रह्मन कन्या अउ रानी राजकन्या भइ। ब्राम्हन कन्या क नाम भूषण देवी रहा। उ बिना गहनउ के बहुत सुंदर देखाति रही ओकर वियाह अग्नि भील नाम ब्राम्हन से भ। उआ कामदेव के पत्नी रतिउ से सुंदर रही। ओके आठ ठे सुन्दर, गुनमान, कर्मशील, धार्मिष्ठ पुत्र पैदा भें। इया शिव के पवित्र व्रत कर फल आइ।

ओंह कइत शिउ विमुख रानी के कउनउ संतान नही भइ। उका नि:संतान बड़ी दुखी रहति रही। ब्राम्मनी अउ रानी मं पहिलेन जनम कस आपस मं परेम भाव रहा। बुढ़ापा आवइ के पहिले रानी के एक ठे अल्पायु गूंगा, बहिर बेटा पइदा भ जउन कुलवरिस के उमिर मं मरिगा। अब तउ रानी अउरइ दुखी रहइ लगि।

एक दिना भूषण देवी रानी के घरे अपने आठउ लरिकन क लइ कइ गइ। रानी केर हाल देखि कइ उआ बहुतइ दुखी भइ पर विधाता के आगे केहू केर नहीं चलत- वसात। अपने करतब से गलत होवे के कारन ओका इया दुख मिला। भूषण देवी सोचिसि कि अपने लरिकन क रानी के लगे छोड़ि देइत साइत ओनकर दुख कुछ कम होइ जाइ। पइ रानीं के मन मं त ओका सुख वैभउ देखि कइ इरखा होइ गइ। रानी ओके लरिकन क खीर मं जहर मिलाइ कइ खाइ क दइ दिहिस। पइ शंकर जी के दया से ओनका कुछु नहीं भ। इया देखिकइ रानी क बड़ा अचरज भ। उ मनइ मन सोचिसि कि एकर पता हम लगाइ के रहब। जब ब्राहमणी आई त रानी ओसे सब सही -सही बताइ दिहिसि। अउ कहिसि कि बताउ तंइ अइसन कउन पूजन, वरत पुन्नि करे कि तोरि लिरका नही मरें। अउ तंइ रोज नये-नये सुख भोगि रहे हइ अउ सोहागिनिउ हये। बिना छल-कपट तइ हमका सही-सही बताउ। हम तोर बड़ी रिनी रहब। तब भूषण देवी बोली-

सुना हम तोहसे तीनि जनमन केर हाल कहित हइ। पहिले जनम में अपना अयोध्या के राजा नहुष कइ पत्नी अउ हम ब्राम्हण पत्नी भद्रमुखी रहेन। हम इनउ मं बड़ी दोस्ती रही। सरयू नदी के तीरे स्त्रियन क संतान सप्तमी के पूजन देखिकइ हम दुनउ जने इया वरत करइ केर संकलप लिहेन, हम त आपन वरत नियम से करने अउ आजउ करिथे। पइ अपना अपने राज महल सब भूलि गयेन। जउने केर फल आजउ भोगित लागहे।

दूसरे जनम मं तु बंदिरिया अउ हम मुर्गी भहेन। तु त आपन करतब भूलि गये, अउ हम एंहू जनम में आपन करतब नहीं विसरेन, बल्कि नियम से पालन करत रहेन। हमरे समझ से त तोहका पुनि कइ इया वरत करइ चाही तवइ तोहार इया संकट दूर होई।

लोमश जी कहत हं कि ओह ब्राम्हणी कइ बाति सुनि कइ रानी क सब पुरानि बाति याद आइ गइ। उआ पछताइ लगि अउ ब्राम्हणी केर गोड़ पकड़ि कइ क्षमा मांगइ लागि। ओही दिन से रानी संतान सत्तिमी केर व्रत विधि-विधान से करइ लागि। ओहू क संतान सुख मिला अउ सब तरह केर सुख भोग कइके अंत मं शिव लोक क गइ।

लोमश जी देवकिउ क संतान सत्तिमी केर वरत करइ केर सलाह दिहिन अउ ओका विधि-विधन समझाइन-

इया उपास भादौं महीना के अंजोरी पाख के सत्तिमी क मनाइ जात हइ। बड़े भोर मं उठि कइ कउनेउ नदी, तलाउ या कुंआ के जल मं नहाइ कइ केर शिउ-पार्वती कइ मूरति बनाइ कइ सोने-चाँदी या रेशम केर गण्डा बनाइ कइ ओह मं सात ठे गांठी लगाइ कइ उआ धागा अपने हाथे मं बांधइ चाही। फेर शुद्ध भाव से भगवान से विनती कइके अपने मांगन केर मंणन भगमान से मांगइ चाही। फेर सात ठे पुआ बनाइ कइ ओका भोग लगावइ अउ ताँबे के पात्र मं सात ठे पुआ अउ समरथ अनुसार सोने-चाँदी डारिकइ सुयोग्य ब्राम्हन क दान करइ चाही। फेरि सात पुआ आपुनि खाइ। हर महीना के अंजोरी पाख के सत्तिमी क उपास रहइ त सव पाप नट्ट होइ जात ह। अंत मं शिव लोक केरि प्राप्ति होति हइ। इया वाति भगमान कृष्ण युधिष्ठिर से वताइनि कि हमारि महतारी इया व्रत करिसि। जउने के परभाउ से हम पैदा भयन।

संतान सुख देइ वाली इया व्रत सब क करइ चाही। अमर जस पाइ कइ अन्त मं उआ शिव लोक क जात हइ।

भावार्थ

एक दिन भगवान से युधिष्ठिर महाराज ने कहा कि प्रभो! कोई सरल उत्तम व्रत बताइये, जिसके प्रभाव से मनुष्यों के दु:ख क्लेश दूर होकर पुत्र एवं पौत्रवान हों। यह सुन भगवान बोले- राजन! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है। मैं तुम्हें एक पौराणिक इतिहास सुनाता हूँ। ध्यान पूर्वक सुनो।

एक समय श्री लोमश ऋषि ब्रजराज की मथुरा पुरी में वसुदेव-देवकी के घर गये। ऋषिराज को आया देखकर दोनों अति प्रसन्न हुए। उत्तम आसन पर उन्हें बैठाकर उनकी बहुत आव-भगत की। फिर मुनि के चरणोंदक से अपने घर तथा शरीर को पवित्र किया। मुनि प्रसन्न होकर उनको कथा सुनाने लगे। कथा कहते-कहते ऋषि ने बताया कि- हे देवकी! दुष्ट कंस ने तुम्हारे कई पुत्र मार डाले हैं, जिससे तुम्हारा मन अत्यंत दु:खी है। तुम्हारी तरह राजा नहुष की पत्नी चन्द्रमुखी भी दुखी रहा करती थी, किन्तु उसने संतान सप्तमी का व्रत विधि-विधान से किया, जिसके प्रताप से उसको संतान का सुख प्राप्त हुआ। तब देवकी ने हाथ जोड़कर मुनि से कहा कि- हे ऋषिराज! कृपा करके रानी चन्द्रमुखी का सम्पूर्ण वृत्तान्त और इस व्रत का विधान विस्तार से मुझे बताइये, जिससे मैं भी इस दु:ख से छुटकारा पा सकूँ।

लोमश ने कहा- देवकी! अयोध्या के राजा नहुष थे। उनकी पत्नी चन्द्रमुखी अत्यंत सुंदरी थी। उसी नगर में विष्णु गुप्त नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी स्त्री का नाम भद्रमुखी था। वह भी अत्यंत रूपवान सुंदरी थी। रानी और ब्राह्मणी में अत्यंत प्रेम था। एक दिन दोनों सरयू नदी में स्नान करने गईं] वहाँ उन्होंने देखा कि बहुत सी स्त्रियाँ सरयू में स्नान करके निर्मल

वस्त्र पहनकर एक मण्डप में श्री शंकर एवं पार्वती की मूर्ति स्थापित करके उनकी पूजा कर रही थीं। रानी और ब्राह्मणी ने यह देख उन स्त्रियों से पूछा कि बहिनों यह तुम किस देवता का और किस कारण से पूजन–व्रत आदि कर रही हो। उन स्त्रियों ने बताया कि हम संतान सप्तमी का व्रत कर रहे हैं और हमने शिव–पार्वती का पूजन चंदन, अक्षत आदि से षोडषोपचार विधि से किया है। यह सब इसी पुनीत व्रत का विधान है। यह सुन रानी और ब्राह्मणी ने भी यह व्रत करने का मन में संकल्प किया और घर वापस आ गई। ब्राह्मणी भद्रमुखी तो इस व्रत को नियम पूर्वक करती रही, किन्तु रानी राजमद के कारण व्रत को कभी करती कभी भूल जाती। कुछ समय बाद वे दोनों मर गईं। दूसरे जन्म में रानी बंदरिया और ब्राह्मणी मुर्गी हुई।

इधर ब्राह्मणी मुर्गी की योनि में भी कुछ नहीं भूली, वह भगवान शंकर और पार्वती का ध्यान करती रही। उधर बंदरिया (रानी) सब भूल गई। थोड़े समय बाद दोनों की वह योनि भी छूट गई। अब तीसरे जनम में फिर दोनों मनुष्य योनि में जन्मी। ब्राह्मणी ब्राह्मण कन्या के रूप में व रानी राजकन्या के रूप में जन्मीं। ब्राह्मण कन्या का नाम भूषण देवी रखा गया तथा उसका विवाह अग्नि भील नामक ब्राह्मण से हुआ। भूषण देवी इतनी सुंदर थी कि कामदेव की पत्नी रति भी उसके सामने फीकी थी। उसके चन्द्रमा के समान सुंदर, धर्मवीर, कर्मनिष्ठ, सुशील स्वभाव वाले आठ पुत्र उत्पन्न हुए। यह शिव के व्रत का पुनीत फल था। उधर शिव से विमुख रानी के कोई संतान नहीं हुई। निःसंतान वह दुखी रहती थी। रानी और ब्राह्मणी में पहले जैसी प्रीति अब भी बनी रही। वृद्धावस्था आते–आते रानी के एक पुत्र पैदा हुआ जो कि गूंगा, बहरा, अल्पायु वाला था। नौ वर्ष की उम्र में ही उसकी मृत्यु हो गई। अब तो रानी पुत्र शोक में अत्यंत व्याकुल व दुखी रहने लगी। दैवयोग से भूषण देवी अपने पुत्रों को लेकर रानी के यहाँ पहुँची। रानी का हाल सुन उसे भी बहुत दुख हुआ। कर्म और प्रारब्ध के लिखे को ब्रह्मा स्वयं भी नहीं मिटा सकते। कर्मयुक्त होने के कारण उसे यह दुख देखना पड़ा। इधर ब्राह्मणी के आठ पुत्र वैभव को देखकर रानी मन ही मन उससे ईर्ष्या करने लगी। उसके मन में पाप उत्पन्न हो गया। उस ब्राह्मणी ने रानी का संताप दूर करने के लिये अपने पुत्रों को रानी के पास छोड़ दिया। रानी ने ईर्ष्या के वशीभूत होकर लड्डू में विष मिलाकर उन आठों को खिला दिया। लेकिन भगवान शिव की कृपा से उन्हें कुछ नहीं हुआ। यह देख रानी अत्यंत आश्चर्य चकित रह गई और उसने मन में ठान लिया कि इस रहस्य का वह पता लगाकर रहेगी। जब भूषण देवी आई तो रानी ने उसे पूरी सच बात बता दी और कहा कि तूने ऐसा कौन सा व्रत, दान, पुण्य किया कि तेरे पुत्र नहीं मरे और तू किस कारण नित्य नये–नये सुख भोग रही है, सौभाग्यवती है। निष्छल होकर तू मुझे इसका भेद बता। मैं तेरी बड़ी ऋणी रहूँगी। रानी के दीन वचन सुन भूषण देवी बोली– सुनो, तुमको तीन जन्मों का हाल कहती हूँ। पहले जन्म में तुम राजा नहुष की पत्नी चन्द्रमुखी थी। मैं ब्राह्मणी भद्रमुखी थी। हम दोनों अयोध्या में रहते थे, मेरी तुम्हारी बड़ी प्रीति थी। एक दिन मैं और

तुम सरयू स्नान करने गये थे वहाँ स्त्रियाँ संतान सप्तमी का पूजन-अर्चन कर रही थीं। हम दोनों ने भी यह व्रत पूजन करने का संकल्प लिया था, लेकिन तुम पर तो राजपाट सवार था, तुम सब भूल गई और झूठ बोलने का दोष तुम्हें लगा था, जिसे तुम आज भी भोग रही हो। मैंने इस व्रत का आचार-विचार नियम पूर्वक सदैव पालन किया और आज भी करती हूँ।

दूसरे जन्म में तुम्हें बंदरिया की योनि मिली तथा मुझे मुर्गी की योनि मिली। शिवजी की कृपा से मैं इस योनि में भी इस व्रत के प्रभाव तथा भगवान को नहीं भूली और नियमानुसार निरंतर व्रत करती रही, लेकिन तुम अपने इस संकल्प को इस जन्म में भी भूल गई। मेरी समझ से तुम्हें इस व्रत को फिर से करना चाहिए, जिससे तुम्हारा यह संकट दूर हो जाय।

लोमश जी कहते हैं कि उस ब्राह्मणी की बात सुन रानी को पुरानी सब बातें याद आ गई और वह पश्चाताप करने लगी और ब्राह्मणी के चरण पकड़कर क्षमा याचना करने लगी तथा भगवान शिव-पार्वती के अपार महिमा के गीत-गाने लगी। उसी दिन से रानी ने नियमानुसार संतान सप्तमी का व्रत किया, जिसके प्रभाव से रानी को संतान सुख भी मिला और सम्पूर्ण सुख भोगकर रानी शिव लोक को गई। भगवान शिव के व्रत के प्रभाव से पथभ्रष्ट मनुष्य भी अपने सही रास्ते पर आ जाता है और अंत में मोक्ष को प्राप्त होता है।

लोमश ऋषि ने देवकी को भी संतान प्राप्ति हेतु इस व्रत को करने की सलाह दी। देवकी ने इस व्रत का नियम विधि विस्तार से समझाने को कहा। लोमश जी बोले- यह पुनीत व्रत भादौ मास की शुक्ल पक्ष सप्तमी के दिन किया जाता है। उस दिन ब्रह्म मूहूर्त में उठकर किसी नदी या कुँए के जल में स्नान करके फिर शिव-पार्वती की प्रतिमा स्थापित करें। इनके सम्मुख सोने, चाँदी के तारों अथवा रेशम के तारों का एक गण्डा बनाये, उसमें गाँठे लगायें। इस गण्डे की पूजा धूप, दीप, नैवेद्य से करके फिर उसे अपने हाथ में बाँधें और भगवान से शुद्ध भाव से अपनी कामना सफल होने की प्रार्थना करें। तदनन्तर सात पुआ बनाकर भगवान को भोग लगायें। सातों ही पुआ किसी ताँबे के पात्र में भरकर साथ में सोने-चाँदी के आभूषण यथाशक्ति रखकर सुपात्र ब्राह्मण को दान दें। फिर सात पुआ स्वयं ग्रहण करें। इस प्रकार इस व्रत का पारायण करना चाहिए। प्रत्येक शुक्ल पक्ष की सप्तमी को यह व्रत करने से समस्त पाप नष्ट होते हैं और भाग्यशाली संतान उत्पन्न होती है, अंत में शिव लोक की प्राप्ति होती है।

ऋषि ने कहा- मैंने विधि-विधान पूर्वक इस कथा का वर्णन कर दिया है, अब तुम इसको करो जिससे तुम्हें उत्तम संतान प्राप्ति होगी। यह कथा भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मात्मा युधिष्ठिर से कहा कि लोमश ऋषि हमारी माता को शिक्षा देकर चले गये। ऋषि के कथनानुसार मेरी माता ने इस व्रत को किया, जिसके प्रभाव से हम उत्पन्न हुए।

संतान सुख देने वाले इस व्रत को सबको करना चाहिये। सच्चे मन से इस व्रत को करने वाला अमर यश प्राप्त कर अंत में शिव को प्राप्त करता है।

हरतालिका व्रत कथा

एक दिना पार्वती जी शंकर जी से वुझि परी कि हे नाथ अपना किरपा कइ के हमका बताई कि इया उपास (व्रत) हम काहे किहेन रहा। तव शिवजी बताइनि कि हमका पति के रूप मं पावइ खातिर तुं इया उपास करे रहिउ हइ।

एह वरत करइ खातिर तु जउने जघा क चुने रहे उआ हिमालय पर्वत आइ। ओह मं वरन-वरन के पखेरू गान करथ। मिरगा विचरन करत हं। देउता, गंधर्व, किन्नर, साधु, संत सब ओंह परवत मं निवास करथ। ओका गिरिराज कहथं। अइसन लागत हइ मानउ उ अपने हांथे से सरग छुअत हइ। गंगा हुअइन से निकरी हइ। हे गिरजा! बचपन मं तुं हुअई तप किहे रहे हइ। वारा वरिष तक साले कइति मुंह करके धुंआ पि कइ रहे। चौंसठ विरिष वेले कइ पाती खाइ कइ रहे। माघ के महीना मं पानी मं खड़े होइ कइ अउ बैइसाख मं आगी मं घुसि कइ अउ सामन क महीना मं बरसत पानी मं बिना खाये पिये तप किहे। तोंहारि इया दशा देखिकइ तोहार पिता बहुत सोच मं परिगे। सोचइ लागे कि एंह विटिया केर वियाह केकरे साथ करब।

संजोग से नारद जी हिमाचल (राजा) घरे पहुँचिगे। शैलपुत्री (पार्वती) कइत दिखिन अउ बोलें कि हम विष्णु भगवान कर भेजा आयन हइ। जउ हमारि वाति मानी त अपने कनया केर दान विष्णु भगवान क कइ देई। तव राजा बोलें कि अगर भगमान कइ इहइ चाह हइ तब जरूर हम अपने विटिया केर हांथ विष्णु जी क देव। एतना सुनिके नारद जी अन्तर्धान होइगे। अउ जाइके विष्णु जी से वताईन कि अपना केर वियाह तंय होइ ग हइ।

एंह कइति हिमाचल राजा पिता पार्वती क बताइन कि- हे पुत्री! हम तोहका विष्णु भगवान के अर्पित कइ दिहेन हइ। एतना सुनिके पार्वती अपने सखिन के लगे गई अउ रोवत-रोवत मुर्छित होइ गईं। जब सखी कारण पूंछिसि तव बोली कि- हे सखी! हम त महादेउ वावा क वरन करइ चाहित हइ, पइ हमार वाप (पिता) हमका विष्णु भगवान क वरइ चाहत हं। एंह से हम ऐह सरीर का तियागइ चाहिथे। तब सहेली कहिसि कि तुं अइसने जंगल मं चली जा जउने क तोहार पिता कबउ दिखेन न हों। पार्वती अइसइ किहिनि, अव राजा सोचइ लागे कि हमरे बिटिया क देउ, दानव, किन्नर, राक्षस केउ चोराइ लइगा। ओनका इया सोच खाये जाति रही कि नारद जी से जउन वाति हारि चुकेन उआ कसि कइ पूर होई। राजा सोचके मारे मूर्छित होइ कइ गिरि परे। सब परजाजन ओनके मूरछा केर कारन जानइ क दउरि परे। तव राजा बोले

कि हमरे सोन कस विटिया के कितउ केउ हरि लइग कि साँप किरवा खाइ लिहिसि, कि वाघ जनाउर खाइ लिहिसि। सोचि के राजा कापइ लागें।

एके बाद राजा पार्वती के सखिन के साथ वन मं ओनका हेरइ चलि दिहिनि। ओंह कइति तुहूँ जंगल मं नदी के तीरे एक ठे गुफा मं पहुँचि गइउ। ओह गुफा के भीतर तुं वालू केर शिवलिंग वनाइ कइ, सखी के साथ गुफा मं घुसि कइ हमार अराधना करइ लागिउ। ओहि जघा पर हस्त नक्षत्र के तीजि के दिन विधि-विधान से हमार पूजन करइ लागिउ। तब रात मं हमार आसन ओंह जघा पर आइ ग अउ हम तोंहसे परसन्न होइ गऐन अउर जउन इच्छा होइ उआ वरदान मांगइ क कहने। तव तुं हमका आपन पति रूप में पावइ केर वर मांगिउ। हम 'एवमस्तु' (ऐसा ही हो) कहिके चल गयेन।

बड़े भोर होतइ तुं ओंह बारू के मूरति क नदी मं विसर्जन कइ दीन्हिउ। अउ अपने सहेली के संघे वरत केर पारन कीन्हिउ। ओह कइती राजा हिमाचलउ तोंहका हेरत-हेरत ओही नदी के तीरे पहुँचिगे। तोंहक न पाइकर मूर्छित होइ कइ गिरि परें। जब आँखी खुली त दुइ ठे कन्यन के आवत दिखिनि। उ तोंहका चीन्हिगे अउ हिरदय से लगाइ लिहिनि। अउर इतने वीहड़ वन मं आवउ केर कारन पूछिनि। तव पार्वती वताइनि कि हम पहिलेन से अपने मन मं संकलप कइलिहे रहेंन कि हम शिवजी से विवाह करव। पइ अपना हमरे मन के विना हमार वियाह विष्णु से करइ चाहेन। एहीं से हम वन मं चले आयेन। तव तुम्हारे पिता वोले कि बिटिया हम तोंहरे इच्छा के विरूद न करित। अउ उ तोंहका लइ कइ घरे आयें। अउर तोहार काज (विवाह) हमरे साथ कइ दिहिनि। एंहीं उपास के कारन हमार अर्धांग तोहंका मिला। इया भेद आजु तक हम केहू क नहीं वतायेन। शिव जी कहिनि-

एंह वरत केर नाम 'व्रतराज' काहे परा। तोंहका सखी हरनइकके लइ गइ एहीं से एकर नाम हरतालिका परि ग। तव पार्वती कहिनि स्वामी एकर नाउ त वताएन अव किरपा कइके एकर विधि-विधान अउ फल वताई। शिउजी वोले त सुना- सोहाग (सौभाग्य) कइ इच्छा राखइ वाली नारी एह उपास क रहइ। पहिले केरा के खमन केर मड़वा डारइ ओका सजावइ। शिउ-पार्वती केर मूरति विराजइ। विधि-विधान से पूजन करइ अउ भोग लगावइ, फेर राति भर जागरन करइ। वेर-वेर शिउ-पार्वती क परनाम करइ अउ कहइ कि शेरावली माता हम संसारिक भय से डरी हान। माता हमार रक्षा करी। सुख और अहिवात (सौभाग्य) दई। विधिवत कथा सुनिकइ अपने समरथ अनुसार सुपात्र ब्राह्मन को दान देइ। एकविधि से उपास (व्रत) करइ वाले केर सव कष्ट-पाप कटि जात हं। अन्त मं सिउ लोक क प्राप्त होत हइ।

भावार्थ

एक बार पार्वती जी के आग्रह करने पर कि- हे भोलेनाथ! आप मुझे कृपा करके

समझायें कि मैंने यह व्रत क्यों किया? तब भोलेनाथ ने कहा कि मुझे पति रूप में पाने के लिये तुमने यह व्रत किया।

इस व्रत को करने के लिये जिस स्थान को चुना वह हिमालय पर्वत है, जिसमें अनेक तरह के पक्षीगण गान करते हैं। अनेक प्रकार के मृग आदि विचरण करते है। जहाँ देवता गंधर्व, किन्नर आदि सिद्धजन रहते हैं। उसे गिरिराज कहते हैं जो अपने शिखर रूपी हाथों से आकाश को छूता रहता है, जहाँ हमेशा बर्फ ढँकी रहती है। गंगा जैसी देवनदी वहीं से निकलती है।

हे गिरिजे! बाल्यकाल में तुमने उसी स्थान पर तप किया। बारह वर्ष तक नीचे को मुखकर धूम्रपान किया। फिर चौंसठ वर्ष तक बेलपत्र खा कर रही। माघ के महीने में जल में रही, फिर वैशाख के महीने में अग्नि में प्रवेश कर कठिन तप किया तथा श्रावण के महीने में अन्न जल त्याग कर बाहर खुले में तप किया। तुम्हारे कष्ट को देख तुम्हारे पिता चिन्तित रहने लगे। सोचने लगे कि इस कन्या का विवाह किसके साथ करूँ। देवयोग से नारद जी उनके घर गये। नारद ने शैलपुत्री की ओर देखा और बोले कि हे राजन! मुझे विष्णु भगवान ने भेजा है। आप मेरी बात मानिये और अपनी कन्या का दान विष्णु भगवान को कर दें। तब राजा बोले– यदि प्रभु की यही इच्छा है तो अवश्य मैं अपनी बेटी का हाथ इनके हाथ में दूँगा। यह सुन देवर्षि आकाश में अन्तर्धान हो गये और जाकर विष्णु जी को बताया कि आपका विवाह कार्य निश्चित हो गया है। पिता (हिमाचल) ने बताया कि– हे पुत्री! मैंने तुम्हें भगवान विष्णु को अर्पित कर दिया है।

इतना सुन पार्वती अपनी सहेलियों के घर गई और पृथ्वी पर गिरकर विलाप करने लगीं। सखियों ने दु:ख का कारण पूछा। तब पार्वती बोली कि– हे सखि मैं महादेव को वरण करना चाहती हूँ, किन्तु मेरे पिता इस कार्य को बिगाड़ना चाहते हैं। इसलिये मैं इस शरीर को त्यागना चाहती हूँ। सखी ने सलाह दी कि तुम ऐसे वन को चली जाओ, जिसे तुम्हारे पिता जी ने देखा ही नहीं। पार्वती ने वही किया। अब राजा सोचने लगे कि या तो मेरी पुत्री को देव, दानव, किन्नर हरणकर ले गये। अब नारद को दिया हुआ वचन कैसे पूरा होगा। वे चिन्तातुर हो मूर्छित हो गिर पड़े। लोग दौड़ पड़े, उनकी मूर्छा का कारण जानने हिमाचल बोले– मेरी रत्नरूपी कन्या को या तो कोई हरण कर ले गया या सर्प ने काट खाया या सिंह– व्याघ्र ने उसे मार डाला या कोई राक्षस उसका हरण कर ले गया। वे काँपने लगे। जैसे तीव्र वायु चलने से कोई वृक्ष हिलता है।

तत्पश्चात् हे देवि! तुम्हें ढूँढने वे वन में सखियों के साथ निकले। उधर तुम भी सखी के साथ घूमती हुई भयानक जंगल में एक नदी किनारे गुफा में पहुँची। सखी के साथ तुम उस गुफा में प्रवेश कर बालू का लिंग वना मेरी आराधना करने लगी। उसी स्थान पर भाद्र मास हस्त नक्षत्र युक्त तृतीया को तुमने मेरा विधि–विधान से पूजन किया। तब रात्रि में मेरा आसन उस स्थान पर आ गया, और तुमसे प्रसन्न हो इच्छित वरदान मांगने को कहा। तब तुमने मुझसे पति रूप में प्राप्त

करने का वरदान मांगा। मैं तथास्तु कह कैलाश पर्वत पर चला गया। सुबह होते ही उस बालू की प्रतिमा को नदी में विसर्जित कर दिया तथा सखियों सहित इस व्रत का पारायण किया। हिमाचल भी तुम्हें ढूँढते-ढूँढते वहाँ पहुँचे। तुम्हें न देख वे जमीन पर गिर मूर्छित हो गए। उसी समय नदी तट पर दो कन्याओं को देखा। वे तुम्हारे पास आये और तुम्हें गले से लगा लिया और इस घनघोर जंगल में आने का कारण पूछा। तब तुमने कहा कि मैंने अपने मन में पहले से ही शिव जी को पति मान लिया है, किन्तु आप ने मेरे मन के विपरीत मेरा विवाह विष्णु से करना चाहा, इसलिये मैं वन में चली आई। यह सुन हिमाचल बोले- तुम्हारी इच्छा के विरूद्ध कार्य कदापि नहीं करूँगा और तुम्हें लेकर वे घर आये और तुम्हारा विवाह मेरे साथ कर दिया। इसी व्रत के कारण तुम्हें मेरा अर्धांग मिला। यह राज आज तक मैंने किसी को नहीं बतलाया, अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि इसका नाम व्रतराज क्यों पड़ा?

तुम्हें सखी हरण करके ले गई इसलिये इसका नाम हरतालिका पड़ा। स्वामी आपने इसका नाम तो बताया, अब इसकी विधि एवं फल भी बताइये। शंकर जी बोले तो सुनो-

सौभाग्य की इच्छा रखने वाली स्त्रियाँ इस व्रत को विधि पूर्वक करें। केले के पत्ते से मंडप बनायें और उसे सजायें। उसमें शिव-पार्वती की प्रतिमा को स्थापित करें। विधि-विधान से पूजन कर भोग लगायें तथा रात्रि जागरण करें। बारम्बार शिव-पार्वती को नमस्कार करें और कहें कि- हे सिंहवाहिनी! मैं सांसारिक भय से व्याकुल हूँ। आप मेरी रक्षा करें। सुख और सौभाग्य प्रदान करें और विधिवत् कथा सुनकर गौ-वस्त्र ब्राह्मण को दान करें। इस प्रकार व्रत करने वालों के सभी पाप नष्ट हो जाते है। अंत में शिवलोक मिलता है।

सोमवती व्रत कथा

धर्मात्मा युधिष्ठिर शर सइया पर परे भीष्म पितामह से परनाम करिनि अउ हितकर वाति बोले- कि भीम अउर अर्जुन के पराक्रम से सब जोधा मारेंगे अउर दुर्जोधन के गलत सलाह से कुल केर नास होइ ग। अब लरिका, बूढ़ अउ रोगी बचें हइ। भले हमार एक छत्र राजि है। हम पाण्डव नीक हन पइ तवउ हमरे मन मं वंशनाश केर संताप भरा है। उत्तरा केर गर्भउ अस्वत्थामा के अस्त्र से जरि ग, इया संताप हमका अउर असहनीय है। हे पितामह! अब अपना हमका एहं दु:खन के निवारन केर उपाइ बताई।

तब पितामह बोलें कि हम अपना क एक उत्तम वरत (व्रत) वताइथे। ओका करे से उत्तम चिरंजीवी संतान कइ प्राप्ति होति हइ। हे अर्जुन! जब सोमवती अमावस होइ ओह दिना पीपर (पीपल) के पेड़ के पास जाइ कइ विधि-विधान से जनार्दन कइ पूजा कइके फेर सोना, चांदी, वस्त्र, भोज्य पदार्थ आदि से 108 वेर पैकरमा करइ। इया उपास (व्रत) भगवान विष्णु का

पियार होइके कारन शुभ फल देत हइ। अपना उत्तरा से इया वरत करइ क कही। जउने ओकर गरभ जीवित हो जई अउ ओका तीनउ लोक म प्रसिद्ध गुणवान पुत्र मिली।

तव युधिष्ठिर पूंछिन कि हे तात एह वरत क सवसे पहिले के करिसि इया हमका अच्छे से बताई– तव पितामह बोले कि कांची नाम कइ एक ठे नामाजादिक नगरी हई ओकर ऊँच–ऊँच महल चांदी के नाई चमक थं। हुअन सब वरन केर मनई रहत हं। ओह नगरी मं सुन्दर अउ चतुर वैश्या रहतीं हंइ। जइसई कुबेर कइ अलकापुरी अउ इन्द्र कइ अमराउती। हुआं केर राजा रतनसेन बड़ा पराकरमी रहा। ओंही नगरी मं देउस्वामी नाम केर एक ब्राम्हन अउ ओकर पतनी धनवती रहत रही। ओकर जइसइ नाम रहा ओइसइ गुनउ रहा। धनवती के सात लरिकाअउ एक कन्निया रही। सातउ लरिका वियाहे रहें, अउ सुखी रहें। कन्निया कुमारी रही। ओकर नाम गुणवती रहा। उहउ अपने जोग पति चाहत रही। एकदिना एकठे तेजस्सी बराम्हन ओनके दुआरे भीखि मांगत आवा। ब्राह्मन केर सातउ पतोह अलग–अलग भिक्षा दिहिनि। सातउ क उ धन, सम्पत्ति अउ अचल अहिवात रहइ केर आशिर्वाद दिहिसि। कन्यउ ब्राम्हन क भिक्षा दिहिसि। पइ ओका उआ भिक्षक धरमवती होइ केर असीस दिहिसि। कन्या जाइ कइ अपेन महतारी से बताइसि तब महतारी फेरि से बिटिया क लइ गइ अउ ब्राम्हन क परनाम कराइसि, पइ फेरि उहइ असीस दिहिसि। तब महतारी बहुत दुखी भइ उस ब्राम्हन से पूंछिसि के अपना हमरे पुत्र वधुअन क त अच्छा आशिर्वाद दिहेन, पइ कन्या का काहे अइसन आशिर्वाद दिहेन। तब ब्राम्हन बोले– कि हम अपना के बिटिया का जथाजोग अशीश दिहेन, काहे कि वियाहे के समय सप्तपदी के बीचइ मं इया विधवा होइ जाई। एहं से एका धरम–करम करइ चाही। तब धरमवती छटपटाइ कइ कहिसि कि महराज अब एकर कउनउ नेवारन होइ त बताई। ब्राम्हन बोले कि ज अपना के घरे सोमा (धोबिन) आइ जाइ त एकर इया कष्ट दूर होई सकत हइ। धरमवती पूंछिसि कि इया सोमा के आई कहां रहति हइ। तब महात्मा कहिनि कि उआ धोबिनि आइ अउ सिंहल देस मं रहति हइ। अउ दुसरे दुआरे भिक्षा मांगइ चला गइ।

तब इया बाति धरमवती अपने लरिकन से बताइसि। अउ कहिसि कि जउने लरिका मं पिता केर गुन अउ महतारी केर बड़पन्न होइ उआ गुनवती के साथ जाइ कइ सोमा क घरे लइ आवइ। सब एक सुर मं बोले कि हम जानि थे कि अपना बिटिया के मोह मं असक्त हन एहंसे हमसब क दुरगम देस भेजइ चाहिथे। हममं हुअन जाइ कइ दुख भोगइ कइ सकति नहीं आइ। इयासुनि देवस्वामी (पिता) बोलें कि सात लरिकन के होते हुए हम पुत्रहीन हन। अब हम खुदइ सिंहल दीप जाब अउ सोमा के लइ अउब तब छोट लरिका कहिसि कि हम सिंहलदीप जाब अउ सोमा क लइ अउब। अपना करोघ न करी।

बहिनी के साथ चलि कइ कुछउ दिन मं उ सिंहल दीप पहुँचि ग। अउ समुद्र पार जाइ

कइ कोसिस करइ लाग। उ दिखिन के समुद्र किनारे एकठे बड़ा वरा केर पेंड हइ, ओके खोंखइले में गिद्ध केर छोट-छोट बच्चां घुसे कुलबुलात हं। भाई बहिनी ओहिं तरे बइठ रहें। सामि कइ गिद्ध आवा अउ बच्चन क खवावइ केर कोशिस करइ लाग। पइ लरिकउने सब भोजन खो गिरावइ लागे। तब गिद्ध पूंछिसि कि लरिकउ एतना कोमर मांस काहे नहीं खाते लाग। तब लरिका बताइनि कि पेड़े के खाले दुइ ठे मनई बइठ हमा। जब तक उन स्वीकरिही हम भोजन न करव। तब गिद्ध भी उन दोनों पर दयालु हो गया अउर उनसे आग्रह कइके भोजन कराइसि, अउ कहिसि कि जउने काम से एतनी दूर आये हइ हमका बतावा, हम तोहार मदद करव। तब भाई बोला हम सोमा केर लइ आवइ खातिर समुद्र पार जाइ चाहिथे। तब गिद्ध बोला कि हम सुरूज उअइ के पहिले अपना क समुद्र पार पहुंचाइउ देव अउ सोमा केर। घरउ बताइ देव।

गिद्ध के सहारे दुनउ भाई-बहिनी सिंहल दीप पहुँचि गें, अउ सोमा के चोपरि क रोज बटोरि कइ लीपत रहें। अइसनइ कारत सा भर बीते ग। तब एक दिना सोमा अपने पतोहिनिन से पूंछिसि कि के रोज बड़े सबेरेन चौपार का लीपि बटोरि जांथइ। सब एक सुर मं बोले हम नहीं जानित। तब सोमा एक दिन रातिन से लुकाइ कइ बइठि गइ। देखिसि कि बड़े तड़केन ब्राम्हन कन्निया घरे क बटोरति लागि हइ अउ व्रती भाई लीपत लाग हइ। तब सोमा कहिसि कि बराम्हन आहे अउ हमरे घरे कर टहल कइके हमका घोर नरक मं डरते लगा हइ। हमार केतनी दुरदशा होई।

तब सिवस्वामी बोला कि इया हम अपने गुणवती बहिन के सोहाग के रक्षा खातिर करित लाग हइ। उ वताइन कि तोहरे लगे रहि कइ इया दास करम कइके हम सप्तपदी के बीच बहिन का विधवा होइ से वचइ खातिर करति लाग हइ। तब सोमा बोली। अपना अइसन न कही हम अपना के साथ चलइ क तयार हन। सोमा भीतर जाइके अपने बहुअन से बोली कि हम एनके साथ जाइ रहेन हइ पइ हमरे लउटइ के बीच जउ हमरे रजि केर कउनउ मनई मरि जई त ओका न जरावा जई। बल्कि हमरे आवइ तक ओकर रक्षा किहे।

अब सोमा भाई बहिनी क साथ मं लइ कर आकाश के रास्ते ओंनके देश पहुँचि गइ। अवत धनवती क खुसी कइ सीमा न रही। जल्दिन योग्य वर खोजि कइ गुणवती केर वियाह रचाइ दिहिन। सोमा के सहायता से वियाह सम्पन्न भ। लेकिन सप्तपदी के बीचइ म रूद्रसेन (पति) मरि ग। इया देखि सब रोवइ-धोवइ लागें पर सोमा चुप रही। सोमा जल्दिन गुणवती कं व्रतराज से होइ वाला मृत्यु विनाशक पुण्य संकलप कइके दइ दिहिसि। रूद्रसेन जिन्दा होइगा। सोमा सबसे विदा लइकइ कइ अपने घरें चला गइ।

सोमा के घरे पहुँचइ के पहिलेन ओकर लरिका फेर पति अउ दमाद मरिगें। राहइ मं

संजोग से सोमवती अमावस कइ तिथिउ आइ गइ। ओका राहि मं रूइ के बोझ लिहे एक बुढ़िया मिली। उ कहिसि कि थोरक हमार बोझ ठेंघि ले हम गरूआईं मरिथे। सोमा बोली आजु अमावस आइ हम रूई न छुअव। एके वाद भूल के बोझा लिहे एक ठे अउरति मिली उहउ आपन बोझा उतारइ क कहिसि पइ सोमा बोली आजु अमावस क हम तूल-मूल का हाथ न लगाउब।

एके बाद सोमा जाइके नदी मं नहाइसि अउ पीपर के पेड़ के लगे पहुँची। शक्कर लइ कइ ओहें पेड़ कइ 108 पइकरमा करिसि। एतना करतइ ओकर पति, पुत्र, दामाद सब जी उठे। घर धन-धान्य से पूर होइगा। घर पहुँचे पर पतोहिनी सोमा क परनाम करिनि अउ पूंछिनि कि इया चमत्कार कसि कइ होइगा। तब सोमा बताइसि कि हम गुणवतीक बुतराल (सोहाग) कइ पुन्नि दइ दिहेन हइ। हम ओहि फल क छुइ कइ भगमान विष्णु कइ पूजा अउर करेन अउर 108 पैकरमा करेन। एही फल से इ सब जि उठें हइ। एहं से तुं सब केउ एहं व्रत क करा। एह व्रत के करे से कवउ वैधव्य न अई। सदा सोहाग वना रही। इया तरह से सोमा अपने वन्धु-परिवार सहित बहुत से सुखभोग कइके आखिर मं विष्णु लोक क गइ।

सुनिकर युधिष्ठिर बोल- तात अब अपना व्रतराज केरि विधि विस्तार से बताई-

व्रत करइ वाला भोर मं उठिकई तलायें मं नहाइ कर साफ रेशमी वस्त्र पहिरइ अउ पीपर के पेड़े के पास जाइके मूल मंत्रन द्वारा विष्णु भगवान कइ पूजा करइ।

मंत्र :- हे व्यक्त और अव्यक्त स्वरूप वाले, सृष्टि, स्थिति और संहार कर्ता आदि मध्य और अन्त से रहित, विष्टरश्रवस (भगवान विष्णु) आपको बारम्बार नमस्कार है।

फिर पूरे विधि-विधान से गोविन्द का पूजन करें और आगे इस 'अश्वत्थ हित भुग' मंत्र से पीपल का पूजन करें।

मंत्र का अर्थ है कि -

अग्नि के वास स्थान और गोविन्द के सदैव आधारभूत अश्वत्थ (पीपल) हमारे संपूर्ण पापों को केर हरें। तुम मूल में ब्रह्मा स्वरूप बीच में विष्णु स्वरूप और अग्रभाग में शिव रूप हो (तोहका बारम्बार नमस्कार है।) फिर पकरमा करइ। एके लिए सोना, चांदी, मोती, माणिक्य भक्ष्य पदार्थ से भरा एक-एक पात्र उठाइ कइ 108 बार पइकरमा करइ। फेर इया दान सयोग ब्राम्हन या गुरू क देइ। सोमा के तुष्टि खातिर सोहागिन स्त्रियन केर पूजा कइके वराम्हन् का अन्न दान करइ। एके बाद मउन होइ के भोजन करइ।

भीष्मजी बोले कि अब अपना द्रोपदी, सुभद्रा अउ उत्तरा से इया वरत करवाई। तब युधिष्ठिर बोले- जेके पास जादा सोना, धन, सम्पत्ति न होइं उआ कसिकइ इया वरत करइ।

पितामह बोले- समरथ के अनुसार हरकेइ फूल, फल, अन्न, भक्ष्य पदार्थ के द्वारा इया व्रत सब कइ सकत हइ। सबका ओइसनइ फल मिली।

भावार्थ

शर शैय्या पर पड़े भीष्म पितामह के पास जाकर धर्मात्मा युधिष्ठिर ने प्रणाम किया और हितकारी वचन बोले। उन्होंने कहा कि भीमसेन के कोप से और अर्जुन के पराक्रम से सब कौरव और योद्धा मारे गये। दुर्योधन की गलत सलाह से मेरे कुल का नाश हो गया। अब बालक, वृद्ध और दुखी मनुष्य ही बचे हैं। सिर्फ हम पाँच पाण्डव ही बचे हैं। यद्यपि हमारा एकछत्र राज्य है, किन्तु हमें यह अच्छा नहीं लगता। वंशनाश देखकर मेरे मन में हमेशा संताप रहता है। उत्तरा के गर्भ का बालक भी अश्वत्थामा के अस्त्र से जल गया। यह पिण्ड विच्छेद देख मुझे दुगुना दुख हो रहा है। हे पितामह! आप मुझे इन दुखों से निवारण का उपाय बतलाइये-

तब भीष्म जी बोले- सुनो मैं आपको एक उत्तम व्रत बतलाता हूँ, जिसके करने मात्र से चिरंजीवी संतान की प्राप्ति होगी। हे अर्जुन! जब सोमवती अमावस्या हो, उस दिन अश्वत्थ (पीपल) के वृक्ष के समीप आकर जनार्दन (कृष्ण) का पूजन करें। कोई भी रत्न, सोना, चाँदी, भोज्य पदार्थ, लड्डू, पेड़े आदि लेकर 108 बार प्रदक्षिणा करें। यह व्रत भगवान विष्णु को प्रिय होने से शुभ फल देता है। हे प्राज्ञे! तुम उत्तरा से यह व्रत कराओ, उसका गर्भ जीवित हो जायेगा और तीनों लोकों में विख्यात, गुणवान पुत्र होगा। तब युधिष्ठिर पुनः बोले कि इस व्रत को रूचि पूर्वक प्रथम करने वाला कौन है और इस व्रत कथा को विस्तार पूर्वक बतलाइये-

तब भीष्म पितामह बोले- सुनो, कांची नाम की एक सुविख्यात नगरी है, जो चाँदी के पर्वत जैसे ऊँचे-ऊँचे महलों से सुशोभित है। उसमें सभी वर्णों के लोग रहते हैं। यह नगरी रूप और चातुरी में प्रवीण वेश्याओं से सुशोभित है। जैसा कि कुबेर की अलकापुरी या इन्द्र की अमरावती। वहाँ का राजा रत्नसेन बहुत ही पराक्रमी था। उसी राज्य में देव स्वामी नामक एक ब्राह्मण व धनवती नाम की उसकी स्त्री भी रहती थी। उस स्त्री का जैसा नाम था, वैसा गुण भी। उसे सात गुणवान पुत्र व एक कन्या थी। जिसका नाम गुणवती था। सातों पुत्र विवाहित व सुखी थे। कन्या अभी अपने तुल्य पति चाहती हुई कुंवारी थी। एक दिन उनके द्वार पर एक तेजस्वी ब्राह्मण भिक्षा के लिए उपस्थित हुआ। सातों बहुओं ने उसे अलग-अलग भिक्षा दी और उसने सातों को सौभाग्य सम्पत्ति के साथ अचल सुहाग का आशीर्वाद दिया। उसके बाद माता ने गुणवती को भी भिक्षा देने के लिए भेजा। कन्या ने भी ब्राह्मण का चरणाभिवादन किया। ब्राह्मण ने उसे धर्मवती होने का आशीर्वाद दिया। गुणवती ने ब्राह्मण का दिया आशीर्वाद माता को बताया। माँ ने पुनः पुत्री को लेकर ब्राह्मण को प्रणाम करवाया, किन्तु ब्राह्मण ने फिर वही आशीर्वाद देकर उन्हें संतोष दिया। तब ब्राह्मणी ने कहा ब्राह्मण आपने मेरी पुत्र वधुओं को तो

प्रणाम करने पर अच्छा-अच्छा आशीर्वाद दिया, किन्तु पुत्री को आपने विपरीत आशीर्वाद दिया। तब ब्राह्मण ने कहा कि मैंने आपकी पुत्री को यथायोग्य ही आशीर्वाद दिया। यह विवाह के समय सप्तपदी के बीच में ही विधवा हो जायेगी। इसलिये इसे धर्माचरण ही करना चाहिये। तब व्याकुल हो धनवती बोली कि- हे श्रेष्ठप्रिय! अब आप यदि इसका कोई उपाय जानते हैं तो बताईये। तब विप्र बोले कि- हे सुन्दरी! यदि तेरे घर सोमा आ जाये तो इसका वैधव्य मिट जाये। धनवती ने पूछा- सोमा कौन है? किस जाति की है, कहाँ रहती है? ब्राह्मण बोले- वह धोबिन जाति की स्त्री है, उसका निवास सिंहलद्वीप है। ब्राह्मण चला गया।

तब धनवती ने अपने पुत्रों को बुलाकर सब बात बताई और कहा कि जिस भाई में पिता की भाँति और माता के वचनों का गौरव हो, वह बहिन के साथ जाकर सोमा को घर लाये। पुत्र बोले हम जानते हैं कि आप पुत्री के मोह में आसक्त हैं, इसलिये हम को दुर्गम दूर देश भेजना चाहती हैं। हममें वहाँ जाने और दुख भोगने की शक्ति नहीं है। यह सुन देवस्वामी (पिता) बोले कि सात पुत्रों के होते हुए भी मैं पुत्रहीन ही हूँ। अब मैं स्वयं सिंहलद्वीप जाऊँगा और सोमा को लाऊँगा। तब छोटे पुत्र ने कहा- पिताजी आप क्रोध के वशीभूत हो ऐसा मत कहिये। मैं सिंहलद्वीप जाऊँगा और सोमा को लाऊँगा।

बहिन के साथ चलकर कुछ ही दिनों में वह सिंहलद्वीप पहुँच गया और समुद्र पार जाने का प्रयास करने लगा। उसने देखा वहाँ एक विशाल वटवृक्ष के कोटर में गिद्धराज के बच्चे सुख पूर्वक रहते हैं। भाई-बहिन ने उसी के नीचे बैठकर दिन बिताया। उसी समय गिद्ध भोजन लेकर आया और बच्चों को भोजन कराने लगा। बच्चों ने भोजन न कर नीचे गिराना शुरू किया। तब गिद्ध ने पूछा कि- हे बच्चों! इतना कोमल मांस तुम लोगों ने क्यों नहीं खाया? तब बच्चे बोले नीचे दो मनुष्य बैठे हैं। उनके स्वीकार किये बिना हम भोजन नहीं करेंगे। तब गिद्ध दयाद्र हो बोला- हे द्विज! आप दोनों भोजन करें और जो भी कार्य हो मुझे बतायें मैं आपकी मदद करूँगा। तब ब्राह्मण बोला हम सोमा को लाने के लिये समुद्र के उस पार जाना चाहते हैं। उसने कहा- ठीक है। मैं सूर्योदय के पहिले आप लोगों को समुद्र पार उतार दूँगा और सोमा का घर भी दिखा दूँगा।

दोनों गिद्ध की मदद से सोमा के घर के पास पहुँच गये और एक वर्ष तक उसके घर को साफ कर लीप-पोत कर सुन्दर बनाते रहे। तब सोमा ने अपने पुत्रों और बहुओं से पूछा कि यहाँ घर के चौक को कौन झाड़ू लगाकर लीपा करता है। सबने कहा- हम नहीं जानते। तब सोमा रात में छिपकर बैठ गई। उसने देखा कि ब्राह्मणी की कन्या घर में झाड़ू लगा रही है और व्रती भाई लीप रहा है। सोमा ने कहा- आप ब्राह्मण हो, हमारे घर का कार्य आप करके हमें घोर पाप में डाल रहे हैं। मेरी तो जाने क्या-क्या दुर्दशाएँ होंगी। तब शिव स्वामी (भाई) बोला कि हम अपनी

देवी स्वरूप बहिन गुणवती के लिये यह कर रहे हैं, जिससे सप्तपदी के बीच वह वैधव्य योग से बच सके। तुम्हारे समीप रहने से योग का नाश हो सकता है इसलिये हम बहिन सहित यह दास कर्म कर रहे हैं। तब सोमा बोली– अब ऐसा न कहना और उनके साथ चलने को तैयार हो गई। घर जाकर अपनी बहुओं से कहा कि मैं इनके साथ जा रही हूँ, किन्तु यदि मेरे जाने पर मेरे राज्य का कोई व्यक्ति मर जाये तो उसको मेरे आने तक वैसे ही रक्षा करते हुए रखना, उसे जलाना नहीं।

ऐसा कह सोमा उन भाई–बहनों को साथ लेकर आकाश मार्ग से समुद्र पार कर उनके देश पहुँच गई। उसे देख धनवती ने प्रसन्न हो उसकी पूजा की और सुयोग्य वर लाकर जो बहिन के समान गुणवान था, उस धोबिन सोमा ने उसका विवाह करवा दिया। किन्तु इसी बीच सप्तपदी के बीच रूद्रसेन (पति) मर गया। यह दृश्य देख सब रोने लगे। किन्तु सोमा चुप रही। उसने गुणवती को शीघ्र ही व्रतराज से होने वाला मृत्यु विनाशक पुण्य विधि–पूर्वक संकल्प करके दिया। रूद्रसेन जीवित हो गया और सबसे विदा ले सोमा अपने घर चली गई। वहाँ जाकर देखा कि पहले उसका पुत्र फिर पति और बाद में जामाता भी मर गया। और उसी समय संयोग से सोमवती अमावस्या तिथि भी आ गई। उसे रास्ते में रूई का बोरा लिये एक बूढ़ी स्त्री मिली, उसने उसे लेने को कहा– किन्तु उसने कहा– आज अमावस्या तिथि है, मैं रूई को स्पर्श तक न करूँगी। इसके बाद मूल के वोझ से लदी एक स्त्री मिली, उसने भी बोरा उतारने को कहा। सोमा बोली– आज मैं तूल और मूल को कदापि नहीं छू सकती।

इसके बाद सोमा नदी के किनारे जाकर स्नान कर एक पीपल वृक्ष के पास पहुँची। उसने शक्कर लेकर उस वृक्ष की 108 प्रदक्षिणायें कीं। उधर उसके जामाता, पुत्र व पति जीवित हो गये। उसका घर धन–धान्य से पूरित हो गया। सभी बहुओं ने उस तपस्विनी को प्रणाम किया और पूछा– देवी यह चमत्कार कैसे हो गया? उसने कहा– मैंने गुणवती को बुतरला का पुण्य दे दिया था। लौटकर मैंने उसी के फल को स्पर्श किया और भगवान विष्णु की पूजा की और हाथ में शक्कर लेकर 108 बार प्रदक्षिणा की। इसी के फल से ये सब जीवित हो गये। तुम सब भी इस व्रत को करो। इससे कभी वैधव्य न होगा। बल्कि सदैव सौभाग्य रहेगा। इस प्रकार सोमा ने अपने बन्धु–बान्धवों सहित बहुत से भोगों को भोगा और सब परिवार सहित वह विष्णु लोक को गई।

तब युधिष्ठिर ने व्रतराज की विधि विस्तार पूर्वक बतलाने को कहा– व्रत करने वाला प्रातः काल उठकर जलाशय में स्नान कर रेश्मी वस्त्र धारण करे। हे कुरू नन्दन! फिर पीपल वृक्ष के समीप जाकर उसके मूल मंत्रों द्वारा विष्णु भगवान की पूजा करे। पूजा का मंत्रः– 'हे व्यक्त और अव्यक्त स्वरूप वाले सृष्टि, स्थिति और संहार कर्ता! आदि– मध्य और अन्त से रहित विष्टरश्रवस (विष्णु भगवान) आपको बारम्बार नमस्कार है।'

इस प्रकार पूरे विधि-विधान से गोविन्द का पूजन करें। फिर आगे इस 'अश्वत्थ' मंत्र से पीपल का पूजन करें। मंत्र का अर्थ है कि - अग्नि के वासस्थान और गोविन्द के सदैव आधारभूत अश्वत्थ (पीपल) मेरे संपूर्ण पापों को हरो। तुम मूल में ब्रह्मरूप, बीच में विष्णु रूप और अग्र भाग में शिव रूप हो। तुम्हे बारम्बार नमस्कार है। फिर प्रदक्षिणा करें। उसके लिये सोना, चाँदी, मोती, हीरा-जवाहरात पदार्थ से एक-एक पात्र उठा 108 बार प्रदक्षिणा करें, अन्त में वह द्रव्य गुरू अथवा ब्राह्मण को दें। फिर सोमा की संतुष्टि के लिये सुहागिन स्त्रियों का पूजन कर ब्राह्मणों को अन्नदान करें। फिर स्वयं मौन होकर भोजन करें। अब आप द्रौपदी, सुभद्रा और उत्तरा से यह व्रत करवाओ। तब युधिष्ठिर ने पूछा कि जिसके पास ज्यादा स्वर्ण, धन-सम्पत्ति न हो, वह इस व्रत को कैसे करे-

पितामह बोले सामर्थ्य के अनुसार हर कोई फूल-फल, भक्ष्य पदार्थ के द्वारा इस व्रत को कर सकता है, उसे इसी प्रकार का फल मिलेगा।

कार्तिक अइतवार व्रत कथा

कातिक महीना के हर अइतवार के दिन अलोना (बिना नमक) केर वरत कीन जात हइ। सबेरे से नहाइ धोइकइ इया उपास सुरू होत हइ। मध्यान दुपहरी मं जब सूरज देउता सीध मं आइ जात हं। आंगन का गोबर से लीपि कइ फेर कलशा चउक बनाइ कइ ओहं पर कलशा (जल से भरा) धइ कइ ओहं पर दीपक जलाइ कइ धर देत हं। ओके सामने गोबर केर गोल-गोल दुइठे तलाउ बनाइ देत हं। गउर सुपारी धइकइ चाउर (अक्षत) हरदी, कुमकुम, फूल-फल, घी-गुड़ से पूजन अउ होम कीन जात हइ। अउ नरियर, गुड़, अउ फल से भोग लगाइ कइ सबका परसाद बांटा जाथइ।

सुरज अस्त होइके पहिले उपासे रहइवी मेहेरिये पारन करतीं हइ। ओहमं नये चाउर कइ गोलहंथी घिउ अउ दूध से खातीं हइ। अउकि अंगाकर (बिना तवा में सेंके) रोटी घिउ, गुड़ अउ दूध के संघे खाती हइ। एहं उपास मं बिस्तर पर नहीं सोउती वरूक मुइयइ मं कुछ दरी कमरा (कंबल) बिछाइ कइ सोइ जाती हइं। अइसनि लोक बिसुआस अउ मानता हइकि एहं वरत के करे से सब रोग-दोख दूरि होइ जात हंइ, अउ सुख-शान्ति मिलती हइ।

भावार्थ

कार्तिक महीने के प्रत्येक रविवार को अलोना (बिना नमक के) व्रत किया जाता है। नदी या सरोवर में नहा-धोकर दोपहर के समय आँगन में गाय के गोबर से दो गोलाकार तलाब बनाते हैं और उसी के सम्मुख चौक पूरकर उस पर कलश रखते हैं। गौरी गणेश (गोबर की

गौर) व सुपारी गणेश जी का प्रतीक स्वरूप रखकर उसकी पूजा हल्दी–कुमकुम, फूल व अक्षत आदि अर्पित कर की जाती है। सबसे पहले गोबर से बने तालाब में एक में दूध और दूसरे में पानी भरकर सूर्य देवता का आवाहन किया जाता है। फिर विधि–पूर्वक पूजन और हवन किया जाता है। श्रीफल, गुड़, फल आदि का भोग लगाकर प्रसाद वितरण किया जाता है।

शाम के वक्त उपवासरत गृहणी नये चावल की खिचड़ी (गोलहंथी) घी के साथ तथा दूध के साथ खाती हैं। अंगाकर (बिना तवे पर सेंके) रोटी बनाकर उसी को घी–गुड़ व दूध के साथ खाकर व्रत का पारण करती है। जमीन पर सो कर रात बिताती हैं।

धनतेरस व्रत कथा

एक बेर भगमान विष्नूजी लक्ष्मी सहित धरती पर घूमइ आएँ। विष्नूजी लक्ष्मी से बोले कि तुं हिंयइन रूका हम दखिन दिसा कइति जाइति हइ। पइ लक्ष्मी उनके पाछे–पाछे चलि दिहिनि। कुछु दूर मं रूख (गन्ना) केर खेत मिला। लक्ष्मीजी एक ठे रूख टोरि कइ चुहुकइ लागीं। ब भगमान लउटें त लक्ष्मी जी का रूख चुहत देखि कइ गुस्साइगें अउ ओनका सराप दइ दिहिनि। कहिनि कि जउने किसान केर खेत आइ अव तु ओकर वारा (12) सालतक सेवा करा।

विष्णुजी त अपने धाम क्षीरसागर लउटिगें, पइ लक्ष्मी जी किसान क धन–दौत से पूर करत रहीं। बारह वरिस के बाद जब लक्ष्मीजी विष्णु के लगे जाइ लागी त किसान ओनका रोकिं लिहिनि भगमान बोलावइ आयें पइ किसान ओनका नहीं जाइ दिहिसि। तब भगमान विष्णु किसान से कहिनि कि तुं अपने परिवार सहित गंगा नहाइ चलेजा। ओकर कौड़ी दिहिन अउ कहिनि कि एहं कउड़िन क गंगा मं छोड़ि दिहे। तव तक हम हियइनि रहव।

किसान अइसइ किहिसि। कउड़ी के गंगाजल मं डरतइ चारि चतुर्भुज निकरे। अउ कउड़ी लइके चलइ क तयार होइंगे। अइसन अचरज देखिके किसान गंगाजी से पूंछिसि – इ चारि हाँथ केकर आहीं। तब गंगाजी किसान क बताइनि के इ चारउ हाँथ हमरइ आहीं। तुं जउन कउड़ी हमका भेंट कीन्हेउ तोंहका के दिहिसि। तब किसान बताइसि कि हमरे घरे मं दुइजने (स्त्री–पुरुष) आये रहें उ भगमान विष्णु अउ लक्ष्मीजी आहीं। तुं लक्ष्मीजी क न जाइ दिहे। नहीं त पुनि गरीब होइ जावे।

किसान घरे लउटा पइ लक्ष्मिीजी का नहीं जाइ दिहिसि। तब भगमान किसान क समझाइनि कि हमरे सराप के कारन लक्षिमीजी बारह वरिष तोहरे घर मं रहि कइ तोंहार सेवा

करिनि। लक्षिमीजी त बड़े चलायमान (चंचल) हई। बड़े-बड़े एनका नहीं रोकि पाये एहं से तुं जिद्द न करा।

तब लक्षिमी जी कहिनि - हे किसान! जउ तुं हमका रोंकइनि चाहते हइ त काल्हि धनतेरसि हइ। आपन घर साफ-सुथरा राखे। अउ घरे मं घिउ कइ दिया जराइ कइ राखे। हम तोंहरे घरे अउब तब तंह हमार पूजा-अर्चना किहे, पइ हम देखाब न।

किसान लक्षिमी जी कइ वाति मानि लिहिसि, अउ जइ सइ उ बताये रहीं ओइसइ ओनकर पूजा अर्चना किहिसि तव ओकर घर धन-सम्पति से भरि ग। एंही तरह उआ हर साल लक्ष्मीजी कइ पूजा करइ लाग। ओके घर मं धन दउलत केर भंडार भरि ग। ओकर देखा-देखी समाज केर अउरउ जने धनतेरसि केरि पूजा करइ लागें।

धनतेरस के साथ-साथ जमराजउ के पूजन केर रिवाज हइ। एक दिना जमदूत जमराज से कहिनि कि अकाल मउति से हमारउ मन पसीजि जात हइ। तब जमराज दुखी मन से कहिनि कि का कीन जाइ विधि के विधान के मान राखइ खातिर हमहूँ क अइसन खराप (अप्रिय) काम करे परत हइ। धनतेरसि के विधि-विधान से पूजा-पाठ करे से अकाल मउति से छुटकारा मिलि सकत हइ। जउने घरेन मं इया पूजा होथि हुँआ अकाल मउति केर डेरि नहीं रहत। एंही घटना के परभाउ से धनतेरसि के साथ-साथ जमराजउ केरि खातिर दीपदान करइ केर चलन होइ ग हइ।

भावार्थ

एक बार भगवान विष्णु लक्ष्मीजी सहित पृथ्वी पर भ्रमण करने आये। भगवान लक्ष्मीजी से बोले- तुम यहीं ठहरो, मैं दक्षिण दिशा की ओर जा रहा हूँ। पर लक्ष्मीजी विष्णु के पीछे-पीछे चल दीं। कुछ दूर चलने पर गन्ने का खेत मिला। लक्ष्मीजी एक गन्ना तोड़कर चूसने लगीं। जब भगवान लौटे तो लक्ष्मीजी को गन्ना चूसते देख क्रोधित होकर उन्हें श्राप दे दिया। कहा कि यह जिस किसान का खेत है, बारह वर्ष तक तुम उसकी सेवा करो।

विष्णुजी तो क्षीरसागर लौट गये और लक्ष्मीजी किसान को धन-धान्य से पूर्ण करती रहीं। बारह वर्ष के बाद लक्ष्मी विष्णु के पास जाने लगीं, पर किसान ने उन्हें जाने न दिया। भगवान भी बुलाने आये, पर किसान ने उन्हें रोक लिया। तब विष्णु भगवान ने उसको कुछ कौड़ियाँ दीं और बोले- तुम परिवार सहित गंगा स्नान करने जाओ और इन कौड़ियों को गंगाजल में छोड़ देना, तब तक मैं यहीं रहूँगा।

किसान ने ऐसा ही किया। गंगाजी में कौड़ियाँ डालते ही चार चतुर्भुज निकले और

कौड़ियाँ लेकर चलने को उद्यत हुए। ऐसा आश्चर्य देखकर किसान ने गंगाजी से पूछा – ये चार हाथ किसके हैं? गंगाजी ने बताया कि ये हाथ मेरे ही हैं। तुमने जो कौड़ियाँ मुझे भेंट कीं, वे तुम्हें किसने दी थीं?

किसान बोला– मेरे घर में एक स्त्री–पुरुष आये थे। गंगा बोली वे लक्ष्मी जी और विष्णु भगवान थे। तुम लक्ष्मी जी को मत जाने देना, नहीं तो पुनः निर्धन हो जाओगे।

किसान ने घर लौटने पर लक्ष्मीजी को नहीं जाने दिया। तब भगवान ने किसान को समझाया कि मेरे श्राप के कारण लक्ष्मीजी तुम्हारे घर में बारह वर्ष से रहकर तुम्हारी सेवा कर रही हैं। लक्ष्मी तो बड़ी चंचल है। इन्हें तो बड़े–बड़े नहीं रोक पाये, इसलिये तुम हठ मत करो।

फिर लक्ष्मी जी बोली कि– हे किसान! यदि तुम मुझे रोकना चाहते हो तो कल धनतेरस है, तुम अपना घर स्वच्छ रखना और रात्रि में घी का दीपक जलाकर रखना। मैं तुम्हारे घर आऊँगी। तुम मेरी पूजा–अर्चना करना। परन्तु मैं अदृश्य रहूँगी।

किसान ने लक्ष्मी जी की बात मान ली और उनके द्वारा बताये गये विधि से पूजन किया। तब उसका घर धन–धान्य से भर गया। इस प्रकार हर वर्ष वह धनतेरस पर लक्ष्मी जी की पूजा करने लगा और समाज के अन्य लोग भी देखा–देखी उनका पूजन करने लगे।

धनतेरस के साथ–साथ यमराज की कथा भी प्रचलित है। एक बार यमदूतों ने यमराज से कहा कि अकाल मृत्यु से हमारे मन भी पसीज जाते हैं। तब यमराज ने द्रवित हो कहा– क्या किया जाय? विधि के विधान की मर्यादा हेतु हमें ऐसा अप्रिय कार्य करना पड़ता है। अकाल मृत्यु से बचने के लिए–धनतेरस के पूजन और दीपदान को विधि पूर्वक अर्पण करने से अकाल मृत्यु से छुटकारा मिल सकता है। जिन घरों में यह पूजन होता है। वहाँ अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। इसी घटना से धनतेरस के दिन धन्वन्तरी पूजन के साथ–साथ यमराज को दीपदान भी प्रचलित है।

गोवर्धन व्रत कथा

एक बेर भगमान श्री कृष्ण गाय चरावत–चरावत ग्वाल–बालन के साथ गोवर्धन के तराई मं पहुँचिंगे। हुअन उ दिखिनि के हजारन गोपी–ग्वाल छप्पन परकाल केर भोजन धई कइ बड़े उत्साह से नाचि गाइ कइ इन्द्रदेव कइ पूजा करति हं, अउ खुसी मनाइ रहे हइ। कृष्ण के पूंछेन उ बताइनि कि इन्द्रदेवता का परसन्न करइ खातिर हम इया उराउ (उत्सव) करित लाग हइ। तब कृष्ण बोले कि जउ देउता खुद आइके भोग लगामा, तब त एहं पूजा केर महातिम

अउरइ बढ़ि जई। गोपियाँ बोली कि तोहका इन्द्र कइ बुराई न करइ चाहीं, काहे कि ओइ जल वरसावत हं।

तब श्री कृष्ण बोल कि वर्षा गोवर्धन पहार के कारन होति हइ। तब इन्द्र के पूजा कइ कउन जरूरति हइ। कृष्ण कइ वाति मानि कइ सब गोपी-ग्वाल अपने-अपने घरे से पकमान वनइ कइ लइ आयें, अउ गोवर्धन कइ पूजा करइ लागे।

जब इन्द्र दउता क इया जानकारी भइकि हमरे जघा मं ब्रजवासी गोवर्धन केर पूजा करइ लागें, त उआ बहुत क्रुद्ध भ अउ अपने मेघन क आदेस दिहिसि कि जाइ कइ ब्रज मं एतना पानी बरसावा कि उआ बहि जाइ। ब्रज मं परलय मचाइ दे। एतना सुनि मेघ ब्रज मं लगातार मूसरा धार वर्षा करइ लागे। तब कृष्ण सब गोपी-ग्वालन क आज्ञां दिहिनि कि सबकेउ आपन-आपन गाय-बछवा लइ कइ गोवर्धन के तराई मं चले आवा। अउ आपुन सबका ओके तरी कइके गोवर्धन का अपने छंगुरिया (कनिष्ट) अंगुरी पर उठाई लिहिनि, अउ छाता कस तानि लिहिनि। सात दिन अउ राति बराबर मूसरा धार पानी बरसत पइ ब्रजवासिन पर कउनउ आँचि नहीं आई। ओनके उपर पानी कइ एक बूँदी न परी। इया देखि कइ इन्द्र हैरान रहें।

तब ब्रम्हा जी इन्द्र क बताइनि कि पृथ्वी पर श्री कृष्ण जनम लइ लिहिनि हइ। ओन से तोंहार वैर करव उचित नहीं आइ। कृष्णावतार कइ वाति सुनि इन्द्र अपने मुर्खई पर लजाइगें। जाइके भगमान श्री कृष्ण से क्षमा मांगइ लागें। सतये दिन कृष्ण गोवर्धन क नीचे धरिन अउ समझाइन कि इन्द्र नहीं येइ तोंहार रक्षा करत हमा तबइ से गोवर्धन पूजा अउ अन्नकूट कइ परव मनाइ जाइ लाग।

भावार्थ

एक बार श्री कृष्ण ग्वालों के साथ गाय चराते हुए गोवर्धन की तराई में पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि हजारों गोपियाँ छप्पन प्रकार के भोजन रखकर बड़े उत्साह से नाच-गा कर उत्सव मना रही थीं। कृष्ण के पूछने पर बताया कि हम प्रतिवर्ष इन्द्र को प्रसन्न रखने के लिए यह उत्सव मनाते हैं। कृष्ण ने कहा-यदि देवता स्वयं आकर भोग लगाएँ, तब तो इसका महत्त्व और ही बढ़ सकता है। यह सुन गोपियाँ बोलीं- तुम्हें इन्द्र की निन्दा नहीं करनी चाहिए, उन्हीं की कृपा से वर्षा होती है।

श्री कृष्ण बोले कि वर्षा तो गोवर्धन पर्वत के कारण होती है। इसलिए हमें इन्द्र की जगह गोवर्धन पर्वत की पूजा करनी चाहिए। सभी गोपी-ग्वाल अपने घरों से पकवान ला-लाकर गोवर्धन की पूजा करने लगे।

जब इन्द्र को यह बात पता चली कि इस वर्ष मेरी जगह पर गोवर्धन की पूजा की जा रही है, तो वह बहुत-कुपित हुए। मेघों को आज्ञा दी कि जाकर गोकुल में इतना बरसो कि उसे बहा दो। वहाँ प्रलय मचा दो। इन्द्र की आज्ञा के अनुसार मेघ मूसलाधार वर्षा करने लगे। तब कृष्ण ने सब ब्रजवासियों को आदेश दिया कि सभी अपने-अपने गाय-बछड़ों को लेकर गोवर्धन की तराई में पहुँच जायें। गोवर्धन ही मेघों से रक्षा करेंगे। उनकी आज्ञा पा सब गोवर्धन की तराई में पहुँच गये। और श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठ (छोटी) उँगली पर उठा छाता सा तान दिया। सात दिनों तक दिन-रात पानी बरसता रहा, किन्तु गोवर्धन की शरण में सभी ब्रजवासी सुरक्षित रहे। उन पर जल की एक बूँद भी नहीं पड़ी। तब इन्द्र यह देख हैरान थे।

तब ब्रह्मा जी ने इन्द्र को बताया कि पृथ्वी पर श्री कृष्ण ने जन्म ले लिया है। उनसे तुम्हारा भेदभाव उचित नहीं है। कृष्णावतार की बात सुन इन्द्र अपनी मूर्खता पर लज्जित हुए, और भगवान श्री कृष्ण से क्षमा याचना करने लगे।

सातवें दिन कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को नीचे रखा और सभी ब्रजवासियों को समझाया कि इन्द्र नहीं, यही तुम सबके रक्षक हैं। और तभी से गोवर्धन पूजा कर अन्नकूट का पर्व मनाया जाने लगा।

तिलवा चौथ व्रत कथा

एक गाँउ मं दुइ भाइन केर परिवार रहत रहा। दुनउ कइ माली हालति अलग-अलग रही। दुनउ कइ मेहेरिये (जेठानी अउ देउरानी) मं जेठानी अमीरि अउ देउरानी गरीबि रही। देउरानी जेठानी के घरे मं काम कइ-कइ आपन गुजारा करति रही। माघ महीना के चउथि (तिलवा चउथि) क दिन रहा। ओह दिना गाँउ भरे कइ मेहेरिया चउथि उपासे रही। देवरानी अउ जेठानिउ उपासे रही।

देउरानी कइ परिस्थिति नीक नही रही। उ घरे मं कना कइ रोटी ओही केर लेड्डू अउ बथुई केर साग बनाये रही। काहे कि ओके लगे अउर कुछु नही रहा। राति जब चन्दरमा का अरग दइ कइ पूजा कइ चुकी त ओही केर परसाद घरे मं सब जनेन के दिहिसि। रातिनि मं संकटा महरानी आई अउ ओके घरे केर केमरा ठोंकइ लागी। बोली- ब्राम्हनी केमार खोला। हमका बहुत जोर भूँखि लगी हइ। कुछु खाइ क देय। तव सकुचात- सकुचात ब्राम्हनी (देवरानी) जउन कुछ घरे मं कना मेर खुआ वना रहा ओन हूँ क खाइ क दिहिसि। जब बूढ़ी मइया अघाइ कइ खाइ चुकी तब कहिनि कि बिटिया अब त हमार पेट पिराइ लाग। हम सिमारे (शौचक्रिया) खातिर कउने कइति जई।

ब्राह्मनी सोचिसि कि एतने जरजर देहि वाली बुढ़िया माता क हम राति कइ वहिरे कहाँ पठई। इया सोचि कइ उ कहिसि कि माता एतना बड़ा घर हइ अपना केर जहाँ मन होइ अपना बइठि लेई। भिनसारे हम सब साफ कइ लेव।

तव माता ओकरि बिना सुआरथ केरि बाति सुनिकइ झाड़े के बहाने सगला घर- सोन-चाँदी, हीरा जवाहिरात अउ रतनन से भरि दिहिनि।

बड़े बिहन्नेनि ओकरि जेठानी आई अउ लागि गरिआवइ। बोली कि हमरे बिटिया पतोहन केर उपास रहा अउ तँइ काम करइ नहीं आये। पहिले तउ उआ चुप्पे सुनति रही। पइ जब ओसे नही सहि ग तव कहिसि- कि आज से हम तोहरे घरे काम करइ न अउब। हमका अपनेनि घरे के काम से फुरसति नही आइ।

जेठानी देखि कइ चउआइ गइ कि एके घरे मं त सगले हीरा-जवाहिरात केर कुरैना (ढेर) लाग हइ अव भला इया हमरे घरे काहे के काम करइ अइ। बोली- केकरे घरे मं चोरी करे हइ? कि तोरे लगे एतनी अकूत सम्पति आइ गइ। तब देउरानी बूढ़ी मइया बाली सगली किस्सा कहि कइ सुनाइ दिहिसि। सगली बिरदान्त सुनिकइ जेठानी सोचिसि कि आगे साल हमहूँ अइसनइ करब। जउने हमरेउ लगे धन-सम्पति केर कुरैना लगि जाइ। पूरे साल कना मेरखुआ अउ बथुई जुहबाबति रही। जब तिलबा चउथि आई तब उहउ कना केर लेडुआ अउ बथुआ के घोंघा (साग) बनइ कइ ओंही से संकटा माई केरि पूजाई करिसि। जब ओकरि पूजा-आरजा होइ गइ तब संकटा माई आई अउ ओकर केमारा भटभटाबइ लागी। खोला ब्राम्हनी केमार उदिरा हमका बहुत भूँखि लागि हइ, कुछु खाइक देव। उहउ उहइ सब किहिसि जइसन कि ओकरि देउरानी कहिसि रहा। खाये के उपरान्ति बूढ़ी मइया कहिनि कि बिटिया अब त हमार पेट पिरात हइ। हम सिमारे जाव, कहाँ जई? तब जेठानी मारे खुसी के मीठ-मीठ बोली माता सब तोहरइ आइ जहाँ मन होइ बइठि लेई। हम बिहन्ने साफ कइ लेव। अतना सुनिकइ बूढ़ी माई सगले घरे गंदगी केर कुरैना लगाइ दिहिनि। सगला घर गंधाइ लाग। सब जने नेकुआ चपाइ कइ एह कई ओंह कई भागइ लागे। उआ लालि पियरि होति अपने देउरानी के घरे पहुँची अउ बोली- तंइ हमका का नीक-नागा बताये रहे? तंइ त हमरे घरे केर सत्तिआनास कराइ दिहे।

एंह साइति देउरानी केर पलरा भारी रहा। उआ हँसि कइ बोली -माता सब जनतीं हंइ। हमरे गरीबी रही एही से मइया हमरे उपर दाया किहिनि। तुं त पहिलेनि से अमीरि रहिउ तुं तउ लोभ मं परि कइ इया सब कीन्हिउ। एही से तोहरे संघे अइसन भं। अब जेठानी कइ अकिलि ठेकाने आइ गइ। जेठानी अपने किहे पर पछताइ लागि अउ माता से क्षिमा मांगिसि। माता ओका क्षमा कइ दिहिनि अउ कहिनि कि लालचि छाँड़ि कइ जइसइ पहिले गुड, घिउ, तिल, फल अउ फूल से विधि से पूजा -आरजा करत रहे ओइसनइ अब उपास अउ पूजन करे। एंही म कल्लिआन हइ।

इया चरचा सगले गाँउं मं बैहरा के नाई फइलि गइ। गाँव केरि सब मेहेरिया आगे साल के तिलवा चउथि क उपासे रही अउ विधि विधान से पूजा आरजा करिनि अउ पारन करिनि। तब से एंह उपास केर चलन होइग।

भावार्थ

एक गाँव में दो भाइयों का परिवार रहता था। दोनों की आर्थिक स्थिति विषम थी। बड़े भाई की पत्नी छोटे भाई की पत्नी की जिठानी और छोटे भाई की पत्नी उसकी देवरानी कहलाती है। जेठानी अमीर व देवरानी गरीब थी। देवरानी-जेठानी के घर में काम करके अपना गुजर-बसर करती थी।

माघ मास की कृष्ण पक्ष चतुर्थी का दिन था। उस दिन गाँव भर की महिलाओं ने 'तिलवा चौथ' का व्रत रखा था। वे दोनों भी व्रत रखे थीं। देवरानी की स्थिति दयनीय थी, उसके घर में कुछ खाने को नहीं था, उसने कना की रोटी और उसी का लड्डू और बथुई की भाजी बनाया था। रात में पूजा के बाद वही प्रसाद घर के सभी लोगों को दिया। रात में ही संकटा देवी आई और उसका दरवाजा खटखटाया। वे बोली- खोलो ब्राह्मणी दरवाजा खोलो, मुझे बहुत भूख लगी है, कुछ खाने को दो। तब सकुचाते हुये ब्राह्मणी (देवरानी) ने जो कुछ बना था, वही उन्हें भी खिलाया। भरपेट प्रेम सहित खाने के बाद बुढ़िया माता ने कहा- बेटी मेरा पेट दर्द कर रहा है। मुझे शौच क्रिया हेतु जाना है। बताओ, मैं कहाँ जाऊँ? बाह्मणी ने देखा कि बूढ़ी माता का शरीर बुढ़ापे से जीर्ण-शीर्ण दिख रहा है, इन्हें बाहर कहाँ भेजूँ? सो, उसने कहा- माँ आप घर के अंदर ही शौच क्रिया से निवृत्त हो लीजिये, मैं सुबह सफाई कर लूँगी। तब माता ने उसकी नि:स्वार्थ भावना देख पूरे घर में और आँगन में सब जगह दीर्घ शंका के बहाने सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात का ढेर लगा दिया।

भोर होते ही उनकी जेठानी आई और लगी खरी खोटी सुनाने। बोली- कल मेरी बेटी और बहू का व्रत था और तुम काम करने नहीं आई। पहले तो देवरानी उनकी खरी-खोटी सुनती रही। जब सब्र का बाँध फूट पड़ा, न सुना गया, तब बोली- आज से मैं आपके घर काम करने न आऊँगी। मुझे अपने ही घर के कामों से फुरसत नहीं है। जेठानी ने देखा कि इसके घर में तो जगह-जगह हीरे-जवाहरात के ढेर लगे हैं, अब वह भला मेरे घर काम क्यों करेगी? उसने कहा- किसके घर में चोरी की है? जो तुम्हारे पास इतनी अकूत सम्पति आ गई है। तब देवरानी ने बूढ़ी माँ वाला पूरा वृत्तान्त कहकर सुना दिया। यह सब सुन जेठानी ने तय किया कि अगले वर्ष मैं भी यही करूँगी, जिससे मेरे पास भी धन-सम्पत्ति का ढेर लग जाय।

अब क्या था, पूरे वर्ष उसने अपनी देवरानी के घर में काम किया। पूरे समय कना और

बथुई इकठ्ठा किया। जब तिलवा चौथ आई तब कना का लड्डू व बथुआ का घोघा (साग) बनाकर उसी से पूजा की। जब पूजा हो गई, तब संकटा महरानी आई और दरवाजा खटखटाते हुए बोली–खोलो ब्राह्मणी दरवाजा खोलो, मुझे बहुत भूख लगी है, कुछ खाने को दो। उसने भी वही सब किया, जैसा कि उसकी देवरानी ने किया था। खाने के बाद बूढ़ी माँ ने कहा कि मुझे दीर्घशंका (शौच) करना है। तब जेठानी ने बड़े मीठे स्वर में कहा–माँ आप कहीं भी कर लीजिये, इतना बड़ा तो घर है, मैं सुबह साफ कर लूँगी। इतना सुन बूढ़ी माँ ने पूरे घर में गंदगी का ढेर लगा दिया। पूरा घर सड़ान्ध मारने लगा। घर के सभी लोग नाक दबाकर इधर–उधर भागने लगे। वह तमतमाई हुई अपनी देवरानी के पास गई और बोली कि यह क्या उल्टा–सीधा बताया जो मेरा पूरा घर का सत्यानाश करवा दिया।

इस समय गेंद देवरानी के पल्ले में थी। वह हँसते हुये बोली– माता सब जानती हैं। मैं गरीब थी, इसलिये माँ ने मुझ पर दया की और आप तो पहले से अमीर थी, आपने तो धन की लालच में यह सब किया। इसलिये आपके साथ ऐसा हुआ। अब जेठानी को सबक मिल गया। वह अपने किये पर पछताने लगी और माता से क्षमा माँगी। माँ ने उसे क्षमा कर दिया और कहा कि लालच को त्यागते हुए पिछले वर्षों की भाँति तिल, गुड़, फल, सकला इत्यादि से पूरे विधि–विधान से व्रत करना, इसी में कल्याण होगा।

यह चर्चा पूरे गाँव में फैल गई और अगली तिलवा चौथ पर समाज की सभी स्त्रियों ने विधि–विधान से व्रत किया और उसका पारण भी किया। तभी से इस व्रत का चलन हो गया।

करवा चौथ व्रत कथा

एक राजा रहें, ओनके सात ठे बेटवा अउ एकठे बिटिया रही। राजा के सातउ पतोहिनी अउ विटिया करबा चौथि उपासे रही। राति के जब सातउ भाई भोजन करइ बइठे तब अपने बहिनिउ से बियारी करइ क कहिनि। त बहिनी जबाब दिहिसि कि भाई अबइ चन्द्रमा नहीं उई (निकली) आही अबा हम कसि कइ वियारी करी। हम तउ ओके निकरे पर पहिले अरग (अर्घ्य) देब फेरि खाब। बहिनी कइ बाति सुनिकइ भाई एक ठे उपाय करिनि। गूँगे केबहिरे आगी जराइ दिहिनि अउ चलनी से बहिनी क ओकर अँजोर देखाइ दिहिनि, कहिन देखा अब जो न्हइया (चाँद) उइ आई हइ। अब तुं अरग दइकइ खाइले।

भाइन कइ बाति सुनि कइ बहिनी मारे खुशी के दौरि कइ गइ, अउ भउजाइनि से बोली कि देखा जोन्हइया उइ आई है। सब जने अरग दइ कइ भोजन कइ लेउ। पइ भउजइनी इया बाति जानति रही। उ बोली कि कि ननदि रानी अबइ जोन्हइया नहीं उईं आही तोंहार भाई तोहरे

साथ धोखा किहिनी हइ अउ आगी के अँजोर क चलनी ग देखाइ रहें हइ। तबउ भउजाइनि के वाति क उआ एकउ कान नहीं दिहिसि अउ भाइन के देखाये अंजोर क अरग दइ कइ उआ भोजन कइ लिहिसि। उपास टोरे के कारन गनेश जी ओके उपर नराज होइगे।

एह घटना के बाद ओकर पति बहुत ज्जादा बिमार होइगा। जउन कुछ घर कइ सम्पत्ति रही सब ओके बिमारी मं लाग गइ। जब ओका अपने करे कइ पता चला त उआ बहुत पछतानि। गणेश जी कई परार्थना करिसि अउ माफी मांगिसि, अउ पुनि कइ चौथि केर उपास रहइ लागि। अउ बड़े श्रद्धा भाउ से सबकेर आशीष पावइ लागि। सबकइ आव-भागत करइ लागि।

एह तरह ओके श्रद्धा भाउ भक्ति सहित पूजा वरत क देखि कइ गनेश भगवान फेर से ओके उपर परसन्न होइग। ओके पति का जीमनदान दहू कर निरोग कइ दिहिन। अउर ओकर घर धन-सम्पति से भरि दिहिनि।

एंह घटना से इया साबित होत हइ कि जे केउ छल-कपट तियागि कइ श्रद्धाभाउ से इया चौथि कइ उपास विधि-विधान से करी ओकर सब कलेश दूर होइ, जई अउर उआ सब तरह से सुखी रही।

भावार्थ

एक राजा थे, उनके सात पुत्र और एक कन्या थी। राजा की सातों पुत्र बधुएँ और बेटी ने करवा चौथ का व्रत रखा। रात को जब सातों भाई भोजन करने लगे तो उन्होंने अपनी बहिन से भोजन करने को कहा। इस पर बहिन ने उत्तर दिया- भाई अभी चाँद नहीं निकला है, मैं कैसे भोजन करूँ। मैं उसके निकलने पर अर्घ्य देकर ही भोजन करूँगी। बहिन की बात सुनकर भाइयों ने क्या किया कि नगर के बाहर जाकर अग्नि जला दी और चलनी ले जाकर उसमें से प्रकाश दिखाते हुए बहिन से कहा- बहिन! चाँद निकल आया है, अब तुम अर्घ्य देकर भोजन कर लो।

यह सुन उसने अपनी भाभियों से कहा कि आओ तुम सब भी चन्द्रमा को अर्घ्य देकर भोजन कर लो। परन्तु वे सब इस काण्ड को जानती थीं, उन्होंने कहा ननदजी अभी चाँद नहीं निकला है। तुम्हारे भाई तुम्हारे साथ धोखा कर अग्नि का प्रकाश चलनी में से दिखा रहे हैं।

भाभियों की बात सुनकर भी उसने कुछ ध्यान न दिया और भाइयों द्वारा दिखाये गये प्रकाश को अर्घ्य देकर भोजन कर लिया। इस प्रकार व्रत भंग करने से गणेश जी उस पर अप्रसन्न हो गये।

इसके पश्चात् उसका पति सख्त बीमार हो गया और जो कुछ घर में था, सब उसकी बीमारी में लग गया। जब उसे अपने किये हुए दोषों का पता लगा तो उसे बहुत पश्चाताप हुआ। गणेश जी की प्रार्थना करते हुए उसने फिर से चतुर्थी का व्रत करना आरम्भ कर दिया और श्रद्धानुसार सबका आदर सत्कार करते हुए सबसे आशीर्वाद ग्रहण करने में ही मन को लगा लिया।

इस प्रकार उसके श्रद्धा-भक्ति सहित व्रत कर्म को देखकर भगवान गणेश उस पर फिर से प्रसन्न हो गये और उसके पति को जीवन दान देकर उसको आरोग्य करने के पश्चात् धन सम्पत्ति युक्त कर दिया। जो कोई छल-कपट को त्यागकर श्रद्धा-भक्ति पूर्वक यह चतुर्थी व्रत करेंगे, वे सभी प्रकार से सुखी होते हुए कलेशों से मुक्त हो जाएँगे।

करवा चौथ व्रत कथा - 2

पुराने जमाने मं करवां नाउ केर एक ठे मेहरिया रही। उआ अपने पति के साथ नदी के तीरे एक गाँउ मं रहत रही। एक दिना ओकर आदमी (पति) नदी मं नहाइ ग। दइउ जोग से नहात मं एक ठे मगर ओकर गोड़ पकड़ि लिहिसि। तब उआ मनई अपने मेहरिया क जोर-जोर चिल्लाइ कइ करवा-करवा गोहरावइ लाग। अपने आदमी कइ बोली सुनि कइ ओकरि पतुरवचा (पतिव्रता) मेहरिया करवा भगतइ आई अउ मंगर क अउ तइ कच्चे सूत क धागा से बाँधि दिहिस। मंगर क बांधि कइ उआ अपने पतिव्रत के बल से जमलोक मं पहुँचि गइ अउ जमराज से बोली- हे जमराज! हमरे आदमी क मंगर पकड़ि लिहिसि हइ। इया अपराध करिसि हइ एंह से अपना एका नरक मं डारि देई। करवा केरि इया बाति सुनिकइ जमराज बोलें- अवा एंह मंगर कइ आरदा बची हइ। एंहसे हम ओका मारि नहीं सकित। जमराज कइ बाति सुनि कइ करवा बोली- जउ अपना इया काम न करव त हम अपना क सराप (श्राप) दइ कइ नष्ट कइ देव। करवा कइ अइसनि बाति सुनि कइ जमराजउ डेराइगे। आखिरकार ओह पतुरवचा के साथ मं जाइके उ मंगर क जमलोक मं पहुँचाइ दिहिन अउ ओके आदमी क लम्बी उमिर केर वरदान दिहिनि। ओह दिना से करवा चउथ मनाई जाति हइ, अइ मेहरिये उपासे रहती हइ।

हे करवा माता! जइसइ तुं अपने पति कइ रक्षा कीन्हिउ ओइसइ सब के पतिन कइ रक्षा करे।

भावार्थ

प्राचीन काल में करवा नाम की एक स्त्री थी, वह अपने पति के साथ नदी किनारे एक गाँव में रहती थी। एक दिन उसका पति नदी में स्नान करने गया। देवयोग से स्नान करते समय

एक मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। तब वह मनुष्य करवा-करवा करके अपनी पत्नी को चिल्ला-चिल्ला कर पुकारने लगा। अपने पति की आवाज को सुनकर उसकी पतिव्रता स्त्री करवा भागी हुई आई और उसने आते ही मगर को कच्चे सूत के धागे से बाँध दिया। मगर को बाँध कर वह अपने पतिव्रत धर्म के बल से यमलोक में पहुँचकर यमराज से बोली- हे भगवान! मेरे पति को मगर ने पकड़ लिया है। इसके इस अपराध में आप इसे अपने बल से नरक में डाल दो। करवा की यह बात सुनकर यमराज बोले- कि अभी मगर की आयु शेष है। अत: मैं अभी उसको मार नहीं सकता। यमराज की बात सुनकर करवा बोली- यदि आप ऐसा नहीं करोगे तो मैं आपको श्राप देकर नष्ट कर दूँगी। करवा की यह बात सुनकर यमराज भयभीत हो गये। अन्तत: उस पतिव्रता के साथ जाकर उसने मगर को यमलोक की ओर पहुँचा दिया और उसके पति को दीर्घायु होने का आशीर्वाद दिया। उसी दिन से करवा चौथ मनाई जाती है और व्रत रखा जाता है।

हे करवा माता! जैसे तुमने अपने पति की रक्षा की ऐसे ही सबके पतियों की रक्षा करना।

संतोषी माता व्रत कथा

एक बुढ़िया रही। ओके सात बेटवा रहें। छे ठे त कमाऊ रहें पइ एक ठे निठल्ला रहा। बुढ़िया भोजन बनाइ कइ पहिले छ बहुन क खवाइ देति रही। फेर बचाखुचा जूठन समेटि कइ साफ टठिया मं धइ कइ सतयेंउ क परसि देवा करइ। उआ (सातवां) कबउ धियान न देइ बड़े परेम से खाइ लेइ। उ बड़ा बाउर रहा एक दिना अपने मेहरिया से कहिसि कि महतारी हमका बहुतइ मानथि। मेहरिया टपाक से बोलि परी तबइ त सब केर जूँठ खवउती हइ। ओका मेहरिया के वाति क बिसुआस नहीं लाग। सोचिस जब तक अपने आँखिन ने देखि लेव बिसुआस नहीं।

कुछु दिना बीते कउनउ बड़ा तेउहार आवा। घरे मं नीक-नीक सालन तीलन बना। उआ मूड़े पीरा केर बहाना कइके रोसंइयइ म पातरि क पिछउरी ओढ़ि कइ पहुड़ि रहा। दिखिसि कि महतारी छवउ भाइन का परेम से परसि कइ खवाइसि। फेरि सब टठियन केर बचा खुचा लेड्डुअन क बांधि कइ सइघ बनाइ दिहिसि, अउ सब दूसरे माँजी धोई टाठी मं लगाइ कइ सतयें क कहिसि कि दादू चला तुहूँ खाइ ले। तब उआ बोला- दिदी हम न खाब, हमरे भूँखि नहीं आइ, हम परदेश जाब। तब महतारी बोली- दादू काल्हि जात हो त अजुअइ चले जा।

हुँआ से चलिकइ उआ अपने मेहरिया के लगे ग। उआ सारि (गौशाला) मं उपरी पाथति रही। ओसे बोला- तु निकहा कइ रहिउ हम परदेश जइत लाग हइ। पतनिउ ओका खुशी-खुशी विदा कइ दिहिसि, कहिस कि तु हमार फिकिर न करे।

लड़िका बड़े सहर चला ग, अउर काम के खोज म एंह कइत ओंह कइति भटकत रहा। अंत में एक साहूकार के लगे अउ ओका आपनि आप बीती विथा –कथा सुनाइसि। साहूकारउ क एक अच्छे कारकरता केर तलास रहीं। उआ ओका कामे म लगाइ लिहिसि। कुछइ दिना म उआ साहूकार केर बड़ा बिसुआसिक होइग। अपने मेंहनति से खूब धन कमाइ लिहिसि। सेठ ओके ऊपर एतना विसुआस करइ लाग कि आपन सब कारबार ओही के माथे छाड़ि कइ परदेश धन कमाइ चला ग।

ओह कइत वारा बरिष बीति चुके रहे। घरे वाले दुलही (बहू) पर अत्तियाचार पर अतियाचार करे परे रहे। घरे केर सब काम समेटे के बाद वने से लकड़िउ लेइ भेजि देत रहें। जब लउटि कइ आवइ त खाइक भूसी कइ रोट अउ नरेली में पियइ क पानी दइदें। एक दिना जब उ लकड़ी लइ कइ लउटत रही त दिखिसि कि राहि में कुछ मेहेरिये संताषी माता कथा कहत अउ सुनत रहीं। अक कइ पूँछिस कि बहिनी अपना पंचेन कउने देउता कइ पूजन करथे, अउ एह से कउन फल मिलत है। एह व्रत केर पूरा विधान हमका समझाइ देई। उं औरतन सब विधि–विधान समझाइ दिहिनि, अउ बताइनि कि वरत के करे से सगली इच्छा पूर होति हमां। जउ केहू करे पति परदेश ग रहत ह त उआ लउटि आवत हइ। संतान कइ प्राप्ति होति है।

एंह उपास का सोलह या चोबिस शुक्रवार श्रद्धा से करइ चाही। जउ चाह पूरि न होइत एंह से जादउ कइ सकत हइ। अंत एकर उदियापन करइ चाही ओह में सोलह या चोबिस लड़िकन क भोजन करावइ चाही। खटाई वर्जित हइ।

बहू इया वाति सुनि कइ घरे कइती चलि दिहिसि। लकड़ी केर वोझा बेंचिकइ राहिन में गुड़ अउ लहिला कइ बहुरी वेसाहि लिहिसि। घरे से नहाइ–धोइ कइ मंदिरे कइती चलि दिहिसि। बड़े करूणा भाउ से माता कइ पूजा–अर्चना करिसि। दुइन शुक्रवार करिसि कि माता के किरपा से ओके पति के भेजा पइसा अउ चिठ्ठी आइग। इया देखि घरे केर सब जने ओका ताना मारइ लागें। एतना देखि उआ फेरि माता के मंदिर गइ अउ दुखी होइ कइ कहइ लागि कि हम पैसा रूपिया कब माँगेन हइ। हमका त पति के चरणन कइ सेवा चाही।

माता सोचइ लागी कि एकर पति त अपने कार–वैपार में वेस्त हइ ओका कहाँ फुरसति पइ ओनकरि अइसन किरपा भइ कि उआ घरे जाइकइ तयारी करइ लाग। गहना–कपड़ा खरीदइ लाग। ओंह कइती ओकरि पत्नी रोज लकड़ी लेइ जात भ माता के मंदिर में विसराम करइ लागि। ओका राहि में धू धुरि उड़ति देखानि उआ माता से एकर कारन पूछिसि–

माता बोली कि तोर पति आवत लाग हइ। अब तइ लकड़ी केर तीन बोझा बनइ ले एकठे हमरे मंदिर में घइदे, दूसर नदी के तीरे धइदे अउ तीसर बोझा लइकइ घरेजा। जाइ कइ

जोर-जोर चिल्लाइ कइ कहे- कि सासुजी ले लकड़ी केर बोझा, हमका बड़ी जोर भूखि लगी हइ। बूसी कइ रोटी अउ नरेली मं पानी दइ दे।

लड़िका अपने मेहरिया क नहीं चीन्हिसि उआ महतारी से पूंछिसि कि इया के आउइ तब महतारी बताइसि कि इया तोहारइ मेहेरिया आइ। दिन मं चारि वेर खाति हइ अउ तोहका देखिकइ नाटक करति लागि हइ। अपने पतनी के हाँथे कइ मुँदरी देखि कइ उआ ओकर चीन्हि ग। महतारी से बोला कि हमका दुसरे घरे कइ उघन्नी दइदे, अब हम एंह घरे मं न रहव। महतारी ओका चाभी दइ दिहिस। उआ आपन अलग वेवस्ता कइ के सुखसे रहइ लाग।

दुइचारि दिना के बाद सोलहमां शुक्रवार आवा। सब समान एकठ्ठा करके उ इनउ माता केर पूजन कइके उद्यापन किहिन। बहू अपने जेठ अउ परोसी के लड़िकन केर नेउता करिसि। जेठानी अपने लरिकन क समझाइ कइ पठये रही। उ भोजन मं खटाई अउ नोन माँगइ लागे। न देहे पर दक्षिना मं पैसा मांगइ लागें। उआ एतनी भोली रही कि ओनका पइसा दइ दिहिसि। उ ओंह पइसा से इमली खटाई खाइ लागे।

इया घटना देखि कइ माता ओके ऊपर रिसि आइ गई। अउ राजा केर सिपाही आयें अउ ओके पति केर पकड़ि कइ लइगें। अबका रहा जिठानियाँ ओका ताना मारइ लागीं कि जब जेल कइ हवा खई तब पता चली।

तब बहू रोवत चिल्लात माता के मंदिर गई। मैया से रोइ-रोइ कइ क्षमा मांगइ लागि। तब माता समझाइनि कि एतना जल्दी तइ सब विसराइ दिहेऊ। उआ दोहाई देइ लागि नही माता अपना हमका फेर से समुझाई हम ओइसनइ करब। माता बोली- सब कुछु ठीक होइ जई।

बहुरिया (बहू) घरे कइति चलि दिहिसि। गलिन मं दिखिसि कि ओकर मन्सेरू (पति) लउटा आवत हइ। तब उ आदमी से पूँछिसि कि अपना कहाँ गये रहेन हइ। पति बताइसि कि हमार एतने दिना केर का वैपार रहा ओका हिसाब-किताब चुकता करइ क राजा केर बोलउआ रहा। हम हुअइनि गये रहेन। पइ माता के किरपा से राजा उहउ माफ कइ दिहिनि। दुनउ मिलि कइ खुसी-खुसी माता के वरत केर उदियापन कहिन। एह बेर लरिकन के माँगेउ से ओनका खटाई नही दिहिनि। दक्षिना मं ओनका पइसा न दइकइ एक-एक केला सेब दइ दिहिन। अब वरत केर उदियापनउ होइ ग, अउ मइयउ खुश होइ गई।

एक दिना माता सोचिनि कि अब पुनि कइ एकर परिक्षा लेइ चाही। कहंउ इया पुनि कइ त हमका विसराइ नहीं दिहिसि। उ मइल चिथरी-गुदरी पहिरे मुंहे म गुर लहिला कइ फुटुआ लपेटे, माछी भिनभिनात बहू के दुआरे पहुँची। बहुरिया कइ सासु अउ जेठानी माता केर वेष

भूषा देखिकइ मन घिनघिनावत केमरा दइ लिहिनि। जब बहू दिखिसि तब उआ माता क चिन्हि लिहिसि। बहू आदर सहित मइया क भितरे लइ गइ अउ ऊँचे आसन पर बइठाइसि। माता केर आउ भगति कीन्हिसि। मातउ ओकरे उपर परसन्न होइ गई अउ 'पुत्रवती भव' केर वरदान दइ दिहिनि। अब उ मेढुली कइत क लउटइ लागी। तब चतुरि बहुरिया ओनसे आपनि परछाहीं एँही घरे मं छाँड़ि जाइके खातिर हाँमी भरबाइ लिहिसि।

अब दूनउ पति-पतनी परसन्न होइकर जीवन गुजर वसर करइ लागें। कुछ समय बीते ओनके माता के किरपा से एक से बेटवउ (बेटा) होइ ग। इया भूतागति (चमत्कार) देखि कइ ओनके परिवारउ बाले ओन से संतोषी माता के किरपा के वारे मं जानकारी लिहिनि अउ ओउ सवजन माता केर भक्त होइगें। सब मिलि आनंद से रहइ लागे।

आदिशक्ति के किरिपा से कुछ से कुछु होइ सकत हइ। बस किरपा कइ बे देरि रहत है। फल मिलइ मं बेरि नहीं लागति।

भावार्थ

एक बुढ़िया थी। उसके सात बेटे थे। छः तो कमाऊ थे, पर सातवाँ निकम्मा था। बुढ़िया भोजन बनाकर पहले छः बेटों को खिलाती फिर बचा-खुचा जूठन समेट कर सातवें को खिला देती। वह बड़ा भोला था, वह एक दिन अपनी पत्नी से बोला कि माँ मुझे कितना प्यार करती है। तब पत्नी ने कहा- हाँ तभी तो सबका जूठा खिलती हैं। उसे पत्नी की बातों पर विश्वास नहीं हुआ, उसने सोचा मैं जब तक अपनी आँखों से न देख लूँ, मुझे विश्वास नहीं। कुछ दिनों बाद बड़ा त्योहार आया, घर में अनेक पकवान बनने लगे। वह सिर दर्द का बहाना कर रसोई घर में ही चादर ओढ़कर लेट गया। उसने देखा माँ ने सभी भाइयों को विधिवत भोजन कराया और बचा खुचा दूसरी थाली में लगाकर उसे दे दिया। उसने खाने से मनाकर दिया और बोला- मैं भोजन नहीं करूँगा। मैं परदेश जा रहा हूँ। यह सुन माँ बोली- कल जाता हो तो आज ही चला जा। वहाँ से चल वह अपनी पत्नी के पास गया। वह गौशाला में गोप (कण्डे) थाप रही थी। उससे बोला- मैं परदेश जा रहा हूँ, तुम ठीक से रहना। पत्नी ने भी सहर्ष उसे विदा किया और बोली कि आप हमारी चिन्ता न करें।

लड़का बड़े शहर गया और काम की तलाश में कई दिनों तक इधर-उधर भटकता रहा। फिर एक साहूकार के पास गया और उसे सब आप बीती कथा व्यथा सुना डाली। साहूकार को भी एक अच्छे कर्मचारी की बहुत दिनों से तलाश थी। उसने उसे काम पर रख लिया। कुछ ही दिनों में वह साहूकार का विश्वास पात्र बन गया, और काफी धन अर्जन भी कर लिया। साहूकार उस पर सारा काम छोड़कर परदेश व्यापार को चला गया।

उधर बारह वर्ष बीत चुके थे। बहू पर ससुराल वालों द्वारा अत्याचार किया जा रहा था। घर के सभी काम निपटाने के बाद जंगल लकड़ी लाने भी भेजा जाता। लौटकर आने पर उसे भूसी की रोटी खाने को दी जाती। एक दिन वह लकड़ी लेकर लौट रही थी तो देखा कि रास्ते में स्त्रियाँ संतोषी माता की कथा कह और सुन रही थीं। उसने रुककर पूछा कि बहिनों आप लोग किस देवता की पूजा व्रत करती हो और इसके करने से क्या-क्या फल मिलता है। इसका पूरा विधान मुझे समझा दो। उन स्त्रियों ने उसे पूरा विधि-विधान समझा दिया और बताया कि इस व्रत को करने से सभी इच्छाएँ पूरी होती हैं। सुख-सम्पत्ति, संतान की प्राप्ति होती है, यदि किसी का पति परदेश में हो तो वह तुरन्त वापस आ जाता है।

उन स्त्रियों ने पूजन का पूरा विधान विधिवत बताया और कहा कि सोलह या चौबीस शुक्रवार श्रद्धा के अनुसार करना चाहिए और कार्य सिद्ध न हो तो ज्यादा भी कर सकते हैं, और अंत में उद्यापन भी करना चाहिये। कम से कम सोलह या ज्यादा से ज्यादा चौबीस लड़कों को भोजन कराना चाहिये। इस व्रत में खटाई खाना वर्जित है।

बहू यह सुन घर की ओर चल दी। लकड़ी के गट्ठे बेंचकर उसने रास्ते में ही गुड़ और चना खरीदा और घर जा नहा-धोकर माँ के मंदिर गई और करूणा भाव से माँ की पूजा-अर्चना की। माँ उसकी पूजा से प्रसन्न हुई। दो ही शुक्रवार बीते थे कि उसके पति का भेजा पैसा और पत्र आ गया। यह देख घर के सभी छोटे-बड़े उसको ताने मारने लगे। यह देख वह माँ के मंदिर गई और दु:खी हो कहने लगी कि माँ मैंने रुपया पैसे कब माँगा? मुझे तो मेरे पति के चरणों की सेवा चाहिए। माँ ने सोचा इसका पति तो अपने व्यापार में व्यस्त है, वो तो इसे सपने में भी याद नहीं करता। अब मुझे ही उसे प्रेरितकर उसका मन घर की तरफ आकर्षित करना होगा। माँ ने उसे उसकी पत्नी का ध्यान कराया। वह व्यापार समेटकर घर जाने के लिए गहने-कपड़े आदि खरीद कर घर जाने की तैयारी करने लगा।

उधर उसकी पत्नी जब लकड़ी लेने जंगल जाती रास्ते में संतोषी माता के मंदिर में विश्राम करने लगी तभी उसे रास्ते में धूल उड़ती दिखी। उसने माँ से धूल उड़ने का कारण पूछा, तब माँ ने बताया कि तेरा पति आ रहा है। अब तू लकड़ियों के तीन गट्ठे बना ले। एक नदी किनारे, दूसरा मेरे मंदिर में, तीसरा अपने सिर पर रख और घर जा। जब तेरा पति घर पहुँचे, तब घर के बाहर से आवाज लगाना- लो सासूजी लकड़ी का गट्ठा लो और मुझे जोरों की भूख लगी है, मुझे भूसी की रोटी और नारियल की नरेली में पानी दो। लड़के ने अपनी माँ से पूछा- माँ यह कौन है? तब माँ ने बताया- यह तुम्हारी ही पत्नी है। दिन में चार बार खाती है। तुम्हें देख कहीं से बीनकर लकड़ी लाई है और यह नाटक कर रही है। उसके हाथ की अंगूठी देखकर वह पत्नी को पहचान गया और माँ से बोला कि मुझे दूसरे घर की चाबी दो, मैं अब इस घर में नहीं रहूँगा।

माँ ने उसे चाबी दे दी। उसने अपनी अलग से कमरे में व्यवस्था कर ली और पत्नी के साथ सुख पूर्वक रहने लगा।

दो-चार दिन बाद सोलहवाँ शुक्रवार आया और माता के बताये अनुसार उन दोनों ने सब सामग्री एकत्र कर माँ का विधिवत् पूजन और उद्यापन किया। उसने अपने जेठ व पड़ोसियों के लड़कों को भी न्यौता किया। किन्तु जेठानी ने अपने बच्चों को समझाकर भेजा कि वे नमक व खटाई खाने में मांगना, न देने पर दक्षिणा में पैसे मांगने लगे। उसने भोलेपन के कारण उन्हें पैसे दे दिए। अब वे उन पैसों से इमली की खटाई खरीद कर खाने लगे। यह देख माँ ने बहू पर कोप किया और राजा के दूत आये और उसके पति को पकड़कर ले गये। अब क्या था, जेठानियाँ उसे ताना देने लगीं कि जब जेल की हवा खायेगा, तब समझ में आयेगा।

बहू रोती चिल्लाती माँ के मंदिर में गई, और माता से रो-रोकर क्षमा याचना करने लगी। तब माँ ने समझाया कि इतने जल्दी तू सब भूल गई। उसने कहा- नहीं माँ, अब आप मुझे फिर से बताइये, मैं वैसा ही करूँगी। माँ ने कहा- जाकर फिर विधि-पूर्वक उद्यापन कर, सब ठीक हो जायेगा। वह घर की ओर चल दी। रास्ते में देखा उसका पति वापस आ रहा है। उसने पूछा- आप कहाँ गये थे। उसने बताया कि इतने दिनों तक व्यापार किया, उसका टैक्स चुकाना था, किन्तु राजा ने वो भी माफ कर दिया। दोनों अति प्रसन्न हुए और फिर से संतोषी माता का उद्यापन किया। इस बार बच्चों के माँगने पर भी बच्चों को खटाई नहीं दिया। दक्षिणा में पैसे न देकर एक-एक सेब-केला दिया, इस प्रकार व्रत का उद्यापन हुआ और माता भी प्रसन्न हुई।

एक दिन माता ने सोचा क्यों न इसकी परीक्षा ली जाए? कहीं यह हमें भूल तो नहीं गई। वे मैले कुचले वस्त्र पहने, मुँह पर गुड़-चना लिपटा, मक्खियाँ भिनभिनाती हुई बहू के द्वार पर पहुँची। बहू की सास व जेठानियाँ उसे देख मुँह बनाते हुए दरवाजा बंद करने लगी। जब उस बहू ने देखा तो वह माता को पहचान गई और उन्हें आदर सहित अंदर ले जाकर ऊँचे आसन पर बैठाया और स्वागत सत्कार किया। माँ ने उससे प्रसन्न हो पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया और मंदिर वापस जाने लगीं। तब चतुर बहू ने उन्हें अपना साया इसी घर में छोड़ जाने के लिए माँ से हाँ, करवा लिया।

वे आनंद से रहने लगे। कुछ दिनों में उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। अब उसके परिवार वालों ने भी उससे संतोषी माता की कृपा के बारे में जानकारी ली और वे सब भी माँ के भक्त हो गये और चैन से रहने लगे। आदिशक्ति की कृपा से क्षण में कुछ से कुछ हो सकता है। बस कृपा की देरी है, फल प्राप्ति में देर नहीं लगती है।

प्रदोष व्रत कथा

एक ठे सहर मं एक ठे ब्राम्हणी रहति रही। ओके पति के सरगवास होइ चुका रहा। ओकर अब केउ आरी गहकी नही रहा। एंह से सबेर होतइ उआ अपने लरिका के संघे भीखि मांगइ निकरि परत रही। भिक्षा माँगि कइ उ आपन अउ अपने लरिका केर पेट पालति रही। एक दिना ब्राम्हणी घरे लौटति रही। ओंका एक ठे लरिका चोटान काँखत राहि मं मिला। ब्राम्हणी बड़ी दयाल रही। उआ लरिका क अपने घरे लइ आई। लरिका विदर्भ केर राजकुमार रहा।

शत्रु के सिपाही ओके पिता के राजि पर हमला बोलि कइ ओनका बंदी बनाइ लिहिन रहा। ओनके राजि क अपने वस मं कइ लिहिन रहा। एह कारन से राजकुमार मारा-मारा फिरइ लाग।

अब ब्राम्हन के लरिका के संघे राजकुमार उ ब्राम्हणी के घरे मं रहइ लाग। एक दिना अंशुमति नाम कइ गंधर्व कन्निया राजकुमार क दिखिसि अउ उआ ओंह पर मोहित होइ गइ। अंशुमति राजकुमार से वियाह केर प्रस्ताउ रखि दिहिसि। राजकुमार के कहे पर दूसरे दिना उआ बिटिया अपने महतारी-बाप का ओनसे मिलवाइसि। बापउ-महतारी क राजकुमार परसन्द आइ ग। कुछ दिनन के बीते भगवान शिउजी अंशुमति के महतारी बाप के सपन दिहिनि कि एकर वियाह राजकुमार से कइ दीन जाइ। अब उ अइसनइ किहिनि।

ब्राम्हणी परदोस उपासे रहत रही। ओके उपासे के परभाउ अउ गंधर्वराज के सैना के मदति से राजकुमार बैरिन का खेदि दिहिनि। अउ विदर्भ मं पिता कइ राजि पुनि कइ पाइगें। अउ राजकुमार खुसी राजी रहइ लागे।

जउनि गरीब ब्राम्हनी राजकुमार केर पालन-पोषन करिसि, ओक राजमाता केर पद दीन ग। अउ ओकर लरिका शुचिव्रत राजकुमार (नये राजा) केर मंत्री बना।

इस प्रकार प्रदोष व्रत में शिवपूजन के परभाउ से उआ राजकुमार दुर्लभ पद पाइ ग। जउन मनई परदोस काल म, अउकि रोज-रोज एंह कहानी क सुनत हमा उ निहचित ओंह दुख से मुकुत होइ जात हं। अउ आखिर म उ परम पद पावइ के अधिकारी होइ जात हं।

भावार्थ

एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके पति का स्वर्गवास हो चुका था। उसका अब कोई आश्रयदाता नहीं था। इसलिये प्रात: होते ही वह अपने पुत्र के साथ भीख माँगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से ही वह अपना और अपने पुत्र का पेट पालती थी। एक दिन ब्राह्मणी घर

लौट रही थी, तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में रास्ते में कराहता हुआ मिला। ब्राह्मणी दयावश उसे अपने घर ले आई।

वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बंदी बना लिया था, और राज्य पर अपना नियंत्रण कर लिया था। इसलिये वह मारा-मारा फिर रहा था। राजकुमार ब्राह्मण पुत्र के साथ ब्राह्मणी के घर में रहने लगा। एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उस पर मोहित हो गई और उससे विवाह का प्रस्ताव कर डाला। राजकुमार के कहने पर दूसरे दिन अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उन्हें भी राजकुमार भा गया। कुछ दिनों बाद अंशुमति के माता-पिता को शंकर भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाय। उन्होंने वैसा ही किया।

ब्राह्मणी प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्व राज की सेना की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ दिया, और पिता के राज्य को पुनः प्राप्त कर आनंद पूर्वक रहने लगा।

जिस दरिद्र ब्राह्मणी ने इसका पालन-पोषण किया था, उसे ही राजमाता के पद पर आसीन किया गया। वह शुचिव्रत ही उसका छोटा भाई बना।

इस प्रकार प्रदोषव्रत में शिवपूजन के प्रभाव से वह राजकुमार दुर्लभ पद को प्राप्त हुआ। जो मनुष्य प्रदोष काल में अथवा नित्य ही उस कथा का श्रवण करता है, वह निश्चय ही सभी कष्टों से मुक्त हो जाता है और अंत में वह परम पद का अधिकारी बनता है।

पूर्णमासी व्रत कथा

एक वेर जसोदा मइया कृष्ण से कहिनि कि- तुं सगले संसार क पइदा करते हइ पलते हइ अउ मरते हइ। आजु हमका कउनउ अइसन उपास बतावा जउने से मेहरियन कर अहिवात अमर रहइ अउ सब मन कइ माँगन पूर होइ। अइसन प्रश्न सुनि कइ कृष्ण बोले कि अपना बहुतइ निकही बाति पूँछेन। अइसइ वरत हम अपना क बताइत हइ- जउने के फल खातिर बत्तिस पुन्न मासिन केर उपास करे परत हइ।

एह उपास क सबसे पहिले राजा चन्द्रहास के नगरी कातिका मं एक ब्राह्मण धनेश्वर अउर ओके मेहेरिया करिसि। ब्राह्मण के घरे मं धन-सम्पत्ति कइ कमी नहीं रही। पइ संतान नहीं रही। एंह से उ बहुत दुखी रहें। एक वेर ओंह नगरी मं एक जोगी महातिमा आवा। उआ ब्राह्मण

कइ घर छोड़ि कइ वाँकी के घरेन से भिक्षा माँगि कइ आपन भोजन करत रहा। दूसरे घरेन से भीखि मांगि कइ उआ गंगा किनारे बइठि कइ खात रहा। इया धनेस्सर देखि लिहिसि।

अपने भिक्षा केर अनादर देखिकइ उआ महातिमा से पूँछिसि कि अपना सब घरेन केरि भीखि त बड़े परेम से लइ लेइत हइ। पइ हमारि भिक्षा काहे नही लेइत। तब महातिमा बोले कि हम निपुत्रिन केर धन नही खइत। तब ब्राह्मण ओनके चरनन मं गिरि परा उ बहुतइ दुखी रहा। कहिसि कि महराज हमर घरे मं सब कुछु हइ, पइ हम लरिका न होये से बहुतइ दुखी हमन।

तब जोगी ओका चण्डी (दुर्गा) के पाठ करइ केरि सलाह दिहिसि। घरे अइकइ अपने पतनी से सब वाति बताइ कइ ब्राम्हन तपसिया करइ वन मं चला ग। पूजा के साथ-साथ उआ उपासउ करिसि। चण्डी ओके तप से खुशी होइ गई। ओका बेटवा होइ क वरदानउ दइ दिहिनि। पइ कहिनि कि लरिका सोरह वरिष के छोटि उमिरि म ओकर मउति होइ जई। पइ ज तुं दुनउ परनी बत्तिस पुन्नमासिन केर उपास करवे त उआ लम्मी उमिर पाइ जई। अपने सामरस के साथे पिसाने कइ दिया बनाइ कइ पूजा करे। एतना धियान रहइ कि पुन्नमासी आवत तक उ बत्तिस ठे होइजा। एंही वन मं तोहका एक ठे आँवा केर बिरवा देखई ओंह मं एकइ फर रही। ओका लइ जाइ कइ अपने पतनी क खवाइ दिहे, त उआ लड़िकहाई होइ जई। ब्राम्हन अइसइ किहिसि अउ ओकर मेहेरिया गरभवती होइ गइ। भगवती के किरपा से ओनके एक लरिका भ। ओकर नाउ देवीदास धराइनि। उआ पढ़इ मं बहुतइ हुसिआर रहा।

महातिमा जि के कहे अनुसार महतारी बत्तिस पूरनमासी वाला उपासउ सुरू कइ दिहिसि जउने उआ बड़ी आरदा पाइ जाइ। सोरहमा वरिष आबा। अब ब्राम्हन कइ चिन्ता बढ़इ लागि। उआ अपने आगे लरिका केर मउति नही देखि सकत रहा। एहसे लरिका क पढ़इ खातिर कासी पठइ दिहिसि। दुनउ परानी देवी उपासना अउ पुन्नमासी वरत करइ मं लगिगे।

काशी जात मं मामा अउ भइने एक सहर मं ठहरे। ओही जघे एक ठे बहुतइ गुनी अउ सुंदरि विटिया केर बियाह होइ वाला रहा। ओउ सब ओही धरमसाला मं रूके रहें। वियाह के समइ अचनकइ व बिमार होइग। तब लरिका केर बाप सोचिसि कि इया तरिका हमरेन लरिका कस सुन्दरि हइ। एहसे एही के संघे कन्निया केर बियाह कराइ देई। बाद मं विदा हमहिन कराइ लइ जाव। उ बालक के मामा क पटाइ लिहिन अउ देवीदास के संघे वियाह होइग। जब उअ ावर अपने पतनी के संघे भोजन नही कइ पावा त उआ बहुत सोच मं परि ग। अउ कन्निया का सब पता चलि ग तब उआ कहिसि कि हमार वियाह त तोहरेन साथ म हइ। हम तोहरेनि साथ जाव। देवीदास अपने कम उमिरि केर वाति बताइ दिहिनि अउ काशी पढ़इ जाइ लागे। जब कन्निया नहीं मानिसि तब देवीदास ओका तीन नग वाली अँगूठी अउ रूमाल दिहिन अउ कहिनि कि अपने बगिया मं एक ठे पौधा लगाइ ले अउ ओका रोज सीचे जये। जब ओका फूल

मुरझाइ जाई त समझि जये हम मरि गयेन, अउ जब उआ पुनिकइ फुलाइ अई त मानि लिहे कि हम जि उठेन।

ओंह कइती सब बराती विदा करावइ खातिर मड़ये तरे आये, पइ कन्निया सब बाति बताइ दिहिसि, अउ जाइ से मना कइ दिहिसि। सब आपन कस मुँह लिहे चलेगें।

ओंह कइती देविउदास काशी मं पढ़इ लागे। एक दिन एक ठे सरप आबा अउ ओनका काटइ चाहिसि, पइ व्रतराज के परभाउ से उहउ विफल होइग। खुद कालउ ओनका मारइ चाहिसि, पइ उह नही मारि पाइसि। देवीदास विहोस रहें। संजोग से शिउ-पार्वती ओंही कइती से निकरें। पारवती ओका दिखिनि उर शिउजी से कहिनि- प्रभु एकर महतारी त पहिलेन बत्तिस पूरनमासी केर उपास कइ चुकी हइ। अब अपना एका जीमन दान देई अउ लम्मी उमिरि देई। व्रतराजइ के परभाउ से काल ओका छाड़ि दिहिसि अउ उआ जि उठा।

ओंह कइति ओकर पतनिउ देखिसि कि बगइचा मं उजड़ेन फूल क रोज सीचति रही। उआ एक वेर मुरझाइ ग अउ पुनि फुलाइ आवा। त उआ समझि गइ कि ओकर आदमी जिन्दा हइ। उआ ओनके लउटइ कइ राहि निहारइ लागि। अउ पिता से ओनका खोजइ क कहिसि संजोग से देवीदासउ आपनि पढ़ाई पूर कइके ओंही राहि निकरे अउ रूके। कन्निया केर पिता ओनका चीन्हिगे, आदर से अपने महल लइगें। राजी-खुशी धन-असवाव दइकइ बिटिया केरि बिदा करिनि।

देवीदास केर बाप-महतारी मारे सोच के मरे जात रहे। पर जब लरिका-पतोह वापिस आवइ केरि खबरि पाइन त बहुतइ खुशी भ। बहुत बड़ा उच्छउ -उराउ किहिनि, अउ अपने समाइति के तहत ब्राम्हनन क दान-दक्षिना दिहिनि। अब पूरा परिवार खुसी -राजी एक साथ रहइ लागे।

कृष्ण जि मइया क बताइनि कि जउन स्त्री एह उपास क विधि-विधान से करति हइ, ओनकर अहिवात हमेसा वना रहत हइ। ओनकरि सगली लालसा सिउजी पूर करत हमा।

एंह उपास क अगहन अउ माघ के महीना से सुरू करइ चाही। अउ वत्तिस पुन्नमासी कइके भादौं अउ पूस म उद्यापन कइ देइ चाही।

भावार्थ

एक बार यशोदा माता ने कृष्ण से कहा- हे कृष्ण! तुम सारे संसार के उत्पन्नकर्ता, पोषण और संहारकर्ता हो। आज मुझे कुछ ऐसी व्रत कथा सुनाओ, जिसके करने से स्त्रियों को विधवा होने का भय न रहे और संसार में सभी मनुष्यों की मनोकामनायें पूर्ण हों। ऐसा सुंदर प्रश्न सुन

कृष्ण बोले– आपने अति सुंदर प्रश्न किया है। मैं ऐसा व्रत आपको सविस्तार सुनाता हूँ– व्रत के फल प्राप्ति हेतु बत्तीस पूर्णिमाओं का व्रत करना चाहिये।

सर्वप्रथम इस भूमण्डल पर एक राजा चन्द्रहास की प्रसिद्ध नगरी 'कातिका' में धनेश्वर नाम के एक ब्राह्मण और उसकी पत्नी ने यह व्रत किया। उनके घर में धन–धान्य की कमी नहीं थी, किन्तु उनके कोई संतान न थी। इससे वे बहुत दुखी रहते थे। एक बार उस नगर में एक बड़ा तपस्वी योगी आया। उस ब्राह्मण के घर को छोड़कर वह सभी घरों से भिक्षा माँग भोजन करता था। रूपवती से वह भिक्षा नहीं लेता था। दूसरे घरों से भिक्षा माँगकर वह गंगा किनारे जाकर खा रहा था। यह सब धनेश्वर ने देख लिया।

अपनी भिक्षा का अनादर देख उसने योगी से पूछा कि महात्मन् सब घरों की भिक्षा तो आप प्रेम पूर्वक ले लेते हैं, किन्तु हमारे घर से कभी नहीं लेते। कारण बताइये? योगी बोला– मैं निपुत्री के घर की भिक्षा नहीं ले सकता। ऐसा अन्न खाकर मैं भी पतित हो जाऊँगा। यह सुन ब्राह्मण बहुत दु:खी हुआ, और योगी के चरणों पर गिर पड़ा और बोला– महाराज जी मुझे पुत्र प्राप्ति का उपाय बताइये। धन की मेरे घर में कमी नहीं है, किन्तु फिर भी मैं दु:खी हूँ।

योगी ने उसे चण्डी की आराधना करने के लिए कहा। घर आकर उसने अपनी पत्नी को सब कुछ बतलाया और तप करने वन में चला गया और आराधना के साथ–साथ उपवास भी किया। चण्डी प्रसन्न हुई और उसे पुत्र होने का वरदान भी दिया, किन्तु वह सोलह वर्ष की अल्पायु में मर जायेगा। यदि तुम दोनों बत्तीस पूर्ण मासियों का व्रत करोगे तो वह दीर्घायु हो जायेगा। सामर्थ्य के अनुसार आटे के दिये बनाकर पूजन करना, किन्तु पूर्णिमा को बत्तीस हो जाने चाहिए। यहीं तुम्हें एक आम का वृक्ष दिखाई देगा। उसका एक फल ले जाकर अपनी पत्नी को खिलना, वह गर्भवती हो जायेगी। ब्राह्मण ने ऐसा ही किया। वह फल लाकर अपनी पत्नी को दिया, उसे खाकर वह गर्भवती हो गई। देवी जी की कृपा से उसे एक सुंदर पुत्र हुआ। उसका नाम देवीदास रखा। वह पढ़ने में बहुत होशियार था।

महात्माजी के कथनानुसार उसकी माता ने बत्तीस पूर्णमासी वाला व्रत भी प्रारम्भ कर दिया, जिससे पुत्र दीर्घायु हो जाय। सोलहवाँ वर्ष आया। चिन्तित ब्राह्मण ने उसे मामा के साथ काशी विद्याध्ययन के लिए भेज दिया। क्योंकि यह दुर्घटना देख वह जीते जी मर जायेंगे। बालक को काशी भेज वे दोनों माँ दुर्गा की आराधना करते हुए पूर्णिमा व्रत करने लगे।

काशी जाते वक्त मामा और भानज रात्रि बिताने के लिये एक नगर में रुक गये। वहाँ की एक अत्यंत सुंदरी और गुणवान ब्राह्मण कन्या का विवाह होने वाला था। वे भी उसी धर्मशाला में ठहरे हुए थे। विवाह के समय वर बीमार हो गया। लड़के के पिता ने सोचा कि देवीदास भी

उसके पुत्र जैसा ही सुंदर है, अतः उसके मामा को लालच देकर पटा लिया और उसी के साथ विवाह सम्पन्न करवा दिया। जब दूसरा वर अपनी पत्नी के साथ भोजन नहीं कर पाया तो वह चिन्तित हुआ। किन्तु कन्या ने उससे सब कारण जान लिया और कहा कि मेरा विवाह तो आपके ही साथ हुआ है। अब आप ही मेरे पति हैं। देवीदास ने अपने अल्पायु होने का कारण बताया और उसे अपने पति के साथ जाने को कहा, किन्तु कन्या ने साफ मना कर दिया। दोनों ने साथ भोजन किया, और देवीदास अपनी अँगूठी और रूमाल देकर काशी विद्या अध्ययन के लिये चला गया।

उसने पत्नी को वाटिका में एक पौधा लगाने और उसे प्रतिदिन सींचने की बात कही और बताया- जब यह पौधा सूख जाये तब मानना मेरी मृत्यु हो गई, और जब फिर से जीवित हो जाये तब समझना मैं जीवित हो गया।

उधर वैवाहिक रस्म समाप्त हो जाने पर सब बाराती मण्डप में विदाई हेतु आये। किन्तु कन्या ने सब बता दिया कि यह मेरा पति नहीं है। यह बताया कि मैंने इसे सुहागरात में क्या दिया। लड़का कुछ न बोला। अब सब समझ गये और बाराती बहू रहित वापस लौट गये।

उधर देवीदास काशी विद्याध्ययन करने लगा। एक दिन एक साँप ने उसे डँसना चाहा किन्तु व्रतराज के प्रभाव से उसे काट नहीं पाया। स्वयं काल भी उसे नहीं मार पाया। वह मूर्छित था। शिव-पार्वती संयोगवश उसी रास्ते से गुजर रहे थे। पार्वती जी ने शंकर जी से कहा कि प्रभो इसकी माता ने पहिले ही बत्तीस पूर्णमासी का व्रत किया है, अतः इसे प्राणदान दें और दीर्घायु करें। व्रतराज के प्रभाव से ही काल ने उसे छोड़ दिया और वह जीवित हो गया।

उधर उसकी पत्नी ने पुष्प वाटिका में पुष्प के मुरझाने और पुनः खिल जाने से समझ लिया कि उसका पति जीवित है। उसने पिता से उसे ढूँढने को कहा। देवीदास की शिक्षा पूरी हुई, वह उसी नगर होकर वापस आ रहा था। उधर उसके ससुर उसे ढूँढने निकले, उसे पाकर अपने घर ले गये और बहुत सा धन-सम्पत्ति देकर बेटी को उसके साथ विदा किया।

बालक के माँ-बाप भी चिन्तित हो गये थे, किन्तु जब पुत्र और वधू के आने की खबर मिली तो वे बहुत खुश हुए और इस खुशी में बहुत भारी उत्सव किया तथा ब्राह्मणों को दान दक्षिणा भी दी। पूरा परिवार खुश हो रहने लगा।

कृष्ण जी ने माता को बताया कि जो स्त्रियाँ इस व्रत को करती हैं, वे हमेशा सौभाग्यवती रहती हैं और उनकी सभी इच्छाएँ शिवजी की कृपा से पूर्ण होती हैं। इस व्रत को अगहन या माघ मास में आरम्भ करें और भादों या पौष को उद्यापन करना चाहिए।

विहफै व्रत कथा

भारथ मं एक ठे बड़ा परतापी अउ दानी राजा राजि करत रहा। ओके रानी क इया बाति बिरकुलइ नही नीक लागति रही। न उआ भगमान कइ पूजइ करति रही न दानइ करति रही। बअक सजउ क वरजति रही। एक दिना राजा वन मं हांका खेलइ गे रहें। रानी घरे मं अंकेलिनि रही। जो हीं समइ विहफइ देउ ओनके घरे भिक्षा मांगइ आयें। भिक्षा देव त दूरि रहा। रानी बोली कि हम त एंह भिक्षा अउ दान से तंग होइ गयेन। हमार आदमी त हर समइ धन लुटावत रहत हइ। हम त चाहित हइ कि बअक हमार सब धन नाश होइ जाइ त नीक। 'न रही बांस अउ न बाजी बांसुरी'। साधू बोले देवी तुं त बहुतइ विचित्त हइउ। धन अउ लरिका त सबइ चाहत हइ। जउ तोंहरे लगे एतना धन हर त तु ओका गरीबन के भलाई भ लगाइ देअ तोहार जसउ होई अउ परलोकउ बनी। रानी बोली- बस अब अपना हमका अउर न समझाई। साधु बोले- ठीक हइ तु हठ धइ बिहफइ क घर लीपिउ, पियरि माटी से जीगर धोइउ अउ भट्ठी मं चढ़ाइ कर ओन्ना पखारिउ। खुदइ धन नष्ट होइ जई।

रानी ओइसनइ करिसि। छः बिहफइ वीतें कि ओकर सब धन नाश होइ ग। खाइ कइ लाला परिगा। लोक लाजि के डेरि से राजा परदेस चलेगे। हुआँ वन से लकड़ी काटि के वेंचा, तब ओनका भोजन मिलइ। एक दिना उ असहार होइ के वन मं एक विरवा तरे बइठिगे। तबइ विहफइ देउ साधू के भेष मं परगट होइगे। बोले कि एह सुनसान वन मं कउने चिन्ता मं बइठ ह। तब राजा सब आपबीती सुनाइ दिहिन। देउता बोले कि राजन् तोहारि अउरति वीर भगवान केर अनादर करिसि हइ। ओइ नराज होइकइ तोहारि इया दसा कइ दिहिनि। अब तुं ओउसइ करा जइसन हम कही। तु बिहफइ के दिन पाठ करा। लहिला अउ मुनक्का केर परसाद चढ़ावा अउ कथा सुनइ वालेन क बांटा, अउ खुदउ उआ परसाद खा। सब कामना पूरि होई।

तब लकड़हरा बोला- देउता हमका लकड़ी बेंचे से अतना पइसा नही मिलत अइ कि हम खाइउ लेई अउ बचाइउ लेई। सपने मं अपने मेहेरियउ क दुखी दिखिसि। साधू बोले कि तुं बिहफइउ के दिना रोज के नाई लकड़ी बेंचइजा। ओह दिना तोहका अतना पइसा मिली कि साइउ क होइ जई अउ परसादउ क वचि जई।

लकड़हारा ओइसइ किहिसि। ओकर सब दुक्ख दूर होइगा। पइ दूसरे बिहफइ क उआ उपास अउ पूजा बिसरि ग। देउता नाराज होइगे। ओंह नगर केर राजा मुनादी पिटवाइ दिहिसि कि केउ अपने घरे मं खाइ क न बनवइ। सब हमरे घरे आइ कइ खावा करां। नही तउ फाँसी दइ दीन जई। सब खाइ पहुँचे पइ लकड़हारा बेरि कइ पहुँचा। राजा ओका भोजन करउतइ रहे कि रानी कइ नजर खूँटी मं टांगे हार पर पहुँचि। उहा हार नही देखान। ओनका लकड़ी वाले के उपर शंका भई। उ झट-टइ पुलिस बोलाइ कइ ओका जहल मं बेड़ाइ दिहिन। लकड़हारा पुनि

दुखी भ अउ वन मं मिले साधू कइ सुधि किहिसि। तुरतइ साधू परगट भें अउ बोले–

अरे मूरख तइ बिहफइ देउ कइ कथा अउ उपास नहीं करे एहीं से तोका इया दुक्ख मिला हइ। पइ फिकिर न करू बिहफइ क तोका जेल के दुआरे मं चारि पइसा परे मिलिही। अब उआ अइसइ किहिसि। ओही से बिहफइ देउ केर पूजा करिसि। ओकर सब दुख देउ के किरिपा से दूर होइगें।

ओंह कइति राजउ क सपन दिहिन कि जेका त जेल मं कइद किहे हवा उआ मनईकेर कसूर कुछु नही आई। राजा लकड़हारा क छांड़ि दिहिन। जब जाइ कइ दिखिन त रानी केर हार ओंही खूटी मं टंगा मिला। लकड़हारा क बोलाइ कइ क्षमउ मांगिनि साथे मं बहुत धन–दउलत दइ विदा कइ दिहिन। अब उ अपने नगर क आपस चला ग।

नगर कइ धन–सम्पति देखि कइ उआ चउआइ ग। जब लोगन से पूंछिसि त पता चला कि सब सम्पति रानी अउ बाँदी कइ आइ। ओका गुस्सउ लागि। रानी क जब राजा के आबइ कइ पता चला त दासी क दरवाजा मं खड़े कइ दिहिनि। जब राजा आयें त बाँदी ओनका राजमहल लइ गइ। रानी ओनकर बड़ा आदर सतकार करिसि अउ बताइसि कि इया सब बिहफइ देउ के किरपा से भ हइ। अब राजा दिन मं तीनि वेर पाठ करब अउ उपाय सुरू कइ दिहिनि।

एक दिना राजा अपने बहिनी के हियाँ जात रहें। राहि मं कुछु जने मुर्दा लिहे जात रहें। राजा ओनहूँ क बिहफइ देउ कइ कथा सुनउ अउ उपास करइ क कहिन। उचित समइन देखि कइ कुछ जनेन क इया नही नीक लाग। पइ कुछ तयार होइगे। राजा कथा सुरू करिनि कुछइ बेर मं मुरदा हालइ लाग। कथा पूरि होतइ उआ उठि कइ बइठि ग।

राजा आगें गें त एक किसान हर जोतत मिलि ग। पइ उहउ राजा से कथा सुनइ क तयार नही भ। राजा आगे क बढ़ि चलें। एतने मं किसान केर बरदा पछाड़ खाइ कइ गिरि परा अउ ओकर पेट पिराइ लाग। किसान कइ महतारी खाइक लइ कइ आई। किसान से सब वाति जानिसि अउ जाइ कइ घोड़सवार से कहिसि कि हमरेन खेते मं चलि कइ कथा सुनावा। राजा अइसइ किहिनि। किसान केर वरदा उठि खड़ा होइ ग अउ ओकर दुक्ख दूर होइ ग।

अब राजा अपने बहिनि के घर पहुँचे। दूसरे दिना सबेरिनि बहिनी से कहिनि कि जे अवा खाये न होइ उआ हमारि कथा सुनि लेइ। पइ सब खाइ चुके रहे। अंत मं गाँउ मं एक कोहार केर लरिका बेराम रहा। ओके घरे मं तीन दिना से सब भूखे रहें। राजा हुअइन जाइ कइ कथा सुनाइनि। कोहार केर लरिका नीक होइ ग। राजा केरि सब परसंसा करइ लागे।

अब राजा अपने बहिनि के अपने घरे चलइ क कहिसि। वइ बहिनि कइ सासु लरिकन क जाइ से रोकि दिहिसि। कहिसि निरवंशी के घरे हमार नाती नतकुर न जइहीं। राजा मन मारे अकेलेनि लउटि ग। अपने मेहेरिया से सब बताइसि अउ दुक्ख के मारे खाइसि नहीं। तब बृहस्पति देउ सपन दिहिनि कि तु दुखी न हो तोहरे लरिका होई। राजा के सुंदर लरिका पइदा भ।

जब बहिनी क पता चला तउ उआ मारे खुसी के बधाउ लइकइ अइ। रानी टपाक से कहि दिहिसि आखिर घोड़े पर चढ़िकइ नही आई गदहा पर चढ़ि कइ आई। तब ननदि बोली- भउजी ज हम अइसन न कहित त तुं अउलादि कहाँ पउतिउ। तब राजा अउ रानी कहिनि कि इया त बिहफइ देउ के किरिपा से भ हइ। जे सही दिल से देउ कइ पूजा करत हमा ओनकर देउता हमेसा राई रक्षिया करत हमां।

भावार्थ

भारत में एक राजा राज्य करता था, वह बड़ा प्रतापी और दानी था। किन्तु उसकी रानी को यह बात अच्छी नहीं लगती थी। वह न तो भगवान की पूजा करती और न ही दान-पुण्य करती थी। बल्कि राजा को भी मना करती थी।

एक दिन राजा वन में शिकार खेलने गये हुए थे और रानी घर में अकेली थी। उसी समय बृहस्पति देव साधु का वेश धारण कर राजा के महल में भिक्षा मांगने गये। रानी ने भिक्षा देना तो दूर, बोली- मैं तो इस दान-पुण्य से तंग आ गई हूँ। मेरा पति तो सारा धन लुटाता रहता है। मेरी इच्छा है कि मेरा धन नष्ट हो जाय तो ज्यादा अच्छा- 'न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी'।

साधु बोले - देवी तुम तो बड़ी अजीब हो। धन-संतान तो सभी चाहते हैं। पुत्र और सम्पत्ति तो पापी भी चाहता है। अगर तुम्हारे पास इतना धन है तो दूसरों की भलाई के काम करो, इससे तुम्हारा यश लोक-परलोक में फैलेगा। वह बोली- बस अब आप मुझे और न समझाएँ। साधु बोले- ठीक है तुम बृहस्पतिवार को घर लीपना, पीली मिट्टी से सिर धोना और भट्ठी चढ़ाकर कपड़े धोना। धन अपने आप नष्ट हो जायेगा।

रानी ने वैसा ही किया। छः बृहस्पति बीते की उसका सब धन नष्ट हो गया। भोजन को दोनों तरसने लगे। लोक लज्जा के डर से राजा परदेश चला गया। वहाँ जंगल से लकड़ी काटकर बेचता, तब उन्हें भोजन मिलता। एक दिन निःसहाय हो जंगल में एक पेड़ के नीचे आसन लगा कर बैठ गया। तभी बृहस्पति देव साधु वेश में प्रकट हुए। बोले- इस सुनसान जंगल में अकेले चिन्तित क्यों बैठे हो? तब राजा ने सब आप बीती सुनाई। देव बोले- राजन् तुम्हारी पत्नी ने वीर भगवान का निरादर किया है। उन्हीं ने रुष्ट हो तुम्हारी यह दशा कर दी। अब तुम जैसा मैं कहूँ

वैसा करो। तुम बृहस्पति के दिन पाठ करो और चने-मुनक्का का प्रसाद चढ़ाकर श्रोताओं को बाँटो और खुद भी ग्रहण करो। सब कामनाएँ पूर्ण होंगी।

लकड़हारा बोला- प्रभु! मुझे लकड़ी से इतना पैसा नहीं मिलता कि मैं भोजन के बाद कुछ बचा सकूँ। स्वप्न में मैंने अपनी पत्नी को भी व्याकुल देखा है। साधु बोले- तुम बृहस्पति के दिन भी रोज की तरह लकड़ी लेकर जाओ, तुम्हें दुगुना पैसा मिलेगा। भोजन भी हो जायेगा और पूजन भी हो जायेगा।

लकड़हारे ने वैसा ही किया। उसके सभी कष्ट दूर हो गये, पर दूसरा गुरुवार आने पर वह व्रतपूजन करना भूल गया। देव नाराज हो गये। उस दिन से उस नगर के राजा ने घोषणा कर दी कि कोई अपने घर में भोजन न बनावे। मेरे यहाँ भोजन करे, नहीं तो फाँसी की सजा दी जायेगी। सब भोजन करने पहुँचे, पर लकड़हारा देर से पहुँचा। राजा उसे भोजन करा ही रहे थे कि रानी की दृष्टि खूँटी में टँगे हार पर पड़ी। वह नहीं दिखा। उन्हें लकड़हारे पर शक हुआ और रानी ने उसे जेल भिजवा दिया। लकड़हारे ने पुनः दुखी हो जंगल में मिले साधु को याद किया। तुरन्त देव प्रकट हुए और बोले- अरे मूर्ख! तूने बृहस्पति देव की कथा नहीं की, इससे तुझे दुःख प्राप्त हुआ। चिन्ता न कर बृहस्पतिवार को जेल के दरवाजे पर चार पैसे पड़े मिलेंगे। उनसे बृहस्पति देव की पूजा करना, सभी दुःख दूर हो जायेंगे। उसने ऐसा ही किया।

उधर बृहस्पति देव ने राजा को स्पप्न दिया कि वह व्यक्ति निर्दोष है, जिसे जेल में कैद किया है। राजा ने उसे छोड़ दिया। घर में देखा तो रानी का हार उसी खूँटी पर टंगा था। लकड़हारे को बुला क्षमा माँग उसे बहुत सारे वस्त्र-भूषण दे विदा किया। तब वह अपने नगर को वापस गया। वहाँ अपार सम्पत्ति देख उसे आश्चर्य हुआ, उसने जब लोगों से पूछा तो उत्तर पाया कि यह सब रानी और बाँदी का है। तब वह बहुत गुस्साया, पर रानी को जब पता चला कि राजा आया है तो उसने बाँदी को द्वार पर लगा दिया। वह राजा को राज महल ले गई। रानी ने राजा का आदर सत्कार किया और सच-सच बताया कि यह सब बृहस्पति देव के व्रत की कृपा से हुआ है। अब तो राजा ने हर दिन तीन बार पाठ करना और व्रत करना शुरू कर दिया।

एक दिन राजा अपनी बहिन के यहाँ गया। रास्ते में कुछ लोग मुर्दा लिए जा रहे थे। राजा ने उन्हें भी बृहस्पति देव का व्रत करने की सलाह दी। पर उन्हें समयानुसार यह अच्छा न लगा, किन्तु उनमें से कुछ तैयार हो गये। राजा ने कथा शुरू की और मुर्दा हिलने लगा। कथा पूरी होते वह जीवित हो गया।

आगे गया तो एक किसान हल जोतता मिला, राजा ने उससे भी कथा सुनने को कहा, पर अपने काम के आगे उसने भी मना कर दिया। राजा के आगे बढ़ते ही उसका बैल पछाड़ खा गिर

गया। उधर किसान की माँ उसके लिये खाना लेकर आ गई। उसने बेटे से सब हाल सुना और दौड़ती हुई घुड़सवार (राजा) के पास पहुँची और बोली कि तुम मेरे खेत पर चलकर अपनी कथा कहो। उसने ऐसा ही किया, किसान का बैल उठ खड़ा हुआ और उसके पेट का दर्द भी ठीक हो गया।

अब राजा अपनी बहिन के घर पहुँचा। दूसरे दिन प्रातः उसने बहिन से कहा– जिसने अभी भोजन न किया हो, वह मेरी कथा सुन ले। किन्तु कोई भूखा न मिला। अंत में एक कुम्हार मिला जिसका लड़का ज्यादा बीमार था। उसके यहाँ तीन दिन से किसी ने भोजन नहीं किया था। अब कुम्हार के घर राजा ने कथा कही और उसका लड़का ठीक हो गया। राजा की चारों ओर प्रशंसा होने लगी।

राजा ने अपनी बहिन को अपने साथ चलने को कहा, किन्तु निरवंशी राजा के यहाँ बहिन को छोड़ बच्चों को जाने से उसकी सास ने मना कर दिया। तब राजा मनमारे अकेले ही अपने नगर वापस आ गया। पत्नी को सब बताया। दुखी होने के कारण उसने भोजन भी नहीं किया। किन्तु रात में बृहस्पति देव ने स्वप्न में कहा कि राजन तुम घबराओ नहीं, तुम्हारे अवश्य औलाद होगी। ऐसा ही हुआ। उसे सुंदर पुत्र प्राप्त हुआ।

जब बहिन को पता चला, तब वह खुशी हो बधावा लेकर आई। रानी ने तपाक से कह दिया– 'आखिर घोड़े पर चढ़कर नहीं आई, गधे पर चढ़कर आई।' बहिन ने कहा– भाभी अगर मैं ऐसा न कहती तो तुम्हें औलाद कैसे मिलती? तब राजा और रानी ने कहा कि यह तो बृहस्पति देव की कृपा से हुआ है। जो सही मन से उनकी पूजा और व्रत करता है। वे सदैव उसकी रक्षा करते हैं।

अहोई अष्टमी व्रत कथा

बहुत पुराने जमाने कइ बाति आइ कि भारत मं एक नगर रहा। ओह मं चन्द्रभान नाम केर एक साहूकार रहत रहा। ओके अउरति केर नाम चन्द्रिका रहा। उआ बहुतइ गुनी, सुन्दरि, शीलमानि, चरित्तमानि अउर पतुरवचा रही। ओके कइयइ लरिका– अउ बिटिया भें पइ सब छोटिन उमिरि मं मरि जात रहें। संतान के अइसन मरि जाये से उ दूनउ बहुत दुखी रहत रहें। उ पति–पतनी मनइमन सोचत रहें कि हमरे मरे के बाद एंह सम्पति केर के मालिक होई। एक दिन दुनउ जने तय किहिन कि अब हम पचने सब सम्पति तियागि कइ वन मं बसि जई। तब दूनउ जने सब घर दुआर तियागि कइ जंगल कइति चलि दिहिन। जब चलत–चलत थकि जां तब ठहि–ठहि कइ चला। एहीं ता चलत–चलत उ वद्रिकाश्रम के नियरे पहुँचे। जहाँ एक शीतल

कुण्ड रहा। तुँअइनि अन्न जल तियागि कइ मइ क बइठिगे। बइठे–बइठे सात दिना बीति गें। सतयें दिना अकासवानी भइ कि तुं पचे आपन परान न तियागा। इया दुःख तोहका पचेंन क पूरूब जनम के करे पाप के कारन भ हइ। अब तुं अपने अउरति से अहोई अट्टिमी के दिना उपास रखबावा। जउनि कि कातिक महीना के अंधिआरी पाख मं अट्टिमी के दिना होति हइ। बरत के परभाउ से अहोई माई परसन्न होइजइही अउ तोंहरे लगे अइही। तब तु पचेन अपने लकिरन केरि लम्मी आरदा मांग लिहेअ। जउने दिना उपासे रहेअ तु दुनउ जने राधा कुण्ड मं राति कइ नहये।

इया वाति सुनिकइ चन्द्रभान कइ मेहेरिया चन्द्रिका बड़ी सरधा अउर विधि–विधान से अष्टमी केर उपास करिसि। राति कइ उ दुनउ राधा कुण्ड मं नहाइनि। जब साहूकार नहाइ कइ लउटे तब ओनका अहोई देवी केर दरसन में अहोई देवी वरदान मांगइ क कहिनि। तब साहूकार वर मांगिसि कि हमार लरिका छोटिन उमिरि मं परलोक सिधारिजात हं। ओनका लम्मी आरदा देइ केर वरदान देई।

देवी ओनके लरिकन कइ आरद्राय बढ़ावइ केर वर दइ कइ अलोप होइ गई। कुछ दिना बाद साहूकार के लरिका म जउन बहुतइ बिदुअन, बलमान, परतापी अउर लम्मी आरदा वाला भ।

भावार्थ

बहुत पुराने समय की बात है कि भारत वर्ष में एक नगर में चन्द्रभान नामक एक साहूकार रहता था। उसकी पत्नी का नाम चन्द्रिका था। वह बहुत गुणवान, शील, सौन्दर्य से पूर्ण, चरित्रवान और पतिव्रता थी। उसके कई पुत्र और पुत्रियाँ हुए पर सभी छोटी उमर में ही यमलोक चले गये। संतान के इस प्रकार से मर जाने से वे दोनों बहुत दुखी रहते थे। वे पति–पत्नी मन ही मन सोचा करते थे कि हमारे मरने के बाद इस वैभव का कौन अधिकारी होगा। एक दिन दोनों ने निश्चय किया कि सब धन आदि को त्याग कर जंगल में वास किया जाय। दोनों दूसरे दिन सब घरबार भगवान के ऊपर छोड़कर जंगल में वास करने चले गये। जब चलते–चलते थक जाते तो रुक–रुक कर आगे बढ़ते। इस प्रकार चलते–चलते वे बद्रिकाश्रम के पास एक शीतल कुण्ड पर पहुँचे। वहाँ अन्न जल छोड़कर मरने के लिए बैठ गये। इस प्रकार बैठे–बैठे उन्हें सात दिन बीत गये। सातवें दिन आकाशवाणी हुई कि तुम लोग अपने प्राण मत त्यागो। यह दुःख तुम्हें पूर्व जन्म के पाप के कारण ही हुआ है। अब तुम अपनी पत्नी से अहोई अष्टमी के दिन, जो कार्तिक वदी अष्टमी को आती है– व्रत रखना। इस व्रत के प्रभाव से अहोई नाम की देवी प्रसन्न होगी और वह आपके पास आयेंगी। तब तुम लोग उससे अपने पुत्रों की दीर्घायु माँगना। व्रत के दिन तुम दोनों राधा कुण्ड में रात्रि में स्नान करना। उसके बाद चन्द्रभान की पत्नी चन्द्रिका ने

बड़ी ही श्रद्धा से विधि-विधान के अनुसार व्रत धारण किया। रात्रि को वे दोनों पति-पत्नी राधा कुण्ड में स्नान करने गये। जब साहूकार स्नान करके वापस आया तो उसे देवी के दर्शन हुए। अहोई देवी ने वर माँगने को कहा। तब साहूकार ने वर माँगा कि मेरे बच्चे कम आयु में ही देवलोक को चले जाते हैं। अत: आप उन्हें दीर्घायु होने का वरदान दो।

अहोई देवी ने पुत्रों के दीर्घायु होने का वरदान दिया और वे अन्तर्धान हो गई। कुछ दिन बाद साहूकार के पुत्र हुआ जो विद्वान, बलशाली, प्रतापी तथा आयुष्मान हुआ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत कथा

त्रेता जुग केर अंत मं अउ दुआपर जुग आवा तब मथुरा मं कंस नाम के नीच राजा केर जनम भ। उआ बहुत कुन्नियाई रहा। धरती के उपर होलिहारी मचाये रहा। ओसे सब जिउधारी मनई, गन्धरव सब परेशान रहें। देउकी नाउ कइ ओकर एक ठे सुन्दरि बहिनी रही। बहिनी के उआ बहुतइ चाहत रहा। ओकर बियाह वसुदेव से बहुतइ ठाठ-वाट से किहिसि। जब देउकी क विदा करइ लाग तब आकाशबानी भइ-

कंस देउकी केर अठमां बेटवा तोरे जिये का वधिक होई। इया सुनि कइ कंस ओकर डोला रोकि लिहिसि अउ अपनेन जेल मं देवकी वसुदेव का कैद कइ लिहिसि। पहरेदार लगाइ दिहिसि अउ हिदाइत दइ दिहिसि कि जब एनके सन्तानि होइ ओकर सूचना तुरतइ हमका दीन जाइ। इया तां उ ओनके सात संतानन क एक-एक कइके मारि डारिसि।

जब देउकी के अंठमा गरभ रहा ओंह समइ त अउरइ चौकसी कइ दीन गइ। जउन समय महीना मं कृष्ण केर जनम भ ओंही समय गोकुल मं नंदबाबा के घरे मं एक ठे कन्नियउ केर जनम भ।

जउने दिन कृष्ण केर जनम भ उआ दिना भादंउ महीना के अंधियारी पाख केरि अष्टिमी रही जउन कि रोहिनी नक्षत्र वेधी रही। ओंह कइती जब लरिका का जनम होइ ग अउ उ माता का असली रूप क दर्शन दइ कइ पुनि कइ बालक रूप मं आइगें। तब माता देउकी अपने लरिका क गोकुल मं नंदबाबा के घर जशोदा मैया के लगे पहुँचावइ कइ सलाह दिहिनि। अउ ओन के घरे से कन्निया का अपने घरे लइ आवइ क कहिनि। काहेकि-

एक वेर उ पानी भरइ जमुना जी मं गईं त हुअइन ओन का नन्दकइ रानी जशोदा मिलि गईं। तब देउकी ओन से आपन दु:ख बताये रही कि ओकर भाई कंस ओके उपर बहुतइ अत्तियाचार करे है। ओके सबहिन संतानन का पैदा होतइ मारि डारत हइ। जशोदा से ओकर इया

दु:ख न देखि ग। उ कहिनि हमहूँ गरभ से हन। दुनउ जने केर लरिका एकइ समय म होइहीं। जऊ हमरे बिटिया होइ जई त हम ओका तोहका दइ देव। अरूर तू अपने लरिका का हमरे पठबाइ दिहे। इया बाति केइ क न जानइ मिलई काहे कि एहीं से कंस क खतरा हइ।

अइसनइ भ। वसुदेउ जी सूपा मं पहुड़ाइ कइ लरिका का लइ कइ आधी राति के समइ गोकुल गाँउ क चलि दिहिनि। ओंह समइ भादउँ क महीना, अंधियारी राति, उपर से पानिउ बरसत रहा। कहउं राहि नहीं सुझाति रही। गोकुल जाइ खातिर जमुना नदी क पार कइके जाये परत रहा। भगमान केर नाम लइ–कइ वसुदेव जी जइसइ जमुना मं गोड़ धरिनि जमुना ओसरि गई जबकि अच्छी बाढ़ी रहीं। अउ जब बीच नदी मं पहुँचे त शेषनाग आपन फन फइलाइ कइ उपर से छाता लगाइ दिहिनि। जउने लाला भीजइ न।

जब उ नंद के घरे पहुंचे, त दिखिनि कि ओनहूँ केर दरवाजा खुला हइ। सब सोवत रहें। जशोदउ नहीं जानिनि कि कबइ वसुदेव कन्हइया का आनके लगे पहुड़ाइनि अउ बिटिया क लइ कइ चले गे। हुंअउँ सब पहरूआ लाला के जनम के पहिलेनि सोइ गे रहें, अउ केमरा बेंड़ा अपने से उघरि (खुलि) गे रहें। ओनके लउटि के आवत तक ओइसइ क ओइसइ रहा। जब उ लउटि आयें तब कहउँ पहरूआन कइ अँउघाई खुली। भीतरे से लरिका के रोबइ कइ अवाज आवति रही। दिखिन त बिटिया। इया खवरि पड़तइ कंस आबा, जानिसि कि बिटिया आइ त जोर से खख्खामारि कइ हँसिसि अउ कहिसि–

इया बिटियइ हमका मारी। अउ ओका उठाइ कइ जउ पटकइ किहिसि कि उ सउहँइ एक्कास कइति चली गइ। उ कनिया रूप देंवी रहीं। उ वैष्णवी माता अंही। कंस कइ आँखी फाटि रहि गईं। ओंह कइति अकाशबानिउ भइ– 'अरे कंस तोका मारइ बाला त गोकुल मं पइदा होइ चुका हइ'।

अब कंस क रातिदिना अँउघाई न लागइ। ओह लरिका के बारे मं जानइ कइ कोशिस करइ लाग। काहे कि ओके मन मं खटका त रहबइ भ। उआ रोज कउनउ न कउनउ बहाने जासूस गोकुल भेजवा करइ। पइ एकउ परतउ न मिलइ। सब भगमान के महिमा क जानि आखिर ओनके सरन मं पहुँचि जाँ।

सबसे पहिले उआ 'पूतना' नाम कइ राक्षसिनि क पठइसि। उआ कृष्ण का विक्ख दूधे के तईं बियाबइ चाहिसि। पइ, ओहू क उल्टा ओनहीं कइ दोहाई दिहे परा। एहीं तरह 'केसी' नांउ के दैत का घोड़ा वनइ कइ पठइस, 'अरिष्ट' राक्षस का बरदा बनइ कइ, 'कालाख्य' दैत का लउआ बनाइ कइ पइ सब प्रभू से हारिगे। सब भगमानइ के दोहाई दिहिनि। कंस के काका केर लरिका 'चारूणउ' क कृष्ण पछारि दिहिनि। सब से कंस का इहइ संदेस मिला कि कृष्ण

सहज मनई न हों। उ त त्रिलोकीनाथ आहीं ओन कर पार पाउब मुस्किल हइ। पइ कंश मन मं त डेरान रहा पइ केहू कइ वाति नहीं मानिसि।

एक दिना नंद बाबा क बोलवाइसि अउ ओनहूँ क आदेश हुकुम दिहिसि कि पारिजात पुष्प लइके आवा। मारे डेरि के ओउ हाँ कहि दिहिन, पइ पाया कसिकइ, जब घरे आएँ त अपने पतनी का इया वाति बतावत रहे तबइ कन्हैया ओनकर बतकहांउ सुनि लिहिसि। अब उ गेंद खेलइ के बहाने जमुना नदी के तीरे पहुँचि गे। जब गेंदि जमुना म गिरि गइ तब उ गेंदि निकारइ के बहाने जमुना मं कूदि गें। जाते-जाते उ काली दह मं पहुँचि गें। नागिन ओनका बहुत डेराबाइसि पइ उ नहीं डेराने। अन्त मं नाग क नाथि कइ साथे मं पारिजात केर फूलउ लइ कइ उपर आयें। बघेली मं एंह घटना पर एक ठे बहुत निकहा गीतउ बना हइ-

खेलत गेंदि गोपाला हो काली दह भीतर।
काहे कइ गेंद, कहेन कइ छंड़िया, केकर खेलत लाला हो काली दह भीतर।
सोने कइ गेंदि रूपने कइ छड़िया, खेलन जसुमति लाला हो काली दह भीतर।
खेलत गेंदि गिरी जमुना दह, कूदि परें नंद लाला हो काली दह भीतर।
नाग नाथि कान्हा बहिरे आयें, फन पर नाचइ हो गोपाला हो काली दह भीतर
खेलत..........

ओंह कइति जब जसोदा माता क जमुना मं कूदइ कइ वाति पता चली त उ सब काम छोड़ि कइ जमुना के तीरे पहुँचि गई। हुंअन केहू क न देखि कइ वियाकुल होइ गइ। अउ जमुना माता से विनती करइ लागी- हे मइया! जउ हम अपने लाला का देखि लेब त भादउँ महीना के अंधियारी पाख के रोहिणी नक्षत्र वाली अष्टमी क उपासे रहब। उनकरि इया वाति पूरी होइ गइ। कृष्ण नाँग क नाथि कइ ओके फन पर नाचत उपर आइगें। संघे मं 'पारिजात' केर दुर्घट (दुर्लभ) फूलउ लइ के आयें। तब माता जसोदा एंह उपास के किहिन।

ओंह कइती नाग केर पत्निउ परेशान होइ गइ। पछतानि कि हम नहीं समझेन कि इ भगमान आही। इया घटना जानि कइ कंस अउरउ डेराइ ग। ओका अपने मउति केर अनुभउ होइ लाग। अब उ अपने सब सूरवीरन क एक-एक कइके लड़इ क (कृष्ण से) पठइसि। सब हारिगें अउ सब मौति के मुहें मं समाइ गें। आखिर मं उआ खुदउ ओनसे लड़ाई करत मारि ग। एह तरह से एक दैत जुग केर खात्मा होइ ग। अउर सबके सहमति से कृष्ण क मथुरा केर राजा बनइ दीन ग।

एंह से इया साबित होत हइ कि आततइअन के अन्त अउ जन कल्लियान के खातिर भगमान विष्णु जी कृष्ण के रूप मं जनम लिहिनि।

जे एंह उपास क करथइ ओका सुख-सम्पत्ति अउ मोक्ष मिलत हइ। आरदा, जस, लाभ सब मिलत हइ। अउर एहीं जनम मं सब तरह केर सुक्ख भोगि कइ अन्तिम म मुक्ति मिलति है। अउर जे केवल भगति भाउ से किस्सा का सुनत हं ओनकर पाप छूटि जात हइ। अउर ओनका उत्तिम गति मिलति हइ।

भावार्थ

त्रेता युग के अंत तथा द्वापर के प्रारम्भ में मथुरा में कंस नामक राजा का जन्म हुआ। वह अहुत अन्यायी था। उसने धरती पर आतंक मचा रखा था। उससे सभी जीव, मनुष्य, गंधर्व आदि त्रस्त थे। उसकी परम सुन्दरी एक बहिन थी। उसका नाम देवकी था। देवकी को वह बहुत स्नेह करता था। उसका विवाह वासुदेव से बड़े ठाट-बाट के साथ किया गया, किन्तु जब उसकी विदाई हो रही थी, तभी अकाशवाणी हुई कि - 'हे कंस! देवकी का आठवाँ पुत्र ही तुम्हारा काल होगा।' यह सुन कंस ने उसकी डोली नहीं उठने दी और अपने ही कारावास में उन दोनों के रहने की व्यवस्था करवा दी, और पहरेदार लगा दिये और उन्हें यह हिदायत दे रखी थी कि जब भी इसकी संतान पैदा हो, तुरन्त उसकी सूचना मुझे दें। इस तरह उसने देवकी-वसुदेव की सात संतानों को एक-एक कर पैदा होते ही मार डाला।

जब देवकी को आठवाँ गर्भ था, उस समय तो पहरेदारी और अधिक चौकस कर दी गई। और जब कृष्ण का जन्म हुआ उसी दरम्यान गोकुल में नंदबाबा के घर यशोदा की कोख से एक कन्या का जन्म हुआ।

जिस दिन कृष्ण का जन्म हुआ, उस दिन भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि थी जो कि रोहिणी नक्षत्र युक्त थी। उधर जब बालक का जन्म हो गया और उन्होंने माता को अपने असली रूप में दर्शन देकर पुन: बालक का रूप धारण कर लिया, तब माता देवकी ने अपने पति वासुदेव से बालक को यशोदा माता के पास नन्द बाबा के घर छोड़ आने और उनके घर की कन्या को अपने साथ लाने के लिये गोकुल भेज दिया। क्योंकि एक बार जमुना जल भरने गई देवकी को वहीं पर यशोदा जी मिल गई थीं। तब उसने कंस द्वारा उसके सभी संतानों को मार डालने की बात-बताई थी और बहुत दुखी हो गई थी। यशोदा से उसका यह दुख न देखा गया। तब उन्होंने यह युक्ति बतलाई थी कि मेरा भी गर्भ है। और तुम्हारा और मेरा बच्चा एक ही समय पैदा होगा। अत: यदि मेरे कन्या होगी तो मैं उसे तुम्हे दे दूंगी और अपना बालक तुम मेरे घर भिजवा देना। यह बात किसी को भी पता न चलने पाये, क्योंकि यही कंस का काल है।

ऐसा ही हुआ। वासुदेव जी सूप में लिटाकर कृष्ण (बालक) को लेकर रात के समय चल दिए। उस समय भादौ की अंधेरी रात, ऊपर से जल वृष्टि हो रही थी। कहीं रास्ता नहीं सूझ

रहा था। नन्द बाबा के गाँव जाने के लिये यमुना नदी पार करके जाना पड़ता था। किन्तु भगवान का नाम लेकर वासुदेव जी ने जैसे ही नदी में पैर डाला, यमुना का पार सिमट गया और जब बीच नदी में पहुँचे तो शेषनाग ने अपना फन फैलाकर छाते का काम किया, जिससे बालक को भीगने से बचाया।

जब वे नंद के घर पहुँचे तो देखा कि उनका भी दरवाजा खुला है। सभी लोग सो रहे हैं। यशोदा माता को भी नहीं पता कि कब वसुदेव जी ने कृष्ण को उनके पास लिटा दिया और कन्या को लेकर उसी राह वापस मथुरा चले गये। वहाँ भी सब पहरेदार कृष्ण के पैदाइश के पहले से ही सो गये थे और जेल के दरवाजे भी अपने आप खुल गये थे। उनके वापस आने तक सब यथावत रहा। उनके आने के बाद जब पहरेदारों की नींद खुली देखा, अन्दर से बच्चे के रोने की आवाज आ रही है। जब दरवाजा खोला तो कन्या रो रही थी। इसकी सूचना पाते ही कंस वहाँ आया और कन्या जन्म की बात सुन-अट्टहास किया, बोला- यह कन्या ही मेरा वध करेगी और उसे उठाकर पटकना चाहा। किन्तु वह कन्या रूपी देवी वैष्णवी माता थी। वह सीधे आकाश में चली गईं। कंस की आँखें फटी की फटी रह गई। उधर आकाश वाणी हुई- 'अरे दुष्ट कंस! तुझे मारने वाला तो गोकुल में नंद बाबा के घर में है।'

अब कंस को रात-दिन उस बालक के विषय में जानने की जिज्ञासा सताये जा रही थी। क्योंकि उसके मन में खटका तो था ही। वह नित प्रति किसी न किसी रूप में अपने जासूस गोकुल भेजता, किन्तु वह सब विफल हो जाते और अंत में भगवान की महिमा को समझ उनकी शरण में आ जाते।

सर्वप्रथम उसने पूतना नामक राक्षसी को भेजा, उसने विष पान करना चाहा, किन्तु कृष्ण ने उसकी भी जान ले ली। इसी तरह केसी नामक दैव्य घोड़े का रूप धारण कर, अरिष्ट नामक राक्षस बैल बनकर गया, कालारव्य नामक दैत्य कौए के रूप में फंस कर, चचेरा भाई चारूण भी उनसे लड़ते मारा गया। सभी को पराजय का मुख देखना पड़ा। सभी ने कंस को यह संदेश दिया कि वह बालक तो विष्णु का रूप है, जो त्रैलोक्य के नाथ हैं। किन्तु कंस ने मन में शंका होते हुए भी किसी की बात नहीं मानी।

एक दिन नंदबाबा को भी बुलाकर उसने उन्हें आज्ञा दी कि पारिजात पुष्प लेकर आओ। डर के मारे उन्होंने भी हाँ कर दिया। जब घर आकर अपनी पत्नी को ये बात बता रहे थे, तब कृष्ण ने उनकी बात सुन ली। गेंद खेलने के बहाने वह यमुना तीर गये। जब गेंद यमुना में गिर गई, तब उसे ढूंढने के बहाने वे यमुना में कूद गये। और जाते-जाते काली दह पहुँच गये। वहाँ नाग पत्नी के बहुत डराने व समझाने पर भी वे नहीं माने। और अन्त में नाग नाथ कर वहीं से 'पारिजात पुष्प' भी लेकर वापस आए।

इधर जब यमुना में कृष्ण के कूदने की खबर यशोदा माता को लगी तो वह सब काम छोड़ दौड़ी-दौड़ी यमुना किनारे पहुँची। वहाँ किनारे में किसी को न देख व्याकुल हो गई। और यमुना से प्रार्थना करते हुए बोली- यदि मैं अपने बालक को देखूँगी तो मैं भाद्रपद मास की रोहिणी नक्षत्र युक्त अष्टमी का व्रत करूँगी। उनकी यह कामना सही हो गई। कृष्ण नाग को नाथ उसके फन के ऊपर नृत्य करते वापस आ गये। साथ में दुर्लभ पारिजात का पुष्प भी लाये। और माता यशोदा ने यह व्रत किया।

उधर नाग पत्नी भी पछताने लगी कि मैं भगवान कृष्ण को नहीं समझ पाई कि यह सचमुच जनार्दन हैं। और उधर यह घटना सुन कंस भी और ज्यादा भयभीत हो गया। अब उसे अपनी मृत्यु का अहसास होने लगा। उसे अपने सभी शूर वीरों को एक-एक कर उनसे लड़ने को भेजा। सभी को पराजय का मुँह देखना पड़ा और सभी अन्त में काल के मुख में समा गये। अन्त में वह स्वयं भी उनसे युद्ध करते मारा गया। इस तरह एक दैत्य युग का अन्त हुआ और श्री कृष्ण को मथुरा का सर्वसम्मति से राजा बना दिया गया।

इससे स्पष्ट है कि आतताइयों के अंत व लोगों के कल्याण हेतु भगवान विष्णु ने कृष्ण रूप में अवतार लिया और जो व्यक्ति जन्माष्टमी के व्रत को करता है, वह ऐश्वर्य और मुक्ति को प्राप्त करता है। आयु, कीर्त, यश, लाभ करता है और इसी जन्म में सब प्रकार के सुखों को भोगकर अन्त में मोक्ष को प्राप्त करता है। जो लोग केवल भक्ति भाव से कथा को सुनते हैं, उन लोगों का पाप छूट जाता है। और वे उत्तम गति को प्राप्त कर लेते हैं।

महाशिवरात्रि व्रत कथा

एक ठे शिकारी रहा। उआ अपने परिवार केर पालन शिकार कइके करत रहा। पूरा परिवार मांसखाइ के आपन भूखि शान्त करत रहा। एक दिना उ शिकार हेरत-हेरत जंगल कइती ग। हुआ ओका कउनउ जनाउर (जानवर) शिकार खातिर नही मिला। उआ बहुत परेशान रहा। ओका जब कुछु नहीं सूझातव उआ पेड़े के उपर चढ़ि कइ बइठि ग, अउ सिकार कइ राहि देखइं लाग। संजोग से उआ जउने पेड़े पर बइठ रहा उआ पेड़ बेल केर रहा।

बइठे-बइठे सिकारी थकि ग अउ एकउ ठे जनाउर ओंह कइती से नहीं गुजरें। अउ एक-एक ठे बेल कइ पाती टोरि-टोरि फेकइ लाग। कुछु देरि बाद एक हिरन आबा। जब सिकारी हिरन का मारइ लाग तब उआ उ जाइकइ अपने घरे वालेन क इया वाति बताइ आवइ हिरन वचन दिहिसि कि साँझि होइ के पहिले उआ सिकारी के लगे एही पेड़ के पास वापस आइ जइ।

ओंह कइती जब हिरन अपने घरे नहीं पहुँचा त ओके परिवार वाले ओका हेरत-हेरत एक-एक कइके ओंह पेड़ के लगे तक आये, सब क सिकारी मारइ चाहिस। सब इहइ वाति कहि कइ चलेगें कि हम अपने घर वालेन क बताइ अई फेरि साँझि के पहिले वापस आइ जाब। उआ सिकारी अव सब हिरनन केर राह जोहइ लाग। अउर वेल कइ पत्ती टोरि-टोरि पेड़े के तरी फेकत रहा।

जहाँ सिकारी पत्ती फेकत रहा संजोग से हुँअ इनि एक ठे शिउलिंग रही। अउ वेलपत्र ओही पर अनजाने मं परत ग। संजोग से ओंह दिना सिवरात्रि सिरवत्त रहा। सिकारी एंह दुविध्या मं रहा कि सिकार अइही कि नहीं। उहइ गुनत-धुनत बइठ रहा। संझा के बखत हिरन केर सगला परिवार पेड़े के लागे आइ ग। सब एक सुर मं कहइ लागे कि हमार सिकार कइले। पइ सिउजी के करपा से सिकारी के मन बदलि चुका रहा। काहे कि अंजाने मं उआ शिउलिंग के उपर बहुत पत्ती फेकि चुका रहा।

ओही समय शिवजी प्रकट होइगे अउ ओंह शिकारी क बताइनि कि आजु सिउरात्रि आइ। भले अनंजाने मं तु वेलपत्र फेके पर तोहरे उपर अव हम खुशी हमन। ओका सिवरात्रि केर महातिम समझाइनि अउ त्रेता जुग मं भगमान राम केर मीत (मित्र) होइकेर वचन दिहिन। शिकारी ओंह दिना दिन भर उपास कर रहा। तब से उ हर वरिष सिउरात्रि व्रत करइ लाग। अउ ओकार दुख-दारिद्र सब सिउजी के दया से दूर होइगा तब से सब जन फागुन महिना के तेरसि के दिन सिउरात्रि व्रत करइ लागें। एंहे व्रत का विधि-विधान से करे से भगवान सिव खुस होइ कइ मनचाहा फल देतहं। अउ अंत मं सिव लोक कइ प्राप्ति होति हइ।

भावार्थ

एक शिकारी था। वह अपने परिवार का पालन-पोषण शिकार करके मांसाहार द्वारा करता था। एक दिन वह शिकार की तलाश में जंगल गया। वहाँ उसे कोई जानवर नहीं मिल रहा था। वह शिकार के इन्तजार में पेड़ के ऊपर चढ़कर बैठ गया। जिस पेड़ पर वह बैठा था वह बेल का पेड़ था। शिकार का इन्तजार करते वह पेड़ से एक-एक पत्ती तोड़ कर नीचे फेंक रहा था। बहुत देर तक इन्तजार करने के बाद एक हिरन आया। जब वह उसे मारने लगा, तब हिरन ने उससे विनती की कि आज वह उसे छोड़ दे, जिससे वह जाकर अपने परिवारजनों का यह बात बता आये।

उसने वचन दिया कि वह शाम होने के पहले आ जायेगा। बहुत देर हो चुकी थी। इसलिए उसके परिवार वाले भी उसे ढूंढते हुये उस पेड़ के पास आ गये और सभी वचन दे-दे कर चले गये कि हम शाम के पहले आ जाएंगे। वह शिकारी सभी का इन्तजार करता रहा। और

बेल की पत्तियाँ फेंकता रहा। जहाँ वह पत्तियाँ फेंक रहा था, वहीं पर शिवलिंग था। उस दिन महाशिवरात्रि थी। शिकारी इस दुविधा में था कि अब हिरणगण आयेंगे या नहीं? इसी सोच-विचार में पड़ा वह बैठा था।

शाम के वक्त हिरण का पूरा परिवार पेड़ के पास आ गया। और सभी कहने लगे कि हमारा शिकार कर लो। शिवलिंग के ऊपर अनजाने में पत्तियाँ फेंकते-फेंकते उसका मन ईश्वर की कृपा से परिवर्तित हो चुका था। उसने सभी हिरणों को मारने से मना कर दिया। तभी शिवलिंग से शिवजी प्रकट हुए और उस शिकारी को शिवरात्रि व्रत का महत्व समझाया और त्रेता युग में रामावतार के समय उसे राम का मित्र होने का वरदान दिया। तबसे महाशिवरात्रि व्रत का महत्व बढ़ गया और बेलपत्र द्वारा शिवजी की पूजा-अर्चना करने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं और अपने भक्तों को वांछित फल देते हैं। अन्त में शिव लोक की प्राप्ति होती है।

सोमवार व्रत कथा

पुराने जमाने मं एक ठे वैपारी रहत रहा। उआ वणिक बहुत धनइत रहा। वैपारी क कउन तरह केर दुकख नहीं रहा। पइ ओके संतानि नहीं एकर मलाल रहा।

उआ बनियां भगमान शिव केर बहुतइ बड़ा भक्त रहा। हर सोमवार क उआ उपासे रहत रहा अउ भगवान शिव केर पूजा करत रहा। फेरि संझावेरा भगवान केर परसाद अपने मेहेरिया के साथ बइठि कइ खात रहा।

वैपारी कइ भगति देखिकइ एक दिना पार्वती जी संकर जी से कहिनि कि अपना केर इया भगत संतान के दुक्ख से बहुतइ दुखी हवइ। किरपा कइके एक अपना संतान होइ केर आशीर्वाद देई। तब शिउजी बोले कि एक वैपारी के भागि म पुत्र सुख हइयइ नहीं आइ। अउ इया एके पुरुब जनम केर फल आइ। जे जइसन बोये रहत हइ, ओइसनइ काटत हइ। अपने करे केर फल इया भोगत लाग हइ। पइ पारवती जी अपने बाति पर अड़ि गई। तब भोलेनाथ ओका वारा वरिष उमिरि वाला लरिका देइ केर वरदान दिहिन वैपारी के पुत्र भ अउ उआ बहुतइँ उछाह करिति।

समइ बीतत ग, एक दिना ओकरि मेहेरिया कहिसि कि एकर बियाह कइ डारा। बनियां क त पहिलेनि से जाना रहा कि एकरि आरदा बरहइ वरिष कइ हइ। एही से मेहेरिया कइ बाति आना कानी कइ उआ बोला कि अबइ त एका हममा पढ़ई खातिर कासी पठवइ क हइ। फेरि अपने सार (साले) क बोलवाइनि अउ ओनके साथ बालक क कासी पढ़ई खातिर पठइ

दिहिनि। संघे मं बहुत एक्का धन दिहिनि अउ सार से कहिनि कि लरिका पढ़इ जात लाग हइ, तु राहि म जघे-जघे जज्ञि करे अउ दान दक्षिणा देत जए।

एक ठे नगर परा। जहाँ उ राहि मं जग्गि करवात रहें। ओंहि राजि के राजकुमारी केर वियाहउ होइ रहा। वराति आई रही। उआ कन्निया बहुतइ खाबसूरत अउ गुनी रही। पइ जउने राजकुमार से राजकन्निया के बियाह होत रहा उआ एक आंखी केर काना रहा। लरिका केर बाप एह बाति से बहुत चिन्तित रहें। जब ओंह वैस के लरिका क दिखिन, जउन कि बहुतइ खाबसूरत रहा, सोचिनि कि काहे न कन्निया केर बियाह एह लरिका संघे करवाइ दीन जाइ।

अब वर केर पिता वैपारी के लरिका के मामा से मिलि कइ ओनका अपने कइति मिलाइ लिहिनि। बदले मं जउन दइया दहेज मिली सब ओनका देइ कर बाति कइ लिहिनि। मामउ चलाक रहें। उआ कइ दिहिनि। अउ विधि विधान से बियाहउ होइगा। जब सेंदूर दान होत रहा तब वैपारी केर लरिका बिटिया के चुनरी मं लिखि दिहिसि कि तोहारि बिदा नकली वर के साथ होई। जउन एक आंखी केर काना हइ। हम वैस पुत्र पढ़इ खातिर कासी जइत लाग हइ। जब लिखे लेख क राजकुमारी पढ़िसि त साफ-साफ कहि दिहिसि कि हम ससुरे न जाब। अउ बताइ दिहिसि कि इ हमार पति न होइ। उ त बिदिद्या पढ़इ काशी में हइ। सब बाति जानिकइ बिटिया कइ महतारी बाप दुखी होइगे कहिनि इया त हमरे साथ बहुत बड़ा छल होइ ग। उ अपने बिटिया क विदा करइ से साफइ मना कइ दिहिनि।

वैपारी केर लरिका पहुँचि ग अउ पढ़इ मं जुटि ग। ओह कइत ममा जग्गि अउ दान करत रहें। जब वारा वरिष वीतिगे त आखिरी दिना लरिका अपने मामा से कहिसि कि मामा जी हमार जिउ ठीक नही लागत, हम थोर क सुहताइ लेई। मामा हाँ कइ दिहिनि। लरिका जाइकइ आराम करइ लाग। जग्गि के पूर करे के बाद जब मामा दिखिनि त लरिका मरा परा रहा। मामा जोर-जोर रोबइ लागें। तबइ दइउ वस शिव-पार्वती ओही सोझे से आकाश के राहिजात रहे। रोबइ कइ अवाज सुनि कइ पार्वती जी शिउ जी से कहिनि एतना जोर के रोइ रहा है। तब शिउजी बताइनि कि वैपारी के लरिका कइ आरदा पूरि होइ चुकी हइ। उआ मरि ग हइ। तब पारवती जी कहिनि कि जइसइ एका अपना वारा वरिस कइ आरदा देहेन। ओइसइ अब एका पूरी आरदा देई। नहीं ता उआ बनिया पुत्र सोक में आपन परान तियागि देई।

पारवती के बिनती सुनि सिउ जी वैपारी के लरिका क पूरि आरदा दइ कइ शिउ लोक क चलेगे। ओह कइत वनिया केर लरिका आपनि पढ़ाई-लिखाई पूर कइ के अपने नगर कइती जाइ लाग। बीच मं उआ ओंही नगर मं पहुँचा, जहाँ ओकर काज (विवाह) राजकुमारी के संघे मं रहा। ओहूँ नगर मं लउटत मं ओकर मामा जग्गि करवाइसि बम्हनन का दान-दक्षिणा दिहिनि। इया खबरि जब राजा क मिली, त उ खुदइ वैश के लरिका क देखइ गें। अपने पहुना (दमाद) क देखि कइ बहुत परसन्न भें। ओनका अपने साथे राजिमहल मं बोलाइ कइ लइगे।

खूब आउ भगति करिनि। अपने राजकुमारी क खूब धन-सम्पति दइ कइ ओनके संघे विदा कइ दिहिनि।

ओह कइत मामा जब नगर के नियरे भैनेउ अउ पुतऊ क लइके पहुँचे त सब क सब ठहरइ केर आज्ञा दइ कइ आपुन अकेलेनि घरे मं जाइ कइ नगर सेठ क लरिका-पतोह सहित आवइ कइ खबरि दिहिनि। बालक केर महतारी-बाप घर के छत पर इया 'परन' कइ के बैठिगे तइ कि जउ हमार लरिका लउटि कइ घरे न अई त हम आपन परान तियागि देब।

जब लरिका केर मामा इया खबरि दिहिनि कि तोहार लरिका विद्या पढ़िकइ बियाह कइके पतनी के संघे सकुसल घरे के नियरे पहुँचि ग हइ। इया खबरि सुनिकइ महतारी-बाप बहुतइ परसन्न भें। अपने लरिका पुतऊ क परछन कइके बड़े आदर-भाउ से घरे लइ आए।

शिउ जी के कृपा से वैपारी केर राजि बहुरी। तब से उ बड़े नम-धरम के साथ उपासे रहइ लागें। अउ भगमान शिउ कइ पूजा-अर्चना करइ लागें। अंत मं शिउ लोक का प्राप्त भें।

भावार्थ

प्राचीन समय में एक वैश्य रहता था। वह बहुत धनी था। उसे किसी बात का कष्ट नहीं था, लेकिन वह संतान कष्ट से हमेशा दु:खी रहता था। वह वैश्य भगवान शिव का अनन्य उपासक था। वह प्रत्येक सोमवार को व्रत रखता और शिव जी की पूजा करता था। संध्या काल शिवजी का प्रसाद अपनी पत्नी के साथ बैठकर ग्रहण करता था। उसकी भक्ति देख एक दिन पार्वती जी ने शिवजी से कहा कि यह आपका भक्त संतान के दु:ख से दु:खी है। कृपा करके इसे संतान होने का आशीर्वाद दीजिये। शिवजी ने कहा कि इस वैश्य के भाग्य में पुत्र सुख नहीं है, और यह इसके पूर्व जन्म का फल है। अपने कर्मों के किये का फल यह भुगत रहा है। लेकिन पार्वती जी ने अपनी बात पर अड़ गई। तब भोलेनाथ ने उसे बारह वर्ष आयु वाला पुत्र देने का वर दिया। वैश्य को पुत्र हुआ और उसने भारी उत्सव मनाया। समय बीता। एक दिन उसकी पत्नी ने पुत्र के विवाह की बात कही। वैश्य को पहिले से मालूम था कि उसकी आयु बारह वर्ष ही है। अत: पत्नी की बात टालते हुए उसने कहा कि इसे मैं विद्याध्ययन के लिये काशी भेजूंगा और फिर अपने साले को बुलवाकर कहा कि अपने भांजे को पढ़ने के लिए काशी ले जाओ, साथ में बहुत धन दिया और कहा कि जाते समय यज्ञ करवाते हुए और गरीबों को दान दक्षिणा देते जाना।

एक नगर में रास्ते में जहाँ वह यज्ञ करवा रहे थे, उसी राज्य की राजकन्या का विवाह भी था। वह कन्या अत्यंत सुन्दरी और गुणवान थी। किन्तु जिस राजकुमार से कन्या का विवाह होना था, वह एक आँख का काना था। वर के पिता इस बात से बहुत चिन्तित थे और उस सुंदर वैश्य पुत्र को देखकर सोचे कि क्यों न इसका विवाह इसके साथ करवा दिया जाय।

अब वर के पिता ने वैश्य पुत्र के मामा से मिलकर उन्हें राजी कर दिया। यह कहकर कि विवाह में मिली पूरी उपहार सामग्री आपकी होगी। विवाह विधिवत सम्पन्न हुआ। सिंदूर दान के समय उस वैश्य पुत्र ने लड़की की चुनरी पर लिख दिया कि तुम्हारी विदाई नकली वर के साथ होगी, जो कि एक आँख का काना है। मैं वैश्य पुत्र विद्याध्ययन के लिए काशी जा रहा हूँ।

अब उस लिखे हुए लेख को राजकुमारी ने पढ़ा तो साफ शब्दों में ससुराल जाने से मना कर दिया और बता दिया कि यह मेरा पति नहीं है। वह तो विद्याध्ययन के लिए काशी गया है। यह जानकर उसके माता-पिता दुखी हो गये, क्योंकि यह उनके साथ छलावा था। उन्होंने अपने कन्या को विदा करने से मना कर दिया।

उधर वैश्य पुत्र काशी पहुँच विद्याध्ययन में जुट गया, और उसका मामा यज्ञ, दान आदि करता रहा। जब बारह वर्ष पूरे हो गये। तो आखिरी दिन लड़के ने कहा- मामा जी मेरी तबियत ठीक नहीं है। मामा ने कहा- जाकर आराम कर लो। लड़का जाकर आराम करने लगा। यज्ञ कार्य पूरा करने के बाद जब मामा ने देखा तो लड़का मृत था। यह देख मामा जोर-जोर से रोने लगा। तभी शिव-पार्वती जी आकाश मार्ग से जा रहे थे। रोने की आवाज सुन पार्वती जी ने शिवजी से कहा कि इतना क्रन्दन कौन कर रहा है? शिवजी बोले कि वैश्य पुत्र की आयु पुरी हो गई है और वह मृत हो चुका है। पार्वती जी ने कहा- जैसे इसे आपने बारह वर्ष की आयु प्रदान की थी, वैसे ही अब पूरी आयु प्रदान कर दीजिये। नहीं तो वह वैश्य अपना प्राण पुत्र- वियोग में त्याग देगा। पार्वती जी के आग्रह पर शिवजी उसे पूरी आयु प्रदान कर शिव लोक को चले गये।

उधर वैश्य पुत्र अपना विद्याध्ययन कर अपने नगर जाने के लिए उसी नगर में पहुँचा, जहाँ उसका विवाह राजकुमारी के साथ हुआ था। वहाँ भी उसने यज्ञादि करवाया और ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दी। इसकी सूचना राजा को मिली। राजा उस वैश्य पुत्र को देखने स्वयं आये। अपने दामाद को देखकर बहुत खुश हुए और राजमहल बुलाकर ले गये, उसके साथ अपनी कन्या को बहुत सारा धन-धान्य देकर विदा किया।

उधर नगर के निकट पहुँचकर मामा ने सभी लोगों के रुकने का आदेश देकर कहा- तुम लोग यहीं ठहरो, तब तक मैं घर जाकर सूचना देता हूँ।

बालक के माता-पिता घर की छत पर प्रतिज्ञा करके जा बैठे थे कि यदि हमारा पुत्र वापस न आयेगा तो हम प्राण त्याग देंगे।

जब लड़के के मामा ने सूचना दी कि तुम्हारा पुत्र विद्याध्ययन करके पत्नी के साथ सकुशल घर के निकट आ पहुँचा है। यह समाचार सुन माँ-बाप अति प्रसन्न हुये, और अपने पुत्र व पुत्रवधू का स्वागत किया और तब से नियम पूर्वक सोमवार व्रत करते हुए अन्त में शिवलोक को प्राप्त हुए ।

निमाड़ी व्रत कथाएँ

रमेश चन्द्र तोमर `निमाड़ी'

अमकाऱ्या आठवऽ व्रत कथा

भादव को मयनो अठवऽ को दिन थो। सरग की अपसरा नऽ आनन्द मनावतऽ न्हाई धोई नऽ पूजा करी रही थी। व्हाज एक कुकड़ी अन्ऽ एक माकड़ी थी। उनन्ऽ अपसरा नऽ सी पुछियो कि क्यों बईण नऽ होण तमऽ काई करी रईज? अपसरा नऽ बोली हम अमकाऱ्या आठवऽ को वरत करी रईज नऽ। दुई ननऽ पूछो कि इना वरत कऽ कसो कऱ्यो जाजऽ। अपसरा नऽ बोली तमऽ काई समझोगी। एक नऽ कयो कि बतई देवा अपणो काई बिगड़जऽ। तब अपसरा नऽ उनकऽ एक दोरो दियो नऽ कयो कि ऐक सम्भाली नऽ राकजो। नऽ हर सालऽ आठवऽ का दिन गऊर नऽ ऊकारदेव की पूजा करजो नऽ एक सालऽ एक-एक नायल भेंट मऽ देजो। इना तरीका सी नौ सालऽ वरतऽ करजो तो तमकऽ मनऽ इच्छा फल मिलगा। सुणतऽ कुकड़ी नऽ तो दोरा कऽ पाय मऽ बांधी लियो। नऽ माकड़ी नऽ दोरा कऽ जाला मऽ धरी दियो। कुकड़ी को दोरो तो रूखड़ा खोरना मऽ खोवई गयो। नऽ माकड़ी को दोरो सुरक्षित रयो।

ऐका बाद वो दुई ढोकरी नऽ हुई नऽ दुई की दुई मरी गई। दुई नको जलमऽ एक बामण का घर मऽ सग्गी बईण नऽ का रूप मऽ हुयो। ओका मऽ कुकड़ी थी वा बड़ी बईण बणी। नऽ माकड़ी छोटी बईण बणी। दुई नको यावऽ हुयो नऽ सासरऽ जाती रई। छोरा छोरी हुया पण बड़ी बईण का छोरा छोरी मरी जाता था। नऽ छोटी का छोरा छोरी जीवता रयता था। बड़ी बईण न सोच्यो कि म्हारा बालक तो मरी-मरी जाजऽ। नऽ छोटी का बालक जीवजऽ आसो क्यो? यो सोची न उनऽ अपणी छोटी बईण सी दगों कऱ्यो। नऽ एक घड़ा मऽ सांप ईच्छु भरी नऽ ओको मुंडो बंध करी नऽ नवकर कऽ कयो कि। ऐक म्हारी बईण का घर दई आवऽ। पुछ तो कयजे की बड़ी बईण न बालक नका लेण खिलौणा भेज्याजऽ।

न्वकर नऽ वो घड़ो लियो नऽ छोटी बईण घर दई आयो। बालक ननऽ देख्यो नऽ बोल्या माय-माय मावसी नऽ खिलौणा भेज्याजऽ। माय नऽ कयो बेटा ऊकारदेव को नावऽ लेवऽ नऽ घड़ो खोलो न खेलो।

बलक ननऽ ऊकारदेव को नावऽ लियो नऽ घड़ो खोलियो। घड़ा का सांप इच्छु सच्चीमान का खिलौणा बणी गया। बालक खिलौणा नऽ सी खेलणऽ लग्या। वई बड़ी बईण न नवकर सी कयो की जारे छोटी का घर। जाई नऽ देखी नऽ आ वा रड़ी रईज दु:ख मनई रईज की नई। नवकर न आई नऽ कयो की।

वहां तो सब आननद मऽ छे:। बालक सच्चीमान का खिलौणा न सी खेली रयाज। तवऽ उनऽ एक घड़ा मऽ जयर का लड्डू बणई नऽ भरिया न नवकर सी कयो कि। जा ऐक म्हारी छोटी बईण घर दई आ।

नऽ कईजे कि बड़ी बईण न बालक नका वाटऽ मिठई भेजीज। नवकर घड़ो लई नऽ गयो नऽ दई आयो। बालक ननऽ देख्यो तो बोल्या माय-माय मावसी नऽ मिठई भेजीज। माय नऽ कयो बेटा होण ऊकारदेव को नावऽ लेवो नऽ खोलो नऽ खाओ। बालक ननऽ ऊकारदेव को नावऽ लियो नऽ घड़ो खोल्यो नऽ जयर का लाडू सच्चीमान की मिठई बणी गई नऽ बालक खाणऽ लग्या। वई बड़ी बईण नऽ नवकर कऽ बुलायो नऽ कयो कि जा म्हारी बईण घर जा।

देखी नऽ आ कि वा रड़ी रईज नऽ दु:ख मनई रईज की नी। नवकर नऽ आई नऽ कयो कि व्हां तो सब आनन्द-आनन्द छे। बालक खाई पी नऽ खेली रयाज।

तब उनऽ एक नवो उपावऽ सोच्यो उना दिन ओको बालक मरी गयो थो। उनऽ बालक कऽ झोलई मऽ सोवाड़्यो। नऽ जाई नऽ अपणी बईण कऽ जीमण को निवतो दियो। छोटी बईण न्हाई धोई नऽ ऊकारदेव की पूजा करी नऽ। बड़ी बईण का घर आई। नऽ बोली की बईण ला हाऊ रोटी बणई देवु। बड़ी न कयो रोटी तो हाऊ बणई लेवगा। तवऽ तक तु म्हारा बालक कऽ राख। देख वो झोलई मऽ सोयोज। छोटी बईण प्रेम सी झोलई का पास गई नऽ झुकी नऽ। झोलई का बालक कऽ उठावण मड़ी। तो अबी-अबी न्हायेला बालऽ न सी पाणी की बुन्द न बालक का मुंडा मऽ पड़ी तो वो लिहा-लिहा करी न जिन्दो हुई गयोज। बड़ी बईण न देख्यो तो वा दवड़ी नऽ आई। न छोटी का गलऽ लगई न लपटी लपटी न गलऽ मिलण लगी। छोटी न कयो बईण हम तो रोज मिलाजऽ। आज आसी क्यो मिली रईज? ऐकी काई जरूरत छे।

बड़ी न कयो बईण म्हारा मनऽ मऽ दगो थो। म्हारो बालक मरी गयो थो। मनऽ ओकऽ झोलई मऽ सोवाड़ी दियो नऽ तुक जीमण को नीवतो दियो। न जवऽ तु ओकऽ उठावती। तो दोष थारा माथा मड़ती कि इनऽ म्हारा बालक कऽ मारी नाख्यो। पण थारा पुर्ण प्रताप सी यो जिवतो हुई

गयोज। बता तुन आसो काई वरत करीयोज। मकऽ भी बता तब छोटी न कयो देख बईण हाऊ न तु पाछला जलम मऽ कुकड़ी न माकड़ी थी। हमनऽ अमकार्‍या अठव को वरत कर्‍यों थो। पण थारो दोरो तो खोवई गयो। तो थारो वरतऽ खण्डत हुई गयो। मनऽ म्हारा दोरा कऽ सम्भालई न राख्यो न अमकार्‍या वरतऽ कऽ पुरो कर्‍यो इका सी म्हारा बालक जीवजऽ न थारा बालक मरी जाजऽ।

बड़ी नऽ पुछियो कि बईण इना वरतऽ कऽ कसो करयो जाजऽ मकऽ बता। अब हाऊ ऐको पालण करूगी। छोटी न बतायो कि भादवऽ मास की अठवऽ तिथि का दिन एक दोरो लेजे। नऽ पुरा नौ साल तक सम्भाली न राखजे। गऊर नऽ ऊकारदेव की पूजा करजे। एक साल एक-एक नायल देजे। पयलो नायल अपणी बईण कऽ दिजे। दुसरा साल दुसरो नायल पयला बालक की मायऽ कऽ दिजे। तीसरो नायल गर्भवती बाई कऽ दिजे। चौथो नायल घोड़ा का सवार कऽ दिजे। पांचवो नायल गाय का गुवाल कऽ दिजे। छट्ठो नायल नणदई कऽ दिजे। सातवो नायल गुरूगादी कऽ दिजे। आठवो नायल बामण कऽ दिजे। नवो नायल ऊकारदेव कऽ भेट चड़ावजे। आसा तरीका सी वरतऽ करगा। ओकऽ मन इच्छा फल मिलगा। नऽ ओका बालक स्वस्थ नऽ सुखी रयगा।

भावार्थ

भादव का महीना अष्टमी का दिन था। स्वर्ग की अप्सरायें आनन्द मनाते हुए। स्नान पूजन कर रही थी। वहीं एक कुकड़ी (मुर्गी) और एक मकड़ी थी। उन्होंने अप्सराओं से पूछा क्यों बहन तुम क्या कर रही हो? अप्सरा बोली हम अमकार्‍या (ओंकार) अष्टमी का व्रत कर रही हैं। दोनों ने पूछा यह कैसे किया जाता है? अप्सरा बोली इसे तुम क्या समझोगी। एक ने कहा बता दो अपना क्या बिगड़ता है? तब अप्सराओं ने उन्हें एक-एक तागा देते हुये कहा इसे सुरक्षित रखना और प्रति वर्ष अष्टमी के दिन गौर और ओंकार देव की पूजा करते हुऐ एक-एक नारियल भेंट में देना। इस तरह पूरे आठ वर्ष तक इस व्रत का पालन करना चाहिये। उससे मनोवांछित वर की प्राप्ति होती है। सुनते ही कुकड़ी (मुर्गी) ने तो तागे को पाँव से बांध लिया। और मकड़ी ने तागा अपने जाले में सुरक्षित रख दिया। सौ कुकड़ी (मुर्गी) का तागा तो गुड्ढे को खोरने में गुम गया और मकड़ी का तागा सुरक्षित रहा।

इसके बाद दोनों वृद्धा हुईं। दोनो की मृत्यु हुई। दोनों का जन्म एक ब्राह्मण के घर में सगी बहनों के रूप में हुआ। उसमें जो कुकड़ी (मुर्गी) थी वह बड़ी बहन बनी और मकड़ी छोटी बहन बनी। दोनों बड़ी हुई और उनकी ब्याह शादी भी हो गई। लेकिन जो बड़ी बहन थी उसके बच्चे मर-मर जाते थे। और छोटी के बच्चे जीवित रहते थे। बड़ी ने सोचा मेरे बच्चे मर-मर जाते हैं और छोटी के जीते हैं। क्यों नहीं इससे दगा किया जाये। तब उसने एक घडे में साँप-बिच्छु रखे। उसका मुँह बंद करके नौकर से कहा जाओ। इसे मेरी बहन के यहाँ दे आओ और कहना तुम्हारी

बड़ी बहन ने बच्चों के खिलौने भेजे हैं। नौकर वह घड़ा लेकर छोटी बहन के यहाँ दे आया। बच्चों ने देखा तो बोले माँ-माँ मौसी ने खिलौने भेजे हैं। माँ ने कहा बेटा ओंकार देवता का नाम लेकर उसे खोलो और खेलो। बच्चों ने ओंकार देवता का नाम लिया और घड़े को खोला। घड़े के साँप बिच्छू सचमुच खिलौने बन गये। बच्चे खिलौने से खेलने लगे। उधर बड़ी बहन ने नौकर से कहा, जा रे। छोटी बहन के यहाँ देख आ। वह रोती दुख मनाती होगी।

नौकर ने आकर कहा वहाँ तो सब आनन्द ही आनन्द है। बच्चे सचमुच के खिलौनों से खेल रहे हैं। तब उसने एक घडे में जहर के लड्डू भरे और नौकर से कहा जा इसे मेरी छोटी बहन के यहाँ दे आ। कहना बड़ी बहन ने बच्चों के लिये मिठाई भेजी है। नौकर घड़ा लेकर गया और दे आया। बच्चों ने देखा तो बोले माँ-माँ मौसी ने मिठाई भेजी हैं। माँ ने कहा बेटा ओंकार देव का नाम लेकर खोलो और खाओं। बच्चों ने ओंकार देव का नाम स्मरण किया और जहर के लड्डू सचमुच की मिठाई बन गये। उधर बड़ी बहन ने पुनः नौकर से कहा, जा रे छोटी बहन के यहाँ देख आ। वह रोती दुख मनाती होगी। नौकर ने आकर कहा वहाँ तो सब आनन्द ही आनन्द है। बच्चे मिठाई खा पीकर खेल कूद रहे हैं। तब उसने एक नई युक्ति सोची। उसी दिन उसके बच्चे की मृत्यु हो गई थी। उसने उसे झोली में सुलाया और जाकर अपनी छोटी बहन को भोजन का न्यौता दे आई। छोटी बहन ने स्नान किया ओंकार देव का पूजन किया और बड़ी बहन के यहाँ आकर बोली लाओ बहन मैं रोटी बना दूँ। बड़ी ने कहा रोटी तो मैं बनाती हूँ। तब तक तुम मेरे बच्चे को रखो। देखो वह झोली में सोया है। छोटी बहन अत्यंत स्नेह से झोली के पास गई, और उसने झुक कर झोली में से बच्चे को उठाया तो उसके अभी-अभी स्नान किये केशों का जल बच्चे के मुँह में गिरने से वह लिहा-लिहा करके जिन्दा हो उठा। बड़ी बहन ने जब यह देखा तो वह दौड़कर छोटी के पास गई और अत्यंत स्नेह से उसने उसे गले से लगा लिया। छोटी ने कहा अरे-अरे हम तो सदा ही मिलते रहते हैं। आज इस तरह मिलने कि क्या जरूरत? बड़ी ने कहा बहन मेरे मन में दगा था। मेरा बच्चा मर गया था, और मैंने उसे झोली में सुलाकर इसलिये तुम्हें न्योता दिया था कि जब तुम उसे उठाओगी तो तुम्हारे सिर उसकी मृत्यु का दोष लगा दूँगी। लेकिन तुम्हारे पुण्य से तो वह जी उठा है। आखिर तुमने ऐसा कौन सा व्रत किया है। मुझे भी बताओ। छोटी ने कहा देखो बहन पिछले जन्म में तुम कुकड़ी (मुर्गी) और में मकड़ी थी। हम दोनों ने अमकार्‌या (ओंकार) अष्टमी का व्रत लिया था। लेकिन तुम्हारा तागा गुम गया और तुमने व्रत का खण्डन किया था। मेरा तागा सुरक्षित रहा और अमकार्‌या (ओंकार) अष्टमी के व्रत का पालन किया था। इसी से तुम्हारे बच्चे मर-मर जाते हैं, और मेरे बच्चे जिन्दा रहते हैं।

बड़ी ने पूछा क्यों बहन इस व्रत को किस तरह किया जाता हैं? मुझे बताओ। अब मैं इसका पालन करूँगी। छोटी ने बताया भादव मास की अष्टमी तिथि को एक तागा लेना और पूरे नौ वर्ष तक सुरक्षित रखते हुये गौर एवं ओंकार देव का पूजन करना। प्रति वर्ष एक-एक नारियल

दान में देना चाहिये। पहले वर्ष पहला नारियल अपनी बहन को देना। दूसरे वर्ष दूसरा नारियल पहले बच्चे की माँ को देना। तीसरा नारियल गर्भवती महिला को देना। चौथा घोड़े के सवार को देना। पाँचवा गाय के चरवाहे को देना। छट्ठा नारियल ननदोई को देना। सातवाँ गुरु गादी को देना। आठवें वर्ष आठवाँ नारियल ब्राह्मण देव को भेंट देना चाहिये। नवाँ नारियल ओंकार देव को भेंट चढाना चाहिए। जो भी ऐसा करेगा उसे मनोवांछित वर की प्राप्ति होगी और उसकी संतान स्वस्थ एवं सुखी होगी।

इरपोस व्रत कथा

एक गॉव मऽ दुई भाई रयता था। उनकी एक बईण थी। जो दुसरा गाँव मऽ पनेल थी। बड़ो भाई तो धनवान थो न छोटो भाई गरीब थो। सरावण को मयनों आयो, दितवार को दिन आयो। बईण अपणा भाई न सी इरपोस लेण अपणा बड़ा भाई का घर आई बड़ो भाई थो धनवान। बईण सबसी पयल बड़ा भाई घर गई। भाई न बईण क देखी न पुछियो कि बईण आज थारो आवणु कसो हुयोज। तो बईण न कयो कि भाई आज इरपोस को दिन छे। सबई भाई अपणी बईण नकऽ इरपोस दई रयाज। हाउ भी तमरा सी इरपोस लेण क आई। तवऽ बड़ो भाई कयज जा जा जब भूख मरनऽ लगी तब इरपोस कि हेर आईज जा इरपोस-वीरपोस कई नी हाई। बड़ा भाई ओक टक्को सो जबाब दई न टालई दी। वा मनऽ-मनऽ दुःखी हुई न अपणा गरीब भाई का घर चली।

छोटा न गरीब भाई का घर जाई न बईण न देख्यो कि छोटा भाई का घर तालो लग्योज उन् पास पड़ोस म पुछियो कि म्हारो भाई का गयोज। तब पास पड़ोसी न बतायो कि थारो भाई न भाभी तो खेत म कुल्यथा वावणऽ गयाज। तुक थारा भाई सी काम होय तो खेत म जा। बईण उदास मन सी अपणा घर चली गई।

भाई न खेत मऽ तीफन गेरी रयोज न भाभी कुल्यथा वाई रईज। भाई न अपणा साथीदार न क देख्या वो अपणी बईण नकऽ इरपोस देण जाई रया था। भाई न काम खतम करियो न अपणी घर वाली सी कयो कि म्हारो मन भी हुई रयोज कि हाऊ भी बईण क इरपोस देण जाउ। भाई कि श्रृद्धा सच्ची थी। घर वाली न कयो जाओ दई आवो। भाई कुल्यथा कि पाँच पसऽ भरी न अपणा दुपट्टा मऽ नाखी। नायल कि जगा एक दगड़ो धरियो, गुड़ कि जगा खेत कि माटी, पोलका का कपड़ा कि जगा पलास को पान्टो तोड़ी न, पईसा कि जगा पर पाँच छोटा कंकर धरी लिया। न पोटली बांधी न चल्यो बईण क इरपोस देण।

चलत-चलत ओकऽ रस्ता मऽ एक साँप बाबो मिलियो न उनन ओकी वाट रोकी ली न कयो कि हाऊ तुक काटुगा। भाई न कयो कि साँप बाबा हाऊ म्हारी बईण क इरपोस देण जाई

रहयोज। जब इरपोस दई न पछो आई जाऊँगा, तब मकऽ काटजे। म्हारी बईण म्हारी वाटऽ देखी रई होयगा। साँप बाबा न कयो कि काई मालम तु इना रस्ता सी आवगा कि नई। तु तो आसो कर मकऽ थारी पागड़ी न बठाड़ी लऽ। जब तु इरपोस दई न परवारी जाइगा, तब हाऊ तुक काटी खाऊगा। भाई न पागड़ी हेड़ी न धर दी न साँप बाबो पेचऽ-पेचऽ बठी गयो। न भाई न पागड़ी माथा प धरी ली अपणी बईण का गाँव को रस्तो लियो।

बईण का घर पोयचो न बईण न भाई आवतऽ देख्यो न कयो कि आओ भाई। भाई जाई न बठी गयो भाई कि राजी खुशी का हाल-चाल पुछिया न भाई का माथाऽ पऽ कुकु लगायो न चौखा लगाया। भाई न पागड़ी खुटी पर टांगी दी। छोरा छोरी इकठा हुई गया न मामाजी-मामाजी हमकऽ पागड़ी देवो हम पैरागा। छोटा बालक जिद्दी करन लग्या मामाजी क मालूम थो कि एका मऽ साँप बाबो बढेल छे न यो म्हारा भांणीज नकऽ काटी खायगा। ऐका सी मामा न पागड़ी क ऊच्ची सी खुटी पऽ टांगी दी। भाई न बईण कऽ पोटली दी। बईण न पोटली खोली इरपोस माता कि कृपा सी कुल्यथा गऊ बणी गया, दगड़ो नायल बणी गयो, माटी को ढेपो गुड़ बणी गयो, पलास को पान्टो कपड़ो बणी गयो, पाँच छोटा कंकर पइसा बणी गया, सब समान लई न धरी दियो। बईण न्हाई धोई न अपणा भाई न जो इरपोस को समान दियो थो। ओको भोजन बणायो न इरपोस माता की कथा कई। बईण न भोजन बणायो न भाई क जीमण कऽ बठाड़ी दियो। बईण न भाई की थालई परसी दी। न आगऽ म घी नाख्यो न भोजन का पाँच कउल नाख्या न इरपोस माता सी कयो कि हे इरपोस माता म्हारा भाई पर जो भी काल आयो होय म्हारा भाई को गृहबैरी होय बलई-जलई न भसम हुई जाय।

इरपोस माता कि कृपा सी खुटी मऽ टंगेला साँप बाबा कऽ टुकड़ा-टुकड़ा हुई गया। न वो सोन्नु बणी न टप-टप टपकण लग्यो। बईण क आचरज हुयो कि यो काई चमत्कार आय। भाई न सबई वातऽ नऽ बईण क बतई न कयो कि थारा पुण प्रताप सी आज म्हारी जान बची गई। आज जवऽ हाऊ तुक इरपोस देण आई रयो थो। तो रस्ता मऽ मकऽ साँप बाबो आढ़ो फिरीयो न कयो कि हाऊ तुक काटुगा। तब मनऽ कयो कि हाऊ म्हारी बईण क इरपोस दई आवु तब मकऽ काटजे। साँप बाबा न कयो कि काई मालम तु इना रस्ता सी आवगा कि नई आवऽ। हाऊ तो तुक काटुगा मनऽ बड़ी मिन्नत करी न कयो। तो साँप बाबा न कयो कि मकऽ थारी पागड़ी मऽ बठाड़ी लऽ मनऽ पागड़ी हेड़ी न धरी दी। साँप बाबो पागड़ी मऽ बठी गयो न हाऊ पागड़ी पैरी न आयो। जवऽ म्हारा भांणीज न कयो कि पागड़ी मकऽ देवो। तो मनऽ ओक खुटी प टांगी दी। इरपोस माता कि कृपा सी यो धन मकऽ मिल्यो। तु भी आधो धन लईलऽ। दुई भाई बईण ननऽ आधो-आधो धन वाटी लियो न सुख सी रयण लग्या उनका घर आनन्द हुई गयोज। बड़ा भाई न अपणी बईण क इरपोस नी दी तो इरपोस माता नाराज हुई गई। बड़ा भाई का घर कंगाली आई गई।

एक दिन का समया मऽ बड़ा भाई कि घरवाली न बड़ा भाई कऽ कयो कि तम्हारी बईण का घर ऐतरो धन काँ सी आई गयोज। कई वो हमारो धन चोरी न तो लई गई। तम जाई न देखी न आवो काई वात छे? बड़ो भाई चली न अपणी बईण का घर पहुंचा। बईण न भाई क आवतऽ देख्यो न कयो कि आ भाई बठऽ।

भाई कऽ बठायो न राजी खुशी का हाल-चाल पुछिया। बईण न न्हाई धोई न रोटी बईण भाई कऽ जीमणऽ को कयो भाई न कयो म्हारो तो उपास छे हाऊ नी खातो बईण न अपणा बालकऽ नकऽ रोटी खवाड़ी न खुद भी खाई ली। भाई न या वात कर वा वात कर करी न संझा करी दी। सांझ कऽ बईण न सांझ कि रोटी बणई न भाई कऽ रोटी खाणऽ को कयो भाई का मनऽ मऽ तो पाप थो। उन्न कयो कि बईण म्हारो तो उपास छे बईण न भयसी को दूध निकाल्यो तातो करियो न ठंडो होण कऽ धरी दियो। भाई बईण वात करिया न वात करतऽ करतऽ बईण कऽ झपकी लगी गई। ऐतरा मऽ दीया की माय आई न कयज कि बेटा आज घर नी चलतो तो दीया न अपणी माय कयो कि माय म्हारी वाट मतऽ देखजे। हाऊ आज नी आऊगा क्योंकि यो जो भाई आयल छे यो अपणी बईण कऽ मारनऽ कऽ आयेल छे। बईण को दोष नी हाई। इना भाई का मनऽ मऽ छे कि म्हारी बईण ऐतरी धनवान कसी बणी गईज। तो बईण कऽ तो इरपोस माता टुटमान हुईज। भाई कऽ कसो साँप बाबो मिल्यो कसो वो सोन्ना को ढेर बणीयो यो सब दीया न दीया कि माय कऽ बतायो। बड़ा भाई न कसो इरपोस माता को अपमान करियो ऐका सी बड़ो भाई गरीब हुई गयोज। सब वात नऽ माय सी कई। भाई का डोला खुली गयाज न वो दंग रई गयोज। उन्न अपणी बईण कऽ उठाड़ी न कयो कि बईण दूध ठंडो हुई गयोज। दूध जमा न अपणा मनऽ को पाप उजागर कर्‌यो। न कयो कि आज हाऊ तुक मारी नाखतो पण दीया न आज मकऽ पाप सी बचई दियो। भाई न बईण का पाय लाग्या बईण न आर्शीवाद दिया की अगलऽ साल तक इरपोस माता थारा पर भी टुटमान हुई जाय तो मकऽ खुसी होयगा।

इरपोस माता उनी बईण कऽ भाई कऽ टुटमान हुई आसी सबई भाई बईण न पऽ होय।

भावार्थ

एक गाँव में दो भाई रहते थे। उनकी एक बहन थी। जो दूसरे गाँव में ब्याही थी। बड़ा भाई तो धनवान था और छोटा भाई गरीब था। श्रावण का महिना आया। रविवार का दिन आया। बहन अपने भाइयों से वीरपस (ईरपोस) लेने अपने भाई के घर आई। बड़ा भाई धनवान था। अत: बहन सबसे पहले बड़े भाई के घर आई। भाई ने बहन से पूछा कि आज तेरा आना कैसे हुआ। तो बहन ने कहा भाई आज वीरपस (ईरपोस) का दिन है। तुम यथाशक्ति वीरपस (ईरपोस) दो। बड़े भाई बहन ने खिल्ली उड़ाई और कहा कि जब तू भुखो मरने लगी है। तब तुझे वीरपस (ईरपोस)

याद आई। जा मेरे घर वीरपस (ईरपोस) कुछ नहीं है। बड़े भाई ने टका सा जबाब दे दिया। और अपने घर से निकाल दिया। दुखी मन से बहन अपने गरीब भाई के घर चली। छोटे और गरीब भाई के घर पहुँच कर उसने देखा कि छोटे भाई के घर ताला लगा है। उसने पड़ोसियों से पूछा कि मेरा भाई कहाँ गया है। पड़ोसियों ने उसे बताया कि तुम्हारा भाई तो अपने खेत में कुलथी (एक प्रकार का बीज) बोने गया है। तुम अपने भाई से मिलना चाहती हो तो खेत पर चली जाओ। उदास मन से बहन अपने घर चली जाती है। भाई खेत में तिफन (बीज बोने का यन्त्र) चला रहा था। भाभी बीज बो रही थी। इतने में भाई क्या देखता है कि उसके दोस्त लोग बहनों को वीरपस (ईरपोस) देने जा रहे थे। उसको भी याद आया कि मुझे भी अपनी बहन को वीरपस (ईरपोस) देने जाना है। काम खत्म करके उसने अपनी पत्नी से कहा मुझे भी बहन को वीरपस (ईरपोस) देने जाना हैं। उसकी श्रृद्धा सच्ची थी। पत्नी ने कहा हम तो गरीब हैं, क्या करें। भाई ने श्रृद्धा से पाँच अंजुली कुलथी के बीज उठाये और अपने दुपट्टे में डाले, नारियल के स्थान पर एक पत्थर रखा, गुड़ के स्थान पर मिट्टी का ढेला रखा, ब्लाउज पीस के स्थान पर पलास का पत्ता तोड़कर रखा, पैसों के स्थान पर पाँच कंकर रख दिये। पोटली बांधकर भाई अपनी बहन को वीरपस (ईरपोस) देने चला।

चलते-चलते रास्ते में भाई को नागदेवता मिले। नागदेवता ने भाई का रास्ता रोक लिया और कहा मैं तुझे डंसुंगा। भाई ने कहा मैं अपनी बहन को वीरपस (ईरपोस) दे आऊँ। वह मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी। तब नागदेवता ने कहा नहीं मैं तुझे डंसुंगा कुछ देर तक वार्तालाप होता रहा। हारकर भाई ने कहा। यदि तुम्हें भरोसा नहीं हो तो तुम मेरी पगड़ी के अन्दर बैठ जाओ। जब मैं अपनी बहन को वीरपस (ईरपोस) दे लूँ तब तुम मुझे डँस लेना। नागदेवता ने कहा हाँ यह ठीक है। भाई ने पगड़ी उतारी और नागदेवता पगड़ी के पैचों में बैठ गये। भाई ने अपनी पगड़ी सिर पर धारण कर ली। वहाँ से अपनी बहन के घर पहुँचा।

बहन ने भाई के आने पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। भाई की कुशल क्षेम पूछी और भाई के शीश पर कुमकुम का टीका और चावल लगाए। भाई ने एक ऊँचा-सा स्थान देखकर अपनी पगड़ी को खुँटी पर टांग दिया। बच्चे जिद्द करने लगे। मामाजी पगड़ी हमें दो, हम पहनेंगे, मामाजी पगड़ी दो। मामा के मन में भय था कि इसके बीच बैठा हुआ नाग कहीं मेरे भान्जों को डँस न ले। अत: मामा ने पगड़ी अधिक ऊँचे स्थान पर रख दी।

बहन ने स्नान किया। स्नान करके उसने भोजन बनाया और कथा कही उसके बाद भाई को भोजन करने बिठाया। भाई ने कहा बहन तुम भी अपनी थाली परोस लाओ। साथ-साथ भोजन करेंगे। बहन ने अपनी थाली परोस ली और अग्नि में घी डाला। भोजन की पाँच आहुतियाँ डालीं और वीरपस (ईरपोस) माता से प्रार्थना की, मेरे भाई पर जो संकट आया हो। आज तेरी कृपा से

वह टल जाये। मेरे भाई का जो भी दुश्मन हो बैरी हो उसके राई-राई के टुकडे-टुकडे हो जायें। बहन ने सच्चे मन से प्रार्थना की। वीरपस (ईरपोस) माता ने सुन ली। खूँटी में टंगी पगड़ी में बैठे नागदेवता कालरूप में थे। अत: उसके राई-राई के टुकडे होकर सोने के रूप में बदलकर नीचे गिरने लगे।

भाई और बहन को आश्चर्य हुआ। यह क्या चमत्कार हुआ? सोना क्यों गिर रहा है? तब बहन ने भाई से पूछा यह क्या चमत्कार है? भाई ने बहन को आप बीती बताई और कहा- तेरे पुण्यप्रताप से आज मेरी मृत्यु की घड़ी टल गई। आज जब मैं वीरपस लेकर आ रहा था। मेरा रास्ता रोककर नागदेवता बैठे थे। वे मुझे डँसना चाहते थे। मैंने कहा- नागदेवता मैं अपनी बहन को वीरपस दे आऊँ तब तुम मुझे डँस लेना। नागदेवता ने कहा तू इस रास्ते से आयेगा या नहीं, इसका मुझे क्या पता। बहुत मिन्नत करने के बाद नागदेवता ने कहा मुझे तेरी पगड़ी में बैठा ले। जब तू वीरपस दे लेगा। उसके बाद मैं तुझे डँस लूंगा। इसलिये मैंने अपनी पगड़ी ऊँचे स्थान पर टांग दी। अपने भान्जों को भी पगड़ी नहीं पहनने दी। कहीं उसमें बैठा नाग मेरे भान्जों को डँस ना ले। आज मेरी मृत्यु निश्चित थी। आज मृत्यु टल गई। भाई और बहन ने उस धन को आधा-आधा बाँट लिया। दोनों भाई-बहन के पास धन आ जाने से दोनों की गरीबी चली गई। और दोनों सुख पूर्वक रहने लगे। उधर बड़े भाई ने अपनी बहन को वीरपस नहीं दी। अत: भगवान की कृपा से वीरपस माता की कृपा से उसके घर कंगाली आ गई। और वे भुखों मरने लगे।

एक दिन बड़े भाई की पत्नी ने अपने पति से कहा कि तुम्हारी बहन के घर इतना धन कैसे आ गया। कहीं वह हमारा धन तो चुराकर ना ले गई या अन्य क्या कारण हैं। वह रातों-रात धनवान कैसे हो गई। तुम जाकर पता करो। बड़ा भाई चलकर अपनी बहन के घर पहुँचा। बहन ने बड़े भाई को आया देखकर उसका आदर सत्कार किया, कुशल क्षेम पूछी। बहन ने स्नान किया और भोजन बनाया। तब दोनों भाई बहन ने भोजन खाया। भाई के मन में पाप था। उसने अपनी बहन की हत्या करने की सोच ली। अत: उसने ये बात कर- वो बात करके शाम का समय कर दिया। संध्या के समय बहन ने दूसरा भोजन बनाया। दोनों भाई बहन ने खाना खाया। बहन ने बच्चों को खाना खिलाया और बच्चों को सुला दिया। बहन ने दूध गर्म किया। दीपक जलाया और दुध का पतीला ठंडा होने को रख दिया। बैठे-बैठे दोनों भाई-बहन बातें कर रहे थे। बात करते-करते ही बहन को झपकी लग गई। भाई अपनी बहन की हत्या करने हेतु जाग रहा था। इतने में दीपक की माँ आई और दीपक से बोली बेटा दीपक घर नहीं चलना क्या? दीपक ने कहा माँ मैं आज घर नही जाऊँगा। आज एक भाई अपनी निर्दोष बहन की हत्या करने आया है। आज मैं नहीं आऊँगा। माँ ने दीपक से पूछा इसका भाई इसको क्यों मारना चाहता है। भाई के मन में पाप क्यों हैं? तब दीपक ने कहा बहन इतनी धनवान कैसे हो गई। यह देखने उसका भाई आया है और वह

उसे मारना चाहता है। बहन को तो वीरपस माता अटुट मान हुई। इससे वह और उसका छोटा भाई धनवान हो गये और बड़ा भाई गरीब हो गया। बड़े भाई ने अपनी बहन को वीरपस नही दी। अत:वीरपस माता नाराज हो गई और बड़े भाई का धन नष्ट हो गया और भुखों मरने की नाँबत आ गई।

दीपक ने सारा वृत्तांत अपनी माँ को बताया। बड़ा भाई जो बहन की हत्या करने आया था सुनकर दंग रह गया। उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू आ गये। उसने बहन को जगाया और कहा बहन दूध ठंडा हो गया। दूध में जमन (दही) डाल दो। बहन ने उठकर देखा कि भाई आँखों में आँसू हैं। बहन ने पूछा भैया क्या बात है? क्यों रो रहे हो?

भाई ने पाप को उजागर कर दिया कि बहन आज मैं तेरी हत्या कर देता पर दीपक कि बातें सुनकर मेरी आँखें खुल गईं। बहन मुझे माफ करना। यह कहकर रोने लगा। बहन ने भाई को समझाया। वीरपस माता से प्रार्थना की– वह तुझे भी सुखी सम्पन्न कर दे। अगले साल तक तू भी धनवान हो जाये। वीरपस माता जैसे उन भाई बहन पर प्रसन्न हुई ऐसे सब पर प्रसन्न हों धन वैभव लक्ष्मी दे। सुख समृद्धि दे।

अबोला व्रत कथा

राजा हिमाचल राजऽ करता था। उनकी चार छोरी नऽ थी। छोरी बड़ी हुई गईजऽ। एक दिन का समया मऽ राजा न कयो कि बेटी न होणी तमरा वर तमज ढुढोगा कि हांऊ ढुढो। तीन छोरी नन्ऽ कयो की दादाजी तमज ढुढो। तवऽ राजा न चौथी छोरी कऽ पुछण लग्या कि बेटा थारो वर ढुढी लेगा कि हाऊ ढुढु। वा थी पारवती माता उनऽ कयो की मनऽ तो मनऽ मनऽ शंकर भगवान क वर वरी लियोज। तो उनऽ अपणा दादाजी क कयो कि दादाजी मनऽ म्हारो वर ढुढी लियोजऽ। दादाजी न तीनई छोरी नका वर अच्छा अच्छा घर मऽ ढुढी न मांगणी करी दी। न पारबती न अपणो वर शंकर भगवान क बतई दियो। व्यावऽ की तैयारी न होण लगी । सबई तीनई बइण नकी वरात आई कोई हात्थी पर बठी नऽ आयो नऽ कोई घोडा पऽ बठी नऽ आयो। पण पारबती को शंकर भगवान वरातऽ लई नऽ नंदीगण पर बठी न आयो। कोई भूत छे तो कोई भस्मी वालो छे। तो काई गंजेड़ी न कोई भंगेड़ी छे। सब कयऽ या वरातऽ आय की भूत न की टोलई आय। साधु जोगड़ा नकी जम्मात आय। शंकर जी न सुण्यो तो पुरी वरात कऽ छत्रीस करोड़ देवता नमऽ बदली दिया। पारबती माता न आसा तो कई वरतऽ वरतुला कर्‌या पण कई को वरतऽ पुरो नी करयो। नही वरतऽ को उध्यापन कर्‌यो। ऐका सी ओका सबई वरतुला खंडत था। खंडत वरतऽ करनऽ का कारण पारबती माता कऽ दुख उठावणा पड़याजऽ। व्याव की तैयारी हुई गईज। सबई वराती जिमणऽ बठया। जब सबई जीमणऽ बठया तो आनऽ की कमी पड़ी गई। पारबतीजी न

शंकरजी सी प्राथना करनऽ लगी। यो काई करी रयाज। तव भगवान शंकरजी न हाथ फेरी न सबई छत्तीस करोड़ देवता न कऽ अलप करी दिया। अब खाली ब्रम्हा, विष्णु न महेश रई गयाजऽ। सबई नकी जीमणार हुई। व्याव हुयो न वारात विदा हुई गई। कोई रथ पऽ बठी न गई कोई पालकी मऽ बठी न गई। पण परबती माताजी नंदीगण पर बठी न रवाना हुई गयाज थाड़ी दूर जाणऽ का बाद मऽ पारबती माता क घाम लगण लग्यो। उन शंकरजी सी कयो कि मकऽ घाम लगी रह्योज। तव शंकरजी न कयो कि पारबतीजी तम हरी-हरी दुरप पर चलो। हरी-हरी दुरप सबई सुखई गई। थाड़ी दूर जाणऽ का बाद एक अम्बा को झाड़ आयो। परबतीजी न कयो की मकऽ घाम लगी रहयोज हांउ वहां बठी न जरा घाम गालई लेवु तो अम्बाा का झाड़ निचऽ पारबती माता गया तो अम्बो सुखई गयोजऽ जरा अगड़ जाणऽ पऽ पारबतीजी कऽ तीसऽ लगी तो शंकरजी न कयो कि जा वहां झरनो छे पाणी पी लऽ पारबती जी न जसोज पाणी कऽ हाथ लगायो। पाणी सबई सुखई गयोज। वहां सी चलतऽ-चलतऽ शंकरजी न पारबतीजी कैलाश परबत पर आया। वहां कैलाश परबत पर खाणऽ क कई नी थो। व्हा एक अम्बा को झाड़ थो। ओका पऽ सी कयरी न ताड़ी न खाता था। भगवान शंकरजी नऽ नंदीगण क कयो कि जा भाई कयरी न ताड़ी ला। नंदीगण न एक सोटो मारयो न तीन कयरी न पड़ी वो तीन कयरी न लई न नंदीगण शंकरजी का पास आयो। एक कयरी शंकरजी कऽ दई दी दुसरी पारबती माता कऽ न तीसरी नंदीगण न लई ली। सबई जोणऽ कयरी खाणऽ मड्या। शंकरजी न खाई ली। नंदीगण नऽ कयरी खाई ली। पारबती माताजी की कयरी मऽ सी किड़ा निकल्या। रोज-रोज असोज होय। असा करतऽ-करतऽ साल भर हुई गयोज तब राजा अपणी चारई छोरी नकऽ बुलायो। न पारवती कऽ लेण कऽ खुद आया। उना दिन आम्बा कऽ सोटो मार्‌यो तो चार कयरी न पड़ी। सबई जौण कयरी नऽ खाणऽ लग्या। शंकरजी नऽ राजा हिमाचल नऽ नंदीगण न कयरी खाई। जवऽ पारवतीजी नऽ कयरी कऽ जसो हाथ लगायो ओका मऽ सी कीड़ा चलणऽ लग्या। राजा नऽ अपणी बेटी पारवती कऽ अपणा हाथ की कयरी दी। तो पारवती खाणऽ लग्या तो ओका मऽ सी भी कीड़ा निकल्या। तब पिताजी नऽ पुछियो की बेटी आसो कब सी हुई रयोजऽ।

तो पारवतीजी नऽ कयो कि पिताजी मकऽ आसो करतऽ-करतऽ बारह वरसऽ हुई गयाजऽ। राजा पारवती कऽ लई नऽ रवाना हुई गयाजऽ। रस्ता मऽ पारवतीजी कि मावसी को घर गांव आयो। वो मावसी का घर गयाजऽ। मावसी का घर जाई नऽ। पारवतीजी न हाक मारी तो मावसी कयजऽ की हाऊ पूजा करी रईजऽ नऽ आधा अधुरा खाण्डीया-बांडिया वरतऽ करनऽ वालई कऽ हाऊ आवणऽ नी देती। तब पारवतीजी दुसरी मावसी का घर गई तो। मावसी कऽ हाक मारी तो मावसी नऽ बान्नो खोल्यो। न कयजऽ कि हाऊ सुहाग देणऽ को वरतऽ करी रईजऽ। तु यहां रय् नऽ उनी मावसी न ओकऽ नवऽ तार को काचा सुत को दोरो दियो। वरतऽ को दोरो लई नऽ वो व्हां सी हिमाचल राजा का साथ घर आया। व्हां चारई बईण नन्ऽ अबोला को वरतऽ कर्‌यो नऽ उध्यापण करणऽ कि तैयारी करी। न सांझ कऽ शंकरजी पारवती कऽ लेणऽ आई पोयचा। नऽ कयो कि हम तो काल जावागा।

पिताजी नऽ कयो कि ई चारई बईण नन्ऽ अबोलो वरतऽ कर्योजऽ। न उजवी रईज नऽ इनको अबोलो उजवी लेणऽ देवो। तब शंकरजी न कयो कि अबोला को सबई समान बांधी देवो। सबई समान बांधी न शंकर पारवती चल्या। तीनई बईण नन्ऽ तो अपणा बाप घर अबोलो उजवी दियो। न पारवतीजी चलतऽ–चलतऽ एक शयर मऽ आया। तो पारवतीजी कयऽ कि हाऊ तो यहां अबोलो उजवुगा। शंकरजी नऽ हाव कई दियो। नऽ सारा शयर मऽ निवतो भेजी दियो कि पारवतीजी अबोलो उजवी रहयाजऽ। सुहाग को समान लेणऽ आवजो। पारवतीजी सौभाग वाटी रहयाजऽ। शयर मऽ खेती किरसाणी वाला लोग था। किरसाण नऽ आडी जातऽ वालई नऽ जल्दी सी सौभाग लेण आई गईजऽ। नऽ उनकऽ पुरो सौभाग मिल्यो। पण वाण्या बामण कि घरवालई न देर सी आई। तो समान खुटी गयोजऽ। अब पारवतीजी शंकरजी सी कयजऽ अब काई करू? तो शंकरजी कयजऽ कि थारा हाथ को कंगण निकालई नऽ गंगा ज्ल मऽ डुबाड़ी न छीटा दई देवो। जेकऽ जहां छिंटो लग्यो ओसो सौभाग मिलगा। पारवतीजी नऽ गंगा जल को छाटो दियो। कोई कऽ हाथ पऽ लग्यो कोई कऽ कपाल मऽ लग्यो न कोई कऽ कई नी लग्यो।

बामण वाण्या नको आज भी अधुरो सौभाग छे। कोई का हाथ सी हाथ लग्यो न वा रांडी हुई जाजऽ। तो कोई पऽ आपदा आवज नऽ ओ मरी जाजऽ। आसो सौभाग वाण्या बामण नकऽ मिल्यो। सौभाग बाटी नऽ वरतऽ उजवी नऽ पारवतीजी न शंकरजी चल्या। तो रस्ता मऽ सुखी दुरूप थी। शंकरजी न कयो कि पारवतीजी तुम दुरूप पर चलो। पारवतीजी दुरूप पर चलणऽ लग्या तो दुरूप हरी हरी हुई गई। आगऽ जाणऽ लग्या तो घामऽ लगणऽ लग्यो। वहां सुखो सो आम्बो मिल्यो। पारवतीजी वहां जाई नऽ विश्राम लेणऽ का लेण गया तो वो भी हरो भरियो हुई गयोजऽ। आगऽ जाणा पऽ पाणी को झरणो मिल्यो।

पारवतीजी कऽ तीस लगी तो शंकरजी नऽ वहां झरणा सी पाणी पेणऽ को कयो। पारवतीजी जवऽ झरणा पास गया तो पाणी ववणऽ लगी गयोज। पारवतीजी न पाणी पीयो न दुई जोण वहां सी कैलाश परबत पर आया नऽ आम्बा कि कयरी नऽ ताड़ी नऽ खाई तो वा भी मिठी निकली। नऽ कीड़ा निकलणा बंद हुई गयाजऽ। यो सब अबोला वरतऽ का परताप सी हुयोज। पारवतीजी को वरतऽ अच्छो हुयो आसो सबई बईण नको वरतऽ अच्छो होय। उनकऽ अखण्ड सौभाग मिल्यो आसो सबई बईण नकऽ मिलऽ।

भावार्थ

राजा हिमाचल राज्य करते थे। उनकी चार लड़कियाँ थीं। जब लड़कियाँ बड़ी हुईं। एक दिन राजा ने कहा कि बेटियों मैं तुम्हारे वर (पति) खोजूँ या तुम खुद ही खोज लोगी। तब तीनों लड़कियों ने कहा पिताजी आप ही खोजो। तब पिता ने चौथी लड़की पार्वती को बुलाया और उससे भी पूछा बेटी तू तेरा पति खोज लेगी या में खोजूँ? पार्वतीजी ने कहा मैंने अपना वर ढूँढ़

लिया है। मेरे पति भगवान शंकर हैं। मैंने मन ही मन उनका वरण कर लिया है। पिता ने तीनों लड़कियों के लिये अच्छे वर (पति) ढूँढ़ लिये हैं। पिताजी ने तीनों लड़कियों कि मंगनी अच्छे लड़कों से कर दी और पार्वतीजी की मंगनी शंकरजी से कर दी। विवाह की तैयारियाँ होने लगीं। सभी तीनों बहनों की बरातें आईं। कोई हाथी पर बैठकर आया। कोई घोड़े पर बैठकर आया और पार्वतीजी का दूल्हा नन्दीगण पर बैठकर आया है। कोई भूत, कोई पिशाच है। कोई भस्मी वाला है। कोई जटा जुट वाला है। कोई नसेड़ी है तो कोई भंगेड़ी है। ऐसे बराती आये थे शंकरजी कि बरात में। भूतों कि टोली, साधु सन्यासियों की टोली, झुंड के झुंड बारात में आए थे। जब शंकरजी ने सुना कि यह बारात बड़ी अशुभ है। तो पूरी बरात को 36 करोड़ देवता बना दिये। पार्वती माता ने ऐसे तो कई व्रत अनुष्ठान किये पर कोई सा व्रत पूरा नहीं किया। ना ही उद्यापन किया। इससे उनके सभी व्रत अनुष्ठान खंड़ित थे।

सभी खंडित व्रत उपवास के कारण पार्वती माता को दु:ख उठाना पड़ा।

विवाह की तैयारियाँ हुईं। सभी बाराती भोजन खाने बैठे। जब सभी बाराती भोजन खाने लगे तो भोजन की कमी पड़ गई। पार्वतीजी ने शंकरजी से प्रार्थना की ये क्या कर रहे हो? तब शंकरजी ने वरदहस्त घुमाया। छत्तीस करोड़ देवता अन्तरध्यान हो गए। अब सिर्फ तीन देवता रह गए। ब्रह्मा, विष्णु और महेश रह गए। सभी ने भोजन किया। विवाह हुआ और बारात विदा हुई। कोई लड़की पालकी में बैठकर विदा हुई, कोई बहन रथ पर बैठकर ससुराल गई पर पार्वती माता नन्दीगण पर बैठकर रवाना हुई। थोड़ी दूर जाने के बाद पार्वती माता ने शंकरजी से कहा धुप लग रही है। मेरे पैर जल रहे हैं। शंकरजी ने पार्वती से कहा तुम हरी-हरी दूब पर चलो। हरी-हरी दूब पर चलने से तुम्हारे पैर नहीं जलेंगे। पार्वती ने जैसे ही हरी दुब पर पाव रखा तो हरी-हरी दूब सूख गई है। आगे जाने पर एक आम का वृक्ष आया पार्वती ने शिव से कहा धूप तेज लग रही है। मैं यहाँ थोड़ी देर विश्राम कर लूँ। ऐसा सोचकर पार्वती आम वृक्ष के नीचे गई, तो आम वृक्ष सूख गया। थोड़ा आगे जाने पर पार्वती को प्यास लगी। पार्वतीजी ने शंकरजी से कहा मुझे प्यास लगी है। शंकरजी ने झरने कि और इशारा किया कि वहाँ पानी है। उस स्थान पर जाकर पानी पी लो। पार्वतीजी ने जैसे ही पानी को हाथ लगाया पानी का झरना सूख गया। वहाँ से चलते-चलते शंकरजी और पार्वतीजी कैलाश पर्वत पर आये। कैलाश पर्वत पर खाने के लिये एक आम्र वृक्ष के फल थे। उस आम्र वृक्ष से आम तोड़कर खाते थे। भगवान शंकरजी ने नन्दीगण से कहा- जा एक लकड़ी ले जा और आम तोड़ ला।

नन्दीगण ने एक लकड़ी मारी तो तीन आम नीचे गिरे। नन्दीगण तीनों आम लेकर शंकरजी के पास आया। एक आम शंकरजी ने ले लिया। दूसरा आम पार्वतीजी को दे दिया और तीसरा आम नन्दीगण ने ले लिया। सभी आम खाने लगे। शंकरजी ने आम खा लिया। नन्दी ने आम खा लिया। और पार्वतीजी के आम से कीड़े निकले पार्वतीजी ने आम फेंक दिया।

नित्य प्रतिदिन ऐसा ही होता था। होते-होते एक वर्ष का समय बीत गया। तब राजा हिमाचल ने अपनी तीनों लड़कियों को ससुराल से वापस बुलाया और वे पार्वती को लेने गये।आने वाले दिन आम वृक्ष को लकड़ी मारी गई। उस दिन तीन आम के स्थान पर चार आम नीचे गिरे। सभी चारों आम खाने लगे। शंकरजी राजा हिमाचल नन्दीगण ने आम खाया। पार्वतीजी ने जैसे ही आम को हाथ लगाया। आम में कीड़े चलने लगे। राजा ने अपनी बेटी पार्वती के हाथ में कीड़े वाला आम देखा तो अपने हाथ का आम पार्वती को खाने के लिये दिया। जैसे ही पार्वतीजी ने अपने पिता के द्वारा दिया गया। आम खाने की कोशिश की तो उसमें भी कीड़े निकले। पिता ने पुत्री से पूछा कि बेटी ऐसा कब से हो रहा है। पार्वतीजी ने कहाँ मुझे ऐसा देखते-देखते बारह महीने हो गए हैं। राजा पार्वतीजी को लेकर रवाना हुये। रास्ते में पार्वतीजी की मौसी का गाँव आया।

दोनों मौसी को मिलने मौसी के घर गये। घर जा कर पार्वती ने मौसी-मौसी कहकर आवाज लगाई। मैं पूजा कर रही हूँ। 'खांडिया बांडिया व्रत करनऽ वालई हाऊ वात नी करती' अधूरा व्रत अनुष्ठान करने वाली से मैं बात नहीं करती। न ही घर आने देती। जा अपने घर जा। तब पार्वतीजी ने दूसरी मौसी के घर का दरवाजा खटखटाया तो मौसी ने दरवाजा खोला और कहा कि मैं सुहाग देने का व्रत कर रही हूँ, तू यहीं रुक। मौसी ने उसे एक कच्चे सूत का धागा दिया। उस धागे में नौ तार की संख्या थी। धागा लेकर वह राजा हिमाचल के साथ घर आई। वहा चारों बहनों ने अबोला व्रत किया और उद्‌यापन की तैयारी की। शाम के समय शंकरजी पार्वती को लेने आ पहुँचे और कहा कि हम तो कल ही जायेंगे। पिताजी ने कहा इन चारों बहनों ने अबोला व्रत किया है। उसका उद्‌यापन है। इनका उद्‌यापन हो जाने दीजिए। उसके बाद आप पार्वती को लेकर चले जाना। तब दामाद के हट के आगे कुछ नहीं चला और सभी सामान पार्वती को बांधकर विदा कर दिया।

तीनों बहनों ने अपने पिता के घर अबोला व्रत का उद्‌यापन किया है। शंकरजी व पार्वतीजी चलते-चलते एक नगर में पहुँचे। तो पार्वतीजी ने शंकरजी से कहा मैं यहाँ पर अपने अबोला व्रत का उद्‌यापन करूँगी। तो शंकरजी ने कहा हाँ कर लीजिए। में सारे शहर को निमंत्रण भेज देता हूँ। शंकरजी ने शहर में निमंत्रण भेजा कि पार्वतीजी अबोला व्रत का उद्‌यापन कर रही हैं। सौभाग्य का सामान लेने आना। सुहाग बँटेगा आना। शहर में खेती किसानी वाले लोग थे। बलाई चमार जाति के लोग थे। उनकी स्त्रियाँ जल्दी ही सौभाग्य लेने पहुँच गई। उन स्त्रियों को पार्वतीजी की कृपा से पूर्ण सौभाग्य प्राप्त हुआ और ब्राह्मण बनिये कि स्त्रियाँ देर से आईं और सामान समाप्त हो गया था। पार्वतीजी ने शंकरजी से कहा अब मैं क्या करँ? तब शंकरजी ने कहा तेरे हाथ का कंगन उतार कर गंगाजल में डुबाकर सबको वही पानी छिड़क दो। जहाँ पर जैसे पानी के छींटे लगे। उन स्त्रियों को वैसा ही सुहाग मिला। किसी स्त्री को कपाल पर लगा। किसी को हाथ पर लगा। ब्राह्मण और बनिये की स्त्रियों को अधूरा सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसीलिये बनिये कि

लड़की का विवाह हुआ। हाथ से हाथ और वह विधवा हो गई कोई विवाह के एक साल बाद या चार साल बाद विधवा हो जाती है। कोई न कोई बाधा उत्पन्न हो जाती रही। ऐसा सौभाग्य ब्राह्मण और बनिये की स्त्रियों को मिला। सौभाग्य बाँटकर व्रत का उद्यापद करके शंकरजी और पार्वतीजी चले हैं। चलते-चलते रास्ते में सूखी दूब मिली। शंकरजी ने कहा तुम दूब पर चलो। पार्वतीजी दूब पर चलने लगी। दूब हरी-हरी हो गई। आगे चलने पर धूप तेज लगने लगी। पार्वतीजी उस सूखे आम के नीचे बैठ गई। अबोला व्रत के प्रभाव से वह आम्र वृक्ष हरा हो गया। आगे जाने पर पार्वतीजी को प्यास लगी। शंकरजी ने कहा वहाँ झरना है। पानी पी लो। पार्वतीजी झरने के पास गईं। तो झरने से पानी बहने लगा। पानी पी कर वे चलकर कैलाश पर्वत पर आए। आम्र वृक्ष से आम तोड़कर खाए आम का रस मीठा हो गया और कीड़े निकलना बंद हो गए। ये सब अबोला व्रत के प्रभाव से हुआ। पार्वतीजी का व्रत अच्छा हुआ। ऐसा सबका व्रत हो। पार्वतीजी को इसका फल प्राप्त हुआ। ऐसा फल सभी बहनों को प्राप्त हो।

बरज बारस व्रत कथा

एक अधड़ उम्मर की डोकरी थी। वोका दो बेटा था। एक नानो सो न एक जवान। नाना बेटा को नावऽ थो गंगल्यो बड़ो उधमाती दिन भर माय अनऽ भाभी का नाक मऽ दम करी देतो थो। घर मऽ एक सीधी-सादी कपिला गाय थी। ओको एक केड़ो थो ओको नाव थो मुगंल्यो। मुगंल्यो भी गंगल्या जसो महाउधमाती थो। गंगल्या मुगंल्या कि जाड़ी नवी ववड़ी का लेण सिरदर्द बणी गई थी। दोई ओकी काबु का बायर था।

ससु खेत मऽ जाती तो वा गंगल्या मुगंल्या कि जाड़ी खऽ ववु का सुपरत करी जाती। सासु का खेत मऽ जली जाणऽ का बाद गंगल्यो दरवाजो खोली न बायर भागतो न ओका पाछऽ मुगंल्यो भी दौड़ लगावणऽ लगतो ववु इनखऽ पखड़ण का लेण खुब दौड़ती-भागती कदी गंगल्या कऽ पकड़ती तो मुगंल्यो छुटी जातो अनऽ मुगंल्या कऽ पकड़ती तो गंगल्यो छुटी जातो। ववड़ी बठी नऽ खुब रड़ती। बड़ी मुश्किल सी सासु का घर आवणऽ का पयलऽ वा ऐना उधमाती होण कऽ पकड़ी न घर भीतर लावती।

एक दिन सासु नऽ खेत मऽ जाती बखत ववु कऽ कयो की आज गंगल्या मुगंल्या को खीचड़ो बणई लेजे मजाक मऽ सासु गऊ (गेहूँ) कऽ गंगल्यो अनऽ मुगं कऽ मुगंल्यो बोलती थी। सासु की वात सुणी नऽ व्वु खुश हुई गई। उनन मन मऽ कयो आज सब सन्ताप कटी जायगऽ। गंगल्या मुगंल्या को सदा-सदा का लेण काम तमाम हुई जायगऽ तव खुश चेन सी जीवणो नसीब होयगऽ।

सासु का खेत मऽ जाणऽ का बाद ववु न घर का सब दरवाजा मजबुती सी बंद करी दिया। कुराड़ो उठई न गंगल्या मुगंल्या पऽ टुटी पड़ी गंगल्या मुगंल्या जान बचावणा का लेणऽ आई वई भागणऽ पण ववु न पक्को इतंजाम करी लियो थो। उनकऽ भागणऽ को कोई रस्तो नी मिल्यो आखीर मऽ वो दुई हत्यारी ववु का कुराड़ा का शिकार हुई गया। उनखऽ मारीऽ नऽ ववु नऽ उनको मास एक बड़ा हांडा मऽ चड़ई दियो नऽ खीचड़ो सिजावणऽ बठी गई।आज ओखा दुई-दुई दुश्मन होण सी मुक्ती मिली गई थी। एका लेणऽ हांड़ा का पास बठी नऽ वा खुशी का गीत गाई रही थी।

सांझ हुई गई ढोर ढन्कर अनऽ किरसाण मजदुर खेत मऽ सी घर आवणऽ लग्या सासु भी माथा पऽ गाय को चारो लादी नऽ घर की तरफ चली पड़ी। सासु गाय की खुब सेवा करती थी। वा गाय का केड़ा मुगंल्या कऽ अपणा बेटा गंगल्या जसोज लाड़ करती थी। आज ओखऽ दुई की खुब याद आई रई थी। वा चारा को भारो पटकी नऽ जल्दी सी घर मऽ घुसी। उनन देख्यो की घर एकदम सुनो-सुनो सो छे। गंगल्या मुगंल्या को कई पतो नी थो सासु नऽ घबरई नऽ ववु सी पुछियो काँ ओ गंगल्या मुगंल्या काँ छे? ववु नऽ खिचड़ा का हांड़ा बाजु इसारो करी नऽ कयो तमनऽ कयो थो की गंगल्या मुगंल्या को खिचड़ो बणई लिजे मनऽ दुई नखऽ मारी न इना हांड़ा मऽ उनको खिचड़ो बणई लियोज।

ववु का बोल सुणी नऽ सासु पछाड़ खाई नऽ धरती पर हिटी पड़ी। अनऽ धाँय- धाँय रड़ण लगी। वा ववु कऽ बुरी तरह सी भांडी रई थी। चीखी-चीखी नऽ ओका सात पुरखा होण कऽ सराप दई रई थी। यो हुई रयो थो की रम्भाती दौड़ती कपिला गाय घर मऽ आई गई। वा रम्भई - रम्भई न घर का कोना-कोना मऽ अपणा केड़ा मुगंल्या कऽ ढुढणऽ लगी। वा बेचेन हुई नऽ वाड़ा का चक्कर काटनऽ लगी। चक्कर काटतऽ काटतऽ वा खिचड़ा का हांड़ा पास पोईची गई। हांड़ा कऽ सुंघी नऽ उनन अपणा दुई सींग होण सी ओका पऽ वार करियो। माटी को हांड़ो फुटी टुटी नऽ टुकड़ा-टुकड़ा हुई गयो। अनऽ ओका मऽ सी गंगल्या मुगंल्या छलांग मारता परगट हुई गया। गंगल्या माय खुशी सी पागल हुई गई। उनन गंगल्या कऽ छाती सी लपटईयो मुगंल्यो गाय माता का पास जाय नऽ बेसब्री सी धावणऽ लग्यो। गाय माता ओकऽ प्यार सी चाटनऽ कपिला गाय माता की सेवा सासु कऽ फली ओको नानो बेटो मरी न जीवतो हुई गयो। गाय माता जसी उनी डोकरी पर टुटमान हुई आसी सब बईण नऽ पऽ टुट मान होय।

भावार्थ

एक बुढ़िया थी। उसके दो बेटे थे। पहला बेटा बड़ा था, दूसरा पाँच बरस का था। छोटे बेटे का नाम 'गंगल्या' रखा गया था। बुढ़िया के घर एक गाय थी, जिसके बछड़े का नाम 'मुगंल्या'

था। माँ ने बड़े बेटे की शादी कर दी थी। बहू नादान और अंजान थी। माँ के खेत पर चले जाने के बाद गंगल्या और मुंगल्या दोनों खूब उधम मचाते और दिन भर बाहर ही खेलते रहते थे। माँ के खेत से आने के पहले बहू उन्हें ढूंढकर लाती थी। दोनों ने उसे परेशान कर रखा था।

एक दिन बुढ़िया खेत पर जाने लगी तो बहू ने कहा– आज शाम का खाना क्या बनेगा। सास ने कहा– गंगल्या मुगंल्या का खीचड़ा बना लेना, कहकर सास खेत पर चली गई। बहू नादान और भोली तो थी ही उसने सास की बात को सही मान लिया। बहू तो रास्ता ही देख रही थी। दोनों से कब छुटकारा मिले। सास के खेत पर जाते ही उसने दरवाजा मजबूती से बंद किया और कुल्हाड़ा उठाकर गंगल्या–मुगंल्या को मार डाला और एक बड़े बर्तन में खिचड़ा पकने को रख दिया। शाम हुई सासू माँ घर आईं उसने आते से ही चारे का गठ्ठर नीचे रखा और देखा कि आज घर में सन्नाटा क्यों है? सास ने बहू से पूछा– गंगल्या–मुगंल्या कहा है। बहू ने हन्डे की तरफ इशारा करके कहा– मैंने तो उन्हें मार कर खिचड़ा बनने के लिए रख दिया ससूजी गस्त खाकर गिर पड़ी। हत्यारी तूने यह क्या किया? मैंने तो तुझे गेहूँ कि रोटी और मूंग की दाल बनाने को कहा था। न कि गंगल्या–मुगंल्या को मार कर खिचड़ा बनाने को कहा था। ऐसा कहकर वह रोने लगी। इतने में गाय माता आई और अपने बछड़े को न देखकर रम्भा–रम्भा कर आवाज लगाते हुए ढूंढने लगी और उस हन्डे के पास गई। उसे महसूस हुआ कि मेरा बछड़ा यहीं हैं। उसने सींगों से उस हन्डे को तोड डाला और उसने उन टुकड़ो को चाटना शुरू किया। गाय माता के प्रताप से गंगल्या–मुगंल्या जीवित हो गये। माँ ने अपने बेटे को गले लगाया और गाय ने अपने बछड़े को दूध पिलाया। गाय माता कि कृपा से गंगल्या–मुगंल्या जीवित हो गये। सासू माँ ने गौ–माता को प्रणाम किया देवी तेरी कृपा से मेरा और तुम्हारा पुत्र जीवित हो गया। आज से में अपने बेटे कि स्मृति में ब्रजबारस का उपवास करूँगी। तभी से संतान की स्वस्थ कामना के लिए माताएँ ब्रजबारस का उपवास करती हैं। गौ माता ने उस माँ को बेटा प्रदान किया। ऐसा गौ माता सभी बहनों पर कृपावान हों।

रीषी पांचवऽ व्रत कथा

एक बामण थो एक बामणेण थी। केंवार मास को मयनो आयो श्राद्धपक्ष का दिन आया। बामण न अपणा माता–पिता को श्राद्ध करनऽ को विचार अपणी घरवाली सी कर्‌यो। विचार–विमर्श का बाद बामण न कयो कि हाऊ रीषीवर नकऽ जीमण को नीवतो देणऽ जाई रयोज। तु भोजन बणावण कि तैयारी कर। रीषीवर भी आशा था कि उनकी पलक बारह साल मऽ एक बार खुलती थी। आशा रीषी नकऽ नीवतो देण बामण चल्यो। रीषीवर नकऽ पास जाई न बामण न भोजन को निमंत्रण रीषी नकऽ दियो रीषी ननऽ कयो कि बेटा हमकऽ निमंत्रण स्वीकार छे। पर भोजन शुद्ध न पवित्र होणु चायजे तो हम भोजन खावांगा बामण न बात स्वीकार कर ली। बामण नीवतो दई नऽ पछो आयो नऽ घरवाली कऽ भोजन बणावण को कयो। घरवाली उना समय

रजस्वला हुई गई थी। बामणेण न अपणा पड़ोस मऽ रयण वाली डोकरी सी वात कई माय मकऽ रीषवर नकऽ भोजन भी जीमाड़णु माय न कयो कि बैटा तु सात पाटला धरी नऽ एक-एक पऽ बठी न न्हावजे तो तुकऽ सात दिन हुई जायगा। फिरी तु भोजन बणई न रीषीवर नकऽ जीमाडी देजे। बामणेण न सात पाटला धरिया न एक-एक पऽ बठी न सात चक्कर न्हाई।फिरी उनन् खीर पुरी न पकवान बणाया ठीक समया पर रीषीवर भोजन करणऽ आया। बामण न आदर सतकार करियो न आसन पऽ बठाड़िया रीषी नन् कयो कि बैटा भोजन शुद्ध न पवित्र छे काई? बामण न कयो हां भोजन शुद्ध न पवित्र छे। बामणेण न थाली नमऽ भोजन परसीयो न रीषी न का सामनऽ धरी दी। रीषी नन्ऽ कयो अब हम पलक उगाड़ी रयाज।

रीषी नन् जब डोला खोल्या तो भोजन कि थालऽ मऽ किडा नजर आया। रीषी नन्ऽ करोध मऽ आई न बामण न बामणेण कऽ सराप दई दियो। बामण कऽ बईल को नऽ बामणेण कऽ कुतरी होण को सराप दियो।

न दुई जौण सराप सी ओज बणी गयाज। पण दुई नकऽ अपणा तप का परभाव सी पुरब जलम कि वात नऽ हेर थी। दुई जौण अपणा पुत्र का घर पलता था। एक दिन सराद को दिन आयो बामण कुमार नऽ अपणा पिता कि सराद तिथि मऽ विधि का साथ बामण भोजन को कार्य रख्यो न घरवाली कऽ पकवान बणवण कि आज्ञा दी। वई बामणेण न विविध पकवान कणाया नऽ खीर बणई न धरी दी। नऽ काम करनऽ लगी गई। उना समय एक साप बाबा न आई नऽ खीर मऽ जयर उगली दियो। यो हाल कुतरी (बामणेण) बणेल देखी रई थी। उनऽ सोच्यो कि कदी बामण खीर खायगा तो मरी जायगा। नऽ। म्हारा छोरा कऽ ब्रम्ह हत्या को पाप लगा। आसो सोची नऽ कुतरी न खीर मऽ मुंडो नाखी न उयटी कर दी। ववड़ी नऽ देख्यो कि कुतरी नऽ खीर मऽ मुंडो नाखी न खीर उयटी कर दी। ववड़ी नऽ कुतरी कऽ ऐत्ती मारी कि ओकी कम्मर तोड़ी दी। आरू खीर कऽ फेंकी दी नऽ दुसरी खीर बणई ली। फिरी सराद कर्‌यो बामण नऽ कऽ भोजन जीमाड़ो। रात कऽ कुतरी नऽ बईल्या का पास जाईन आपणी सारी विपदा सुणई। तो बईल्यो बोल्यो की थारा पाप का कारण मकऽ बैल की योनी मऽ आवणु पड़ीयो। आरू आज म्हारा छोरा न दिन भर मुंड़ो बांधी नऽ जौत्यो नऽ अबी तक एक मुठ्ठी चारो नी नाख्यो। या वात बामण सुणी रयो थो। ओकऽ बड़ो दुखः हुयो।

अपणा माता-पिता दुई न कऽ भोजन दई नऽ रन्ज मऽ वन मऽ चली गयो। वहां जाई न रीषी न कऽ परणाम करि नऽ पुछियो कि महाराज म्हारा माता-पिता कुतरी न बईल्या कि योनी मऽ छे। वो किना प्रकार का वरत उपवास सी उनकी योनी सी छुटकारो पाई जाय। मकऽ बताओ?

तब रीषी ननऽ बतायो कि थारा माता-पिता कऽ रजो धर्म दोष छे। ऐका सी वो कुतरी न बईल का जलम पायाज। तु घर जाई न विधि सी उत्तम रीषी पंचमी को वरत करजे नऽ वो को

फल माय–बाप न कऽ अर्पण करजे। जैका सी वो इनी पशु योनी सी मुक्त हुई जायगा न सरग मऽ जायगा। रीषी नऽ सी वरत विधि सुणी न बामण को छोरो घर आयो। न विधि विधान का संगात भादव मास कि उजालई कि पाचवऽ कऽ रीषी पाचवऽ को वरत कर्‌यो न श्रद्धा सी वरत को फल अपणा माता–पिता कऽ अर्पण कर्‌यो। वोका प्रभाव सी वो उनी योनी सी छुटकारो पाई न देव विमाण पऽ बठी न सरग मऽ जाती रया। हे राजा! जो महिला इना वरत कऽ विधि का साथ करज। नऽ श्रद्धा सी सात रीषी नकीऽ पुजा करजपुजा करजऽ तो वा महिला भयंकर रजस्वला दोष सी छुटकारो पायई लेज। नऽ धन, पुत्र, नात्या, पोत्या, को सुख पावजऽ। इना वरत कऽ करनु नारी जाती को मुख्य काम छे। जिना प्रकार सी बामण का माय–बाप को पशु योनी सी छुटकारो हुयो। कदी हमारा माता–पिता भी पशु योनी मऽ होय तो उनको दोष समाप्त हुई जाय नऽ वो सरग मऽ पोयची जाय।

भावार्थ

एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी थी। कुँवार मास आया, श्राद्धपक्ष आया। ब्राह्मण ने अपने माता–पिता के श्राद्ध करने की सोची। अपनी पत्नी से विचार विमर्श किया और ऋषियों को श्राद्ध भोजन के लिये निमंत्रण देने गया। ऋषि भी ऐसे थे, जिनकी पलक बारह वर्ष में एक ही बार खुलती थी। आज ही के दिन ऋषियों की पलक खुलने का दिन था। ऋषियों ने भोजन का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। ब्राह्मण निमंत्रण देकर घर आया और पत्नी से भोजन बनाने को कहा। पत्नी उसी समय रजस्वला हो गई थी। ब्राह्मणी ने अपने पड़ोस में रहने वाली बुढ़िया को अपनी रजस्वला होने की समस्या बतलाई। बुढ़िया ने समस्या का हल करते हुए कहा– तुम रजस्वला हो गई हो और तुम्हें ऋषियों को खाना भी खिलाना है। तुम ऐसा करो सात बाजुट रखकर क्रमशः एक–एक पर स्नान करना तो तुम्हें रजस्वला के सात दिन हो जायेंगे और ऋषियों का भोजन बनाकर खिला देना। ब्राह्मणी ने सात बाजुट रखे और प्रत्येक पर स्नान किया और भोजन बनाने लगी। उसने खीर पुड़ी आदि भोजन बनाया। ठीक समय पर ऋषिवर भोजन करने पधारे। ब्राह्मण ने आदर सत्कार किया आसन पर बिठाया। ऋषियों ने कहा बेटा भोजन शुद्ध और पवित्र है क्या? ब्राह्मण ने कहा हाँ भोजन शुद्ध और पवित्र है। ब्राह्मणी ने थाली में भोजन परोसा और ऋषियों के सामने रखी। ऋषियों ने कहा अब हम पलक खोलते है। जैसे ही ऋषियों ने आँखें खोली तो भोजन कि थाली में कीड़े दिखाई दिए। क्रोधित होकर ऋषिवरो ने ब्राह्मण और ब्राह्मणी को श्राप दिया। ब्राह्मण को बैल होने का और ब्राह्मणी को कुतिया होने का श्राप दिया। दोनों श्राप के अनुसार वहीं बन गये। पर इन दोनों को अपने तप के प्रभाव से पूर्व जन्म की बातों का स्मरण बना रहा। और यह दोनों प्राणी अपने ही पुत्र के घर पालित हुए। एक दिन पितृपक्ष में ब्राह्मण कुमार ने अपने पिता कि श्राद्ध तिथि में विधि के साथ ब्राह्मणभोज रखा और अपनी पत्नी को स्वादिष्ट पकवान बनाने की आज्ञा दी। उधर ब्राह्मण की पत्नी ने विविध पकवान, खीर बना कर रख दी और अन्य काम में लग गई। उसी

समय एक सर्प ने आकर खीर में जहर उगल दिया। यह हाल ब्राह्मणी (कुतिया) बनी देख रही थी। उसने सोचा कि अगर ब्राह्मण खीर खायेंगे तो वह मृत्यु को प्राप्त होंगे। इससे मेरे लड़के को ब्रह्म हत्याओं का पाप लगेगा। इससे उसने खीर में मुँह डालकर जुठाकर दिया। बहू ने देखा कि कुतिया ने खीर में मुँह डालकर जूठाकर दिया। बहू ने कुतिया को इतना मारा कि उसकी कमर तोड़ दी और खीर को फेंक के दूसरी बना ली। फिर श्राद्ध कर ब्राह्मणों को भोजन कराया। रात को कुतिया ने जाकर अपने पूर्व पति बैल से दिन में होने वाली सारी घटना बताई। तो बैल बोला– प्रिये तुम्हारे पाप के संसर्ग से आज मुझे बैल होना पड़ा और आज मेरे लड़के ने दिनभर मुँह बांधकर जोता है और अभी तक एक मुठ्ठी घास भी नहीं डाली। यह सारी बातें छुपा हुआ ब्राह्मण सुनता रहा। जिससे वह बड़ा दु:खी हुआ। दोनों माता–पिता को भोजन देकर वह रंज में वन चला गया।

वहा ऋषियों को प्रणाम करके पूछा– महाराज मेरे माता–पिता कुतिया व बैल योनी में हैं। वह किस प्रकार इस योनी से छुटकारा पा सकेंगे तो ऋषियों ने बताया तुम्हारे माता–पिता के रजोधर्म दोष थे। इसलिए उन्हें कुतिया और बैल का जन्म पाया है। तुम घर जाकर विधि से उत्तम ऋषि पंचमी का व्रत करके उसका फल अपने माँ–बाप को समर्पण करो, जिससे वह इस पशु योनी से मुक्त होकर स्वर्ग प्राप्त करें। मुनियों से विधि सुनकर ब्राह्मण पुत्र ने घर आकर विधि–विधान के साथ भादवमास की शुक्लपक्ष पंचमी को ऋषि पंचमी का व्रत किया और श्रद्धा से उस व्रत का फल अपने माता–पिता को समर्पिण किया। जिसके प्रभाव से वह इस क्रूर योनी से छूटकर दिव्य देव विमान पर बैठकर स्वर्ग को प्राप्त हुए। हे राजन! जो स्त्री इस व्रत को विधि के साथ करती हैं और श्रद्धा से सप्त ऋषियों का पूजन करती है। वह स्त्री भयंकर रजस्वला दोष से छूटकर शीघ्र ही धन, पुत्र, पौत्र आदि को सौभाग्यरूप में पाती है इस व्रत को करना नारी जाति का मुख्य कर्तव्य है। जिस प्रकार ब्राह्मण के माता–पिता का पशु योनी से छूटकारा हुआ। यदि हमारे माता–पिता भी पशु योनी में हो तो उनका दोष समाप्त होकर वे स्वर्ग जाएँ।

मालवी व्रत कथाएँ

निर्मला राजपुरोहित

गणेसजी व्रत कथा

एक गाँम मे अपणा बेटा वऊ का हांते एक आंदी डोकरी रेती थी। वा रोज सरदा भकती ती विदी से रोज गणेजसी की पूजा करती थी। एक दन गणेसजी परसन वियाने परकट वई ने बोल्या- डोकरी, थारे जो चईये उ मांगी ले। डोकरी बोली- कस्तर और कईं मांगु? म्हने तो मांगणों आवे ज कोनी। तो गणेसजी बोल्या- अपणा बेटा वऊ ने पुछी ने मांगी लिजे। मैं काले फेर अऊँगा। डोकरी ए बेटा ती पुछ्यो- तो बेटो बोल्यो के धन मांगी ले, वऊ बोली के पोतो मांगी लो। बाद में डोकरी ए होच्यो के इ दोई तो अपणा मतलब की वात करे। फेर डोकरी ए पड़ोसी ने पुछ्यो- पड़ोसी ए कीदो- डोकरी तू तों थोड़ाक दन जीवेगा। तो क्यऊँ तू धन माँगे ने क्यऊँ तू पोतो मांगे। तू तो आखाँ मांगी ले। जणी ती थारी जिन्दगी आराम ती लिकरी जायगा। पण वणी डोकरी ए वणा पड़ोसी की वात नी मानी।

वणे होच्यो जणी ती अपणा वऊ-बेटा राजी वे ऊज मांगी लूं। ने फेर अपणा मतलब की चीज भी मांगी लुंगा। दूसर दन गणेसजी आया ने बोल्या- डोकरी माँ जो चइये उ मांग ले। डोकरी बोली- जदी आप परसन हो तो नऊ करोड़ की माया दो, निरोगी काया दो, आँखा की रोसनी दो, पोतो दो, ने आखा परवार ने सुखी राखो ने बाद में मुक्ति दई दो। गणेसजी बोल्या- डोकरी माँ! थें तो म्हने ठगी लिदो। पण म्हारो वर थने जरूर मिलेगा। गणेसजी ए कीदो- 'तथा वस्तु'। अतरो कई ने गणेसजी अन्तरध्यान वईग्या। डोकरी ने जो वर दीदो थों उ सब को सब मिली ग्यो। है सिद्ध वन्याग गणेसजी आप ए वणी डोकरी ने सब कई दीदो। अस्तर म्हाका पे भी किरपा करजो।

भावार्थ

एक गाँव में अपने पुत्र और बहू के साथ एक नेत्रहीन बुढ़िया रहती थी। वह श्रद्धापूर्वक विधि-विधान से नित्य ही गणेशजी की पूजा-अर्चना करती थी। एक दिन प्रसन्न होकर गणेशजी प्रकट हुए और बोले- बुढ़िया! तू जो चाहे सो माँग ले। बुढ़िया बोली- कैसे और क्या माँगूं? मुझे तो माँगना आता ही नहीं। तब गणेशजी बोले- अपने बहू-बेटे से पूछकर माँग लेना। मैं कल फिर आऊँगा। बुढ़िया ने बेटे से पूछा, तो बेटा बोला कि धन माँग लो। बहू बोली कि पोता माँग लो। तब बुढ़िया ने सोचा कि ये दोनों तो अपने-अपने मतलब की बात कर रहे हैं। अतः बुढ़िया ने पड़ोसियों से पूछा। पड़ोसियों ने कहा- बुढ़िया! तू थोड़े ही दिन जीयेगी। क्यों तू धन माँगे और क्यों तू पोता माँगे, तू तो आँखें माँग ले, जिससे तेरा बाकी जीवन आराम से कट जाएगा। लेकिन उस बुढ़िया ने पड़ोसिन की बात नहीं मानी।

उसने सोचा, जिसमें बहू-बेटा खुश हों वह माँग लूँ और तब अपने मतलब की चीज भी माँग लूँ। अगले दिन गणेशजी आए और बोले- बुढ़िया माँ! जो चाहे सो माँग ले। बुढ़िया बोली- यदि आप प्रसन्न हैं तो नौ करोड़ की माया दे, निरोगी काया दे, आँखों की रोशनी दे पोता दे, और सारे परिवार को सुख दे और अन्त में मोक्ष दे। गणेशजी बोले- बुढ़िया माँ! तूने तो हमें ठग लिया, किन्तु तेरा वर तुझे मिलेगा। गणेशजी ने कहा- तथास्तु। इतना कहकर गणेशजी अन्तर्ध्यान हो गए। बुढ़िया के वर के अनुसार सब कुछ मिल गया।

हे सिद्धि विनायक गणेशजी! जैसे तुमने उस बुढ़िया को सब कुछ दिया, वैसे ही हमें भी देने की कृपा करना।

गणपती व्रत कथा - (दो)

एक दफे सब देवता अणी वात पे लड़ी पड़्या के कुण बड़ो है। इको फैसलो करवा वाते सब देवता शिवजी कने ग्या। शिवजी ए किदो- के जो पूरा संसार की परकमा करी जो सबती पेला म्हारा कने आवेगा, उ ज सब ती मोटो देवता मान्यो जाएगा। शिवजी को होकम वेता इ सब देवता अपणी-अपणी सवारी पे सवार वईने आखा जगत की परकमा वाते लिकरी पड़्या। पण गणेशजी की छोटी-सी सवारी ऊँदरो दूसरा देवता की सवारी ती धीरे-धीरे चाली रियो थो।

रस्ता में नारदजी ए गणेशजी की सवारी की हालत देखी ने एक उपाय बतायो। के गणेशजी! आप तो राम लिखी ने वणी की परकमा कर लो। राम की परकमा ती ज आखा जगत की परकमा वई जाएगा। गणेशजी ए ऐसो ज कर्‌यो। ने सबती पेला शिवजी का हामे अईने हाथ जोड़ी ने उबा वईग्या। बाद में सब देवता आया तो गणपतीजी ने वठे पेला ती ज देखी ने वी सब

अचम्भा में पड़ी ग्या। शिवाजी ए गणेशजी की ज्ञान, बुद्धि और चतुरई की तारीफ करी ने, वणा ने सबती पेला पूजित देवता वणाया।

आज भी हर मंगल काम में सबती पेला गणेशजी की ज पूजा वे है।

भावार्थ

एक बार सभी देवता आपस में इस बात पर झगड़ पड़े कि कौन बड़ा है। निर्णय के लिए सभी शिवजी के पास उपस्थित हुए। शिवजी ने कहा कि- समस्त संसार की परिक्रमा कर जो सबसे पहले मेरे पास आएगा, वही सबसे बड़ा देवता माना जायेगा। शिवजी की आज्ञा पाते ही सभी देवता अपने-अपने वाहन पर सवार हो संसार की परिक्रमा के निमित्त निकल पड़े। परन्तु गणेशजी का छोटा-सा वाहन चूहा अन्य देवताओं के वाहनों की भाँति तेज चलने में असमर्थ होकर धीरे-धीरे चल रहा था।

रास्ते में नारदजी ने गणेशजी की स्थिति देखकर उन्हें सुझाव दिया कि आप राम लिखकर उसकी परिक्रमा करें। राम की परिक्रमा से ही पूरे संसार की परिक्रमा हो जायेगी। गणेशजी ने वैसा ही किया और सबसे पहले शिवजी के सामने आकर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। बाद में सभी देवता आये, तो गणेशजी को वहाँ पहले से ही उपस्थित देख चकित रह गये। शिवजी ने गणेशजी की ज्ञान-गरिमा बुद्धि चातुर्य की प्रशंसा करते हुए उन्हें ही प्रथम पूज्य देवता ठहराया।

आज भी प्रत्येक मंगल कार्य में सबसे पहले गणेशजी की ही पूजा होती है।

गणपति व्रत कथा - (तीन)

एक सेठ के छे: वऊवां थी। पाँच वऊवां तो गणपतिजी की पूजा मन लगई ने करती थी। पण छटी वऊ भगवान ने मानती कोनी। नी उपास करती ने नी पूजा-पाठ करती। ने हवेरे जल्दी खई लेती। एक दन बड़ी चोथ को वरत आयो। पाँची वऊवाँ पूजा-पाठ की तैयारी करी री थी। छटी वऊ ने नदी पे कपड़ा धोवा ने मेली दी। वणी ने भूख घणी लागती वा कपड़ा में आटो बादी ने नदी पे लईगी। वां भाटा पे नदी का पाणी ती आटो घूंदी ल्यो, ने वठेज मुर्दो बरीरियो थो, वणी पे बाटी हेकी ने गणपती जी का मंदर में ती घी लई ने बाटी पे लगई ल्यो ने खईगी। वऊ ने घी चोरता देखी ने गणपतीजी ए होट पे आंगरी लगई लो ने देखता ज रईग्या। घड़ीक में पूजारी जी ए आई ने देख्यो के गणपतीजी की आंगरी होठ पे है। था वात आखा गाम मे वईगी। आखा गाम का लोग गणपतीजी ने देखवा ने आया। ने देखी ने होचवा लागा के कणी वात पे गणपतीजी ए होठ पे आंगरी मेली। अतरा में छोटी वऊ कपड़ा धोई ने जईरी थी तो वणे देख्यो के मन्दर में

भीड़ कायकी लागी री है। वा जई ने देखे तो गणपतीजी की आंगरी होट पे। बा बोली- के मूं अबी अणा की आंगरी बाजू करूँ। मंदर को दरवाजो बंद कर्यो ने मोगरी हाथ में लई ने बोली- होठ पे तो आंगरी बाजू करो नी तो अबार मोगरी की मेलूं। म्हे तो खाली आपकी जोत में ती थोड़ो सो घी लीदो। आटो म्हारा घर को थो। हेक्यो मुर्दा पे। घी तो आपका सेवक लोगां ए चढ़ायो। आपको तो कई भी नी थो। फेर आपए होट पे आंगरी क्यों मिली। अबे बी आंगरी बाजू करी लो नी तो दूंगा मोगरी की। अतरा में गणपतीजी दाँत काड़वा लागा ने आंगरी तोकी लीदी।

भावार्थ

एक सेठ की छः बहुएँ थीं। पाँच बहुएँ गणपति की पूजा बड़ी श्रद्धा से करती थीं। छठी बहू नास्तिक होने से न उपवास करती और न पूजा-पाठ करती। वह सबेरे जल्दी ही भोजन कर लेती थी। एक दिन बड़ी चतुर्थी थी। पाँचों बहुएँ पूजा-पाठ की तैयारी कर रही थीं और छोटी बहू को कपड़े धोने के लिए नदी पर भेज दिया। छोटी बहू को भूख बहुत लगती थी। इसलिए वह कपड़े में आटा बाँधकर नदी पर ले गई और नदी के पत्थर पर आटा गूँथ लिया और वहीं पर मुर्दा जल रहा था, उस पर बाटी सेंककर, गणपति के मन्दिर से घी लेकर बाटी पर लगा लिया और खा गयी। बहू को घी चुराते देखकर गणपति ने ओंठ पर अँगुली लगा ली और आश्चर्य में पड़ गये। थोड़ी देर में पुजारी आया और देखा कि गणपति की अँगुली ओंठ पर है। यह बात सारे गाँव में फैल गयी। सब लोग गणपतिजी को देखने आये और देखकर सोचने लगे कि किस बात पर गणपतिजी ने अँगुली ओंठ पर रखी है। इतने में छोटी बहू आकर देखती है और कहती है कि मैं अभी इनकी अँगुली हटवाती हूँ। मन्दिर का दरवाजा बंद करके हाथ में मोंगरी लेकर बोली- ओंठ पर से अँगुली हटाओ, नहीं तो अभी मोगरी से मारती हूँ। मैंने तो सिर्फ आपके दीपक में से थोड़ा-सा घी लिया, आटा मेरे घर का था, बनाया मुर्दे पर, घी तो आपके सेवक ही चढ़ाते हैं। आपका तो कुछ भी नहीं था? फिर आपने ओंठ पर अँगुली क्यों रखी? अँगुली हटाओ, नहीं तो मोगरी से मारती हूँ। इतना सुनकर गणपति हँस पड़े और ओंठ पर से अँगुली हटा दी।

गणपति व्रत कथा - (चार)

छोटा-सा गणपती था। वणा ने गांम में छोरा-छोरी बड़ा-बुड़ा सब गणेस्यो कई ने हेला पाड़ता था। एक दन गणेस्यो चमटी में चाँवल ने चमचा में दूद लई ने आखा गांम में फरीग्यो, ने घरे घर जई ने लुगाया ने के, के म्हारे खीर वणई दो। तो लुगायां बोली- के अणी की कई खीर वणे। कोई के, के म्हारे छोरो रोई रियो, कोई ए किदो के मूं न्हईरी हूँ, कोई ए कीदो मूं छा करी री हूँ। कोई वणावा ने तैयार कोनी। वणी में ती एक डोकरी बोली- के ला बेटा, कोई थारी खीर

नी वणावे। मूं थारी खीर वणई दूँगा। गणेस्यो बोल्यो– के ले माँ बड़ी भट्टी खोद जे, ने बड़ो पड़छो मेल जे, ने वणी में दूद ने चोखा ल्हाखी दीजे, वणे डोकरी ए एसोज कर्यो, ने फेर गणेस्या ए किदो के– आखा गांम में नोतो दिया डोकरी आखा गांम में नोती दियई। घरे अई ने देखे तो पड़छो उबरई–उबरई ने जाय, वणे गणेस्या ने किदो, के यो पड़छो तो उबरई रियो है, वणे किदो के बड़ा तपेला में लई ले, तपेलो भरई ग्यो, तो डोकरी बोली– के अभे काय में लूँ? तो गणेस्यो बोल्यो– के हण्डा, बेड़ा बाल्टी, डेकची, जतरा थारा घर में वासण वे की सब भर ले, एक–एक करी ने हगरा वासण भरई ग्या। डोकरी आखा गांम में नोतो दिखई तो सब लोग जीम्मा ने अईग्या, ने केवा लागा के अणी डोकरी कने काले तो कई नी थो तो जीमी यावांगा नी तो पाणी का लोट्या ढोरी ने अई जावांगा। लोग जीमवा ने अईग्या। अतरा में डोकरी की बऊ बारणा का आड़ में ऊबी रई ने कटोरी भरी ने जीमजो गजानन गणपती महाराज करी ने खईगी। गणेस्यो नदी पे खेली रियो थो तो वठे वीने डकार अईगी। फेर डोकरी बोली चाल रे गणेस्या भोग लगई ले, तो गणेस्यो बोल्यो के म्हने तो डकार अईगी म्हारो पेट भरई ग्यो। के तू तो अबी घर में ज नी आयो। के थारी बऊ ए बाखा पाछे ऊबी रई ने म्हारो नाम लई ने भोग लगई लिदो। फेर आखा गाम ने जीमई दीदो। आखो गांम जीमीग्यो पण खीर को खुणो भी खाली नी वियो। डोकरी ए गणेस्या ने बुलायो के देख अभे कईं करूं? के कई नी। अभे अणा ने ढांकी दे। अतरो कई ने गणेस्यो जातोरियो। डोकरी गणेस्या ने पोंचई ने घर में अई ने देखे तो खीर का सब वासण सोना–चाँदी हीरा–पन्ना का वइग्या। डोकरी पाछी दोड़ी–दोड़ी गई ने कीदो के ए गणेस्या, ए गणेस्या उबोरे से तू कण है? वणे कीदो के मूं गणेश हूँ। के तू मानवी कोनी। तो वणे कीदो के हाँ – मू तो गजानन गणपती म्हारा हूँ। डोकरी बोली के– तू म्हने थारो वरत दई ने जा। फेर गणपतीजी ए झट अपणा पिताम्बर में ती इक्कीस तार लिकरिया ने विने दीदा ने किदो के इमे इक्कीस गठाण लगाजे, इक्कीस दन तक वरत करजे, ने सवासेर का लाडू वणई ने, रमता बालक ने वांट जे, एक झाग गाय ने दीजे, ने फेर भोग लईने तू खाजे अतरो कई ने गणपती महाराज अलप–झलप वईग्या। हे गणपती म्हाराज वणी डोकरी नें टूटा असा सकल ने टूटजो।

भावार्थ

छोटे से गणपति महाराज थे। गाँव में उनको सब 'गणेस्या' कहकर पुकारते थे। वे अपनी चीमठी में चावल और चम्मच में दूध लेकर पूरे गाँव में सबके यहाँ गये। बोले– मुझे खीर बना दो। किसी ने कहा– मेरा बच्चा रो रहा है, किसी ने कहा मैं स्नान कर रही हूँ, किसी ने कहा मैं दही बिलो रही हूँ। कोई भी बनाने को तैयार नहीं। उसमें से एक बुढ़िया ने कहा– अरे बेटा! ला, मैं तेरी खीर बना देती हूँ। गणेस्या बोला– माँ! बड़ी भट्टी खोदकर बड़ा कढ़ाहा रखना और उसमें

दूध, चावल, शकर डाल देना और पूरे गाँव में निमंत्रण दे देना। बुढ़िया निमंत्रण देकर आई तो देखा पूरा कढ़ाहा भर गया, तपेले में डाला, तपेला भर गया। फिर बुढ़िया बोली– अब किसमें भरूँ? तब गणेस्या बोला– तेरे घर में जितने बर्तन भर ले, एक–एक करके घर के सारे बर्तन भर गये। पूरे गाँव के लोग भोजन करने आ गये। आपस में सब लोग बातें करने लगे कि कल तो बुढ़िया के पास कुछ नहीं था। और आज भोजन करवा रही है, चलें तो सही, नहीं तो वापस आ जायेंगे।

बुढ़िया की बहू ने दरवाजे के पीछे खड़ी रहकर कटोरी में खीर भरी और गणपति का नाम लेकर 'जीमजो गणपती महाराज' पी गई। गणपति महाराज नदी पर खेल रहे थे, उन्हें डकार आ गई। बुढ़िया ने गणेस्या को आवाज लगाई और कहा कि– अब भोग लगा ले। तो उसने कहा– मेरा पेट तो भर गया। तू अभी घर में तो आया ही नहीं? तेरी बहू ने मेरा नाम लेकर भोग लगा लिया। पूरा गाँव भोजन कर गया, लेकिन खीर का कढ़ाहा भी खाली नहीं हुआ। बुढ़िया ने गणेस्या से कहा– अब मैं इसका क्या करूँ? कुछ नहीं करना, इस सबको ढँक दे। इतना कहकर वह तो चला गया। बुढ़िया उसको पहुँचाकर अन्दर गई और देखा तो खीर के सारे पात्र सोने–चाँदी, हीरे–जवाहरात के हो गये। बुढ़िया ने बाहर आकर गणपतिजी को आवाज लगाई– ए गणेस्या, ए गणेस्या! इधर आ। तू कौन है? मैं तो गणेश हूँ। अरे! तू कोई मानव नहीं है। गणपतिजी बोले– हाँ, माँ! मैं गणपति महाराज हूँ। बुढ़िया ने प्रणाम कर बोला कि– मुझे आपका व्रत देकर जाओ, महाराज। गणपतिजी ने अपने पीताम्बर में से इक्कीस तार निकालकर दे दिये और कहा– इसमें इक्कीस गठान लगाना। इक्कीस दिन तक व्रत करना, सवा सेर के लड्डू बनाना, उसमें से खेलते हुए बालक को देना, फिर खुद खाना। इतना कहकर गणपति अन्तर्ध्यान हो गये।

सीतला माता व्रत कथा

सील ओर पील दो बेना थी। सीतला माता को दन थो। दोई बेना गांम में भिख मांगवा ने निकली। पेला पेल राजा का घरे गई। राजा ए घोड़ा की दाल बफी री थी। वाज गरम–गरम दई दीदी। दोई बेना का हाथ में छाला पड़ीग्या। आखा गाम का लोंगा ए गरम–गरम दीदो। एक इज घरे ठण्ड़ो मिल्यो, उ घर एक डोकरी को थो। डोकरी ए वणी की बऊ ने कीदो के अपणा ए जो ठण्डो वणायो है, ऊज मेल जे। वणा का हाथ में देवा ती वणा के ठण्डक पड़ीगी। दोई बेना ए डोकरी ने आशीर्वाद दिदा के म्हने ठारी ऐसी थने ठार जो।

दोई बेना एक डोकरी ने किहो के थोड़ा दन बाद अणी गांम में लाय लागवा वारी है, तु ऐसो करजे के कुमार का घर ती करवो लाजे ने वणी में पाणी भरजे, ओर घर का एरे मेरे पाणी

की कार बांदजे। वणी ती थारा घर को बाल भी वांको नी वेगा। पुरा गांम में लाय लागी पण वणी का घर को वाल भी वांको नी वियो। वणी का घर में आग नी लागवा ती लोग अचम्भा में पड़ीग्या। के इ अणी डोकरी का घरे आग क्यों नी लागी। गांम का लोग राजा ने सिकायत करी, के डोकरी का घरे आग क्यों नी लागी। राजा ए डोकरी नें बुलवई। दरबार में डोकरी अई। राजा ए किदो के डोकरी तू कूण है डाकण के भूतणी? दरबार? मूं तो मानवण हूं। कई नी जाणू। म्हने तो कई मालम नी थी। सातम के दन दो बेना डोकरी का रूप में मांगवा ने अई थी। मे वणा ने ठण्डो हीरो दीदो ने वणा ए म्हने अशीर्वाद दीदो के म्हने ठारी असी थने ठार जो। गांम का लोगां ए तो म्हारा हाथ में छाला करी दीदा। वी दोई अतरो कई ने एक खेजड़ी का नीचे जई ने बईगी। राजा ने गांम का लोग ए ढूड़ी ने डोकरीयाँ के पगे पड़वा लागा, ने माफी माँगी। डोकरीयाँ प्रसन्न वईगी। ने वणाए झट माताजी को रूप कर्‌यो ने सब लोंगा ने किदो के होली बाद जो सातम आवे। वणी दन सब गांम में ठण्डो वणाजो ने ठण्डो खाजो। अतरो कई ने दोई बेना अलप-झलप वईगी।

भावार्थ

सील और पील दो बहनें थीं। सीतला सप्तमी का दिन था। दोनों बहनें गाँव में भीख माँगने निकलीं। सबसे पहले राजा के यहाँ गईं। राजा के यहाँ घोड़े की दाल उबल रही थी, वही गरम-गरम दे दी। दोनों बहनों के हाथ में छाले पड़ गये। पूरे गाँव के लोगों ने गरम-गरम दिया। एक ही घर ऐसा था, जहाँ से उनको ठण्डा भोजन मिला। वह घर एक बुढ़िया का था। बुढ़िया ने अपनी बहू से कहा कि- अपनों ने जो भी ठण्डा बनाया है, वह इन्हें दे दो। बहू ने उनके हाथों रख दिया, उससे उनको ठण्डक पहुँची। तब दोनों बहनों ने बुढ़िया को आशीर्वाद दिया और कहा कि- थोड़े दिनों के बाद इस गाँव में आग लगने वाली है, तुम ऐसा करना कि कुम्हार के यहाँ से करवा लाना, उसमें पानी भरना और घर के आसपास करवे से पानी की डोर बाँधना। उससे तुम्हारे घर का बाल भी बाँका नहीं होगा।

पूरे गाँव में आग लगी, पर बुढ़िया के घर को आँच भी नहीं आई। उसके घर में आग नहीं लगने से लोग आश्चर्यचकित हो गये कि इस बुढ़िया के घर आग क्यों नहीं लगी? गाँव के लोगों ने राजा से शिकायत की। राजा ने बुढ़िया को बुलवाया। बुढ़िया दरबार में आई। राजा ने कहा कि- बुढ़िया! तू कौन है? डाकिन या भूतनी? बुढ़िया ने कहा- मैं तो मानवी हूँ, कुछ नहीं जानती। मुझे तो कुछ मालूम नहीं था। सप्तमी के दिन दो बहनें बुढ़िया के रूप में भीख माँगने आई थीं। मैंने उनको ठण्डा सीला दिया और उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया कि मुझे ठण्डा किया, ऐसा भगवान तुम्हें करे। गाँव के लोगों ने तो हमारे हाथों में छाले कर दिये। वह दोनों इतना कहकर एक खेजड़ी के नीचे जाकर बैठ गईं। राजा और गाँव के लोगों ने बुढ़िया को ढूँढकर दोनों

को पाँव पड़ने और माफी माँगी। दोनों बहनें प्रसन्न हो गईं और उन्होंने झट माताजी का रूप धारण किया और सब लोगों को कहा कि- होली के बाद जो सप्तमी आती है, उस दिन सब गाँव के लोग ठण्डा बनाना और ठण्डा खाना। इतना कहकर दोनों बहनें अन्तर्ध्यान हो गईं।

दसामाता व्रत कथा

एक राजा-राणी था। दसा माता को दन थो। गाम की सब लुगायां दसा माता की पुजा करी री थी। तो दासी बोली के राणीसा मे भी दसा माता पूजवा ने जइ री हूँ। तो राणीसा बोल्या के- दासी! म्हारो भी डोरो पूजी ने आवजे। दासी ए राणी को डोरो पूजयो ने लई ने दइ दिदो। राणी ए दसा माता को डोरो गरा में बान्ध्यो। राजा-राणी जीमण करवा ने बैठा। तो राजा, राणी ने देखीने बोल्यो- राणी! अतरो गेणा गाठा ती आप आखा पीरा वई रिया। तो फेर आप ए यो डोरो गरा मे क्यों बान्ध्यो? तो राणी बोल्या के ये तो दसा माता को डोरो है। आज में दसा माता पूजी। राजा ने घुस्सो आयो, राणी का गला से डोरो तोडी ने जलइ दीदो। राणी ए झट उ डोरो तोकी ने पाणी में घोरी ने पी गया। अभे राजा का घर में अवदसा आवा लागी। अन-धन लाव लछमी सब बड्लावा लागीग्या, मेल खण्डीत वेवा लागीग्या, नोकर-चाकर दास्यां सब छोड़ी ने जाता रिया। राजा-राणी का दन लिकारना मुस्किल वइग्या। राणी बोल्या अभे अपणे अठे नी रइ सका। परदेस चाला। देस की चोरी ने परदेस की भीख। राजा-राणी अपणो देस छोड़ी ने परदेस निकलीग्या। चालता-चालता एक वगीचो आयो बगीचा का माली ने किदो, भई में एक रात रुकी जावा, माली ए किदो रूकी जाओ। राजा की अवदसा वेवा के कारण वगीचो आखो हुकई ग्यो। राजा तो हवेरे उठी ने चलया ग्या। माली देखी ने बोल्यो- इ ऐसा कुण आया था जो म्हारो वगीचो आखो हुकई ग्यो। आगे चाल्या तो कुम्हार को घर आयो, वठे रात रुकया। कुमार का घरे वणी दन निमाड़ो पाकीरियो थो। राजा-राणी हवेरे उठी ने चल्या ग्या। कुमार हवेरे उठी ने देखे तो वणी को निमाड़ो काचो रइग्यो। कुमार देखी ने बोल्यो के इ कजन कुण ऐसा पग फेरा का आया तो म्हारो निमाड़ो काचो रइग्यो। राजा-राणी आगे चाल्या तो राजा बोल्या के अठे म्हारा भायला को घर है, आप अठे रुकी जांवा। राणी बोल्या के- देखो राजा! अपणी अवदसा चाली री है कठे भी नी चाला, राजा नी मान्या ने भायला का घरे ग्या। भायळो घणो राजी वियो। राजा-राणी ने किदो के आप अस्नान करो, ने फेर रोटी परोसां। रोटी जीमवा ने जणी कमरा में बैठा या वठे वणी भायली को हार खुंटी पे लटकी दिदो थो। उ हार मोयणी निगलीगी। राजा-राणी तो जीमी ने चाल्या। भायला की वऊ बोली के थांका भायला आया था। वी म्हारो हार चोरई ने लईग्या। भायलो बोलो- म्हारा भई भोजई असा नी है। वणा की तो अवदसा असी अइगी है अणी ती थें ऐसो कइ र्‌या हो। फेर आगे चाल्या राजा की बेन को गांम अयो, जइ ने तराव कनारे बइग्या। तराव पे पाणी भरती लुगायां का हाते खबर पोंचई के म्हारी बेन ने जई ने किजो के थांका भई भोजई आया हे,

ने वी तराव कनारे बैठा है। बेन वणा लुगायां ने पुछे के कसी दसा मे आया है। फाटा-टूटा कपड़ा पेरवा ने हे ने आखा कुमलई ग्या है। वणा ने जई ने किजो के आगे का बारणा ती नी आवे ने पछाड़ी का बारणा ती आवे। भई भोजई पछाडी ती आया। बेन ए वदई ने खावा ने कांदा रोटी खावा ने दिदा। भई ए कांदा रोटी लई ने पछाड़ी के बारणे गाड़ दीदा। फेर आगे चाल्या, चालता-चालता राणी थाकीग्या राजा ने किदो के अभे तो घणी भूख लागी री है, राणी बोल्यो उ हामे गाम अईग्यो अभे ऐसो करा के मै तो गाम में ती भीख माँगी ने लऊँ ने आप जाओ तो तराव में ती मच्छी लावजो। राणी गांम नें ती भीख मांगी ने लाया, राजा तराव मे ती मच्छी पकड़ी ने लाया। आंधी दुंदवारो चालवा ती मछली राजा का हाथ मे ती उड़ी-उड़ी ने तराव में जातीरी, ने राणी का हाथ में ती पत्तल चील झपटी ने लइगी। राजा-राणी फेर एक जगा मिल्या। राजा बोल्या के मे मच्छी पकड़ी ने लायो थो आंधी चालवा ती उड़ी ने तराव में जाती रीं, राणी बोल्या मे पत्तल लई ने अई थी तो वा चील झपटीगी। राणी बोल्या अपणी तो दसा ज खराब है। आगे चाल्या तो राणीसा को पीयर आयो। बठे गाम में जइने तराव कनारे बेठीग्या। राणी ए पाणी भरती लुंगाया का हांते मेल में खबर पोंचई के आपके एक दासी की जरोत हे भई? और यो भी कीजो के मे चार काम नी करूँगा। गू-मूत नी धोऊगाँ, बिछाणा नी करूगाँ, ऐंठवाड़ा बर्तन नी माजुँगा, ने कपड़ा नी धोऊगा। लुगायां ए मेल मे जईने कीदो तो राजीसा बोल्या के असी कुण हे बाई, वणी ने कीजो तो अई जाय। म्हाके तो नरो इ काम है। राणी अपणो नाम पतो बदली ने काम करवा लागा। एक दन राणीसा ए कीदो के दासी थे म्हारो माथो देखी दो। दासी ए राणीसा को माथो देख्यो तो राणीसा बोल्या के यो हाथ तो असो लागे जणे म्हारी दमेली को वे। वा असोज माथा में हाथ फेरी थी। अतरा म वणी दासी वण्या राणी का आंख में ती आंसू पड़वा लागा। काम करता-करता बारा मइना पुरा विया। दसा माता को दन आयो। दासी (दमेली) बोली के म्हारे आज दसा माता को वरत हे, मैं आज आपका अठे नी खऊँगा। म्हने तो बाजू दइ दो तो मै बगीचा में करी खऊँगा। दमेली (दासी) न्हई धोई ने दसा माता पूजी : तो दसा माता परसन विया। दमेली ए जई ने राणीसा, ने किदो के म्हारो माथो गुंथी दो। राणीसा माथो गुंथवा लागा तो गुंथता-गुंथता आँखा में आंसू अइग्या ने केवा लागा थारा माथा में तो पदम है। म्हारे भी एक बेटी थी, वणी को नाम दमयंती थो, ने वणी का माथा में भी पद्म थो। झट वा बेटी माँ के पगे पड़ी ने किदो के मूंज आपकी बेटी दमयंती हूँ। माँ-बेटी दोई गले मिली। माँ बोली- बेटी! थें अणी रूप में काम क्यों कर्‌यो? तो बेटी केवा लागी म्हारी अवदसा ज अईगी थी। अणी ती ऐसो काम कर्‌यो। जमइसा कठे है? एक तेली घरे काम करे है। माँ देखी ने बड़ी दुखी वी। जमईसा ने तेली घर ती बुलाया, ने दोई जणा ने हाथी-घोड़ा, लाव-लश्कर दई ने वदा कर्‌या। थोड़ा आगे चाल्या ने वीज मच्छ ने पत्तल मिलया। तो राजा केवा लागा के अपणी अवदसा ज खराव थी तो इ सब उड़ीग्या था। ने दसा हऊ वेवा ती इ सब पाछा अइग्या ने सोना-चाँदी का वइग्या। फेर आगे चाल्या तो बेन का गाम आयो। बेन ने खबर दीदी। तो बेन बोली के कणी वेष में आया। तो दासी बोली के वी तो

पुरा लवाजया ती आया है। वणा ने कई दो को आगे का बारणा ती अई जाय। तो भई भोजई बोल्या के नी मे तो पाछे का बारणां ती ज आवागा। जणी रस्ता ती पेला आया था। बेन ए भई भोजई ने बदाया। भई ए वी ज कांदा-रोटी जो बारणा में गाड़्या था वी लिकाड़्या ने बेन ने वदई में दई दीदा, जो सोना-चाँदी का वईग्या था। बेन ए किदो भई एक दो दन रुको। भई एक ना कई दीदो के आगे भी काम है। आगे चाल्या तो उज कुमार को घर आयो, राजा-राणी बोल्या के मे रात रुकागा तो कुमार की लुगई ए किदो के नी भई पेला भी थें आया था। तो म्हाको निमाड़ो काचो रइग्यो थो। राणी बोल्या पेला तो म्हाकी अवदसा थी। अभे तो म्हाकी दसा पाछी अईगी है। फेर वठे रात रुकया। कुमार को निमाड़ो पाकी रियो थो हवेरे उठी ने कुमार देखे तो वणा का निमाड़ा मे बर्तन सोना-चाँदी का वईग्या ने झगामग-झगामग करे। फेर आगे चाल्या तो उज वगीचो आयो। माली ए ओरखी लिदा ने किदो के मैं थाने अठे रात नी रुकवा दूंगा म्हारो हरो-भरो वगीचो पेला भी हुकई ग्यो थो। पेला तो म्हाकी अवदसा थी। माली बोल्यो के वा भई रुकी जाओ। वगीचा में रात रिया। सवेरे उठी ने माली देखे तो उज वगीचो हरो-भरो वईग्यो। ने फेर राजा-राणी अपणा नगर में अइग्या। नगर का लोग खुब परसन वईग्या। राजा-राणी ने वदई ने मेल में पोचाया, ने केवा लागा के आपका जाना ही आखा नगर में हलातोल मचीगी थी। ने आपका आवा ती आखा नगर वासी में हरस नी माइ रियो। हे दसा माता! पेळा राजा-राणी ने इटा ऐसा कोने कीमत टूट जो, ने बाद में टूटा ऐसा सकल ने टूटजो।

भावार्थ

एक राजा-रानी थे। दशा माता का दिन था। गाँव की सब औरतें दशा माता का पूजन कर रही थीं, तो उनकी दासी ने कहा कि- रानी साहिबा! मैं भी दशा माता का पूजन करने जा रही हूँ। तब रानी साहिबा बोलीं कि- मेरा भी धागा पूजन करके लाना। दासी ने रानी का धागा पूजन करके लाकर दे दिया। रानी साहिबा ने दशा माता का धागा गले में बाँध लिया। जब राजा-रानी भोजन करने बैठे, तब राजा ने रानी को देखकर कहा कि- आपके पास इतने आभूषण हैं कि आप पूरे केसरिया हो रहे हो, फिर आपने ये धागा गले में क्यों बाँधा? तब रानी ने कहा कि- ये धागा दशा माता का है। आज मैंने दशा माता की पूजा की है। राजा को गुस्सा आया तो रानी के गले से धागा तोड़कर जला दिया। रानी ने जल्दी से वह धागा उठाकर पानी में घोलकर पी लिया।

अब राजा के बुरे दिन आने लगे। अन्न, धन, लक्ष्मी सब चौपट हो गये। महल खण्डित होने लग गये। नौकर-चाकर दासियाँ सब छोड़कर चले गये। राजा-रानी के दिन निकलने मुश्किल हो गये। तब रानी बोली- अब अपन यहाँ नहीं रह सकते। परदेश चलें। 'देश की चोरी और परदेश की भीख'। राजा-रानी अपना देश छोड़कर परदेश को चले। चलते-चलते रास्ते में एक बगीचा आया, बगीचे के माली को कहा- भाई! हम एक रात यहाँ रुक जाएँ? माली ने

कहा- रुक जाओ। राजा की दशा खराब होने के कारण बगीचा पूरा सूख गया। आगे चले तो कुम्हार का घर आया, उसके यहाँ रात रुके। उस दिन कुम्हार के यहाँ बर्तनों का निमाड़ा पक रहा था। राजा-रानी सुबह उठकर चले गये। तब कुम्हार ने उठकर देखा तो उसका निमाड़ा कच्चा ही रह गया। कुम्हार देखकर बोला कि- ये पता नहीं, कौन लोग ऐसे थे, जो इनके आते ही हमारा पूरे बर्तनों का निमाड़ा कच्चा रह गया। राजा-रानी फिर आगे चले, तब राजा बोले कि- यहाँ मेरे एक मित्र का घर है, आज यहाँ रुक जाते हैं। तब रानी ने कहा- देखो राजा! अपने तो बुरे दिन चल रहे हैं, कहीं भी नहीं रुकेंगे। राजा नहीं माने और मित्र के यहाँ चले गये। मित्र बहुत खुश हुआ और उनको कहा कि- आप लोग स्नान कर लो, फिर भोजन करें। भोजन करने राजा-रानी जिस कमरे में बैठे थे, उस कमरे में एक खूँटी पर मित्र की पत्नी का हार टँगा हुआ था, उस हार को मोरनी निगल गयी। राजा-रानी तो भोजन करके चले गये। तब मित्र की पत्नी ने कहा कि- आपके कौन मित्र आये थे, वो मेरा हार चुराकर ले गये। मित्र ने कहा- मेरे भाई-भाभी ऐसे नहीं हैं। उनके तो बुरे दिन चल रहे हैं, इसलिए तुम ऐसा कह रही हो।

आगे चले तो बहन का गाँव आया। तालाब के किनारे समाचार पहुँचाया कि मेरी बहन को जाकर कह देना कि तुम्हारे भाई-भौजाई आये हैं और वे तालाब किनारे बैठे हैं। बहन उन औरतों से पूछने लगी कि कैसी दशा से आए हैं? उन्होंने कहा कि फटे-पुराने कपड़े पहने को हैं और पूरे कुम्हला गये हैं। उनको जाकर कहना कि पीछे के दरवाजे से आयें, आगे के दरवाजे से नहीं आयें। भाई-भौजाई पीछे के दरवाजे से आये। बहन ने उनका स्वागत किया और खाने के लिए प्याज और रोटी दे दीये। भाई-भौजाई ने प्याज-रोटी लेकर उसके पीछे के दरवाजे पर गाड़ दिये। फिर आगे चले, चलते-चलते रानी थक गई।

राजा को कहा कि- अब तो बहुत भूख लग रही है। राजा बोले कि वह सामने गाँव दिखाई दे रहा है। तब रानी ने कहा कि मैं तो इस गाँव में से भीख माँगकर लाती हूँ और आप तालाब में से मछली पकड़कर लाना। रानी गाँव में से भीख माँगकर लाई, राजा तालाब में से मछली पकड़कर लाये। आँधी-तूफान चलने से मछली राजा के हाथ में से उड़कर तालाब में चली गई और रानी के हाथ में से खाने की पत्तल चील झपटकर ले गई। राजा-रानी फिर एक जगह मिले। राजा ने कहा- मैं मछली पकड़कर लाया था, आँधी चलने से वह सब उड़कर तालाब में चली गईं, तब रानी बोली कि- मैं भी पत्तल लाई थी, वह चील झपटकर ले गई। रानी ने कहा- अपना तो भाग्य ही खराब है। फिर आगे चले तो रानी का मायका आया।

वहाँ गाँव में जाकर तालाब के किनारे बैठ गये। रानी ने पानी भरती हुई औरतों के साथ महल में समाचार पहुँचाया कि आपको एक दासी की जरूरत है क्या? और ये भी कहना कि मैं चार काम नहीं करूँगी- मल-मूत्र नहीं धोऊँगी, बिस्तर नहीं करूँगी, जूठे बर्तन साफ नहीं

करूँगी और कपड़े नहीं धोऊँगी। औरतों ने महल में जाकर कहा तो रानी बोली– ऐसी कौन है! उसे कहना कि आ जाए। हमारे यहाँ तो बहुत सारा काम है। रानी अपना नाम–पता बदलकर वहाँ काम करने ही लग गई। एक दिन रानी साहब ने कहा– दासी! तुम मेरे सिर में जुएँ देख दो। दासी ने रानी का सिर देखा, तो रानी साहिबा ने कहा कि ये हाथ तो ऐसा लग रहा है जैसे मेरी दमयन्ती के हों? वह ऐसे ही सिर में हाथ से सहलाती है। इतनी रानी की बात सुनकर दासी बनी रानी की आँखों में से आँसू गिरने लगे। ऐसे काम करते–करते एक साल हो गया। दशा माता का दिन आया।

दासी ने रानी से कहा– आज दशा माता का व्रत है, मैं आज आपके यहाँ भोजन नहीं करूँगी। मुझे तो आप अलग से आटा–दाल दे दो, तो मैं बगीचे में बनाकर खा लूँगी। दासी बनी रानी ने नहा–धोकर दशा माता का पूजन किया, तब दशा माता बहुत प्रसन्न हुई। फिर दासी बनी (दमयन्ती) रानी ने अपनी माँ (रानी साहब) से कहा कि मेरी चोटी बना दो। रानी साहब चोटी बाँधने लगीं तो बाँधते–बाँधते उनकी आँखों में आँसू आ गये और कहने लगे कि तुम्हारे सिर में तो पद्म है? मेरी भी एक बेटी थी, उसका नाम दमयन्ती था और उसके सिर में भी पद्म था। जल्दी ही वह बेटी उस माँ के पाँव छूने लगी और कहा कि– मैं ही आपकी बेटी दमयन्ती हूँ। माँ–बेटी दोनों गले मिलीं। माँ कहने लगी– बेटी! तूने इस रूप में काम क्यों किया? मेरी तो किस्मत ही खराब थी। मेरे बुरे दिन आ गये थे। इसलिए ही ऐसा काम किया। माँ ने पूछा– मेरे दामाद कहाँ हैं? वह तो एक तेली के यहाँ काम कर रहे हैं। माँ बेटी की ऐसी दशा देखकर बड़ी दुखी हुई। दामाद को तेली के घर से बुलवाया। दोनों बेटी–दामाद को स्नान करवाया, नये वस्त्र पहनाये। हाथी–घोड़े, पालकी, पूरे लवाजमे सहित बेटी–दामाद (राजा नल और दमयन्ती) को विदा किया।

चलते–चलते वही मछली और पत्तल मिली। तब राजा बोले कि अपनी दशा खराब थी तब ये सब उड़ गये थे, अब अच्छे दिन आ गये तो ये सब सोने–चाँदी के बनकर सामने आ गये। आगे चले तो बहन का गाँव आया, बहन को सूचना पहुँचाई। बहन ने पूछा कि कौन–से वेश में आए हैं? तब दासी बोली कि– वह तो पूरे लवाजमे सहित आए हैं। उनको कह दो कि आगे के दरवाजे से आ जाएँ। भाई–भौजाई ने कहा कि हम तो पीछे की दरवाजे से ही आएँगे, जिस रास्ते से पहले आए थे। बहन ने भाई–भौजाई का स्वागत–सत्कार किया। भाई ने उनके स्वागत में वही प्याज और रोटी, जो पीछे के दरवाजे पर गाड़े थे, जो सोने–चाँदी के हो गये थे और भेंट स्वरूप बहन को विदाई में दे दिये। बहन ने कहा– भाई! एक–दो दिन रुक जाओ। भाई ने मना कर दिया कि आगे भी काम है। फिर आगे चले तो वही कुम्हार का घर आया।

राजा–रानी ने कहा कि– भाई! हम यहाँ रात रुकेंगे? तब कुम्हार की पत्नी बोली– नहीं, भाई! पहले भी तुम आए थे तो मेरा निमाड़ा (जिसमें मिट्टी के बर्तन पकाये जाते हैं) कच्चा रह गया था। रानी ने कहा– पहले तो हमारे बुरे दिन थे, अब तो हमारे अच्छे दिन आ गये हैं। फिर

वहाँ रात रुके। कुम्हार का निमाड़ा पक रहा था। सुबह उठकर कुम्हार ने देखा कि उसके निमाड़े के बर्तन सब सोने-चाँदी के हो गये और झगमग-झगमग करने लगे। फिर आगे चले तो वही बगीचा आया। माली ने उनको पहचान लिया और कहा कि- मैं तुम्हें यहाँ रात नहीं रुकने दूँगा। मेरा हरा-भरा बगीचा पहले भी सूख गया था। रानी बोली- पहले हमारी दशा खराब थी। माली ने कहा- अच्छा, भाई! रुक जाओ। राजा-रानी बगीचे में रात रुके और सुबह से पहले ही चले गये। सुबह माली उठा और उसके बगीचे को देखने लगा, बगीचा पूरा हरा-भरा पहले जैसा ही हो गया। फिर राजा-रानी अपने नगर में आये।

नगर की जनता बहुत प्रसन्न हो गई। राजा-रानी का अभिनन्दन करके उनके महल में पहुँचाया। जनता कहने लगी कि- आपके जाने से पूरे नगर में हाहाकार मच गई थी। आपके आगमन से पूरे नगरवासियों में हर्ष की लहर दौड़ गई।

गणगोर तीज व्रत कथा

पार्वतीजी के तीज को वरत थो। पार्वतीजी शंकर भगवान ने बोल्या के म्हारे तीज को वरत है। आप म्हारे पीयर चालो। शंकर भगवान ए ना कई दीदो। आप वरत अठे ज कर लो। पार्वतीजी ए पीयर जावा की जीद् करी ने भगवान ने पीयर लईग्या। घरे जई ने तीज की पूजा करी, ने भगवान ने जीमवा ने बैठाया। भगवान माँ-बेटी की परिक्षा लेवा ने जो वणयो थको थो उ सब जीमीग्या। पछाड़ी दोई माँ-बेटी वाते कई नी रेवा दीदो। पार्वतीजी ए जो तीज माता पे फल चढ़्या थका था वी खई ने पाणी पी ली दो। ने भगवान शंकर का हाते अपणा घरे अइग्या। शंकर भगवान पार्वतीजी ने पूछे- आप ए कई-कई भोजन कर्‌यो? पार्वतीजी बोल्या के जो आप ए कर्‌यो उ ज में कर्‌यो। भगवान का दो-तीन दफे पूछवा पे भी पार्वतीजी ए नी वताड़्यो। फेर पार्वतीजी हुईग्या। शंकर भगवान ए पार्वतीजी का पेट की ढांकणी खोली ने वी फल लिकार लिदा। ने फेर पेट को ढांकणो लगई दीदो। थोड़ी देर बाद पार्वतीजी की नींद खुली। फेर शंकर भगवान पार्वतीजी ने पूछे- पीयर मे घणो ज माल खादो तो नींद घणी गेरी अई। फेर भी पार्वतीजी ए पीयर की लाज राखवा ने कई भी वात नी वतई। शंकर भगवान दाँत काड़वा लागा और वी फल पार्वतीजी का हामे मेल दीदा। पार्वतीजी देखी ने दंग रइग्या और भगवान ती बोल्या- के आज का बाद कोई भी पुरुष अपनी पत्नी को पेट खोली ने नी देखेगा। तो शंकर भगवान बोल्या- के लुगाया कदी भी थाली परोसवा में इज भांत नी करेगा।

भावार्थ

पार्वतीजी का तीज का व्रत था। पार्वतीजी शंकर भगवान से बोली- मुझे तीज का व्रत है, आप मेरे मायके चलो। शंकर भगवान ने मना कर दिया और कहा- आप यह व्रत यहाँ ही कर

लो। पार्वतीजी ने मायके जाने की जिद्द कर ली और भगवान शंकर को अपने मायके ले गये। घर पर जाकर तीज की पूजा की और भगवान को भोजन कराया। भगवान शंकर माँ–बेटी की परीक्षा लेने लगे और जो उनके यहाँ भोजन बना था, वह सब खा गये। माँ–बेटी के लिए कुछ भी नहीं बचाया। पार्वतीजी ने जो तीज माता पर फल चढ़ाये थे, वही खाकर पानी पी लिया और भगवान शंकर के साथ अपने घर आ गई।

शंकर भगवान ने पार्वती से पूछा– आपने क्या–क्या भोजन किया? पार्वतीजी ने कहा– जो भोजन आपने किया, वही मैंने किया। भगवान के दो–तीन बार पूछने पर भी पार्वतीजी ने नहीं बताया, फिर पार्वतीजी सो गई। शंकर भगवान ने पार्वतीजी के पेट की नाभि खोली और वह फल निकाल लिये और फिर पेट की नाभि लगा दी। थोड़ी देर बाद पार्वतीजी की नींद खुली। शंकर भगवान ने पार्वतीजी से पूछा– मायके का बहुत सारा माल खाया तो इतनी गहरी नींद आई? फिर भी पार्वतीजी ने अपने मायके की लाज रखने के लिए भगवान को कुछ नहीं बताया। शंकर भगवान हँसने लगे और वह फल पार्वतीजी के सामने रख दिये। पार्वतीजी देखकर आश्चर्यचकित हो गई और भगवान से बोली कि– आज के बाद कोई भी पुरुष अपनी पत्नी का पेट खोलकर नहीं देखेगा। तब भगवान शंकर ने कहा कि– औरतें कभी भी भोजन परोसने में भेदभाव नहीं करेंगी।

तीज व्रत कथा

तीज को दन थो। शंकर पार्वती से बोल्या– देवी! अभी तीज–तेवार का दन है। अभी थें अठे ज रो। मैं धरती पे घुमी फरी ने अऊँ। पार्वती बोली– भगवन! आज तो मूं भी हाते चालुँगा। शंकर भगवान बोल्या– देवी! थे दान दो तो पाछे फरी ने नी देखो। अणी वाते मूं एकलो ज घुमी फरी ने अबी अऊँ। पार्वती जी बोल्या– भगवन आज तो देवी ने देवता कोई भी पूजन थे। मूं तो आपका हांते चालूँगा। पार्वतीजी हट पे चढ़ी ग्या। तो शंकर ग्या। तो शंकर भगवान वणाने नन्दी पे बैठई ने घुमवा ने लिकरिया। धरती पे अई ने पार्वती जी ए देख्यो के चारी वरण की लुगायाँ न्हाई ने माथा चोंटी करया, मेंदी लगई, महावर लगई, गेणा गाठा पेर्‌या, हऊ सिणगार करी ने तीज पूजवा की तैयारी करी री थी।

अबे वणा ने मालम पड़्यो के शंकर ने पार्वती धरती पे आया है। तो करसाण की लुगाया झट हाथ–पग धोई ने वणा का हामे पोंचीगी। पार्वतीजी ए वणा ने झट कपड़ा–लत्ता को दान कर्‌यो। अखण्ड सोभाग्य रेवा को आशीर्वाद दीदो। अबे बारी आई राजपूत लुगायां की माता पार्वती ए वणा ने आशीर्वाद दीदो ने कीदो के थांका बेटा, पोता दोयता, भाणेज सब देश की रक्षा करे, अखण्ड सौभाग्य वे, जो बेटा शूर वीर वे वी देश की रक्षा करे। अबे बाण्या की लुगायाँ की

वारी आई। वणाए आवा में देर कर दीदी। पार्वतीजी बोल्या– देर वईगी। वी लुगायां बोली– न्हाई–धोई ने आया। झट माँ–पार्वती ए वणाने गेणा गांठा दिदा ने आशीर्वाद दीदो के थाको वेपार दन दूणों ने रात चोगुणों बड़े। ने थांका घर में लछमी सदा परसण रे। अतरा में गाम आड़ी ती एक लुगायां को झुण्ड आयो। भगवान शंकर पार्वतीजी आड़ी देखी ने दाँत काड़ी ने बोल्या– देखो पार्वती! थांकी बामणीयाँ तो छुवा छूत घणी माने, चोक चतरई घणी करे, देखो दफोर कर दीदी। अबे थांका कने कई है? जो अणाने दोगा। माता पार्वती बोल्या– देखुँ कई है। बठे ज एक कने पड़ी पूजा की थाली पे वणा की नजर गी। झट वणी थाली में ती कंकु लीदो ने घोरी ने बैठीग्या। सब लुगायां ने पूजा की उतावर थी। देवी पार्वती बोल्या– देर क्यों करी? हगरो सुवाग बटी ग्यो जदी आया। कई करा माता न्हाया–धोया, चोक चतरई करी, भगवान को भोग वणायो, जदी आया। अणी मे देर वईगी। वणाने झट माता पार्वती ए हल्दी कंकु का छांटा ल्हाक्या, ने आशीर्वाद दीदो। कें थांका बेटा पोता धरम पे चाले, कथा वारता करे, ने खड़ियो लई मे मांगवा ने जाय, सबने विद्या को दान दे अखण्ड सौभाग्य रेवा को वरदान दीदो। बामण माँगणो छोड़दे पण खाणो नी छोड़े। आज भी बामण जीमवा ती ज परसन वे।

भावार्थ

तीज का दिन था। शंकर पार्वती से बोले– देवी! अभी तीज–त्योहार के दिन हैं। अभी तुम यहीं पर रहो। मैं पृथ्वी पर चक्कर लगाकर आता हूँ। पार्वतीजी बोली– भगवन! आज तो कुछ भी हो जाये, मैं भी साथ चलूँगी। शंकर भगवान बोले– देवी! तुम दान–पुण्य करती हो तो पीछे मुड़कर नहीं देखती हो। इसलिए मैं अकेला ही घूमकर आता हूँ। पार्वतीजी बोली– भगवन! आज तो किसी भी देवी–देवता का पूजन हो, मैं तो आपके साथ चलूँगी। पार्वतीजी ने तो हठ ही पकड़ ली। शंकर भगवान उनको नंदी पर बैठाकर पृथ्वी पर आ गये।

पृथ्वी पर आकर पार्वतीजी ने देखा कि चारों वर्ण की औरतों नहा–धोकर, चोटी गूँथी, मेहंदी लगाई, महावर लगाई, अच्छे कपड़े पहने, गहने पहने, अच्छा–पूरा श्रृँगार करके तीज पूजन की तैयारी कर रही थीं। उनको मालूम पड़ा कि शंकर–पार्वती इस मृत्युलोक में आये हैं तो किसान की औरतों ने झट हाथ–मुँह धोये और उनके सामने पहुँच गयीं। पार्वतीजी ने उनको कपड़े दान में दिये और अखण्ड सौभाग्यवती का आशीर्वाद दिया। फिर राजपूतों की औरतें आईं, उनको कहा कि तुम्हारे बेटे, पोते, नवासे, भानजे, भतीजे, भाई – सब देश की रक्षा करें, अखण्ड सौभाग्य रहे, जो बेटा शूरवीर हो वह देश की सेवा करे। फिर महाजन की औरतें आईं, उन्होंने आने में देरी कर दी। पार्वती ने कहा– तुमने बहुत देर लगा दी। उन्होंने कहा– नहाकर आ ही रहे हैं। माता पार्वती ने उनको खूब गहने दिये और आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा व्यापार दिन दुगुना और रात चौगुना बढ़ता रहे और तुम्हारे घर में लक्ष्मी सदा प्रसन्न रहे। इतने में गाँव की ओर से औरतों का समूह आया।

भगवान शंकर ने पार्वती की ओर देखा और हँसकर बोले कि- देखो पार्वती! तुम्हारी ब्राह्मणियाँ आई हैं। ये छुआछूत को बहुत मानती हैं। ये सब काम सोले (अप्रस) में रहकर करती हैं, इसलिए इनको दोपहर हो गई है। अब तुम्हारे पास क्या है, जो इनको दोगी? माता पार्वती ने कहा- देखती हूँ क्या है? वहाँ पर पास में रखी पूजा की थाली पर उनकी दृष्टि पड़ी। झट से उन्होंने थाली में से कुमकुम लिया और उसको घोलकर बैठ गई। सब औरतों को पूजा करने की जल्दी थी। पार्वती ने कहा- तुम लोगों ने देर क्यों लगा दी? सब सुहाग बँट गया तब आईं। क्या करें माता! नहाये-धोये, पूजा-पाठ किया, भगवान का भोग बनाया, सबको खिलाया-पिलाया तब आये। इसलिए देर हो गई। उनके ऊपर माता पार्वती ने झट कुमकुम के छींटे डाले और उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम्हारे बेटे, पोते धर्म पर चलें, कथा भागवत में निपुण रहें, खड़िया लेकर माँगने जायें, सबको विद्या का दान दें, शास्त्र के ज्ञाता हों। उन्होंने सबको अखण्ड सौभाग्यवती का आशीर्वाद दिया।

गणगोर व्रत कथा

एक करसाण थो। वणी के एक बेटी थी। बेटी खुब रूपवान और गुणवान थी। वणी का काम सबती अलग था। वा सबकी लाडली थी। वा जो भी काम करती बड़ी हूज-बूज और हमजदारी ती करती। वणी का हात नी खेत में बीज ल्हाकता तो धान का वारा न्यारा वई जाता। जणी घर में जाती वणी घर में अन, धन, लछमी का ठाठ वई जाता। बेटी मोटी वी तो बाप ए कने गाम में हऊ खातो-पीतो घर देखी ने पन्नई दीदी। वणी साल पाणी नी पड़्यो तो काल पड़िग्यो लोग अन-अन ती मोहताज वइग्या। वणी करसाण की बेटी ने आखा गाम का हांते आखा देस की फिकर थी। अणी काल ती कस्तर निपट्यो जाय। वणी बेटी एक संकल्प लीदो। कठे से गऊ लई ने कठे से बाँस की टोपली लाई ने वणी मे गारो भर्‌यो ने गऊ वाया। गऊँ हींचवा ने नरी दूर ती पाणी लाती ने गऊँ हींचती। रोज पूजा करती। गऊँ अंकुर इग्या। थोड़ाक दन में गऊँ लेरावा लागीग्या। वणी का देखा-देखी ऐरे-मेरे की लुगांया पूजा करवा ने आवती पाणी लाई ने जवारा हींचती। संकट तो सब पे थो। जसा-जसा जवारा मोटा वेताग्या। वस्तर-वस्तर असमान वादरा आवता ने पाणी पटकी ने चल्या जाता। करसाण ए खेत जोतणा सूरु कर दीदा। धरती पे हरियाली ज हरियाली वइगी। करसाण की बेटी को संकल्प पूरो वइग्यो। वणी बेटी ए जवारा पाटला सजाया, बाँस और रस्सी से ढाँचो वणायो, गौरी पार्वती का सुवावणो मुखोटो लगायो। हऊ-हऊ गेणा, कपड़ा पेराया। बड़ी उमंग का हाते गौरी की पूजा करी ने आखा गाम की लुगांया नाची-कूदी, गीत गाया और ढोल-ढमाका का हाते वणाने पाणी पाई ने वदा कर्‌या। साल भर का मायते वणी करसाण की बेटी की गोदी हरी-भरी वइगी घर का लोग खुब परसण विया। आखा गाम में अमन चैन वइग्यो। दूद, पूत, अन, धन, लछमी, सोभाग देवा वारी बेटी कोई और नी थी। जवारा जैसी लेरावा वारी गणगोर दूज थी।

भावार्थ

एक किसान था। उसकी एक बेटी थी। बेटी अति रूपवान और गुणवान थी। वह सबकी लाड़ली थी। उसके कार्य सबसे अलग थे। जो भी कार्य करती, सूझबूझ व समझदारी से करती। उसके हाथ से खेत में बीज डालते तो अनाज के भण्डार भर जाते। जिस घर जाती, उस घर में अन्न, धन, लक्ष्मी के ठाठ हो जाते। बेटी बड़ी हुई। पिता ने पास ही गाँव में एक सम्पन्न घर देखकर विवाह कर दिया। उस साल पानी नहीं गिरा तो अकाल पड़ गया। मनुष्य अन्न-अन्न के लिए मोहताज हो गये।

किसान की बेटी को पूरे गाँव के साथ पूरे देश की चिन्ता थी- इस अकाल से कैसे निपटा जाये। बेटी ने संकल्प लिया। कहीं से गेहूँ लाई, एक बाँस की टोकरी में मिट्टी डालकर उसमें गेहूँ बो दिये। उसको सींचने के लिए बहुत दूर से पानी लाती और गेहूँ सींचती। रोज उसकी पूजा करती। गेहूँ अंकुरित हो गये। थोड़े ही दिन में जवारे लहराने लग गये। उसको आसपास की औरतों ने पूजा करते और गेहूँ सींचते हुए देखा तो वहाँ सब औरतें आतीं, पूजा करतीं और गेहूँ सींचकर चली जातीं। संकट तो सब पर था। जैसे-जैसे जवारे बड़े होने लगे, वैसे-वैसे आसमान में बादल मँडराने लगते और पानी बरसा कर चले जाते। ऐसे रोज पूजा के समय पानी गिरता। पृथ्वी पर पानी ही पानी हो गया। खाल, नाले, तालाब, नदी, सब भर गये। कुँए, बावड़ी का पानी बह निकला। किसानों ने खेत जोतने शुरू कर दिये। पृथ्वी पर हरियाली ही हरियाली हो गई। किसान की बेटी का पूजा, संकल्प पूरा हो गया।

उस लड़की ने जवारे पटिये पर सँजोये, बाँस एवं रस्सी का ढाँचा बनाया, देवी गौरी का मुखौटा लगाया। अच्छे-अच्छे गहने-कपड़े पहनाये। बड़ी उमंग और उत्साह के साथ गौरी-पार्वती की पूजा-अर्चना की। पूरे गाँव की औरतें ढोल-ढमाकों के साथ नाचीं-कूदीं, गीत गाये और उनको पानी पिलाकर विदाई दी। एक वर्ष के अन्दर उस किसान की बेटी की गोद हरी-भरी हो गई। घर के लोग बहुत प्रसन्न हुए। इस तरह से पूरे गाँव में अमन-चैन हो गया। दूध, पूत, अन्न, धन, लक्ष्मी, सौभाग्य देने वाली बेटी कोई और नहीं थी - जवारे जैसी लहराने वाली गणगौर ही थी।

आखातीज व्रत कथा

एक गांम में एक वाण्यो रेतो थो। ऊ बड़ो धर्मात्मा थो। खूब दान-पुन करतो थो। विको घणो मोटो परवार थो। आनन्द का ठाठ था नवे दन्द का वासा था। वैसाख मइने आखा तीज को दन आयो गंगा नदी में न्हावा ने ग्यो। न्हई-धोई ने नदी में से कलस भरी ने पाणी लायो। घरे लई ने, गोबर से चार खुणीया लिपी ने वठे गऊँ मेल्या, वणी का उपर कलस मेल्यो, कलस का उपर

खरबुजो मेली ने कलस की पूजा करी। कलस पे सात्यो मांड्यो, लच्छो बांध्यो ने अच्छी तरे ती देवी-देवता की पूजन करी। गोरवाणी वणई, धुप दीदो। ने बामण ने अन्न, चोखा, लाडू, गोर, सोनो-चाँदी, कपड़ा-लत्ता दान कर्‌या। घर वाला खूब वणी पे रीसां बरता। खूब ना केता, पण फेर भी ऊ तो नी मानतो। ने बराबर दान-पुन करतो रेतो थो। घर मे सब ने केतो के आखा तीज का दन कदी नी हुबणो। अन-धन लछमी नी आवे। अतरो धनवान वेतो थको भी वणी ने जरा बी घमण्ड नी थो। यो ज वाण्यो दूसरा जनम में खूब मोटो राजा वण्यो। यो सब वणी के आखा-तीज को परताप थो। अणी दन जरूर दान-पुन करनो चइये।

भावार्थ

गाँव में एक बनिया रहता था। वह बड़ा धर्मात्मा था। खूब दान-पुण्य करता था। उसका परिवार बहुत बड़ा था। वह बहुत धन-धान्य से परिपूर्ण था और बड़े ठाठ-बाट से रहता था। वैशाख के महीने में आखा तीज का दिन आया तो वह गंगा नदी में नहाने गया। नहा-धोकर नदी में से कलश भरकर लाया। जमीन को चौकोर गोबर लीपकर उस पर गेहूँ रखे, गेहूँ के ऊपर कलश को रखा, कलश के ऊपर खरबूजा रखा। फिर कलश का पूजन किया, स्वस्तिक बनाया, लच्छा बाँधा। देवी-देवता का पूजन करके गोरवाणी का धूप लगाया, भोग लगाया, ब्राह्मण को अन्न, चावल, लड्डू, गुड़, सोना-चाँदी, कपड़े आदि दान में दिये। घरवाले सब उससे ईर्ष्या करते थे। खूब मना करते कि इतना दान मत किया करो। पर वह तो किसी की सुनता ही नहीं था। बराबर दान-पुण्य करता रहता था। घर पर सबको कहता कि आखा तीज के दिन, दिन में कभी भी नहीं सोना चाहिये। अन्न, धन, लक्ष्मी नहीं आती है। इतना धनवान होते हुए भी उसे जरा भी घमण्ड नहीं था। यही बनिया दूसरे जन्म में बहुत बड़ा राजा हुआ। यह सब उसके आखा तीज की पूजा, दान-पुण्य का फल था। इसलिए इस दिन जरूर दान-पुण्य करना चाहिये।

बड़सावित्री व्रत कथा

एक राजा थो ने एक राणी थी। वी दोई जंगल में रेता था। बणा के एक बेट्टो थो वणी को नाम सत्यवान थो। राजा-राणी दोई आंदा था। बेटो लकड़ी काटतो ने अपणा माँ-बाप की सेवा करतो।

वणी जंगल का कने एक दूसरो राजा को राज थो। वणी के एक रुपाली बेटी थी। एक दाण एक बामण वणी मेल में पोंची ग्यो। तो राजा ए वणी बामण ने किदो के- म्हारी एक बेटी है। वणी को हाथ देखो तो। बामण ए वणी बेटी को हाथ देख्यो ने किदो के आपकी बेटी का भाग में थोड़ी बाधा है। तो राजा बोल्या के साफ-साफ क्यों नी वताओ। बामण धीरे से बोल्यो के अणी

का व्याव का बारा मईना बाद आपकी बेटी विधवा वई जाएगा। अतरो कई ने बामण चल्यो गो। राजा-राणी सोच में पड़ग्या ने राजा केवा लागा के अपणे सावीमी को व्याव नी करांगा। सावित्री ए वात हुणी तो वणे माँ-बाप ने किदो के मै कुँवारी नी रुंगा। तो राजा ए नोकरां ने किदो के पूरब दिसा में जाजो ने जो भी पेलो आदमी नठो आवे विने पकड़ी ने लियावजो। नोकर लोग जंगल में ग्या, थोड़ी दूर ग्या ने वटने से सत्यवान माथा पे लकड़ी को भारो लइने आतो दिख्यो। राजा का नोकर वणी ने पकड़ी ने राजा कने लियाया। राजा ए सत्यवान ने देखी ने बोल्या के मैं म्हारी बेटी को व्याव आपती करनो चऊँ। तो सत्यवान बोल्यो के मै तो गरीब हूँ। आप राजा हों। सत्यवान की वात राजा ए हुणी। राजा ए सावित्री की वात सत्यवान से करई दीदी। सत्यवन सावित्री से बोलो के म्हारा हाते ब्याव करनो चाव तो म्हारा घरे तो सब काम करनो पड़ेगा। ने आप तो राजकुमारी हो। म्हारा माँ-बाप आदां है। वणा की सेवा करनी पड़ेगा। रोटी-पाणी सबीज काम है। सावित्री सत्यवान की वात पे राजी वइगी। पण वणे भी एक वात कीदी। के आपने भी म्हारा हांते रेणो पड़ेगा। दोई को ब्याव वइग्यो। सावित्री पति ने घरे गई सासु-सुसरा का पगे पड़ी ने आसीर्वाद लीदा। ने सासु-सुसरा की सेवा करवा लागीगी।

जेठ मईना की पूनम आई वणी दन बड़ की पूजा करे। सावित्री सत्यवान का हांते जंगल में लकड़ी काटवा ने गई। सत्यवान लकड़ी काटतो वा भेरी करती। लकड़ी काटता-काटता सत्यवान बोल्यो के आज म्हारो माथो दुखी रियो है। तो सावित्री बोली के थोड़ो वड़ला की छाँया में रिसामो लइलो। सत्यवान आराम करी रिया था ने वणा की एक दम तबेत बगडीगी ने बणा ए वठे ज प्राण छोड़ दिदा। सावित्री तो लकड़ियाँ विणी री थी। अतरामे जमराज आया ने जमपारा में बांदी ने सत्यवान ने लइ जावा लागा। सावित्री ए देख्यो के म्हारा आदमी ने तो इ लई-जई रिया है। वा वणा का पाछे-पाछे चाली पड़ी, ने वणा ने केवा लागी के म्हारा सासू-सुसरा आंदा है। वणा के एक इज बेटो है। वणा को कई वेगा। थे म्हारा खाविंद ने मत लई जाओ। जमराज बोल्या- सावित्री! तू म्हाका पाछे-पाछे मति आवा। अणी का भाग मे योज लिख्यो थो। लिख्यो नी टरे। मैं थने वरदान दूंगा मांग थारे कई चइये? सावित्री बोली- म्हारा सासू-सुसरा के आँख से दिखावा लांगी जाय। तथास्तु, कई ने आगे बड़्या। फेर भी सावित्री वणा का पाछे-पाछे चाली। तो फेर जमराज बोल्या के दूसरो वर माँग। सावित्री ए वर माँग्यो के म्हारे सो बेटा वे। जमराज बोल्या- के जा थारे सौ बेटा देगा। तथास्तु। अतरो कई ने आगे चाल्या, फेर सावित्री पाछे-पाछे जावा लागी। तो जमराज ए पूछ्यो के अभे कई चइये? और माँग। सावित्री बोली के म्हारा सासु-सुसरा को खोयो थको राज पाछो मिली जाय। यमराज ए एक दाण फेर तथास्तु किदो ने आगे बड्या। पण सावित्री तो फेर पाछे-पाछे वइगी।

अबे यमराज बोल्या के- देवी! तू म्हाको पाछो मत कर। मै थने तीन दाण वर दइ दिदा है। अभे काय वाते पाछे-पाछे अईरी है? तो सावित्री बोली- महाराज! म्हारे तो आप ए सौ बेटा को वरदान दीदो ने आप तो म्हारा पति ने लई ने जइरिया हो। सावित्री की वात हुणी ने यमराज अचंभा में पड़ी ग्या।

फेर बोल्या है- देवी! मूं तो वचन हारी ग्यो। तू सती है। पति वरता है। वणा का आगे तो देवता भी नी जीती सके। यमराज ए सत्यवान का प्राण पाछा दई दिदा। ने वठे से चलीया ग्या।

सावित्री का सासू-सुसरा ने वणा को राज मिली ग्यो। ने आँखा की ज्योत मीलीगी। सावित्री ने वणी का सत ती सत्यवान मिली ग्यो। ने दोई राज करवा लागीग्या।

भावार्थ

एक समय राजा-रानी थे। वे दोनों जंगल में रहते थे। उनका एक बेटा था। उसका नाम सत्यवान था। राजा-रानी दोनों अंधे थे। बेटा लकड़ी काटता और अपने माता-पिता की सेवा करता। उस जंगल के पास एक दूसरे राजा का राज्य था। उसकी एक रूपवान कन्या थी। एक बार एक ब्राह्मण उस महल में पहुँच गया। तो राजा ने उस ब्राह्मण से कहा कि- मेरी एक बेटी है, उसका हाथ देखना है। ब्राह्मण ने उसका हाथ देखकर कहा कि- आपकी बेटी के भाग्य में थोड़ी बाधा है। राजा ने कहा- साफ-साफ क्यों नहीं कहते? ब्राह्मण धीरे से बोला- राजा! इसके विवाह के एक वर्ष पश्चात् आपकी बेटी विधवा हो जायेगी। इतना कहकर ब्राह्मण चला गया।

राजा-रानी सोच में पड़ गये। राजा ने रानी से कहा कि सावित्री का विवाह ही नहीं करेंगे। सावित्री ने राजा-रानी की बातें सुन ली थीं। उसने अपने माता-पिता से कहा कि- मैं कुँवारी नहीं रहूँगी, शादी करूँगी। राजा ने नौकरों से कहा कि पूर्व दिशा में जाना, जो भी पहला पुरुष मिले, उसको पकड़कर यहाँ ले आना। नौकर जंगल में गये, उधर से सत्यवान सिर पर लकड़ी का गट्ठर लिये आ रहा था। नौकर उसे पकड़कर राजा के पास ले आये।

राजा सत्यवान को देखकर बोले- मैं मेरी बेटी का विवाह आपसे करना चाहता हूँ। सत्यवान ने कहा- मैं तो गरीब हूँ, आप राजा हैं। राजा ने सत्यवान की बात सुनकर सत्यवान से सावित्री की बातचीत करवा दी। सत्यवान ने सावित्री से कहा- मेरे साथ विवाह करना चाहती हो, तो मेरे घर का सारा कार्य करना पड़ेगा, मेरे माता-पिता अंधे हैं उनकी सेवा करनी पड़ेगी। आप तो राजकुमारी हैं? राजकुमारी सावित्री ने सत्यवान की बात सुनकर हाँ कर दी। पर उसने भी उससे एक शर्त रखी कि मैं आपके साथ ही रहूँगी, आप जहाँ जायेंगे, मैं वहाँ साथ चलूँगी। सत्यवान ने भी हाँ कर दी। दोनों का विवाह हुआ। सावित्री शादी होकर ससुराल गई। सास-ससुर के पैर छूकर आशीर्वाद लिये और उनकी सेवा में लग गई।

ज्येष्ठ महीने की पूनम का दिन था। उस दिन बड़ की पूजा की जाती है। सावित्री सत्यवान के साथ जंगल में लकड़ी काटने के लिए साथ में गई थी। सत्यवान लकड़ी काटता तो वह इकट्ठी करती जाती। लकड़ी काटते-काटते सत्यवान ने कहा कि- आज मेरा सिर दर्द कर रहा है। सावित्री ने कहा कि बड़ की छाया में थोड़ा-सा विश्राम कर लो। सत्यवान की वहीं तबियत

अचानक बिगड़ गई और उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। सावित्री लकड़ियाँ बीन रही थीं। इतने में यमराज आये और अपने यमपाश में बाँधकर सत्यवान को ले जाने लगे। सावित्री ने देखा कि मेरे पति को तो यमराज ले जा रहे हैं। वह उनके पीछे-पीछे चल पड़ी और उन्हें कहने लगी कि- मेरे सास-ससुर अंधे हैं, उनका तो एक ही बेटा है। तुम इन्हें मत ले जाओ। सावित्री! इसके भाग्य में यही लिखा था। भाग्य का लिखा कभी नहीं टलता। तू हमारे पीछे-पीछे मत आ। पर सावित्री तो चली ही जा रही थी। यमराज परेशान होने लगे। उन्होंने कहा- माँग तुझे क्या चाहिये? मैं तुझे वरदान दूँगा। सावित्री ने कहा- मेरे सास-ससुर को दिखने लग जाये। तथास्तु! इतना कहकर वह चल दिये। फिर भी सावित्री उनके पीछे-पीछे चल दी। यमराज बोले- अब क्या चाहिये? उसने दूसरा वर माँगा कि मेरे सौ पुत्र हों। यमराज ने कहा- जा तेरे सौ पुत्र होंगे। तथास्तु! इतना कहकर फिर चल दिये। सावित्री फिर उनके पीछे-पीछे जाने लगी। सावित्री फिर उनके पीछे-पीछे जाने लगी। यमराज बोले- अब क्या चाहिये? और माँग। मेरे सास-ससुर का खोया हुआ राज्य वापस मिल जाये। यमराज ने एक बार फिर 'तथास्तु' कहा और फिर आगे चल दिये। लेकिन सावित्री तो फिर पीछे-पीछे चल दी। यमराज ने कहा- देवी! तू हमारा पीछा मत कर, मैंने तुझे तीन बार वर दे दिया है। अब किसलिये पीछे-पीछे आ रही है? तब सावित्री बोली- यमराज! आपने तो मुझे सौ बेटों का वरदान दिया और आप मेरे पति को ले जा रहे हो? सावित्री की बात सुनकर यमराज आश्चर्य में पड़ गये और बोले कि- देवी! मैं तो वचन देकर हार गया। तू सती है, पतिव्रता है, उनके आगे तो देवता भी नहीं जीत सके। यमराज ने सत्यवान को जीवित कर दिया, उसके प्राण वापस करके वहाँ से चले गये।

सावित्री के सास-ससुर को उनकी आँखों की ज्योति मिल गई। उनका खोया हुआ राज्य वापस मिल गया। सावित्री को उसके सत से सत्यवान मिल गया और वह अपने राज्य में आराम से राज करने लग गये।

मंगला गोरी व्रत कथा

एक बामण और एक बामणी था और एक ढीमर ने एक ढीमरनी था। बामन शंकर मंदर को पुजारी थो। रोज मन्दर में पुजा करवा ने जातो और साफ-सफई करीने अच्छी तरे ती पूजा करतो, पण वणी का घरे कोई बच्चो नो थो। बामणी की मुंडो देखणों कोई पसंद नी करतो। अटने अणी ढीमर घरे छह छोरा-छोरी तो भी दोई जणा नी घबराता छोरा-छोरी ने लाड़ से राखता था। बी हाट-बजार जाता तो चणा चिरोंजी लाता सबने एक-एक मुट्टी वाँटता और केता अभी एक-दो और खइले अतरो वंचो है। एक धोती ओढ़ई देता ने एक विछई देता, ने केता के एक-दो और सुई जाय अतरी जगा और है।

ढीमर मंदर जातो तो पेला नदी पे न्हातो, अपणी लंगोटी ने अच्छी तरे से धोवतो, ने फेर साफ पाणी मे भीजई लंगोटी ने अच्छी तरे से धोवतो, ने फेर साफ पाणी मे भीजई ने जाल की मछली लइ ने लंगोटी को पाणी भगवान शीव पे चढ़ाहो ने मच्छ-कच्छ भगवान ने चढ़ातो।

एक दन बामण ने सोचो मैं मन्दर की सफई करूँ ने या गन्दगी कुण करी जाय, आज छिपई ने देखुँगा। उ देखे, ढीमर आयो लंगोटी मे पाणी चढ़ई ने मच्छ-कच्छ भगवान को चढ़ाया। भगवान ने वाचा अई ने बोल्या- जा जतरा मच्छ-कच्छ हे अतरा थारे बाल गोपाल वे, या वात बामण ए हुणी ऊ दुखी वियो मैं भगवान की अतरी अच्छी पूजा करु वणी को यो फल। उ भगवान ने लड़ी झागड़ी ने रीसई ने घरे ग्यो बामणी से किदो वा बोली- मूं काम थोड़ी चालेगा चलो हूँ, भगवान ती पूंछू- वा मन्दर मे अई प्राथना करी, कोई झगड़ी नी। भगवान ने वाचा आई बोल्या- थारा तकदीर मे बालक नी है। वा तो अड़ीगी, भगवान म्हारी बांजणी की बांज खोलो नी तो थांका माथे मरुंगा, ब्रह्म हत्या थांका ऊपर लागेगा। भगवान भी डरीग्या बोल्या- जा ढीमर घरे छीपी ने बैठ जे। जीने का अगोजा कई दे उ थारा घरे पैदा वइ जाएगा, पण वा तो कोई ती भी नी के। दोई मनख बच्चा अच्छा पाले, वा बामणी फेर भगवान शंकर का मंदर में गई। भगवान बोल्या- एक बच्चो मांगीला पण दोई मनख एक भी बच्चो नी दे। अबकी बार भगवान का दर्शन करवाने ढीमरनी आई ने बोली- भगवान! कई बालक भी कणी से दिया जाय। तो भगवान बोल्या- एक बच्चो दइ दे लाड़-प्यार से राखेगा। घड़ी-घड़ी मनावा पे वा बोली- जो बालक वणी का साथे जावो बेगा वणी के दई दूंगा। वा बामणी सब बालकां से पूछवा लागी तू म्हारा सातें म्हारा घरे चालेगा, अच्छा कपड़ा पेरऊगाँ, अच्छो खवाडुगां, पण एक भी राजी नी वियो एक सबसे छीटो थो उ राजी वई गयो। ढीमरणी बोली यो तो ना समझ है पण मूं एक सरत पे दूंगा जदी यो बारा साल को वइ जाएगा तो मूं म्हारा घरे पाछो बुलई लूंगा। बामणी के कोई बच्चो तो थो कोनी, वा मोह माया कई जाणे, वा केवा लागी म्हारे तो वांजा की बांज हेड़नी है वा उ बच्चो रमी ग्यो विके अच्छो लागवा लागीग्यो। अई भगवान शंकर-पार्वती की कृपा से बामणी भारी पांव से वइगी। नो मईना बाद खुब खुशी हुई बाजा बजाय, बेटो पैदा हुवो। दोई जणा बच्चा के देखीने भगवान ने भुलीग्या। एक दन बामण बोल्यो- यो परायो है, मांग्यो थको है। तो बामणी बोली- परायो है, मांग्यो थको है तो कई वियो मूं तो सारी साद पूरी करूँगा।

सुरज पूजा करी थोड़ो बड़ो वियो तो जमाल उतरिया, दोई मनख वणी बच्चा ने थोड़ो सो बी आँख ती ओझल नी वेवा देता। थोड़ा दन बाद बामणी बोली- अबे यो सात बरस को वइग्यो है इकी जनोई करी दां। बामण दुखी वेतो, वा माँ वणी बच्चा में मगन थी। बामण भगवान की पूजा करवा ने मंदर जातो तो वणी ने प्रण याद आतो तो उ दुखी वेतो। बच्चो दस-ग्यारह बरस को वेवो ने आयो तो बामणी बोली- देखो भगवान! ए इतरा दिन में बच्चो दियो है तो मूं तो बऊ लऊँगा, तो बामण बोल्यो दुसरा की बेटी की जिन्दगी क्यों बिगाड़े। पठा वा माँ थी बोली- भगवान जो करे उ

अच्छी करेगा। सम तो छोरी अच्छी ने धरम-करम वाली देखजो, बामण के भी वात हमण में अईगी। बोल्यो- वा तू जीद् करीरी है तो थोड़ो-सो खावा को सामान बांधी दे। जऊँ कई छोटी समझ में अई तो देखी अऊँगा।

अई ढीमरणी अपणा बेटा वाते एक-एक दन गणी री थी। बामण दूसरा गांम ग्यो, तिसरा गांम ग्यो जाता-जाता नदी किनारे एक गांम थो, रेत में छोरा-छोरी रेती का घर कुल्या वणई रिया था ने खेली रिया था। बी अणजान मनख ने देखी ने भागवा वाते अपणा-अपणा रेतघर का घर तोड़ी ने जावा लागा तो वणी मे ती एक छोरी बोली हूं तो म्हारो घर नी बिगाड़ूं। रेत को हे तो कई भगवान म्हारो घर बिगाड़ेगा। या वात वणी बामण ए सुणी ने सोचवा लाग्यो के या तो बड़ी राणी है। बामण ए विको नाम पूछ्यो तो वा बोली- म्हारो नाम दया है। किनकी बेटी है? हमारा पिताजी बामण है, बस कई थो।

बामण महाराज उका साथे चाली पड़्या विका घरे पोच्या घर जई ने अपणा माँ-बाप से कियो कोई पामणा आया है। माँ ए झट पाणी को लोट्यो भरी ने बेटी ने दियो। बेटी ने झट बामण का पग धोया, घर में आदर से बैठाया- माँ बोली पूछ वो काँ से पदारिया। कने का गांम से आयो हूँ, आपकी बेटी सारू आयो हूँ, म्हारो एक इज लड़का है। आठ-नौ साल को है। दोई के सगपण की बात हुई, रसोई बनई-पामणा के रसोई जीमई, रसोई में लूण नी लाख्यो थो पामणा बोल्या आज अलूणो क्यों? घर वाला बोल्या आज म्हारी बेटी को मंगला गौरी को बरत है बामण का मन में बड़ी खुशी वी बोल्यो धरम-करम मनख की पेचाण है। छोरा-छोरी को व्याव वियो, छोरी का माँ-बाप उदास वइग्या। अटने बामणी छोटी-सी वऊ का बड़ा लाड़ प्यार करे वणी ने तो वऊ का रूप में बेटी मिलीगी। वा बऊ घर में हरे-फरे तो उ बामण उदास वई जाय। तो एक दन वा वऊ बोली- सूसराजी उदास क्यों हो म्हारे भी तो बताओ? बामणी से रेवाणों कोनी तो बऊ ने कियो, बेटा तमारा से कई छिपऊँ करम में कईं है यो हम दोई जणा जाणां ने रोवा लागीगी। बऊ सांणी थी। बोली म्हने बात वताओ वणे सुरु से तो आखरी तक वात मोड़ी ने वतई। फरे वऊ बोली- कोई वात नी भगवान पे भरोसो राखणो चइये। वऊ ने सूसराजी ने किदो के म्हारो एक थम्बा को मेल वणई ने दो। वणी में एक बारणो वे। वायटो आवा की जगा भी नी वेणी चइये। बामण ए वऊ की वात मानी ली एक थाम्बा को मेल वणायो ने सावण मईनो अई ग्यो वणे अपणा खांवीद ने किदो म्हारे आज मंगला गोरी को वरत है, आज आप बारे मती जाजो। वणे लीला चारा का पूरा मंगया ने आंगणा में छोडई दीदा, दूद को कटोरो भरी ने एक जगा में दूद मेलई दीदो ने चारी खुंणे दीवा लगई ने हरु भक्तिभाव सी भगवान शंकर की पूजा करवा लागी।

बटने ढीमरनी ने याद आई आप म्हारा छोरा का बारा साल पूरा वइग्या है। भगवान ने तो याद कौनी मूं करी ने भगवान का मंदर में गई। भगवान बोल्या- थारा अतरा बच्चा है यू समझणे

के एक नी है। वा भगवान अच्छी वात करी। वाचा हारीग्या तो पार्वती ए हुण्यो भगवान कई वात है– बारा बरस पेला ढीमरणी ए अपणो छोटो बच्चो बामण का घरे मांग्यो थो तो दई दीदो थो। पण इकी बेरां पतिवरता है इको घर बाल–बच्चा से भरियो है। तो इमे कई रखीयो है। तो पार्वती बोल्या– जी को बारक है, वीका घरे दो महाराज यो न्याव है। तो भगवान बोल्या वा पतिवरता है अणी ती डर लागे। अतरा मे नन्दीजी बोल्या भगवान मूं जाऊँ। भगवान का आगे कोई को घमण्ड नी चाले। या ढीमरनी घर का आगे चाली ने देखे लीलो चारो पड़यो पेट भरी ने खादो ने देखे वा बामण की बऊ तों भगवान की पूजा में मगन है मन में होचों कुण पति वरता लुगई की आत्मा (मन) दुखावें।

भगवान जाणे अइग्या बोल्या– महाराज! खाटला के विको खाविंद हुतो, ने वा पूजा मे मगन है म्हारी छाती नी चाले। अबे नाग म्हाराज बोल्या मूं जऊ? भगवान ए किदो जाओ जल्दी जाओ नाग म्हाराज चाल्या तो घर का आंगणा में आया। वऊ की नीगा पड़ी तो वणे झट उठी ने दूद को कटोरो हामे मेल्यो ने झट पगे पड़ी। नाग म्हाराज झट दूद पीग्या। भगवान का गण दूद पी ने होचो देखूँ कटने आड़ी जऊँ? जटने जाए वटने पूंछ में दीवा को तातो (गरम) लागे वी भी हरी ने चलयाग्या। ने जइ ने भगवान से बोल्या– म्हारे तो डर लागे तो पार्वती माता बोल्या– भगवान! मूं भी अणी पति वरता लुगई का दर्शन करूँगा? तो भगवान शंकर बोल्या– पार्वती! थें मत चालो, म्हने जावा दो। भगवान का हाते सब चाल्या, सबका आगे पार्वती माता ने वणा का पाछे भगवान। वऊ ए वणा की छाँया देखी तो हमजी गी। झट उठी ने पार्वती माता का पगे पड़ीगी। माता बोल्या– अखण्ड सौभाग्यवती हो। वातो आड़ी फरीगी, ने बोली– माताजी! अबी आप ए कई आसीरवाद दिदो। भगवान बोल्या– देखो पार्वती! आपने काम बगाड़ी दीदो है। ढीमरनी रोवा ने रुदन करवा लागीगी, ने बामणी भी रोवा ने रुदन करवा लागीगी। इतना में भगवान ए किदो इको जीमणो हाथ इकी माँ का हाथ में दिजो ने डावो हाथ वऊ का हाथ में दीजो को छांटो दीदो ने बोल्या– हे मंगला गोरी माता! वणी बेटा की वऊ ने टूटा असा सकल ने टूट जो।

भावार्थ

एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी पति–पत्नी थे और एक धीबर और धीबरनी, ये भी पति–पत्नी थे। ब्राह्मण शंकर जी मंदिर का पुजारी था। रोज मन्दिर में पूजा करने के लिए जाता था। मन्दिर की साफ–सफाई करके अच्छी तरह से पूजा–पाठ करता था, पर उसके यहाँ कोई सन्तान नहीं थी। ब्राह्मणी का मुँह देखना कोई पसन्द नहीं करता था। इधर धबिर के यहाँ छह लड़के–लड़की थे। वह बच्चों को बड़े प्यार से रखता था। दोनों पति–पत्नी बच्चों से कभी नहीं घबराते थे। हाट–बाजार जाते तो सबके लिए चने–चिरौंजी लाते थे। सबको एक–एक मुट्ठी भरकर देते थे और कहते– अभी तो एक–दो बच्चे खा लें इतने और बचे हैं। एक साड़ी ओढ़ा देते और एक साड़ी बिछा देते और कहते कि– अभी तो एक–दो बच्चे और सो जायें, इतनी जगह और है।

धीबर मन्दिर जाता तो पहले नदी पर नहाता, अपनी लंगोट को अच्छी तरह धोकर साफ पानी में भिगोकर जाल में से मछली निकालकर, लंगोट का पानी और मछली भगवान शिवजी पर चढ़ाता था। एक दिन ब्राह्मण ने सोचा मैं रोज मन्दिर की साफ-सफाई करता हूँ, यहाँ रोज गन्दगी कौन कर जाता है, आज मैं छिपकर देखूँगा। वह देखता है कि धीबर आया, लंगोट में पानी लाया, भगवान पर पानी और मछली चढ़ा दी। भगवान बोले- जा, जितनी मछली है उतने तेरे यहाँ बाल-गोपाल होंगे। यह बात ब्राह्मण ने सुनी, वह दुखी हुआ और भगवान से बोला- मैं इतनी अच्छी तरह से पूजा करता हूँ, इसका मुझे यह फल? वह भगवान से लड़-झगड़कर गुस्से में घर चला गया। ब्राह्मणी ने उसे कहा- ऐसे काम थोड़े ही चलेगा? चलो मेरे साथ, मैं भगवान से पूछती हूँ? वह मन्दिर में आई और भगवान से प्रार्थना की, तो भगवान बोले- तेरे भाग्य में बच्चे नहीं हैं। वह तो भगवान के पास बैठ गई और कहा कि- मेरी बाँझ का बाँझपन खोलना पड़ेगा, नहीं तो मैं आपके माथे मर जाऊँगी, ब्रह्म-हत्या आपको लगेगी। भगवान डर गये और कहा कि- जा धीबर के यहाँ छिपकर बैठ जाना, जिसे वह 'चला जा' कह दे, वह तेरे घर पैदा हो जायेगा। पर वह तो किसी से नहीं कहता था। दोनों पति-पत्नी बच्चों को अच्छा पालते थे।

ब्राह्मणी फिर भगवान शंकर के मन्दिर में गई। भगवान ने कहा- एक बच्चा माँगकर ले आओ। पर दोनों पति-पत्नी एक बच्चा भी देने को तैयार नहीं। इस बार भगवान के दर्शन के लिए धीबरनी आई और कहने लगी- भगवान! क्या बच्चे भी किसी को दिये जायें? तो भगवान बोले- एक बच्चा दे-दे, ये बड़े लाड़-प्यार से रखेंगे। बार-बार मनाने पर वह बोली- जो बालक इसके साथ जाता होगा, उसको मैं दे दूँगी। ब्राह्मणी सब बालकों से पूछने लगी- तू मेरे साथ मेरे घर चलेगा? अच्छा खिलाऊँगी-पिलाऊँगी, अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाऊँगी। पर एक भी जाने के लिए तैयार नहीं हुआ। पर एक सबसे छोटा था, वह जाने के लिए तैयार हो गया। धीबरनी ने कहा- यह तो समझता नहीं है, पर मेरी एक शर्त है कि जब ये बारह वर्ष का हो जायेगा, मैं घर वापस ले आऊँगी। ब्राह्मणी के कोई बच्चा तो था नहीं, वह मोह-माया क्या जाने! वह कहने लगी- मैं बाँझ नहीं कहलाऊँ, बस मुझे और कुछ नहीं चाहिये। वहाँ पर वह बालक घुल-मिल गया, उसे अच्छा लगने लगा। भगवान शंकर-पार्वती की कृपा से ब्राह्मणी गर्भवती हो गई। नौ महीने बाद उसको पुत्र की प्राप्ति हुई, वह बहुत खुश हुई, ढोल-नगाड़े बजाये। दोनों पति-पत्नी बच्चे को देखकर भगवान को भूल गये।

एक दिन ब्राह्मण ने कहा- ये पराया लड़का है, माँगा हुआ है। तो ब्राह्मणी बोली- पराया है? माँगा हुआ है? तो क्या हुआ, मैं तो मेरी इच्छा पूरी करूँगी। सूरज पूजा की मान उतारी, दोनों उस बच्चे को अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देते। थोड़े दिन बाद ब्राह्मणी ने कहा- अब यह सात साल का हो गया है, इसकी जनेऊ करते हैं। ब्राह्मण दुखी होता और वह माँ तो अपने बच्चे में मस्त थी। बच्चा दस-ग्यारह वर्ष का होने आया, तो ब्राह्मणी बोली कि- भगवान ने इतने सालों

से बेटा दिया है तो मैं तो बहू लाऊँगी। ब्राह्मण बोला– दूसरे की बेटी की जिन्दगी खराब करती है। तुम तो अच्छी लड़की देखो जो धर्म, ज्ञान को समझती हो। ब्राह्मण को भी बात समझ में आ गई और वह बोला– जब तू जिद् कर रही है तो मैं जाता हूँ, मेरे लिए थोड़ा खाने–पीने के लिए साथ में दे–दे। लड़की समझ में आ जायेगी तो देख आऊँगा।

इधर धीबरनी अपने बेटे के लिए एक–एक दिन गिन रही थी। ब्राह्मण एक गाँव गया, दूसरे गाँव गया, तीसरे गाँव गया तो वह नदी किनारे था। लड़कियाँ रेत के घर बना रही थीं, खेल रही थीं। अनजान पुरुष को देखकर अपने–अपने घर तोड़कर भाग रही थीं। उसमें से एक लड़की बोली– मैं तो मेरा घर नहीं तोड़ती, रेत का है तो क्या हुआ, भगवान ही मेरा घर बिगाड़ देंगे। यह बात उस ब्राह्मण ने सुनी और विचार करने लगा कि लड़की समझदार है। ब्राह्मण ने उसका नाम पूछा। उसने कहा मेरा नाम दया है। किनकी लड़की है? मेरे पिताजी ब्राह्मण हैं। बस, फिर क्या था! ब्राह्मण महाराज उसके साथ चल दिये। उसके घर पहुँचा। घर जाकर लड़की ने अपने माता–पिता से कहा– कोई मेहमान आये हैं। माँ ने पानी का लोटा भरकर लड़की को दिया। लड़की ने ब्राह्मण के पैर धोये, घर के अन्दर आदर से उनको बैठाया। माँ बोली– इनसे पूछ, ये कहाँ से आये हैं? पास के गाँव से आया हूँ और आपकी कन्या के लिए आया हूँ। मेरा एक ही लड़का है, आठ–नौ साल का है। दोनों ने लड़की के सम्बन्ध की बातें कीं, भोजन बनाया, मेहमान को भोजन करवाया। भोजन में नमक नहीं डाला था, तो मेहमान बोले– आज भोजन बिना नमक का क्यों है? घरवालों ने कहा– आज मेरी बेटी को मंगला गौरी का व्रत है। ब्राह्मण को मन में बड़ी तसल्ली हुई। बोला– धर्म–कर्म मनुष्य की पहचान है। लड़के–लड़की का विवाह हुआ। माता–पिता बड़े उदास हो गये।

ब्राह्मणी ने अपनी छोटी–सी बहू का स्वागत किया। बड़े लाड़–प्यार से रखने लगी। उसको तो बहू के रूप में बेटी मिल गयी। बहू घर के अन्दर घूमती–फिरती दिखे तो वह ब्राह्मण उदास हो जाये। बहू ने एक दिन पूछा– ससुरजी! आप उदास क्यों रहते हो? मुझे भी तो बताओ। ब्राह्मणी से रहा नहीं गया। उसने बहू से कहा– बेटा! तुमसे क्या छिपाना – हमारे भाग्य में क्या है, ये हम दोनों जानते हैं और इतना कहकर वह रोने लग गई। बहू समझदार थी। उसने कहा– मुझे बात बताओ? उसे शुरू से आखिरी तक पूरी बात बता दी। फिर बहू ने कहा– कोई बात नहीं, भगवान पर भरोसा रखना चाहिये। बहू ने ससुर से कहा– मुझे थम्बे का महल बनवा दो। उसमें एक ही दरवाजा हो। हवा आने की भी उसमें जगह नहीं होना चाहिये। ससुर ने बहू के लिए एक थम्बे वाला महल बनवाया। श्रावण का महीना आया, उसने अपने पति से कहा– मुझे आज मंगला गौरी का व्रत है, आप आज बाहर मत जाना। उसने हरे घास के पूले मँगवाये और आँगन में रखवा दिये, दूध का कटोरा भरकर एक जगह उसको रखवा दिया और चारों कोने में दीये लगाकर अच्छे भक्ति भाव से पूजन करने लगी। इधर धीबरनी को अपने बेटे की याद आई कि

आज बारह वर्ष पूरे हो गये हैं। भगवान को तो याद नहीं है, ऐसा कहकर वह मन्दिर गई। भगवान ने कहा– तेरे इतने बच्चे हैं, तू समझ ले कि एक है ही नहीं। वाह! भगवान अच्छी बात कही आपने। अपनी शर्त हार गये। पार्वती ने सुना– भगवन! क्या बात है? बारह वर्ष पहले धीबरनी ने अपना छोटा पुत्र ब्राह्मणी ने माँगा तो दे दिया था, पर इस लड़के की पत्नी पतिव्रता है और इसका घर बाल-बच्चों से भरा है। तो पार्वती ने कहा– जिसका बालक है, उसके घर दो। महाराज! यही न्याय है। तो भगवान ने कहा– वह पतिव्रता है इसलिए डर लग रहा है। इतने में नंदीजी ने कहा– भगवन! मैं जाऊँ? भगवान के आगे किसी का घमण्ड नहीं चलता। ये धीबरनी उसके घर के आगे चलकर देखे? उसके घर के आँगन में हरी घास पड़ी हुई है, ब्राह्मण की बहू भगवान की पूजा में मग्न हो रही है, मैंने मन में सोचा कौन इस पतिव्रता औरत का मन दुखावे। हरी घास खाई तो पेट भर गया। नंदी शंकर भगवान के पास आया और बोला– महाराज! खटिया पर उसका पति सो रहा है और वह पूजन में मग्न हो रही है, मेरी हिम्मत नहीं हुई। फिर नागदेवता बोले– भगवन! मैं जाऊँ क्या? भगवान ने कहा– जाओ, पर जल्दी आना। नाग महाराज चले तो उसके घर के आँगन में आये, बहू की नजर पड़ी तो उसने उठकर दूध का कटोरा नागदेवता के सामने रख दिया और उनके पैर छू लिये। नाग महाराज सारा दूध पी गये। भगवान के गण ने दूध पीकर सोचा कि अब किधर जाऊँ? जिधर जाएँ उधर पूँछ को जलने का डर, चारों ओर दीये जल रहे हैं। वह भी हारकर चले गये और जाकर भगवान से कहा– मुझे तो डर लगे। तो पार्वती जी ने कहा– भगवन! मैं भी इस पतिव्रता स्त्री के दर्शन करूँगी। शंकर भगवान बोले– पार्वती! तुम मत चलो, मुझे जाने दो। भगवान के साथ में सब चले। सबसे आगे माता पार्वती, उनके पीछे भगवन। बहू ने उनकी परछाँई देखी तो समझ गई। झट उठकर पार्वती माता के पैर छुए, माता ने अखण्ड सौभाग्यवती का आशीर्वाद दिया। भगवान बोले– देखो पार्वतीजी! आपने काम बिगाड़ दिया है।

धीबरनी रोने और रुदन करने लगी, इतने में भगवान ने कहा– इस लड़के का दाहिना हाथ इसकी माँ के हाथ में देना और बाँया हाथ इसकी पत्नी के हाथ में देना और अमृत का छींटा डालना। मंगला गौरी माता उस बहू पर प्रसन्न हुईं, ऐसे सब स्त्रियों को प्रसन्न रखना।

नागपंचमी व्रत कथा

एक करसाण को परिवार मणिपुर नगर में रेतो थो। वणी के दो बेटा ने एक बेटी थी। एक दन करसाण अपणा खेत में हल हांकी रियो थो। तो वणी का हल का चवड़ा ती सांप का तीन पड़क्या मरिग्या। पड़क्या की माँ नागण पेला तो खुब रोई। फेर मारवा वाला मनख ती अपणा बच्चा को बदलो लेवा की मन में ठांणी ली। एक दन रात का टेम में, नागण ए करसाण, वणी की वइरी और वणी का दोई बेटा ने डँसी लिदो। जणी तीवी चारी मरीग्या। दूसरा दन वा नागण जदी

करसाण की बेटी ने डँसवा ने गई तो वणी बेटी ए डरका मारे वणी का हामे दूद को कटोरो मेल दीदो। और माफी माँगवा लागी। करसाण की बेटी ने मालम नी थो पण उ नागपंचमी को दन थो। अणी वाते नागण ए खुश वई ने वणी बेटी ने वर माँगवा को किदो- वणी बेटी ए यो वर मांग्यो के म्हारा मर्‍या थका, माँ-बाप और दोई भई सरजीवन वई जाय। और जो लोग आज का दन नाग देवता की पूजा करेगा, वणी ने कदी नाग देवता डँसवा की बाधा नी आवेंगा। नागण वणी करसाण की बेटी ने वरदान दई ने जाती री। और वणी दन ती लोक में नागपंचमी पूजवां को परचार वियों।

भावार्थ

एक कृषक परिवार मणिपुर नगर में रहता था। उसके दो पुत्र और एक पुत्री थी। एक समय जब किसान अपने खेत में हल जोत रहा था। उसके हल के फाल से साँप के तीन बच्चे मर गये। बच्चों की माँ नागिन ने पहले तो बहुत विलाप किया, फिर मारने वाले व्यक्ति से अपने बच्चों का बदला लेने का संकल्प किया। रात के समय नागिन ने किसान, उसकी पत्नी और दोनों पुत्रों को डँस लिया, जिससे वे चारों मर गये। दूसरे दिन वह नागिन जब किसान की पुत्री को डँसने के लिए गई, तब उस लड़की ने डरकर उसके सामने दूध का कटोरा रख दिया। और क्षमा प्रार्थना करने लगी। लड़की को मालूम नहीं था, पर वह नागपंचमी का दिन था। इस कारण नागिन ने खुश होकर लड़की से वर माँगने को कहा। लड़की ने यह वर माँगा कि मेरे मृत माता-पिता और दोनों भाई फिर जीवित हो जाएँ और जो व्यक्ति आज के दिन नागदेवता की पूजा करेगा, उसको कभी नाग के डँसने की बाधा न हो। नागिन लड़की को वरदान देकर चली गई। कहते हैं कि उस दिन से लोक में नागपंचमी के पूजन का प्रचार हुआ है।

नागपंचमी व्रत कथा - (दो)

एक बामण और एक बामणी थी। बणी के सात वऊवां थी। सावण मईनो आतो ने वी छः वऊवां तो पियर चली जाती वणा का भई लेवाने अई जाता। पण सातवी वऊ जो सबती छोटी थी। वणी के कोई भई नी थो। वणे नाग बाबजी ने अपणो भई वणई लिदो। वणे नाग बाबजी ने याद कर्‍यो, तो नाग बाबजी बुढ़ा बामण को वेश करी ने अइग्यो। अई ने विका सासू-सुसरा ने किदो मैं बेन के लेवाने आयो हुँ तो वि बोल्या- के लई जाओ। तोउ बेन के लई ग्यो। घरे जाता-जाता नाग बाबजी ए रस्ता में पाछो अपणो रूप वणायो, ने बेन ने फण का ऊपर बैठई लीदी। ने नाग लोक में लइग्यो। वा बेन वठे रेवा लागी गी। थोड़ादन विया ने वा तो वठे डरबा लागीगी, नाग का बच्चा देखी नें, वा बेन बोली- भई! म्हने तो म्हारा घरे छोड़ी आब। तो नाग राणी बोली- यो

एक पीतल को दिवो है, अणी दिवा ती तू अंदारा में भी देखी सकेगा। तू इने लइजा एक दन उ दिवो वणी बेन का हाथ से नाग का एक बच्चा पे पड़ीग्यो तो वणी की पूंछ कटीगी।

थोड़ा दन बाद नाग बाबजी ए अपणी बेन ने सासरे भेजी दीदी। पाछो सावण को मईनो आयो वी छः वऊवा तो पीयर जाती री। पण वा छोटी वऊ नी गई। नाग पंचमी को दन आयो तो वणे भीत पे पाँच नाग मांड्या ने वणा की पूजा हऊ सरदा भकती ती करी। पूजा करीज री थी, ने पूंछ कटयो नाग को बच्चो वणी को बदलो लेवा ने आयो थो। पण वणे तो बणी वऊ ने सरदा से नाग बाबजी की पूजा करता देखी तो परसन वइग्यो, ने घुस्सो छोड़ दीहो।

भावार्थ

एक ब्राह्मण और एक ब्राह्मणी थे। उनकी सात बहुएँ थीं। श्रावण का महीना आता, उनकी छः बहुएँ तो मायके चली जातीं। उनके भाई लेने आ जाते। लेकिन सातवीं बहू के कोई भाई नहीं था। उसने नागदेवता को अपना भाई बना लिया। उसने जैसे ही नागदेवता को याद किया, नागदेवता बूढ़े ब्राह्मण का वेश बनाकर आ गये। आकर बहन के सास-ससुर को कहा कि- मैं बहन को लेने आया हूँ। उन्होंने कहा- ले जाओ। बहन को लेकर चला तो नागदेवता ने अपना रूप धारण किया, फण चौड़े किये और बहन को कहा कि इसके ऊपर बैठ जा। बहन बैठ गई। वह अपनी बहन को नागलोक में ले गया। वह बहन वहाँ पर रहने लग गई। थोड़े दिन हुए, वह तो वहाँ पर डरने लग गई उन सब नाग के बच्चों को देखकर। बहन ने नागदेवता से कहा कि- मुझे मेरे घर छोड़कर आओ। तो नाग रानी बोली कि- यह एक पीतल का दीया है, इस दीये से तू अँधेरे में देख सकेगी, तू इसे ले जा। एक दिन वह दीया बहन के हाथ में से छूटकर नागदेवता के एक बच्चे पर जा गिरा तो उससे उसकी पूँछ कट गई। थोड़े दिन बाद नागदेवता ने अपनी बहन को ससुराल पहुँचा दिया।

फिर श्रावण का महीना आया, सारी बहुएँ तो मायके चली गईं, पर वह छोटी बहू नहीं गई। नागपंचमी का दिन आया, उसने दीवाल में पाँच नागदेवता बनाये, श्रद्धा-भक्ति से उनकी पूजा-अर्चना की। पूजन कर ही रही थी कि पूँछ कटा हुआ नाग का बच्चा बदला लेने के लिए वहाँ आ गया, लेकिन उसकी श्रद्धा-भक्ति देखकर वह तो प्रसन्न हो गया और गुस्सा छोड़ दिया। बहन ने लड्डू-बाटी का प्रसाद बनाया था। उसका धूप लगाया। नागदेवता को दूध और चावल का प्रसाद जीमाया। इतने में उसकी दृष्टि पूँछ कटे बच्चे पर पड़ी। उसने उसको प्रसाद दिया और प्रणाम किया। वह बहुत खुश हो गया और बहन को आशीर्वाद दिया और कहा कि- कोई भी नागदेवता तुझे नहीं काटेंगे और एक मणि की माला भी उसे दे गये। और जाते-जाते कह गये कि श्रावण महीने की नागपंचमी के दिन जो भी महिलाएँ भाई मानकर नागदेवता का प्रेम सहित पूजन करेंगी, तो हम सब उनकी रक्षा करेंगे।

हरियाली अमावस व्रत कथा

एक भाई ने एक बेन, ने एक भोजई थी। भोजई सतवन्ती थी। धारती असो काग करी लेती। वणी भोजई का हामे नणद को जनम वियो थो। दो एक मईना की वी ने माँ मरीगी। नणद ने मोटी करी। भई भोजई दोई हऊ राखे। बेन आठ-दस वरस की वईगी। तो भई कजन क्यों नाशप वईग्यो लुगई पे। दूसरो व्याव करवा ने राजी वइग्यो। लुगई बोली के आप नाराज वईग्या तो दूसरो ब्याव करी लो भलेई पण म्हने ताड़ो मती। दो रोटी खऊँगा ने आपका घर को काम करिया करूँगा। म्हारे तो पीयर में कोई कोनी। वणे दूजो ब्याव कर् लिदो। छोटी लुगई वणी बापणी ने ठण्डी वासी रोटी दई दे ने वा ठामड़ा बुवारा करे। वणी नणद के हरियाली अमावस को वरत अयो। वसा बोली के मूं हरिया बुढ़िया बोवा ने जऊँगा तो म्हारे फुल्ला पाड़िहो। छोटी भोजई बोली- जा पाड़ोसी का घरे चली जा। वा थारे फुल्ला पाड़ी देगा। पाड़ोसी का घरे गई। पाड़ोसण ए किदो के म्हारे तो नरी छोरीयाँ जाएगा। तू भी लई जाजे फूल्ला भूंगड़ा। वा हरिया बुदिया बोवा ने जाबा लागी, तो वणे भोजई ने किती म्हने लीलो लुगड़ो दईदो? म्हारे तो लुगड़ो इ कोनी छोटी भोजई से लेई ले। छोटी भोजई लुगड़ो तो लई, पण दो-चार टपका तेल का पल्ला पे लगई लई। अबे वा हरिया बुदिया वई ने घरे अई, ने लुगड़ो लई ने भोजई ने दई दिदो। भई रोटी खावा ने घरे आयो। तो लुगई ए किदो के थांकी बेन म्हारो लुगड़ो तेल मे करी ने लियई, तो या तलवार लई जाओ ने अणी का खुन ती म्हारी चुदड़ी रंगी ने लाओ। भई बेन ने लई ने जावा लागो के चाल म्हारा हांते। बेन बोली वात कई है? के थारी भाभी को लुगड़ो थें खराब कर दिदो, तो थारा खुन को लोट्यो भरी ने लऊंगा जदी का चुंदड़ी रंगेगा। नणद ए झट मोटी भोजई ने जई ने किदो। अथे म्हने मारी लाखेगा। भोजई एक सब हुणी लिदो थो। किदो के मरीजा जा तू भी दुख ती छुटी जाएगा। ने थने रोई-रोई ने मूं भी मरी जऊंगा। अपणा दोई को पापो कटी जाएगा। द दोई सुख ती रेगा बिचारा। वन में ग्या तो चारी आड़ी मनख इज मनख। जंगल में सब काम करी रिया। पाछा फरी ने घरे आया। छोटकी लुगई के, क्यों चलीया आय? रांड लोग देखेनी। घर में खाड़ो खोदी ने जीवती ने मार लाखुँगा। आज अमावस है। भई खाड़ो खोदे ने छोटी भोजई गारो लाखे। खाड़ो खोदवा लागा तो वणी मे ती आवाज अई के 'धीर से खोद जो म्हारे लागी जाएगा'। छोटकी डरीगी । वणी खाड़ा में ती अमावस माता लिकरी ने बईग्या। ने बोल्या के वणी मोटकी ने बुलाव। मोटकी भोजई अई वा पगे पड़ी तो अमावस माता ए आशीर्वाद दिदा - के सीरी रीजे, सपूती रीजे, दूद पूत ती भरी पूरी रीजे। फेर कीदो के थारा देखता यो पाप क्यों छाई रियो है। वा बोली- म्हारो अणी घर में गुजारो बड़ी मुस्किल ती वई रियो है। असा अणी दुख ती तो म्हाका दोई को मरनोज हऊ है। भई बोल्यो- थाने कई दुख है? रोजी हीरो पुड़ी खई रिया हो। एक भई मैं तो कई नी खइरिया, मैं तो हवेर का रोटा हांजे ने हांज का रोटा हवेर। छोटका भाभी ने पन्या ने चार-पाँच साल वइग्या, म्हाए तो उन्नी साग-रोटी का दर्शन इज नी करया। वणी घणी की आख्यां खुलीगी। के मूं अणी रांड ती ब्याव नी करतो तो म्हारी बेन ने, ने म्हारी लुगई ने दुख नी वेतो। भई

ने रीस लागी तो वणी छोटी लुगई ने गाड़वा लागो। मोटकी लुगई ने बेन पगे पड़वा लागा के अभे यो मारवा को पाप माथे क्यों लो। छोटकी झट वणी मोटकी के ने नणद के पगे पड़ीगी, ने केवा लागी के म्हारा ती जो गलेती वईगी अभे म्हने माफ कर दो। हे अमावस माता! वणी मोटकी भोजई पे टूटा असा सकल ने टूटजो। ने छोटकी ने टूटा असा कीने भी मत टूटजो।

भावार्थ

एक भाई–भाभी और एक बहन थी। भाभी सतवन्ती थी। मन में जो धारणा कर लेती, ऐसा काम कर लेती थी। ननद का जन्म भाभी के सामने ही हुआ था। दो महीने की हुई और माँ का देहान्त हो गया। भाई–भाभी ने उसका पालन–पोषण किया। बहन बड़ी हुई। भाई किसी बात को लेकर भाभी पर नाराज हो गया, तो भाभी ने कहा– आप नाराज हो गये हो तो दूसरी शादी कर लो, लेकिन मैं कहीं जाऊँगी नहीं, क्योंकि मेरा तो मायके में कोई है ही नहीं। आपके घर का कार्य करूँगी और दो रोटी खाऊँगी। भाई ने गुस्से में दूसरे शादी कर ली। छोटी औरत आते ही अपना रुतबा जमाने लगी। बेचारी बड़ी घर का सारा कार्य करती और उसके बदले उसे ठण्डी–बासी रोटी दे देती।

एक दिन हरियाली अमावस का व्रत ननद को था। ननद ने कहा– मैं हरिया बुदिया बोने जा रही हूँ, मेरे लिए धानी पाड़ दो। छोटी भाभी ने कहा– जा, पड़ोसी के यहाँ चली जा। वह तेरे लिए धानी पाड़ देगी। वह पड़ोसी के यहाँ गई तो पड़ोसन ने कहा– मेरे यहाँ से बहुत सारी लड़कियाँ ले जाएँगी, तू भी ले जाना धानी (चने पड़े हुए)। ननद हरिये बुदिये बोने जाने लगी तो बड़ी भाभी से कहा– मुझे हरे रंग की ओढ़नी दे दो। उसने कहा– मेरे पास तो हरे रंग की ओढ़नी नहीं है, छोटी भाभी से ले ले। छोटी भाभी ओढ़नी तो लाई, पर उसके ऊपर दो–चार तेल की बूँदें डालकर ले आई और ननद को दे दिया। ननद ओढ़नी लेकर गई और हरिया बुदिया बोकर वापस घर आई और ओढ़नी लेकर भाभी को दे दी।

भाई भोजन करने बैठा तो उसकी पत्नी ने कहा– तुम्हारी बहन मेरी ओढ़नी तेल में गन्दी करके ले आई, अब इसी के खून से मेरी ओढ़नी रंग कर लाओ। भाई ने तलवार निकाली और बहन से कहा– मेरे साथ चल। बात क्या है? तेरी भाभी की ओढ़नी तूने खराब कर दी, इसलिए तेरे खून का लोटा भरकर लाऊँगा, जब तेरी भाभी ओढ़नी रंगेगी। ननद ने जाकर बड़ी भाभी से कहा– अब मुझे मार डालेंगे। भाभी ने तो पहले ही सुन लिया था। उसने कहा– जा, मर जा। इस दुख से तो अच्छा है। तुझे रो–रोकर मैं भी मर जाऊँगी। ये दोनों सुखी हो जाएँगे। बहन को लेकर भाई जंगल में गया तो चारों ओर मनुष्य ही मनुष्य दिखाई दिये। वापस घूम–फिरकर घर आये तो पत्नी बोली– वापस क्यों आ गये? अरी दुष्ट! बाहर मनुष्य देख रहे हैं। घर में ही गड्ढा खोदकर जीवित ही इसे गाड़ देंगे।

अमावस का दिन था। भाई गड्ढा खोदने लगा और भाभी मिट्टी फेंकने लगी। गड्ढा खोदने लगे तो उसमें से आवाज आने लगी 'गड्ढा धीरे से खोदना मुझे लग जायेगी'। छोटी भाभी डर गई। उस गड्ढे में से अमावस माता निकली और बाहर आकर बैठ गई। कहने लगी– बड़ी को बुलाओ। बड़ी भाभी आई, अमावस माता के पाँव छुए। उन्होंने आशीर्वाद दिया– सीली रहना, सपूती रहना, दूध पूत से भरी रहना। तेरे देखते हुए ये पाप क्यों हो रहा है? उसने कहा– मेरा इस घर में गुजारा बड़ी मुश्किल से हो रहा है, इस दुख से तो हम दोनों का मरना ही अच्छा है। भाई ने कहा– तुम्हें क्या दुख है, रोज हलवा–पूड़ी खा रही हो। बहन बोली– हम तो कुछ भी नहीं खा रहे, शाम का खाना सुबह और सुबह का खाना शाम को मिल रहा है। छोटी भाभी की शादी हुई है, जबसे हमने गरम रोटी के दर्शन भी नहीं किये। उस भाई की आँखें खुल गईं। मैं इससे विवाह नहीं करता तो मेरी बहन और मेरी पत्नी को इतना दुख नहीं होता। भाई को गुस्सा आया तो छोटी पत्नी को गाड़ने लगा। बहन और बड़ी पत्नी उसके पैर छूने लगे कि ये मारने का पाप सिर पर क्यों ले रहे हो। छोटी भाभी जल्दी से ननद और उस बड़ी के पाँव में गिर गई और कहने लगी कि– मुझसे जो भी गलती हो गई, अब मुझे माफ कर देना। अमावस माता उस बड़ी पर प्रसन्न हुई, ऐसे ही सब पर प्रसन्न होना।

अधिकमास व्रत कथा

अधिकमास में चार लुगायां पूजा करवा ने जाती थी। नदी ने न्हई ने पूजा करती। ने रोज चुगो लाखती। चुगो रोज चार चरकली चुगवा ने आवती। तो आमे–सामे सब पुछवा लागी के बई तम बरत कसतर करो? एक बोली– मैं तो उपास इज करूं, एक टेम फरियाल करूं। दूसरी बोली मैं तो एक टेम रोटी खऊं, तिसरी बोली के म्हारे तो याद इज नी रे एक दन खइलू तो दो दन नी खऊं। चोथी बोली– मैं सो रोज इज खऊ, म्हारे तो याद इज नी रे, पूजा रोज करूं। म्हारे नेम कोनी। इन सबकी बातां वी चारी चरकलियाँ सुनती थी। चारी ए मनसोबो कर्‌यो के आपने बी बरत करां। विनमे से एक चाँवल खई लेती ने वा। दूसरी बोली के हुँतो एक दन खइ लूँगा ने एक दन नी खऊंगा। तीसरी उपासइज करती। चोथी चीड़ी देखी ने बोली के अपने रोज कुण चाँवल लाखेगा रोज खइलां ने वा। चारी चरकली ए प्राण तजो। ने एक सेठ घरे जनम लिदो। वठे वी चारी बेना बणी। वणी सेठ का घरे सबती बड़ी बेटी थी, बीने लखपती घरे परणई। वा रोज उपास करती थी। दूसरी ने सेठ घर परणई। तीसरी ने पटेल घरे परणई। ने चोथी ने करसाण घरे परणई। वा दाड़की करे ने पेट भरे। एक भई थो। भई को व्याव आयो तो माँ देखी ने बोली के मैं एकली हूँ। बेन होने के काम करवां के लिया। बड़ी बेन के भई लेवा ने गयो। बड़ी बेन बोली के म्हारा घरे तो लेन–देन चाले मैं तो अबी नी अऊं। एक–दो बाना वइ जाएगा। जदी अइ जऊँगा। वां

से सेठाणी बेन घरे गयो, म्हारे तो हिसाब–किताब करनो म्हारा से बी अबी नी अवाएगा। मैं फरे अई जऊँगा। वां से पटलन बेन घरे गयो, म्हारे तो सवायो डेढ़ो नाज–पाणी देणो–लेणो म्हारा घरे घणो काम अबी नी अवाय, फेर अई जऊँगा। चोथी बेन गरीब थी। विका घरे गयो, बड़ी खुसी–खुसी हुईगी। भई आयो, छोरा–छोरी केवा लागा मामाजी अईग्या–अईग्या। बेन के कियो, बेन ब्याव में चलनो है। बई के काम की भोत आफत पड़ी री है। बेन झटपट तैयार हुईगी, गरीब थी। भई का सांथे छोरा–छोरी लइके चाली पड़ी। जीयाजी से कई दियो के तम भी जल्दी अई जाजो, काम करनो पड़ेगा।

बेन मईना भर पेला गई। सब ब्याब को नाज–पाणी बीणणो–चुणानो कर्‌यो। भई बाने बैठ्यो। माँ ए किदो देख घर को ध्यान राखजो। बरतन बासण कोई लई नी जाय। जीयाजी ने भी काम संभाली लियो। दो–एक बाना वीया ने वा पटलन अई। पटलन का छोरा–छोरी दूद पीये, ने छोटी बेन का छोरा–छोरी ने कई नी पावे। फेर सेठाणी अई। सेठणी बेन का आला–झाला करे, ने वा छोरी वरतन मांजे। फेर लखपती बेन अईगी। फेर सब बोल्या के राणी साब अईग्या–अईग्या। वणको आवभगत करे, सब आगे–पिछे फिरे। भई उगली ग्यो, बान होवा लागीग्यो। बड़ी बेन ए गला को हार बान में दीयो। सेठानी ए गला को डोरो कर्‌यो, पटलन बेन ने कमर को कंदोरो कर्‌यो। छोटी बेन का कने कईं नी थो, वणे पाँच रुपया वान करी दीदा। तीनी जमई वणी छोटा जमई ने काम भाखे, बिचारो सबको काम करी दे। विने बरात मे भी नी लईग्या। तम सो यां को काम सभालजो। परणी के बरात घरे अईगी। तो सब बेनवी बोल्या के अब हम जावां। जीयाजी के कपड़ा लाया। बेन के साड़ीयाँ लाया बेन के बिदा कर दी। दूसरा के जाणो जमई के गला को डोरो बणई ने दीदो, बेन ने रकम बणई ने दी। ने उनके बिदा कर्‌या। तीसरे के जाणो वणी के कपड़ा लाया, जमई के सापो लाया, ने उनके बिदा कर्‌या। छोटी बेन बोली म्हारे मईनो भर वइग्यो म्हारे बी जाणो। भई दो लुगड़ा लई आयो, छोरा–छोरी के भी कई नी दीदो। लुगड़ा दई दिया के कियो के पेरे इतरे पेरजे ने फेर गोदड़ी पे चढ़ई दीजे।

वणी बेन ने रीस अई, सबके दो–दो हजार, चार–चार हजार को माल दियो ने म्हारे दो लुगड़ा? मैं गरीब हुं तो हुँ। थारा भाव ती तो सब सरीका। भई बोल्यो के– थारा किस्मत इज ऐसा, मैं कई करुं। कां का बामन ए म्हारा किस्मत देख्या, बुलाओ उना बामण के म्हारा किस्मत देखऊँगा। बामण के बुलायो– विने कियो के थारी जनम कुण्डलीज ऐसी मे कई करूं? बामण ए कियो– बुलाओ चारी बेन होन के। बेनां ने बुलावा गया तो बेनां बोली के हम अबी तो अई? भई, कई हुओ? बेन होन अईगी। बामण बोल्यो के भई कुमार घर से चार कुण्डा मंगाओ, चारी कुण्डा मे कोयला भर दो ने चारी बेना के सिराणे मेल दो। भई ने सब बेनां का सिराणे रखी दीदा। बड़ी बेन का कुण्ड में हीरा, मोती, मोहरां, असर्फी भरइग्या। दूसरी बेन के सोना, चाँदी से भरईग्यो। तीसरी के गऊ जुवार से भराणो। ने चोथी के कोयला ज निकल्या। चारी बेन के बामण ए वतायो

के- देखो, थाका चारी का किस्मत! तो छोटी बोली के- म्हारा किस्मत ऐसा क्यों? तम चारी बेनां अदकमास न्हई री थी। एक ए उपास कर्‌यो, दूसरी ए एक टेम खादो, तीसरी ए एक दन खादो ने एक दन कई नी खादो, चोथी ऐ रोज खादो। यो तमारा पून से ऐसो मिलयो। जैसो जणे बरत कर्‌यो ऐसो फल मिलिग्यो। किस्मत देखी ने सब अपणा-अपणा घरे अईगी। ने वा छोटी बेन बी चलीगी।

भावार्थ

अधिकमास का समय था। चार औरतें रोज पूजा करने जाती थीं। नदी पर नहा-धोकर पूजा करतीं और चिड़ियों को चूगा डालतीं। चूगा (दाना) रोज चार चिड़ियाँ चुगने आतीं। औरतें आपस में पूछने लगीं कि- बहन! तुम ये व्रत कैसे करती हो? एक बोली- मैं तो उपवास करती हूँ, एक समय फलाहार करती हूँ। दूसरी बोली- मैं एक समय भोजन करती हूँ। तीसरी बोली- मुझे तो याद ही नहीं रहता, एक दिन खा लेती हूँ तो दो दिन नहीं खाती हूँ। चौथी बोली- मैं तो रोज ही खा लेती हूँ, मुझे तो याद ही नहीं रहता। पूजा रोज करती हूँ, मेरा कोई नियम नहीं है। इन औरतों की बातें ये चारों चिड़ियाँ सुन रही थीं। इन चारों ने सोचा कि अपन भी व्रत करें। उनमें से एक चिड़िया चावल खा लेती, दूसरी एक दिन खाती और दो दिन नहीं खाती, तीसरी उपवास करती, चौथी चिड़िया बोली- अपने को रोज कौन चावल डालेगा, रोज खा लें।

एक दिन चारों का प्राणान्त हो गया। फिर उन्होंने एक सेठ के यहाँ जन्म लिया। वहाँ चारों बहनें बनीं। सेठ ने चारों लड़कियों की शादी कर दी। सबसे बड़ी लड़की की शादी लखपति के यहाँ कर दी वह रोज उपवास करती। दूसरी की शादी सेठ के यहाँ कर दी। तीसरी की पटेल के यहाँ और चौथी लड़की की एक किसान के घर शादी कर दी। सबसे छोटी मजदूरी करके अपना गुजारा करती थी। एक भाई था। उसकी शादी करना थी। माँ देखकर बोली- मैं अकेली हूँ तो बहनों को काम करने के लिए ले आ। बड़ी बहन को भाई लेने गया। बहन बोली- मेरे यहाँ तो लेन-देन का काम है, मैं तो अभी नहीं आ सकती। एक-दो दिन हल्दी लग जायेगी, तब आऊँगी। वहाँ से सेठानी बहन के यहाँ गया, उसने कहा कि- मेरे यहाँ तो साहूकारी का काम है, हिसाब-किताब का काम है, मैं अभी नहीं आ सकती, फिर आ जाऊँगी। वहाँ से पटलन बहन के यहाँ गया, उसने कहा- मेरे यहाँ तो सवाया-डेढ़ा अनाज, पानी देना-लेना, मेरे यहाँ तो बहुत ही काम है, बाद में आ जाऊँगी। चौथी बहन गरीब थी। उसके यहाँ गया। वह बहुत खुश हो गई- 'भाई आया, भाई आया'। बच्चे सब कहने लगे- 'मामाजी आ गये, मामाजी आ गये'। बहन को कहा- बहन! शादी में चलना है। माँ को काम की बहुत ही तकलीफ हो रही है। बहन झटपट तैयार हो गई। भाई के साथ बच्चों को लेकर चल दी। जीजाजी से कह दिया कि तुम भी जल्दी आ जाना। काम करना पड़ेगा।

बहन एक महीने पहले चली गई। शादी का सारा काम निपटा दिया। भाई को हल्दी लगी। माँ ने छोटी बहन को कहा- देख, घर का ध्यान रखना। कोई भी वस्तु लोग ले न जाएँ। जीजाजी भी आ गये। उन्होंने भी काम सँभाल लिया। दो-एक बाने हुए तब पटलन बहन आई, उसके बच्चे तो दूध पीयें और छोटी बहन के बच्चों को कुछ भी नहीं मिले। फिर सेठानी बहन आई। सेठानी बहन का आव-आदर किया और छोटी बर्तन माँजे। फिर लखपती बहन आई। उसका अच्छा आदर-सत्कार हुआ, सब लोग आगे-पीछे घूमने लगे। भाई घोड़ी चढ़ा। शादी हुई। बहू आई। तो बड़ी बहन ने भाभी को गले का हार दिया। सेठानी बहन ने गले की चेन दी। पटलन बहन ने कमर की करधनी दी। छोटी बहन के पास कुछ भी नहीं था, उसने पाँच रुपये दे दिये। तीनों दामाद उस छोटे दामाद से काम करवायें। बेचारा गरीब सबका काम कर देता। उसे बारात में भी नहीं ले गये। उससे कहा- तुम तो यहाँ का काम सँभालना। शादी करके सब जीजाजी बोले कि- अब हम जाएँ? जीजाजी को कपड़े लाये, बहनों को साड़ियाँ लाये। किसी को गले की चेन दी तो किसी दामाद को साफा दिया। ऐसा करके सबको विदा किया।

छोटी बहन देखकर बोली कि- मुझे तो एक महीना हो गया है, मुझे भी जाना है। भाई दो लुगड़े लेकर आया। बच्चों को कुछ भी नहीं दिया। दोनों लुगड़े (साड़ी) दे दिये और कहा कि- पहने जितना पहनना फिर गुदड़िया पर चढ़ा देना। उस बहन को गुस्सा आया। सबको दो-दो, चार-चार हजार का माल दिया और मुझे दो साड़ी। मैं गरीब हूँ तो क्या? तेरे लिये तो सब बराबर हैं। भाई बोला- तेरे तो भाग्य ही ऐसे हैं। मैं क्या करूँ? कौन-से ब्राह्मण ने मेरे भाग्य देखे? बुलाओ उस ब्राह्मण को, फिर से मेरे भाग्य दिखाऊँगी। ब्राह्मण को बुलवाया गया। उसने कहा- तेरी तो जन्मकुण्डली ही ऐसी है। मैं क्या करूँ? ब्राह्मण ने कहा- बुलाओ चारों बहनों को। बहनों को बुलवाया। बहनें बोलीं- हम अभी तो आये हैं। भाई! क्या हुआ? बहनें आ गईं। फिर ब्राह्मण बोला कि कुम्हार के यहाँ से चार कुण्डे मँगवाओ। चारों कुण्डों में कोयले भर दो और चारों बहनों के सिरहाने रख दो। भाई ने सब बहनों के सिरहाने कुण्डे रख दिये। बड़ी बहन के कुण्डे में हीरा-मोती मोहरें-अशरफी भरा गये, दूसरी बहन के सोना-चाँदी से भरा गये। तीसरी बहन के गेहूँ-ज्वार से भरा गये और चौथी के कोयले ही निकले। चारों बहनों को ब्राह्मण ने बताया कि- देखो, तुम्हारे चारों के भाग्य! तब छोटी बहन बोली कि मेरे भाग्य ऐसे क्यों? ब्राह्मण बोला- तुम चारों बहनों ने अधिकमास का स्नान किया था। एक ने उपवास किया, दूसरी ने एक समय खाया, तीसरी ने एक दिन खाया और दो दिन नहीं खाया तथा चौथी ने रोज खाया। ये तुम्हारे पुण्य का फल है। जिसने जैसा व्रत किया, वैसा फल मिला। भाग्य का फल देखकर सब अपने-अपने घर आ गईं और वह छोटी बहन भी चली गई।

काजली तीज व्रत कथा

सात भई था ने एक बेन थी। सात इ भोजायां ने नणद के सातूड़ी तीज को वरत थो। दन भर का भूख का मारे बेन उदास वइगी। तो भई देखी ने बोल्या– म्हाकी बेन तो चन्दरमा लिकरे जद तक तो भूख का मारे मरी जाएगा। अजी ने सातू खावा ने दइ दो। तो भोजायां बोली– चन्दरमा देख्या वना सातू नी खाय। तो भई बोल्या– मैं दो भई ऊँचा मगरा पे जई ने एक भई चारा को पुरो बारे, ने दूसरो भई पीतल की चान्नी बतावे। भोजायां बणी नणद ने के उठो बाईसा चन्दरमा की पूजा कर लो ने दरसण कर लो। नणद ए झट पूजा करी ने दरसन कर्‌या। भाभीजी आप भी पूजा कर लो। ने दरसण कर लो। भोजायां बोली– बाईसा! चन्दरमा सीपर आप वाते ज लिकर्‌यो है। म्हाका वाते कोनी। नणद सीदी–सादी ने भोली थी। वा कई नी जाणती थी। बोली के वा जदी ठीक है। म्हारो सातू ने पावसी लूं। नणद सातू पावस्यो ने पेलो कवो लिदो तो वणी में बाल आयो, इजो लिदो तो वणी ने भी बाल आयो, तीसरो कवो लेता इ वणी का सासरा ती बुलावो अईग्यो। भोजायां वणी नणद ने भेजवा की तैयारी करवा लागी। भोजई ए पेटी खोल तो सबसे पेला कालो कपड़ो निकल्यो। नणद बोली– भाभी! यो कई? भाभी बोली– कई नी ऊपर पड़्यो थो तो निकलीग्यो वेगा। नणद ने सासरे मेली। सासरे पोंचा तो घर का आंगणे नरा मनख बैठा था। वा देखी ने बोली के यो कईं वईग्यो? घर में गई तो वणी ने मालम पड़्यो के वणी को ज सुवाग नी रीयो। सब लोग केवा लागा चालो भई अभे लई चाला, तो वा अपणा पति ने पकड़ी ने वईगी। ने लइ जावा नी दे। तो सब आदमी हेरान बइग्या ने चलया ग्या। वा अपणा पति ने लई ने वन में जाती रही, ने एक झाड़का नीचे बैठीगी। हर मईने तीज माता आवे ने वा वणा का पग पकड़े। तो सब तीन एक दूसरी ने बतावे, के पाछी आवे वणी तीज माता का पग पकड़जे। वा थारो काम करेगा। यू करता–करता सावण मईना की तीज माता आया। वणा का पग पकड़ी ने रोवा लागी, गीड़–गीड़ावा लागी। आप म्हारो सुबाग सरजीवन करो। तो सावणी तीज माता बोल्या– म्हारा पग पड़वा ती कई वे? भादवा मइने गाजता थका विकराल रूप में तीज माता पधारे वणा का पग काठा पकड़ी लिजो वीज थाको सुवाग अमर करेगा। भादवा मईना की तीज माता को दन आयो। तीज माता पधार्या तो वा निडर वई ने वणा का पग पकड़ी ने बैठीगी। ने विनती करे के म्हारो सुवाग अमर करो में कई एसी गलती करी जो म्हारा हाते यो अन्याय करयो। तीज माता झट घुस्सा मे बोल्या– अरे दुष्टणी! तू वना चन्दरमा देख्या सातू पावसी लिदो, ने पूजा कर ली दी। वणी ज यो फल है। वा बोली– में कई जाणुं? म्हने म्हारा भई–भोजई ए जेसो वरत करायो एसो कर्‌यो। तीज माता! ए वणी का सब गुना माफ करी ने वणी पे परसण वइ ने वणी का सुवाग ने सरजीवन कर्‌यो। ने बोल्या के वना चन्दरमा देख्या तीज की पूजा कदी मत कर जो ने कदी सातू मत पासवजो। वा बेन अपणा आदमी ने लई ने घरे गई। घर वाला ए वणा ने हऊ ठाठ–बाट ती वदाया। तीज माता बणी बेन ने पाछे से टूटा असा सबने टूट जो।

भावार्थ

सात भाई की एक बहन थी। बहन बहुत ही लाड़ली थी। सातों भौजाइयों और ननद को सतूड़ी तीज का व्रत था। दिन भर की भूख के कारण बहन बहुत ही उदास हो गई थी। भाई देखकर बोले– हमारी बहन तो चन्द्रमा निकलेगा, तब तक तो भूख के मारे मर जायेगी। इसको सत्तू खाने को दे दो। भौजाइयों ने कहा– चन्द्रमा देखे बिना सत्तू नहीं खाते। भाई बहुत दयालु थे। उन्होंने कहा– एक भाई ऊपर टापरे पर चढ़कर घास का पूला जलायेगा और दूसरा भाई उसे पीतल की चालनी बतायेगा। भाइयों ने ऐसा ही किया। भौजाइयाँ उस ननद से बोलीं– उठो बाई साहब! चन्द्रमा की पूजा करके दर्शन कर लो। बाई साहब ने चन्द्रमा के दर्शन किये और पूजा की। ननद ने कहा– भाभीजी! आप लोग भी पूजा कर लो। भौजाइयाँ बोलीं– बाई साहब! चन्द्रमा सिर्फ आपके लिए ही निकले हैं, हमारे लिए नहीं। ननद सीधी–सादी और भोली थी। वह कुछ भी नहीं जानती थी। उसने कहा– ठीक है, मेरा सत्तू मैं पास लेती हूँ। ननद बाई ने सत्तू पासा और पहला कोर लिया उसमें बाल आ गया, दूसरा लिया उसमें भी बाल आ गया, तीसरा कौर लेते ही उसके ससुराल से बुलावा आ गया। भौजाइयाँ उसे ननद को पहुँचाने की तैयारी करने लगीं।

एक भौजाई ने उसकी पेटी खोली तो सबसे पहले काला कपड़ा निकला। ननद बोली– भाभी! ये क्या? भाभी बोली– कुछ नहीं, ऊपर पड़ा था तो निकल गया होगा। ननद को ससुराल पहुँचाया। ससुराल पहुँची तो वहाँ जाकर देखा कि घर के आँगन में बहुत सारे लोग बैठे हैं। वह बोली– ये क्या हो गया? घर के अन्दर गई, तब उसे मालूम पड़ा कि मेरा ही सुहाग नहीं रहा। सब लोग कहने लगे– अब तो बहुत देर हो गई है, अर्थी को ले चलो। तो वह अपने पति को पकड़कर बैठ गई। ले जाने नहीं दिया। सब लोग परेशान होकर चले गये। वह अपने पति को लेकर जंगल में चली गई। एक वृक्ष के नीचे बैठ गई। हर महीने की तीज माता आती, तो वह उनके पैर पकड़कर बैठ जाती। सब तीज माता एक दूसरे को बताती जो पीछे आ रही है, उस तीज माता के पैर पकड़ना। वह तेरा काम करेगी। ऐसे करते–करते श्रावण महीने की तीज माता आई। उनके पैर पकड़कर रोने लगी, गिड़गिड़ाने लगी– आप मेरे पति को जीवनदान दे दो। तब श्रावणी तीज माता बोली– मेरे पैर पकड़ने से क्या होता है? भादवा महीने गरजते हुए विकराल रूप में तीज माता आती है, उनके पैर कट्ठे पकड़ लेना, वही तुम्हारा सुहाग अमर करेंगी।

भादवा महीने की तीज माता का दिन आया, वह निडर होकर उनके पैर पकड़कर बैठ गई और विनती करने लगी कि– मेरे सुहाग को अमर कर दो। मैंने ऐसी कौन–सी गलती की जो मेरे साथ ऐसा अन्याय किया? तीज माता प्रगट हुई और बोली कि– अरी दुष्टनी! तूने बिना चन्द्रमा देखे सत्तू पास लिया और पूजा कर ली। उसका ही ये फल है। मैं क्या जानूँ? मेरे भाई–भौजाई ने जैसा व्रत करवाया, ऐसा कर लिया। तीज माता ने उसके सब अवगुण माफ करके

उसके पति को सरजीवन कर दिया और कहा कि- बिना चन्द्रमा देखे तीज की पूजा कभी मत करना और कभी सत्तू मत पासना। वह बहन अपने पति को लेकर घर गई। घरवालों ने बहुत ठाठ-बाट से उनका स्वागत किया। पूरे नगर को भोजन करवाया।

तीज माता! उस बहन पर प्रसन्न हुई, ऐसे सब पर प्रसन्न होना।

लीमड़ी व्रत कथा

एक कोड़्यो ने वणी की लुगई थी। वा लुगई पति वरता थी। कोड़्यो घर की चीज लइने रोज वेश्या घरे जातो थो। यूं करता-करता बारा मईना वीती ग्या। भादवा मईना की तीज थी। मुसलधार पाणी पड़ी रियो थो। कोड़्यो वणी की लुगई ने बोल्यो के चाल म्हने वेश्या घेर छोड़ी ने आव। लुगई झट वणी कोड़्या ने खांदा पे बेठई ने वेश्या घरे छोड़वा ने गई। रोज उ केतो जदी घरे आवती थी। वणी दन उ केणो भूलीग्यो। वा वठे ज पाणी का पनाल नीचे उबी री, पाणी वणी का माथा पे ज पड़ी रियो थो। वणी कोड़्या ने थोड़ी देर बाद याद आयो- अरे आज मे वणी ने जावा को नी किदो। वा वठे ज उबी वेगा। उ अई ने देखे तो वा वठे ज उबी। वणे किदो अभे घरे जा। मूं तो भूली ज ग्यो थो। वा घरे आवा लागी। तो रस्ता मे एक नदी पड़े। वणी का मायते लीमड़ी ने सातू बइ ने अई रियो थो। वणी लीमड़ी में ती अवाज आवे, घर को सब पूजापो पाणी मे बइ ने ग्यो है। तो तू अणी नदी मे से लीमड़ी ने सातू लई जई ने पूजा कर ले। वणे वा लीमड़ी, सातू, पूजापो घरे लई-जई ने पूजा करी। अतरा मे तीज माता ए वणी आदमी की बुधी फेरी। कोड़्यो वेश्या घर ती खुद को सब समान लइने घरे अईने सांकल वजई। तो लुगई वारणो खोली ने देखे तो पुछे- कई? मे अभे वठे नी जऊँगा। अठे ज रुंगा। यूं करता-करता थोड़ा साल बाद वणी कोड़्या की लुगई मरीगी। उपर ती वेवाण लेवा ने आयो तो वणी की आत्मा बोली- मे एकली तो नी चालू। म्हारा आदमी ने भी लो। आदमी बोल्यो- मे एकलो नी चालू, म्हारा साते तो वेश्या भी चालेगा। वीने भी लो। तो वेश्या बोली- म्हारा तो सब इज पति हे। आखो नगर। वणा सबने लो तो चालू? तो धरमराज वणी कोड्या की लुगई की पतिवरत वरत देखी ने आखा नगर ने लई ने वेकुण्ठ-धाम चलया ग्या ने कई ग्या- एक सती नगर तारे, एक पापणी आखो नगर डूबोबो।

भावार्थ

एक कुष्ठ पति और उसकी पत्नी थी। पत्नी बहुत ही पतिव्रता थी। कुष्ठ पति घर की चीजें ले जाता और रोज वेश्या के यहाँ जाता था। ऐसे करते-करते एक साल बीत गया। भादवा महीने की तीज थी। मूसलाधार बारिश हो रही थी। कुष्ठ पति अपनी पत्नी से बोला कि- मुझे वेश्या के यहाँ छोड़ दे। पत्नी झट उस कुष्ठ पति को कन्धे पर बिठाकर वेश्या के घर छोड़ने गई। वह कहता

जब ही वह घर पर आती थी। उस दिन वह कहना भूल गया। वह वहीं पर बाहर पानी की पनाल के नीचे खड़ी रही। पानी उसके ही सिर पर गिर रहा था। उस कुष्ठ पति को थोड़ी देर बाद याद आया– अरे! आज तो मैंने उसे जाने का ही नहीं कहा, वह वहीं पर खड़ी होगी। उसने बाहर आकर देखा तो वह वहीं पर खड़ी थी। उसने कहा– अब तुम घर पर चली जाओ, मैं तो भूल ही गया था। वह घर पर आने लगती है, तब रास्ते में एक नदी आती है। उसके अन्दर एक नीम की डाली और सत्तू बहकर जा रहे थे। उस नीम की डाली में से आवाज आई– घर की सब पूजन की सामग्री नदी में बहकर जा रही है, तो तू इस लीमड़ी और सत्तू को घर ले जाकर इसकी पूजा कर लेना। वह औरत उस नदी में से पूरे पूजन की सामग्री निकालकर ले गई और उसकी पूजा की। इतने में तीज माता ने उस कुष्ठ पति की बुद्धि पलटी और वह वेश्या के यहाँ से अपना सारा सामान लेकर घर आया। घर का दरवाजा खटखटाया। उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला और उसके पति को देखा तो वह आश्चर्यचकित हो गई और पूछा कि– क्या बात है? उसने कहा– मैं अब वहाँ नहीं जाऊँगा, यहीं रहूँगा।

ऐसे करते–करते थोड़े दिनों के बाद उस कुष्ठ पति की पत्नी मर गई। यमदूत उसे लेने आये, तो उसकी आत्मा बोली– मैं अकेली नहीं जाऊँगी, मेरे पति को भी साथ लो। तो पति बोला– मैं अकेला नहीं जाऊँगा, मेरे साथ तो वेश्या भी जायेगी, उसको भी लो। तो वेश्या बोली– मेरा तो सारा नगर ही पति है, उन सबको साथ में लो तो मैं चलूँ? तब धर्मराज उस कुष्ठ पति की पत्नी का पतिव्रता धर्म देखकर सारे नगर को लेकर बैकुण्ठधाम चले गये और कह गये कि– एक सती सारे शहर को तारती है (पार लगाना) और एक पापिनी सारे नगर को डुबोती है।

उपछट व्रत कथा

दो भई–बेन था। बेन विधवा थी। पीयर मेज रेती थी। पीयर मे रेता–रेता बेन बुढ़ी वईगी। एक दन कांच में मुंडो देखीने बोली– मूं अभे बुढ़ी वईगी। अभे म्हने कायको डर नी। हामे पाड़ो बन्ध्यो थो। उ दाँत काड़ी ने बोल्यो– अबी कई वियो। अबे तो थारे नीच का पेट ती पाँच छः छोरा–छोरी वेगा। तो बेन ने बड़ो दुख वियो। एक दन वा बेन सांस चढ़ई ने हुईगी भोजई अई ने उठावा लागी– बाईजी! उठो, वा नी उठी। भोजई ए जई ने अपणा आदमी ती किदो, आपकी बेन मरीगी। गांम का लोग भेरा विया। बेन को चाल चलावो करयो ने लइग्या। और जई ने विश्राम दिदो। तो एक दम वना बादरा विजरा ती पाणी पड़वा लागो, गांम का लोग सब अपणा–अपणा घरे चलयाग्या। और वा बेन की लास थी वा नदी मे वई ने जाती री। बेन ने होस आयो तो बेन चिल्लाणी– म्हने वंचाओ–वंचाओ। अतरा मे नदी कनारे एक नीच उबो थो। उ के, के म्हारा ती घर

वसावे तो मे थने वंचऊ। झट वणी बेन ए हाँ कर दीदी। और वणी का हाँते घर वसई ने रेवा लागीगी। वणी का हाते रेता-रेता वणी बेन पाँच-छः छोरा-छोरी विया। भोजई के उपछट के वरत को उद्यापण थो। वणी की पड़सणा बोली के अणी वरत में नणद-भाणेज ने बुलावा ती घणो धरम लागे। तो भोजई बोली के म्हारे तो नणद बईसा सान्त वईग्या। तो एक पड़ोसण बोली- के थारी नणद नदी कनारे वणी नीच का घर में है। वणी का हांते रइरी है। तो भोजई नणद ने चुपचाप उपछट का उद्यापण को बुलावो दई ने अईगी। ने कियई के आप पछवाड़ा का बारणा ती छोरा-छोरी ने लई ने अई जाजो। उद्यापण में सबका जीमवा का बाद नणद भी छोरा-छोरी ने लई ने अईगी। भोजई नणद-भाणेज ने जीमई ने सब यूं को यूं छोड़ी ने हुइगी। छटमाता बेन-भाणेज ने जीमावा ती प्रसन्न वइग्या। जो ऐंठवाड़ा का कण वखर्या था वी सब होना-चाँदी का बइग्या। गारा का ठामड़ा था वी भी सब होना-चाँदी का वइग्या। हवेरे वणी को भई उठ्यो ने कचरो काड़वा लागो, पछाड़ी जई ने देखे तो ऐठवाड़ा बर्तन झगमग-झगमग करता नजरे आया। वणे अपणी लुगई ने उठई ने पुछ्यो- यो कई? इ सब कठें ती आया? तो भोजई झट पगे पड़ी ने बोली- के मे आपके छाने-छाने नणद-भाणेज ने जीमाया। वणी को यो फल है। छटमाता परसण विया। वणा कोज यो चमत्कार है।

भावार्थ

दो भाई-बहन थे। बहन विधवा थी। मायके में ही रहती थी। मायके में रहते-रहते वह वृद्ध हो गई। एक दिन काँच में अपना चेहरा देखकर बोली- मैं अब बूढ़ी हो गई हूँ। अब मुझे काहे का डर? तो सामने एक पाड़ा बँधा हुआ था। वह हँसकर बोला- अभी क्या हुआ! अभी तो तुझे नीच के पेट से पाँच-छह बच्चे होंगे, तो बहन को बहुत दुख हुआ। एक दिन वह बहन साँस ऊपर चढ़ाकर सो गई। भौजाई आकर उठाने लगी- बहन! उठो। वह नहीं उठी। भौजाई ने जाकर अपने पति से कहा- आपकी बहन मर गई। गाँव के लोग इकट्ठे हुए। बहन को ले गये और जाकर विश्राम दिया, तो अचानक बिना बादल-बिजली के पानी गिरने लगा। पानी इतना बरसा कि थोड़ी ही देर में नदी पूर आ गई और लोग सब अपने-अपने घर चले गये। बहन की लाश नदी में बहकर चली गई। बहन को जब होश आया तो वह चिल्लाई- मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। इतने में नदी के किनारे एक नीच खड़ा था। उसने उससे कहा- तू मेरा घर बसायेगी तो मैं तुझे बचाऊँगा। झट उस बहन ने हाँ कर दी। मुसीबत की मारी क्या करती? और उस नीच के साथ घर बसाकर रहने लगी। उसके साथ रहते-रहते उसको पाँच-छह बच्चे हुए।

भौजाई को उपछठ के व्रत का उद्यापन था, तो पड़ोसिन ने कहा- इस व्रत के उद्यापन में ननद-भाणेज को बुलाने से बहुत धर्म लगता है। भौजाई बोली कि- मेरी ननद का तो स्वर्गवास हो गया है। उसमें से एक पड़ोसन बोली कि- तुम्हारी ननद तो नदी किनारे उस नीच के घर में

है और उसके साथ आराम से रह रही है। पाँच-छह बच्चे भी हैं। तो भौजाई ने ननद को चुपचाप उपछठ के उद्यापन का न्यौता दिया और कहा कि- आप पीछे के दरवाजे से बच्चों को लेकर आ जाना। उद्यापन हुआ। ब्राह्मण भोजन हुआ। सबका भोजन होने के बाद ननद भी बच्चों को लेकर आ गई। भौजाई ने ननद-भाणेज को बड़े प्रेम से भोजन कराया और सब ऐसा का ऐसा ही छोड़कर जाकर सो गई। छठमाता बहन और भानेज को भोजन कराने से बहुत ही प्रसन्न हुई। जो जूठन के कण बिखरे हुए पड़े थे, वह सब सोने-चाँदी के हो गये। मिट्टी के बर्तन थे, वह भी सोने-चाँदी के हो गये। सबेरे उठकर भाई ने पीछे जाकर देखा तो जूठे बर्तन जगमग-जगमग करते नजर आये। उसने अपनी पत्नी को उठाया और पूछा- यह सब क्या है? ये सब कहाँ से आये? तब भौजाई ने पैर छुए और कहा कि- मैंने आपके चुपके-चुपके ननद-भाणेज को व्रत के उद्यापन में भोजन करवाया, उसी का यह फल है। छठमाता प्रसन्न हुई। उनका ही यह चमत्कार है।

गीध्या बामण व्रत कथा

एक बामण-बामणी था। वणा को परिवार खुब गरीब थो। तो बामणी बोली के अठे गांम में माँगवा ती पूरो नी पड़े, तो दूसरा गांम भी जाओ। तो बामण, बामणीने बोल्यो के काले मूं जऊँ तो म्हारा हाते रोटी बांध दीजे। बामणी ए बामण जावा लागा तो रोटी बांधी ने हाते दई दी। बामण घरती लिकर्‌यो चालता-चालता थाकीग्यो, एक बड़ला नीचे जई ने बईग्यो। वठे शंकर-पार्वती चोपड़ पासा खेलवा ने आया। शंकर-पार्वती बोल्या के अपणे पासा खेलांगा तो जीत-हार को हुंकारो कूण देगा? अतरा में उ बामण दिखीग्यो। तो शंकर-पार्वती बोल्या के- बामण! तू म्हाका पासा का जीत-हार को हूंकारो दीजे। बामण हाँ करी ने लालच का मारे पार्वतीजी ने जीतावा लागो। जीत का हूंकारा में- माताजी जीत्या ने पिताजी हार्या। तो भगवान बोल्या दो पार्वतीजी अणा ने इनाम। झट पार्वतीजी ए वींटी खोली ने दई दीदी। बामण वींटी लइने चाल्यो। वींटी पेरी ने नदी में हाथ धोना लागो तो वांटी नदी में पड़ीगी। बा वींटी एक मछली निकलीगी। बामण घरे ग्यो। बामणी ए पुछ्यो- कई लाया? वन में एक बाबा-बाबी चोपड़ पासा खेलीर्‌या था। वणा को हूंकारो भरवा में म्हने वणी बाबी ए एक वींटी दीदी थी वा भी नदी में पड़ीगी। दुसरे दन बामण फेर वणी वड़ला का नीचे आयो। फेर शंकर भगवान चोपड़ पासा खेलवा ने बैठा। फेर वणी वामण ए पार्वतीजी ने जीतई दीदा। माताजी जीत्या ने पिताजी हार्या। तो शंकर भगवान बोल्या- दो पार्वतीजी! अणी ने जीतवा को इनाम। पार्वतीजी ए झट हीरा-पन्ना भर्‌यो थको एक डन्डो दइ दिदो। उ डन्डो लइने बामण घरे जावा लागो, तो रस्ता में एक गुवाल मिल्यो उ बोल्यो- के म्हाराज बा! यो डन्डो म्हने दई दो तो मैं गायां घेरी ने लऊँ। गुवाल डन्डो लइने चलयो ग्यो। बामण घरे ग्यो। बामणी पुछे के आज कई लाया? तो बामण बोल्यो के आज भी मैं माताजी ने जीतायो तो म्हने एक डन्डो दिदो तो उ भी एक गुवाल लइग्यो, उ केवा लागो के म्हारे गायां घेरनी। बामणी

बोली– के आज ओर जाओ। बामण फेर ग्यो। वणी ज वड़ला का नीचे बैठी ने आराम करवा लागो। तो शंकर–पार्वती फेर वठे चोपड़–पासा खेलवा ने आया। चोपड़–पासा खेली रिया था तो फेर बणे पार्वतीजी ने जीताया। माताजी जीत्या ने पिताजी हार्या। शंकर भगवान बोला– दो पार्वतीजी! इने जीतवा को इनाम। पार्वतीजी झट से गला को नेकलीस खोली ने दई दिदो। बामण नेकलीस लईने चाल्यो तो रस्ता मे नदी कनोर नेकलीस मेली ने हाथ पग धोवा लागो। अतरा मे हेमरी अई ने नेकलेस तोकीगी। बामण घरे ग्यो तो बामणी ए पूछ्यो– आज कईं लाया? तो बामण बोल्यो के आज भी म्हने माताजी गला को नेकलीस खोली ने दीदो थो। उ भी हेमरी तोकी ने लइगी। बामणी बोली– आज आप बाबा ने जीता जो ने बाबी ने हरा जो। बामण फेर ग्यो। वणीज वड़ला का नीचे जई ने बैठो।

फेर शंकर–पार्वती चोपड़–पासा खेलवा ने आया। शंकर भगवान बोल्या के बामण म्हाका जीत–हार का हूंकारा दिजे। बामण बोल्या– के पिताजी जीत्या ने माताजी हार्या। तो भगवान बोल्या– के बामण! आज तू भूलीग्यो। बामण बोल्यो– नी आज मैं नी भूल्यो। पिताजी जीत्या बोल्या ने माताजी हार्या। तो पार्वतीजी बोल्या– दो भगवान! अणा ने जीतवा को इनाम। शंकर भगवान बोल्या– म्हारा कने कईं है? पार्वतीजी बोल्या– देणो तो पड़ेगा। शंकर भगवान झट जटा खोली ने खंकेरी तो वणी मे ती खाड़ा वारो तांबा को पइसो निकाल्यो। भगवान ए तोकी ने वणी बामण ने दिदो। म्हारा कने तो यो ज है। बामण पइसो लइने घरे आओ। बामणी ए पूछ्यो– कई लाया? तो बामण बोल्यो– रोज तो बाबी ने जीतावा ती किमती चीज मिलती, ने आज बाबा ने जीतावा ती यो तांबा को खाड़ा वारो पइसो मिल्यो। तो बामणी बोली– पइसो भंडारिया में मेल दो। पइसो मेली ने बामण–बामणी हुईग्या। तो हवेरे उठी ने देखे तो भंडारिया में हिरा–मोती झगमग–झगमग करिर्या। तो बामणी देखीने अचम्भा मे पड़ीगी के यो कई? तो बामण बोल्यो– वणी पइसा को कमाल है! बामण–बामणी पूजा करवा ने बैठा। तो उ गुवाल डन्डो लइने घरे आयो– लो म्हाराज बा! थांको डन्डो। म्हाराज डन्डो लई ने देखे तो उ भी हिरा–मोती से भर्यो थको। घरे डागला पे एक कागलो मछली लई ने बैठो, कागला ए मछली चीरी तो वणी मे ती एक वींटी लिकरी। तो बामण बोल्यो के– या वींटी भी म्हने वणे बाबी ए दीदी थी। दुसरे दन बामणी ए एक आटा को दिवो बणई ने अपणा डगला पे मेल्यो। तो उ आटा को दिवो वा हेमरी तोकीगी ने नेकलीस मेलीगी। नेकलीस देखी ने बामण बोल्यो– के यो नेकलीस म्हने बाबी ए दिदो थो। सब चीजां वणी पइसा का परताप ती ज पाछी आई। वणी दन से वा बामणी वणी पइसा की पूजा करवा लागी। तो वणी के अन–धन का ठाट वइग्या। ने धन लक्ष्मी परसण वइग्या।

भावार्थ

एक ब्राह्मण–ब्राह्मणी थे। उनका परिवार बहुत ही दुखी और गरीब था। एक दिन ब्राह्मणी ने कहा– यहाँ पर माँगने से पूर्ति नहीं होती है, दूसरे गाँव भी जाओ। तो ब्राह्मण–ब्राह्मणी से बोला

कि- कल मैं यहाँ से जाऊँ तो मेरे साथ रोटी बाँध देना। ब्राह्मणी ने कहा- ठीक है। ब्राह्मण जाने लगा तो ब्राह्मणी ने रोटी बाँधकर साथ में दे दी। ब्राह्मण घर से निकला चलते-चलते थक गया, तो एक वटवृक्ष के नीचे जाकर बैठ गया। वहाँ पर शंकर-पार्वती चोपड़-पाँसे (शतरंज) खेलने आये। शंकर, पार्वती से बोले कि- अपन पाँसे खेलेंगे तो जीत-हार का निर्णय कौन करेगा? इतने में उनको वह ब्राह्मण दिखाई दिया। उन्होंने उस ब्राह्मण को बुलाया और कहा कि- हे विप्र! तुम हमारी जीत-हार का निर्णय देना। ब्राह्मण ने हाँ कर दी। और लालच के मारे पार्वतीजी को जिताने लगा। जीत के निर्णय में- माताजी जीते और पिताजी हारे। तो शंकर भगवान बोले- पार्वतीजी! दो इनका इनाम। झट पार्वतीजी ने अँगूठी खोलकर उस ब्राह्मण को दे दी। ब्राह्मण उस अँगूठी को लेकर चला। अँगूठी हाथ में पहने नदी में हाथ-मुँह धोने के लिए उतरा, तो अँगूठी हाथ में से निकलकर नदी में गिर गई। वह अँगूठी एक मछली निगल गई। ब्राह्मण घर आया। ब्राह्मणी ने पूछा- क्या लेकर आए? वह बोला- जंगल में एक बाबा-बाबी चौपड़-पाँसे खोल रहे थे। उनका निर्णय करने को मुझे बुलाया था। तो उस बाबी ने मुझे एक अँगूठी दी थी, वह भी नदी में गिर गई।

दूसरे दिन वह ब्राह्मण फिर उस वटवृक्ष के नीचे आकर बैठ गया। फिर शंकर भगवान चौपड़-पाँसे खेलने बैठ गये। फिर उस ब्राह्मण ने पार्वतीजी को जिता दिया- माताजी जीते और पिताजी हारे। तो शंकर भगवान बोले- पार्वतीजी! दो इनका इनाम। पार्वतीजी ने झट हीरा-पन्ना भरा हुआ एक डण्डा दे दिया। डण्डा लेकर ब्राह्मण घर जाने लगा। तो रास्ते में एक ग्वाल मिला। उसने कहा कि- महाराज! ये डण्डा मुझे दे दो, तो मैं गायें चराकर लाऊँगा। ब्राह्मण ने वह डण्डा ग्वाले को दे दिया। ग्वाला डण्डा लेकर चला गया। ब्राह्मण घर गया। ब्राह्मणी ने पूछा- आज क्या लेकर आये हो? तो ब्राह्मण बोला कि- आज भी मैंने माताजी को जिताया, तो मुझे एक डण्डा दिया, रास्ते में वह डण्डा एक ग्वाल ने ले लिया। वह कहने लगा कि मुझे गायें चराने जाना है। तो ब्राह्मणी बोली- आज और जाओ? ब्राह्मण फिर गया। उसी बड़ के नीचे जाकर आराम करने लगा। तो शंकर-पार्वती फिर वहाँ चौपड़ पाँसे खेलने आये। चौपड़ खेल रहे थे तो फिर उसने पार्वतीजी को जिताया- माताजी जीते और पिताजी हारे। शंकर भगवान ने कहा- पार्वतीजी! इन्हें दो अपने जीतने का इनाम। पार्वतीजी ने झट अपने गले का हार निकालकर दे दिया। ब्राह्मण उस हार को लेकर जा रहा था, तो रास्ते में नदी किनारे हार रखकर हाथ-पैर धोने लगा, इतने में चील आई और हार उठाकर ले गई। ब्राह्मण घर गया तो ब्राह्मणी ने पूछा आज क्या लाये? तो ब्राह्मण बोला कि- आज भी मुझे माताजी ने गले का हार दिया था, लेकिन आज भी वह हार चील उठाकर ले गई। तो ब्राह्मणी ने कहा कि- आज आप बाबा को जिताना और बाबी को हराना। ब्राह्मण फिर गया। उसी वटवृक्ष के नीचे जाकर बैठ गया।

फिर शंकर-पार्वती चोपड़-पाँसे खेलने आये। शंकर भगवान ने कहा कि- ब्राह्मणजी! हमारी हार-जीत का फैसला करना। तो ब्राह्मण बोला कि- आज तो पिताजी जीते और माताजी हारे। तो शंकर भगवान ने कहा कि- ब्राह्मण! आज तू भूल गया है? ब्राह्मण बोला- नहीं, आज मैं नहीं भूला हूँ- पिताजी जीते और माताजी हारे। पार्वतीजी ने कहा- दो भगवन्! इनको जीतने का इनाम। तो शंकर भगवान ने कहा- मेरे पास क्या है? पार्वतीजी ने कहा- देना तो पड़ेगा! शंकर भगवान ने झट अपनी जटा को खोली और झटकी, तो उसमें से एक खड्डे वाला ताँबे का पैसा गिरा। शंकर भगवान ने उसे उठाया और उस ब्राह्मण को दे दिया और कहा कि- मेरे पास तो यही है। वह ब्राह्मण बोला कि- रोज तो बाबी को जिताने से कीमती चीजें मिलती थीं और आज बाबा को जिताया तो ये ताँबे का खड्डे वाला पैसा मिला। तो ब्राह्मणी ने कहा कि- ये पैसा भण्डार-घर में रख दो। पैसा रखकर ब्राह्मण-ब्राह्मणी सो गये। सुबह उठे और देखा कि भण्डार घर तो जगमग-जगमग कर रहा है, वह हीरे और मोतियों से भरा है। तो ब्राह्मणी देखकर आश्चर्य करने लगी कि ये क्या! ब्राह्मण बोला कि- ये तो उस पैसे का ही कमाल है। ब्राह्मण-ब्राह्मणी पूजा करने बैठे तो वह ग्वाला डण्डा लेकर घर आया और कहने लगा- लो महाराज जी! तुम्हारा डण्डा। महाराजजी डण्डा लेकर देखने लगे तो वह भी हीरा-मोती से भरा हुआ। घर पर मचान के ऊपर एक कौआ मछली लेकर बैठाया, कौए ने मछली को चीरा तो उसमें से एक अँगूठी निकलकर गिरी। ब्राह्मण उस अँगूठी को देखकर बोला कि यह अँगूठी मुझे उस बाबी ने दी थी। दूसरे दिन ब्राह्मणी ने आटे का दीया बनाकर अपने मचान पर रखा, तो वह आटे का दीया चील उठाकर ले गई और हार रख गई। हार देखकर ब्राह्मण बोला कि- ये हार भी मुझे उस बाबी ने दिया था। सब वस्तुएँ उस पैसे के प्रताप से वापस आ गईं। उस दिन से वह ब्राह्मणी उस पैसे का पूजन करने लगी, तो उस ब्राह्मणी को अन्न-धन के ठाट हो गये और उससे धनलक्ष्मी प्रसन्न हो गई।

गऊँला मुंगला व्रत कथा

दो सासु वऊ थी। वणा का घरे एक गाय थी। वणी के दो बछड़ा था। एक को नाम गऊलो थो, एक को नाम मुंगलो। सासु खेत पे जइ री थी, तो वऊ बोली के- सासुजी! आज कई राँदूंगा? तो सासुजी कईग्या- गऊलो मुंगलो राँदी लीजे। बऊ घणी भोली थी। वऊ एक झट गऊला ने, ने मुंगला ने खुंटा ती छोड़ी नी काटी लाख्या ने गुदो-गुदो हाड़ी मे चढ़ई दीदो। ने बाकी बच्यो थको हाड़-मास दोई के खुंटे गाड़ दीदा। अभे हांज पड़ी ने गाय घरे अई। दोई बछड़ा ने खुंटे नी देखीने गाय जोर-जोर ती रँभावा लागी, ताड़क-तोड़क करे। तो सासुजी बोल्या- वऊ! गऊला मुंगला ने खोल दे, तो दूद काड़ लू। वऊ थर-थर काँपी री थी। अभे में सासुजी ने कई जवाब दूंगा। फेर सासुजी जोर ती बोल्या- खोल नी वऊ बछड़ा ने। वऊ धीरेक से सासुजी ने किदो गऊला मुंगला तो में राँदी लिदा। सासुजी ए हुण्यो-अणहुण्यो कर दिदो। सासुजी ने मालम नी थी। सासुजी ए

झट हेला पाड़्या- आओ रे म्हारा गऊला मुंगला। झट गऊला मुंगला हांडी में ती बारते लिकर्‍या। तो सासु ने वऊ आश्चर्य में पड़ीगी। अरे! यो गरम-गरम भाप अणा पे कठे से अई। तो वऊ सासुजी के पगे पड़ी। ने बोली- में तो सुद भूल वइगी थी। गऊ की रोटी ने मूंग की दाल की जगा में अणा गऊला मुंगला ने झट काटा-कूटो करी ने राँदी लीदा। सासुजी ए तो आपकी पुण्यई ती ज पाछा जीवता बईग्या। अणी वाते वस बारस के दन गऊ की रोटी ने मूँग की दाल नी खाय, ने नी चक्कू ती साग वनारे, और नी कुड़छी ती हलावे।

भावार्थ

दो सास-बहू थी। उनके घर एक गाय और उसके दो बछड़े थे। एक का नाम गऊँला और दूसरे का नाम मुंगला था। सास खेत पर जा रही थी, तो बहू ने पूछा- सासू माँ! आज क्या बनाऊँगी? सासू माँ ने जल्दी-जल्दी में कहा- आज गऊँला मुंगला बना लेना। बहू बड़ी भोली थी। उसने जल्दी से गऊँले और मुंगले को खूँटे से छोड़कर दोनों को काट लिया और माँस के टुकड़ों को एक मिट्टी की हण्डी में चूल्हे पर चढ़ा दिया। बाकी बचे हुए हड्डियों के टुकड़ों को दोनों के खूँटों पर गाढ़ दिया। शाम के समय गाय घर पर आई, दोनों बछड़ों को खूँटे पर न देखकर जोर-जोर से रँभाने लगी, इधर-उधर ढूँढने लगी।

सासू माँ खेत पर से घर आई और बहू से कहने लगी- बहू! गऊँला मुंगला को खोल दे, मैं दूध निकाल लेती हूँ। बहू खड़ी-खड़ी काँपने लगी कि अब मैं सासू माँ को क्या जवाब दूँगी। सासू माँ जोर से चिल्लाने लगी- खोल न बछड़ों को! बहू ने धीरे से अपनी सासू माँ से कहा- गऊँला मुंगला तो मैंने बना लिये। आपने कहा था कि गऊँले मुंगले बना लेना। सासू माँ ने कहा- मेरे कहने का मतलब था- गेहूँ की रोटी और मूँग की दाल बना लेना। यह तूने क्या किया? सासू माँ ने जोर-जोर से आवाज लगाई- आओ रे, मेरे गऊँले, मुंगले। जल्दी से गऊँले मुंगले हण्डी में से निकलकर बाहर आये। गरम-गरम भाप उनके ऊपर से निकल रही थी। बहू ने सासू माँ के पैर छुए और कहा कि- मैं तो अपनी सुध खो बैठी थी, गेहूँ की रोटी और मूँग की दाल की जगह इन्हें काटकर बना लिया, लेकिन आपके पुण्य से इनको जीवनदान मिल गया। इसलिए वत्स द्वादशी के दिन गेहूँ की रोटी और मूँग की दाल नहीं बनायी जाती है, न खाई जाती है, न ही चाकू चलाया जाता है और न ही कुरछी का उपयोग करते हैं।

बस बारस व्रत कथा

एक सेठ थो। वणी के दो बेटा-वऊ था। छोटो बेटो बोल्या मे परदेस कमावा ने जऊँगा। तो सेठ बोल्यो जा। बस बारस के दन छोटो बेटो परदेस जावा ने लिकरियो। चालता-चालता थाकीग्यो, ने एक बड़ल्ला का नीचे जई ने हुईग्यो। बड़ल्ला पे दो चकवा-चकवी बैठा था। चकवो

चकवी ती बोल्यो घर वीती कूं के पर वीती। तो चकवी बोली रो तो घर वीती को, पण आज पर वीती को। चकवो पर वीती केवा लागो। आज बस बारस के दन को जो बेटो पैदा वेगा उ बेटो राजा वेगा। या बात वणी सेठ का छोटा बेटा ए हुणी ली। उ पाछो घरे ग्यो, ने अपणी लुगई का हाते रात रइने हबेरे जल्दी उठी ने चलयोग्यो। वणी ने घर वाला ए ने अड़ोसी-पड़ोसी ए कणे भी नी देख्यो। छोटा बेटा की वऊ के मईना रिया। घर में ने बारते सब लोग लुगायां वाता करे के सेठ को बेटो तो परदेस ग्यो ने वऊ के मईना कठे ती आया। सब लोग ताना मारेने उल्टी-सीदी वातां करे। अणे कालो मुंडो कठे कर्‌यो। घर वाला ए घर से बारते निकाल दीदी। वा चालती-चालती एक मन्दर में पोंची। उ माताजी को मन्दर थो, वठे ज रेवा लागी। नो मईना पूरा विया। वठे ज बेटो पेदा वियो। दुसरे दन राजा मन्दर में आया ने वणी बच्चा ने देखी ने भोत खुश विया, ने मेल में लइग्या। वणा राजा के ओलाद नी थी। तो वणी को लालन-पालन भोत अच्छी तरे से कर्‌यो। उ दन दूणो ने रात चोगणो बड़वा लागो। वणी की माँ विने समाज ने पति का डर ती बच्चा ने मन्दर मे छोड़ी ने चलीगी। ने तलाव कनारे बइगी। वैश्या के घर की लुगायां पाणी भरवा ने अई, वी वणी ने सुन्दर ने जवान देखीने कोठा पे लइगी। वणी की सुन्दरता की वातां गांम में फेली ने मेल तक पोंचीगी। तो राजा को कंवर बोल्यो- वणी कने आज में भी जऊँगा। घर ती कंवर लिकर्‌या तो रस्ता में एक गाय बैठी थी। वणी की पूंछ पे वणा कंवर को पग मेलइग्यो। तो गाय की वाचा निकली के- माँ पे बेटो जइर्‌यो, माँ पे बेटो, अस्तर तीन दान वाचा लिकरी। राजा को कंवर कोठा पे जइने वणी लुगई ने पुछ्यो- तू कठे ती अई? थारी जीवन कथा म्हने वतई दे? तो वणे सब अपणी जीवन कथा कुंवर ने बतई दीदी। कुंवर झट हमजी ग्या, ने माँ के पगे पड़या। ने वणी कोठा पे ती रातोरात माँ ने लइने निकली ग्या। दन उगता एक गांम में पोंचया। वणी दन बस बारस थी। गांम में लुगायां गाय-बछड़ा, ने तरई की पूजा करी थी। वार्ता कइ रही थी। वणे भी पूजा करी, वार्ता हुणी। गांम मे जइने दोई माँ-बेटा ए बाजरा की रोटी ने मोठ की साग माँगी ने लई ने खई। फेर घरे ग्या, ने घर जई ने रेवा लागीग्या। सेठ को छोटो बेटो बारा बरस में घरे आयो। अई ने अणा माँ-बेटा ने सुता देख्या तो घुस्सा में लाल वइने तलवार लिकारी ने बोल्यो के आज अणी लुगई ने मार लाखुंगा। अतरा मे वणी लुगई की नींद खुली ने केवा लागी- आप यो कई करी रिया था? यो तो आपको बेटो है। बेटा ने झट बाप ए गले लगायो ने खुंब हऊ तरे ती रेवा लागा। अतरा में राजा की नगरी में कुंवर को ढंढोरो पड़्यो। राजा ने मालम पड़ी। के कुंवर फलाणा गांम में रइर्‌या है। तो राजा नोकर-चाकर लइने सेठ का घरे पोंचया। ने कुंवर ने कुंवर की माँ ती सब वात पूछी। राजा ने सन्तोष वइग्यो। राजा कुंवर ने वणा का माँ-बाप ने लइने मेल में आया, ने कुंवर ने सब राजपाट सोंपी ने सब आराम ती रेवा लागीग्या।

भावार्थ

एक सेठ था। उसके दो बेटे और दो बहुएँ थीं। छोटा बेटा बोला कि- मैं नौकरी के लिए विदेश जाऊँगा। तब सेठ ने कहा- जा। वत्स द्वादशी का दिन था, छोटा बेटा विदेश जाने के लिए

निकल गया। चलते-चलते थक गया तो एक बड़ के पेड़ के नीचे जाकर सो गया। बड़ के ऊपर दो चकवा-चकवी (पक्षी) बैठे हुए थे। चकवे ने चकवी से कहा कि- घरबीती कहूँ या परबीती? तो चकवी ने कहा कि- रोज घरबीती कहते हो, पर आज तो परबीती कहो। चकवा परबीती कहने लगा। आज बर बारस के दिन जिसका बेटा पैदा होगा, वह बेटा राजा बनेगा। यह बात उस सेठ के लड़के ने सुन ली। वह वापस घर गया, उसकी पत्नी के साथ रात्रि-विश्राम किया और सुबह जल्दी उठकर चला गया। उसको घरवालों ने या पड़ोसियों ने किसी ने भी, नहीं देखा। छोटे बेटे की बहू गर्भवती हुई। घर और बाहर सब लोगों को चर्चा का विषय मिल गया कि सेठ का छोटा बेटा तो विदेश गया और इधर बहू गर्भवती हो गई! लोग ताने देने लगे, उल्टी-सीधी बातें करने लगे- इस कुलटा ने काला मुँह कहाँ किया? घरवालों ने घर से बाहर निकाल दिया।

वह एक मन्दिर में जा पहुँची, जहाँ माताजी का मन्दिर था। वह वहाँ पर रहने लग गई। नौ महीने पूरे हुए। प्रसवकाल के दौरान उसने बेटे को जन्म दिया। सुबह राजा मन्दिर में दर्शन के लिए आये तो वहाँ उन्होंने उस बच्चे को देखा तो बहुत ही खुश हुए। उसे अपने महल में ले गये। उस राजा को कोई संतान नहीं थी। राजा ने उसका लालन-पालन बहुत अच्छी तरह से किया। वह दिन दूना और रात चौगुना बढ़ने लगा। बच्चे की माँ समाज एवं पति के डर से उस बच्चे को छोड़कर चली गई और एक तालाब के किनारे जाकर बैठ गई। वहाँ पर वेश्याएँ पानी भरने के लिए आईं तो उस सुन्दर और जवान स्त्री को देखकर उसे कोठे पर ले गईं। उसकी सुन्दरता की बात पूरे गाँव में फैल गई और राजा के महल तक पहुँच गई। राजा का कुँवर जवान हो गया, वह बोला कि आज उसके पास मैं भी जाऊँगा।

घर से राजा का कुँवर निकला तो रास्ते में एक गाय बैठी थी। उसकी पूँछ पर राजा के कुँवर का पैर लग गया, तो गाय बोली कि- माँ पर बेटा जा रहा? माँ पर बेटा जा रहा? ऐसे उसने तीन बार कहा। राजा के कुँवर ने कोठे पर जाकर उस स्त्री से पूछा- तू कहाँ से आई? तेरी जीवन की कथा मुझे सुना दे। उसने सब अपनी कथा उस राजा के कुँवर को बता दी। कुँवर माँ की बात को समझ गया और उसके पैर छू लिये। कोठे पर से रातोंरात माँ को लेकर निकल गया। दिन निकलते ही एक गाँव में पहुँच गये। उस दिन बस बारस (वत्स द्वादशी) का दिन था। गाँव की औरतें गाय, बछड़े और तलाई की पूजा कर रही थीं। कथा कह रही थीं। उसने भी पूजा की, कथा सुनी। गाँव में जाकर दोनों माँ-बेटे ने बाजरे की रोटी और मोठ की सब्जी माँगकर रोटी खाई। फिर घर गये। घर जाकर रहने लगे। सेठ का छोटा बेटा बारह वर्ष में घर आया। आकर माँ-बेटे दोनों को सोते हुए देखा तो गुस्से से लाल हो गया और तलवार निकाल ली। कहने लगा- आज इस औरत को मैं मार डालूँगा। इतने में उसकी पत्नी की नींद खुल गई और कहने लगी- आप यह क्या कर रहे थे, यह तो आपका बेटा है? बेटे को जल्दी से पिता ने गले लगाया, खूब प्यार किया। अच्छी तरह से रहने लगे।

इतने में राजा की नगरी में कुँवर को ढूँढने लगे। राजा को मालूम पड़ा कि कुँवर फलाँ-फलाँ गाँव में रह रहे हैं। तब राजा नौकर-चाकर सहित सेठ के घर पहुँचे। वहाँ पर कुँवर की और कुँवर की माता की सारी बातें राजा ने जानीं। राजा को सन्तोष हुआ। राजा कुँवर और उनके माता-पिता को लेकर महल में आये। राजा ने कुँवर को सारा राज-पाट सौंप दिया। सब आराम से रहने लग गये।

बर बारस व्रत कथा - (दो)

एक सेठ थो। वणी के पाँच बेटा था। सेठ ए गांम में तलाव खोदायो। तलाव खोदाया बाद पाणी ज नी पड़े। तलाव भराय ज कोनी। सेठ ने घणो दुख वियो। वणे एक ज्योतिषी ने पुछ्यो, जोतिषी बोल्यो- सेठजी! थारा छोटा बेटा का बच्चा की बली देगा, ने तलाव में गाड़ेगा तो तलाव भरायगा। अभे सेठ चिन्ता में पड़िग्यो। में पोता की बली किस्तर दूंगा? सेठ के दन को चेन ने रात की नींद हराम वइगी। सेठ ए सोचता-सोचता सेठाणी ने किदो- के जोतिषि ए पोता की बली देवा को किदो, अभे पोता की बली कस्तर दूँगा। बऊ वां कई सोचेगा। तो सेठाणी बोल्या- के अपणी छोटी वऊ घणी सीदी ने शाणी है। अपणे वीने पीयर पोंचई दां। सेठ-सेठाणी ए वऊ ने पीयर पोंचई दीदी। दोई पोता ने राखी लिदा। दोई पोता की बली दई ने मटका में भरी ने तलाव में गाड़ दीदा। रातोंरात मुसलधार पाणी पड़्यो ने तलाव आखो भरइग्यो। आखा गांम में वातां वेवा लागीगी सेठ को तलाव भरइग्यो, सेठ को तलाव भरइग्यो। बात फेलता-फेलता बऊ का पीयर भी पोंचीगी। वऊ ने खुब खुशी वी। वऊ ए अपणा माँ-बाप ने कियो- में आज की बस बारस म्हारा सासरा में ज करूंगा। बड़ी मुश्किल ती म्हारा सुसराजी का हाथ को तलाव भराणो। वऊ अपने सासरे अई।

लुगायां तराव में पूजा करीरी थी। वऊ ए सोच्यो के में भी तराव में पूजा करी ने ज घरे जऊँ। अतरा में छोटी वऊ एक देख्यो के चारी वऊवां ने लइने सेठ-सेठाणी पूजा करी रिया था। तो वण भी अई ने पूजा करवा लागीगी। वणे झट तरई की पूजा करी ने दोई बेटा ने लाडू खावा ने हेला पाड़्या। आओ रे म्हारा हंसराज, बच्छराज। हेला पाड़ता इ दोई बेटा तलाव में से मटकी का गांगा गला में लटक्या ने हार-फुल पेर्‌या थका ने टीको काड़्यो थको। अणी रूप में देखी ने माँ आश्चर्य करवा लागी ने बोली- थाने तलाव मे कणे धक्को दई दीदो? तो झट सासुजी वऊ के पगे पड़्या, ने किदो के अणा ने कणे भी धक्को नी दीदो। अणा की म्हाए ज बली दीदी, तो तराव भराणो। इ तो थारा सत ती दोई बेटा सरजीवन वइग्या। तो वऊ सासु के पगे पड़ी ने किदो- के आप ए तो नगर को भलो करवा ने अतरो बड़ो तराव खोदायो थो। आप ए तो धरम को काम कर्‌यो। आपका पुन-परताप ती दोई पोता सरजीवन वइग्या। वणी छोटी वऊ ने बस बारस माता परसण विया, ऐसा सबणे विजो।

भावार्थ

एक सेठ था। उसके पाँच लड़के थे। एक दिन सेठ ने सोचा, गाँव में तालाब खुदवाये। सेठ ने तालाब खुदवाया। तालाब खुदवाने के बाद पानी ही नहीं बरसा। सेठ को बहुत दुख हुआ। उसने एक ज्योतिषी से पूछा। ज्योतिषी बोला- सेठजी! तुम्हारे छोटे बेटे के बच्चे की बलि चढ़ाओगे और तालाब में गाड़ोगे, तब तुम्हारा तालाब भरायेगा। सेठ को चिन्ता सताने लगी, मैं पोतों की बलि कैसे दूँगा? सेठ का दिन का चैन और रातों की नींद हराम हो गई। सेठ ने सेठानी से कहा कि ज्योतिषी ने पोते की बलि चढ़ाने का कहा है। बहुएँ क्या सोचेंगी? सेठानी ने कहा- अपनी छोटी बहू बहुत सीधी है और समझदार है। हम उसको मायके पहुँचा देंगे। सेठ-सेठानी ने बहू को मायके पहुँचा दिया और दोनों पोतों को रख लिया। दोनों पोतों की बलि देकर मटके में भर दिया और तालाब में गाड़ दिया।

रातोंरात मूसलाधार बारिश हुई और तालाब पूरा भर गया। पूरे गाँव में बात फैल गई कि सेठजी का तालाब पूरा भर गया। बात फैलते-फैलते बहू के मायके तक पहुँच गई। बहू को बहुत खुशी हुई। उसने अपने माता-पिता से कहा कि- आज बस बारस (वत्स द्वादशी) है, उसकी पूजा मैं अपने ससुराल में जाकर ही करूँगी। बड़ी मुश्किल से तालाब भरा है। बहू अपने ससुराल आई। औरतें तालाब का पूजन कर रही थीं। उसने सोचा मैं भी तालाब का पूजन करके ही घर पर जाऊँगी। इतने में उसने देखा कि चारों जेठानियों को लेकर सास-ससुर पूजन कर रहे हैं, तो वह भी आकर पूजन करने लग गई। उस तालाब का पूजन करके अपने दोनों बेटों को आवाज लगाई- आओ रे मेरे हंसराज! बच्छराज! आवाज लगाते ही दोनों बेटे गले में घट-कण्ठ लटका हुआ, हार-फूल पहने हुए, तिलक लगाया हुआ - इस रूप में देखकर माता आश्चर्य करने लगी और कहने लगी- तुम्हें तालाब में धक्का किसने दिया? तब सास ने कहा- इनको धक्का किसी ने भी नहीं दिया। इनकी तो हमने ही बलि दे दी थी, तभी तालाब भराया। यह तो तेरी सत्यता से ही पुनर्जीवित हो गये। तो बहू ने सास से कहा कि- आपने तो इस नगर की भलाई के लिए तालाब खुदवाया, धर्म का कार्य किया। आपके ही सत्कर्म से, आशीर्वाद से, आपके दोनों पोते जीवित हो गये। छोटी बहू पर वत्स द्वादशी बहुत प्रसन्न हुई।

दगड़ा चोथ व्रत कथा

पार्वती माता ए डिल को मेल मसरियो, वणी को एक फुतरो वणायो ने शंकरजी का कमण्डल में ती पाणी छिटकियो तो वणी में आत्मा अईगी। पार्वतीजी ए पाणी भरयो सनान करवा ने। ने वणी फुतरा ने कइ ग्या- के मूं न्हावा ने जऊँ अतरे तू नगे राखजे। कोई आदमी नी

अई जाय। पार्वती माता सनान करवा ने ग्या। अतरा में शंकरजी ए अई ने अलख जगायो तो वणे किदो के– आप घर में नी जाओगा म्हारी माँ सनान करी रिया है। तो शंकर बोल्या– के कुण है तू? के आपको नाती गोती। शंकरजी ने रीस लागी तो माथो काटी लाख्यो, के म्हारे तो कोई बेटो कोनी ने यो कठे ती अई ग्यो। पार्वतीजी सनान करी ने आया तो पूछे– के म्हारा बारक ने कणे मारयो? शंकरजी बोल्या– के म्हने कई मालम के थांको बेटो है। अणे म्हने किदो थो के मूं थांको नाती–गोती हूँ, अणी ती मैं इने मार लाख्यो। शंकरजी बोल्या के चालो थांका बारुड़ा ने सरजीवन करां। दोई जणा कदली वन में ग्या। एक हाथी को माथो काट्यो ने लई ने बारुड़ा को धड़ पड़्यो थो वणी के चीपकई ने कमण्डल में ती पाणी लई ने छांटीयो तो सरजीवन वईग्यो। बारुड़ो झट आलस मोड़ी ने बैठो वईग्यो। वणी दन गजानन्दजी थने बारा वजे सरजीवन बीया। अणी ती वणी दन दने बारा बजे अणा की सालगीरे मनावे। ने पार्वती अतरा लाडू करे के दने बारा बजे ती राते बारा वजे तक लाडू वरसावे ने सबका टापरा पे फेंके। अभे अतरा लाडू तो नी वे ने कठे ती लावे। अणी ती अभे भाटा फेंकवा लागीग्या। हे शंकर भगवान! पार्वती का बेटा ने सरजीवन करयो, असा सबका बेटा ने अमर राखजो।

भावार्थ

माता पार्वती ने अपने शरीर से मैल निकाला और उसका एक पुतला बनाया, शंकरजी के कमण्डल में से पानी छींटा तो उसमें आत्मा आ गई। पार्वतीजी ने पुतले से कहा– मैं स्नान करने जा रही हूँ, तू यहाँ पर बैठकर ध्यान रखना कि कोई पुरुष आ न जाये। इतने में शंकरजी वहाँ आये और अपना अलख जगाया। तो उस पुतले ने कहा– आप अन्दर नहीं जाओगे, मेरी माता स्नान कर रही है। शंकरजी ने कहा– तू कौन है? मेरा और आपका नाता–रिश्ता है। शंकरजी ने कहा– मेरा तो कोई बेटा नहीं है, यह कहाँ से आया? शंकरजी को गुस्सा आया तो उन्होंने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। इतने में पार्वतीजी स्नान करके आईं तो पूछा कि– मेरे बालक को किसने मारा? शंकरजी बोले– मैंने मारा। मुझे पता ही नहीं था कि यह तुम्हारा बेटा है। इसने कहा मैं तुम्हारा नाती–गोती हूँ। इसलिए मैंने मार दिया। शंकरजी को कहा– मेरे बेटे को जीवनदान दो। शंकर जी बोले– चलो, तुम्हारे बेटे को जीवित करते हैं। दोनों (शंकर–पार्वती) कदली वन में गये, वहाँ एक हाथी विचरण कर रहा था, उसका सिर काटा और उस बालक के धड़ पर लगा दिया और कमण्डल में से पानी लेकर उस पर छिंटक दिया। वह जीवित हो गया। बालक आलस लेते हुए उठकर खड़ा हो गया। उस दिन गणपतिजी दिन के बारह बजे जीवित हुए। पार्वतीजी ने उनकी खुशी में उनका जन्मदिन मनाया। बहुत सारे लड्डू बनाये। इतने बनाये कि उन्होंने रात के बारह बजे तक लोगों के घरों पर लड्डू बरसाये। अब इतने लड्डू नहीं बनते और कहाँ से लाएँ! इसलिए अब पत्थर फेंकने लग गये हैं। हे शंकर भगवान! पार्वतीजी के बेटे को जीवनदान दिया, ऐसे सबके बेटों को अमर रखना।

हलछट व्रत कथा

एक राजो थो। वणी की राणी कणी कारण ती अपणी दासी का बेटा पे विफरीगी। कई गलती वणी छोरा से भी वईगी। तो राणी ने घुस्सो आयो तो वणी छोरा ने जलती आग में फेंकई दीदो, पण वा छोरा की माँ हलछट को वरत बड़ा नियम-संयम ती हर साल करती थी। अणी ती वणी को छोरो आग में फेंकवा का बाद भी बंचीग्यो। राणी ने छोरा को आग में फेंकवा को भारी पछतावो तो वीयो, पण मन इज मन पछताती री। वा अपणो दुख कणी का हामे वतई नी सकी। जदी वणे देख्यो के आग में फेंकवा का बाद भी छोरो सई-सलामत है। तो वणी राणी ए दासी ती पुछ्यो- थारा कणी पुन-परताप ती छोरी वंची ग्यो। दासी ए राणी ने हलछट का वरत को सार वतायो। वणी दन से राणी भी यो वरत करवा लागीगी। संयोग से एक हादसा में वणी राणी को बेटो राजकुमार एक दन गेरा पाणी में जई पड़्यो। तो अणी हलछट का वरत का परताप ती उ भी जीवतो बारते अईग्यो। जदी ती बाई बेनां हलछट को वरत, पूजा सरदा-भकती ती करवा लागी।

जणी के खेती-वाड़ी वे भी बाई बेनां तो अणी वरत ने करी ने अपणा परवार की रक्षा करे। अणी वरत से बेटा की इच्छा रखवा वारा की कामना पूरी वे। और बेटा की रक्षा को फल भी अणी ती मिले।

भावार्थ

एक राजा थे। उनकी रानी किसी कारण से अपनी दासी के पुत्र पर नाराज हो गई। कुछ गलती उस लड़के से हो गई, तो रानी ने नाराज होकर उस लड़के को जलती आग में फिंकवा दिया। लेकिन उस लड़के की माँ (दासी) हलछठ का व्रत नियमपूर्वक प्रतिवर्ष करती थी, अत: उसका पुत्र अग्नि में फेंके जाने के बाद भी बच गया। रानी को लड़के को आग में फिंकवा देने के बाद भारी पछतावा तो हुआ, लेकिन वह मन ही मन में पछताती रही, उसने बाहर दुख प्रकट नहीं किया। किन्तु जब उसने देखा कि आग में फेंका हुआ लड़का तो सही-सलामत है, तब उसने उस दासी से पूछा कि- तुम्हारे किस पुण्य से लड़के की रक्षा हुई? दासी ने रानी को हलछठ का वृत्तान्त बताया। उस दिन से रानी भी यह व्रत करने लगी। कर्म-धर्म संयोग से एक हादसे में उस रानी का लड़का राजकुमार एक दिन गहरे पानी में जा गिरा और इसी हलछठ के व्रत के प्रभाव से वह भी सुरक्षित जल से बाहर आ गया। तब से माताएँ हलछठ का व्रत और पूजन श्रद्धापूर्वक करने लगीं।

कृषि संस्कृति के महत्त्व के साथ ही यह व्रत माताओं को परिवार सुरक्षा की आश्वास्ति भी प्रदान करता है। इस व्रत से पुत्र-प्राप्ति की कामना तो पूर्ण होती ही है, पुत्र-रक्षा का फल भी इससे मिलता है।

हलछट व्रत कथा - (दो)

एक पटेल थो। वणी के पाँच बेटा था। हलछट अई तो हऊ देखी ने बोली- के बेटा! आज हल को हांक्यो नी खाय, तू कठे ती थाणा की मक्की लावजे। तो मोटा बेटा की वऊ देखी ने बोली के- आप भूलिग्या सासूजी! अपणे तो मक्या पड्या है थाणा का। एक गारा का ममणा में भरी राख्या है। तो मक्की काड़ी ने पीसी ने खई लांगा। चारी-पाँची सासू-वऊ। तो वणा का कने पाड़ोसण बैठी थी। तो वणे किदो- के थे एकला खाओ तो म्हाने भी दो म्हाके भी हलछट है सबके। वणे थाणा का मक्या मांग्या, पण वऊ का पेट में पाप आयो। वणाए घर-घर का ए तो थाणा की मक्की खइ लिदी। ने पाड़ोसण नू दूसरी मक्की दई दीदी। वणी ने नी कीदो। आंदो ने अनजान बराबर वे। वणाए तो रोटी वणई ने खईलीदी। तो सबका छोरा-छोरी ने उल्टीयाँ ने टट्टीयाँ लागीगी। तीनी-चारी लुगायां ने भी असो वईग्यो। थाणा की मक्की खई अणी ती वियो। चालो जई ने पूंछा वणाने। पाड़ोसण पूछवा ने गई तो वऊ ए किदो के हाँ मै तो पाप राख्यो थो। थाने वणा थाणा की मक्की दीदी ने म्हाए थाणा की मक्की खादी। वणा चारी ए हलछट माता ती प्राथणा करी के म्हाने कई मालम थी। एकदम म्हाका बच्चा-बच्ची मांदा वईग्या, अणा ने हऊ करी दीजो। अनजान में भूल वईगी। पाड़ोसण ए माफी मांगी लीदी तो हलछट माता सब पे प्ररसन वईग्या।

भावार्थ

एक पटेल था। उसके पाँच लड़के थे। माँ ने कहा- बेटा! आज हलछठ है, आज हल का जोता हुआ अनाज नहीं खाते हैं, तो तू कहीं से भी हाथ से बोई हुई मक्का लाकर देना। तब बड़े बेटे की बहू ने कहा कि- सासू माँ! अपने यहाँ तो हाथ की बोई हुई मक्का के भुट्टे रखे हैं। आप भूल गईं क्या? मिट्टी के घड़े में भरे हुए रखे हैं। उसमें से मक्का निकालकर पिसवा लेंगे और उसकी रोटी बनाकर चारों-पाँचों सास-बहुएँ खा लेंगे। उनके पास उनकी पड़ोसन बैठी हुई थी। उसने कहा- हमें भी मक्का देना, हमें भी हलछठ है। पर उस बहू के मन में पाप था। उसके घर के लोगों ने तो हाथ की बोई हुई मक्का की रोटी खाई और पड़ोसन को खेत की बोई हुई मक्का दे दी। उसको नहीं कहा। अंधा और अन्जान बराबर होता है। उन्होंने तो रोटी बनाकर खा ली। थोड़ी देर बाद सबके बच्चों को उल्टी-दस्त होने लग गये। तीनों-चारों सास-बहुओं को भी ऐसा ही होने लग गया। इन्होंने सोचा कि आज हाथ की बोई हुई मक्का खाई, इसलिए ऐसा हुआ। फिर भी उनसे जाकर पूछते हैं। पड़ोसन पूछने गई। तब बहू ने कहा- हाँ, मेरे मन में पाप था, इसलिए मैंने तुम्हें हाथ की बोई हुई मक्का नहीं दी। हमने खा ली। उन चारों ने हलछठ माता से प्रार्थना की और कहा कि- हमें तो कुछ भी मालूम नहीं था, इसलिए हमने यह अनाज खा लिया। हमारे बच्चों को अच्छा कर देना। अन्जाने में जो भूल हो गई है, अब वह कभी नहीं होगी। पड़ोसिन ने माफी माँग ली तो हलछठ माता सब पर प्रसन्न हो गई।

कुकड़ माकड़ व्रत कथा

एक कुकड़ी थी। एक माकड़ी थी। कुकड़ी ए अंडा दीदा, ने माकड़ी ए जाल बुन्यो ने अन्डा दीदा। कुकड़ी ए जमीन पे अन्डा दीदा, ने माकड़ी थी वा वच में थी तो माकड़ी ने नजरे आयो के डुंगर बरीरियो है। माकड़ी ए कुकड़ी ने कीदो– के तू भी या से चली जा, ने मूं भी जालो बुनती–बुनती ऊँची चली जऊगाँ। कुकड़ी ए किदो के मूं तो म्हारा बच्चा–बच्ची ने लइने नी जऊँगा। मूं तो अणा का हांते बरिजऊगा। थारे उड़ने वे तो उड़ीजा। कुकड़ी तो अन्डा का हांते बरीगी। ने माकड़ी ऊपर चढ़ीगी जाला में। अभे माकड़ी की आयुश खतम वी ने वा भी मरीगी। कुकड़ी ए तो जनम लीदो राजा का घरे। वठे लड़की वी, ने माकड़ी ए दीवान का घरे जनम लीदो। दीवान की लड़की थोड़ी बड़ी वी तो वा भी राजा घरे रेवा लागीगी। दोई एक जगा राज में खाय ने खेलें। जणे दोई माँ जणी बेना वे जूं रेवा लागीगी। तो राजासा देखी ने बोल्या के दोई छोर्‌या जवान वइगी तो दोयां को एक गांम मे सम्बन्ध कर दो। तो दोई को एक गांम के सम्बन्ध करी दीदो। दोई को ब्याव करी दीदो। दोई एक गांम में रेवा लागीगी। अभे दोई के मईना रीया दोयां के लड़का विया। राजा की लड़की के लड़को तो जीवे, ने दीवान की लड़की को लड़को दो–तीन दन जीकी ने मरीग्यो। राजा की लड़की के पाँच बेटा वीया ने दीवान की लड़की के चार बेटा विया ने पाँचवी बेटी वी। वा लड़की तीन दन की वई ने मरीगी। तो वणी का मन में पाप आयो, के राजा की बेटी का माथे दई दूंगा। के म्हारी बेटी अणा ए मार लाखी। छोरी तो पेला तीज मरी थकी पड़ी थी। राजा की लड़की ने बुलई राजा की लड़की सनान करी ने ऊठी थी। जो झट वणी लड़की ने देखवा ने गई, राजा की लड़की ए वणी ने देखवा वाते वणी का मुंडा पे ती चादरो बाजु करयो। वणी राजा की लड़की का बाल झरीरिया था, पाणी ती तो वणी बाल को टपको वणी बच्ची का ओठ पे पड़ी ग्यों। तो वा बच्ची रोवा लागीगी। ने सरजीवन वइगी तो दीवान की बेटी ए राजा की बेटी ने उठी ने धोग दीदो। के म्हारा मन में प थो। या बच्ची तो पेलाज मरीगी थी। आपका बाल का पाणी ती या सरजीवन वइगी। आप कतरा भागशाली हो। पण दिवान की बेटी में पाप ऐसा–एसा ही भरया था। वणे एक कारवेलिया ने किदो– के एक मटकी में हाँप ने बीच्छू ने गेयरो भरी ने लियाव ने वणी मटकी को मुन्डो काठो बांद दे। दिवान की बेटी ए नोकराणी ने बुलई ने कीदो के यो मटको माथा पे मेली ने लई–जई ने किजे – के मासीजी ए दो–चार रमत्या खेलवा ने मेल्या है। राजा की लड़की राजी वइ जाएगा। के म्हारी बेन ए रमत्या मेल्या छोरा–छोरी के खेलवा ने। राजा की बेटी ए पाँची छोरा–छोरी ने बुलाया ने किदो– के मासीजी ए थांके खेलवा ने रमत्या मेल्या है। मटका को मुन्डो खोल्यो तो राजा की बेटी तो सती थी। वणी मटका में ती एक ने चकरी दई दीदी, एक ने भंमरी दई दीदी, एक ने चटाबटा दई दीदा, अस्तर सव ने वाँटी दीदा। और बाकी सबने भरी ने मेल दीदा। अभे वा नोकराणी ने के, के जा म्हारी बेन की खबर ला। एक आदो तो कोई ने कोई मरियो ज् वेगा। तो मूं रोवा ने जऊ। वा देखीज ने आई ने किदो–

के वी तो सब रमी रिया है। दूसरे दन फेर नोकराणी ने मेली के जा कई ने आवजे के थारी पाँची भाणेजां-भाणेजी ने जीमवा ने बुलाया है। दूसरे दन जेर ल्हाकी ने लाडू वणाया, वणा पाँची ने अपणा हांता ती जीमाया। फेर वणां के जेर चढ़ी ग्यो वी बेहोश वईग्या। तो पाँची का माथा काटी दीदा। एक-एक थेला में एक-एक लाश भर दीदी, ने मूंड़ा राखी लीदा। वणे वणीका पाँच नोकर ने बुलाया ने कीदो के अणा पांची लाशा ने जंगल में लई-जई ने हारे लंगर ती हुवाड़ी ने अई जाजो। वटने ती शंकर ने पार्वती लिकरी रिया था। तो पार्वती देखी ने बोल्या के- देखो नाथ! इ कणी का बेटा है। कणी बड़ा घर का लागे है। अणा ने तो सरजीवन करना पड़े। तो शंकरजी बोल्या- के आपने हाते रेणो पड़ेगा। तो सरजीवन वे। तो पार्वती बोल्या के- हाँ, ठीक है। मूं हांते रुंगा। शंकरजी ए तो बाबा को वेश वणायो, तो पार्वतीजी ए मीनकी को रूप वणायो। ने वणी दीवान की बेटी का घरे ग्या। अभे शंकरजी तो वणी दिवान की बेटी को हाथ देखी रिया ने। वणी ने विलमावे, अतरे पार्वतीजी मिनकी वण्या, वणा पाँची बच्चा का माथा पछवाड़ा ती मुंडा मे लईने ने जंगल में मेली आया। जठे वणा का धड़ पड़िया था। वणा के वी मुंडा लगई दीदा। ने शंकर भगवान ए अपणा कमण्डल में ती पाणी छांटयो, ने वणाने सरजीवन कर दीदा। ने की पाँची बच्चा अपणा घरे चलीया ग्या। या वात वणी दीवान की बेटी ने नगे पड़ी के, राजा की बेटी का बेटा तो जीवता वईग्या ने मेलां में खेली रीया। ने माँ ती वातां करी रिया। कामदार की बेटी बोली- के या रांड जांण जुगारी ने कामणगारी, मैं तो वणा ने मार लाख्या था, ने वी जीवी कस्तर ग्या? वा दीवान की बेटी दौड़ी-दौड़ी राज में गई। यहाँ कथा उलट गई है पूर्व में कल है कि कुकड़ी राजा की बेटी बनी। ने कीदो के म्हने पुखला जनम की बात मालम है। तू तो थी कुकड़ी ने मूं थी माकड़ी। थें जमीन पे अण्डा दीदा, ने में जाला में अण्डा दीदा। तो जालो उंचों थो। तो मैं जाला में ती देख्यो के मार (माल) में लाय लागीगी तो मैं किदो के अपने चलीया चांला। अपणे वांगा तो नरा बच्चा। पण थें तो एक नी मानी, फेर मूं थी तो उपर चलीगी तें तू अण्डा का हांते बरीगी। फेर म्हारे भी 'हो' दन पुरा विया, ने मूं भी मरी गी। तो मैं थने वरत लेवाड़ीयो थो। अमकारी आठम को। थें तो आठम तोड़ी काड़ी, ने मैं हाल भी नी तोड़ी। आठ वरस वइ जाएगा जदी उपमणो करांगा। आठ लुगायां थारी भूखी राखुंगा, ने आठ लुगाया म्हारी भूखी राखुंगा, ने एक एक साक्षी भई भूखो राखांगा। थारे मूं कपड़ा करूँगा। (राजा की बेटी कई री) ने म्हारे माड़ी जायो भई बुलऊँगा। भई म्हारा कपड़ा लावेगा। सोना का तार की कड़ी करावेगा, वीमे दो सांचा मोती एरे-मेरे ने वच में मूंगो रेगा। फेर मरां गा जदी, मूंगो तो मुंडा मे मेलेगा, ने मोती दोई आखां में मेलेगा। फेर अपणो मोक्ष वई जाएगा। राजा की बेटी ए भी वणी कामदार की बेटी के सीना को तार वणायो वणी मे मोती लखाया ने वय मे मूंगो लखायो ने वणी ने दीदो। तो अपकारी आठम के दन तोड़क-ताड़क नी करनो। हऊ फल चढ़ावणा। अभे जो भी वरत करे ऊ पुरो करजे, तो पुरो फल मिलेगा।

है अमकारी आठम! वणी कामदार की बेटी ने टूटा असा किने भी मत टूटजो, ने वणी राजा की बेटी ने टूटा असा सकल ने टूटजो।

भावार्थ

एक मुर्गी थी और एक मकड़ी थी। मुर्गी ने अण्डे दिये और मकड़ी ने अपना जाल बुनते-बुनते बीच में अण्डे दे दिये। मुर्गी ने जमीन पर अण्डे दिये और मकड़ी ऊपर जाल बुन रही थी तो उसने देखा कि डूंगर (पहाड़ी इलाका) जल रहा है। उसने मुर्गी से कहा- तू यहाँ से कहीं और चली जा और मैं भी जाल बुनती-बुनती ऊँची चढ़ती जाऊँगी। मुर्गी ने कहा- मैं मेरे बच्चों को लेकर नहीं जाऊँगी, मैं तो इनके साथ ही जल जाऊँगी, तुझे जाना हो तो चली जा। मुर्गी तो अपने अण्डों के साथ जल गई। मकड़ी ऊपर जाले बुनती हुई चढ़ गई। मकड़ी की आयु भी पूरी हुई और वह भी मर गई। मुर्गी ने राजा के यहाँ उनकी लड़की के रूप में जन्म लिया और मकड़ी ने एक दीवान के यहाँ जन्म लिया। दीवान की लड़की बड़ी हुई और राजा की लड़की भी बड़ी हुई। दोनों एक जगह राजमहल में खेलती, खाती-पीती और वहीं रहती, जैसे दोनों सगी बहनें हों। राजा दोनों को देखकर कहने लगे- दोनों लड़कियाँ विवाह-योग्य हो गई हैं, दोनों का एक ही गाँव में सम्बन्ध कर दें। संयोग से दोनों का एक ही गाँव में सम्बन्ध हो गया और उनका विवाह कर दिया।

दोनों को लड़के हुए, किन्तु दीवान की लड़की का लड़का दो-तीन दिन बाद मर गया। ऐसे राजा की लड़की को पाँच बेटे हुए और दीवान की लड़की को चार बेटे और एक बेटी पैदा हुई, जो तीन दिन की होकर मर गई। उसके मन में पाप आया कि राजा की लड़की का नाम ले दूँगी कि मेरी लड़की को इसने मार दिया। लड़की पहले से ही मर गई थी। राजा की लड़की को बुलवाया। वह स्नान करके आई। उस लड़की का मुँह चादर से ढँका हुआ था, उसे खोलकर उसने देखा। राजा की लड़की के बाल गीले थे, उनमें से पानी टपक रहा था, पानी की बूँदें उस मरी हुई बच्ची के मुँह में गिरीं, वह बच्ची रोने लग गई, वह जीवित हो गई। दीवान की लड़की ने राजा की लड़की को प्रणाम किया और कहने लगी कि मेरे मन में तो पाप था। यह बच्ची पहले ही मर गई थी। आपके बाल के पानी से यह जीवित हो गई। आप तो भाग्यशाली हैं। लेकिन दीवान की लड़की के मन में ईर्ष्या कूट-कूटकर भरी थी।

उसने एक कालबेलिये (सपेरा) से कहा कि- एक मटके में साँप, बिच्छू, गोयरा भरकर लाये और उसका मुँह बाँधकर रख दे। दीवान की बेटी ने नौकरानी को बुलाया और कहा कि- यह मटका सिर पर रखकर राजा की लड़की को देना और कहना बच्चों के लिए मौसीजी ने खिलौने भेजे हैं। वह बहुत खुश हो जायेगी। राजा की लड़की ने अपने पाँचों बच्चों को कहा कि- मौसीजी ने तुम्हारे खेलने के लिए खिलौने भेजे हैं। मटके का मुँह खोला। राजा की लड़की तो

सती थी। उस मटके में से एक को चकरी दे दी, एक को भँवरी दे दी, एक को चटे-बटे दे दिये। ऐसे करके सब बच्चों को खिलौने बाँट दिये। दीवान की लड़की ने नौकरानी को भेजा कि- जा, देखकर आ, कोई मरा कि नहीं। मैं बैठने जाऊँ। नौकरानी देखकर आई और कहा- वहाँ पर सब बच्चे खेल रहे हैं। दूसरे दिन उसने कहा- चारों-पाँचों भानजों को भोजन पर उनकी मौसीजी ने बुलाया है। ऐसा कहकर आ जाना। सब बच्चे मौसी के यहाँ भोजन पर आये। मौसी ने उन्हें भोजन में जहर के लड्डू परोसे और उन्हें अपने हाथों से खिलाया। थोड़ी देर में बच्चे बेहोश हो गये। पाँचों के सिर काटकर एक बोरे में भर दिये और धड़ को नौकरों के साथ जंगल में रखवा दिये।

उधर से शंकर-पार्वतीजी निकले। तो पार्वतीजी ने कहा- देखो प्रभु! ये किसके पुत्र हैं? ये किसी बड़े घर के लगते हैं। इनको जीवित करना पड़ेगा। शंकरजी ने कहा- आपको साथ में रहना पड़ेगा। हाँ, ठीक है। शंकरजी ने बाबा का वेश बनाया और पार्वतीजी ने बिल्ली का रूप बनाया और उस दीवान की लड़की के घर गये। बोले- अलख निरंजन! अन्दर गये। उन्होंने दीवान की लड़की का हाथ देखा। उसे कुछ कहने लगे। इतने में बिल्ली बनी पार्वतीजी पाँचों बच्चों के सिर पीछे के दरवाजे से मुँह में भरकर एक-एक कर जंगल में जहाँ धड़ पड़े थे वहाँ छोड़कर आ गयी। शंकरजी को लेकर वापस जंगल में चले गये। उन बच्चों के मुँह उनके धड़ पर लगा दिये और उनके कमण्डल में से जल के छींटे डाल दिये और वे जीवित हो गये। पाँचों बच्चे अपने घर चले गये। यह बात दीवान की लड़की को मालूम पड़ी। उसने जाकर देखा कि बच्चे तो खेल रहे हैं और अपनी माँ से बातें कर रहे हैं। बच्चे जीवित कैसे हो गये? ये राजा की लड़की तो तंत्र-मंत्र जानने वाली, वशीकरण करने वाली स्त्री है। मैंने तो इन्हें मार दिये थे, ये जीवित कैसे हो गये?

राजा की लड़की ने दीवान की लड़की से कहा- मुझे सब बातें मालूम हैं। मैं तुझे अपने पूर्वजन्म की बातें बताती हूँ- तू तो थी मुर्गी और मैं थी मकड़ी। तूने जमीन पर अण्डे दिये और मैंने अपने जाले में अण्डे दिये। जाला ऊँचा था। मैंने जाले में से देखा डूंगर जल रहा है। मैंने तुझसे कहा- अपन चलें। अपन होंगे तो बहुत बच्चे हो जाएंगे। पर तूने मेरी एक न मानी। मैं तो यहाँ से चली गई और तू अपने अण्डों के साथ जल गई। मेरी आयु पूरी हुई, मैं भी मर गई। मैंने तुझे अमकारी अष्टमी का व्रत दिलवाया था। तूने तो उस व्रत को तोड़ दिया और मैं अभी तक कर रही हूँ। आठ वर्ष पूरे हो जायेंगे तब इसका उद्यापन करूँगी। आठ औरतों (सुहागिनों) को भोजन कराऊँगी, एक भाई साक्षी होगा उसे भोजन कराऊँगी। मेरा भाई मेरे लिए कपड़े लायेगा,

सोने के तार की कड़ी बनवायेगा, उसमें दो सच्चे पक्के मोती आसपास और बीच में मूँगा रहेगा, वह भाई कान में पहनायेगा। मैं भी यह सब तेरे लिए लाई हूँ, तेरा भी उद्यापन करवाऊँगी। फिर दोनों ने उद्यापन किया। अमकारी अष्टमी के दिन कुछ भी नहीं तोड़ना चाहिए, अच्छे फल चढ़ाना चाहिए। अब जो भी व्रत तू करेगी, उसे पूरा करना। उससे पूरा फल मिलता है।

ग्यारस व्रत कथा

एक बामण ने बामणी था। बामणी ग्यारस को उपास करती थी। बामण रोज गंगाजी का घाट पे न्हावा ने जातो थो। न्हई ने आतो पूजन-पाठ करतो ने फेर दोई हांते रोटी खाता था। बामण बोल्यो- आज एक इज थाली परोसी? दो थाली लगाओ। तो बामणी बोली- के आज म्हारे ग्यारस को उपास है। तो बामण ए रट पकड़ लीदी। के यो कैसो उपास म्हारा हांते रोटी खाओ। वा पतिवरता ने हमजणी बामणी थी। बामण का केवा ती वणे भी रोटी की थाली परोस लीदी। बामण ने विसवास वईग्यो के अभे या म्हारा हांते रोटी खईलेगा। बामण अपणी धून में रोटी खइर्‍यो थो। बामणी ए वीको मान राखी लीदो, ने थाली में ती कवा तोड़ी-तोड़ी ने अपणी कांचली में मेल लीदा।

दूसरे दन फेर बामण घाट पे न्हावा ने ग्यो। तो ग्यारस माता लुगई का भेस करी ने पाणी भरवा ने अई। माता को आखो डील लोवा को थो, कपड़ा भी कारा, गेंणा भी कारा ने हंडो भी कारो, सब चीजां लोवा की। वा पाणी भरवा लागी तो बामण की नजर वणी पे पड़ी तो देख्यो-अणदेख्यो कर दीदो। के पनघट पे नरी लुगायां पाणी भरवा ने आवे, उ कई नी बोल्यो ने चलयोग्यो। दूसरे दन बामण फेर घाट पे न्हावाने गयो। तो ग्यारस माता आखी ताम्बा की मिली गेणां, कपड़ा, हंडा, सब तांबा का। अणी भेस में बामण ए दर्सण कर्‍या। बा बेड़ो भरी ने जइरी थी। तो आगे जईने अलप झलप वइगी। अस्तर करता-करता दो दन वइग्या। तिसरे दन बामण फेर न्हावा ने ग्यो, तो वा आखी चाँदी की। गेंणा, कपड़ा, घड़ा अणी रूप में फेर ग्यारस माता ए दरसण दीदा। चोथे दन बामण ए असो अचम्भो देख्यो। बामण की वणी ती वात करवा की हिम्मत भी नी वी। फेर भी मन ने रोकी ने बामण ए ग्यारस माता ती पुछी लीदो- के आप कुण हो? म्हने बताओ। मैं चार दन ती रोज आपने अलग-अलग भेस में देखीर्‍यो हूँ। आज तो आपने वताणो ज पड़ेगा।

तो ग्यारस माता बोली- के थारी लुगई के ग्यारस को उपास थो, ने थें वीने हांते लईने रोटी खादी। हम तो चार बेनां हां। जो थने पेला दन दरसन दीदा, बा बेन पापी ने पार लगावे है। दूसरे दन जणी बेन ए दरसण दीदा, वा ताम्बा वाली है। जो चार ग्यारस बड़ी-बड़ी चतरमास बाली

करे, वा सबको बेड़ो पार लगावे। तीसरे दन जणी बेन ए दरसन दीदा, वा चाँदी वाली थी। जो बारे मईना की ग्यारह करे, वणी ने विमान में बैठई ने लई जाय, ने वीको भवसागर पार करदे। चोथे दन जणी बेन ए दरसण दीदा, वा सोना वाली थी। जो लुगायां चोवीसी ग्यारस करे, हर ग्यारस को वणी को अलग-अलग फराल वे। वणी को एक इज दाणो खाय। अणी ग्यारस को वरत खुब कठीन वे। या ग्यारस पुरब जनम का पाप भी धोई लाखे। ने सबने वैकुण्ठ पोंचई दे। ग्यारस माता ए कीदो कें अरे बामण थे अपणी लुगई ने अपणी जीद ती अपणा हांते रोटी खवाड़ी। वणी का धरम ती थने दरसन गिल्या। न्हई धोई ने वेगी-वेगी दौड़तो थको घरे पोंचों। वणे हगरी वात अपणी लुगई ने वतई। मैं थने जीद करीने रोटी खवाड़ी तो म्हने ग्यारस माता ए दरसन दीदा। चारी बेनां ए बाजू-बाजू अपणा-अपणा नेम वताड़्या। म्हने खुब पछतावो वइर्‌यो है। बामण ए बामणी ती कीदो- के मैं भी आज ग्यारस माता को वरत करूँगा। आज तू रोटी मत वणाजें।

भावार्थ

एक ब्राह्मण-ब्राह्मणी थे। ब्राह्मणी एकादशी का उपवास करती थी। ब्राह्मण रोज गंगाजी के घाट पर नहाने जाता था। नहाकर आता, पूजा-पाठ करके दोनों साथ में भोजन करते थे। ब्राह्मण बोला- आज एक ही थाली परोसी? दोनों थाली लगाओ। ब्राह्मणी बोली- आज मुझे एकादशी का उपवास है। तो ब्राह्मण ने हठ पकड़ ली- ये कैसा उपवास? मेरे साथ भोजन करो। वह पतिव्रता समझदार ब्राह्मणी थी। ब्राह्मण के कहने से उसने भी रोटी की थाली परसी। तब ब्राह्मण को विश्वास हो गया कि अब तो ये साथ में भोजन कर लेगी। ब्राह्मण अपनी धुन में भोजन कर रहा था, ब्राह्मणी ने उसका मान रख लिया और थाली में से कौल तोड़-तोड़कर अपनी कंचुकी (काँचली) में रख लिये।

फिर दूसरे दिन ब्राह्मण घाट पर नहाने गया तो ग्यारस माता औरत का वेश बनाकर पानी भरने आई। माता का पूरा शरीर लोहे का था। कपड़े भी काले, गहने भी काले और हण्डा भी काला लोहे का। सब चीजें लोहे की। वह पानी भरने लगी तो ब्राह्मण की दृष्टि उस पर पड़ी, तो देखा-अनदेखा कर दिया। पनघट पर बहुत औरतें पानी भरने आती हैं। कुछ नहीं बोला और चला गया। दूसरे दिन ब्राह्मण फिर घाट पर नहाने गया तो ग्यारस माता पूरी ताँबे की मिलीं। जेवर, कपड़े, घड़ा, सब ताँबे का। इस रूप में ब्राह्मण ने दर्शन किये। वह बेड़ा भरकर जा रही थी तो आगे जाकर अन्तर्ध्यान हो गई। ऐसे करते-करते दो दिन हो गये। तीसरे दिन ब्राह्मण फिर नहाने गया। तो वह पूरी चाँदी के गहने, कपड़े, बेड़ा, इस रूप में फिर ग्यारस माता ने दर्शन दिये। चौथे दिन नहाने आया तो पूरे सोने की ग्यारस माता देखी। चारों दिन ब्राह्मण ने ऐसा अचम्भा देखा। ब्राह्मण को उससे बात करने की हिम्मत भी नहीं हुई। फिर भी मन को थामकर ब्राह्मण ने

ग्यारस माता से पूछ ही लिया- आप कौन हैं? मुझे बताओ। मैं चार दिन से रोज आपको अलग-अलग वेशभूषा में देख रहा हूँ। आज बताना ही होगा।

तो एकादशी बोली कि- तेरी पत्नी को एकादशी का उपवास था और तूने उसे साथ में लेकर भोजन करवाया। हम तो चारों बहनें हैं। जो तुझे पहले दिन दर्शन दिये, वह बहन पापी को पार लगाती है। दूसरे दिन जिस बहन ने दर्शन दिये, वह ताँबे वाली, जो चार एकादशी बड़ी-बड़ी (चतुर्मास वाली) करते हैं, वह उनका बेड़ा पार करती है। तीसरे दिन जिस बहन ने दर्शन दिये, वह चाँदी वाली थी, जो बारह महीने की ग्यारस करता है, उसको विमान में बैठाकर ले जाती है और उसको भवसागर से पार कर देती है। चौथे दिन जिस बहन के दर्शन किये, वह सोने वाली थी। जो स्त्रियाँ चौबीसी ग्यारस करती हैं। हर ग्यारस को उसका अलग-अलग फलाहार होता है और उसका एक-एक दाना ही खाया जाता है। यह एकादशी व्रत बहुत कठिन होता है। ये तो पूर्वजन्म के पाप भी धो डालती है और सबको बैकुण्ठ पहुँचाती है। ग्यारस माता ने कहा कि- अरे ब्राह्मण! तूने पत्नी को अपनी हठ से अपने साथ में भोजन करवाया, उसके धर्म से तुझे दर्शन मिले। ब्राह्मण नहा-धोकर जल्दी-जल्दी भागता हुआ घर पहुँचा। उसने पत्नी को सारी बातें बतायीं। मैंने तुम्हें हठ करके भोजन करवाया तो ग्यारस माता ने मुझे दर्शन दिये। चारों बहनों ने अलग-अलग अपने-अपने नियम बताये। मुझे बहुत पछतावा हो रहा है। ब्राह्मण ने ब्राह्मणी को कहा कि- आज मैं भी एकादशी का व्रत करूँगा, आज तुम भोजन मत बनाना।

गाज-बीज व्रत कथा

एक सेठ थो। वणी के एक बेटो थो। बेटा की वऊ को आणो आयो। तो वणी का गला में सोना की खोगाली में काचा सूत को डोरो बंध्यो थो। सेठ का छोरा ए देख्यो तो तोड़ी में चूला में डाल दीदो। वणी वऊ ए जलतो थको डोरो तोक्यो ने वणी ने बुजई ने काचा दूध में भीजोई ने पीगी। चूला में डालता इ बीज माता कड़की तो घोड़ा की जगे घोड़ा मर्‌या, हाथी की जगे हाथी मर्‌या, ने आखा मेल में आग लागीगी। इस तर सेठ को घर, बार, मेल-मेलात, धन-दौलत, सब वड्लई ग्यो। जसां-तसां चारी जणा वंचीग्या। वणा के साल भर तक घणी विपदा पड़ी। गाज-बीज को दन आयो बामणी डोरा लई ने घरे अई। तो सेठ की वऊ बोली के पोर लिदो थो तो असी दसा वईगी। बामणी बोली के अबके फेर वरत लो, अच्छी तरे ती गाज-बीज माता की पूजा करो, खीर गजाकड़ा वणाओ, विधी-विधान ती पूजा करो ने वार्ता हुणो, ने फेर डोरा छोड़ो, ने गणपती का नाम को इक्कीस तार को डोरो गला में बांधो, वणी वऊ ए डोरो गला में बांध्यो तो सेठ को छोरो बोल्यो के फेर यो कई बांध्यो। तो वा वऊ बोली के थांए पेला भी म्हारो डोरो तोड़ी ने बारी दीदो थो, वणी दन से घणा फोड़ा पड़्या, घणी विपदा आई। आज में विधि-विधान से पूजा करी ने डोरो पाछो बांध्यो है। तो पाछो अन-धन लक्ष्मी बाबड़ीगी।

भावार्थ

एक सेठ था। उसका एक लड़का था। लड़के का गौना करके बहू लाये। उसके गले में सोने की खोगाली में कच्चे सूत का धागा बँधा हुआ था। सेठ के लड़के ने देखा तो उसे तोड़कर चूल्हे में डाल दिया। बहू ने वह जलता हुआ चूल्हे में से निकाला और बुझाकर कच्चे दूध में डालकर पी गई। चूल्हे में डालते ही बिजली चमकी और कड़कने लगी, तो घोड़े की जगह घोड़े मर गये, हाथी की जगह हाथी मर गये और पूरे महल में आग लग गई। इस तरह सेठ का पूरा घर, महल, धन-सम्पत्ति सब तहस-नहस हो गई। जैसे-तैसे चारों सदस्य बच गये। उन्हें पूरे वर्ष बहुत विपदाओं का सामना करना पड़ा।

यही गाज-बीज का दिन आया। ब्राह्मणी धागे लेकर आई। तब बहू ने कहा- हमने गत वर्ष धागा लिया था, तो हमारी आज ऐसी दशा हो गई है, हम परेशान हो गये हैं। ब्राह्मणी ने कहा- अबकी बार फिर धागा लो, अच्छी तरह से गाज-बीज माता का पूजन करो, खीर बनाओ, गजाकड़े बनाओ और विधि-विधान से पूजन करके कहानी सुनो और फिर धागे छोड़ो। गणपतिजी के नाम का इक्कीस तार का धागा पूजन करके गले में बाँधो। बहू ने ऐसा ही किया। तो फिर सेठ का लड़का बोला कि- ये गले में क्या बाँधा है? बहू ने कहा- पहले तुमने ही मेरे गले में से धागा तोड़कर जला दिया था, तो हम पर बहुत विपदाएँ आईं। मैं अब ऐसा नहीं होने दूँगी। गाज-बीज माता इस बार बहू पर बहुत प्रसन्न हुई और पहले जैसा सब कुछ उसे मिल गया।

गाज-बीज व्रत कथा

दो माँ-बेटियाँ थी। बुवारियाँ वेची ने अपणो गुजारो करती थी। भादवे मइने गाज-बीज आई। तो माँ बोली- बेटी! बुबारीया वेंची ने गऊ, गोर लियाव। बेटी ए बुवारीयाँ वेची। ने थोड़ा-सा गऊ और गोर लई ने आई। माँ बोली- बेटी! तु न्हाई-धोई ने गजाकड़ा करजे अतरे मैं बुवारियाँ वेंची ने अऊँ। बेटी ए खीर वणई गजाकड़ा वणाया, गाज बीज की पूजा करी ने उठी, अतरा मे एक फकीर आयो, अलख जगाई, तो वणे तो दोई माँ-बेटी का गणी ने दो-दो गजाकड़ा वणाया था। बेटी ए सोचो के म्हारा इमे से दूँगा तो मैं तो भूखा मरुगाँ, वणे तो झट माँ का इमें ती टुकड़ो तोड़्यो ने फकीर ने दई दीदो। अतरा में माँ ने वुवारी वेंचता-वेंचता मालम पड़ीगी। के म्हारी बेटी ए म्हारा गजाकड़ा में ती टुकड़ो तोड़ी ने दई दीदो। वा तो वठे तीज पाछी घरे अईगी।

माँ बोली- बेटी! गाज-बीज की पूजन कर ली दी? हाँ, माँ! कर लीदी। माँ-बेटी पूजन करी ने रोटी खावा ने बैठी तो माँ का गजाकड़ा में ती एक टुकड़ो तोड़्यो थको थो। तो माँ बोली- 'बेटी म्हारो बटको', 'बेटी म्हारो बटको'। बेटी घबरइगी। वा तो उठती ने बैठती, 'बेटी म्हारो

बटको' वीको तो जीवणों हराम वईग्यो। बेटी थी जो वन में जाती री। तो एक वड़ला पे चड़ी ने बैठीगी। वटने ती एक राजा शिकार खेलवा ने जंगल में आयो, शिकार खेलता-खेलता राजा थाकी ग्यो। तो उ वणी वड़ला नीचे जई ने हुईग्यो। वड़ला पे बैठी-बैठी वा बेटी रोई री थी। तो वणी का आंसू वणी राजा की छाती पे जई ने पड़ीया। तो राजा बोल्यो- के वादरा ने बीजरा कई कोनी यो पाणी को टपको कठे ती पड़्यो? राजा ए उपर देख्यो तो वठे तो वणी का उपर एक लड़की बैठी थकी। राजा बोल्या- तू नीचे उतर, म्हारा हांते चाल, चाल घोड़ा पे बइजा। मूं थारा हाते ब्याव कर लूंगा। राजा वणी लड़की ने घोड़ा पे बैठई ने राज मेल में लइग्यो। विने हऊ न्हवाड़ी-धोवाड़ी, हऊ कपड़ा पेराया। आला लीला वास कटाया ने वणी लड़की का हाते राजाजी पन्नीग्या। बारे मईना पूरा विया, ने गाज-बीज को दन आयो। तो वणे मेल मे ती अवाज हुणी के 'लो बुवारी लो'। वणे नोकराणी ने कीदो के बारे बुवारी वारी अई है। तो जई ने बुवारी लइलो। वणी लड़की ने मालम नी थी के या म्हारी माँ ज है। बुवरिया वेंचवा वारी हामे आई, तो बेटी ए माँ ने ओरखी लीदी, ने माँ ए बेटी ने। वठे भी माँ देखी ने झट बोली पड़ी। 'बेटी म्हारो बटको'। बेटी तो देखी ने घबरईगी, या माँ तो म्हारो पाछो नी छोड़ेगा। वणे तो आव देख्यो ने ताव डोकरी ने झट हाथ पकड़ी ने खेची। माय एक कोटड़ी में बार दीदी ने तारो लगई दीदो। या वात वठे की नोकराणी थी वा देखी री थी।

एक दन राजा के वणी कोटड़ी को काम पड़िग्यो। राजा ए दासी ने कीदो के राणी कनती कुन्ची लई ने देखो वणी कोटड़ी में कई है? राणी बोल्या के अणी कोटड़ी में तो कई कोनी यू ज तारो लागो है। पण दो तो सई। राणी को जीव मायते ती डरे के अभे कई वेगा। जदी या कोटड़ी राजा खोली ने देखेगा तो राजा तो। अड़ीग्या, राणी कुन्ची दो म्हारे तो वणी में काय की चीज पड़ी है? राणी ए असराता-मसराता कुन्ची दीदी। डरे के अभे कई वेगा। राजा पुछेगा तो कई कुंगा। राजा ए कोटड़ी को तारो खोल्यो, ने देखे तो वठे साड़ा तीन मण की सोना की सिल्ला पड़ी ने जगमग-जगमग करे। राजा देखी ने अचम्भा में पड़ीग्या, ने राणी ने बुलाया के अणी कोटड़ी में यो कई, या सोना की सिल्ला कठे ती अई? राजा म्हारो गरीब पीयर है। माँ ए म्हारा वाते भेंट मेली। राजा बोल्या के कई भी करो राणी मूं तो थाका पीयर चालूँगा। अभे राणी ने नींद नी आवे। अटाटी-खटाटी लई ने राणी हुईग्या। राणी ने गाज बीज माता हपना में आया, ने बोल्या के राजहट, बालहट, स्त्रीहट, ने जोगी हट, इ चार हट मनख ने मुस्किल में ल्हाके है। गाज बीज माता बोल्या- के बेटी! घबरा मती, मैं थने हाड़ा तीन दन को पीयर वासो दूंगा। वणी ती जादा मती रिजे।

राणी राजा ने लइने पीयर ग्या। पीयर मे बाप वण्या इन्दरजी, माँ वण्या इन्द्राणीजी, ने बीजली बेन बण्या, धरम भई वइग्या। नऊ खण्यो मेल, चोंपदार, छड़ीदार, नोकर-चाकर। सब ठाठ वइग्यो राजा-राणी मेल में पोचां वणाको खुब स्वागत कर्‌यो। वठे राजा ए यो सब देख्यो तो

वी तो देखी ने मोहित वइग्या। एसा सासरा में तो तीन दन पलक झपे अतरे ज लिकरी जाय। चोथे दन राणी बोल्या- के राजा! अभे अपणे घरे चाला। जावा की तैयारी वइगी। सासूजी, सूसराजी, साला ने, साला की वऊवा जमईजी ने जुवारी दीदी तो सालाजी का हाथ में हीरा जड़्यो चाबुक देख्यो, तो राजा बोल्या- यो चाबुक म्हने दई दो, म्हारा कने असो चाबुक कोनी। जुवारी लेता-लेता उ चाबुक वठे खुंटी पे टंग्यो रइग्यो। ने राजा-राणी ने सूसराजी ए सब लाव-लस्कर लवाजमा सहित राजा-राणी ने वदा करिया। तो कोस एक ग्या वेगा ने राजा बोल्यो अठेज रोकी दो यो पड़ाव। म्हारे हिरा जड़्यो घोड़ो दीदो ने चाबको तो म्हारो खुंटी पर टंग्यो ज रइग्यो। राणी बोल्या के म्हारा बाप ए अतरो दीदो राजा सा के एक चाबका में कई है। आप पाछा मत पदारो। राजा मान्या कोनी ने पाछा ग्या। वठे जई ने देखे तो कोई मेल रिया ने मेलात सब अन्तरध्यान वइग्या। राजा अई ने राणी ने पुछे के या वात कई है। वठे तो वनखण्ड उजाड़ वइग्यो ने थांका माँ ने बाप कोई कोनी। एक वड़ला की डार पे यो चाबको टंग्यो थो। यो लई ने अइग्यो। राणी बोल्या- राजा म्हाको तो घणो गरीब घर थो। मैं दोई माँ-बेटी बुवारी वेंची ने गुवारो करती थी। गाज-बीज का वरत के पन दो गजाकड़ा म्हारा ने दो गजाकड़ा म्हारी माँ का करीया था। पूजन करी ने उठी तो फकीर ए अई ने अलख जगई। तो म्हारी माँ का हिस्सा में ती चोथो हिस्सो वणी फकीर ने दई दीदो। माँ मालम पड़ी तो अई ने रोटी खाती वखत पूछ्यो के म्हारो बटको कठे। मैं कीदो में तो फकीर ने दई दीदो। वणी दन ती म्हारो पाछो नी छोड़्यो। उठता-बैठता, खाता-पीता के ती रेती 'बेटी म्हारो बटको', 'बेटी म्हारो बटको' मैं घबरई ने जंगल में अईगी। आप शिकार खेली ने आया तो मैं बड़ला पे बैठी थी। म्हारा आंसू पड़्या तो आप ए उपर देख्यो, आप म्हने लइग्या ने म्हारा हाते व्याव कर्यो। बारे मइना विया ने गाज-बीज को दन आयो। तो बुवारियाँ वारी बारे अई तो मैं नोकराणी ने किदो के बुवारि लई लो, बाटै बुवारी वारी आई है। वा म्हारीज माँ थी। म्हने माँ ए देखी, मैं माँ ने देखी। म्हने देखी ने माँ ए फेर 'बेटी म्हारो बटको, बेटी म्हारो बटको' मैं डरीगी। आप सब बड़ा लोग, मै गरीब की बेटी। अणी ती म्हारी माँ ने पकड़ी ने कोटड़ी में वार दीदी। माँ मरीगी। मैं आपका मुड़ागे वात नी करी। म्हने डर लागो। उ तो आप ए कोटड़ी की कुन्वी माँगी ने कोटड़ी खोली ने देखी ने पुछ्यो के राणी यो कई? यो हाड़ा तीन मण होनो कठे ती आयो? तो मैं बतायो के म्हारा पीयर की भेट है। तो आप बोल्या के चालो थाके पीयर चालां। यो तो गाज माताए म्हने हपनो दीदो के हाड़ा तीन दन को पीयर वासो दूँगा थने। यो सब गाज-बीज माता को परताप थो। यो पीयर वासो, दान, दायजो, सब वणाए दीदो थो।

भावार्थ

दो माँ-बेटी थी। झाड़ू बेचकर अपना गुजर-बसर करती थी। भादव महीना था, गाज-बीज का व्रत आया। माँ ने कहा- बेटी! झाड़ू बेचकर गेहूँ और गुड़ ले आना और खीर-गजाकड़े

बनाना, स्नान करके पूजन करना। इतने में मैं भी झाड़ू बेचकर आती हूँ। बेटी ने स्नान किया, खीर-गजाकड़े बनाये, गाज-बीज माता का पूजन किया। इतने में एक फकीर आया, उसने अलख जगाया और कहा- भिक्षाम् देही। उसने तो माँ-बेटी के गिनती के दो-दो गजाकड़े (मोटे रोट) बनाये थे। बेटी ने सोचा- मेरे हिस्से में से दूँगी तो मैं तो भूखी रह जाऊँगी। उसने जल्दी से माँ के हिस्से में से टुकड़ा तोड़ा और फकीर को दे दिया। इतने में माँ को झाड़ू बेचते-बेचते मालूम पड़ गया कि मेरी बेटी ने मेरे हिस्से में से गजाकड़े का टुकड़ा तोड़कर दे दिया। वह तो वहीं से घर पर आ गई।

माँ ने कहा- बेटी! गाज माता की पूजा कर ली? हाँ, माँ! मैंने तो कर ली। माँ ने स्नान किया, पूजन की। फिर दोनों भोजन करने बैठीं। माँ ने कहा- 'बेटी म्हारो बटको', 'बेटी म्हारो बटको'। बेटी घबरा गई। उसने तो भोजन नहीं किया और उठती-बैठती एक ही वाक्य बोलती- 'बेटी म्हारो बटको'। बेटी का जीना मुश्किल हो गया। वह उठकर जंगल में चली गई। एक बड़ के वृक्ष पर चढ़कर बैठ गई। उधर से एक राजा शिकार खेलने जंगल में गया। शिकार खेलते-खेलते थककर उस बड़ के वृक्ष के नीचे जाकर सो गया। बड़ पर बैठी-बैठी वह बेटी रो रही थी। उसके आँसू उस राजा की छाती पर आकर गिरे। राजा ने देखा कि न तो बादल है, न बिजली चमक रही है, यह पानी कहाँ से आया। राजा ने ऊपर देखा तो उस वृक्ष पर एक लड़की बैठी हुई थी। राजा ने कहा- नीचे उतर, तू कौन है, कहाँ से आई है, कहाँ रहती है? वह कुछ नहीं बोली। चल मेरे साथ, घोड़े पर बैठ जा। राजा उसे घोड़े पर बिठाकर महल में ले गया। उसे नहलाया, अच्छे कपड़े पहनाये, गहने पहनाये, गीले बाँस कटवाये और राजा ने उसके साथ विवाह कर लिया। शादी का एक वर्ष पूरा हुआ।

गाज-बीज का दिन आया। उस लड़की ने महल में से आवाज सुनी- 'लो झाड़ू ले लो'। उसने दासी से कहा- बाहर झाड़ू वाली आई है तो जाकर झाड़ू ले लो। उस लड़की को मालूम नहीं था कि यह मेरी माँ है। वह झाड़ू बेचने वाली सामने आई तो उस बेटी ने उसे देख लिया और माँ को पहचान गई। माँ ने बेटी को पहचान लिया। माँ नीचे से ही देखकर बोली- 'बेटी म्हारो बटको'। बेटी देखकर घबरा गई कि यह माँ तो मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी। उसको गुस्सा आया, झट नीचे उतरी और माँ का हाथ पकड़कर एक अँधेरी कुटिया में बन्द कर दिया और ताला लगा दिया। यह सब वह नौकरानी देख रही थी। राजा को एक दिन उस कुटिया में से कुछ निकालना था। राजा ने दासी से कहा- रानी के पास से चाबी लेकर आओ और देखो इस कुटिया में क्या रखा है? रानी ने राजा से कहा- इस कुटिया में कुछ भी नहीं है। इसमें ताला क्यों लगाया? ऐसे ही लगा दिया। पर इसकी चाबी तो मुझे दे दो? रानी घबराने लगी- अब क्या होगा? राजा ने कुटिया का ताला खोला। कुटिया तो चमचमा रही थी। उसमें साढ़े तीन मन की सोने की शिला

रखी हुई थी। राजा देखकर आश्चर्य में पड़ गये। रानी को बुलवाया- इस कुटिया में यह क्या है? यह सोने की शिला कहाँ से आई? राजा से रानी ने कहा- राजा! मेरा मायका गरीब है, माँ ने मेरे लिए भेंट दी है। राजा ने कहा- रानी! तुम कुछ भी कहो, मैं तो तुम्हारे मायके चलूँगा। रानी यह सुनकर परेशान होने लगी। उसकी रात की नींद और दिन का चैन हराम हो गया। रानी एकान्त में जाकर सो गई तो गाज-बीज माता उसे सपने में आई और कहा कि- राजहठ, बालहठ, स्त्रीहठ और जोगीहठ, ये चार हठ मनुष्य को मुश्किल में डाल देते हैं। बेटी! तू घबरा मत, मैं तुझे साढ़े तीन दिन का पीयर वास दूँगी, तू वहाँ आ जाना और उससे अधिक समय मत रहना।

राजा, रानी को लेकर मायके गये। मायके में पिता बने इन्द्र, माता बनी इन्द्राणी और बिजली बहन बनी, बादल धरम भाई बने। नौ मंजिला महल, ड्यौढ़ीवान, छड़ीदार, नौकर, दास-दासी, पूरा ठाट-बाट। राजा-रानी महल में पहुँचे। उनका बड़े जोर-शोर से स्वागत किया। वहाँ पर यह सब राजा देखकर मोहित हो गये। ऐसे ससुराल में साढ़े तीन दिन पलक झपकते ही निकल गये। चौथे दिन रानी ने कहा- राजा! अपने घर चलें। राजा बोले- एक दिन और रह लेते हैं? रानी ने कहा- अब चलना चाहिये। जाने की तैयारी हो गई। सास-ससुर ने सब लवाजमें सहित बेटी-दामाद को विदाई दी। साले के हाथ में हीरों का जड़ा हुआ चाबुक देखा। राजा ने कहा- यह चाबुक मुझे दे दो, मेरे पास ऐसा चाबुक नहीं है। विदाई लेते हुए वह चाबुक खूँटी पर ही टँगा रह गया। राजा-रानी सब सामान सहित वहाँ से विदा हुए। थोड़ी ही दूर पर गये और राजा बोले- यह लवाजमा यहीं रोक दो, मेरा हीरे जड़ा हुआ चाबुक तो वहीं टँगा रह गया। रानी बोली कि- मेरे पिता ने इतना सब कुछ दिया, उस चाबुक में क्या है? आप उसे वापस लेने के लिए मत जाओ। राजा नहीं माने। वे चाबुक लेने चले गये। वहाँ जाकर राजा ने देखा कि यहाँ तो कुछ भी नहीं है, एक वृक्ष पर चाबुक टँगा था। उसे लेकर राजा आ गये। राजा ने आकर रानी से पूछा- वहाँ तो वनखण्ड, उजाड़ जंगल रह गया। महल, नौकर, दास-दासी, चोपदार, छड़ीदार, तुम्हारे माता-पिता, भाई-बहन, कोई भी नहीं? यह क्या बात है? रानी! मुझे बताओ।

रानी ने कहा- राजा! मेरा तो बहुत गरीब घर था। हम दोनों माँ-बेटी झाड़ू बेचकर अपना गुजारा करती थीं। गाज-बीज के व्रत के दिन दो-दो गजकड़े दोनों माँ-बेटी के बनाये थे। माँ के हिस्से में से मैंने फकीर को दे दिया था। माँ को मालूम पड़ी कि मैंने उसके हिस्से में से टुकड़ा फकीर को दे दिया है, उस दिन से वह मेरे पीछे पड़ गई। और 'बेटी म्हारो बटको', 'बेटी म्हारो बटको' सुन-सुनकर घबराती हुई मैं जंगल में पहुँच गई और वहाँ आप मिल गये। आपने मुझसे विवाह किया। वही गाज-बीज का दिन आया। एक झाड़ूवाली झाड़ू लेकर महल में आई। मैंने दासी से कहा- झाड़ू ले लो। वह झाड़ूवाली मेरी माँ ही थी। उसने मुझे देख लिया। मैंने उसे देख लिया। और फिर कहने लगी- 'बेटी म्हारो बटको'। मैं डर गई। आप बड़े लोग हैं। मैं गरीब की बेटी। इससे मैंने माँ को पकड़कर एक कुटिया में बन्द कर दिया। माँ मर गई। फिर आपने

इसकी चाबी माँगी और आपने ताला खोला, फिर पूछा कि- रानी! यह क्या है? साढ़े तीन मन सोना कहाँ से आया? तब मैंने कहा कि यह तो मेरे मायके की भेंट है। आपने कहा- चलो, तुम्हारे मायके चलेंगे। आपने कहा जब से मुझे नींद भी नहीं आई और मैं एकान्त में जाकर सो गई। गाज-बीज माता ने मुझे सपने में आकर कहा कि- तू क्यों घबरा रही है? मैं तुझे साढ़े तीन दिन का पीयरवासा दूँगी और फिर आपको लेकर मैं साढ़े तीन दिन मायके में रही।

यह सब गाज-बीज माता का आशीर्वाद था। यह पीयरवासा, दान-दहेज, नौकर-चाकर, दास-दासी, हाथी-घोड़े, पालकी, सब उन्हीं का दिया हुआ था। राजा ने रानी की बात सुनी तो वे गदगद हो गये। राजा-रानी अच्छी तरह से रहने लग गये।

अणत चौदस व्रत कथा

एक पटेल थो। वणी के एक बेटो थो। बेटी नी थी। करसाण में छोटा-छोटा को ज व्याव करी दे। वणी को ब्याव करी दिदो। वऊ छोटी थी। दो-चार साल बाद वऊ ने लियाया। भादवे मईने लाया तो वणी की माँ कियो के या अनन्त चौदस को वरत करे है, अणी के डोरो मंगाड़जो ने वरत करावजो? वणा ए किदो हाँ करई दांगा। वणे सासूजी ने किदो के म्हारे आज अनन्त चौदस को वरत है तो म्हारे पुजापा को समान दो। ने डोरो भी मंगई दो वऊ न्हई-धोई ने पूजन करवा ने बैठी। थोड़ासा गऊ बिछाया पाटला नीचे। पाटला पे केसरिया कपड़ो बिछायो। डोरो मेल्यो पूजन करी। वऊ सासूजी ने किदो के गजाकड़ा कदी पूजोगा। तो सासूजी बोल्या के मूं तो तेरस का पूजूं पण थारी माँ ए कइ मोल्यो के या चौदस को वरत करे तो चौदस का डोरा छोड़जो। तो तू एसो कर के दूद पड़्यो तो खीर वणई ले, भीन्डा पड़्या तो वणाने वनारी ने वणी की साग रांदी ले। वणे सब वणई लीदा। गजाकड़ा करी लीदा। ने पूजा कर ली। फेर हऊजी बोली- के बेटो अई जाय तो अपणे तीनी रोटी खावां। हऊ ए भी भील-भीलड़ा वणाया ने गाज माता की पूजा करी। बेटो आयो तो बेटा ए पूजन देखी तो माँ ने किदो के यो कई टोटको, कर्‌यो घरमें। थें तो कदी नी कर्‌यो ने अणी रांड ए टोटको कर्‌यो। यो टोटको कोनी बेटा, यो तो अणत नारायण को वरत है। आखा गाम मे करे। देख मूं हूणी ने अऊँ। कोई नी, अणे यो तो म्हने मारवा ने कर्‌यो। वणी बेटा ए उ डोरो पड़्यो थो, तो दीवा में बारी ने नीचे मेल दीदो। उ डोरो बरीग्यो। वा वऊ बैठी-बैठी देखी री थी। वा झट ती उठी ने जांवणी में ती खुनयोक दईं लिदो ने चमटी मे डोरा को राखोड़ो लई ने, ने दई में घोरी ई ने पी गी। अभे बिचारी ने घर मे ती काड़ी दीदी। वा वनखण्ड जंगल में चली गी। चालता-चालता विने दो वावड़ीया मिले। दोई वावड़ियाँ को पाणी एक दूसरी में जई रियो। वणा वावड़ियाँ के वाचा अई के म्हाकी वावड़ी को पाणी कोई नी पीये। के थें कठे जई रिया? मूं तो अणत नारायण कने जई री हूँ। आप पूछी नी आवजो, के म्हाकी

वावड़ी को पाणी क्यों नी पीये। आगे गई तो एक बोर को रूखड़ो मिल्यो। तो वणी बोर ए किदो के म्हारा बोर अतरा मीठा है, पण कोई नी खाय। आप म्हारो भी पूछी ने आवजो। फेर आगे गई तो एक कुण्ड भर्‌यो थको मिल्यो। वणी में मगर थो। वीने भी मालम पड़ी के या पूछवा ने जईरी है, तो म्हारो भी पूछीने आवजो, के मूं हजारों साल ती जीवीरियो, मूं मरु कां कोनी? मैं एसा कई पाप कर्‌या। फेर आगे गई, तो पाँच साधू मिल्या, वणा ए किदो के बाई अणत नारायण कने जईरी तो म्हाको संदेसो भी लेती जा। मैं पाँच जणा ने एक पनवाड़ो आवे मैं भूखा मरां। भगवान ने कीजो के मैं पाँच जणा पाँच पनवाड़ा मेले। तो मैं धापी ने खावांगा। फेर आगे गई।

तो सात तपस्वी मिल्या, वणाए किदो म्हाके एक चादरो जो वेगो उठे उ चादरो पेरले। ने बाकी सब उगाड़ा। फेर आगे गई तो एक मन्दर मिल्यो तो वणी में अणत नारायण भगवान, शेषनारायण की सेज पे पोड़्या था। वणी पे जो वीती वा सब बात वणाने करी दीदी। मूं तो आपका दर्शन करी ने धन्य वईगी। म्हारा पती ए आपका हाते हऊ नी करीयो आप वताओ अभे मैं कई करूँ। तो लछमी जी बोल्या- थारा पति ने राते हपना मे दर्शन दई दीदा है। वणी ने सद्‌बुद्धि अईगी है। अभे थने कईं नी केगा। अभे तू चौदा वरस हुदी तो यो वरत करजे। ने फेर उद्यापन करजे चौदा जोड़ा जीमाजे, ने सब जोड़ा ने, जीमे आदमी ने धोती-कुर्तो, ने गुलायाँ ने लुगड़ो-पोलको ने सुवाग को सब समान दिजे। वा बोली- के भगवान म्हारो तो सासरो इ गरीब है, ने पीयर भी गरीब। मूं कठे ती लऊँगा? म्हने म्हारा हरको वताओ आप। भगवान ए फेर किदो के चौदा गारा का घड़ा मंगावजे, चौदा जोड़ा जीमाजे, आदमी ने रुपयो, रुपयो ने लुगायां ने आठ-आठ आना दई दिजे। ने चौदा इ ने अणत का डोरा बदावजे। भगवान म्हारो दुख तो काटी दीदो। पण वाट मे नरा जणा मिल्या, ने वणाए अपणो-अपणो दुखड़ो हुणायो। मूं आपने वणाको दुखड़ो हुणई दूं। भगवान बोल्या- म्हने सब मालम है। मूं सबको दुख काटी रियो हूं। तू जणी वाटे अई वणी वाटे जाजे, ने चादरा वारा ने किजे, के काले थाकों वेकुण्ठ ती वेवाण आवेगा। तो थाने सब ने लई जाएगा। थाए तो दन रात तपस्या करी। फेर पणवाड़ा वारा ने किजे, के थें पनवाड़ा में पड़्या थका, राम को नाम तो लो कोनी, ने खावा घाल्या वन मे पड़्या। काल ती हवा धड़ी को पनवाड़ो आवेगा। पण थें नरक में जाओगा। अभे भी राम को नाम लिजो तो वैकुण्ठ में चलया जाओगा। फेर भगवान बोल्या- थने कुण्ड मे मगर भी मिल्यो थो। विने किजे, के तू बारते लिकरी जा तो मरी जाएगा। तू अपणी विद्या किने नी दई रियो है। तो तू मगर की योनी में आयो। तू अभे मरेगा तो मनख की योनी में आवेगा। पछे तू अपनी विद्या दूसरा ने हिकावेगा जदी थने मुक्ति मिलेगा। फेर दोई वावड़ीयाँ को विदो के वी दोई देराणी-जेठाणी थी। दोयां का घर में दूजाणों थो। वी रोज छा करे। पण ती लोगां ने वासी दे। आज की काल दे। अणी ती थांकी वावड़ी को पाणी कोई नी पीये। अणी ती थाने पाछी मनख की योनी देगा। अणी ती तुरत की तुरत वांटोगा तो अणा वावड़ियाँ को पाणी लोग पीयेगा। ने देराणी-जेठाणी को नाम पड़ी जाएगा। फेर तू चाली तो थने बोरण मिली।

भगवान बोल्या– के देख तू पूरबला जनम में गाय थी। थने जठे, जठे वेंची। पण थें मनखां ने दूद नी काड़वा दीदो। तू पाछी मरेगा, ने फेर मनख की योनी में आवेगा। ने सबती प्रेम बोली बोलेगा, तो थारा पे सब परसन वई जाएगा। भगवान ए वीने लड़की को अवतार दीदो, वा मोटी वी, ने सबती प्रेम ती बोलवा लागीगी। तो वणी गाय को प्रायश्चित झड़ीग्यो। ने सब वणी का बोर खावा लागी ग्या। बऊ ने ग्या ने बारा मईना वइग्या था। अणत चौदस ए आदमी ने हपनो दिदो। के गोयरे जा थारी लुगई अईरी है। उ गोयरे जई ने देखे तो लुगई अईरी। उ अचम्भा मे पड़िग्यो। दौड़ी ने झट वीने गले लगई। के तू गई वणी दन अपना घर में अगड़ा ठाठ वईग्या। म्हने अणत नारायण भगवान हपना में आया, ने किदो के यो टोटको नी थो, या तो म्हारी पूजा थी। अणत नारायण भगवान टूटमान विया। ने वणी ए माफी माँगी के भगवान म्हने माफ कर दिजो। मैं म्हारी लुगई ने घणो दुख दिदो। बऊ ने घरे देखी ने सासूजी खुब परसण विया। ने किदो के वऊ थारे काले अणत चौदस को वरत है। तो तू इको उजमणो करले बेटा। के हाँ सासूजी। बेटा ने किदो के तू सेर जा ने उजमणा को समान लाव। चौदे आदमी का सरपाव, चौदे लुगायां का सरपाव ने सुवाग को समान, चौदे घड़ा, चौदा रुद्र कलस, एक तांबा को लोट्या। चौदा बामण का जोड़ा ने जीमवा को नोतो, ने पूजन करावा को कमावणे। बेटो सब समान लई ने, ने बामण ने जीमवा को कमायो। दूसरे दन उजमणो करायो हऊ रसोई वणई, सब जोड़ा जीमाया। अच्छी तरे ती सब ने वदा दई, ने वदा कर्‍या। फेर वणाने अणत नारायण भगवान खुब टुटमान विया। ने वणा के आनन्द का वासा वईग्या। वणी वऊ ने पाछे ती टूटा असा सकल ने टूटजो।

भावार्थ

एक पटेल था। उसका एक लड़का था। किसानों में छोटे-छोटे का ही विवाह कर देते हैं। उस लड़के का भी विवाह कर दिया। बहू छोटी थी। दो-चार साल बाद बहू का गौना लाये, तो उसकी माँ ने कहा- इसको अनन्त चतुर्दशी का व्रत है। इसको डोरा मँगवाकर पूजा करवाना। बहू ने स्नान किया। पूजन करने बैठी। पटीये पर केसरिया कपड़ा बिछाया, उस पर डोरा रखा, नीचे गेहूँ रखे। उसने पूजा की। सासू माँ ने कहा कि- मैं तो तेरस के डोरे छोड़ती हूँ, लेकिन तेरी माँ ने कहा है कि तू अनन्त चतुर्दशी के दिन छोड़ेगी, सो तू आज पूजन करके डोर छोड़ दे। खीर, गजाकड़े और भिण्डी की सब्जी बना ले। उसने सब बनाकर पूजन की। सासू माँ ने कहा- मेरा बेटा आ जाये तो साथ में ही भोजन कर लेंगे। बेटे ने देखा कि यह क्या है? माँ से कहा- ये क्या टोने-टोटके कर रखे हैं घर में? तूने तो कभी नहीं किये। माँ ने कहा- यह टोटका नहीं है, अनन्त नारायण के व्रत की पूजा है। आज इस व्रत को सब औरतें करती हैं। नहीं, ये तो इसने मुझे मारने के लिए किया है। पटीये पर डोरा पड़ा था, उसे दीये में जला दिया। बहू बैठी-बैठी यह सब देख रही थी। उसने सह जला हुआ डोरा उठाया और जावणी (मटकी) में से दही लिया। डोरे को उसमें मिलाकर पी गई। उस बेचारी को लड़के ने घर से बाहर निकाल दिया।

वह उजाड़ जंगल में चली गई। रास्ते में उसे दो बावड़ियाँ मिलीं। दोनों बावड़ियों का पानी एक दूसरे में जा रहा था। बावड़ी में से आवाज आई कि हमारी बावड़ी का पानी कोई भी नहीं पीता है। आप कहाँ जा रही हो? मैं अनन्त नारायण के पास जा रही हूँ। आप उन्हें पूछकर आना कि हमारी बावड़ी का पानी क्यों नहीं पीते। आगे गई तो एक बेर का पेड़ मिला। उसने कहा– मेरे बेर इतने मीठे हैं, पर इन्हें कोई भी नहीं खाता। आप मेरा भी पूछकर आना। फिर आगे गई तो एक कुण्ड भरा हुआ मिला, उसमें एक मगर था। उसको मालूम पड़ा कि यह पूछने जा रही है। तो उसने कहा– आप मेरा भी पूछकर आना कि मैं हजारों साल से जीवित हूँ। मैं मरूँगा कि नहीं? मैंने ऐसा क्या पाप किया है? फिर आगे गई तो उसे पाँच साधु मिले। उन्होंने कहा– बाई! आप अनन्त नारायण के पास जा रही हो, तो हमारा भी सन्देशा लेती जाओ। हम पाँच लोग हैं और भोजन की एक पत्तल आती है, हमारा उसमें गुजारा नहीं होता, हम भूखे रह जाते हैं। भगवान से कहना कि पाँच लोगों की पाँच पत्तल भेजें तो हम पेटभर भोजन करेंगे। फिर आगे गई तो सात तपस्वी मिले। उन्होंने कहा– हमारे पास एक चादर है, जो पहले उठता है, वह उस चादर को पहन लेता है। बाकी सब नंगे शरीर।

फिर आगे गई तो एक मन्दिर मिला। उसमें अनन्त नारायण भगवान शेषनारायण की शैय्या पर सोये हुए थे। उस पर बीती वह सारी बात उन्हें बता दी। मैं तो आपके दर्शन मात्र से धन्य हो गई। मेरे पति ने आपका अपमान किया है। आप ही बताएँ, प्रभु! मैं अब क्या करूँ? लक्ष्मीजी ने कहा– तेरे पति को रात में सपने में दर्शन दे दिये हैं। उसको सद्‌बुद्धि आ जायेगी। अब तुझे कुछ भी नहीं कहेगा। तू यह व्रत चौदह वर्ष तक करना, फिर उसका उद्यापन करना, चौदह जोड़े को भोजन कराना, औरतों को पूरा सुहाग–पिटारा देना और पुरुषों को श्रीफल धोती–कुर्ता देना। उसने कहा– भगवन! मेरा तो ससुराल और मायका दोनों ही गरीब है। मैं इतना सामान कहाँ से लाऊँगी? भगवान ने कहा– चौदह मिट्टी के घड़े, चौदह जोड़े, पुरुषों को एक–एक रुपया और स्त्रियों को आठ–आठ आने दे देना और चौदह अनन्त के डोरे उनको बाँधना।

भगवन! आपने मेरा दुख तो निवारण कर दिया, पर रास्ते में मुझे बहुत लोग मिले, उन्होंने अपना–अपना दुख मुझे बतलाया। भगवान बोले– मुझे सब मालूम है। मैं सबका दुख निवारण कर रहा हूँ। तू जिस रास्ते आई उस रास्ते जाना और चद्दर वालों को कहना कि कल तुम्हारे लिए बैकुण्ठ से विमान आयेगा तो तुम सबको ले जायेगा। तुमने तो दिन–रात तपस्या की है। फिर पत्तल वालों को कहना, तुम राम का नाम तो लेते ही नहीं हो, खाने के लिए जंगल में पड़े हो। कल से सवा पाँच किलो की पत्तल आयेगी, पर तुम नरक में जाओगे। पर अब भी अगर तुम राम का नाम लोगे तो बैकुण्ठ में चले जाओगे। फिर भगवान ने कहा– तुझे कुण्ड में मगर भी मिला था, उसको कहना तू बाहर निकल जा तो मर जायेगा। तू अपनी विद्या किसी को भी नहीं दे रहा है, इसलिए मगर की योनि में आया। तू अब मरेगा तो मनुष्य योनि में आयेगा और अपनी विद्या

दूसरों को सिखायेगा, तब तुझे मुक्ति मिलेगी। फिर बावड़ियों का कहा, ये दोनों देरानी-जेठानी थीं। दोनों के घर में बहुत दूध था। वह रोज छाछ करती थीं, पर लोगों को बासी देती थीं। इसलिए तुम्हारी बावड़ी का पानी कोई नहीं पीता है। इस बार फिर तुम्हें मनुष्य योनि देंगे, फिर हर वस्तु ताजी-ताजी देना, तो इस बावड़ी का पानी लोग पीयेंगे। और इस बावड़ी का नाम देरानी-जेठानी पड़ जायेगा। फिर तुझे बोरन मिली। भगवान ने कहा कि- देख, तू पूर्वजन्म में गाय थी। तुझे जहाँ-जहाँ बेची, तूने उन लोगों को दूध नहीं निकालने दिया। तू फिर मरेगी और वापस मनुष्य योनि में आयेगी। सबसे प्रेम से बोलेगी तो तुझ पर सब प्रसन्न हो जायेंगे। भगवान ने उसे लड़की का अवतार दिया, वह बड़ी हुई, सबसे प्रेम से बोलने लगी, तब उस गाय का प्रायश्चित झड़ा। फिर उसके सब बोर खाने लग गये।

बहू को गये एक वर्ष हो गया था। अनन्त नारायण ने उसके पति को स्वप्न दिया कि गाँव के बाहर जाना, तेरी पत्नी आ रही है। उसने जाकर देखा, उसकी पत्नी आ रही थी। उसे आश्चर्य हो रहा था। दौड़कर उसके पास गया और उसे गले लगा लिया और कहने लगा कि- तू गई उसी रोज से यहाँ तो आनन्द ही आनन्द हो गया। मुझे अनन्त भगवान सपने में आये और कहा कि यह कोई टोटका नहीं था, यह तो मेरी पूजा थी। अनन्त नारायण भगवान टूटमान हुए। उसके पति ने कहा- भगवान! मुझे माफ कर देना, मैंने मेरी पत्नी को गलत समझा। उसे बहुत दुख दिया।

बहू को घर पर देखकर सासू माँ बहुत प्रसन्न हुई। बहू को कहा- कल अनन्त चतुर्दशी का व्रत है। तू इसका उद्यापन कर ले, बेटा। बहू ने कहा- हाँ, सासू माँ! मैं उद्यापन कर लेती हूँ। बेटे को माँ ने कहा- तू बाजार से सारा उद्यापन का सामान लेकर आ। चौदह जोड़ों के कपड़े, सुहाग-पिटारी, घड़े, रुद्र-कलश, एक ताँबे का लोटा। चौदह जोड़ों का भोजन को निमंत्रण दिया। दूसरे दिन उद्यापन करवाया। रसोई बनवाई, चौदह जोड़ों को भोजन करवाकर सबको भेंट-पूजा दी। सबको अच्छी तरह से विदाई दी। सब जोड़ों ने उन्हें बहुत आशीर्वाद दिया। अनन्त नारायण भगवान उन पर बहुत प्रसन्न हुए। उनके घर में मंगल ही मंगल हो गया।

सूरज नारायण व्रत कथा

सूरज नारायण उगवा ने पदार्या। तो राजा देवजी देखी ने बोल्या के- आप खाली धरती के चक्कर लगाओ के कणी ने कईं दो भी हो। तो सूरजनारायण बोल्या- के मूं चक्कर लगावा ने थोड़ी जई रियो, मैं तो सबको पालने-पोषण करवा ने जई रियो हूँ। कीड़ी ने कण दूंगा, हाथी ने मण दूंगा, चरकली ने चना चूंगा। तो आदमी ने लुगायां ने बच्चा ने कस्तर भुलूंगा। तो राणा देवजी देखी ने बोल्या के- मूं आपकी परीक्षा लूंगा। के आप अतरा लोगा ने कई दई रिया। तो सूरजनारायण

ए किदो के आप आज इज लई लोनी। तो आपकी मन की शंका खतम वई जाएगा। सूरजनारायण उगवा ने पदार्या रथ मे बैठी ने तो राणादेवजी एक डाबी लाया। जमीन पर ती एक कीड़ी पकड़ी ने वणी ने डाबी में मेल दीदी। तो डाबी में मेलवा ने ग्या तो लुगायां हवेरा-हवेरी राणादेवजी ने सूरजनारायण की पुजा करे। तो राणादेवजी के करम पे, चोखा चेटाया थका था। तो वा डाबी मेलवा लागा तो वणी में करम को चोखो वणी डाबी में पड़िग्यो डाबी दई ने कांचरी में मेल लीदी।

सूरजनारायण पदार्या तो राणादेवजी पूछे- के सब ने दई दीदो म्हाराज? तो सूरजनारायण बोल्या। हाँ, मैं सबने वांटी दिदो। एक कीड़ी तो रइगी। राणादेवजी मूं झूठ कदी नी बोलूं। एक कीड़ी डाबी में भरी वणी ने आप कठे देवा ने आया? राणादेवजी जणी वखत आप ए कीड़ी डाबी में भरी वणी वखत मैं आपका करम को चोखो वणी डाबी में लाखी दीदो। देखो, डाबी खोलो। राणादेवजी ए डाबी खोली तो देखे के वा कीड़ी उ चोखो खइरी थी। राणादेवजी पगे पड़्या सूरजनारायण के- आप त्रिकालदर्शी हो, आप सबने दई रिया हो। मैं मुरखता करी ने आपकी परीक्षा लई लीदी। नाथ! राणादेवजी प्रार्थना करवा लागा सूरजनारायण ती। तो सूरजनारायण बोल्या- के प्रार्थना की कई वात नी है। लुगई ने आदमी पे कम विश्वास वे तो आपने विश्वास दिलायो। जिने जो काम दीदो वी सब अपणो-अपणो काम करीरिया है। आप म्हारी तन-मन ती सेवा-पूजा करोगा? तो राणादेवजी आपकी शंका निकली जाएगा। तो लुगायां मातर सूरजनारायण की पूजा करेगा। वणी के मूं असो ज टूटमान वूगां। और वणा की इच्छा पुरी करूँगा।

भावार्थ

सूर्यनारायण उदय हुए। तब राणादेवजी ने कहा कि- आप खाली पृथ्वी का चक्कर लगाते हो कि किसी को कुछ देते भी हो? सूर्यनारायणजी बोले कि- मैं चक्कर लगाने थोड़े ही जा रहा हूँ, मैं तो सबका पालन-पोषण करने के लिए जा रहा हूँ। 'कीड़ी को कण, हाथी को मण, चरकली ने चण', जिसको जैसा लगेगा वैसा दूँगा। तो स्त्रियों, बच्चों और पुरुषों को मैं कैसे भूल सकता हूँ। राणादेवजी ने कहा- मैं आपकी परीक्षा लूँगा कि आप इतने सारे लोगों को क्या दे रहे हैं? सूर्यनारायणजी ने कहा- आप आज ही ले लो। आपकी मन की शंका दूर हो जायेगी। सूर्यनारायणजी रथ में बैठकर पृथ्वी लोक में चक्कर लगाने आये, तो राणादेवजी एक डिब्बी लाये, पृथ्वी पर से एक चींटी पकड़ी और उसे उस डिब्बी में डाल दी। स्त्रियाँ सुबह-सुबह नहा-धोकर राणादेवजी और सूर्यनारायणजी का रोज पूजन-अर्चन करके प्रार्थना करती हैं। राणादेवजी डिब्बी बंद करके रखने लगे तो उनके सिर पर चिपका हुआ चावल उस डिब्बी में गिर गया। डिब्बी बंद करके रख ली।

सूर्यनारायणजी आये, तो राणादेवजी ने पूछा कि- महाराज! सबको आपने बाँट दिया, जो देना था वह दे दिया? सूर्यनारायणजी ने कहा- हाँ, मैंने सबको बाँट दिया। राणादेवजी बोले- एक चींटी तो रह गई? 'राणादेवजी! मैं झूठ नहीं बोलता।' 'लेकिन एक चींटी तो डिब्बी में भरी हुई है, उसे आप कहाँ देने आए?' राणादेवजी! जिस वक्त आपने चींटी डिब्बी में भरी, उस वक्त मैंने आपके मस्तक का चावल उस डिब्बी में डाल दिया। डिब्बी खोलकर देख लो। राणादेवजी ने डिब्बी खोलकर देखी तो वह चींटी चावल खा रही थी। राणादेवजी ने सूर्यनारायणजी को साष्टांग दण्डवत् किया- आप त्रिकालदर्शी हैं। महाराज! आपने तो सबको दिया है। मैंने मूर्खता करके आपकी परीक्षा ली है नाथ। राणादेवजी ने सूर्यनारायणजी से प्रार्थना की। तब सूर्यनारायणजी बोले- प्रार्थना की कोई बात नहीं है। औरतों को पुरुष पर विश्वास नहीं होता है, इसलिए मैंने आपको विश्वास दिलाया। जिसको जो भी कार्य दिया है, वह सब अपना-अपना कार्य कर रहे हैं। आप मेरी तन-मन से पूजा करोगे तो राणादेवजी! आपकी शंका निवारण हो जायेगी। जो स्त्री-पुरुष मेरी पूजा-अर्चना करेंगे, उनकी मैं इच्छा पूरी करूँगा।

पंथवारी माता व्रत कथा

एक डोकरी थी। वणी के पाँच बऊवां थी। चार तो एक वई ने रेती थी ने छोटी बऊ ती परेज करती थी। घर में गायां-भैंसा खुब थी। दूध खुब बेतो थो। पाँची बऊवां दूद वाँटी देती थी ने खावा-पीवा का बाद जो वंचतो उ वेंची देती थी। बऊवां रोज सासू ने हिसाब देती, छोटी बऊ भी देती। एक दन छोटी बऊ ए होच्यो के गांम की सब लुगायाँ अपणी-अपणी हऊ ने तिरथ मेले, हम भी मेलां। छोटी बऊ ए अपणी सब जेठाणियाँ ने कीदो- के अपणे भी सासूजी ने तिरथ मेलां? सब ए मिली ने सासूजी ने तिरथ की वात किदी। सासूजी बोल्यो- दूजाणों हऊ हमारो तो जऊँ, नी तो घर को खरयो कसस्तर चालेगा? हाँ, सासूजी! आप देखजो, के कुण कतरा पईसा दे। सासुजी ने अच्छी तरे ती तिरथ मेल्या। अटने सब छोटी बऊ को खार करवा लागी। सब दूद वाँट देती। चारी वऊवाँ तो खाती-पीती, वंचतो उ वेंचती ने पईसा भेरा करती। एक मईना में वणा ए खुब पईसो भेरो कर लिदो। ने छोटी वऊ तो हऊ का जावा का बाद रोज पंथवारी पूजती और जतरो भी दूद वणी का पाती में आवतो उ सब जई ने पंथवारी माता के चढ़ई आवती। पंथवारी का पाँय भाटा पूजती ने एक खोली में लईने मेल देती। खोली में भाटा को ढेर वईग्यो। अबे सब जेठाणिया केवा लागी के या कई हिसाब देगा? या तों हगरो दूद काजन कठे लई जाय ने कजण कईं करे? हऊ है, सासूजी आवेगा तो इने घर का बारते लिकार देगा। आखो मईनो वईग्यो ने सासूजी तिरथ ती अइग्या।

सासूजी तिरथ ती अईने बैठा तो चारी जेठाणिया बोली- के मांगों नी सासूजी हिसाब!

सासू ए कीदो- हाँ, मांगु। म्हने थोड़ो रिसामों तो लेवा दो। म्हारो थकेलो तो गारवा दो। छोटी बऊ कई भी नी बोली। थोड़ा दन बाद सासूजी ए किदो- लाओ बऊवां हिसाब-किताब, चारी बऊवां ए तो हिसाब दई दीदो। फेर छोटी बऊ ती मांग्यो तो वा बोली- चालो सासूजी! आपने हिसाब बताऊँ। सासू हांते वइगी। बऊँ ए खोली को बारणों खोल्यो ने कीदो- 'यो भेरो करयो मैं तों'। सासू देखी ने दंग रईगी। म्हारी बऊ तो पूनवान है। पंथवारी का भाटा तो होना-चाँदी, हीरा-जवारात वइग्या। यो सब देखी ने जेठाणिया ने जलन वेवा लागी। सासु बोली- काओ बऊ! यो सब कठे ती लाई? वणे कीदो के आप तो तिरथ ग्या था। मैं रोज पंथवारी पुजती ने वठे ती भाटा भेरा करती वी इज भाटा है। म्हारा पाँती दूद आतो उ सब चढ़ई आवती। यो सब जेठाणियाँ ए हुण्यो। सासूजी ए कीदो- थें सब तो अणी पे जलती थी नी, के या दूद कजन कठे लई जाय, तो देखो।

फेर चारी जेठाणिया ए मनसुबो करयो ने कीदो के सासूजी थें पाछा तिरथ जाओ। सासुजी ए कीदो अबी नी, थोड़ा दन बाद जऊँगा। वी बोली- नी, अबी जाओ। सासू ने फेर ती तिरथ मेल्या। फेर चारी जेठाणिया जतरो दूद वेतो अतरो सब बड़ा तपेला में उन्नो करती ने गरम-गरम दूद पंथवारी माता के चढ़ई देती। वी केती- वा तो ठण्डो चढ़ाती, थोड़ो-सो चढ़ाती, म्हे तो खुब चढ़ावाँ तो वीको फल भी खुब मिलेगा। वी भी रोज भाटा भेरा करी ने रोज खोली में मेल देती। सासूजी तिरथ ती पाछा अइग्या। जेठाण्या बोली- मांगो नी सासूजी हिसाब। सासूजी ए कीदो- अतरी कई उतावर है? थोड़ोक सुस्तई लेवा दो, फेर मांगुगा। सासूजी उठ्या ने न्हाया-धोया, पूजा-पाठ करी ने फेर नवरा विया। फेर सासूजी ए कीदो- हाँ, लाओ, चालो। सासूजी बऊवाँ का हांते वईग्या। बऊवां ए खोली को बारणो खोल्यो ने किदो- के देखो सासुजी यो भेरो कर्‌यो है म्हाएँ। सासूजी ए देख्यो के अणी में तो साँप ने विन्छू, सब बारे लिकरवा लागा। सासूजी डरीग्या ने बोल्या- यो कईं है? जसी छोटी बऊ ए पूजा करी वसी पूजा म्हाए भी करी। तो सासूजी बोल्या- के जसो पूजोगा वसो मिलेगा।

भावार्थ

एक बुढ़िया थी। उसकी पाँच बहुएँ थीं। चार तो एक होकर रहती थीं, पर छोटी बहू से परहेज रखती थीं। घर में गाय-भैंसों की अधिकता थी। दूध बहुत होता था। पाँचों बहुएँ दूध बाँट देतीं। खाने-पीने के बाद जो बचता, वह बेच देतीं। बहुएँ सास को रोज हिसाब देतीं, छोटी भी देती। एक दिन छोटी बहू ने सोचा कि गाँव की सब औरतें अपनी-अपनी सास को तीर्थ भेजती हैं, हम भी भेजें। छोटी बहू ने अपनी सब जेठानियों से कहा- हम भी सासुजी को तीर्थ भेजें। सबने मिलकर सासुजी को तीर्थ की बात कही। सास ने कहा- दूजाना (दूध व्यवस्था) अच्छा सम्हालो तो जाऊँ, नहीं तो घर का खर्चा कैसे चलेगा? बहुओं ने कहा- हाँ, सासूजी! आप देखना

कि कौन कितने पैसे देती हैं। सास को अच्छी तरह से तीर्थ भेजा। इधर छोटी बहू से सब ईर्ष्या करने लगीं। सब दूध बाँट देतीं। चारों बहुएँ तो खाती-पीतीं, बचता तो बेचतीं और पैसे इकट्ठे करतीं। एक माह में तो उन्होंने बहुत पैसा इकट्ठा कर लिया। छोटी बहू तो सास के जाने के बाद रोज पंथवारी पूजती और जितना भी दूध उसके हिस्से में आता, वह सब जाकर पंथवारी माता को चढ़ा देती। पंथवारी के पाँच पत्थर पूजती और एक कमरे में लाकर रख देती। कमरे में पत्थरों का ढेर हो गया। अब इधर सब जेठानियाँ कहें कि- यह क्या हिसाब देगी, यह तो सब दूध जाने कहाँ ले जाती है और न जाने क्या करती है? अच्छा है, सासूजी आयेंगी तो इसे घर से निकाल देंगी। अब महीना पूरा हो गया और सासूजी तीर्थयात्रा से आ गईं।

सासूजी आकर बैठीं, तो चारों जेठानियाँ बोलीं कि- माँगो न सासुजी हिसाब। सास ने कहा- हाँ माँगती हूँ, मुझे थोड़ा आराम तो करने दो, मेरी थकान तो उतरने दो। छोटी बहू कुछ भी न बोली। थोड़े दिन बीतने पर सासूजी ने कहा- लाओ बहुओं हिसाब? चारों बहुओं ने हिसाब दे दिया। फिर छोटी से माँगा, तो वह बोली-चलो सासूजी! हिसाब बताऊँ। सासू साथ हो गई। बहू ने कमरे का दरवाजा खोला और कहा- यह इकट्ठा किया मैंने तो। सासूजी देखकर दंग रह गई। मेरी बहू तो पुण्यवती है। पंथवारी के पत्थर तो सोना-चाँदी, हीरे-जवाहरात बन गये। यह सब देखकर जेठानियाँ जल-भुन गईं। सास ने कहा- बहू! यह सब कहाँ से लाई? उसने बताया कि आप तो तीरथ गई थीं, मैं रोज पंथवारी पूजती और वहाँ से पत्थर इकट्ठे करती। वे ये ही पत्थर हैं। मेरे हिस्से में जो दूध आता, वह बस चढ़ा देती। यह सब जेठानियों ने सुना। सासूजी ने कहा- तुम सब तो इससे ईर्ष्या करती थीं न, कि यह तो दूध जाने कहाँ लेकर जाती है, तो देखो!

इधर चारों जेठानियों ने निर्णय किया और कहा कि- सासूजी! तुम फिर तीर्थ जाओ। सास ने कहा- अभी नहीं, थोड़े दिन बाद जाऊँगी। वे बोलीं- नहीं, अभी जाओ। सास को फिर से तीर्थ भेजा। इस बार चारों जेठानियाँ जितना दूध होता उतना सब बड़े तपेले में गरम करतीं और गरम-गरम दूध पंथवारी माता को चढ़ा देतीं। वे कहतीं- वह तो ठंडा चढ़ाती थी, थोड़ा-सा चढ़ाती थी। हम तो बहुत-सा चढ़ा रहे हैं तो बहुत फल मिलेगा। वे भी पत्थर इकट्ठा कर रोज कमरे में रख देतीं। सासुजी तीर्थ से वापस आ गयीं। जेठानियों ने कहा- माँगो न सासूजी हिसाब। सास ने कहा-इतनी भी क्या जल्दी है, थोड़ा आराम कर लूँ, फिर माँगूँगी। सासूजी उठी, स्नान-ध्यान किया, पूजा-पाठ करके निवृत्त हुई। फिर सास ने कहा- हाँ, लाओ, चलो। सास बहुओं के साथ हो गई। बहुओं ने कमरे का दरवाजा खोला और कहा कि- देखो सासूजी! यह इकट्ठा किया है हमने। सास ने देखा कि इसमें तो साँप-बिच्छू सब बाहर निकलने लगे। सासूजी डर गई और बोली- यह क्या? जैसा छोटी बहू ने किया, वैसी ही पूजा हमने भी की। तब सासूजी ने कहा- जैसा पूजोगे वैसा पाओगे।

पंथवारी माता व्रत कथा

एक डोकरी थी। वणी के दो वेटा बऊ था। एक दन डोकरी बोली- के में तीरथ जऊँगा ने, थे दोई बऊवां दूजाणों हमारजो। अपणो-अपणो हिसाब-किताब बाजु-बाजु राखजो। डोकरी ने तीरथ बेटा ए धुमधाम ती मेली। मोटी बऊ दुध-दई वेंचे ने पइसा भेरा करे। ने छोटी बऊ जतरो दूध-दई वे अतरो सब पंथवारी ए चढ़ई आवे। असो करता-करता मईनो वइग्यो। सासुजी तीरथ ती आया। मोटी बऊ बोली के लोनी सासुजी हिसाब। के आज नी काले लांगा। ऐसो करता-करता दो-तीन दन वईग्या। अबे छोटी बऊ डरवा लागी के मूं कई हिसाब दुंगा। में तो सब दई-दूद पंथवारी माता ए चढ़ई दिदो। दोड़ी-दोड़ी पंथवारी माता ए गई ने आमण ढुमण वईने हुईगी। पंथवारी माता बोली- के काए मानवण हुती के जागे। कणी सुख ती हुवु। म्हारा ती तो सासुजी हिसाब मांगेगा, अबे मूं कई दूंगा। मैं तो हगरो दई-दूद आपके चढ़ई दीदो। झट पंथवारी माता बोल्या के थारा ती जतरा भी भाटा कोंकर्या तोकाय अतरा लईजा। ने जई ने थारी खोली में भर दीजे। फेर थारा सासुजी केगा के ला छोटी बऊ हिसाब, तो या खोली खोल दीजे ने बतई दीजे। मोटी बऊ बोली लोनी सासुजी हिसाब- के लाओ दोई अपणो-अपणो हिसाब। मोटी बऊ ए तो पईसा की नोरी सासुजी ने लई ने दई दी। फेर मन इज मन मे खुश वेवा लागीगी, अभे या कई हिसाब देगा। फेर बोली के अणी छोटी ती भी लो। सासुजी बोल्या- लाओ छोटी बऊ हिसाब। छोटी बऊ ए किदो के खोल लो सासुजी या खोली (कमरा)। सासुजी झट वा खोली खोल ने देखे तो वणी में तो सोना-चाँदी, हीरा-जवाहरात, मोती झगामग-झगामग करे। ने सासुजी तो देखीने दंग रइग्या। के बऊ यो कईं? के यो तो सब पंथवारी माता को परताप है। म्हारा वांटा को दूध-दई जतरो वेतो अतरो मूं तो सब पंथवारी माता ए चढ़ई आवती। म्हने डर लागो तो में पंथवारी माता ने जई ने कीदो। वणा ए म्हने कीदो के थारा ती जतरा भी भाटा कोंकर्या तोकाय अतरा लइजा ने खोली में भर दे। में ऐसोज कर्यो। मोटी बऊ देखी ने बोलती के सासुजी फेर तीरथ जाओ। सासुजी ने दूसरी दाण फेर तीरथ पोंचाया। सासुजी ए किदो के हिसाब-किताब दोई बराबर राखजो ने लड़जो मती।

मोटी बऊ तो बड़ा-बड़ा तपेला दूद का उन्ना करे ने झट पंथवारी माता ए चढ़ई आवे। यो तो थोड़ोक चढ़ावती थी ने मै तो नरो-नरो चढ़ई ने अऊँ म्हने नरो देगा पंथवारी माता। छोटी बऊ तो पेला जसो चढ़ायो असोज चढ़ई आवती। सासुजी अबके तीरथ करीने झट अईग्या। सासुजी ने वदई ने घरे लाया। मोटी बऊ झट पंथवारी माता ए गई, ने जई ने किदो के म्हारा सासुजी तीरथ करीने अईग्या। अभे हिसाब मांगेगा तो कई दूंगा में तो हगरो दूध-दई आपके चढ़ई दीदो। पंथवारी माता बोल्या- थारा ती तोकाय अतरा भाटा कोंकर्या लईजा ने थारी खोली में भर दीजे ने सासुजी हिसाब मांगे तो खोली खोल दिजे। सासुजी ने आया ने दो-तीन दन वइग्या कोई बोले इ कोनी के सासुजी हिसाब लो। सासुजी आगे रइने बोल्या- दोई जणी अपणो-अपणो हिसाब

लाओ। पेला मोटी बऊ ने किदो– मोटी बऊ झट बोली के खोलो सासुजी खोली। सासुजी खोली को किमाड़ खोली ने देखे तो वणी में तो सांप, विन्छू ने डींडू नराइ लिकरी–लिकरी ने बारते वइग्या। सासुजी डरीग्या यो कईं मोटी बऊ? मैं तो अणी छोटी वऊ ए दूद–दई चढ़ाया अणी ती दूणा चढ़ाया। झट पंथवारी माता अपणा असली रूप में आया ने बोल्या– के अणे म्हने उन्नो–उन्नो दूध चढ़ायो जणी ती म्हारे आखा बदन में छाला वइग्या ने मूं दन–रात बरी। ने छोटी बऊ ए म्हने ठण्डो–ठण्डो दूद चढ़ायो। अणी ती कदी लालच नी करनो। ए पंथवारी माता मोटी बऊ ने टूटा ऐसा किने भी मत टूटजो ने छोटी बऊ ने टूटा ऐसा सकल ने टूटजो।

भावार्थ

एक बुढ़िया थी। उसके दो बेटे और दो बहुएँ थीं। एक दिन बुढ़िया ने कहा– मैं तीर्थ करने जाऊँगी और तुम दोनों बहुएँ दूध सँभालना और इसका हिसाब दोनों अलग–अलग रखना। बुढ़िया को उसके पुत्रों ने बड़ी धूमधाम से तीर्थ करने भेजा। बड़ी बहू दूध–दही बेचती और पैसे इकट्ठे करती और छोटी बहू जितना भी दूध–दही होता वह सब पंथवारी माता को चढ़ाकर आ जाती। ऐसा करते–करते एक महीना हो गया। सास तीर्थ करके आ गई। बड़ी बहू ने कहा– सासूजी! हिसाब ले लीजिये। सास बोली– आज नहीं, कल लेंगे। आज मैं बहुत थकी हुई हूँ, आराम करूँगी। ऐसा करते–करते दो–तीन दिन बीत गये। अब छोटी बहू डरने लगी कि मुझसे हिसाब माँगेंगे तो मैं क्या दूँगी। मैंने तो जितना भी दही–दूध होता, वह सब पंथवारी माता को चढ़ा दिया। वह दौड़ी–दौड़ी पंथवारी माता के पास गई और जाकर बैठ गई। पंथवारी माता बोली कि– क्यों मानवी! सोई है या जग रही है? मैं किस सुख से सोऊँ? मुझसे तो सासूजी हिसाब माँगेगी, अब क्या दूँगी? मैंने सब दही–दूध आपको चढ़ा दिया। झट पंथवारी माता बोली कि– तेरे से जितने भी कंकर–पत्थर मुझ पर से उठाये जायें उतने ले जा और ले जाकर तेरे कमरे में भर देना। फिर तेरी सास हिसाब माँगेगी तो कमरा खोलकर दिखा देना।

फिर बड़ी बहू ने कहा– अब तो सासूजी! हिसाब ले लीजिये। सास ने कहा– लाओ, दोनों अपना–अपना हिसाब दे दो। बड़ी बहू ने तो पैसे की थैली सासूजी को लाकर दे दी। फिर मन ही मन मुस्कराने लगी– अब ये क्या देगी! फिर बड़ी बहू ने कहा– इस छोटी से भी लो। सासूजी बोली– लाओ छोटी बहू! हिसाब? छोटी बहू ने कहा– खोल लीजिए सासूजी ये कमरा। सासूजी ने जल्दी से कमरा खोला और देखा, तो उसमें सोना–चाँदी, हीरा–जवाहरात जगमग–जगमग कर रहे थे। सासूजी आश्चर्य में पड़ गई और बोली– बहू! ये क्या है? बहू बोली– यह तो सब पंथवारी माता का प्रताप है। मेरे हिस्से का दूध–दही जितना होता, उतना मैं सब चढ़ा आती। मुझे डर लगा तो मैंने पंथवारी माता को जाकर कहा। उन्होंने मुझसे कहा कि– तुझसे जितने भी कंकर–पत्थर उठें, उतने उठाकर ले जा और अपने कमरे में रखकर दरवाजा बंद कर देना। मैंने ऐसा ही

किया। बड़ी बहू देखकर बोली– सासूजी! आप फिर से तीर्थ जाओ। सासूजी फिर तीर्थ गई और कह गई कि– दोनों हिसाब बराबर रखना और लड़ना मत।

बड़ी बहू बड़े–बड़े भगोने दूध के गरम करे और जल्दी जाकर पंथवारी माता को चढ़ा आये। ये छोटी बहू तो थोड़ा–थोड़ा ही चढ़ाती और मैं तो बहुत चढ़ाकर आती हूँ। पंथवारी माता मुझे तो बहुत देंगे। छोटी बहू तो पहले जैसा चढ़ाती थी, वैसा ही चढ़ाती। सासूजी अब की बार तीर्थ से जल्दी आ गई। सासूजी का स्वागत करके घर लाये। बड़ी बहू सास को आते देख पंथवारी माता के पास गई और जाकर कहा– मेरी सासूजी तीर्थ से आ गई है, अब हिसाब माँगेगी तो क्या दूँगी? मैंने तो सब दूध–दही आपको चढ़ा दिया। पंथवारी माता बोली– तुझसे उठते जितने कंकर–पत्थर उठाकर ले जा और तेरे कमरे में भरकर दरवाजा बंद कर देना। सासूजी हिसाब माँगे तो कमरा खोलकर दिखा देना। सासूजी को आये दो–तीन दिन हो गये। कोई कुछ कहता ही नहीं। सासूजी खुद अपने आप बोली और कहा कि– दोनों बहुओं! अपना–अपना हिसाब लाओ! पहले बड़ी बहू को कहा। बड़ी बहू बोली– खोलो सासूजी! कमरे का दरवाजा। सासूजी ने कमरे का दरवाजा खोला और देखा तो उसमें साँप, बिच्छू, केकड़े, डिंडू बहुत सारे निकल–निकलकर कमरे के बाहर आने लगे। सासूजी डर गई। ये क्या है, बड़ी बहू? मैंने तो छोटी बहू ने जितना दूध चढ़ाया, इससे तो दुगुना चढ़ाया? पंथवारी माता अपने असली रूप में आई और बोली कि– इसने तो मुझे जला दिया, मेरे शरीर पर बड़े–बड़े छाले हो गये, मैं दिन–रात जलती रही। मुझे तो छोटी बहू ने ठंडा–ठंडा दूध जल्दी उठकर चढ़ाया। जो जैसा करता है, फल उसको बराबर वैसा ही मिलता है। इसलिए कभी लालच नहीं करना चाहिये। पंथवारी माता! उस बड़ी बहू पर प्रसन्न हुई, ऐसे किसी पर भी मत होना। और छोटी बहू पर हुए, ऐसे सब पर प्रसन्न होना।

वनेड़िया बाबजी व्रत कथा

एक राजा थो। वणी का घरे पेला–पेल बेटी जन्मी। वणा ने खुब खुशी वी, ने वणी बेटी को नाम फूलावंती रख्यो। तो राजा–राणी ने दूसरे दन केवा लागा के अणी बेटी ने तो फूलां बराबर तोलां। तो राणी बोल्या– के राजा! अपणे पेला–पेल बेटी वी है अपणे कस्तर तोलां, अणी के हवा लागी जाएगा। राजा बोल्या– मैं सब व्यवस्था करी दीदी है। राजा ए पलंग का चारी मेर कायरा का परदा वान्द्या वणा में कटने ती भी हवा नी आवे। और बणा पर्दा में कांटी बार मेल दिदा। एक आड़ी बेटी ने हुवाड़ी दीदी पलड़ा में, ने एक आड़ी फूल चढ़ई दीदा। मालण रोज फूल बराबर तोलती ने देती। जापा में री अतरे तो रोज फूल बराबर तोलना। अबे राजा को तो नेम वईग्यो के रोज फुल बराबर तोलांगा। रोज तोलता। बेटी मोटी वइगी। अबे राणी ए वनेड़िया बाबजी को

वरत कर्यो, वा सबकी वार्ता केती लोभ्या की, वनेड़िया की, विश्राम बाबजी की, राजा दामोदर की, पंथवारी की, वा बेटी सबकी वार्ता हुणे पण वन का वनेड़िया की वार्ता केवा लागे ने वा घाघरो झाटकी ने झट उठी जाय ने दूसरा कमरा में चली जाय। वनेड़िया बाबजी ने वणी लड़की पे घुस्सो आयो। वणा ए तो भंमरा को रूप करयो ने मोरी आड़ी ती नारदा का रस्ते वणी का कमरा में घुसीग्या। राजा के तो दरवाजा पे चोंकी पेरा लागी रीया था। राजा की कंवरी पलंग पे हुती थी। वणे पलंग का पांच चक्कर लगई दीदा। दूसरे दन मालन फूल तोलवा ने अई तो वणी दन वणी पे फूल की जगा एन्डा बाट चढ़ीग्या। राजा देखी ने बोल्या– के कई ने कई खटको वियो अणी मेल में। राजा का भई का सात बेटा था, वी देखी ने बोल्या के काकासा! आज में मेरो दांगा। एक–एक भई रोज पेरो दे, पण एक भी विने नी पकड़ी सक्या वणी चोर ने। सातवो बाकी थो, वणे कई कर्यो के अपणी आंगरी पे चीरो दई ने पेरो देवा लागो। उतो तो आदीक रात को तो भंमरा को रूप करी ने आवे। खीड़की, दरवाजा, जालीया, सब बन्द रे, पण उ तो मोरी का रस्ते माय भरई जाय। उ सातवो भई जई ने देखे तो भंमरो वणी का पलंग का फेरा फरी रियो। अतरा में वणे मोरी में आड़ी ढाल दई दीदी। अतरे राजा आया ने पूछवा लागा के– कारे चोर को पतो चाल्यो? तो उ छोरो बोल्यो के– हाँ, चाल्यो। छोरा मायते कमरा में ग्यो ने वणी भंमरा ने पूछे के तू कुण है। ने क्यों म्हारी बेन के पलंग का फेरा दई रियो थो आधी राते? में देखी रियो थो। म्हारी बेन ने थें क्यों छली? म्हारी बेन ए थारो कई गुणो करियो? पेला तो या फूलां बराबर तोलावती थी। ने अभे एण्डा बाट चढ़े। फेर ऊ भंमरो देखी ने बोल्यो– के थारी बेन सबकी वार्ता हुणती, ने म्हारी वार्ता आवती अतरे घाघरो झटकारी ने उठी–बैठी वेती ने दूसरा कमरा में चली जाती। अभे कई करता म्हारी बेन फूलां बराबर तोलाय।

जो लुगायां रोज रोटी करे ने पाछे की चांदकी करे, वणी को फल दई देगा। तो या पाछी फूलां बराबर तोलावा लागी जाएगा। दूसरे दन ती वणी की माँ सब वार्ता कीदी तो वणे वी सब वार्ता हुणी। तो वा पाछी फुल बराबर तोलावा लागीगी। है बन का वनेड़िया बाबजी! वणी ने छली ऐसी कणी ने भी मती छल जो।

भावार्थ

एक राजा था। उसके यहाँ पर पहले–पहल बेटी पैदा हुई। उनको बहुत खुशी हुई। बेटी का नाम फूलवन्ती रखा। राजा–रानी से कहने लगे– अपनी बेटी को फूलों के बराबर तोलें। रानी ने कहा– राजा! अपने यहाँ पहले–पहल लड़की पैदा हुई है, इसे कैसे तौलें, हवा लग जायेगी? राजा ने कहा– मैंने सब व्यवस्था कर दी है। राजा ने पलंग की ओट की, उसके चारों ओर कम्बल के परदे बाँधे ताकि उसको कहीं से भी हवा नहीं लगे। पलने में एक तरफ तो बेटी सुला दी और दूसरी ओर फूल चढ़ा दिये। मालन रोज फूल तौलती। राजा का रोज नियम हो गया था कि उसे फूल बराबर तौलना। बेटी बड़ी हो गई। रानी बनेड़िया बाबजी का व्रत करती थी और

सबकी कथाएँ कहती थी– लोभ्या ब्राह्मण, बनेड़िया बाबजी, विश्राम बाबजी, राजा दामोदर, पंथवारी। वह बेटी सब कथाएँ तो सुनती थी, लेकिन वन के बनेड़िया बाबजी की कथा आती तो वह अपने कपड़े झटककर उठ जाती और दूसरे कमरे में चली जाती।

बनेडिया बाबजी को उस लड़की पर गुस्सा आ गया। उन्होंने एक भँवरे का रूप बनाया और उसके कमरे में घुस गये। राजा के पहरेदार पहरे लगा रहे थे। राजा की लड़की पलंग पर सो रही थी। भँवरे ने पलंग के पाँच चक्कर लगा दिये। दूसरे दिन मालिन फूल तौलने आई, तो उस दिन फूल की जगह बाँट चढ़ गये। राजा देखकर बोले– महल में कुछ न कुछ जरूर हुआ है। राजा के भाई के सात लड़के थे। उन्होंने कहा– काका साहब! आज हम पहरा लगायेंगे। एक भाई रोज पहरा लगाता, लेकिन एक भी उस चोर को नहीं पकड़ सके। सातवाँ भाई बाकी था। उसने क्या किया कि अपनी अँगुली पर चीरा लगा लिया और पहरा देने लगा। लेकिन भँवरा तो आधी रात को अपना रूप बदलकर आता। खिड़की, दरवाजे, सब बंद रहते पर वह तो छोटे छेद में होकर आ जाता। उस भाई ने जाकर देखा तो भँवरा उसके पलंग के चक्कर लगा रहा था। उसने जाकर उस छेद को बंद कर दिया। इतने में राजा आये और पूछा कि– चोर का पता चला? हाँ, चल गया। वह भाई अन्दर कमरे में गया और उस भँवरे से पूछा कि– तू कौन है? आधी रात को क्यों मेरी बहन के पलंग के चक्कर लगा रहा है? मेरी बहन ने तेरा क्या बिगाड़ा है? उसका क्या गुनाह है? पहले तो यह फूलों बराबर तुलती थी, अब बाँट क्यों चढ़ने लगे?

भँवरे ने कहा– तुम्हारी बहन सब कथाएँ तो सुनती थी, लेकिन मेरी कथा का क्रम आता, वह उठ जाती और अपने कपड़े झटककर अपने कमरे में चली जाती। भाई ने पूछा कि अब क्या उपाय करें कि मेरी बहन फूलों के बराबर फिर तुलने लग जाये?

जो भी स्त्री रोज रोटी बनाती है और पीछे से छोटी रोटी (चाँदकी) बनायेगी और उसका फल दे देगी, तो यह रोज फूलों के बराबर तुलने लग जायेगी। दूसरे दिन रानी ने कथा कही, तो उस लड़की ने सब कथाएँ सुनीं, बनेड़िया बाबजी की भी सुनी। तो वह फिर से फूलों के बराबर तुलने लग गई।

विसराम बाबजी व्रत कथा

एक खाविंद और लुगई दोई था। वा लुगई कई भी काम करे तो विश्राम बाबजी को नाम लई ने करे। अस्तर करता-करता दो-चार वरस वइग्या। वा उठती ने बैठती विश्राम बाबजी, बिश्राम बाबजी करे। तो एक दन आदीक रात का विश्राम बाबजी वणी के सपना में आया धोरो घोड़ो, धोरा कपड़ा पेरवा ने, ने बोल्या के मानवन हुती के जागे? 'के बाबजी मूं जागी री हूँ। आज म्हने नींद नी आई। मूं कणी सुख ती हुबु। म्हारे पीर वासो कोनी मुं कठे जऊँ?' विश्राम बावजी

बोल्या- के मूं थारे हाड़ा तीन दन को पीर वासो दूंगा। मूं थने लेवा ने आयो। मूं आपने कई नाम लई ने बोलादूं। तू म्हने भई के, के बाप के, के पड़ोसी के कई भी के? तो वणी को खाविंद बोल्यो के अपणा ने पड़ोसी ए तो पन्नाया, ने कसो भई आयो। के मूं तो उठता ई बैठताई खाताई पीता ई हुवताई विश्राम बाबजी को नाम लूं। अणी ती म्हने विश्राम भई लेवा ने आयो। कठे थारो विश्राम भई म्हने तो नजरेइ नी आयो। तो वा बोली के वा विश्राम भई थे तो म्हने नजरें आई रिया पण म्हारा खाविंद ने नजरे नी आई रिया। थारा खाविंद हात दफे म्हारो नाम लेगा तो मूं वणा ने नजरे अई जऊँगा। वणा ए हात दफे नाम लिदो तो वणाने विश्राम बाबजी नगे अईग्या धोरो घोड़ो धोरा झीण कस्या थका धोरा कपड़ा पेरवा ने, ने हाथ में भालो वणा ने दर्शन दई दीदा। सोना को रथ ऊबो थको ने घोड़ा जोत्या थका, दोई जणा ने रथ पे बेवाड़ी ने लइग्या। रथ में दोई जणा ने नींद अईगी।

थोड़ी देर बाद दोई जणा की नींद खुली। रथ रुकयो। कारे भई अपणे कठे अइग्या? इ तो बड़ा भारी मेल मेलांत बन्द्या थका। बाबजी बोल्या- के यो थारा भई को घर है। वठे तो नोकर-चाकर काम करी रिया भोजई हिंगरार हिचीरिया। विश्राम बाबजी का घर में तो अगड़ा ठाठ वई रिया। बाबजी ए वणाकी वऊ ने किदो के उठो- मूं म्हारी बेन ने लई ने आयो हूँ। आप ए तो म्हने कदी भी नी कीदो के म्हारे कोई बेन है। मूं भूली ग्यो थो नरा दन वईग्या था नी। आज मूं म्हारा बेन-बनेवी ने हांते लई ने आयो हूँ। भोजइ उठी ने नणद बाईसा ने किदो- के पधारो बाईसा! आपका भई तो भूलीग्या था आप भी कई भूली ग्या था आपका भई ने। अरे भाभी! मूं कईं भूलूं म्हारा भई ने। मैं तो उठता-बैठता, खाता-पीता विश्राम बाबजी को नाम लूं। म्हारो तो घणो जीव है अणा भई पे। आप दोई भई-बेन बैठो। मूं चुलाओ जऊं। तो बाबजी बोल्या के रोज तो मैं जऊं ने आज आप जई ने कई करोगा। आप पामणा हरकी रसोई वणावणी है तो मैं जऊं। नोकर-चाकर बोल्या- के म्हे तो वणई लांगा। आप तो हिंगराट पे बैठो। विश्राम बाबजी ए अपणी माया फैलई ने छत्तीस तरे का पकावन, ने तरे-तरे की सागां ने रायता तैय्यार वईग्या। नोकरां ने कीदो के तल घर में ती सोना-चाँदी का वर्तन निकाली ले लाओ। नोकर-चाकर बोल्या के अपणा ने काम करता-करता अतरा बरस वईग्या कदी भी ऐसी चीज नी देखी। सब के कांसा परोस्या सब एक हांते जीमवा लागा। सब जीमी ने उठया, पान बीड़ा खाया। यूं करता-करता तीन दन पुरा वईग्या, चोथो दन लागो, तो बेन ने वा सपना की वात याद अइगी। हाड़ा तीन दन को पीयर वासो पुरो वियो। बेन जावा लागा तो विश्राम बाबजी ए बेन का हांते दास-दासीयाँ, नोकर-चाकर, गायां, भेंसा, बैल, हाथी, घोड़ा, पालकी सब दई ने वदा करवा लागा तो बेन बोली- मैं अतरो लवाजमो लई ने कठे मेलूंगा। म्हारे तो नानीसी क टापरी है। तो भई विश्राम बाबजी बोल्या के जा लईजा सब इन्तजाम वई जाएगा। बेन लवाजमा सहित गई ने जई ने देखे, तो बठे नऊ खण्ड्यो मेल वईग्यो, ने ढाड़ा का का ठाण हाथी खानो, सब वईग्या। भई ए एक रथ में सोना को हिंगराट भी बांध्यो। बेन के आनन्द का ठाट वईग्या, ने नवेनन्द का वासा वईग्या।

बेन बोली के जो विश्राम बाबजी को नाम तन-चन ती लेगा, वणी के आनन्द का वासा वई जाएगा। हे विश्राम बाबजी! वणी बेन ने टूटा ऐसा सकल ने टूटजो।

भावार्थ

एक पति-पत्नी थे। पत्नी कुछ भी कार्य करती तो विश्राम बाबजी का नाम लेकर ही करती थी। उठती-बैठती, खाती-पीती, हर बार विश्राम बाबजी का नाम लेती। दो-चार वर्ष बीत गये। एक दिन आधी रात को विश्राम बाबजी सपने में आये। सफेद घोड़े पर सवार सफेद वस्त्र धारण किये हुए और बोले- अरे मानवी! तू सोई है या जग रही है? 'बाबजी! आज तो मैं जग रही हूँ। मुझे नींद नहीं आई है। मैं किस सुख से सोऊँ? मेरा मायका नहीं है, मैं कहाँ जाऊँ?' विश्राम बाबजी कहने लगे- मैं तुझे साढ़े तीन दिन का मायका दूँगा। तू मेरे साथ चल, मैं तुझे लेने आया हूँ। 'मैं आपको क्या बोलकर पुकारूँ?' तू मुझे कुछ भी कह सकती है। भाई, पिता, पड़ोसी, कुछ भी कहकर पुकार सकती है। 'उसके पति ने कहा- अपना विवाह तो पड़ोसियों ने किया था। यह कैसा भाई है?' यह तो विश्राम बाबजी है। इनका तो मैं उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते हर समय नाम लेती हूँ। इसलिए मुझे विश्राम भाई लेने आया। 'कहाँ है तुम्हारा विश्राम भाई? मुझे तो दिखाई भी नहीं दे रहा है।' अरे विश्राम भाई! तुम मुझे तो दिखाई दे रहे हो, लेकिन मेरे पति को दिखाई नहीं देते। तेरा पति मेरा सात बार नाम लेगा, तो मैं उसको दिखाई दूँगा। सात बार नाम लेते ही उसको विश्राम बाबजी दिखाई दे दिये। सफेद घोड़ा, सफेद जीन कसी हुई, सफेद वस्त्र पहने हुए हाथ में भाला लिये हुए दिखाई दिये। सोने का रथ खड़ा हुआ जिसमें घोड़े जोते हुए हैं। बाबजी दोनों पति-पत्नी को रथ में बिठाकर ले गये। रथ में दोनों को नींद आ गई।

नींद खुली तो देखा रथ रुका हुआ। क्यों भाई अपन लोग कहाँ आ गये? बाबजी बोले- यह तेरे भाई का घर है। बड़ा विशाल महल, नौकर-चाकर, दास-दासी, सब काम कर रहे। भाभी हिंडोले में झूल रही है। बाबजी के यहाँ तो रईसी ठाठ-बाट हैं। विश्राम बाबजी ने उनकी पत्नी से कहा- उठो, मेरी बहन को लेकर आया हूँ। आपने तो कभी नहीं कहा कि आपकी कोई बहन भी है? 'मैं भूल गया था। बहुत दिन हो गये थे न। आज मैं मेरे बहन-बहनोई को साथ में लेकर आया हूँ।' भाभी ने ननद से कहा- आपके भाई तो भूल गये थे, क्या आप भी आपके भाई को भूल गये थे? अरे भाभी! मैं कैसे भूल सकती हूँ? मैं तो हर वक्त इनका नाम लेकर ही सारा कार्य करती हूँ। भाभी ने कहा- आप दोनों भाई बहन बातें करो, मैं रसोई में जाती हूँ। तो बाबजी ने कहा- 'रोज तो मैं जाता हूँ, आज आप जाकर क्या करोगी?' 'आज तो मेहमान की खातिरदारी करनी है, इसलिए भोजन मैं बनाऊँगी।' तो दासी ने कहा- 'हम तो सब बना लेंगे, आप तो आराम करो।' विश्राम बाबजी ने मायावी शक्ति से छत्तीस प्रकार का भोजन, पकवान, सब्जियाँ, रायता तैयार किया। नौकरों को कहा- तलघर में से सोने-चाँदी के बर्तन लेकर आओ। नौकरों ने आपस में कहा- हमें इतने वर्ष कार्य करते-करते हो गये, कभी ऐसी खातिर किसी की नहीं हुई। सबने एक साथ बैठकर भोजन किया। पान के बीड़े चबाये। ऐसे करते-करते साढ़े तीन दिन पूरे हो गये। बहन को सपने वाली बात याद आ गई।

बहन ने कहा– भाई! आज तो हम जाएँगे। भाई ने बहन के साथ हाथी–घोड़े, बैल, गायें–भैंसें, नौकर–चाकर, दास–दासियाँ पूरे लवाजमे के साथ बहन को विदाई दी। बहन ने कहा– भाई! मैं इतना कहाँ रखूँगी? मेरी तो छोटी–सी झोपड़ी है। विश्राम बाबजी ने कहा– तेरा बस इन्तजाम हो जायेगा। जा, ये सारी चीजें ले जा। बहन पूरे लवाजमे के साथ अपने घर आई। आकर देखा तो झोपड़ी की जगह नौ खण्ड का महल, गाय–भैंसों के ठाट, हाथीखाना, सब तैयार हो गये। बहन के लिए भाई ने एक सोने का हिंडोला भी रथ में रख दिया। बहन को राजा–रईसों जैसे ठाट हो गये। लक्ष्मी निवास करने लगी। बहन ने कहा– जो स्त्रियाँ विश्राम बाबजी की तन–मन से पूजा करेगी, उनका उठते–बैठते नाम लेगी, उनके यहाँ आनन्द के ठाट हो जायेंगे।

तुलसी माता व्रत कथा

एक गाम में एक डोकरी रेती थी। वा रोज भगवान ने सुमरती। वा नी ने पूजा–पाठ करती ने नी अगरबत्ती लगाती। रोज न्हाई ने भगवान किसनजी ने केती–

खीर खांड को भोजन दीजो, उत्तम घरे अवतार दीजो।
म्हारे बेटो पोतो कोनी, म्हने श्रीकृष्ण जी खांद दीजो।

एक दन डोकरी मरीगी। गांम का लोग वणी को चाल–चलन की तैयारी करवा लागा। लोग डोकरी ने तोकवा लागा। के या तो रांड पापणी हत्यारण थी, भाटा की वईगी। आखो गांम हलमी ग्यो। अतरा में भगवान बुढ़ा बामण को वेश धरी ने आया और केवा लागा के कई व्यो। यां लोग कायवाते भेरा विया। के कई नी बासा। एक डोकरी थी वा मरीगी। तो बासा बोल्या के बाजू वो। चालो मूं तोकूं। अरे बासा आखो गाम हलमी ग्यो तो भी डोकरी नी तोकाणी। तो तमारा ती कईं तोकायगा। वी बोल्या– चालो–चालो तोकातो खरी। बा सा ए झट चट्टी आंगरी ती बल दिदो ने डोकरी झट ती तोकईगी। ने डोकरी को चाल चलावो वईग्यो। लोग देखता इ रइग्या। अतरे ऊ बुढ़ो बामण कठे ग्यो किने मालम इज नी पड़ी। लोग केवा लागा के डोकरी बड़ी पूनवान थी। बामण का रूप में भगवान तो नी अईग्या था। ने वी अन्तर्धान वइग्या, ने डोकरी ने वैकुण्ठ धाम पोंचई दी। कृष्ण भगवान बूढ़ा को वेश करीने आया था। हे तुलसा माता! वणी डोकरी ने टूटा असा सकल ने टूटो।

भावार्थ

एक गाँव में एक वृद्धा रहती थी। वह रोज भगवान कृष्ण का स्मरण करती। वह पूजा–पाठ कभी नहीं करती थी। रोज स्नान करके भगवान कृष्ण को कहती– मुझे स्वादिष्ट भोजन देना, अच्छे घर में जन्म देना। मेरे बेटे–पोते नहीं हैं। हे कृष्ण! मरने के बाद तुम मुझे कंधा देना। एक

दिन बुढ़िया मर गई। गाँव के लोग उसकी अन्त्येष्टि की तैयारी करने लगे। जब बुढ़िया को लोग उठाने लगे, तो बुढ़िया किसी से नहीं उठी। पूरे गाँव के लोग कहने लगे कि पता नहीं राँड कितनी पापिन-हत्यारिन थी कि पत्थर की हो गई। पूरा गाँव परेशान हो रहा था। भगवान कृष्ण बूढ़े ब्राह्मण का वेश धारण कर आये और कहने लगे- 'क्या हुआ? यहाँ पर लोग इकट्ठे क्यों हो रहे हैं?' 'कुछ नहीं बाबा। एक बुढ़िया थी वह मर गई, अब किसी से उठ नहीं रही है।' तो बाबा बोले- अलग हो जाओ। चलो, मैं उठाता हूँ। 'अरे बाबा! सारे गाँव के लोग झूम गये तो भी बुढ़िया नहीं उठी तो तुमसे क्या उठेगी?' बोले- चलो-चलो, उठायें तो सही। बाबा ने जल्दी चिट्टी अँगुली का बल दिया और बुढ़िया को कंधा दिया। बुढ़िया तुरन्त उठ गई और बुढ़िया की अन्त्येष्टि हो गई। गाँव के लोग अचम्भे में पड़ गये कि यह बूढ़ा ब्राह्मण कौन था और कहाँ चला गया? किसी को पता नहीं चला और कहने लगे कि- बुढ़िया तो बड़ी पुण्यवान थी। कहीं ब्राह्मण के वेष में भगवान तो नहीं आए थे, जो अन्तर्ध्यान हो गये और बुढ़िया को बैकुण्ठधाम पहुँचा गये।

तुलसीजी व्रत कथा - (दो)

एक सेठ थो। वणी के पाँच बेटा था, एक बेटी थी। वा रोज तुलसी की पूजा करती, ने रोज क्यारा बणाती, कंगुरा काड़ती। जदी रोटी खाती। एक वखत पांची भई कमई करवा ग्या। माँ-बाप तिरथ करवा ग्या। तो भोजायां ए वणी ने खुब भास दिदो, ने खुब दुख दिदो। पूजा करवा की टेम नी दीदी। कने का गांम में सासरो थो, तो वठे खबर पोंचई दीदी के अणी ने अई ने लई जाओ, थांकी वऊ ने। सासरा बारा लेवा ने आया। वणे तुलसी की पूजा नी करी थी तो वा भूखी की भूखी वायदो करी री थी तो गोबर का भर्‍या हाथेज वणी ने सासरे मेल दीदी। पड़ोसन ने मिलवा ने जावा लागी तो वणी की भाभीयाँए नी मिलवा दीदी। ने हाथे सिरावण करवा ने तुलसी क्यारो खोदी ने टोपला में वांदी दीदो। ने किदो के तू रोज तुलसी के पूजा करती, तो अणी ने ज खई लीजे। गांम बारे ग्या ते सुसराजी बोल्या के अणी झाड़का नीचे बई ने रोटी खईलां तो यो वजन भी कम पड़ी जाएगा। सुसराजी ए टोपलो माथा पे ती नीचे मेल्यो ने वणी लड़की को माथो ठणक्यों, सांसो लागो। वणी का गोबर का हाथ खड़्या था, तो धोवा का बायने डूब मारवा लागी। तो तुलसी माता वुड़ी डोकरी को वेस करी ने अई ने वणी ने हाथ पकड़ी ने बारे काड़ी, नवा कपड़ा पेराया, ने बोली के क्यों डूबे? तो वा बोली के म्हारी भाभीयाँ ए तुलसी को क्यारो खोदी ने भर्‍यो, म्हारो सूसरो देखेगा तो कईं केगा? डोकरी ने देखी तो वा तो गायब वईगी सुसरा ए सब ने जीमाया पण वणे रोटी नी खई। सासरे गई तो पाछे ती तुलसाजी ए कपड़ा, धान, रकमा की गाड़ी भेजी। सासू खुश वईगी के भोजायाँ ए भेजो तो गाड़ी भरी ने भेजो। थोड़ी देर बाद सासूजी ए तुलसाजी की वारता किदी जदी वणी ए रोटी खई।

वणा भोजायाँ ए तुलसी माता को क्यारो खोदी ने दीदो तो वणा का छोरा-छोरी मांदा वईग्या। ढाढ़ा ढोर मरीग्या। चोरी वइगी। सब तरे ती परेशान वइग्या ने भूखा मरवा लागी ग्या। भई कमई करी ने आया तो भोजायाँ ए कई दीदो के थांकी बेन तो यां से धान, कपड़ा ने रकम लइगी। ने और कजण कईं-कईं बांदी गी? ने हगत गई। एक भई दोड़्यो ने बेन ने लेवाने सासरे ग्यो के मरदां असी बेन कई काम की। वणी पड़ोसन ए खुब किदो पण अणे तो एक नी हुणी। सासरा में बेन ने भेजवा को किदो- तो सासरा वाला बोल्या- के वां से खबर अई जदी जाया। तो वणा ने विश्वास वई ग्यो के या तो पियर ती माँगी ने लई। वठे ती बेन ने लईमे ग्यो तो वाटे तो नी चाल, ने उबर लइग्यो। वा बेन हिरावण लई ने गी थी। झाड़ की छायां में बैठी ने अपणे दोई भई-बेन रोटी खइलां। म्हने भी दो दन वईग्या। तू तुलसीमाता की वार्ता कई दिजे। बेन न्हई-धोई ने तुलसी माता की वार्ता हुणवा ने बैठीगी। वठे जरा सों डाबरो भर्‌या यों तों नदी वेवा लागीगी, वगीचो लागीग्यो, ब्रह्माजी अईने, ने वणी ने तुलसाजी की वार्ता केवा लागी ग्या। भई न्हई ने आयो तो देखी ने दंग वइग्यो। उबी वार्ता हुणवा लागीग्यो। तुलसी को झाड़ हरो-भरो थो। ब्रह्माजी ग्या ने डाबरो रइग्यो। वणे भई ने किदो के चाल दादा रोटी खावां। तो भई केवा लागो के मूं तो थने मारतो थो। पण तू तो देवी है। के दादा तू म्हने मार ल्हाक। तो भई बोल्या के नी बेन तू तो घरे चाल। तू पड़ोसन ने पुछतो तो सई? वातो तुलसी माता ए वात राखी, नी तो म्हने तो म्हारी भोजायां ए गोबर भर्‌या हाथ ती ज सासरे मेली थी। दोई भई-बेन घरे आया। ने वी भोजाया वणी बेन के पगे पड़ी ने किदो के म्हने माफ कर दो। म्हाए तो झूट बोल्यो थो। अणी ती म्हाके मुसिबत आई। बेन ए सब ने माफ करी दीदा और सब अपणा-अपणा घरे आनन्द से रेवा लागी ग्या।

भावार्थ

एक सेठ था। उसको पाँच लड़के और एक लड़की थी। लड़की रोज तुलसी की पूजा करती। उसके क्यारे बनाती, कँगूरे निकालती, फिर भोजन करती। माता-पिता तीर्थ करने गये, पाँचों भाई कमाई करने के लिए गये तो पाँचों भाभियों ने उसको बहुत दुख दिया। उसे पूजन करने का समय भी न देतीं। पास के गाँव में उसका ससुराल था, वहाँ पर समाचार पहुँचा दिया कि तुम्हारी बहू को आकर ले जाओ। ससुराल वाले लेने आये। वह वासीदा (गोबर उठाकर फेंक रही थी) कर रही थी। स्नान भी नहीं किया। तुलसी की पूजा भी नहीं की। भूखी-प्यासी गोबर के भरे हुए हाथ ऐसी स्थिति में उसे ससुराल भेज दिया। पड़ोसियों से मिलने जा रही थी, तो उन्हें भी नहीं मिलने दिया। नास्ते के लिए साथ में तुलसी क्यारा खोदकर टोपले में भर दिया और कहा कि- तू रोज तुलसी की पूजा करती है न, इसी को खा लेना। गाँव के बाहर आये तो ससुरजी ने कहा- इस वृक्ष के नीचे बैठकर भोजन कर लें तो यह वजन भी कम हो जायेगा। ससुरजी ने टोकरा सिर से नीचे रखा और उस लड़की का सिर ठनका। उसके गोबर के हाथ भरे हुए थे। वह धोने के बहाने डूबकर मरने लगी, तो तुलसी माता एक बुढ़िया का वेश धारण करके

आई और उसे हाथ पकड़कर बाहर निकाला। नये वस्त्र पहनाये और कहा कि– 'क्यों डूब रही थी?' 'मैं तो शर्म के मारे डूब रही थी, मेरे ससुर क्या कहेंगे? मेरे भाभियों ने पूरा तुलसी क्यारा खोदकर टोकरे में भर दिया।' इतना कहा और वह बुढ़िया गायब हो गई। वह ससुराल पहुँची और पीछे से तुलसी माता ने नये वस्त्र, गहने, अनाज की गाड़ी पहुँचाई। सासू माँ बहुत प्रसन्न हुई कि भाभियों ने बहुत सारा सामान पहुँचाया। सासू माँ ने कहा– बहू! भोजन कर लो, पहले आप मुझे तुलसीजी की कथा सुना दो, फिर भोजन करूँगी, सासू माँ ने कथा सुनाई, फिर उसने भोजन किया।

भाभियों ने तुलसी का क्यारा तो खोदकर भर दिया, लेकिन उनके बच्चे–बच्ची सारे बीमार हो गये, गाय–ढोर मर गये, चोरी हो गई। वह सब तरह से परेशान होकर भूखे मरने लग गये। भाई कमाई करके वापस घर आये तो भाभियों ने कहा– तुम्हारी बहन यहाँ से अनाज, कपड़ा, गहने सब ले गई और पता नहीं क्या–क्या ले गई और स्वयं अपनी इच्छा से ससुराल चली गई। एक भाई दौड़ता हुआ बहन को लेने ससुराल पहुँचा। ससुर को कहने लगा– अरे! ऐसी बहन क्या काम की, जो अपने आप ससुराल आ गई? हमें आने तो दिया होता। पड़ोसिन ने भी बहुत कहा, पर इसने तो एक की भी नहीं सुनी। मैं तो इसे लेने आया हूँ। तब सास–ससुर बोले कि– वहाँ से समाचार आये, जब हम लेने गये। उन्हें विश्वास हो गया कि ये तो मायके से माँगकर लाई है। ससुराल वालों ने उसे भाई के साथ भेज दिया। वह बहन को लेकर रास्ते–रास्ते तो नहीं चलता, ऊटपटाँग रास्ते ले गया। बहन रास्ते के लिए नाश्ता लेकर गई थी। भाई को कहा– वृक्ष की छाया में बैठकर दोनों भाई–बहन नाश्ता कर लें। मैं स्नान कर लेती हूँ, फिर तू मुझे तुलसी माता की कथा सुना देना। फिर दोनों भोजन कर लेंगे। वृक्ष के नीचे पानी का गड्ढा भरा हुआ था, वहाँ नदी बहने लग गई, बगीचा लग गया। ब्रह्माजी आकर उसे तुलसीजी की कथा सुनाने लग गये। भाई देखकर दंग रह गया। वह भी कथा सुनने बैठ गया। वहाँ तुलसी का वृक्ष भी हरा–भरा था। वहाँ से ब्रह्माजी कथा सुनाकर गये और पानी का गड्ढा ऐसा ही रह गया। बहन ने भाई से कहा– चल, अब भोजन कर लें। भाई ने यह सब देखकर बहन से कहा– 'मैं तो तुझे मार रहा था, लेकिन तू तो देवी है।' बहन ने कहा– 'मार दे भैया!' नहीं, तू घर चल। 'अरे! तू पड़ोसन को पूछता तो सही कि क्या बात है। वो तो मेरी तुलसी माता ने मेरी इज्जत रख ली। नहीं तो, मेरी भाभियों ने तो मुझे गोबर भरे हाथों से ही ससुराल भेज दिया था।' दोनों भाई–बहन घर पर आये और सब भाभियों ने ननद के पैर छुए और कहा कि– हमें माफ कर दो बहन। हमने झूठ ही कहा था। इसलिए हमें मुसीबत भी आई। बहन ने सबको माफी दे दी और सब अपने–अपने घर आनन्द से रहने लगे।

धरमराजजी व्रत कथा

एक सेठ थो। विका घरे ओलाद नी थी। सेठाणी रोज धरमराजजी की पुजा करवा ने जाती थी। सबका घरे बऊ-बेटीयाँ थी, सब घरे काम कर लेती थी। ने वा सेठाणी एकली थी। कई पुजा करती नी करती, ने कई कथा हुणती नी हुणती ने पाछी झट घरे अई जाती, के जऊँ बई म्हारे तो घरे रोटी करनी। एक दन वणे सेठजी ने किदो के तम तो म्हारो एक बऊ लइ दो। तो सेठ बोल्यो के बना बेटा ती वऊ कुण देगा? के थें तो लई दो। के ला म्हारे तो सु आटो बांदी दे एक पोटली जऊँ ढुंढ़ी ने अऊँ तू तो नी माने। सेठाणी ए आटा में हऊ हीरा-मोती मीलई ने पोटली आय की बांदी दीदी। उ पोटली बांदी ने खाना वईग्यो। चालता-चालता एक गांम में पोची ग्यो। वठे पाँच-सात एक छोरीया 'छुट्टा का घर मेरा है' खेली री थी। वठे सेठ ऊबो रइग्यो। छोरीया की लड़ई हुणवा लागीग्यो। एक छोरी बोली ने दुसरी छोरी ने कई री, के थें यो धुरा को घर वणायो यो तोड़ी दे, तो थने खेलावांगा नी तो नी हवेरे नी खेलावांगा। मैं तो म्हारो घर नी वगाडुं। घर वणई ने नी वगाओ नी तो आगे भी एसो दुटो भागों मिले। अतरो कई री थी ने वणी छोरी की निगा वणी सेठ पे पड़ी। ने बोली- बा! तम कां जाओगा? देख बेटा काँ भी चल्यो जऊँगा। के तम म्हारा ने नी चल्या चलो। रेणों है कां भी रइलूंगा। छोरी वणीका बाप कने गई के दादाजी-दादाजी अपणा घरे एक दानों मनख अई ने हुईजाए तो कई हरज है। के बेटा कई नी, लियाव। उ गरीब थो, जात को तो उ भी वाण्यो थो। घर में खावा को भी नी थो। वी सब घर में वात करे। उ सेठ हुणीरियो थो। अतरा में तो घर में ती सेठ आयो, ने वणे पुछ्यो के आप हमारा हात को खाओगा के नी, तम ने हम दोई एक इज जात का हां। खइलांगा। म्हारा कने आटो है यो लईलो। ने रोटी बणई लो। सेठाणी ए पोटली लइली। पोटली खोली ने आटो छाणीयो तो वीमे तो हीरा-मोती निक्ल्या, वणे वणी में ती थोड़ासाक हीरा लई ने वाण्या की दुकान पे चलीगी। वां ती सब समान लियई ने वणी सेट ने अच्छी तरे जीमाया फेर सेट जीमी ने बोल्यो के भई अपने दोई एक जात का हाँ? क्योंनी अपने दोई व्यई-व्यई बणी जावां, के हो। सेठजी बोल्या- दे देखो भई! म्हारो छोरो तो कासीजी भणवा ने गयो है। बारा बरस में आवेगा। मैं तो खाडां से फेरा करूँगा। तो उ गरीब वाणीयो बोल्यो के म्हारे भी एक इज छोरी है। म्हारे मंजूर है। सेठ ए सोच्यो के मैं तो गरीब हूँ। ने छोरी अच्छा घरे चली जाएगा तो अपणो भी जीव सोरो रेगा। वणे लगण लिखई लिदा। जणी दन का फेरा था वणी दन बरात लईने सेठजी अइग्या। गांम का लोग केवा लागा के भई सेठवा का घरे बरात आवेगा, जल्दी-जल्दी तैयार वई जावा। बड़ा घर भी वरात अइरी है। देखांगा विको जमई कैसो है। बरात अइगी सांजे वाणो लिकरीयो गांम का लोग भेरा विया। लोग देखे के बाप हाथ में खांडो लई ने आगे-आगे चालीरियो। आखा गांम का लोग केवा लागीग्या सेटवा ए छोरी ने खांडा ती पन्नई दीदी। सेठजी घरे बऊ लियाया। अबे सेठजी के गांम का लोग बोल्या के- खांडा से फेरा करी ने बऊ लियाया, कई टीकेगा या। सासूजी ए बऊ ने किदो के देख, म्हारो छोरो

कासीजी भणवा ने गयो है, बारा बरस में आवेगा। लोग-बाग कईं केतो तू हुणजे मती। बऊ बोली- के सासुजी! सई बात कई रिया है। सासूजी कथा हुणवा ने जाये तो वा कपड़ा धोई दे रोटी करी ने मेली दे। सब का अच्छो कर लाखें। एक दन चुला में वास्ती बुजी ग्यो। वा वऊ पड़ोसी का यां बास्ती लेवा नें गई। तो पड़ोसन देखी ने बोली- के आओ 'बीन पुरष की नार' तम कईं आया? तम एसो म्हारे क्यों कई रिया हो, म्हारा आदमी तो कासोजी भणवा ने गया है। के विके तो बेटा ज कोई नी। अबे करू। के तू एसो कर जे के आज रसोई बनाए तो लुण मत डाल जे। फेर वी थारे केगा के क्योवो लाड़ी तेने आज लुण नी डालीयो। के सासूजी मैं भी तो आदमी बना अलुणी हूँ। सुसरो जी सासुजी ने के, के खाण्डा से बऊ तो मंगईली अब दे विने जवाब रोज वा बऊ फनक-फनक करे काम नी करे। सुइ जाय एक दिन बैठो-बैठो सेठ जी ए बिचार कर्‌यो के आज बजार जाऊँगा तो कुंची घरे मेली जऊँगा। ग्या सेठजी बजार कुंची मेली ग्या। देखां या कईं करे। वणी सेठ का घरे सात कोटड़ीया थी। सब खोलीयाँ खोली ने देखी। किमे हीरा भरीया, किमे मोती भर्‌या, किमे सोनो भर्‌यो, किमे चाँदी भरी अस्तर छः खोलीयाँ में अतरो सामान भर्‌यो। फेर वा बोली के एक और देखी लूँ। वा खोली ने देखी तो वणी में समुन्दर, ने विका मायते तुलसी को क्यारों, ने वणी का उपर बारा बरस को कंवर बैठो, ने उ किताब वांची रियो। विमे ती अवाज अई। के म्हारी मां के लोया की कांचाली वणा जो, मैं नदी पेले पार करुंगा, वणी बऊ ने तो विश्वास वइग्यो। के हाँ म्हारो तो आदमी है। वा तो घर में विश्वास वइग्यो। के हाँ म्हारो तो आदमी है। वा तो घर में एसोज काम करवा लागीगी। लो ससूराजी रोंटी खइलो, लो सासुजी चाय पीलो। लडि काल तो एसी नी थी। कणे इका कान भर्‌या था। आज हऊ वईगी। बऊ- सासुजी ने के के लोया की कांचली वणई ने लाओ। सुसरो बोल्यो के, बना छोरा की बऊ है, तो कर अभे या के उ। तो बऊ ज चलीगी ने लुवार घर ती सासुजी का नाप की कांचली वणई ने ली थई। फेर सासुजी के किदो के अभे बाजा वाला लाणा। गाय में है, के बजार में। कई करे बाजा के? थाका बेटा ने वदई ने लावणो। फेर वणे सासुजी ए सुसराजी ने किदो ये या बऊ तो कजन कई को। अभे थारो कर्‌यो तू ज भुगत। थे किदो थो खांडा ती पन्नई ने म्हारे तो बऊ लई दो। अबे जो या के उ कर। गांम का लोग भी दाँत काडवा लागा। बऊ सासु ने कांचली पेरई ने वाणा का हाते वदावा ने समुदर कनारे लईगी। वणी पार वेटो ऊबो- तो बेटो बोल्यो के पेला दुद पाओ, जदी हूँ नदी पार करी ने अऊँगा। माँ के तो कांचली में ती हेड़ फूटी ने बेटा का मुन्डा में जई नें पड़ी। बेटो समुदर पार करी ने आयो। माँ ए बेटा ने ने बऊ ने बदाया ने घरे लाया। धरमराजजी वणी बऊ ने, ने सासुजी ने टुटमान विया। ने वा बऊ खुब खुशी घर में रेवा लागी।

भावार्थ

एक सेठ था। उसके यहाँ कोई संतान नहीं थी। सेठानी रोज धर्मराजजी की पूजा करने जाती थी। सबके यहाँ बहू-बेटियाँ थीं, सब काम कर लेती थीं। सेठानी अकेली थी। वह पूजा

करती तो नहीं हूँ करती, और थोड़ी-बहुत कथा सुनती और घर चली आती कि मुझे तो घर पर भोजन बनाना है। एक दिन उसने विचार किया और सेठजी से कहा- आप तो मुझे एक बहू लाकर दो। तो सेठजी ने कहा कि- बिना बेटे के बहू कौन देगा? आप तो मुझे कहीं से भी लाकर दो। सेठजी ने कहा- तू मुझे एक आटे की पोटली बाँधकर दे दे। सेठानी ने आटे में कुछ हीरे-मोती मिला दिये और सेठ को पोटली बाँधकर दे दी। सेठ वहाँ से चला, एक गाँव में पहुँचा।

वहाँ पर पाँच-सात लड़कियाँ मिट्टी का घर बनाना और बिगाड़ना खेल रही थीं। वहाँ पर सेठजी खड़े होकर उनकी बातें सुनने लग गये। लड़कियों की लड़ाई सुनने लग गये। एक लड़की दूसरी लड़की को कह रही थी कि ये तूने मिट्टी का घर बनाया, ये तोड़। उसने कहा- नहीं, मैं नहीं तोड़ूँगी। तू नहीं तोड़ेगी तो तुझे सबेरे नहीं खिलायेंगे। मैं तो मेरा घर नहीं तोड़ूँ। घर बनाकर नहीं बिगाड़ना, नहीं तो आगे ऐसा ही मिलता है (टूटा-फूटा)। इतना कह रही थी कि उसकी निगाहें उस सेठ पर पड़ीं और वह उससे बोली कि- बाबा! आप कहाँ जाओगे? देखो बेटा! हम कहीं पर भी चले जायेंगे। बाबा! मेरे घर चलोगे? रहना है बेटा, कहीं पर भी रह लेंगे। लड़की अपने पिता से पूछने गई कि- पिताजी! एक वृद्ध पुरुष हैं, वह आकर अपने यहाँ रात्रि विश्राम कर लें तो हमें क्या ऐतराज है? 'बेटा! कुछ नहीं, ले आओ।' लड़की घर पर ले आई। बाबा विश्राम कर रहे थे, तो उनके घर के अन्दर बात हो रही थी। वह तो गरीब था। जाति का वह भी बनिया था। घर में खाने को कुछ नहीं था। वह सेठ उनकी बातें सुन रहा था। इतने में वह सेठ अन्दर से आया और उसने पूछा- आप हमारे हाथ का भोजन करेंगे कि नहीं? आप और हम दोनों एक बिरादरी के हैं। खा लेंगे। मेरे पास आटा है। ये आप ले जाओ और इसकी रोटी बना लो। सेठानी ने पोटली खोलकर आटा छाना तो उसमें से हीरे-मोती निकले। उसमें से थोड़े हीरे-मोती लेकर एक बनिये की दुकान पर गई और वहाँ से सब सामान ले आई और अच्छा भोजन बनाकर सेठजी को बड़े प्रेम से भोजन कराया। फिर सेठजी बोले कि- भाई! तुम और मैं दोनों जाति-भाई हैं। क्यों न हम दोनों सम्बन्धी में बदल जाएँ? गरीब सेठ ने हाँ कर दी। सेठजी बोले- देखो भाई! मेरा लड़का तो काशीजी पढ़ने गया है, बारह साल में आयेगा। मैं तो तलवार (खांडा) से फेरे करूँगा। तो वह गरीब बनिया बोला कि- मुझे भी एक ही लड़की है, मुझे मंजूर है। उस गरीब बनिये ने सोचा कि मैं तो गरीब हूँ, छोरी अच्छे घर चली जायेगी, अपने को इससे ज्यादा खुशी और क्या हो सकती है! उस सेठजी ने लग्न लिखवाये।

जिस दिन की शादी थी, उस दिन सेठजी बारात लेकर आ गये। गाँव के लोग कहने लगे कि भाई सेठ बा के यहाँ बारात आयेगी, जल्दी-जल्दी तैयार होकर चलें। देखेंगे, उसका दामाद कैसा है? बारात आ गई। गाँव के लोग भी इकट्ठे हुए। लोग देखते हैं कि दूल्हे का पिता हाथ में तलवार लेकर आगे-आगे चल रहा है। गाँव के लोग कानाफूसी करने लगे कि सेठ साहब ने अपनी लड़की की शादी तलवार से कर दी। सेठजी बहू लेकर घर आ गये। सेठजी को गाँव के

लोग कहने लगे कि– तलवार से शादी करके बहू ले आये तो ये क्या आपके घर में रहेगी? सास ने घर में बहू को समझा दिया कि– देख बेटा! मेरा लड़का काशीजी पढ़ने गया है। बारह साल में आयेगा। लोग–दुनिया तुझे कुछ भी कहे तो सुनना मत, ध्यान मत देना। बहू ने विचार किया कि मेरी सास बात सही कह रही है। फिर वह घर का सारा कार्य सुचारू रूप से करने लगी। पहले जैसा। एक दिन चूल्हे के अन्दर आग बुझ गयी। बहू पड़ोसी के यहाँ आग लेने गई तो पड़ोसिन ने कहा– आओ 'बीन पुरुष की नार'। 'ये तुम क्या कह रही हो? बहू ने कहा– तुमने मुझे ऐसा क्यों कहा? मेरे पति तो काशीजी पढ़ने गये हैं।' पड़ोसिन बोली– उसको तो कोई लड़का भी नहीं है। 'अब क्या करूँ?' कि तू आज ऐसा करना कि भोजन में नमक मत डालना। फिर वह तुझे कहेंगे कि क्यों बहू तुमने आज भोजन में नमक नहीं डाला, तो तुम कह देना कि मैं भी तो आपके बेटे बिना अलूनी हूँ। अब ससुरजी बोले कि– तलवार (खांडे) से बहू तो ले आई, अब दे उसको जवाब। अब बहू का दिमाग खराब हो गया। घर का काम भी नहीं करती और परेशान करने लगी। सो जाती।

एक दिन बैठे–बैठे ससुरजी ने विचार किया कि एक दिन बाजार जाऊँगा तो चाबी घर पर ही रख जाऊँगा। चाबी रखकर सेठजी बाजार चले गये। अब देखते हैं, ये क्या करती है? उस सेठ के यहाँ सात कमरे छोटे–छोटे थे, उन सबमें ताले लगे हुए थे। बहू ने चाबी लेकर कमरे खोले और देखा तो किसी में हीरे, किसी में मोती, तो किसी में सोना–चाँदी इत्यादि छः कमरे में निकले। फिर उसने सोचा कि सातवाँ कमरा भी खोलकर देख लें। वह कमरा खोला तो उसमें समुद्र और उसके अन्दर एक तुलसी का ओटला (क्यारा) और उस पर बारह साल का लड़का जैसे राजा का कँवर बैठा और पुस्तक पढ़ रहा है। उसमें से उस बहू को आवाज आई कि मेरी माँ को लोहे की चोली बनाना, मैं समुद्र में उस किनारे पर रहूँगा।

उस बहू को विश्वास हो गया कि– हाँ, मेरा पति है। वह फिर घर का सारा काम करने लग गई। लो सासूजी! खाना खा लो, लो सासूजी! चाय पी लो। सास को समझ में नहीं आया कि कल तक तो बहू ऐसी नहीं थी। आज इसे क्या हो गया? इसको कहीं किसी ने सिखा दिया था। फिर बहू ने कहा कि– सासूजी! एक लोहे की चोली बनवाकर ले आओ। ससुरजी कहते हैं कि– बिना बेटे की बहू है, ये कहेगी जो मुझे करना पड़ेगा। सास को कुछ समझ में नहीं आया। तो बहू ही बाजार चली गयी और लुहार के यहाँ से सासुजी के नाप की चोली बनवाकर ले आई। फिर सासूजी को बोला– अब बाजे वाले को लाना, गाँव में मिल जाएँगे कि शहर से लाना पड़ेंगे? सास बोली– क्या करना बाजे का? आपके लड़के का स्वागत करके घर लाना। सास ने ससुरजी को कहा कि– इस बहू की बात तो मुझे समझ में नहीं आती। ससुरजी बोले कि– तेरा किया हुआ तुझे ही भुगतना पड़ेगा। तूने ही कहा था कि– मुझे तो तलवार से शादी करके ही बहू लाकर दो। अब जो ये कहे वह कर। गाँव के लोग भी हँसने लगे। बहू सास को चोली पहनाकर समुद्र किनारे ले

गयी बाजे के साथ, उस पार लड़का खड़ा। वह बोला- पहले मुझे माँ दूध पिला, जब मैं समुद्र पार करके आऊँगा। माँ की चोली में से दूध निकलकर बेटे के मुँह में जाकर धारें गिरीं। बेटा समुद्र पार करके आया। धर्मराजजी उस बहू और सास पर प्रसन्न हुए। सास अपने बहू और बेटे का स्वागत करके घर ले आई और बहू खुशी-खुशी घर पर रहने लगी।

राई दामोदर व्रत कथा

एक गांम में एक बामण रेतो थो। वणी के एक छोरी थी। वणी को नाम राई थो। राई असी दुबली-पतली थी जणे कोई कठोर की डाल। आगे की हवा आवे तो पाछे नमी जाय ने पाछे की हवा आवे तो आगे नमी जाय। रूप रंग की उजरी थक थी। नख लागी जाय तो लोई लिकरी जाय। नाक वणी की हुड़ा हरकी थी। ने डोळा लिम्बु की फाक हरका था। असी सुन्दर थी राई। वणी ने देखी ने चन्दरमा भी फीको पड़ी जाय। बामण रोज पूजा-पाठ करी ने अपणो पेट भरतो। राई धीरे-धीरे मोटी वेवा लागी, ने हऊ स्याणी वईगी। वणी का रूप रंग की वात भगवान कृष्ण ए हुणी। भगवान का मन में आयो के चालो देखागां के हाँची में राई अतरी रूपारी है। कदी रूपारी वी तो अपणे वणी ती ब्याव कर लांगा। असो विचार करी ने भगवान धरती पे उतरिया। वणा ए अपणो रूप बदली ने साधारण मनख को रूप करीने बामण का घरे अईग्या। बामण बा ए वणी छोरा ने देखी ने कीदो के आ बैठ भई। तू कां रे है? छोरा ए सब वात वतई दीदी। वणी की हऊ आकता-साकता करी ने बैठायो। वणी को नाम पुछ्यो- थारो नाम कई है? 'म्हारो नाम दामोदर है। मूं जात कों बामण हूँ। म्हारो अणी दुनिया में कोई नी है। म्हने थें थांका कने राखी लो। म्हने भी पूजा-पाठ सिखई दो।' बामण बोल्यो- रईजा। भई! तू भी बामण को बेटो है, मूं थने विद्या दऊँगा तो घटी तो नी जाएगा? असो कई ने बामण बा ए वणी छोरा ने राखी लीदो। बामण बा रोज कथा-पाठ पूजा करी नें वणी छोरा ने भी बतावता। बामण बा न्हई-धोई ने पूजा-पाठ करवा ने बैठता तो राई नदी को साफ पाणी लई ने आवती जदी पूजा करता था।

राई रोज पाणी को घड़ो लई ने आवे। जदी ज दामोदर भी नदी पे न्हावा ने जाय। दामोदर न्हई आवे ने, राई पाणी को घड़ो लई आवे। असो रोज काम वे। एक दाण दोई जणा नदी पे ग्या। दामोदर न्हावा लागो, ने राई घड़ो माँजी-धोई ने नदी में ती भर्यो, तो राई ए दामोदर ने किदो के- दामोदर! म्हारे घड़ो तोकई दे। तो दामोदर बोल्यो- के नी मै नी तोकऊँ। तो राई बोली- रोज तो तू घड़ो तोकई दे, ने आज कईं वईग्यो थने? हाँ, रोज तोकई देतो पण आज नी तोकऊंगाँ। राई बोली- क्यों कई वात वईगी? तो दामोदर बोल्यो- मैं कूं असो कर तो घड़ो तोकऊंगाँ। तो राई बोली- जल्दी के कई केणो? पेलाज घणीवार वइगी, जदी दामोदर ए किदो के एसो बोल- राई का भरतार, राई का भरतार।

दामोदरजी, म्हारो घड़ो तोकई दो जी। राई बोली– कई म्हारो ब्याव थारा हांते वियो जो मूं असो बोलूं – थने भरतार कुं? नी मूं नी कुं असो, अभे घणीबार वईगी, राई ए मन इ मन में होचो दादाजी रस्तो देखता वेगा। म्हारा केवा ती दामोदर म्हारो भरतार तो नी वई जाएगा। इका वाते वणे किदो– तूं बोल असो मूं बोल दूंगा। 'राई का भरतार दामोदरजी, म्हारो घड़ो तोकई दोजी।'

दामोदर ए झट ती घड़ो तोकई दीदो। राई ने दामोदर दोई घरे आया। राई ए घड़ो उतारी ने बामण बा ने दई दीदो। बामण बा पूजा–पाठ करवा लागीग्या, ने दामोदर भी पूजा–पाठ सिखवा लाग्यो। अभे रोज को काम वईग्यो, रोज दामोदर की मनवार राई ने करनी पड़े, ने भरतार केणो पड़े।

एक दन राई ए घड़ो भर्‌यो, ने दामोदर ने किदो के म्हने घड़ो तोकई दो, तो दामोदर ए किदो के आज तो घड़ो नी तोकऊंगाँ। राई ए किदो क्यों? तो दामोदर बोल्यो के– तू म्हने रोज तो भरतार के, पण म्हारा ती ब्याव कदी वेगा? तू थारा दादाजी ती किजे, म्हारो ब्याव दामोदर से करी दो। राई ए किदो के थाने जरा भी शरम है के नी? में छोरी की जात अपणा बाप ने कुंगा के म्हारो ब्याव करीदो, थे छोरा की जात वईने नी कइ सकता। दामोदर ए किदो– मूं थने पसन्द हुँ के कोनी या कइदे म्हने? राई ए अपणा मन ती दामोदर ने वरी लीदो थो। पण वा मुन्डा ती नी कई सकती थी। काठो मन करी ने कई दीदो थें म्हने पसन्द हो। दामोदर ए राई का मुन्डा ती हुणी लीदो ने झट घड़ो तोकई दीदो। दोई घरे अईग्या। राई चोका में अपणी माँ कने चलीगी। मोको देखी ने दामोदर ए बामण बा ने किदो– बामण दाजी! थांकी या छोरी म्हने पसंद है, म्हारो ब्याव राई का हांते करी दो तो कई हरज है? बामण बा बोल्या– बेटा दामोदर! म्हने काल तक को टेम दई दो। मूं काल होची ने बतऊँगा।

राते बामण बा ने बामणी माँ हुता, जदी बामण बा ए अपणी घरवाली ने पुछ्यो के अपणी राई अभे ब्याव हरकी बइगी। इको ब्याव करीदां। थारी कई मरजी है के राई को ब्याव वइ जाय? बामण ए किदो– अपणा घर में जो दामोदर है, उस कसो रेगा अपणी राई वाते? तो बामणी बोली– थाऐ तो म्हारा मन की वात कई दीदी। दामोदर अच्छो है, अपणो देख्यो भाल्यो है। विको भी कोई कोनी, यूं भी विको ब्याव करनो पड़तो। ऐसा में दोई को ब्याव भी वई जाएगा ने व्याव को काम वइजाएगा। म्हारी भी याज मरजी है। राई को ब्याव दामोदर से करी दाँ अपणा ने भी तसल्ली वई जाएगा। एक पंथ दोई काज वई जाएगा। राई को ब्याव भी वई जाएगा, ने दामोदर घर जमई जसो याँ रइ भी जाएगा। दामोदर जात कोज बेटो है। असो होची ने बामण बा पूजा–पाठ करता–करता दामोदर ने किदो– बेटा दामोदर! थें म्हने काले ब्याव की वात किदी थी नी, तो हुण– बेटा! मूं थारा हांते राई को व्याव तो करी दूंगा। पण थने अठे रेणो पड़ेगा। दामोदर बोल्यो– म्हारो मन उष्टी जाएगा तो मूं कठे जई सकुंगा केनी? जाणे बेटा में थने ना थोड़ी कुंगा। बामण बा

ए मोरत देखी ने लगन लिकार्‌या। दामोदर ने किदो– थारा कोई रिस्तेदार वे वणाने नोतो दियाव। दामोदर ए किदो म्हारो तो अणी दिन–दुनिया में कोई कोनी। बामण बा बोल्यो– चल बेटा नी है तो रेवा दे। शुभ घड़ी देखीने बामण बा ए अपणा रिस्तेदार ने बुलाया। राई–दामोदर ने वाने बैठाया। हल्दी लगई। आदा गांम में राई को वानो फेर्‌यो ने आदा गांम में दामोदर को वाणो फेर्‌यो। गांम में पतासा बांट्या, मण्डप वणायो, मण्डप में राई–दामोदर का लगन कर्‌या। ब्याव पुरो वियो, राई–दामोदर वठेज रेवा लागा।

एक दन राधा ने रुखमणी दोई थेरी की। राधा ए रुखमणी ती पुछ्यो– भगवान कृष्णजी कठे है? रुखमणी ए किदो म्हारा अठे तो नी आया। रुखमणी ए सत्यभामा से पुछ्यो, तो सत्यभामा बोली– म्हारे याँ भी नी है। फेर जामवन्ती ने बुलई और पुछ्यो के– भगवान कृष्ण थारो घरे है? वणे भी किदो के म्हारा घरे नी है। ऐसो सब ए कइ दियो– म्हारे याँ नी है, म्हारे याँ नी है। आखिर बी गया कठे? सोला सौ राणीया ने पूछ्यो– वणा ए भी ना कई दीदो। आखरी मे बड़ी ढुंड़ पड़ी, खोजबीन करी।

सब राणीया ने पटराणीया ए विचार कर्‌यो के– कागलो! सब दूर जाय विने कां के भई कागला, तू तो सब दूर जाय ने नरी दूर–दूर तक जाय, थे कई कृष्णजी ने कठे देख्‌या तो कागलो बोल्यो– में तो अभी सरग से अइ रियो हूँ वां तो कृष्ण भगवान नी है। मैं अबी धरती पे नी गयो हूँ जऊँगा तो देखुंगा। राणीयाँ बोली– जल्दी धरती पे जाओ ने श्रीकृष्ण की खोज खबर करी ने पतो लगाओ। कागलो झट धरती पे ग्यो धरती का चक्कर लगावा लागो, भगवान कृष्ण ने ढुंढ़वा लागो। ढुंढ़ता–ढुंढ़ता आखिर एक बामण देवता का घरे भगवान कृष्ण ने पेंचाण लिया। वणे वणाका सब हाल जाण्यां ने वठे से उड़ीग्यो ने सरग में पोंचीग्यो। बठे जई ने राधा–रुखमणी से किदो के श्रीकृष्ण ने में ढुंढ़ी आयो हूं। वी धरती पे है। एक बामण देवता की छोरी से ब्याव करी लियो है। और मजे से रई रिया है।

राधा–रुखमणी ए विचार कर्‌यो वी यूं तो नी आवेगा वणा ने बुलाणा पड़ेगा। वणा दोई ए एक कागज लिख्‌यो के कागला का गला में बांधी दियो और विने हमीचार दई दिदा के कई दिजे के वेगी बुलाया, राधा–रुखमणी आपने खूब याद करी री है। कागलो धरती पे पोचों ने भगवान ने जई ने कागज दई दीदो ने विदो ने वणाका हमीचार हुणई दीदा। कृष्णजी ए कागज वांचो ने हमीचार हुणया ने वणी ने पाछो कागज लिखी नें वणी का गला में बांधी दिदो। वणी में लिखी दीदो के मैं दो–चार में आऊँगा। कागला जई ने उ कागज दीदो ने हमीचार हुणाया। दो–चार दन विया ने भगवान ए राई ने अपणो भेद बतई दीदो। मै भगवान कृष्ण हूँ, मैं तो थारी सुरत देखी ने मोहित वइग्यो तो सरग से अठे अइग्यो। मनख को रूप करीने थांका से ब्याव करी लिदो। अभे म्हारी पटराणीयों म्हने याद करी री है। म्हने घणा दन वइग्या है, अभे मूं वणा की खबर लेवा ने

जईरियो हूँ। वठे थांकी ब्याव की खबर नी है। मै वठे जइ ने व्यवस्था करूँगा। और फेर थांने बुलई लूंगा। मैं थारा वाते वठे से रेशमी कपड़ा और गेणा मेलूंगा। और कागज भी भेजूंगा। अस्तर वणी राई के समझइने भगवान चलयाग्या।

वठे जई ने वणाए राधा-रुखमा का हालचाल पुछ्या, सात पटराणीया की खबर लीदी, सोला हजार एक सौ राणीया की कुशल पूछी। सब काम ती निपटी ने सोला हजार एक सौ राणीयाँ ने किदो के मै धरती पे एक और ब्याव करि आयो हूँ और म्हारी वणी राणी को नाम राई है। वणी ने अठे लावणी है थांको सबको कई विचार है। राणीयाँ बोली- जठे अतरी राणीयाँ हैं। वठे एक और अई जाएगा तो कई फरक पड़ेगा। आप वणीने जल्दी से जल्दी लियाव। भगवान झट रेशमी कपड़ा लई आया और सोनार घरे जईने गेणा घड़ई लाया अपणी राणी का परमाणे हार नथ कंगन टीको सब लई ने एक पोटली मे बांधी दीदा ने कागला ने बुलायो और किदो के अणी पोटली ने थारा गला में बांधी रियो हूँ। तू अणी ने लइ जई ने म्हारी प्रिय राणी राई ने दियावजे। भगवान ऐ चीट्ठी ने पोटली दोई गला में बांधी दीदी कागलो उड़ीग्यो राधा-रुखमणी ए देख्यो तो बीने लालच दई ने नीचे उतार लिये। वणी का गला मे से कागज, ने पोटली दोई निकाल लिदा, ने वणी की जगा पोटली मे बोर का कांटा, बांदी ने वणी ने किदो के जा दियाव। कागलो उड़ी ने धरती पे ग्यो राई का घरे उतरियो। राई वणी ने देखी ने परसन वईगी। कागला का गला में से पोटली खोली तो वणीकी दसी आगरीयाँ में कांटा भागीग्या। हरे राम कई ने राई ए हाथ झाड़कि लाख्या राई ने घुस्सो आयो, वा रोवा लागीगी भगवान ने भलो-बुरो केवा लागीं की थांए म्हार से झूठ बोली ने व्याव कर्‌यो और व्याव का बाद एक और झूट बोल्यो के मैं भगवान कृष्ण हूँ? थांका वाते मैं भेट में रेशमी कपड़ा और गेणा मेलूँणा। पण वणा की जगा कई भेज्या - रावण बोर का काँटा। नी भेजणा था तो मत भेजता। राई ए मन में गांठ बांदी ली के मैं अभे अपणा सायब से वात नी करूँगा। आज से बोलचाल बंद।

पण भगवान ने उतारव थी, के म्हारे राई ती मिलवा ने पाणो तो राधा-रुखमा दोई वणाने काम ने उलझई देतीं। वी जतरी जलदी करता वतरी देर वेती। वटने राई भगवान को इन्तजार करीरी मन इज मन में दुखी वइरी थी। भगवान सब काम निपेटी ने राई ने लेवा ने पोचा, तो राई तो भगवान ती नाराज थी। वणाने नी आवा को किदो नी आव भगत करी। नी भगवान ती कई बोली। भगवान बोल्या- कई वात है राणी? भगवान हमजा के मैं घणा दन में लेवाने आयो अणी ती राणी नी बोली रिया है। भगवान ए अपणा सासू-सूसरा ने किदो- मैं राई ने लेवा ने आयो हूँ। सासू-सूसरा ए राई ने भेजवा की तैयारी करी, कपड़ा, गेणा, अपणी सरदा का अनुसार दई ने राई ने वदा करी दिदी। भगवान राई ने लई ने पगे-पगे चाल्या। आगे-आगे भगवान पाछे-पाछे राई। रस्ता में भगवान ए राई ने पूछ्यो थने भूख, तरस तो नी लागी। राई कई नी बोली। चालता-चालता वी अपणा घरे पोंचीग्या? एक दन भगवान ए गायाँ का बछड़ा ने छोड़ दिदा, बछड़ा सब दूद पी

ग्या। राई ए देख्यो भगवान दूद-दई वणा रोटी वी जीमेगा। वणा ए पड़ोस में ती दई-दूद माँगी ने मेल दीदो। भगवान आया ने किदो, रोटी परोसो, राई ए झट थाल परोसी दीदो ने भगवान का हामे मेल दीदो। दूद माग्यों तो दूद दीदो, दई माग्यों तो दई दिदो, भगवान ए राई को मौन तोड़वा वाते कई जतन कर्‌या पण राई नी बोली तो नी बोली।

एक दन भगवान कृष्ण मार मिनको वणी ग्या ने दई-दूद का सब बर्तन, हांडा, कुन्डा, जावणीयाँ सब फोड़ लाख्या। राई ने बड़ी फिकर लागी के अभे कईं करांगा। दूद-दई कायमे जमावांगा। अतरा में गली में ती बरतन वाली की अवाज अई, बरतन लई लो। गारा का बरतन बेचवा वाली कोई और नी थी। खुद भगवान इज था। वरतन वाली को रूप करी ने अईग्या था। बरतन वाली ने बुलईने राई ए बरतन लिदा। बरतन वाली बोली- राई थोड़ी देर बैठी जा। दोई वातां करांगा। राई बोली- कई बैठूँ? घर में काम घणों है। बरतन वाली बोली- कई काम-काम लगई राख्यो है? फेर करी लिजे, आ बैठी जा। थोड़ी सुख-दुख की वारतां करा। तू अतरी दूबली क्यों वईगी है। थारे कई दुख है। थारो घरवालो (पति) थने दुख दे। या थार से वात नी करे। कई वात है ऐंसी? जदी राई बैठी ने किदो- म्हारा हांते बड़ो धोखो वियो है बेन। म्हारो ब्याव दामोदर का सांचे वियो थो जो म्हाराज घर में रेता था। ब्याव वेवा के बाद वणाए बतायो के मैं दामोदर नी हूँ, कृष्ण हूँ। म्हने बड़ो बुरो लाग्यो, म्हे तो दामोदर मनख हमजी थी पण वी तो देवता निकल्या। यां आया था जदी दामोदर ए किदो थो थारा वाते गेणां कपड़ा भेजूंगा। जदी कागलो याँ आयो ने मैं वीका गला में गोटली देखी तो पोटली में गेणां कपड़ा की जगा बोर का कांटा निकल्या वी म्हारी दस उँगली में चुबीग्या। काटाँ आंगरीयाँ मेज रइग्या। भगवान के तोफो नी भेजणों थो तो मत भेजता। पर वणाए म्हारा हांते ऐसा क्यों करीयो? बरतन वाली बोली ला बेन सुई ला, मैं थारा कांटा निकाल दूं। राई ए सुई लई ने दीदी। बरतन वाली ए वणी की आंगरी में ती कांटा निकल दीदा। राई की आंगरीयों में ती कांटा निकलीग्या तो राई को मन हलको वइग्यो। एक वात और राई का मन में थी वा वणे बरतन वाली ने कई दीदी, अणी ती भी वणी को मन हलको वइग्यो। और झट भगवान ए अपणी वेश बदली लिदो। जठे बरतन वाली थी, वणी जगा पे श्रीकृष्ण दामोदर उबा था। और वी बोल्या- बस अणी वात ती तू नाराज थी। मैं थारे दूसरा कपड़ा, गेणा लई ने दइदूं। भगवान ए सब कपड़ा-लत्ता, गेणा गांठा, लई ने राई ने पेरई दीदा। और राई दामोदर को मिलन वईग्यो। ऐसा सबको वे।

भावार्थ

एक गाँव में एक ब्राह्मण रहता था और उसकी एक लड़की थी नाम था 'राई'। राई ऐसी थी दुबली-पतली जैसे कनियर की डाली। हवा के प्रत्येक झोंके के साथ यदि पूर्व से हवा आये तो पश्चिम में झुक जाये और पश्चिम की हवा आये तो पूर्व में झुक जाये। उसका रंग रूप एकदम

उज्ज्वल था, जैसे चाँदी का वर्क हो। यदि उसके नर्म शरीर में नाखून चुभा दिया जाय तो खून निकलने लगता था, ऐसी नाजुक थी वह। उसकी नाक तोते की चोंच के सदृश्य नुकीली थी और आँखें नीम्बू की फाँक की तरह लावण्यमयी थी।

ब्राह्मण देवता अपने परिवार का पालन पोषण कथा पूजा पाठ के द्वारा किया करते थे। यही उनका मुख्य धन्धा था। शनैः-शनैः राई बड़ी होने लगी और सयानी हो गई। उसकी उम्र विवाह के योग्य हो गई तो उसके लावण्य रूप की चर्चा भगवान श्रीकृष्ण के पास पहुँची। भगवान श्रीकृष्ण ने सोचा कि क्या वास्तव में राई इतनी सुन्दर और रूप गर्विता है, यदि वह सुन्दर है, रूपगर्विता है, तो मैं उसे देखने जाऊँगा। ऐसा विचार करके भगवान श्रीकृष्ण पृथ्वी पर आये। उन्होंने अपना रूप तज दिया। एक साधारण मनुष्य का रूप धारण कर उस ब्राह्मण के यहाँ पहुँचे। ब्राह्मण ने अतिथि को आते देखा तो हर्षित होकर पहले उसे प्रेम से बैठाया और आदर सत्कार किया। फिर ब्राह्मण ने आने का कारण पूछा और उसने पूछा- तुम्हारा नाम क्या है? तुम कौन हो, कहाँ रहते हो इत्यादि? तब लड़के ने कहा- मेरा नाम दामोदर है और मैं जाति का ब्राह्मण हूँ और मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है, मैं तुम्हारे आश्रय में रहना चाहता हूँ। मुझे पास रख लो और कर्मकाण्ड सिखा दो। ब्राह्मण ने कहा- बेटा! तू मेरा जाति भाई है और विद्या दान से तो विद्या बढ़ती है, मैं तुझे विद्या दान दूँगा और ऐसा कहकर ब्राह्मण देवता ने उसे अपने पास रख लिया। ब्राह्मण रोज कथा, पूजा-पाठ करते और दामोदर को भी सिखाते थे। जब ब्राह्मण देवता स्नान करके पूजा पाठ की तैयारी करते तो राई उनके लिए प्रतिदिन नदी से शुद्ध जल लाती थी। राई जल लेने घड़ा लेकर जाती और तब दामोदर भी कपड़े लेकर नदी पर स्नान करने जाता था। दामोदर स्नान करके और राई पानी का घड़ा लेकर दोनों साथ-साथ आते, यह उनका नित्य कर्म था।

एक दिन दोनों नदी पर गये। दामोदर स्नान करने लगा और राई ने अपने घड़े को माँजा धोया। नदी से शुद्ध जल भरा और दामोदर से कहा- दामोदर मुझे घड़ा सिर पर चढ़ा दो। तब दामोदर ने कहा- मैं तेरा हँडा नहीं उठाऊँगा। तब राई ने कहा-क्यों? क्या बात है? रोज तो तुम मेरे घड़े को उठाकर सिर पर रख देते थे, आज क्यों नहीं उठाते? तब दामोदर ने कहा- मैं रोज घड़ा उठा देता था, पर आज नहीं उठाऊँगा। तब राई ने कहा- क्यों? क्या बात है? तब दामोदर ने कहा- मैं जैसा कहता हूँ वैसा कहेगी, तो मैं तेरा घड़ा उठा दूँगा, नहीं तो नहीं उठाऊँगा। तब राई ने कहा- बोल क्या कहता है? कहता क्यों नहीं? मुझे जल्दी है, पहले ही बहुत समय व्यर्थ गँवा दिया है, तब दामोदर ने कहा- ऐसा बोल-

राई के भरतार दामोदर जी, मुझे घड़ा उठा दो जी।

राई ने कहा- क्या मेरी और तेरी सगाई हो गई है? क्या मेरा विवाह तेरे साथ हो गया है?

जो मैं तुझे अपना पति (भरतार) कहूँ। नहीं मुझे नहीं कहना ऐसा। तब बहुत देर हो गई, ऐसा सोचकर राई ने मन ही मन विचार किया कि पिताजी रास्ता देख रहे होंगे, मेरे कहने से ये दामोदर मेरा पति तो बन नहीं जायेगा? इसलिये उसने कहा– देखो तुम जैसा कहते हो वैसा मैं कह देती हूँ।

राई के भरतार दामोदर जी, मुझे घड़ा उठा दो जी।

दामोदर ने झट से घड़ा उठाकर राई के सिर पर रख दिया। दामोदर ने अपने वस्त्र सम्भाले और राई के साथ घर आ गया। राई ने पानी का घड़ा ब्राह्मण दादा को दे दिया और ब्राह्मण देवता पूजा करने लगे।

अब तो रोज–रोज का नित्य कर्म ही बन गया था। रोज राई दामोदर की मनवार करती और भरतार (पति) कहकर घड़ा उठवाना पड़ता था। एक दिन राई ने घड़ा भरा और कहा– दामोदर जी घड़ा उठा दो। तब दामोदर जी ने कहा– मैं आज तो घड़ा नहीं उठाऊँगा। तब राई ने कहा– क्यों? तब दामोदर ने कहा– तुम रोज मुझे पति तो कहती हो, पर मेरा विवाह तेरे साथ कब होगा? तुम अपने पिताजी से कहो कि मेरा विवाह दामोदर से कर दें। राई ने कहा– तुम लड़के की जात होकर भी बात क्यों नहीं करते? तुम्हें कुछ शर्म है या नहीं? मैं अपने पिता से कैसे कहूँ कि मेरा विवाह दामोदर से कर दो। मैं लड़की की जात हूँ, मैं नहीं कह सकती। तब दामोदर ने कहा– मैं तुझे पसंद हूँ या नहीं? ये बात मुझे बता दे। मैं खुद ब्राह्मण दादा से बात कर लूँगा। राई तो मन ही मन दामोदर को वरण कर चुकी थी। मन में तो उसे अपना पति मान लिया था, पर मुँह से नहीं कहती थी। आखिरकार राई ने फिर दामोदर से कहा– तुम मुझे पसंद हो। मुझे तुमसे प्रेम है, और मैं तुमसे विवाह करना चाहती हूँ। राई के मुँह से यह सब दामोदर ने सुना और राई का घड़ा उठाकर सिर पर रख दिया। दोनों साथ–साथ घर आये। राई ने घड़ा अपने पिताजी को दे दिया और लज्जा भाव से चौके में अपनी माँ के पास चली गई, ब्राह्मण देवता पूजा करने लगे। मौका देखकर दामोदर ने ब्राह्मण से कहा– मैं बहुत दिनों से आपसे एक बात कहना चाहता था। मैं आपकी लड़की राई से विवाह करना चाहता हूँ। वह मुझे पसंद है। मेरा विवाह राई से कर दीजिए। ब्राह्मण ने कहा– मुझे कल तक की मोहलत दो। मैं कल तुम्हारी बात का सोचकर जवाब दूँगा।

रात्रि में ब्राह्मण और उसकी पत्नी ने शयन कक्ष में वार्तालाप किया। पत्नी से ब्राह्मण ने पूछा– हे प्रिय! राई अब विवाह योग्य हो गई है। अब इसका विवाह कर देना चाहिए। तुम्हारा विचार क्या है? पत्नी ने कहा– तुम्हारा विचार एकदम ठीक है। मेरी भी यही इच्छा है। राई का विवाह हो जाये, तो बहुत अच्छा हो जायेगा, दोनों एक ही बात पर सहमत हो गये। अपने घर में जो दामोदर है, वह एक अच्छा और शरीफ लड़का है और अपना देखा भाला है, उससे यदि राई का विवाह हो जाये तो क्या हर्ज है? ऐसे भी दामोदर का विवाह भी तो हमें ही करना पड़ेगा। ऐसे

में दोनों का काम हो जाता है। पत्नी ने कहा– मेरी इच्छा यही थी, तुमने मेरे मन की बात कह दी। राई और दामोदर का विवाह हो जाये तो मन को तसल्ली हो जायेगी। राई का विवाह भी हो जायेगा और दामोदर का विवाह भी हो जायेगा। दामोदर जैसा दामाद हमें कहाँ मिलेगा? और दामोदर तो घर–जमाई जैसा यहीं रहेगा। हमारा बुढ़ापे का सहारा हो जायेगा और तो और दामोदर हमारी बिरादरी का बेटा ही तो है।

ब्राह्मण सुबह पूजा पाठ करने बैठे। पूजा करते–करते उन्होंने दामोदर को बुलाया और कहा– बेटा तुमने कल जो विवाह की बात कही थी, तो सुनो बेटा– मैं राई का विवाह तुमसे करने को सहमत हूँ, पर तुम्हें यहीं रहना पड़ेगा। दामोदर ने कहा– ब्राह्मण देवता यदि मेरा मन ऊब जायेगा, तब तो मैं कहीं बाहर जा सकूँगा या नहीं? तब ब्राह्मण ने कहा– जाना बेटे दामोदर। मैं तुम्हें मना थोड़े करूँगा। ब्राह्मण ने शुभ मुहूर्त में लग्न निकाले, और दामोदर से कहा– बेटा यदि तुम्हारा कोई रिश्तेदार हो तो उसे विवाह में शामिल होने हेतु निमंत्रण भेजो। दामोदर ने कहा– मैंने पहले ही आपसे कह दिया था कि मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है। मैं किसे बुलाऊँ? ब्राह्मण ने कहा– ठीक है बेटा! जैसे हम राई के माता–पिता वैसे तेरे भी हैं, रहने दे, मत बुला किसी को। शुभ घड़ी में ब्राह्मण ने अपने रिश्तेदारों को इकट्ठा किया। शुभ मुहूर्त में राई और दामोदर को हल्दी का लेप किया, उन्हें दूल्हा–दुल्हन बनाया। आधे गाँव में दामोदर का बाना घुमाया और आधे गाँव में राई का बाना घुमाया। गाँव में बतासे बाँटे गये। मण्डप आच्छादन हुआ, शुभ लग्न हुये। राई और दामोदर का विवाह सानन्द सम्पन्न हो गया। दामोदर और राई सुखपूर्वक रहने लगे।

एक दिन राधा ने रुक्मिणी को बुलाया। राधा ने रुक्मिणी से पूछा– भगवान श्रीकृष्ण जी कहाँ हैं? तुम्हारे यहाँ हैं क्या? राधा ने कहा– नहीं। मेरे यहाँ तो नहीं हैं। यही प्रश्न राधा ने रुक्मिणी से पूछा– तुम्हारे यहाँ तो नहीं हैं? रुक्मिणी ने भी कहा– मेरे यहाँ नहीं हैं। यहाँ भी नहीं, वहाँ भी नहीं, तो वे हैं कहाँ? सत्यभामा को पूछा गया। सत्यभामा ने कहा– वे मेरे यहाँ भी नहीं हैं। तब जामवन्ती को बुलाया गया और पूछा गया। कि भगवान कृष्ण तुम्हारे यहाँ हैं– जामवन्ती ने कहा– वे यहाँ नहीं हैं? ऐसा सभी ने कहा। मेरे यहाँ नहीं हैं। मेरे यहाँ नहीं हैं। आखिरकार वे हैं कहाँ? सोलह सौ रानियों को पूछा गया– सभी ने कहा– मेरे यहाँ नहीं हैं। अन्त में बड़ी खोज बीन मची। आखिर वे हैं कहाँ? और गये हैं तो कहाँ?

सभी रानियों, पटरानियों ने विचार किया और कौवे के माध्यम से संदेश भेजा, कौवे से कहा– हे भाई कौवे! तुम तो सभी स्थानों पर भ्रमण करते हो। क्या तुमने श्रीकृष्ण जी को कहीं देखा है। तब कौवे ने कहा– मैं स्वर्ग से आ रहा हूँ वहाँ भी भगवान श्रीकृष्ण नहीं हैं। पृथ्वी पर नहीं गया हूँ। जाऊँगा तो देखूँगा। तब सब रानियों ने कहा– जाओ जल्दी से तुम श्रीकृष्ण को ढूँढो और उनकी खोज खबर लालो। जाओ जल्दी से पृथ्वी पर भ्रमण करके खोजकर जल्दी से पता

लगाकर आओ। कौवा स्वर्ग से उड़ा और पृथ्वी पर आया और भ्रमण करने लगा। भगवान श्रीकृष्ण को ढूँढ़ने लगा। खोज बीन करते-करते आखिरकार उसने ब्राह्मण देवता के घर में भगवान श्रीकृष्ण को खोज लिया और पहचान लिया कि यही भगवान श्रीकृष्ण जी हैं। उसने सब हाल हकीकत मालूम की और वहाँ से उड़ चला, उड़कर सीधा स्वर्ग पहुँचा। स्वर्ग में जाकर उसने राधा-रुक्मिणी से कहा- मैंने श्रीकृष्ण जी को खोज लिया है। ये पृथ्वी पर हैं। एक ब्राह्मण देवता की लड़की राई से विवाह कर लिया है और वहीं रम गये हैं और बड़े मजे से रह रहे हैं।

राधा-रुक्मिणी ने विचार किया अब वे लौटेंगे नहीं, उन्हें बुलाना पड़ेगा। आपस में विचार करके उन्होंने चिट्ठी लिखी और शीघ्र से शीघ्र आने को लिखा। उसे कौवे के गले में बाँध दिया और संदेश पहुँचाया कि वे जल्दी आ जाये। राधा और रुक्मिणी उन्हें याद कर रही हैं। वे शीघ्र ही पृथ्वी से स्वर्ग में आयें। कौवा उड़ते-उड़ते पृथ्वी पर भगवान श्रीकृष्ण के पास आया और उसने चिट्ठी भगवान को दी और मौखिक संदेश भी सुनाया। भगवान श्रीकृष्ण ने संदेश सुना, पढ़ा और कौवे को वापस चिट्ठी लिखकर गले में बाँध दी। चिट्ठी में लिख दिया मैं दो-चार दिन बाद आऊँगा। ऐसा संदेश राधा-रुक्मिणी को सुना देना। कौवा उड़ते-उड़ते राधा-रुक्मिणी के पास पहुँचा। उन्हें चिट्ठी दी और मौखिक संदेश सुनाया।

दो-चार दिन का समय व्यतीत हुआ और भगवान ने राई को अपना भेद बताया। मैं भगवान श्रीकृष्ण हूँ और मैं तेरी सुन्दरता पर मुग्ध होकर स्वर्ग से यहाँ आया और मनुष्य का रूप धारण करके तुमसे विवाह किया। अब मुझे मेरी पटरानियों ने याद किया है। यहाँ बहुत दिन हो गये हैं। मैं उनकी खबर लेने जा रहा हूँ। वहाँ पर तुम्हारी शादी की बात मालूम नहीं हैं। मैं वहाँ जाकर प्रबन्ध करूँगा। व्यवस्था करके तुम्हें बुला लूँगा, मैं तेरे लिये उपहार स्वरूप रेशमी वस्त्र, साड़ियाँ और गहने भेजूँगा। कौवे के गले में बाँधकर भेजूँगा, तुम उसे सँम्भाल लेना और चिट्ठी लिखूँगा। मैं कब तुझे लेने आऊँगा। इस प्रकार अपनी प्रिया को समझाकर श्रीकृष्ण स्वर्ग चले गये। वहाँ जाकर उन्होंने राधा-रुक्मिणी की खैरियत पूछी अपनी सात-पटरानियों की कुशल क्षेम पूछी और सोलह हजार एक सौ रानियों की खबर ली। सभी काम कर निवृत्त होने के बाद सोलह हजार एक सौ रानियों से कहा- मैंने पृथ्वी पर एक विवाह और कर लिया है और मेरी उस प्रिया का नाम राई है, उसे यहाँ लाना है। तुम्हारा विचार क्या है? रानियों ने कहा- जहाँ इतनी रानियाँ हैं, वहाँ एक और आ जाने से फर्क क्या पड़ेगा? तुम उसे यथाशीघ्र ले आओ। भगवान ने सभी के विचार जान लिये। इसके बाद वे रेशमी वस्त्र खरीदने गये। अच्छी रेशमी साड़ियाँ खरीद कर ले आये। इसके पश्चात् वे सुनार के घर गये और अपनी प्रिया के अनुकूल नौसर्‌या हार, बिन्दी, नथ, टीका, कंगन आदि आभूषण बनवाये और लेकर आये। उन्हें पोटली में बाँध दिया। तत्पश्चात् उन्होंने कौवे को बुलाया और कहा- इस पोटली को मैं तेरे गले में बाँधता हूँ, तू इसे लेकर मेरी प्रियतमा राई को दे आना। कौवे ने हामी भरी। भगवान श्रीकृष्ण ने चिट्ठी और पोटली

दोनों कौवे के गले में बाँध दी, कौवा उड़ा। जैसे ही कौवा आकाश में उड़ा। राधा और रुक्मिणी ने कौवे को देखा और लालच देकर कौवे को नीचे उतार लिया। कौवे के गले में चिट्ठी निकाल ली और पोटली भी। पोटली से रेशमी वस्त्र, आभूषण निकाल कर उसमें बेर के काँटे बाँध कर वापस कौवे के गले में बाँध दिया और कहा- ले जा। कौवा उड़ते-उड़ते पृथ्वी पर आया। आकर राई के घर उतरा। राई ने कौवे को आया देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। कौवे के गले से पोटली खोली जैसे ही उसने पोटली खोली उसकी अंगुलियों में काँटे चुभ गये। हरे राम कहकर राई ने हाथ झटक दिये और राई को गुस्सा आया और उसने एक बार पुन: पोटली को खोला। उस पोटली में कुछ नहीं निकला। सिर्फ रावणबेर के काँटों के अलावा। राई को रोना आ गया। वह विलाप करने बैठ गई। बार-बार भगवान को कोसती जाती थी और रोते-रोते कहती थी, तुमने मुझसे विवाह किया झूठ बोलकर। विवाह के बाद एक और झूठ बोला कि मैं भगवान श्रीकृष्ण हूँ। तुम्हारे लिए उपहार स्वरूप रेशमी वस्त्राभूषण भेजूँगा, लेकिन वस्त्रों के स्थान पर भेजा तो क्या? रावणबेर के काँटे? नहीं भेजना था तो नहीं भेजते उपहार। राई ने मन में ठान लिया कि अब मैं अपने प्रियतम से बातचीत नहीं करूँगी। आज से बोलचाल बन्द। उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? भगवान ने अपना सभी काम सँभाल लिया। राधा-रुक्मिणी और कुछ न कुछ काम उलझा देती। भगवान राई को मिलने की जितनी जल्दी करते उतनी ही देर होती जाती थी। इधर राई पलक पावड़े बिछाकर उनकी प्रतीक्षा कर रही थी और व्याकुलता से धीर-अधीर हो रही थी। भगवान अपने सभी काम समेटकर अपनी प्रिया राई को लेने पहुँचे। राई तो भगवान से नाराज थी, जब भगवान दामोदर राई के घर पहुँचे तो उसने भगवान को न आने को कहा, न ही आदर सत्कार किया। न ही भगवान से कुछ बोली। भगवान ने दो बार बोलने की कोशिश की पर राई ने टाल-मटोल कर दी। भगवान ने उससे पूछा- क्या नाराजी है प्रिया? पर राई ने कुछ उत्तर नहीं दिया, भगवान दामोदर ने सोचा कि मैं इसे लेने के लिए बहुत दिन में आया हूँ, इसी से इसे गुस्सा आ गया है। ऐसा भगवान ने मन ही मन सोचा और समझ लिया। भगवान ने अपने सास-ससुर को कहा- मैं राई को लेने आया हूँ। सास-ससुर ने राई को भेजने की तैयारी की। कपड़ा गहना जो भी यथा-शक्ति दे सकते थे दिया। राई को विदा किया। भगवान राई को लेकर पैदल ही चले। आगे-आगे भगवान और पीछे-पीछे राई चली जा रही थी। रास्ते में भगवान ने राई से पूछा- तुझे भूख-प्यास तो नहीं लगी? राई ने कुछ उत्तर नहीं दिया। चलते-चलते वे अपने निवास स्थान पर पहुँच गये। एक दिन भगवान ने गायों के बछड़ों को छोड़ दिया। बच्चों ने सभी दूध पी लिया। राई ने देखा। भगवान बिना दूध, दही के खाना नहीं खायेंगे। अत: पड़ोस से दूध दही माँगकर रख दिया। भगवान ने आकर खाना माँगा और राई ने थाल परोसकर भगवान को दे दिया। दूध माँगा तो दूध दे दियादही माँगा तो दही दे दिया। भगवान ने राई का मौन तोड़ने के कई जतन किये, पर राई नहीं बोली तो नहीं बोली।

एक दिन भगवान श्रीकृष्ण बिलाव बन गये, और दूध-दही के सभी बर्तन फोड़ दिये। राई को बड़ी चिन्ता हुई कि अब बर्तनों का क्या करेगी? दूध-दही किसमें जमायेगी? इसी सोच में डूबकर बैठ गई। इतने में उसे गली में बर्तन बेचने वाली की आवाज सुनाई दी। बर्तन ले लो। मिट्टी बर्तन बेचने वाली कोई और नहीं थी, स्वयं भगवान श्रीकृष्ण जी ही बर्तन बेचने वाली का रूप धारण करके आये थे। बर्तन वाली को बुलाकर राई ने बर्तन खरीदे। बर्तन वाली ने कहा- राई थोड़ी देर बैठ जा, दोनों बात करेंगे। राई ने कहा- क्या बैठूँ? घर में काम पड़ा है। बर्तन वाली ने कहा- क्या काम-काम लगा रखा है? फिर कर लेना, आ बैठ। कुछ सुख-दुख की बातें करें। तू इतनी दुबली-पतली क्यों हो गई? तुझे क्या दुख है? क्या तेरा पति दुख देता है? या तुझसे बात नहीं करता? क्या बात है? तब राई ने बैठकर कहा- मेरे साथ बड़ा धोखा हुआ है बहन। मेरा विवाह दामोदर से हुआ था। जो मेरे घर में ही रहते थे। विवाह होने के पश्चात् दामोदर ने बताया कि मैं दामोदर नहीं हूँ। मैं श्रीकृष्ण हूँ। मुझे बड़ा बुरा लगा, मैंने तो दामोदर को मनुष्य समझा था, पर वे तो देवता निकले। यहाँ आये जब दामोदर ने कहा था मैं तेरे लिए वस्त्राभूषण भेजूँगा, तब कौवा यहाँ आया और मैंने उसके गले से पोटली खोली तो पोटली में वस्त्राभूषण के स्थान पर बेर के काँटे निकले और वे मेरी दसों अंगुलियों में चुभ गये। हाथ लहू-लुहान हो गये, काँटे अंगुलियों में ही रह गये। राई ने अपनी अंगुलियाँ दिखाई। भगवान को कुछ उपहार भेजना नहीं था तो नहीं भेजते। पर उन्होंने ऐसा मेरे साथ क्यों किया? बर्तन वाली ने कहा- ला बहन सुई ला, मैं तेरे काँटे निकाल दूँ। राई ने सुई दी। बर्तन वाली ने उसकी अंगुलियों से काँटे निकाल दिये। राई की अंगुलियों से काँटे निकल जाने से राई का मन हल्का हो गया। एक बात और जो राई के मन में थी उसे उसने बर्तन वाली से कह दिया, इससे भी उसका मन हल्का हो गया। जब राई का मन हल्का हुआ तो भगवान ने तुरन्त वेश बदल लिया। जहाँ पर बर्तन वाली थी, उस स्थान पर श्रीकृष्ण दामोदर खड़े हैं और उन्होंने कहा- बस इस बात से तू नाराज थी। मैं तुझे दूसरे वस्त्राभूषण ला देता हूँ, भगवान ने सभी वस्त्रालंकार ला कर राई को पहना दिये। राई और दामोदर का मिलन हुआ, ऐसा सबका हो।

कार्तिक व्रत कथा

एक गाम में एक बामण ने बामणी रेता था। वी भोत गरीब था। वणा के एक बेटो भी थो। बेटो बड़ो वियो तो माँ-बाप ए विको ब्याव करि दीदो। बऊ अच्छी मीली थी। वा बऊ आखा घर को काम करती आखा घर को काम वणे समाली लीदो। बारा इ मईना बामण का घरे तीज-तेवार वेता रेता था।

कार्तिक को मइनो आयो तो सासू बऊ से बोली- के मै हबेरे वेगी उठी ने नदी कारतकी न्हावा ने जऊँगा। सासू की वात हुणी ने वऊ बोली मैं भी न्हऊंगा। सासू बोली- थारा से नी

न्हवायगा। थने घर को कामकाज करनो पड़े। चोका, चुला, झाड़ू, बुवारा, पूजा-पाठ, इ हगरा काज थने ज करना पड़े। थाकी जाएगा नदी बी टूट पड़े है। नी बाई तू तो रेवा दे। थारा ती यो सब नी वेगा। एक टेम रोटी खाणी पड़ेगा तू भूखा मरेगा तो म्हारा ती नी देखायगा। वऊ तो नी मानी।

बऊ तो भगवान पे सरदा भगती राखवा वारी थी। वणे तो जीद पकड़ी लीदी ने बोली के सब गांम की लुगायां न्हई री है। तो मूं भी न्हऊंगा। जदी बऊ नी मानी तो सासू बोली- थारो मन कई रियो है तो तू बरत कर ने न्हां-पण घरे न्हई लीवे। बऊ बोली हो मूं घरे ज न्हई लूंगा। सासू बऊ दोई कार्तिक न्हावा लागी। बऊ घरे न्हाती तो सासू नदी न्हावा ने जाती। गांम की लुगायां सब भेरी वई ने गीत भजन गाती थकी नदी जाती। न्हावती-धोवती पूजा-पाठ करती। बीच-बीच में गंगा, गोमती, नरबदा, सरसती नदी का नाम लेती जाती थी। अबे रोज सासू न्हावती उन्डे, वे बऊ न्हावती कुन्डे।

सासूजी न्हई ने घरे आवता तो बऊ वणा ने पूछती- आज कायकी वारता हुणी। सासूजी बऊ ने वारता हुणावता ने फेर दोई जणी रोटीयाँ हाते ज खाती थी।

सासूजी वरत तो करता था पण मन तो अटने-वटने भटकतो रेतो थो। पण बऊ तो रोज नेम ती पूजा-पाठ करती। राधा-किसनजी और तुलसी की पूजा रोज करती जीका बाद जीमती थी। एक दन सासूजी नदी न्हावा ने ग्या तो कान को झुमको, पग का पायजब ने कदोरो गला कोहार नदी पे भूली आया। घरे अई ने देखे तो याद भी कोनी के डील की रकम कठे गई। याद कोनी कठे मेली। बऊ ने भी के पण कई के।

बऊ जंगाल से न्हावती घरे तो बोलती के गंगा महाराणी आव तो वणी का हाथ में कान को झुमको अई जातो, जमना भैय्या बोलती तो गला को हार अई जातो गोमती माता बोलती तो कदोरो हाथ में अई जातो ने सबका बाद लोट्यो भरी ने सरसती को नाम लेती तो पाँव का पायजब हाथ में अई जाता।

यो सब बऊ ए देख्यो वा हमजी के सासूजी ए धोवा ने अणी जंगाल में डाल्या वेगा। असो होची ने बऊ कामे लागीगी। अभे सासूजी घबराणा के म्हारा हगरा गेणा नदी में पड़ीग्या अई ने बऊ ने कीदो। अबे कई कऊँ। बऊ बोली के थे तो कुण्डा मे डाली ने भूलीग्या था। बऊ का मुण्डा ती सासूजी ए हुण्यो तो वाच करईगी। ने बोली- तू कईं कई री है? मूं तो नदी तक गेणा पेरी ने गई थी।

बऊ ए सासूजी का हामे उ जंगाल लई ने मेली दीदो। ने बोली के देखो इमे गेणां है के कोनी। गेणा देखी ने सासू बऊ का पगे पड़ीगी। ने बोली- के बऊ थाकों कारतिक न्हाणो हांचो है। भगवान थाका पे परसन वे।

वणी दन ती सासूजी बऊ को घणो आव–आदर करती, ने हरएक काम पुछी ने करती। ने कारतिक असनान भी हांते न्हाती, ने नेम–धरम ने भगवान की सदा पूजा मन लगई ने करती। हरएक काम मन साफ राखी ने करो, तो विको फल हऊ ज मिले।

भावार्थ

एक गाँव में एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनका एक बेटा था। बेटा बड़ा हुआ। शादी की। बहू बहुत अच्छी मिली थी। पूरे घर का कार्य उसने सम्हाल लिया था। पूरे वर्ष ब्राह्मण के यहाँ तीज–त्योहार होते रहते थे।

कार्तिक का महीना आया। सास ने बहू से कहा– कल से मैं नदी स्नान करने जाऊँगी। सास की बात सुनकर बहू ने कहा– मैं भी कार्तिक स्नान करूँगी। सास ने कहा– सुबह जल्दी उठकर नहाना पड़ता है। यह सब तुझसे नहीं होगा। तुझे घर का सारा कार्य– रसोई बनाना, झाड़ू लगाना, कपड़े धोना, पूजन–पाठ करना पड़ेगा, तो तू थक जायेगी, नदी यहाँ से बहुत दूर है। नहीं, तू रहने दे। बहू तो मानने को तैयार ही नहीं हुई। बहू ईश्वर भक्ति पर ज्यादा विश्वास रखती थी। वह कहने लगी– गाँव की सारी औरतें कार्तिक स्नान कर रही हैं तो मैं भी करूँगी। जब बहू नहीं मानी तो सास ने कहा– तेरा मन कह रहा है, तो तू व्रत कर स्नान कर, लेकिन घर पर ही स्नान करना। बहू ने कहा– हाँ, मैं घर पर ही स्नान कर लूँगी। बहू घर पर स्नान करती और सास नदी पर। गाँव की सारी औरतें एकत्र होकर भजन गाती हुई नदी जातीं, नहातीं, पूजन–पाठ करतीं। बीच–बीच में गंगा, गौमती, नर्मदा, सरस्वती का नाम लेतीं।

'सास रोज नहाती उन्डे ने बहू नहाती कुण्डे' – सासू माँ घर आती तो बहू पूछती– कथा सुन ली? सासु माँ कहती– मैं तुझे कथा सुनाऊँगी, फिर दोनों भोजन करेंगे। सासु माँ व्रत तो करती, लेकिन उनका मन तो इधर–उधर भटकता रहता। बहू नियम से रोज पूजन–पाठ करती। राधा–कृष्ण और तुलसी की पूजा करती उसके बाद भोजन करती थी। एक दिन सास नदी पर कान की झुमकी, हार, कन्दोरा, पायल भूल आई। घर पर आई तो देखा कि कहाँ गई उन्हें तो कुछ भी याद नहीं, कहाँ रखी? बहू को पूछे तो क्या पूछे?

बहू घर पर ताँबे के गंगाल में न्हाती और बोलती जाती, गंगा महारानी आओ, कान की झुमकी हाथ में आ जाती। यमुना मैय्या आओ, गले का हार हाथ में आ जाता। गौमती माता आओ, कन्दोरा हाथ में आ जाता। आखिरी में लोटा भरकर सरस्वती मैय्या का नाम लेती, पायजेब हाथ में आ जाते। बहू ने देखा तो वह मन में ही सोचने लगी कि सासू माँ ने इन्हें धोने के

लिए गंगाल में डाल दिये होंगे। वह अपने कार्य में लग गई। सासू माँ घबराने लगी, आकर बहू को कहा कि- मेरे सारे गहने आज तो नदी में गिर गये। अब क्या करूँ? बहू ने कहा- आप तो कुण्डे में (गंगाल में) डालकर भूल गये थे। बहू के मुँह से सासू माँ ने सुना तो आश्चर्य में पड़ गई और कहने लगी- यह तू क्या कर रही है? मैं तो नदी सारे गहने पहनकर गई थी। बहू ने सासू माँ के सामने वह गंगाल लाकर रख दिया और कहा कि- देखो, इसमें गहने रखे हैं या नहीं? गहने देखकर सासू माँ बहू के पैर छूने लगी और कहने लगी कि- बहू! तेरा कार्तिक स्नान सार्थक है। भगवान तेरे पर प्रसन्न हैं। कहते हैं कि 'मन चंगा तो कसौटी में गंगा'।

उस दिन से सासू माँ बहू का बहुत आदर करने लगी और हर कार्य में पूछ-पूछ करने लगी। कार्तिक स्नान भी फिर साथ-साथ करने लगी। नियम से पूजा-पाठ, कथा मन लगाकर करती और सुनती थी। हर एक कार्य मन को शुद्ध रखकर करोगे तो उसका अच्छा ही फल मिलेगा।

करवा चोथ व्रत कथा

एक पटेल थो। वणी के सात बेटा था, ने एक बेटी थी। भई बेन सब पन्या थका था। वणा का घर मे सब बारे इ मईना की चोथ करता था। बेन छोटी थी। वा बोली- सब चोथ करे मूं भी करूँगा। भोजायां बोली बाई- थें नी करोगा। थांका ती तोड़क-ताड़क बरत वे, थो करवा चोथ को वरत है। बेन छोटी थी, लाड़ की थी। भई नी करवा देता। भोजाई बोली के अणा का भई ने मालम पड़ेगा तो बकेगा। अतरा में एक भई आयो। वणे पुछो के काए बेन रोटी खई लीदी थें। बेन बोली के मैं तो चोथ करूँगा चाँद देखी ने रोटी खऊँगा। वणी भई का पेट में वात नी टकी। वणे खेते जई ने दूसरा भई ने किदो- के सोवना एक चोथ करी है। अभे छः ई भई घरे आया ने माँ ने बाप ती लड़े। घर की लुगायाँ ने के आज थे वेगी पूजा करोगा। सब भई छः वजे घरे अई ग्या। पाँच भई दरवाजे ग्या ने एक भई बेन कने उबो, ने वी पांची भई एक पुरो बारे ने झट झार करी ने छट्टो भई चान्नी में चन्दरमाँ देखावे, के थारो चन्दरमा तो नगे अई ग्यो। तू रोटी खई ले। वणी ने रोटी खवई दीदी छः बजे। फेर भोजायां ए चन्दरमा देखयो ने पुजा करी। ने सब ए एकासणा खोल्या। सब जणी रोटी खावा लागी, पण छोटी बऊ रोटी नी खाय, विचारी ने जबरदस्ती बैठाड़ी, फेर भी वा यूंज बोली के- मूं अभी नी खऊंगा, म्हारी नणद में तो विपदा पड़वा वारी है। वणी ने तो अग्गम-हुजतो थो।

सब रोटी खई ने निमट्या ने नणद वाई का सासरा ती आदमी आयो। सब भई बिने पुछे के अतरी राते क्यों आयों। के थाको जमई मरिग्यो। हाँजे छः बजे तक तो हऊ थो। पण छ बजे

बाद एक दम मरीग्यो। कई तू अणी बेन ने लेवाने आयो। केवा लागो हाँ- मूं लेवाने आयो। सब केवा लगा के अणी ने चन्दरमा देख्या रोटी खवाड़ता तो कई नी बेतो। फेर मोटी भोजई ए वणी नणद बाई ने काजरिया कपड़ा पेराया, ने छोटो भई ने छोटी भोजई ने वणी बेन का हांते मेल्या। छोटी भोजई बोली के जतरी लुगायां रस्ता में मिले वणा सबके पगे लागजो। जतरी लुगायां मिली वणा सबके पगे लागी। ने आगे चाली। गांम गोयरे पोंचा तो चोथ माता गांम का गोयरे बैठा। पेला तो भोजई पगे लागी, फेर नणदबाई ने किदो के थें भी पगे लागो। नणदबाई पगे लाग्या- तो वणी चोथ माता ए आशीर्वाद दिदा ने किदो के- सीरी रीजो, ने सपुती रोजी, अखण्ड सुवागण रीजो पीरो पेरजो ने मीठो खाजो ने खुब आनन्द का वास वीजो। इ आशीर्वाद तो दई दिदा, पछे वणी चोथ माता ए किदो के असल मन ती वरत करनो, तोड़क-ताड़क नी करनो कणी का केवा में नी आणो। चोथ माता थने टूटी असी सकल ने टूटेगा। अभे वा घरे गी तो वणी को घरवालों आलस मोड़ी ने बैठो वइग्यो। ने केवा लागो के आज तो म्हने खुब नींद आई। वा बाई बोली के थाने आई असी थांका वेरी दुश्मण ने भी मती आवजो।

भावार्थ

एक पटेल था। उसके सात लड़के और एक लड़की थी। सभी का विवाह हो गया था। उनके यहाँ सभी चतुर्थी का व्रत करते थे। बहन सबसे छोटी थी। सब भाई उसे बहुत प्यार करते थे। उसने कहा- सब चतुर्थी करते हैं, तो यह व्रत मैं भी करूँगी। उसकी भाभियों ने कहा- अरी बहन! आपसे यह व्रत नहीं होगा। यह करवा चौथ का व्रत है। यह बार-बार टूटता नहीं है और आपके भाई लोग करने नहीं देंगे। उनको मालूम पड़ जायेगा तो वह नाराज होंगे। इतने में एक भाई आया। उसने पूछा- अरी बहन! तूने भोजन कर लिया? बहन ने कहा- भैय्या! मुझे तो आज करवा चौथ है। चन्द्रमा देखकर ही भोजन करूँगी। भाई को यह बात हजम नहीं हुई। उसने खेत पर जाकर अपने भाइयों से कह दिया कि- आज बहन सोहन ने करवा चौथ का व्रत रखा है। छहों भाई खेत पर से घर आये और अपने माता-पिता को चिल्लाने लगे। घर पर सभी औरतों को कह दिया कि आज तुम पूजा जल्दी कर लेना। शाम को छः बजे और पाँचों भाई दरवाजे पर जाकर खड़े हो गये और एक भाई बहन के पास खड़ा हो गया। उन पाँचों भाइयों ने एक घास का पूला जलाया, उसकी ऊँची-ऊँची लपटें उठने लगीं। बहन के पास खड़े भाई ने चलनी में बहन को चन्द्रमा दिखाया और कहा कि- तेरा चन्द्रमा तो उदय हो गया है। तूने दर्शन भी कर लिये हैं, अब तू भोजन कर ले। तुझे बहुत ही भूख लगी होगी। भाइयों ने उसे भोजन करवा दिया। भौजाइयों को चन्द्रमा तो रात को दिखाई दिया। फिर उन्होंने चलनी में चन्द्रमा देखा, पूजा की, अर्घ्य दिया, फिर भोजन किया। सब भोजन करने बैठी, पर छोटी बहू भोजन नहीं कर रही थी। बेचारी को जबरदस्ती बिठाया गया। फिर वह बोली कि- मैं अभी भोजन नहीं करूँगी। मेरी ननद के ऊपर तो विपदा आने वाली है। उसको आगे क्या होने वाला है, सब दिखाई देता था।

सब भोजन करके उठीं और ननदबाई के ससुराल से एक आदमी आया। सब भाइयों ने पूछा– इतनी रात को किसलिये आया है, भाई? उसने कहा– आपके दामादजी की मृत्यु हो गई है। शाम छः बजे तक तो वह अच्छे भले थे, पर छः बजे के बाद अचानक पता नहीं क्या हुआ और वह चल बसे। क्या तू बहन को लेने आया है? जी हाँ, मैं इन्हें लेने आया हूँ। सब बहुएँ कहने लगीं– चन्द्रमा देखकर बहन को भोजन करवाते तो कुछ नहीं होता। बड़ी भाभी ने अपनी ननद को काले कपड़े पहनाये और छोटे भाई और भौजाई के साथ बहन को उसके ससुराल भेजा। छोटी भाभी ने ननद को कहा– जितनी भी औरतें रास्ते में मिलें उनके पैर छूना। रास्ते में जितनी भी औरतें मिलीं, उसने उनके पैर छुए और आगे गये तो गाँव के किनारे पहुँचे। वहाँ देखा कि चौथ माता रास्ते में बैठी हुई है। पहले उसकी भाभी ने उनको प्रणाम किया, फिर ननद को कहा कि– तुम भी पैर छुओ। ननद ने पैर छुए। तो चौथ माता ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि– सीली रहना, सपूती रहना, पीला पहनना, मीठा खाना, अखण्ड सुहाग रहना और खूब आनन्द करना। ये आशीर्वाद तो दे दिये। फिर चौथ माता ने कहा– सच्चे मन से व्रत करना, व्रत नहीं तोड़ना, किसी के भी कहने में नहीं आना। अब तू अपने घर पर जा, तेरा पति जीवित हो जायेगा। वह अपने घर गई। उसका पति उठकर बैठ गया और कहने लगा– आज तो मुझे बहुत नींद आई। उसकी पत्नी ने कहा– ऐसी नींद तो आपके दुश्मन को भी न आए।

हे चौथ माता! उस लड़की पर आप प्रसन्न हुई, ऐसी संसार की सब बहन–बेटियों पर होना और सबको यही आशीर्वाद देना।

भईदूज व्रत कथा

एक पटेल थो। वणी के एक बेटो ने एक बेटी थी। बेटा को नाम गीरवर ने बेटी को नाम गीरवरी थो। वी सीवगड़ का रेवासी था। बेटा–बेटी दोई मोटा वईग्या। गांम में कोई बिमारी एसी आई वणी में माँ ने बाप दोई एक इज दन मरीग्या। भई मोटो थो ने बेन छोटी थी। दोई भई–बेन में प्रेम घणो थो। दोई हांते ज रेता था। खाता तो हांते, खेलता तो हांते, खेते जाता तो हांते, पाणी जाता ता हांते, दाड़की करता तो हांते। बेन मोटी वईगी तो पड़ोसी बोल्या– के भई देख बेन बड़ी वईगी, तो तू इको ब्याव करी दे। तो भई बोल्यो– के मासा या वात तो मूं होचूंगा थाने होचवा की जरोत कोनी। बणी भई का पेट में पाप आयो। तो राते बेन ने के, के देख बेन पाड़ोसी म्हने के– के थारो ब्याव करी दूँ। म्हारो तो थारा पे घणो प्रेम है। तो मूं तो थारा ज हांते ब्याव करूँ नी ता मूं मरी जऊँ। बेन ती तो हुणाणो भी कोनी, ने केवा लागी थो तो अत्याचार है। कई भई का हांते बेन प्रेम करे, ने कई ब्याव करे। बेन तो उठी ने दूसरा कमरा में चलीगी। ने हांकर लगई ने हुईगी। भई

ए घणी हांकर कूटी ने हाका कर्‌या। पण बेन नी उठी। भई तो हवेर में उठी ने कूड़े चलीयो ग्यो। वणो होचो के बेन रोटी करेगा तो म्हने बुलावा ने आवेजगा। बेन दफोरे उठी अटने-वटने देख्यो के भई तो कोनी। बेन पावड़ो लईने माल में लिकरीगी। उनारा का दन था। पावड़े-पावड़े धूरो भेरो करीयो, धूरा को बड़ो जंगी ढेर कर लिदो। मूं कूड़ा में पड़ी ने मरूँगा तो अणी पापी भई का हात लांगी जाएगा। अणी तो बेन हुईगी ने धूरो उपर वारी लीदो ने मुड़ो उगाड़ो राखी लीदो।

दूसरे दन भई कूड़ा बावड़ी देखतो फरे, बेन कठे गई। कठे भी पतो नी चाल्यो दो-तीन दन वईग्या। ढुढ़तो-ढुढ़तो माल में पोचों। तो वठे धूरा को ढेर देखी ने बोल्यो के- पावड़ो तो म्हारा घर को है। एरे मेरे देखीने वईग्यो, जठे धूरा को ढेर थो। होचता-होचता विने हांच पड़ीगी। अतरा में एक रस्ते चालतो मनक लिकरियो तो वणे पूछ्यो- कारे भई! अठे क्यों बैठो? मूं अठे विचार करी रियो के म्हारी बेन कठे गई? अरे बड़ा आदमी या ढगली कायकी पड़ी। रोज तो अटने ती लिकरां कई भी नी थो अठे तो। वणी आदमी ए पावड़ो लिदो ने धूरा को ढेर खोल्यो तो वणी पावड़ा में, वणी की बेन को लुगड़ो अईग्यो। तो भई बोल्यो- के यो तो म्हारी बेन को ज लुगड़ो है। वणी में ती बेन की लास लिकारी के हाँ याज म्हारी बेन है। बेन तो सतवन्ती थी। म्हाराज मन में पाप आयो थो। वणे सब रस्ते चालता मनख ती वात कीदी। पाछी वणी बेन ने हुवई दीदी ने वणी की लास पे धूरो वार दीदो। फेर वणी आदमी ने वणी भई ए किदो के तू भी म्हारा पे धूरो वार दे मूं भी अणी का हांते ज मरूँगा। एक मगरो म्हारो भी अणी का हांते वणेगा। दोई का मगरा हांते वणेगा। रस्सागीर बोल्यो के- मूं तो यो काम नी करूँ? मूं पाप मोल नी लूं, थारा हरको मूं पापी नी वणूं। तो भई ए कई कर्‌यो के धूरा को एक मुट्ठो भर्‌यो ने मुंडा में कुड़ लीदो तो आख्याँ में भी भरईग्यो तो उ घबरई-घबरई ने उगाड़ो ज मरीग्यो। वणी रस्तागीर ए गांम ने जई ने वात करी। लोगां ने किदो तो गांम का लोग बोल्या के चाली ने देखा तों सई के उ कई करीरियो है? वणा ए देख्यो तो उ मर्‌यो थको पड़्यो वठे। लोग देखी ने बोल्या- के दोई लासां ने लई जई ने वारी दा। तो वणी रस्तागीर ए किदो के नी वणी की आखरी इच्छा थी, ने म्हने किदो थो के म्हारा पे धूरो वारी दे मैं भी मरी जऊँ। पण मैं असो नी कर्‌यो। अभे असो करां के अणी पे धूरो वारी दां। तो अणी की इच्छा पुरी वई जाएगा। सब लोगां ए वणी पे धूरो वारी दिदो। ने वणा दोई भई-बेन का मगरा कने-कने वणई दिया। तो भई-बेन का नाम अमर वईग्या। पाप तो बड़तो जई रियो ने धरम घटतो जाइरियो है।

भावार्थ

एक पटेल था। उसको एक लड़का और एक लड़की थी। लड़के का नाम गिरवर और लड़की का नाम गिरवरी था। लड़के-लड़की दोनों बड़े हो गये। गाँव में एक बीमारी के फैलने से उनके माता-पिता उस बीमारी में मर गये। भाई-बहन में बहुत प्रेम था। इतना कि साथ में

खाना, खेलना, खेत पर जाना, पानी भरने जाना, मजदूरी करने जाना – सब साथ में। बहन बड़ी हुई तो पड़ोसियों ने कहा– तेरी बहन अब होशियार हो गई है, अब इसकी शादी कर दे। भाई ने कहा– तुम कहने वाले कौन होते हो? यह तो मुझे सोचना है। तुम्हें सोचने की जरूरत नहीं है। भाई के मन में पाप था। उसने बहन से कहा– पड़ोसी मुझे तेरी शादी के बारे में कह रहे थे कि तेरा विवाह कर दूँ, लेकिन मैं तो तुझे बहुत चाहता हूँ। मैं तो तेरे साथ ही शादी करूँगा, नहीं तो मर जाऊँगा। बहन घबराने लगी। उसने कहा– यह तो सरासर अत्याचार है, मेरा भाई पापी है। क्या कोई बहन से भी विवाह करता है? बहन ने अपने कमरे में जाकर दरवाजा लगाया और सो गई। भाई ने दरवाजा बजाया, लेकिन बहन ने नहीं खोला।

सुबह उठकर भाई खेत पर चला गया, बहन रोटी लेकर आ जायेगी। बहन दोपहर को उठी, इधर-उधर देखा कि यहाँ भाई तो नहीं है। बहन फावड़ा लेकर जंगल में चली गई। वहाँ उसने फावड़े से धूल का ढेर कर लिया। उसने सोचा कि कुँए में गिरकर मरूँगी तो इस पापी भाई को हाथ लग जाएँगे, इसलिए वह सो गई और ऊपर से धूल डाल ली। मुँह खुला रख लिया। भाई ढूँढने निकला– बहन कहाँ गई होगी? कुँए, बावड़ी, पनघट – सब देख लिया। बहन को ढूँढते-ढूँढते जंगल में पहुँच गया। धूल का ढेर देखकर बोला कि यह फावड़ा तो मेरे घर का है। वहीं पर बैठ गया।

एक राहगीर निकला। उससे उसने पूछा– अरे भाई! तू यहाँ क्यों बैठा है? मेरी बहन पता नहीं, कहाँ चली गई। यह धूल का ढेर तो आज ही हुआ है। मैं रोज इधर से निकलता हूँ। सुबह तो यह नहीं था। देख, इसमें क्या है? राहगीर ने फावड़ा लिया, ढेर को खोलने लगा तो उसमें से उसकी बहन की साड़ी उस फावड़े में आ गई। वह बोला– यह साड़ी मेरी ही बहन की है। उसमें से बहन को निकाला। बहन सतवन्ती थी। मेरे ही मन में पाप आ गया था। बहन के ऊपर वापस धूल डाल दी। राहगीर को कहा– मेरे ऊपर भी धूल डाल दो, मैं भी इसके साथ मरूँगा। राहगीर बोला– मैं ऐसा काम नहीं करूँगा। तेरे जैसा पाप मैं नहीं करूँगा। भाई ने एक मुट्ठी धूल की भरी और उसने मुँह और आँख में डाल ली। वह घबरा-घबराकर वहीं तड़फ-तड़फकर मर गया। राहगीर ने गाँव में जाकर बात कही। गाँव के लोगों ने कहा– चलकर देखें, वह क्या कर रहा है? जाकर देखा तो वह मरा पड़ा। लोगों ने कहा– दोनों लाश को एक जगह ही जला देते हैं। राहगीर ने कहा– उसकी आखिरी इच्छा थी कि मुझ पर भी धूल डाल दो तो मैं मेरी बहन के पास ही मर जाऊँगा। सब लोगों ने उसके ऊपर धूल डाल दी और दोनों भाई-बहन की पास-पास में समाधि बना दी। भाई-बहन के नाम अमर हो गये। पाप बढ़ता जा रहा है और धर्म घटता जा रहा है।

आँवला नोमी व्रत कथा

एक बुढ़ी माँ थी। वणी के एक इज बेटा-बऊ था। माँ ने झाड़का लगावा को भोत सोक

थो। तरे-तरे का झाड़का आंगणा में लगाती थी। माँ राधा-किसनजी की भगत थी। वा रोज न्हई-धोई ने पूजा-पाठ करती। ने बेटा-बऊ घर को काम करता। सीरी किसनजी ने आवलां घणा पसंद था। वणीका आंगणा में आंवला को झाड़को भी थो। माँ रोज आंवला की पूजन करती, ने वामण ने रोज आंवला दान में देती थी। वणी बामण कने की आंवला सोना का वइ जाता। बामण की बेटी सोना का आंवला लई ने वा सुनार का अठे बेंची आवती।

एक दन वणी माँ की बऊ सुनार का घरे कोई काम ती गई थी। वणे वणी सुनार की लुगई का गला में सोना को हार देख्यो। तो वणी ए वणी सुनारण ने पूछ्यो के थे इ सोना का आंवला कठे से लाया? तो वणे कीदो के इ तो थांका ज घर का है। थांकी सासू माँ ए बामण के दान में दीदा था। बामणी की बेटी म्हारा घरे बेंचींगी। वऊ घरे अई ने वणी का धणी ती बोली के थांकी माँ तो सोना का आंवला दान करे है। अपणे तो पीन्दे बइजावांगा। विको धणी बोल्यो के आज मूं माँ ती पूछूंगा। तो बऊ बोली के अणी पड़पंच में मती पड़जो। थें तो असो करो के, कई भी बहानों करी ने वनखण्ड जंगल में मेली आव। वणी लुगई ए किदो असो वणी आदमी ए करी दीदो। बेटा ए माँ किदो- चाल माँ! धुमी-फिरी ने अभी आवां। यूं करी ने माँ ने जंगल में छोड़ी आयो। माँ बिचारी आखो दन वणी बेटा की वाट जोवती री, ने अटने-वटने भटकती फरी पण बेटो नी आयो। वणी जंगल मे एक ढाड़ा चरावा वारो गुवारियो मिल्यो। वणी ने वणे हगरी बात वतई। तो ऊ गुवारियो बोल्यो के- माँ! तू फिकर मत कर, थारो सब परबंध वई जाएगा। वणी गुवारिया ए वणी डोकरी के एक झोपड़ी वणई ने, खावा-पीवा को इन्तजाम कर्‌यो, ने वणी माँ ने किदो के अणी झोपड़ा में रो। बणी झोपड़ी कने एक आंवला को झाड़को थो। वा माँ वणी की रोज पूजन करती।

अटने बेटा-बऊ में वरवा पडिग्या। गांम छोड़वा को विचार कर्‌यो, ने परगांम वाते दोई धणी-लुगई लिकरी पड़्या। चालता-चालता वी वणीज जंगल में पोंची ग्या। जठे वणे बेटा ए वणी की माँ ने छोड़ी थी। थोड़ीक दूर चाल्या ने वणा ने एक झोपड़ी नजरे अई। वणी कने ग्या। तो वा वऊ बोली के अणी में हेला पाड़ी ने देखा, कुण है अणी झोपड़ा में? वणे हेला पाड़्यो, तो वा बूढ़ी माँ बारे अई ने पूछे कुण है? बेटा-वऊ ए माँ ने पेंचाण लीदी। माँ इ तो मै दोई जणा हों, थांका बेटा-बऊ। दोई जणा माँ के पगे पड़्या ने किदो के- म्हाने माफ कर दो, म्हाका ती गलती बईगी। माँ तो माँ वे। बेटा कपूत वे तो भी माँ वा माँ कदी दुसमणी नी राखे। वा माँ झट वणा बेटा-बऊ ने अपणी झोपड़ी में लइगी। बेटो बोलो- माँ! घणी भूख लागी री है। तो माँ ए लीज की साग ने रोटी वणई। ने बेटा ने खवाड़ी तो बेटो बोल्यो- माँ! या साग तो कड़वी है। माँ बोली- बेटा! माँ का बोल लीम हरका कड़वा लागे, ने दूसरा का बोल मीठा लागे। बेटा-बऊ माँ की बात हुणी ने खुब सरमीन्दा वइग्या। ने बोल्या- के माँ! घरे चालो। अभे एसो कदी नी करांगा। माँ बेटा-बऊ का हांते घरे ग्या। ने सब घरे अई ने सुख ती रेवा लागीग्या।

भावार्थ

एक वृद्धा माँ थी। उसके एक बेटा और एक बहू थी। माँ को पौधे लगाने का बहुत शौक था। हर प्रकार के पौधे आँगन में लगाती थी। वह राधा-कृष्ण की बहुत भक्त थी। स्नान-ध्यान करके पूजन-पाठ करती। बहू-बेटे अपने घर का कार्य करते। श्रीकृष्णजी को आँवले बहुत पसन्द थे। उसके आँगन में आँवले का वृक्ष था। माँ रोज आँवले का पूजन करती और ब्राह्मण को रोज आँवले दान करती थी। उस ब्राह्मण के पास वह आँवले सोने के हो जाते थे। ब्राह्मण की लड़की सोने के आँवले लेकर सोनी के यहाँ बेच देती।

एक दिन उस माँ की बहू सोनी के यहाँ किसी कार्यवश गई थी। उसने सोनी की पत्नी के गले में सोने का हार देखा। उसने सोनी की पत्नी से पूछा- तुमने यह सोने के आँवले कहाँ से लाये? यह तो तुम्हारे यहाँ के ही हैं। तुम्हारी सासू माँ ने ब्राह्मण को दान में दिये थे, लेकिन ब्राह्मण की बेटी हमारे यहाँ बेच गई। बहू घर पर आई और अपने पति से कहा- तुम्हारी माँ तो सोने के आँवले दान करती है। उसने कहा- आज माँ से पूछेंगे। बहू बोली- इस उलझन में मत पड़ो। ऐसा करो कि किसी भी बहाने से उसे वनखण्ड (घने जंगल) में छोड़कर आ जाओ। पत्नी की बात सुनकर बेटा माँ को जंगल में घूमने-फिरने के बहाने ले गया और छोड़ आया। माँ सारे दिन बेटे का रास्ता ढूँढती रही, इधर-उधर भटकती रही, लेकिन बेटा नहीं आया। उस जंगल में एक ग्वाला मिला। उसे उसने सारी बात बतायी। ग्वाले ने कहा- माँ! तू फिकर मत कर, तेरा सारा प्रबन्ध हो जायेगा। ग्वाले ने एक झोपड़ी बनायी, खाने-पीने की व्यवस्था की और माँ को कहा इसमें रहकर अपना गुजारा कर। उस झोपड़ी के पास एक आँवले का वृक्ष था। वह रोज उसका पूजन करती।

वहाँ बेटे-बहू में बहुत विपदा आ गई। गाँव छोड़ने का विचार किया और दोनों गाँव छोड़कर चल दिये। चलते-चलते वे उसी जंगल में पहुँच गये, जहाँ बेटा अपनी माँ को छोड़कर आया था। वहाँ उन्हें एक झोपड़ी दिखाई दी। पत्नी ने कहा- इस झोपड़ी में देखते हैं। कौन है, बेटे ने आवाज लगाई। एक बुढ़िया बाहर आई और पूछा- कौन है? बेटे-बहू ने माँ को पहचान लिया। माँ! यह तो हम तुम्हारे बेटे-बहू हैं। दोनों ने माँ को प्रणाम किया और कहा कि- हमें माफ कर दो, हमसे गलती हो गई है। माँ की ममता देखो! माँ तो माँ होती है। बेटा कपूत हो जाता है, फिर भी माँ कभी बेटे की दुश्मन नहीं होती है। माँ अपने बेटे-बहू को अपनी झोपड़ी में ले गई। बेटे ने कहा- माँ! मुझे बहुत जोरों की भूख लगी है। माँ ने जल्दी से नीम की सब्जी और रोटी बनायी। बेटे को भोजन कराया। तो बेटा बोला- माँ! सब्जी तो कड़वी है। माँ बोली- बेटा! माँ के बोल नीम जैसे कड़वे लगते हैं, दूसरों के बोल मीठे लगते हैं। बेटे-बहू माँ की बात सुनकर बहुत

शर्मिन्दा हुए। माँ को कहा- माँ! घर चलो, अब ऐसा कभी नहीं होगा। माँ अपने बेटे और बहू के साथ घर आ गई और आराम से रहने लगे।

पोसी दितवार व्रत कथा

एक राजा-राणी था। पोस मईना को दितवार थो। राजा ए हवेरा-हवेरी जंगल में शिकार पे जावा की तैयारी कर लीदी। तो राणी देखी ने बोल्या- देखो जी, आप शिकार पे जाओ तो घणी देर ती आओ। आज म्हारे पोसी दितवार को वरत है। दन आथम्या पेला गोरी पूजा करूँगा पेला आप रोटी जीमोगा जीका बाद मैं खऊँगा। म्हारो कीदो करो तो आज मती जाओ।

राजा ए जल्दी घरे आवा को वादो कर्‍यो, ने घोड़ा पे बइने जंगल में चल्या ग्या। वणी दन राजा ने शीकार पे शिकार मिल्याग्या वीतो मगन वइग्या। ने दीदो वादो भुलीग्या। वठे राणी मेल में बैठी-बैठी राजा की वाट जोवती री। दन डुबवा को टेम वइग्यो, राजा नी आया, गोरी पूजा नी वेगा तो रोटी भी नी खवायगा। दन डुबी जायगा तो म्हारो वरत भंग वई जाएगा। अभे कई करूँ? राणी ने चिन्ता में देखी ने दासी बोली- राणीजी! आप तो पूजा करी ने राजा साब की थाली परोसी ने मेल दो, ने आप दन डुबवा के पेला रोटी जीमीलो। आपको वरत नी टुटेगा। राणी ए असोज कर्‍यो। पूजा करीने राजा की थाल परोसी ने जीमवा ने बैठीगी। एक कवो तोड़्यो थो, ने नगाड़ा पे चोट पड़ी। या राजा साब के मेल में आवा की खबर थी। राणी ए झट हाथ धोया ने अपणी थाली एक कोटड़ी में दपई दीदी। ने राजा का हामे गई। फेर राजा का हांते पूजा करी ने दोई जीमवा ने बैठीग्या।

राजा हर दीतवार ए शिकार पे जाता ने आवा में वणाने देर वई जाती। तो राणी पेला दीतवार हरको, दन डुबवा ती पेला गोरी पूजा करी नें, राजा की थाली परोसी ने जीमवा ने बैठी जाती। कवो तो कताई राजा की सवारी अई जाती थी। तो वा अपणी थाली कोटड़ी में दपई देती थी। यूं करता-करता पाँच दीतवार वईग्या ने पाँच थालीयाँ कोटड़ी में इखट्टी वइगी। राणी वणा थालीयाँ मेली ने भुलीगी। एक दन राजा वणी कोटड़ी में पोंचीग्या। थालीयाँ देखी ने राणी ने पूछवा लगा- के यो कईं है? इ थालीयाँ कठे से अई है? यो हुणी ने राणी तो हड़बड़ई ग्या। फेर दाँत काड़ी ने बोल्या- के ई तो म्हारा पीयर ती अई है। ओह! राजा बोल्या ऐता अनमोल हीरा-मोती, रतन मैं तो अपणा जीवन में कदी नी देख्या। राणी भी कोटड़ी में झाँकी ने देख्यो तो वी भी आश्चर्य मे पड़ीग्या। राजा देखी ने बोल्या- थांका पीयर ती असी कीमती भेट अई है, तो थांका पीयर चालनो पड़ेगा, ने थांका भई ने धन्यवाद देवा ने।

अभे राणी मजाक-मजाक में कई तो दीदो के या भेट म्हारा पीयर ती अई है। पण म्हारा

पीयर में तो कोई कोनी काका बाई भई–बंद कोई भी नी। राणी की हिम्मत भी नी चाली के राजा ने हांची वात वतई दे। राणी ए टालवा की धणी कोसिस करी, पण राजा तो मान्या ज कोनी, राजहट तो राजहट वे। राजा तो राणी ने लई ने छोटा–सा लवाजमा लाव–लश्कर का हांते सासरे चाली पड़्या। राणी मन में गौरी माता ने केवा लागी– के मूं राजा ने कणी भई–बंद ती मिलऊँगा, म्हारे तो कोई कोनी। अगर राजा ने हांची वात वतई तो वी नाराज वई वे जाएगा, ने म्हने मार लाखेगा। गांम का लोगां ने मालम पड़ेगा के अणा राणी के तो कोई कोनी इ तो अनाथ है, तो म्हारी बेइज्जती वइ जायगा। है गोरी माता! म्हारी लाज आपका हाथ में है। अगर मै हांचा मन ती आपकी पूजा करी हे तो म्हारी लाज राखजो।

चालता–चालता रस्ता में एक नदी अई वणी का कनारे पड़ाव डालीयो। तो राणी सनान करवा ने नदी पे ग्या। वठे की होची–होची नें पागल हरका वइग्या। ने होयवा लागा के मैं तो अणी नदी में डुबी ने प्राण दई दूं। गला–गला तक मेरा पाणी में उतरीगी ने डुबवा वारी थी। के गोरी माता प्रकट वीया और बोल्या– बेटी! तू आत्महत्या करी ने म्हने हत्यारी क्यों वणई री है? मैं तो थारी माँ हुँ, तू चिंता मत कर। मैं थारा पति की हठ पुरी करूँगा। मै थारो पीयर वासो कर दूंगा। ने थारा भई–बंध से मिलई दूंगा। पण याद राखजे, आठ दन ती जादा मत रीजे। राणी ए झट गोरी माता का पग पकड़्या ने धोग दीदो। ने गोरी माता अंतरध्यान वइग्या। राणी न्हई–धोई ने प्रसन्न चीत पड़ाव पे अईग्या।

रोटी जीमी ने, थोड़ी देर विश्राम करीनें राजा लाव–लश्कर ती रवाना वईग्या। थोडी दुर चाल्या था, के रस्ता में एक बड़ो भारी सेमर मिल्यो, सेमर को ठाट–बाट राजधाणी हर को थो। राणी ए राजा ने किदो के योज म्हारो पीयर है। वणी ज वखत गाजा–वाजा ढोल–ढमाका की अवाज सुणई दीदी। राजा ए देख्यो के राज का ने समाज का लोग राजसी ठाठ–बाट ती लेवा ने अइ रिया है। तो वणा ने बड़ी खुशी वी। राणी भई–बंधु सबमिल्या ने वणा ने राजमेल में लईग्या। राजमेल मे रोज नत नवा भोजन वणता, आव–भगत करता खुब अच्छी खुब मेजवानी बी। अभे दन पुरा वेवा लागा तो–

सातवें दन राणी राजा ती बोल्या के– अभे म्हारो मन अठे नी लागे। अभे अपणे घरे चालां। राजा को मन थो के थोड़ा क दन और अठे रां। तो राणी एक केवाड़ो कीदो– पेला दन को पामणो, ने दूजा दन को पई, ने तीसरे दन वणी का घरे नी जाय तो वणी की अक्कल कठे गी। तिरीया हट का हामे राजा ने हार माननी पड़ी। आठवें दन राजा–राणी सबसे मिल्या ने वठे से रवाना वइग्या। रास्ता में आगला पड़ाव पे राजा ने याद आयो के सोना की झारी सासरे भूली आया हाँ। तो दो नोंकरां ने झारी लेवा ने पोंचाया। थोड़ी देर में नोकर झारी लईने अईग्या। वणाए राजा ने

बतायो के अपणे जठे ग्या था। राणी सा. का पीयर म्हे वठे ग्या तो सेहर तो वठे थोज कोनी। नी वठे गांम थो नी बस्ती थी। जटने देखो वटने जंगल इज जंगल थो। असो लाग्यो के अपने आठ दन तक वणी जंगल में ज रिया। ऊ तो बिल्कुल वनखण्ड उजाड़ थो।

नोंकरां की वात हुणी ने राजा ने खुब आश्चर्य वियो। वणा ए राणी ने पुछ्यो– राणी! ए शुरू से आखरी तक सब वात राजा ने बतई दी दी। ने किदो के यो सब गौरी माता के पुन परताप ती वीयो है।

मैं पोस का मईना में दीतवार को वरत कर्‌यो थो। यो वणी वरत को फल है। यो हुणी ने राजा ए राणी को घणो सम्मान कर्‌यो, ने खुब परसन विया और सुख ती रेवा लागीग्या।

है गौरी माता! वणा राणी पे परसन विया, ऐसा सब पे परसन विजो।

भावार्थ

एक राजा और एक रानी थी। पौष माह के रविवार का दिन था। सुबह से ही राजा जंगल में शिकार पर जाने की तैयारी कर रहा था कि रानी ने कहा– 'देखिये जी, आप जंगल में शिकार को जाते हैं तो वापस बहुत देर से लौटते हो, आज मेरा पौष के रविवार का व्रत है, सूर्यास्त से पहले गौरी पूजा करके पहले आप भोजन करेंगे तत्पश्चात् मैं। मेरा कहा मानो तो आज शिकार पर मत जाओ।'

राजा ने जल्दी वापस आ जाने का वादा किया तथा घोड़े की रकाब पर पाँव रखकर जंगल में चला गया। उस दिन राजा को जंगल में शिकार पर शिकार मिलते रहे तो उसी में मग्न रहा, रानी को दिया हुआ वचन भूल गया।

वहाँ रानी महल में बैठी राजा की राह देखती रही। सूर्यास्त का समय हो चला था, वह चिन्ता करने लगी कि राजा जी के आये बिना गौरी पूजा नहीं होगी और पूजा किये बिना भोजन भी नहीं होगा। यदि सूर्यास्त हो गया तो मेरा व्रत भंग हो जायेगा। अब क्या करूँ?

रानी को चिन्तित देख एक दासी ने कहा कि रानी जी, आप पूजा करने राजा साहब के लिये थाल परोसकर रख दीजिये और आप सूर्यास्त के पूर्व भोजन कर लीजिए, आपका व्रत भंग नहीं होगा। रानी ने वैसा ही किया। गौरी पूजा की, राजा के भोजन का थाल परोस कर रख दिया और भोजन करने बैठ गई। उसने थाल उठाया ही था कि राज महल के नगाड़े पर चोट पड़ी। यह राजा जी के महल में प्रवेश होने का संकेत था। रानी ने तत्काल हाथ धोये, अपनी थाली एक कोठरी में छिपा दी और राजा की अगवानी के लिए गई फिर राजा के साथ पूजा की और दोनों ने भोजन किया।

राजा प्रति रविवार शिकार पर जाता और वापस लौटने में उसे देर हो जाती तो रानी पहले रविवार की भाँति सूर्यास्त से पूर्व गौरी पूजा करके राजा की थाली परोसकर भोजन करने बैठ जाती थी। ग्रास उठाते ही राजा की सवारी आ जाती थी तो वह अपनी थाली कोठरी में छिपा देती थी। इस प्रकार पाँच रविवार में उस कोठरी में पाँच थालियाँ इकट्ठी हो गई। रानी उन थालियों की बात भूल गई।

एक दिन राजा उस कोठरी में पहुँच गये और थालियाँ देखकर रानी से पूछा ये क्या है? ये थालियाँ कहाँ से आई हैं? यह बात सुनकर रानी हड़बड़ा गई, फिर मुसकराकर बोली- ये मेरे पीहर से आई हैं। राजा ने कहा- 'ऐसे अनमोल रत्न-हीरा-मोती मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखे।' रानी ने कोठरी में झाँक कर देखा तो वह भी आश्चर्य करने लगी। राजा बोले- 'तुम्हारे मायके से ऐसी अनमोल भेंट आयी है, इसलिए चलो, तुम्हारे मायके चलकर तुम्हारे भाई को धन्यवाद दे आयें।'

रानी ने हँसी-हँसी में कह तो दिया था कि यह भेंट उसके मायके से आई है, किन्तु उसके मायके में भाई बन्धु आदि कोई भी रिश्तेदार नहीं थे। रानी की हिम्मत नहीं हुई कि राजा को सच्ची बात बता दे। फिर उसने राजा को टालना चाहा किन्तु राजहठ तो राजहठ था, वह कैसे छूट सकता था? राजा ने रानी की बात नहीं मानी और छोटे से लाव-लश्कर-लवाजमें के साथ ससुराल रवाना हो गये। रानी मन में सोचने लगी कि हे गौरीमाता! मैं राजा साहब को किस भाई बन्धु से मिलाऊँगी? अगर राजा को सच्ची बात बताऊँगी तो ये नाराज होकर मुझे मौत की सजा दे देंगे और प्रजा को जब यह बात मालूम होगी कि रानी अनाथ है, इसके कोई भाई बन्धु नहीं हैं तो मेरी बड़ी बेइज्जती होगी। हे गौरीमाता! अब मेरी लाज तुम्हारे हाथ में है। यदि मैंने सच्चे मन से तुम्हारी पूजा-अर्चना और व्रत किया है तो मेरी लाज रखना।

रास्ते में एक निर्मल जल से भरे तट पर राजा ने अपना पड़ाव डाला तो रानी स्नान करने नदी पर गई। वहाँ अपनी दीन-दशा पर इतनी क्षुब्ध हुई कि नदी में डूबकर आत्महत्या करने लगी। गले-गले तक गहरे पानी में उतरी और डूबने ही वाली थी कि गौरीमाता प्रकट हो गई और बोली- बेटी! तू आत्महत्या करके मुझे हत्यारी क्यों बना रही है? मैं तेरी माँ हूँ, चिन्ता मत कर। मैं तेरे पति का हठ पूरा करूँगी। मैं तेरा पीहर बसा दूँगी। किन्तु याद रखना वहाँ आठ दिन से अधिक मत रहना। रानी ने बड़ी श्रद्धा से गौरीमाता को प्रणाम किया और उनके पाँव पकड़ लिये। फिर गौरीमाता अन्तर्ध्यान हो गई। रानी नहा-धोकर प्रसन्न चित्त पड़ाव पर लौट आई।

भोजन के बाद थोड़ी देर विश्राम करके राजा का लाव-लश्कर वहाँ से रवाना हुआ। थोड़ी ही दूर चले थे कि रास्ते में एक बड़ा शहर मिला। शहर का ठाठबाट राजधानी जैसा था। रानी ने राजा से कहा कि यही मेरा मायका है। उसी समय गाजे-बाजे और ढोल-ढमाके की आवाज

सुनाई पड़ी। राजा ने देखा कि राज्य और समाज के लोग राजसी ठाठबाट से उनकी अगवानी के लिये आ रहे हैं, तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। रानी के भाई बन्धु सभी से मिले और उन्हें राजमहल में ले गये। राजमहल में प्रतिदिन उनकी नित नई आव-भगत और मेहमाननवाजी होती थी।

सातवें दिन रानी ने राजा से कहा कि अब यहाँ मेरा मन नहीं लग रहा है, इसलिए चलो, अपने घर चलें। राजा का मन था कि यहाँ कुछ दिन और रहें, किन्तु रानी ने एक कहावत की- 'पहले दिन पावणा दूसरे दिन पाई, तीसरे दिन क्या अक्ल गई?' आखिर में त्रियाहठ के सामने राजा को हार माननी पड़ी। त्रियाहठ तो त्रियाहठ था। आँठवें दिन राजा-रानी सभी से मिले और वहाँ से रवाना हुए। रास्ते में अगले पड़ाव पर राजा को याद आई कि वे सोने की झारी ससुराल में भूल आये हैं, अत: दो नौकरों को झारी लेने दौड़ाया। थोड़ी देर में नौकर झारी लेकर आ गये। उन्होंने एक आश्चर्य की बात राजा को बताई कि जब हम झारी लेने गये तो वह शहर लापता था, वहाँ न कोई गाँव था न कोई बस्ती। जिधर देखो उधर जंगल ही जंगल था। ऐसा लगा कि हम सब आठ दिनों तक इसी जंगल में रहे हों।

नौकरों की बात सुनकर राजा को अत्यन्त आश्चर्य हुआ, उसने रानी से पूछा तो रानी ने शुरू से अन्त तक की सच्ची बात बता दी कि यह सब गौरीमाता के आशीर्वाद से हुआ है। मैंने पौष माह के रविवार का व्रत किया था, यह उसी व्रत का फल है। सुनकर राजा ने रानी का बड़ा सम्मान किया और सुख से रहने लगे।

गौरीमाता जिस प्रकार रानी जी पर प्रसन्न हुई, उसी प्रकार सभी पर प्रसन्न हों।

बारे धानी अमावस व्रत कथा

एक बामण थो। वणी के सात बेटा था। सात इ पन्या थका। तो हऊ बोली के म्हारे तो आज बारे धानी अमावस है। आज म्हारे मूंग को है। तो म्हारे मूंग को आटो पीसी ने दो रोटी वणई दीजो। तो छोटा बेटा की बऊ बोली का सासूजी मूंग पीसां तो दार कानी पीसीला। तो हऊ देखी ने बोली के काए बऊ म्हने अतरी अकल कोनी मूंई कई देती दार को पण वणी के तो लुण भी लागो ने तेल भी लागो। अणी ती आखा मूंग पीसो। वणी की रोटी करो पराठा करो। बऊ ए मूंग पींस्या मूंग की रोटी करी। सासूजी ने किदो के आपके भी रोटी वईगी ने म्हाके भी वईगी सब हांते खावां। सब जीम्मा ने बैठी हांते-हांते। तो अमावस माता बुढ़ी डोकरी को वेस करी ने आया। अई ने अलख जगायो ने बोली- के म्हने रोटी दई दो। तो सासूजी बोली- म्हाके सबके एकासणो हैं। मैं खईलां पछे थने दांगा। अतरा में अमावस माता बोल्या- के मासा क्यों झूट बोली रिया। हाल तो कवा ज तोड़्या थांए एठों मुंडो नी कर्‌यो। म्हारे असो नेम है के कणे मूंग की रोटी करी वे ने म्हने वा रोटी दान में देती वे तो मैं खऊँ। मूंग की रोटी करी तो है। पण कवो तोड लिदो

खादी तो कोनी। अपणे दोई रोटी अणा डोकरी माँ ने दई दा। अपने फेर मूंग को आटो पीसी ने रोटी वणई ने खईलांगा। अमावस माता दोई रोटी लई ने चलीया गया। तो वा बऊ वीने जाता देखी री थी। सासूजी- वा डोकरी तो आंगणा में ज अलप-झलउ वईगी। तो बऊ बोली- मूं अब पीसी ने लऊँ ने रोटी करूं। आटो पीसी ने वणावा ने बैठी। हऊ ए बऊ ने बुलई ने किदो- के बेटा आव म्हारा हाथ को कवो ढाबी ले। तो छई बऊवां अईगी ने सातमी भी अईगी। हऊ जी नीचे ल्हाखी दो। तो हऊजी ए नीचे लाखी दीदी। वा रोटी वदती-वदती नरे वजन वईग्यो विभे। तो बऊ देखी ने बोली- के हऊजी बारे धानी अमावस माता आया था। वी आपने टूटमान वईग्या। बऊ कमाड़ दयई ने वा रोटी होना-चाँदी की वईगी। ने वा बऊ ऊ होना को भाटो रड़कावती-रड़कावती हसातमा कमरा में मेल मई। अभे दूसरे दन हऊ सब पड़ोसणा में बैठी। तो वणे कीदो के देखी भई बारे धानी अमावस घणी टूटमान वे है। अमावस म्हने टूटीया, आदा आड़ी तो होनो है ने आदा आड़ी चाँदी है। जदी दुनिया में वरत चाल्यो है। अमावस माता वणी डोरी ने टूटा असा सकल ने टूटजो।

भावार्थ

एक ब्राह्मण को सात बेटे थे। सातों के विवाह हो गये थे। बहुएँ सभी अच्छी थीं। सास ने कहा- बहू! आज मुझे बारे धानी अमावस का व्रत है। आज मुझे मूँग खाने हैं। मूँग का आटा पीसकर दो। रोटी बना देना। तब छोटी बहू ने कहा- सासुजी! मूँग पीसे इससे तो उसकी दाल ही पीस लेते हैं। तो सास ने कहा- बहू! मुझे समझाइश मत दो, मैं सब जानती हूँ। दाल में नमक और तेल दोनों लगा हुआ है। मुझे नमक नहीं खाना है। इसीलिए मूँग का ही आटा पीसो और उसकी रोटी बनाओ। छोटी बहू ने मूँग का आटा पीसकर रोटी बनायी। सास और बहुएँ सब साथ में भोजन करने के लिए बैठीं। सास के लिए मूँग की और बहुओं ने अपने लिए गेहूँ की रोटी बनायी।

इतने में अमावस माता एक बुढ़िया के रूप में आई और कहने लगी- मुझे रोटी दे दो। तब सास ने कहा- हम सबको व्रत है, हम सब भोजन कर लें फिर तुझे देंगे। इतने में अमावस माता बोली कि- अम्मा! क्यों झूठ बोल रही हो? अभी तो एक ग्रास ही तोड़ा है, मुँह भी जूठा नहीं किया है? मेरा ऐसा नियम है कि जिसने भी मूँग-रोटी बनायी हो और वह रोटी मुझे दान में दे तो मैं खाऊँगी। सास ने दोनों रोटी दे दी। अमावस माता रोटी लेकर निकली। फिर बहू ने बाहर जाकर देखा, वह देखते-देखते गायब हो गई। बहू ने अन्दर जाकर सास से कहा कि- वह बुढ़िया तो आँगन में से ही अन्तर्ध्यान हो गई। बहू ने सास के लिए मूँग का आटा पीसकर फिर दो रोटी बनायी। बहू ने सास से कहा कि- आप भोजन कर लो। सास भोजन करने बैठी तो सभी बहुओं को बुलाया और कहा कि- बेटा! आओ। मेरे हाथ से एक रोटी तुम सब ले लो। तो बहुओं ने कहा कि आप यह रोटी नीचे रख दो। उन्होंने रोटी नीचे रख दी। वह रोटी बढ़ती-बढ़ती बहुत

बड़ी और वजनदार हो गई। तो बहुएँ देखकर बोली– सासुजी! आप पर बारे धानी अमावस बहुत प्रसन्न हुई। सासु ने कहा– यह रोटी एक कमरे में रखकर दरवाजा लगा दो। बहू ने सास के कहे अनुसार रोटी कमरे में रखकर दरवाजा लगा दिया। थोड़े दिन बाद बहुओं ने कमरा खोला तो कमरा चमकने लग गया। बहुएँ आश्चर्यचकित हो गई। वह रोटी सोने और चाँदी की हो गई। दूसरे दिन सास आस-पड़ोस की औरतों के पास बैठकर कहने लगी कि आज बारे धानी अमावस मुझपर बहुत प्रसन्न हुई है। रोटी एक ओर सोना और दूसरी तरफ चाँदी की हो गई है।

अमावस माता! उस सास पर प्रसन्न हुई, ऐसी सारी संसार की औरतों पर प्रसन्न होना।

सोमा धोबण व्रत कथा

सात भई की एक बेन थी। सोमेती अमावस को दन थो। साती भोजायां ने नणद सोमती की पूजा करी, ने पीपल का फेरा दिदा। पीपल में लक्ष्मी को वासो रे। तो लक्ष्मीजी वणा सात इ भोजायां ने अखण्ड सौभाग्यवती रीजो वणी को आशीर्वाद देता, ने वणी नणद ने कई नी केता। दो भोजायां आमे-हाते वात करे, के अपणा ने तो अखण्ड सोभाग्यवती को आशीर्वाद मिले, ने अणा बाईसा ने क्यों नी मिले। तो एक भोजई बोली के लक्ष्मीजी ने पुछांगा। भोजायां ए लक्ष्मीजी ने पुछ्यो के आप म्हाने आशीर्वाद दो। वणा बाईसा ने क्यों नी दो? तो लक्ष्मीजी बोल्या– के अणी के सुहाग नी है। तो भोजायां बोली के अणी को कई उपाय करां? तो फेर लक्ष्मीजी बोल्या के समन्दर का वच में एक टापू है, वणी में एक सोमा धोबन रे हे। वणी कने ती अणी को सुवाग मांगी ने लाओगा तो इके सुवाग रेगा। दो भई-भोजई बेन ने चाले का उपर बैठई ने समन्दर का टापू ले लइग्या, जठे सोमा धोबन रेती थी। लक्ष्मीजी ए वणाने सव काम बतई दीदो थो। के वणी को ऐसो-ऐसो काम करनो है। बेन वणी सोमा धोबण को रोज काम करती। साफ-सफई करती, लीपती, फूल बखेरती, इत्र छींटकती। अतरो काम करी ने रोज समन्दर कनारे अई जाता। वणी टापू पे तो कोई रइ नी सके। सोमा धोबण सोच में पड़ीगी, के म्हारो यो अतरो काम रोज कुण मानस करी जाय। एक दन वा कमाड़ का आड़े उबी रइ जा ने वा सब देखे। सोमा धोबण वणी बेन ने काम करता देखी ने पुछ्यो के– बाई तू कुण है? तो बा बोली के माता मैं एक मानवी हूँ। तू अठे कस्तर अई? ने थने कणे रस्सो वतायो? और तू क्यों अई? म्हारा किसान में सुवाग कोनी, तो लक्ष्मीजी म्हने आप कने पोंचई। के समन्दर में एक टापू है, वणी टापू पे एक सोमा धोबन रे है, वाज थने सुवाग दई सकेगा। तू वणी की रोज सेवा करजे। सेवा करता-करता सोमती अईगी। सोमा धोबण वणी काम ती खुब परसन वी। ने वणी ने खुब आशीर्वाद दिदो, ने एक कंकु की पुड़ीया दीदी। ने किदो– के जा थारे अखण्ड सौभाग्य रेगा, ने खुब आनन्द को वास करेगा। सोमा धोबण वणी बेन ने परसण वी, एसी सब पे वीजो।

भावार्थ

सात भाई की एक बहन थी। सोमवती अमावस का दिन था। सातों भौजाइयों और ननद ने मिलकर पीपल की पूजा की और फेरे दिये। पीपल में लक्ष्मी का वास रहता है। लक्ष्मीजी ने उन सातों भौजाइयों को अखण्ड सौभाग्यवती रहने का आशीर्वाद दिया और ननद को कुछ भी नहीं कहा। भौजाइयाँ आपस में बात करने लगीं कि लक्ष्मीजी अपने को तो अखण्ड सौभाग्यवती रहने का आशीर्वाद देती हैं और इन ननदजी को क्यों नहीं देती? उसमें से एक भौजाई बोली कि- लक्ष्मीजी को पूछेंगे? भौजाइयों ने लक्ष्मीजी को जाकर पूछा- आप हमें तो आशीर्वाद देती हैं और हमारी इकलौती ननद को क्यों नहीं देतीं? तब लक्ष्मीजी बोली कि- तुम्हारी ननद को सुहाग नहीं है। भौजाइयाँ बोलीं- इसका क्या उपाय करें? तब लक्ष्मीजी बोलीं कि- समुद्र के बीच में एक टापू है, उसमें एक सोमा धोबिन रहती है, उसके पास से इसका सुहाग माँगकर लाओगे तो इसका सुहाग रहेगा।

एक भाई-भौजाई बहन को चील पर बिठाकर समुद्र के उस टापू पर ले गये, जहाँ पर सोमा धोबिन रहती थी। लक्ष्मीजी ने उसको सब काम बता दिया था कि उसका ऐसा-ऐसा काम करना। बहन उस सोमा धोबिन का लक्ष्मीजी के बताये अनुसार साफ-सफाई करती, लीपती, फूल बिखेरती, इत्र छिड़कती, इतना काम करती और रोज समुद्र किनारे आ जाती, क्योंकि उस टापू पर कोई रह नहीं सकता। सोमा धोबिन सोच में पड़ गई कि मेरा इतना काम रोज कौन मनुष्य कर जाता है? एक दिन वह दरवाजे के आड़ में खड़ी होकर सब देखने लगी। सोमा धोबिन ने उस लड़की को काम करते देखा, तो पूछा कि- बहन! तू कौन है? वह बोली कि- माता! मैं तो एक मानवी हूँ। तू यहाँ पर कैसे आई? और तुझे ये रास्ता किसने दिखाया? और तू क्यों आई? तब उसने कहा कि- मेरे भाग्य में सुहाग नहीं है। इसलिए मुझे लक्ष्मीजी ने आपके पास पहुँचाया है। उन्होंने कहा कि समुद्र में एक टापू है, वहाँ पर सोमा धोबिन रहती है, वही तुझे सुहाग दे सकती है। तू उसकी रोज सेवा करना। सेवा करते-करते सोमवती आ गई। सोमा धोबिन उसके कार्य से बहुत प्रसन्न हुई और उसे खूब आशीर्वाद दिये और एक कुमकुम की पुड़िया दी और कहा कि- जा, तेरा अखण्ड सौभाग्य रहेगा और खूब आनन्द करेगी।

सोमा धोबिन! उस पर प्रसन्न हुई, ऐसी सब पर होना। भाई-भौजाई अपनी बहन को लेकर अपने देश आ गये।

अबोली अमावस व्रत कथा

एक राजा थो। वणी के चार बेटीयाँ थीं। ने एक बेटो थो। राजा बड़ो दयालू ने धर्मात्मा थो।

चारी का ब्याव कर्या बेटीयाँ हारे गई। माँ बोली के- अपणा ए चारी बेटीयाँ ने अबोली अमावस को वरत करायो, तो वणा को उजमणो करई दां। तो वणाने लियाओ। बेटीयाँ का नाम था- सीता, सावित्री, लछमी ने पार्वती। पार्वती सबती छोटी थी। ने छोटी का आदमी को नाम भी शीव थो। राजा बेटीयाँ ने लेवा ने जावा लागा तो माँ देखी ने बोली- के जमाइयाँ ने भी लेता आवजो। जोड़ा ती वरत उजमेगा।

राजा चारी बेटीयाँ ने लियाया। तो छोटी बेटी पार्वती माँ ने किदो- के आप ए चारी जमई ने क्यों बुलाया? हातंग करोगा तो जोड़ो चइये के। माँ म्हारो जमई तो 'यथा नाम तथा गुण'। आखी शंकर जैसी माया जाणे। तू तो भोरी है। इ तो मनख है। वी तो अवतारी है। माँ ए नोकराणीयाँ ने बुलई ने किदो के चार थालीयाँ में नऊ-नऊ मुट्टी गऊ लई ने एक-एक को बाजू-बाजू पीसजो। छोटो छोरो, के मोटो आदमी कोई देखणो नी चईये। गऊ पीसई ग्या। दूसरे दन वरत को उजमणो थो। आखा नगर में नोतो दिदो। नाऊ नऊ वामणीयाँ चारी बेनां की नोती। तीन बामण का छोरा, ने एक राजा को बेटो, चारी ने साक्षी राख्या। ने राजा ने किदो के आप भी भूखा रोगा। नोकराणीयाँ ने किदो के थें पेला चारी पाणी भरी ने लाओ। पण आदमीयाँ को मुड़ो मत देख जो। छोटा जमई तो पेला ती ज पनघये जई ने वईगया। वी तो पूरा शंकर का भगत था। ने घणा चालाक था। वणा ने मालम थी के म्हारा सासूजी अणा चारी ने पाणी भरवा ने मेलेगा। चारी जणी ए बेड़ा माजां भर्या। अभे चारी तोकवा लागी तो चारी ती बेड़ा नी तोकाया। चारी आमी-हामी वात करे के काए अपणे रोज तो पाणी भरी ने लई जावां। पण आज क्यों नी तोकईरिया। अबे कई करां? अतरा में एक आदमी नगे अईग्यो। वणी में ती एक बोली- के यो हामे आदमी बैठो है, अणी कणती बेड़ा चढ़ई ला। अठे किने मालम पड़ेगा, कई मासा देखवा ने अई रिया है। पार्वती बोली- के माँ! दार में कई कारो है। क्यों बेटा थने कईं मालम? के आपका छोटा जमई पाणी भरे वठे जई ने बईग्या है। माँ बोली के- तू तो भोरी भारी है। अबे चारी नोकराणीयाँ पाणी भरी ने घरे अई। पार्वती पूछ्यो- के थाए अतरी देर कठे लगई। कोई आदमी तो नी थो। तो वी चारी झूठ बोलीगी। चोथी बेड़ो लइने अई। तो पार्वती वणी बेड़ा कने गई। तो बेड़ो तोकवा लागी। तो बेड़ो भारी वइग्यो। वणे बेड़ा में हाथ लाखी ने देख्यो तो वणी में ती वींटी लिकरी। देखे तो वणी पे नाम खुद्यो। 'शीव कुमार' वणे माँ ने जई ने किदो- के आपने किदो थो के म्हारो वरत खण्डत वेगा। तो माँ बोली- के कईं नी पति तो परमेश्वर वे। पार्वती ए वणा नोकराणीयाँ ने पुछ्यो के अभे हाँच बोलो- तो वी बोली के वठे एक बाबो साधू थो। के उ तो असो चमत्कारी बाबो थो। के वणी को मुण्डो इ म्हाने नजरे नी आयो। म्हाका ती बेड़ा नी तोकाणा तो वणा महात्मा ए बेड़ा तोकी ने माथा पे मेल्या। चारी बेना माचो न्हई। छत्तीस इ सुवासणीया ने सनान कराया रावला में। पेला बाल पूंछी ने हुकावजो। गोखड़ा बारी में देखजो मती। चार-पाँच बामणीयाँ ने बाजू-बाजू गोर आटो दीदो ने किदो के सबकी मीठी पुड़ीयाँ वणाओ। एक सुवागण ने बुलई ने गोबर ती चार खुणया

लीपायो, वणी पे नऊ खुणा पे नऊ गोली मेली मीठा आटा थी। नऊ मुट्ठ गऊ कुड़ीया। चारी बेटीयाँ वणी गोलीयाँ की पुजन करी ने, पछे बारते की तैयारी करजो।

राजा सा ने केवाड़ियो के नऊ-नऊ कण्ड्या ने चारी बेटीयाँ का सरपाव ने, सुवाग को समान मे, आदमीयाँ का सरपाव मेल दीजो। चार जोशी ने बुलाया, भद्र पीठ माड़्यो रुद्र कलस भर्‌या, चारी जमायाँ ने सनान कराया, कपड़ा पेराया, कड़ा कण्ठीयाँ पेरई। छोटो बेटो (सालो) छोटा बनेवी ने रकम पेरावा ने गयो तो सीर पेंच तो बांदी दीदा, पण गरा में हार पेरावा ने गयो हीरा-मोती को पण हाथ में हार तो कोनी ने हांप फूंकार करवा लागो वणी कंवर का हाथ में। वणे झट हाथ में ती छोड़्यो तो वणा जमई (शिवकुमार) का गरा में पड़ि‌ग्यो, तो उस हांप तो पाछो हीरा को हार वइग्यो? पण जरा-सी नाग की ठोड़ी बारते रईगी। राजा बोल्या- पार्वती! धन्य है थारा भाग जो शंकरजी जेसा जमई म्हारा बारणे आया। चारी जमई ने जोड़ा ती बैठाया चारी बेना बारी-वारी ती कण्डया झेलाया पण चोथी बेन पावर्ती देवा ने ग्या तो कण्डयो तुके इ कोनी। कण्डयो सोना को वइग्यो, सब लुगायां केवा लागी के सब कण्डया पार्वती झेलावता तो सबका जनम-जनम का दालीदर दूर वई जाता। दोई जणा ए कण्डया तोक्या ने सुवाणीयाँ ने भी जोड़ा ती बुलाया दोई जणा इ ने जोई जाणा बी। जोड़ा ती कण्डया झेलाया, बी कण्डया झेलावता इ सब सोना का वइग्या। तीनी बेट्याँ नें घुस्सो अइग्यो ने माँ ने किदो- आप ए म्हाका तीनी को अपमार कर्‌यो है। म्हाके तीनी बेना के तो बासड़ा का कण्ड्या मँगाया ने पार्वती के सोना का मँगाया। तो माँ बोली- छोटा जमइसा कने जाओ ने वणा ती प्रार्थना करो। बेना तीनी वणा छोटा जमई (शंकरजी) कने गई ने वणाने किदो के आप ए भिन्न भेद कर्‌यो, म्हाका माँ-बाप ए भिन्न भेद करयो। तो शंकरजी बोल्या के- एसो कई नी है। आप भी तीनी कण्ड्या तोको और सुवासणीयाँ ने जोड़ा ती बुलाओ ने आप भी जोड़ा ती कण्ड्या दो तो आपके भी सोना का वइजाएगा। वणा ए ऐसोज कर्‌यो जोड़ा ती कण्डया दीदा वणा कण्डया के शंकर-पार्वती ए भी हाथ लगाया, ने वणा सुवासणीयाँ ने दीदा तो वी कण्डया सोना का वइग्या। तीनी बेनाए वणा छोटा जमई और छोटी बेन ती माफी माँगी के म्हाए आप ने गलत हमजा था। हे अबोली माता! बणी छोटी बेन वर मिल्या, असा सकल नें मिलजो। फेर माँ बोली- के नऊ साल तक मीठी रोटी वणई ने दईं से खाजो ने पछे अबोली अमावस को उजमणो करजो।

भावार्थ

एक राजा को चार लड़कियाँ थीं और एक लड़का था। राजा बड़े दयालु और धर्मात्मा थे। चारों लड़कियों का विवाह करके उन्हें ससुराल भेज दिया। माँ ने पिता से कहा- बेटियों को अबोली अमावस का व्रत करवाया है, तो उनका उद्यापन भी करवा देते हैं। उन चारों को उनके ससुराल से लेकर आओ। चारों के नाम थे- सीता, सावित्री, लक्ष्मी और पार्वती। पार्वती सबसे

छोटी थी। छोटी लड़की के पति का नाम शिव था। राजा बेटियों को लेने के लिए जाने लगे तो माँ ने कहा– सब कुँवर (दामाद) को भी लेते आना। राजा चारों बेटियों को लेकर आ गये।

तो पार्वती ने कहा– आपने दामादों को क्यों बुलवाया है? जोड़े से व्रत का उद्यापन करने के लिए बुलवाया है। तो मेरा व्रत तो भंग हो जायेगा? माँ ने कहा– क्यों बेटी? आपके दामाद तो 'यथा नाम तथा गुण', वह तो मायावी हैं। तू तो बहुत भोली है। यह तो इन्सान है और वह तो अवतारी है। माँ ने नौकरानी को बुलवाया और कहा कि चार थालियों में नौ–नौ मुट्ठी गेहूँ लेकर एक–एक को अलग–अलग पीसना। इनको कोई बच्चे, बड़े पुरुष देख न लें। गेहूँ पीस लिये गये। दूसरे दिन व्रत का उद्यापन था।

पूरे नगर में न्यौता दिया। नौ–नौ ब्राह्मणी चारों लड़कियों के लिए, तीन ब्राह्मण के लड़के और एक राजा का लड़का – इन चारों को साक्षी बनाया। नौकरानियों को कहा– तुम चारों पानी भरकर लाओ, पर किसी पुरुष का मुँह मत देखना। लेकिन छोटे दामाद तो पहले से ही पनघट पर जाकर बैठ गये। वह तो पूरे शंकर के भक्त थे। उन्हें मालूम था कि सासू माँ यहीं पानी भरने भेजेंगी। चारों ने पानी भरा। वह उठाने लगीं तो उनसे घड़े उठे ही नहीं। वो चारों आपस में बात करने लगीं कि रोज तो पानी भरकर ले जाते हैं, आज क्यों नहीं घड़े उठ रहे हैं? अब क्या करें? इतने में एक पुरुष दिखाई दिया। उसमें से एक ने कहा– यह सामने पुरुष बैठा है, इसे कह दें, यह उठवा देगा। यहाँ किसे मालूम पड़ेगा?

बहुत देर हो गई, पानी भरकर नहीं आई, तब पार्वती ने बोला– माँ! कुछ दाल में जरूर काला है। इतनें में चारों पानी भरकर आईं, तो पार्वती ने पूछा– तुमने इतनी देर कहाँ लगा दी? कोई पुरुष वहाँ था तो नहीं? वह झूठ बोल दीं कि– नहीं। चौथी के सिर पर से पार्वती ने घड़ा उठाया तो वह बहुत वजनदार लगा। उसने घड़े में हाथ डालकर देखा तो उसमें से एक अँगूठी निकली। उसको देखा तो उस पर 'शिवकुमार' नाम लिखा हुआ था। पार्वती ने माँ से कहा– मैंने आपसे कहा था न, कि मेरा व्रत खण्डित हो जायेगा। माँ ने कहा– पति तो परमेश्वर होता है। पार्वती ने दासियों से पूछा कि– सच बोलना, वहाँ पर कौन था? उन्होंने कहा– वहाँ पर एक साधु बाबा थे। वे बहुत चमत्कारी थे। उनका मुँह तो हमें दिखाई ही नहीं दिया। हमसे घड़े नहीं उठे तो उन्होंने उठाकर हमारे सिर पर रख दिये।

फिर छत्तीस सुहासिनियों को स्नान करवाया, चारों बहनों ने भी स्नान किया। माँ ने कहा कि– बाहर मत देखना, खिड़की–झरोखे मत झाँकना। ब्राह्मणियों ने गुड़ की मीठी पूड़ियाँ बनायीं। सबकी थालियों में अलग–अलग रख दीं। एक सुहागिन ने गोबर से चौकोर लीपा। मीठे आटे की नौ गोलियाँ बनाकर नौ कोने पर रखी। नौ मुट्ठी गेहूँ रखे। चारों लड़कियों ने पूजा की। चारों लड़कियों की नौ–नौ छबड़िये लाये और उन सबमें सुहाग का सामान रखा, कपड़े रखे, पुरुषों के वस्त्र रखे। मण्डल बनाया, रुद्र कलश भरकर रखा। दामादों को स्नान करवाकर नये वस्त्र, कड़े,

कण्ठी पहनाई। छोटे दामाद को साले ने कण्ठी, सिर पेंच तो बाँध दिये, पर गले में हीरा-मोतियों का हार पहनाने गया। तो हाथ में हार तो नहीं, साँप फुँकार करने लग गया। साले ने हाथ झटकारा तो दामाद के गले में जा गिरा। तो वह साँप तो वापस हीरा-मोतियों का हार हो गया, पर जरा सी नाग की ठोड़ी बाहर रह गई (थोड़ा-सा मुँह)। राजा ने कहा- पार्वती! तू तो धन्य है, भाग्यवान है, जो शंकरजी जैसे दामाद मेरे दरवाजे आये। पूजन पाठ से निवृत्त होकर चारों जोड़ों ने सबको भोजन करवाकर सबको अलग-अलग अपने-अपने हाथों से सुहाग पिटारी दी और पुरुषों को वस्त्र दान किये। पर चौथी बहन अपनी सुहाग पिटारी उठाकर देने गई, तो वह बहुत भारी हो गई। उससे उठी ही नहीं, वह सोने की हो गई। सब औरतें कहने लगीं कि सब सुहाग पिटारी सबको देती, तो सबके जन्म-जन्म के दलिद्दर दूर हो जाते।

तीनों लड़कियों को गुस्सा आ गया। माँ को कहने लगी- आपने हमारा अपमान करवाया है। हमें तो बाँस छाबड़ी और इसे सोने की छबड़ी मँगवाकर दी। माँ ने कहा- छोटे दामाद के पास जाकर उनसे कहो। उन्होंने जाकर छोटे दामाद से कहा- आपने हमसे भिन्न भेद किया है। हमारे माता-पिता ने भेद किया। तो छोटे दामाद बोले कि- ऐसा कुछ नहीं है। आप भी तीनों छबड़ियाँ उठाओ और उन्हें भी जोड़ों से बुलवाओ और आप भी जोड़े से छबड़िये दो, तो आपके भी सोने के हो जायेंगे। उन्होंने छोटे दामाद के कहे अनुसार जोड़े से छबड़िये दिये। उन छबड़ियों में शंकर-पार्वती ने भी हाथ लगाये और सुहासिनियों को दिये। तो वह भी सब सोने के हो गये। तीनों बहनों ने अपनी छोटी बहन पार्वती और छोटे दामाद से माफी माँगी और कहा कि- हमने आपको गलत समझा था।

हे अबोली माता! उस छोटी बहन को वर मिला, ऐसा वर सबको मिले। फिर माँ ने कहा- नौ साल तक यह व्रत करना। गुड़ की मीठी पूड़ियाँ बनाना और उसका उद्यापन करना। अबोली अमावस माता ऐसी सब पर प्रसन्न रहेगी।

अबोली पड़वा व्रत कथा

एक राजो थो ऊ घणो कंजूस थो। वणे गांव में हूड़ी पिटवई दीदी थी के कोई भी मनख धान की एक मुट्ठी दान-पुन मंगता भिखारी ने नी करे और जहाज भरवा चलयोग्या वणी के सात राण्यां थी। छः मानेती ने एक अनमानेती। अनमानेती राणी के अबोली को वरत आयो, वणे दासी ने किदो के नो मुठ्ठी गऊँ ला। दासी गऊ लई और वणाने पीसी ने पुड़ीयाँ वणई। शंकर पार्वती जी की पूजा करनी है। वटने से महादेवजी साधू का वेश में आया और वो पुड़िया सादू म्हाराज ने दई दी। अई राजा को जहाज भरई ने अईग्यो, पण नदी का पेले पार नी आवे। जहाज चाले ज कोनी।

सब हारिग्या। फेर राजा से एक बामण बोल्यो- के म्हाराज! कोई दान-पुन कर्‌यो वे तो कबुलो? तो जहाज चाले। राजा बोल्या के मैं तो हूड़ी पीटवई ने ग्यो थो के गांम में कोई दान-पुन मत करजो। बाबा एक्यों फेर भी पुछवई लां। छः राणीया ने पुछ्यो तो वी नटीगी। सब परजा ने पुछ्यो- तो वी भी सब नटीग्या। सब ए ना कई दीदो। अनमानेती राणी डरती थकी अई ने वणे किदो के नो पुड़ीया एक सादू ने दीदी थी। नो पुड़ीया केवा की देर थी के जहाज नदी में तरवा लागीग्यो, ने वणाको जहाज ओले कनारे अईग्यो, राजा झट वणी राणी ती प्रेम ती बोलवा लागीग्या। राणी ने अच्छी राखवा लागा। राजा एक राणी ने किदो के आप तो सतवन्ती हो। वणी दन से राजा और राणी दोई जणा अबोली पड़वा को वरत करवा लागा।

भावार्थ

एक राजा था। वह बहुत कंजूस था। उसने गाँव में डूंडी पिटवा दी थी कि कोई भी व्यक्ति अनाज की एक मुट्ठी भी दान मंगते-भिखारी को नहीं देगा और वह अपना जहाज भरने को चला गया। उसकी सात रानियाँ थीं। छः रानियों को तो वह बहुत चाहता था, पर एक रानी को नहीं चाहता था। अप्रिय रानी को अबोली पड़वा का व्रत का दिन आया। उसने दासी से कहा कि- नौ मुट्ठी गेहूँ की लाकर उसे पिसवा ले और उसकी पूड़ियाँ बना ले। शंकर-पार्वतीजी की पूजा करनी है। उधर से महादेवजी साधु के वेश में आये और उनको नौ पूड़ियाँ दे दीं।

इधर राजा का जहाज भरकर के आ गया, पर वह पेले पार नहीं आया। जहाज खिसकने का नाम ही नहीं लेता, हिलता ही नहीं। सब हार गये। फिर राजा से एक ब्राह्मण ने कहा कि- महाराज! कोई दान-पुण्य किया हो तो बोलो? तो जहाज चलेगा। राजा बोले कि मैं तो डूंडी पिटवाकर गया था कि गाँव में कोई भी दान-पुण्य मत करना। बाबा ने कहा- फिर भी पुछवा लेते हैं। महल में रानियों से पूछा तो उन्होंने मना कर दिया। अनमानेती (अप्रिय) रानी को पूछा तो उसने डरते हुए कहा कि मैंने नौ पूड़ियाँ एक साधु बाबा को दे दी थीं। नौ पूड़ियाँ कहने की देर थी कि जहाज पानी में तैरने लग गया और किनारे लग गया। साधु बाबा ने कहा- यह सब आपकी छोटी रानी के पुण्य के प्रताप से हुआ है। राजा छोटी रानी को बहुत चाहने लगे, उसे अच्छी रखने लगे। राजा ने रानी से कहा कि- आप तो सतवन्ती हो। उस दिन से राजा और रानी दोनों अबोली पड़वा का व्रत करने लगे।

मुनि व्रत कथा

मुनि वरत हकं रात की चालु केर, यो पोस मईना में आवे, कुंवारी छोर्याँ अणी वरत ने करे, आकास में तारा ऊगी जाय जदी यो वरत खोले। बरत छोड़ावा वारी दूसरी छोरी रे, जो अस्तर बोली ने वरत छोड़ावे–

झालर बाजे डंका वाजे, वाजे ढोल नगारा,
चीड़ी चरकला बांसे बैठा, संजा फूली तारा उग्या,
मुनिजी की मून खोल मुनि बाबा राम-राम।

साल भर तक अणी बरत ने करीने पाछो हंकरात पे छोर्याँ चाँदी का झालर डंको, तारा ने चन्दरमा वणई ने इकी पूजा करे ने फेर बामण ने धरम कर दे। अणी का हांते 'सात्या टीली' को वरत भी चाले। यो भी कुँवारी छोर्याँ अच्छो वर मिले अणी वाते करे। रोज पाँच कंकु की टीकी ने एक हात्यो रोज परेडी पे वणावे। भर तक यो वरत करवा का बाद छोर्याँ चाँदी को वणई ने और कंकु की सीसी पूजा करी ने मंदर में चढ़ाईवे।

भावार्थ

'संक्रान्ति मौन व्रत' संक्रान्ति से शुरू किया जाता है। यह पौष महीने में आता है। कुँवारी कन्याएँ इस व्रत को करती हैं। आकाश में जब तारे टिमटिमाने लगते हैं, तब यह व्रत छोड़ दिया जाता है। व्रत छुड़वाने वाली दूसरी कन्या होती है, जो उसको इस प्रकार कहकर छुड़वाती है–

झालर बाजे डंका बाजे, बाजे ढोल नगारा,
चीड़ी चरकला बांसे बैठा, संजा फूली तारा उग्या
मुनिजी की मून खोलो मुनि बाबा राम-राम।

साल भर तक इस व्रत को करके वापस संक्रान्ति पर ही कन्याएँ चाँदी के झालर, डंका, तारा तथा चन्दरमा बनाकर इसकी पूजा करके और ब्राह्मण को दान कर देती हैं। इसी के साथ 'सात्या टीली' का भी व्रत चलता है। यह भी कुँवारी कन्याएँ करती हैं योग्य वर प्राप्ति के लिए। रोज पाँच कंकु की टीकी और एक सात्या रोज परेड़ी पर बनाया जाता है। साल भर यह व्रत करने के बाद वह कन्या चाँदी का सातिया बनवाकर और कुंकू की शीशी पूजा करके मन्दिर में चढ़ा देती हैं।